बृहत्-पाराशर-होराशास्त्रम्



CC-0. JK Sanskrit Academy, Jaipur. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

❖ श्रीगणेशायनमः ❖

महामुनि-पराशर-प्रणीतं

बृहत्

पाराशरहोराशास्त्रम्

तद्विरचितया—

सोदाहरण-हिन्दी-टीक्या सहितम्

❖

भूतपूर्व काशीस्थ-ज्योखीराम-मटरुमल-
गोयनका-संस्कृत-महाविद्यालय-
ज्योतिष-विभागाध्यक्षेण
पण्डित-श्रीगणेशदत्तपाठकेन
सम्पादितम्

प्रकाशकः

ज्योतिष प्रकाशन

चौक, वाराणसी-२२१००१

सन् १९९८ मूल्य २००)-

कलकत्ता के वितरक

गणेश एण्ड ब्रदर्स बुक्सेलर

३०/३१ कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकाशकः
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी-२२१००१
फोन-३२०४०२

सन् १९९८
मूल्य २००)-

फोंटो कम्पोजिंग
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

PARAS MANI

भूमिका

ज्योतिषशास्त्र सिद्धान्त, संहिता और होरा नामक तीन स्कन्धों में प्रसिद्ध है। यह वेद का प्रधान अङ्ग माना जाता है। उपर्युक्त तीनों स्कन्धों में प्रतिपाद्य विषय स्वतन्त्र हैं। किन्तु सिद्धान्त स्कन्ध के आश्रित शेष दोनों स्कन्ध हैं।

वेदों में, ब्राह्मण ग्रन्थों में, श्रौत सूत्रों में, मीमांसा आदि दर्शनों में, पाणिनि सूत्रों में और पुराण-इतिहास में प्रसंगानुसार प्रयोजनवश ज्योतिष विद्या के अनेक प्रकीर्णक विषय सूत्ररूप से उपलब्ध हैं। इसके स्वतन्त्र विषय लगध मुन्युक्त (वेदाङ्गज्योतिष) नामक अति प्राचीन ग्रन्थ में प्रतिपादित हैं।

तात्पर्य यह है कि, प्रत्येक यज्ञादि और गृह्योक्त संस्कारों के अथवा धार्मिक आचारों के कर्तव्य के काल का ज्ञान ज्योतिष के ही ऊपर निर्भर माना गया है। इसी कारण वेद में काल के संवत्सर, अयन, ऋतु आदि विभाग और नक्षत्रों का दैवतक सम्बन्धादि प्राप्त होते हैं। इसका विशेष विवरण अथर्ववेद में कालक्रमानुसार चर्चा है।

पञ्चभूतों के प्राकृतिक विभिन्न गुण-धर्मों से वेष्टित भौतिक जागृत जड़ पिण्ड अपने अणु संसक्तावयवों से सदा स्पन्द क्रियाशील रहा करते हैं। मानस जीवन का अथवा स्थावर-जंगम विश्व के प्रत्येक वस्तु का परस्पर में दिव्य भौम एवं अन्तरिक्ष विविध उत्पात अर्थात् चेष्टाओं से प्रत्यक्ष-परोक्ष वशीकारक प्रभाव माना गया है और यही आरम्भ की भूमि है। तात्पर्य यह है कि, विज्ञानानुमोदित प्राकृतिक अनुपात से अनुकूल क्रिया, प्रतिकूल अर्थात् शुभाशुभ ग्रह-नक्षत्रों के पिण्डस्थ तत्त्व आकर्षण शक्ति द्वारा रश्मियों से प्रतिफलित होकर ऋतु धर्मानुसार अपने परिणामजन्य परिपाकों को प्राप्त हुआ करते हैं और इसका निदर्शन अन्य वस्तुओं की अपेक्षा सहज ही चेतन पिण्डों में अनुभूत होकर देखा जाता है। इस सूक्ष्म रहस्य की संगति अति कठिन है। आचार्य वराहमिहिर ने बृहज्जातक में लिखा है—

होरेत्यहोरात्र-विकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् ।
कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पङ्क्तिं समभिव्यनक्ति ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इसमें जन्मान्तरवाद अर्थात् जीवों के परिमाणवाद को आधार मान-कर शुभाशुभ कर्म संस्कार का शरीर द्वारा भोग रूप से अभिव्यक्त होना प्रगट किया है। यहाँ मूलभूत अनिर्वचनीय सत्य फलित विद्या की सत्यता का एक मात्र स्तम्भ है। प्रत्येक नैसर्गिक घटना का कालज्ञान और आधा-राधेय भावसे स्वरूप फल-प्राप्ति परिणामान्तरमें स्थिर होकर भिन्न स्वरूप में प्रगट होती है, इसी गूढ़ तत्त्व को ऋषि-मुनियों ने अपने दिव्य दृष्टि से जानकर परिभाषाओं के भेद से संसार को सूचित किया है। इससे भौतिक पदार्थों के सिवाय ग्रहों का मानवीय सम्बन्ध उपपत्ति सिद्धि होता है।

यह निःसन्देह है कि वैदिक ज्यौतिष तत्त्व का विकास ऋषि-मुनियों के समय से लेकर कालक्रमानुसार बढ़ता गया है और विभिन्न प्रकारों से इसकी उपयोगिता की परीक्षा करके वशिष्ठ, नारद, कश्यप, गर्ग आदि के संहिता ग्रन्थों की सृष्टि हुई। इसके अंग-उपांगों का आविष्कार, समीकरण एवं उनके अनुयायी महाविशाल जाल भूपृष्ठ पर आकाश मध्य रेखा तक सीधा सम्बन्ध स्थापित करके ही छोड़ा, और भविष्य में इनके अनुयायियों को वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, निग्रह आदि के सहारे कल्पना जालों को नवीन रूप देकर अनन्त की ओर प्रवृत्त होने के लिए पर्याप्त सामग्री छोड़ दी है।

प्रस्तुत ग्रन्थ भी उन्हीं ऋषियों में से एक आचार्य की कृति है। इसके अनेक संस्करण निकले हुए हैं, जिनमें परस्पर पाठ-भेद हैं। इसकी कतिपय पाण्डुलिपियाँ भी कई स्थानों में वर्तमान हैं। मैंने उन्हीं पाण्डुलिपियों में से कुछ एक का सहारा लेकर इस ग्रन्थ का संशोधन-सम्पादन यथामति भाषा-टीका में सोदाहरण किया है।

भ्रान्ति होना मनुष्य धर्म है। इस नीति के अनुसार सम्भवतः मुझसे भी कुछ भ्रान्ति और त्रुटि हो गई हो, अतः सज्जन विद्वत् गणों से करबद्ध प्रार्थना है कि उक्त त्रुटियों के लिए क्षमा करते हुए मुझे सूचित करेंगे।

विनीत

गणेशदत्त पाठक

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

❖ ॐ हनुमते नमः ❖

अथ बृहत्पाराशरहोरायाः पूर्वार्द्धभागस्य

विषयानुक्रमणिका

विषयाः पृष्ठ-संख्या

सृष्टिक्रमवर्णनाध्यायः ॥१॥

मङ्गलाचरणम्, पराशर उवाच १७
सृष्ट्यारम्भवर्णनम् १८
अवतारवादः, पराशर उवाच २०

राशिप्रभेदाध्यायः

होराशब्दव्युत्पत्तिः-राशिनामानि २२
मेषादिराशीनां संज्ञा २३
मेष-वृष-मिथुन राशिस्वरूपम् २३
कर्क राशिस्वरूपम् २३
सिंह-कन्या-तुला राशिस्वरूपम् २४
वृश्चिक-धनु राशिस्वरूपम् २४
मकर-कुंभ-मीन राशिस्वरूपम् २५

ग्रहस्वरूपाध्यायः ॥३॥

ग्रहाणाम् आत्मादिसंज्ञा २६
ग्रहाणां स्वरूपाणि-ग्रहाणां स्वामी २६
ग्रहाणां पुंसादिसंज्ञा,ग्रहाणां तत्त्वानि २७
ग्रहाणां वर्णाः - ग्रहस्वरूपम् २८
ग्रहाणां स्थानबलम् २८
ग्रहाणां कालबलम् - अयनबलम् २९
स्थूलादिवृक्षाणां कारकाः २९
ग्रहाणां वस्त्राणि ३०
ग्रहाणां धातुमूलादिविचारः ३०
ग्रहाणामुच्चनीचविचारः ३०
ग्रहाणां मूलत्रिकोण माह ३१
ग्रहाणां नैसर्गिक-मित्रामित्रत्वमाह ३१
ग्रहाणां तात्कालिकमित्रशत्रुत्वमाह ३२
ग्रहाणां पञ्चधामैत्री माह ३२
ग्रहाणां उच्चादिबलविचारः ३३

विषयाः पृष्ठ-संख्या
धूमाद्यप्रकाशग्रहानयनमाह ३४
प्रकाशग्रहाणां फलम् ३५

लग्नाध्यायः

तत्रादौ गुलिकादिकालज्ञानमाह ३५
प्राणपदसाधनम् ३६
पशु,पक्षी,कीट,सर्पादीनां,जन्मज्ञानम् ३७
निषेक (गर्भाधान) लग्नानयनम् ३८
भावलग्नानयनम् ३९
होरालग्नसाधनम्-घटीलग्नसाधनम् ४०
वर्णदलग्नानयनम् ४१

षोडशवर्गाध्यायः

गृह-होरा-कथनम्-द्रेष्काणविचारः ४५
चतुर्थांशमाह, चतुर्थांशचक्र ४६
सप्तमांशमाह ४६
नवमांशाधिपतिमाह-नवमांश चक्रम् ४७
दशमांशमाह ४८
द्वादशांशमाह-द्वादशांश चक्रम् ४९
षोडशांशमाह ५०
षोडशांश चक्रम् ५१
विंशांशमाह, विंशाश चक्रम् ५२
सिद्धांशकमाह, चतुर्विंशाशं चक्रम् ५४
भांशेशमाह, भांश चक्रम् ५५
त्रिंशांशमाह ५६
खवेदांशमाह, खवेदांश चक्रम् ५७
अक्षवेदांशमाह, अक्षवेदांश चक्रम् ५९
षष्ठ्यंशमाह ६१
षष्ट्यंश चक्रम् ६२
वर्गभेदमाह ६४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Academy, Jammu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
षोडशवर्गविवेकाध्यायः	
विंशोपकबलमाह	६७
षट्-सप्त-वर्गाणां विंशोपकम्	६९
दशवर्गाणां, षोडशवर्गाणां विंशोपकम्	६९
विंशोपकबलस्य स्पष्टीकरणम्	७०
फलकथने विशेषः	७०
भावानां केन्द्रादिसंज्ञा माह	७१
तन्वादिभावानां संज्ञा माह	७१
भावैः विचार्यविषयाः	७२
राशिदृष्टिभेदाध्यायः	
राशीनां दृष्टिः	७३
दृष्टिचक्रमाह	७४
ग्रहाणां दृष्टिचक्रमाह	७५
अरिष्टाध्यायः	
बालारिष्टविचारः	७६
मातृकष्ट-विचारः	७९
पितृकष्टम्	८१
अथरिष्टभङ्गाध्यायः	८२
अप्रकाशग्रहफलाध्यायः	
तत्रादौ धूम्रमग्रहफलम्	८४
पातफलम्	८५
परिधिफलम्	८७
चापफलम्	८९
शिखिफलम्	९०
गुलिकफलम्	९२
प्राणपदफलम्	९३
अर्गलाध्यायः	
अर्गलायोगलक्षणम्	९५
अर्गलायोगफलम्	९८
कारकाध्यायः	
कारककथनम्	९९
आत्मकारकादिविचारः	१००
चरकारकाः	१०१

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
चरकारकग्रहाणांचक्रम्योगकारकाः	१०२
स्थिरकारकमाह	१०३
भावकारकमाह	१०४
सूर्यादिग्रहाणां कारकत्वम्	१०५
कारकांश-फलम्	१०६
कारकांशचक्रम्	१०७
कारकांशस्थितग्रहाणां फलम्	१०९
कारकांशात्तनुभावफलम्	१०९
कारकांशाद्धनभावफलम्	१११
कारकांशात्तृतीय, चतुर्थभावफलम्	११२
कारकांशात्पञ्चमभावफलम्	११३
कारकांशात् षष्ठमभावफलम्	११४
कारकांशात् सप्तमभावफलम्	११४
अष्टमभावफलम्, नवमभावफलम्	११४
कारकांशात् दशमभावफलम्	११५
कारकांशात् व्ययभावफलम्	११६
कारकांशात् विशेषफलविचारः	११७
आरूढलग्नफलाध्यायः	
आरूढलग्नविचारः	१२१
पदादेकादशस्थानफलम्	१२२
पदाद्द्वादशभावादीनांफलम्	१२३
पदात्सप्तमभावफलम्	१२४
पदादष्टमभावफलम्	१२५
पदाद्द्वितीयभावफलम्	१२५
पदाद्-द्विविधभावानां फलम्	१२६
उपपद-प्रकरणम्	
उपपदज्ञानम्, पराशर उवाच	१२६
उपपदफलम्	१२७
कारकमारक-विचाराध्यायः	
मारकेशविचारः	१३२
मेषलग्नशुभाशुभम्	१३३
वृषलग्नशुभाशुभम्	१३४
मिथुन कर्क सिंह लग्नशुभाशुभम्	१३५

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
कन्या,तुला,वृश्चिकलग्नशुभाशुभम्	१३६
धनु, मकर, लग्नशुभाशुभम्	१३७
कुम्भ, मीन लग्नशुभाशुभम्	१३७

द्वादशभाव-विचाराध्यायः

द्वादशभावेभ्यः विचार्यविषयाः	१३८
ग्रहाणां कारकत्वम्,द्रेष्काणविचारः	१४०
तनुभावफलम्	१४१
धनभावफलम्	१४२
सहजभावफलम्	१४५
चतुर्थभावफलम्	१४६
पञ्चमभावफलम्	१४८
दत्तकपुत्रयोगः-सन्तानयोगाः	१४९
पुत्रप्राप्ति-वियोगसमयश्च	१५०
सन्तानसंख्याज्ञानम्	१५१
षष्ठभावफलम्	१५२
कुष्ठयोगः-गण्डादिरोगयोगाः	१५३
रोगप्राप्तिसमयः	१५४
जलभययोगः	१५५
सप्तमभावफलम्	१५६
भार्यामृत्युयोगाः	१५७
बहुभार्यायोगाः	१५८
विवाह-समयः	१५९
स्त्रीमृत्यु-समयः	१६०
अष्टमभावफलम्	१६१
दीर्घायुयोगाः, अल्पायुयोगाः	१६२
नवमभावफलम्	१६३
पितृवैरयोगः, भिक्षाशनयोगः	१६४
पितृमरणयोगमाह	१६४
भाग्योदय-समयः,भाग्यहीन-योगः	१६६
दशमभावफलम्-कर्महीन-योगः	१६७
शुभकर्म-योगः	१६८
अशुभयोगः-एकादशभावफलम्	१६९
द्वादशभावफलम्	१७०

विषयाः	पृष्ठ-संख्या

भावेशफलाध्यायः

लग्नेशभावफलम्	१७२
धनेशभावफलम्	१७३
सहजेशभावफलम्	१७४
सुखेशभावफलम्	१७५
सुतेशभावफलम्	१७६
षष्ठेशभावफलम्	१७७
सप्तमेशभावफलम्	१७८
अष्टमेशभावफलम्	१७९
भाग्येशभावफलम्	१८०
कर्मेशभावफलम्	१८१
लाभेशभावफलम्	१८२
व्ययेशभावफलम्	१८३

नाभसादियोगाध्यायः

नाभसयोगनामानि	१८४
तेषां नामानिआश्रययोगलक्षणम्	१८५
दलयोगद्वयम्-विंशत्याकृतियोगाः	१८५
रज्जुयोगफलम्-मुगलयोगफलम्	१८७
नलयोगफलम्-सर्पयोगफलम्	१८७
गदायोगफलम्-शकटयोगफलम्	१८८
विहगयोग,शृङ्गाटकयोगफलम्	१८८
हलयोगफलम्-वज्रयोगफलम्	१८८
यवयोगफलम्-कमलयोगफलम्	१८९
वापीयोगफलम्-यूपयोगफलम्	१८९
शरयोगफलम्-शक्तियोगफलम्	१८९
दण्डयोगफलम्-नौकायोगफलम्	१९०
कूटयोगफलम्-छत्रयोगफलम्	१९०
चापयोगफलम्,अर्धचन्द्रयोगफलम्	१९०
चक्रयोगफलम्-समुद्रयोगफलम्	१९१
वीणायोग-दामिनीयोगफलम्	१९१
पाशयोगफलम्-केदारयोगफलम्	१९१
शूलयोगफलम्-युगयोगफलम्	१९२
गोलयोगफलम्	१९२

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः पृष्ठ-संख्या

विविधअनेकयोगाध्यायः

गजकेसरीयोगस्तत्फलञ्चाह १९२
अमलायोगस्तत्फलञ्चाह १९३
शुभाशुभयोगस्तत्फलञ्चाह १९३
पर्वतयोगस्तत्फलञ्चाह १९३
काहलयोगस्तत्फलञ्चाह १९३
चामरयोगस्तत्फलञ्चाह १९४
शङ्खयोगः-भेरीयोगमाहः १९४
मृदङ्ग योगमाहः १९५
श्रीनाथयोगमाहः-शारदयोगः १९५
मत्स्ययोगः-कूर्मयोगस्तत्फलञ्चाह १९६
खड्गयोगस्तत्फलञ्चाह १९६
लक्ष्मीयोग-कुसुमयोगस्तत्फलञ्चाह १९७
पारिजातयोग स्तत्फलञ्चाह १९८
कलानिधियोगस्तत्फलञ्चाह १९८
पारिजातादियोगफलानि १९८
लग्नाधियोगस्तत्फलञ्चाह १९९
चन्द्रयोगामाह १९९
चन्द्राधियोगस्तत्फलञ्चाह १९९
सुनफाऽनफादियोगाःमाह २००
सुनफायोगफलम्,अनफायोगफलम् २००
दुरुधरायोग-केमद्रुमयोगफलम् २०१
केमद्रुमभङ्गयोगः-रवियोगः २०१
वोशियोगफलम्-वेशियोगफलम् २०२
अथोभयचरी-योगफलम् २०२

राजयोगादिफलाध्यायः

राजयोगः, पराशर उवाच २०२
चतुर्विधसम्बन्धमाह २०४
पारिजातादियोगफलम् २०४
विशेषयोगफलम् २०५

राजयोगाध्यायः

कारकांशात् राजयोगफलम् २०७
भावलग्नात् राजयोगः २०८

विषयाः पृष्ठ-संख्या

योगाध्याय राजप्रधान २१०
राज प्रधानयोगाध्यायः २११

धनयोगाध्यायः

बहुधनप्राप्तियोगः २१२
ग्रहफले विशेषः २१३

दरिद्रयोगाध्यायः

लग्नेशात् दरिद्रयोगाः २१४
कारकवशात् दरिद्रयोगः २१५
दरिद्रभङ्गयोगाः २१५

ग्रहाणामवस्थाध्यायः

जाग्रताद्यवस्था तत्फलानि २१६
दीप्ताद्यवस्था तत्फलानि २१७
बालाद्यवस्थाफलम् २१८
प्रवासाद्यवस्थाफलम् २१९
लज्जिताद्यवस्थातत्फलम् २१९
शयनाद्यवस्थानयनम् २२२
दृष्ट्यादिफलम् २२३
रवेः द्वादशावस्थाफलम् २२४
चंद्रावस्थाफलम् २२५
भौमावस्थाफलम् २२७
बुधावस्थाफलम् २२९
गुरोरवस्थाफलम् २३१
भृगोरवस्थाफलम् २३३
शनेरवस्थाफलम् २३४
राहोरवस्थाफलम् २३६
केतोरवस्थाफलम् २३८
ग्रहावस्थानुसारेण भावफलम् २३९

आयुर्दायाध्यायः

अंशायुस्साधनम् २४१
अंशायुषि साधने विशेषः २४१
अंशायुसाधन का उदाहरण २४२
पिण्डायु-साधनम् २४४

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
निसर्गायुस्साधने वर्षादिः	२४४
पिण्डनिसर्गायुस्साधनम्	२४४
सूर्य पिण्डायुसाधनम्	२४५
संस्कृत-पिण्डायु चक्रम्	२४६
लग्नायुस्साधनम्	२४७
आयुग्रहणेविशेषः,नानाजातीयमायुः	२४८
राक्षस-नर-कुञ्जराणामायुः	२४८
अश्व-खरोष्ट्र-वृषमहिषाणामायुः	२४८
मयूर-छाग-हंस-पिकानामायुः	२४९
पारावत-कुक्कुट-बुलबुलानामायुः	२४९
जैमिनिमतेनायुविचारः	२५०
आयुग्रहणे विशेषः,आयुबोधकचक्र	२५१
आयुखण्ड-बोधकचक्रम्	२५१
स्पष्टायु-साधनप्रकारः	२५२
आयुषि कक्ष्याह्रासवृद्धिविचारः	२५३
अमितायुर्योगः-मुनितुल्यायुर्योगः	२५५
युगान्तायुर्योगः-पूर्णायुर्योगः	२५५
निधनसमयज्ञानम्	२५६
स्थिरदशायां मृत्युसमयज्ञानम्	२६७

मारक-प्रकरणम्

रुद्रग्रहादायुविचारः,पराशरउवाच	२६९
गौणरुद्रविचारः	२७१
शुभग्रह-क्रूरग्रहविचारः	२७५
माहेश्वरग्रहविचारः	२७९
ब्रह्मग्रहविचारः	२८०

पित्रादिनिर्याणाध्यायः

पितृ-मातृ-कारकविचारः	२८३
बाल्ये पितृमरणयोगाः	२८५
मातुर्निर्याणम्-भ्रातृनिर्याणम्	२८५
ज्येष्ठभ्रातुर्निर्याणम्	२८६
भगिनी-पुत्रयोर्निर्याणम्	२८६
कलत्रनिर्याणम्-अन्येषां निर्याणम्	२८६
मृत्युसमये कष्टादिज्ञानम्	२८६
मरणनिमित्तान्याह	२८७
मरणप्रदेशज्ञानम्	२८८
ज्ञानपूर्वकमृत्युयोगः	२८८
मारकभेदाध्याय	२८९

अष्टकवर्गाध्यायः

रवेरष्टकवर्गः-चंद्राष्टकवर्गः	२९२
भौमाष्टकवर्गः, भौमाष्टक चक्र	२९३
बुधाष्टकवर्गः-गुर्वष्टकवर्गः	२९४
शुक्राष्टकवर्गः, शुक्राष्टक चक्र	२९५
शनेरष्टकवर्गः-अष्टकवर्ग साधन	२९६
त्रिकोणशोधनम्	२९९
एकाधिपत्यशोधनम्	३०१

पिण्डोत्पत्यध्यायः

राशिग्रहगुणकध्रुवाङ्काः	३०२
राशिगुणकचक्रम्-ग्रहगुणकचक्रम्	३०२
सूर्याष्टकवर्ग-चंद्राष्टकवर्गशोधनम्	३०३
भौमाष्टकवर्गशोधनम्	३०३
बुधाष्टकवर्ग-गुर्वष्टकवर्ग शोधनम्	३०४
शुक्राष्टकवर्गशोधनम्	३०४
शन्यष्टकवर्ग-लग्नाष्टकवर्गशोधनम्	३०५
सर्वाष्टकवर्गचक्रम्	३०५

अष्टकवर्गफलाध्यायः

ग्रहैः विचार्यविषयाः	३०६
सूर्याष्टकवर्गफलम्	३०७
पित्रोररष्टिकालमाह	३०७
पितृकर्मकर्त्तायोगः	३०८
पितृसुखयोगः-विशेषफलमाह	३०८
चंद्राष्टकवर्गफलविचारः	३०९
भौमाष्टकवर्गफलम्	३१०
बुधाष्टक-गुर्वष्टक-वर्गफलम्	३११
शुक्राष्टकवर्गफलम्	३१२
शन्यष्टकवर्गफलम्	३१३
सर्वाष्टक(समुदायाष्टक)वर्गफलम्	३१५

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
भावफलम्	३१६
अरिष्टसमयज्ञानम्	३१७
अवस्थापरत्वेन शुभाशुभविचारः	३१७
राहुयुक्तगुरुफलम्-निधनार्कमाह	३१८
निधनचंद्रमाग,सशान्तिकरेखाफलं	३१९
शुभाशुभफलविचारः	३२२
पूर्वजन्मशापद्योतकाध्यायः	
द्वादशभावानां संज्ञा,शापज्ञानमाह	३२३
अनपत्ययोगाः, शान्ति माह	३२४
सर्पशापात्सुतक्षययोगाः	३२४
सर्पदोषमपाकरणाय नागपूजा	३२४
पितृशापात्सुतक्षययोगः	३२५
मातृशापात्सुतक्षययोगः	३२७
अथास्य शान्ति माह	३२९
भ्रातृशापात्सुतक्षययोगः	३२९
अस्य शान्तिमाह	३३१
मातुलात्सुतक्षययोगः	३३१
अस्य शान्तिमाह	३३२
ब्राह्मणशापात्सुतक्षययोगः	३३२
अस्य शान्तिमाह	३३३
पत्नीशापात्सुतक्षययोगः	३३३
अस्य शान्तिमाह	३३५
प्रेतशापात्सुतक्षययोगः	३३५
अस्यशान्तिमाह, बहुपुत्रयोगाः	३३७
अथानपत्ययोगाः	३३९
चिरकालात्पुत्रप्राप्तियोगाः	३३९
दत्तकपुत्रयोगाः	३४०
अस्य शान्तिमाह	३४१
दशाध्यायः	
दशाभेदमाह	३४२
विंशोत्तरी दशामाह	३४३
दशायां भुक्तभोग्यानयनम्	३४४
विंशोत्तरी दशा-ज्ञानार्थचक्रम्	३४४

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
षोडशोत्तरी दशाचक्रम्	३४५
द्वादशोत्तरी-अष्टोत्तरी दशामाह	३४६
पञ्चोत्तरी दशामाह	३४७
शताब्दिका दशामाह	३४८
चतुरशीत्यब्दिका दशामाह	३४९
द्विसप्ततिका दशामाह	३४९
षष्ट्यब्दिका दशामाह	३५०
षट्त्रिंशतिका-काल-दशामाह	३५१
चक्रदशामाह	३५२
स्पष्टार्थ चक्र,मतान्तरेण चक्रदशा	३५३
कालचक्रदशामाह	३५४
चक्रे नक्षत्रन्यासविधिः	३५४
देहजीवज्ञानप्रकारमाह	३५५
दशावर्षाणि-दशाज्ञानप्रकारमाह	३५८
नक्षत्रचरणतः नवांशज्ञानम्	३५८
चक्रे राशीनां वर्षयोग-संख्यामाह	३५९
दशारम्भज्ञानप्रकारमाह	३५९
कालचक्रदशा,कालचक्रगतिभेदमाह	३६०
कालचक्रदशायां सव्यमार्गचक्रम्	३६१
गतिफलम्, पुनःगतिफलमाह	३६४
कालचक्रांश-देहजीव-फलम्	३६५
चरदशानयनम्	३६६
द्विराश्यधिपतौ विशेषः	३६७
चरदशाफलमाह	३६८
चरदशा चक्रं नवांशस्थिरदशा	३६९
स्थिरदशाचक्रम् स्थिर-दशामाह	३७०
ब्रह्मग्रहलक्षणमाह	३७१
स्थिरदशाचक्रम्-ब्रह्मदशामाह	३७२
ब्रह्मदशाचक्रम्	३७२
केन्द्रदशामाह	३७३
कारकेन्द्रदशाचक्रम्,ग्रहदशामाह	३७४
मण्डूक-दशामण्डूकदशा चक्रम्	३७५
शूल-दशामाह, शूलदशा चक्रम्	३७६
योगार्दादशामाह-दृग्दशामाह	३७७

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
त्रिकोणदशा-त्रिकोणदशा चक्रम्	३८०
नक्षत्र-दशामाह	३८०
तारा-दशामाह	३८१
तारा दशा चक्रम्-वर्णददशामाह	३८२
पञ्चस्वर-दशामाह	३८३
योगिनी-दशामाह	३८४
पिण्डांशादि-सन्ध्या-दशामाह	३८५
सन्ध्यादशाचक्रम्-पाचकदशामाह	३८६
नवांशक-नवदशामाह	३८७
राश्यंशक-नक्षत्र-दशामाह	३८८
दशाफलाध्यायः	
विंशोत्तरीमतेन सूर्यदशाफलम्	३८९
विंशोत्तरीमतेन चंद्रदशाफलम्	३९०
विंशोत्तरीमतेन भौमदशाफलम्	३९२
विंशोत्तरीमतेन राहुदशाफलम्	३९३
विंशोत्तरीमतेन गुरुदशाफलम्	३९४
विंशोत्तरीमतेन शनिदशाफलम्	३९५
विंशोत्तरीमतेन बुधदशाफलम्	३९६
विंशोत्तरीमतेन केतुदशाफलम्	३९७
विंशोत्तरीमतेन शुक्रदशाफलम्	३९८
कुत्र विंशोत्तरीदशाग्रहणं कुत्राष्टोत्तरी-दशाग्रहणमिति विचारः	४००
अन्तर्दशादिफलविचाराध्यायः	
अन्तर्दशाऽऽनयनप्रकारमाह	४०७
अन्तर्दशाचक्रम्	४०७
ग्रहाणां फलदाने विशेषः	४०८
रविदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४१२
रविदशायां राह्वन्तर-दशाफलम्	४१३
रविदशायां गुर्वन्तर-द्रशाफलम्	४१४
रविदशायां शन्यन्तर-दशाफलम्	४१५
रविदशायां बुधान्तर-दशाफलम्	४१६
रविदशायां केत्वन्तर-दशाफलम्	४१८
रविदशायां शुक्रान्तर-दशाफलम्	४१९

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
चंद्रदशायां चंद्रान्तर-दशाफलम्	४२०
चंद्रदशायां भौमान्तर-दशाफलम्	४२१
चंद्रदशायां राह्वन्तर-दशाफलम्	४२१
चंद्रदशायां गुर्वन्तर-दशाफलम्	४२२
चंद्रदशायां शन्यन्तर-दशाफलम्	४२४
चंद्रदशायां बुधान्तर-दशाफलम्	४२५
चंद्रदशायां केत्वन्तर-दशाफलम्	४२६
चंद्रदशायां शुक्रान्तर-दशाफलम्	४२७
चंद्रदशायां सूर्यान्तर-दशाफलम्	४२८
भौमदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४२९
भौमदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्	४३०
भौमदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्	४३०
भौमदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्	४३२
भौमदशायां बुधान्तर्दशाफलम्	४३३
भौमदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्	४३५
भौमदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्	४३६
भौमदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्	४३७
भौमदशायां चंद्रान्तर्दशाफलम्	४३८
राहुदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्	४३९
राहुदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्	४४०
राहुदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्	४४१
राहुदशायां बुधान्तर्दशाफलम्	४४२
राहुदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्	४४४
राहुदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्	४४५
राहुदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्	४४६
राहुदशायां चंद्रान्तर्दशाफलम्	४४७
राहुदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४४८
गुरुदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्	४५०
गुरुदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्	४५०
गुरुदशायां बुधान्तर्दशाफलम्	४५२
गुरुदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्	४५३
गुरुदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्	४५४
गुरुदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्	४५६
गुरुदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्	४५७

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
गुरुदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४५८
गुरुदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्	४५९
शनिदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्	४६०
शनिदशायां बुधान्तर्दशाफलम्	४६०
शनिदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्	४६१
शनिदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्	४६२
शनिदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्	४६४
शनिदशायां चंद्रान्तर्दशाफलम्	४६५
शनिदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४६६
शनिदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्	४६७
शनिदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्	४६८
बुधदशायां बुधान्तर्दशाफलम्	४७०
बुधदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्	४७०
बुधदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्	४७१
बुधदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्	४७२
बुधदशायां चंद्रान्तर्दशाफलम्	४७३
बुधदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४७४
बुधदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्	४७५
बुधदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्	४७७
बुधदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्	४७८
केतुदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्	४७९
केतुदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्	४८०
केतुदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्	४८१
केतुदशायां चंद्रान्तर्दशाफलम्	४८२
केतुदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४८३
केतुदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्	४८४
केतुदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्	४८५
केतुदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्	४८६
केतुदशायां बुधान्तर्दशाफलम्	४८७
शुक्रदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्	४८९
शुक्रदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्	४९०
शुक्रदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्	४९१
शुक्रदशायां भौमान्तर्दशाफलम्	४९२
शुक्रदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्	४९३
शुक्रदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्	४९४
शुक्रदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्	४९५
शुक्रदशायां बुधान्तर्दशाफलम्	४९६
शुक्रदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्	४९७

प्रत्यन्तर्दशाऽध्यायः

प्रत्यन्तर्दशासाधनप्रकारः	४९८
सूर्यान्तरे सूर्यादीनांप्रत्यन्तरफलम्	४९९
चंद्रान्तरे चंद्रादीनांप्रत्यन्तरफलम्	५००
भौमान्तरे भौमादीनांप्रत्यन्तरफलं	५०१
राह्वन्तरे राह्वादीनांप्रत्यन्तरफलं	५०३
गुर्वन्तरे गुर्वादीनांप्रत्यन्तरफलम्	५०४
शन्यन्तरे शन्यादीनांप्रत्यन्तरफलं	५०५
बुधान्तरे बुधादीनांप्रत्यन्तरफलम्	५०६
केत्वन्तरे केत्वादीनांप्रत्यन्तरफलम्	५०८
शुक्रान्तरे शुक्रादीनांप्रत्यन्तरफलम्	५०९

सूक्ष्मान्तर्दशाऽध्यायः

सूक्ष्मान्तरानयनप्रकारः	५१०
सूर्यप्रत्यन्तरेसूर्यादीनांसूक्ष्मान्तर्दशा	५११
चंद्रप्रत्यन्तरे चन्द्रादीनांफलम्	५१२
भौमप्रत्यन्तरे भौमादीनांफलम्	५१३
राहुप्रत्यन्तरे राह्वादीनांफलम्	५१४
गुरुप्रत्यन्तरे गुर्वादीनांफलम्	५१६
शनिप्रत्यन्तरे शन्यादीनांफलम्	५१७
बुधप्रत्यन्तरे बुधादीनांफलम्	५१८
केतुप्रत्यन्तरे केत्वादीनांफलम्	५२०
शुक्रप्रत्यन्तरे शुक्रादीनांफलम्	५२१

प्राणदशाफलाध्यायः

प्राणदशानयनप्रकारः	५२२
सूर्यप्राणदशा चक्रम्-फलम्	५२३
चन्द्रप्राणदशाफलम्	५२४
भौमप्राणदशाफलम्	५२५
राहोः प्राणदशाफलम्	५२७
गुरोः प्राणदशाफलम्	५२८

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
शनेः प्राणदशाफलम्	५२९
बुध प्राणदशाफलम्	५३१
केतोः प्राणदशाफलम्	५३२
भृगोः प्राणदशाफलम्	५३३

समस्त-ज्योतिः शास्त्रतत्त्वकामधेनुरूपम्

सुदर्शन-चक्रम्, चक्र परिचय	५३५
भावविचार करने के नियम	५३६
राहुदृष्टिकथनं,ग्रहाणामुदयवर्षाणि	५३७

उत्तरार्द्धस्य विषयानुक्रमणिका

अष्टकवर्गाप्रथमध्यायः

भावानां शुभाशुभत्वम्	५३९
रवेः करणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्च	५४१
चंद्रस्य करणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्च	५४२
भौमस्य करणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्च	५४३
बुधस्य करणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्च	५४५
गुरोः करणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्च	५४६
भृगोः करणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्च	५४७
शने करणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्च	५४८
लग्नस्य करणसंख्यांकरणप्रदग्रहाः	५४९
रविभावस्थानप्रदान् ग्रहान् आह	५४९
चंद्र भावस्थानप्रदान् ग्रहानाह	५५०
भौम भावस्थान प्रदान् ग्रहानाह	५५१
बुध भावस्थान प्रदान् ग्रहानाह	५५२
गुरोः भावस्थान प्रदान् ग्रहानाह	५५२
भृगोः भावस्थान प्रदान् ग्रहानाह	५५३
शनेः भावस्थान प्रदान् ग्रहानाह	५५४
लग्नस्य भावस्थान प्रदान् ग्रहाः	५५५
राशिगुणक-ग्रहगुणक बोधक चक्रं	५५६

भावफल साधन द्वितीयोऽध्यायः

भावसाधनम्, स्पष्टग्रह चक्रं	५५७
दृष्टिबलसाधनम्, द्रष्टाचक्रम्	५५९
दृग्बल चक्रम्, उच्चबलसाधनम्	५६०
सप्तवर्गज-बल-साधनम्	५६१
युग्मायुग बल	५६२
केन्द्रादि-द्रेष्काणबलम्-दिग्बलम्	५६३
कालबल-नतोन्नतबलम्,पक्षबल	५६४
दिवारात्रि-त्रिभागबलम्	५६५
वर्षमासदिनहोरेशबलम्	५६५
वर्षेशादिसाधन	५६६
कालहोरेश-साधनम्	५६७
कालबल चक्रम्, अयनबलसाधन	५६७
युद्धादिबल, गति बलम्	५६८
चेष्टाबलम्-भौमादि के शीघ्रोच्च	५६९
नैसर्गिकबल-साधनम्-चक्रम्	५७०
ग्रहाणां षड्वलैक्यम्	५७०
षड्बलैक्यचक्र, भाव बल	५७१
विशेषसंस्कारः	५७२
कालविशेषे बलाधिक्यता	५७२
भावानां दिग्बलम्	५७२
षड्वलैक्ये शुभाशुभादिकम्	५७३
स्थानादिबले पृथक्-पृथक्-सुबलित्वम्-भावफलदाताग्रहः	५७३
अथैतच्छास्त्राधिकारिलक्षणम्	५७४

अथेष्टकष्टाध्याय स्तृतीयः

उच्चरश्मिसाधनम्,चेष्टारश्मिसाधन	५७४
शुभाशुभरश्मिसाधनम्	५७५
इष्टकष्टसाधनम्	५७५
सप्तवर्गजशुभाशुभसाधनम्	५७६
दिग्बलादौ शुभाशुभत्वम्	५७६
संग्रहे भावफले विशेषः	५७७
अष्टकवर्गे विशेषः	५७८

चतुर्थ रश्मिफलवर्णनाध्यायः

लग्नादिद्वादशभावात्विचार्यविषयाः	५७८
उच्चस्थानस्थरश्मिध्रुवाङ्कः	५७९

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
रश्मिचक्र, विशेष संस्कार	५८०
मतान्तरात् रश्मिहानिवृद्धिः	५८१
ग्रहाणां अष्टधागतिः	५८१
योगविशेषात् ह्रासवृद्धिः	५८२
द्विग्रहादियोगे निर्णयः	५८२
इष्टकष्टरश्मेः प्रयोजनम्	५८२
एकतः पञ्चरश्मि-योगफलम्	५८२
दशरश्मियोगफलम्	५८२
एकादशतो त्रयोदशपर्यन्त-चतुर्दशतः पञ्चदश, षोडशतः द्वाविंशतिपर्यन्त त्रिंशत्पर्यन्तरश्मिफलम्	५८३
एकत्रिंशतश्चतुस्त्रिंशद्यावद् पञ्चत्रिंशद्रश्मिफलम्	५८४
रश्मौ विशेषफलम्, राजयोगे विशेषः	५८५
योगानां फलव्यवस्था	५८५

लोकयात्रा प्रकरणम्

अष्टकवर्गरिखाणां फलम्	५८६
पूर्वभागोक्तानां राजयोगादीनां	५८६
मृत्युसमयज्ञानम्-त्रिकोणशोधनम्	५८७
पिण्डोत्पत्तिः-राशिगुणकाङ्कः	५८८
ग्रहगुणकाङ्कः-एकाधिपत्यशोधनम्	५८८
मातृपित्रोः मृत्युकालः	५९३
चतुर्थभावात्सूर्याच्चायुसाधनम्	५९४
ध्रुवाङ्कद्वारा आयु विचारः	५९४
रश्मितः आयुस्साधनम्	५९४
करणाद्यभावेकरणादि भावविचार	५९४
भावानां संस्कार विशेषाद्फल	५९५
प्रकारान्तरेण भावफलसाधनम्	५९५

अष्टकवर्गफल-पञ्चमोऽध्यायः

तत्रादाष्टकवर्गे विचारणीयः	५९६
पित्र्यरिष्टविचारः	५९७
पितृसुखयोगः	५९८
विशेषः सूर्याष्टकवर्गकथनम्	५९८
पितृमरणकालः	५९९
चंद्राष्टक-भौमाष्टक-वर्गफलम्	५९९
बुधाष्टक-गुर्वष्टक-वर्गफलम्	६००
शुक्राष्टक-शनेरष्टक-वर्गफलम्	६०१
अवस्थात्रयविचारः	६०२
सर्वाष्टकवर्गफलम्	६०३
भावफलं-समुदायाष्टकवर्गफलं	६०४
रेखाशान्ति-फलम्	६०५

प्रकीर्णा-षष्ठोध्यायः

भावानां फलसमयः	६०६
शुभापापभेदात्भावफले विशेषः	६०६
कारकविचारः	६१०
दृष्टिबलात् भावफलस्य व्यवस्था	६१०
स्त्रीपुरुषोः स्वभावविचारः	६१०
स्वभावे ह्रासवृद्धिः	६१०
सूर्यादिग्रहाणां स्थानसम्बन्धादिग्रहाः	६११
सूर्यादिग्रहाणां गोचरे फलकालः	६१२

भावफलविवेकः सप्तमोध्यायः

भावफलानामवधि	६१२

भङ्गयोगाऽष्टमोध्यायः

योगानां भङ्गयोग	६१३

भावानां संज्ञा-नवमोऽध्यायः

भावानां संज्ञा	६१४
ग्रहाद् भावविचारः	६१५

आयुविमर्शाऽदशमोऽध्यायः

आयुषः प्रकारान्तराणि	६१७
पिण्डायुषः ध्रुवाङ्काः	६१७
नैसर्गिक-रश्मिजायुषो ध्रुवाङ्काः	६१८
ध्रुवाङ्केभ्यो आयुस्साधनप्रकारः	६१८
नवांशायुर्दायसाधनम्, विशेषः	६१९
अष्टकवर्गायुसाधनम्	६१९
नवांशायुर्दाये ध्रुवाङ्काः	६२०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
नक्षत्रायुर्दायानयनम्	६२०
भावायुर्दायसाधनम्	६२१
आयुष्ययोगा-एकादशोऽध्यायः	
आयुषः ह्रासवृद्धिः योगः	६२१
आयुष्ययोगाः-केन्द्रादि-आयुष्यम्	६२२
पूर्वोक्तायुषे हानिः	६२३
अस्तङ्गतग्रहस्य तथा च लग्नस्यायुः	६२४
लग्ने क्रूरे ग्रहे सति	६२५
अष्टमभावे केन्द्रे च शुभपापयोगे	६२५
राहुयुक्त चंद्रस्यायुर्विचारः	६२६
द्रेष्काणवशात् हानिवृद्धिः	६२६
अष्टकवर्गोत्पन्न-अंशायुषिहरणम्	६२७
अन्तर्दशा-प्रकारः	६२७
समच्छेदाभावस्थानम्	६२८
अन्तर्दशायां नियमः	६२८
द्वादशआयुर्दाय-प्रकरणाध्यायः	
पिण्डांयुषि भेदानि	६२९
आयुषः ग्रहणे नियमः	६२९
भावानुसारेणायुर्विचारः	६३१
मिश्रायुर्दायक्रम,आयुर्दायस्यसंख्या	६३१
अमिश्रायुषोः भेदः	६३२
पिण्डायुषः भेदः	६३२
रश्मिवशेनायुर्गहणे नियमः	६३४
पूर्वोक्तायुषः पुष्टिमाह	६३५
भाग्यादि-त्रयोदशोः फलाध्यायः	
विचारस्य रीतिः	६३६
दशवर्गरीत्याभाग्योदयस्यविचारः	६३७
भाग्योदयसमयः	६३७
ग्रहाणांविशेषफलानि	६३८
सूर्यस्य फलम्-चंद्रस्य फलम्	६३८
भौमस्य फलम्, बुधस्य फलम्	६३९
गुरोः फलम्	६४०
भृगोः फलम्, शनेः फलम्	६४१

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
भावानां विशेषविचारः	६४२
अब्दचर्यावर्णना-चतुर्दशोऽध्यायः	
मुहूर्त्तलक्षणम्	६४३
विनाडेः द्वात्रिंशन्मुहूर्त्ताः	६४४
षष्टिघट्यात्मकमुहूर्त्ताः	६४४
कालांश राशिचक्रमुहूर्त्तः	६४४
नित्योदयस्य क्रमः	६४५
नित्योदयघटीप्रमाणम्	६४५
मेषादिराशीनां उदय घटी मान	६४५
दशवर्गानां फलम्	६४६
राहोः गतिः	६४७
अस्य प्रयोजनं-पित्र्याद्यरिष्टविचारः	६४८
सुगतिदुर्गतिअंश-कुब्जादियोगाः	६४९
योगान्तरम्-मृत्युकालज्ञानम्	६५०
अल्पमध्यदीर्घायुर्ज्ञानम्	६५०
चतुर्दशग्रहाणां षष्ट्यंशादिः	६५०
नक्षत्रगणनाक्रमः	६५१
कालांशाद्युत्पत्तौ फलम्	६५१
षष्ट्यंशोत्पत्तौ फलम्	६५२
मृतपुत्र-कन्यायोगः-सन्यांसयोगः	६५२
परमहंसादियोगाः	६५३
प्रव्रज्यायां निष्ठायोगः	६५३
अंशविशेषे जातायां स्त्रीलक्षणम्	६५४
दशमभावानुसारफलम्	६५५
मेषादिराशीनां फलानि	६५६
सूर्यादीनां कालांशफलम्	६५६
षष्ठ्यंशफलम्	६५७
षष्ठ्यंशे विशेषः	६५८
मरणनिमित्तानि	६५९
नवांशद्वारा मरणनिमित्तानि	६५९
राशिनिमित्ततो मृत्युविचारः	६५९
कालादि-सूर्यान्त-चतुर्दशग्रहाणा-मंशेन मृत्युज्ञानम्	६६०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विषयाः	पृष्ठ-संख्या
रश्मिद्वारा वर्षानयने हरांशज्ञानम्	६६०
अंशायुहारः, राशीनामंशायुर्दायेहारः	६६१
पूर्वोक्तानां फलविचारः	६६१
योगज्ञानम्	६६२
योगान्तराणि	६६३
अन्यविशेषः	६६४
वर्षचर्यादि-फलाध्यायः ॥१५॥	
तत्रादौ रश्म्यंशफलम्	६६५
सूर्यादिग्रहाणां द्वादशभावफलम्	६७०
चंद्रस्य द्वादशभावफलम्	६७१
भौमस्य-बुधस्य-द्वादशभावफलं	६७२
गुरु-शुक्रयोः द्वादशभावफलम्	६७३
शनेः स्थानान्तरफलम्	६७३
ग्रहाणांदृष्टिवशात् सूर्यादीनांफलं	६७३
चन्द्रस्य, भौमस्य, बुधस्य फलम्	६७४
गुरोः फलम्, भृगोः फलम्	६७५
स्थानबलयुक्तसूर्यादिग्रहाणां फलं	६७५
दिग्बल युक्त ग्रहाणां फलम्	६७६
काल-अयनबलयुक्तग्रहफलम्	६७७
चेष्टाबलयुक्त-इष्टबलानुसारेण	६७७
फलांतरम्, दशाफलम्	६७८
मासचर्याप्रकरणम् ॥१६॥	
भावसन्धिस्थग्रहाणां-भावानांफलं	६७९
भावानां स्थानाङ्कसंख्यामाह	६८०
भावानां करण (रेखा) संख्यामाह	६८०
पूर्वोक्तस्थान-करणसंख्यानां-शुभाऽशुभत्वम्, विशेषफलम्	६८०
जातिदेशानुसारेणफले तारतम्यम्	६८१
दिनचर्याप्रकरणम् ॥१७॥	
स्थानप्रद-करणप्रदग्रहाणां फलम्	६८१
उपसंहारः	६८२
प्रश्नाऽध्यायः ॥१८॥	
मैत्रेय उवाच उपास्यविवेचनम्	६८३
ज्योतिः षशास्त्रज्ञाने उपायः	६८३
विनियोगादिकम्-दैवज्ञ-लक्षणम्	६८४
प्रश्नकर्तुः नियमः-दैवज्ञस्य कर्त्तव्यः	६८५
आरूढ़लग्नादायुर्निर्णयः	६८६
योगान्तरम्-मृत्युलक्षणम्	६८६
राहुकाल-समायोग-लक्षणम्	६८६
नक्षत्रतिथिवारेषु दिशाक्रमः	६८७
द्वितीयभावादष्टमभावपर्यन्तम्	६८७
रोगिणः मृत्युसम्बन्धीप्रश्नः	६८८
नक्षत्रक्रमेण कालस्थानवयवाः	६८९
प्रश्नकर्तु-अशुभलक्षणं शुभप्रश्नश्च	६८९
अयनादिज्ञानम्	६८९
वर्षमासतिथिज्ञानम्-वर्ष-ज्ञानम्	६९०
प्राणलग्नादेः ज्ञानम्	६९०
जन्म नक्षत्र ज्ञानम्	६९१
प्रकारान्तरेण मासादिज्ञानम्	६९१
लग्न-बल-विचारः-दृष्टिविचारः	६९२
ग्रहाणांस्थानदिग्बलम्,अयनबलम्	६९२
पक्ष-चेष्टा-दिवा-रात्रिबलम्	६९३
दशवर्गबलम्	६९३
प्रश्नलग्नाज्जन्मलग्नादीनां ज्ञानम्	६९३
शास्त्रस्य वेदाङ्गत्वप्रतिपादनम्	६९४
अध्यायानुक्रमः ॥१९॥	
पूर्वभागस्यानुक्रमणिका	६९४
उत्तरार्द्धस्यानुक्रमणिका	६९५
शास्त्रफलं शास्त्रपरम्परा च ॥२०॥	
शास्त्रफल तथा शास्त्रपरम्परा	६९६
विंशोत्तरीमहादशायाम्	
अन्तर्दशादिचक्रम्	६९७
विंशोत्तरीमहादशायाम्-प्रत्यन्तर्दशाचक्रम्	६९९
नवांशदशावर्षान्तर्दशादिचक्रम्	७०७

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

❖ श्रीगणेशायनमः ❖

अथ बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्

भाषा-टीका-सहितम्

❖

पूर्वार्धम्

श्रीगणेशं गुरुं नत्वा नत्वाम्बां सुमतिप्रदाम् ।
पाराशरीयहोरायाः कुर्वे टीकां सुबोधिनीम् ॥ १ ॥

मैत्रेय उवाच-

नमस्तस्मै भगवते बोधरूपाय सर्वदा ।
परमानन्दकन्दाय गुरवेऽज्ञानध्वंसिने ॥ १ ॥
इति स्तुत्या सुसंहृष्टो मुनिस्तत्त्वविदाम्बरः ।
अथादिदेश सच्छास्त्रं सारं यज्ज्योतिषां शुभम् ॥ २ ॥

मैत्रेय जी ज्योतिषशास्त्र के सार पदार्थ को जानने के लिये पाराशर जी की स्तुति करते हैं। अज्ञान को नाश करने वाले, परम आनन्द को देनेवाले, सर्वदा ज्ञान को देनेवाले भगवन् परमपूज्य आपको नमस्कार है। इस स्तुति से तत्त्व के जानने वालों में श्रेष्ठ मुनि प्रसन्न होकर ज्यौतिष (ग्रहों) के शुभ तत्त्व शास्त्र का आदेश करने लगे॥ १-२॥

पराशर उवाच-

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शुक्लाम्बरधरां गिरम् ।
प्रणम्य पाञ्चजन्यं च वीणां याभ्यां धृतं द्वयम् ॥ ३ ॥
सूर्यं नत्वा ग्रहपतिं जगदुत्पत्तिकारणम् ।
वक्ष्यामि वेदनयनं यथा ब्रह्ममुखाच्छ्रुतम् ॥ ४ ॥

पराशर जी बोले-सफेद वस्त्र को धारण किये हुये, पांचजन्य को लिये हुये विष्णु को एवं सफेद वस्त्र को धारण किये हुये, वीणा को लिये हुए सरस्वती को प्रणाम कर॥ ३॥ संसार की उत्पत्ति के कारण ग्रहों के स्वामी सूर्य को नमस्कार करके जैसा मैंने ब्रह्मा के मुख से सुना है, वैसा ही वेद के नेत्र को (ज्यौतिष शास्त्र को) कहूँगा॥ ४॥

शान्ताय गुरुभक्ताय ऋजवेऽर्चितस्वामिने ।
आस्तिकाय प्रदातव्यं ततः श्रेयो ह्यवाप्यति ॥ ५ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

न देयं परशिष्याय नास्तिकाय शठाय च ।
दत्ते प्रतिदिनं दुःखं जायते नात्र संशयः ॥ ६ ॥

इस शास्त्रको शान्तस्वभाव गुरुभक्त, सीधे, स्वामिभक्त और आस्तिक को देना चाहिए। इससे कल्याण की प्राप्ति होती है।। ५।। दूसरे के शिष्य, नास्तिक और मूर्ख को नहीं देना चाहिये। ऐसा करनेसे प्रतिदिन दुःख होता है, इसमें संशय नहीं है॥ ६॥

अथ सृष्ट्यारम्भमाह (१)

एकोऽव्यक्तात्मको विष्णुरनादिः प्रभुरीश्वरः ।
शुद्धसत्त्वो जगत्स्वामी निर्गुणस्त्रिगुणान्वितः ॥ ७ ॥
संसारकारकः श्रीमान्नियमित्तात्मा प्रतापवान् ।
एकांशेन जगत्सर्वं सृजत्यवति लीलया ॥ ८ ॥

एक अव्यक्त आत्मावाले विष्णु हैं जो कि अनादि, समर्थ, ईश्वर, शुद्ध सतोगुणी जगत् के स्वामी, निर्गुण होते हुए भी तीनों गुणों से युक्त हैं।।७।। संसार को बनाने वाले सर्वसम्पत्ति से युक्त, नियतात्मा वाले, प्रतापी हैं। वे अपने एक अंश से सम्पूर्ण जगत् की लीला से ही रचना करते और पालन करते हैं॥ ८॥

त्रिपादं तस्य देवस्य ह्यमृतं तत्त्वदर्शिभिः ।
विदन्ति तत्प्रमाणं च सप्रधानं तथैकपात् ॥ ९ ॥
व्यक्ताव्यक्तात्मको विष्णुर्वासुदेवस्तु गीयते ।
यदव्यक्तात्मको विष्णुः शक्तिद्वयसमन्वितः ॥ १० ॥

इसके तीन चरण अमृतमय हैं, जिसे तत्त्वदर्शी लोग जानते हैं। प्रधान के सहित प्रमाण स्वरूप एक चरण से। ९। व्यक्त और अव्यक्त आत्मावाले विष्णु को वासुदेव कहते हैं। जो अव्यक्त विष्णु हैं, वे दो शक्तियों से युक्त हैं। १०।

व्यक्तात्मकस्त्रिशक्तीभिः संयुतोऽनन्तशक्तिमान् ।
सत्त्वप्रधाना श्रीशक्तिर्भूशक्तिश्च रजोगुणः ॥ ११ ॥
शक्तिस्तृतीया प्रोक्ता नीलाख्या ध्वांतरूपिणी ।
वासुदेवश्चतुर्थोऽभूच्छ्रीशक्त्या प्रेरितो यदा ॥ १२ ॥

व्यक्त आत्मावाले विष्णु तीन शक्तियों से युक्त होने से अनन्त शक्तिवाले कहे जाते हैं। तीनों शक्तियों में श्रीशक्ति, सत्त्वगुण प्रधान,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भूशक्ति रजोगुण प्रधान है॥ ११॥ तीसरी नील शक्ति तमोगुण प्रधान है। इनसे भिन्न श्रीशक्ति से प्रेरित चौथे वासुदेव हैं॥ १२॥

संकर्षणश्च प्रद्युम्नोऽनिरुद्ध इति मूर्त्तिधृक्।
तमः शक्त्यान्वितो विष्णुर्देवः संकर्षणाभिधः॥ १३॥

वे सङ्कर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध नामक मूर्ति को तमः शक्ति से युक्त विष्णु संकर्षण नाम से धारण करते हैं, ॥ १३॥

प्रद्युम्नो रजसा शक्त्याऽनिरुद्धः सत्त्वया युतः।
महान्सङ्कर्षणाज्जातः प्रद्युम्नादहंकृतिः॥ १४॥
अहंकारात्स्वयं जातो ब्रह्माहङ्कारमूर्तिधृक्।
सर्वेषु सर्वशक्तिश्च स्वशक्त्याधिकया युतः॥ १५॥

रज शक्ति से प्रद्युम्न, सत्त्व शक्ति से युक्त अनिरुद्ध होते हैं। संकर्षण से महत्तत्व की उत्पत्ति और प्रद्युम्न से अंहकार की उत्पत्ति हुई।। १४।। अहंकार से अहंकार की मूर्त्ति को धारण किये हुए ब्रह्मा हुए। सभी लोगों में सभी शक्तियाँ हैं, किन्तु जिस शक्ति से जो उत्पन्न हुये हैं वह शक्ति उनमें अधिक है॥ १५॥

अहंकारस्त्रिधा भूत्वा सर्वमेतदविस्तराद्।
सात्त्विको राजसश्चैव तामसश्चेदहंकृतिः॥ १६॥
देवा वैकारिकाज्जातास्तैजसादिन्द्रियाणि च।
तामसाश्चैव भूतानि खादीनि स्वशक्तिभिः॥ १७॥

अहंकार भी सात्त्विक, राजस, तामस क्रम से वैकारिक, तैजस और तामस नाम से तीन प्रकार का है॥ १६॥ वैकारिक से देवता, तैजस से इन्द्रिय और तामस से पंचमहाभूतों की उत्पत्ति हुई है। ये सभी अपनी-अपनी शक्ति से सम्पन्न हैं॥ १७॥

श्रीशक्त्या सहितो विष्णुः सदा पातिजगत्त्रयम्।
भूशक्त्या सृजतेविष्णुर्नीलशक्त्या युतोऽत्ति हि॥ १८॥
सर्वेषु चैव जीवेषु परमात्मा विराजते।
सर्वं हि तदिदं ब्रह्मन् स्थितं हि परमात्मनि॥ १९॥

श्रीशक्ति से युक्त होकर विष्णु (वासुदेव) तीनों लोकों का पालन करते हैं, भू-शक्ति से (विष्णु) ब्रह्मा जगत् की सृष्टि करते हैं और नीलशक्ति-सम्पन्न शिव तीनों लोकों का लय करते हैं॥ १८॥ हे ब्रह्मन्! सभी जीवों में परमात्मा स्थित हैं और यह समस्त जगत् परमात्मा में स्थित है॥ १९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वेषु चैव जीवेषु स्थितं ह्यंशद्वयं क्वचित् ।
जीवांशमधिकं तद्वत्परमात्मांशकः किल ॥ २० ॥
सूर्यादयो ग्रहाः सर्वे ब्रह्मकामद्विषादयः ।
एते चान्ये च बहवः परमात्मांशकाधिकाः ॥ २१ ॥

सभी जीवों में दो अंश होते हैं, किसी में जीवांश अधिक होता है और किसी में परमात्मांश अधिक होता है॥ २० ॥ सूर्यादि ग्रहों में, ब्रह्मा, शिव आदि देवता तथा अन्य अवतारों में परमात्मांश अधिक होता है॥ २१ ॥

शक्तयश्च तथैतेषामधिकांशाः श्रियादयः ।
अन्यासु स्वस्वशक्तीषु ज्ञेया जीवांशकाधिकाः ॥ २२ ॥

इनकी जो शक्तियाँ (लक्ष्मी आदि) हैं इनमें भी परमात्मांश अधिक होता है। अन्य देवताओं और उनकी शक्तियों में जीवांश अधिक होता है।२२।

अवतारवादः

पराशरजी के उत्तर से शंकित हो मैत्रेयजी ने पुनः प्रश्न किया।

मैत्रेय उवाच-

रामकृष्णादयो ये च ह्यवतारा रमापतेः ।
तेऽपि जीवांशसंयुक्ताः किं वा ब्रूहि मुनीश्वर ॥ २३ ॥

मैत्रेयजी बोले- हे मुनीश्वर! राम, कृष्ण आदि जो विष्णु के अवतार हैं, क्या वे भी जीवांश से युक्त हैं॥ २३ ॥

पराशर उवाच-

रामः कृष्णश्च भो विप्र! नृसिंहः शूकरस्तथा ।
इति पूर्णावतारश्च ह्यन्ये जीवांशकान्विताः ॥ २४ ॥
अवताराण्यनेकानि ह्यजस्य परमात्मनः ।
जीवानां कर्मफलदो ग्रहरूपी जनार्दनः ॥ २५ ॥

पराशरजी बोले- हे विप्र! राम, कृष्ण, नृसिंह और शूकर ये पूर्ण अवतार हैं। अन्य अवतार जीवांश से युक्त हैं॥ २४॥ अजन्मा परमात्मा के अनेक अवतार हैं। जीवों के कर्मानुसार फल देने के लिये ग्रहरूप जनार्दन भगवान् के अवतार हैं॥ २५ ॥

दैत्यानां बलनाशाय देवानां बलवृद्धये ।
धर्मसंस्थापनार्थाय ग्रहाज्जाताः शुभाः क्रमात् ॥ २६ ॥

दैत्यों के बलको नाश करनेके लिये और देवताओं का बल बढ़ाने के लिये तथा धर्म को स्थापित करने के लिए ग्रहों से शुभद अवतार हुये हैं।२६।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रामोऽवतारः सूर्यस्य चन्द्रस्य यदुनायकः ।
नृसिंहो भूमिपुत्रस्य बुद्धः सोमसुतस्य च ॥ २७॥
वामनो विबुधेज्यस्य भार्गवो भार्गवस्य च ।
कूर्मो भास्करपुत्रस्य सैंहिकेयस्य शूकरः ॥ २८॥

जैसे सूर्यका रामावतार, चन्द्रमा का कृष्णावतार, भौम का नृसिंहावतार, बुध का बौद्धावतार है। २७। बृहस्पति का वामन अवतार, शुक्र का भार्गव (परशुराम) अवतार, शनिका कूर्म अवतार, राहुका शूकर अवतार है। २८।

केतोर्मीनावतारश्च ये चान्ये तेऽपि खेटजाः ।
परमात्मांशमधिकं येषु ते च वै खेचराभिधाः ॥ २९॥

केतु का मत्स्यावतार हुआ है, अन्य अवतार भी ग्रहों से ही हुये हैं। जिनमें परमात्मांश अधिक है, वे खेचर यानी देव कहे जाते हैं॥ २९॥

जीवांशमधिकं येषु जीवास्ते वै प्रकीर्तिताः ।
सूर्यादिभ्यो ग्रहेभ्यश्च परमात्मांशनिःसृताः ॥ ३०॥
रामकृष्णादयः सर्वे ह्यवतारा भवन्ति वै ।
तत्रैव ते विलीयन्ते पुनः कार्यान्तरे सदा ॥ ३१॥

जिनमें जीवांश अधिक हैं वे जीव कहे जाते हैं। सूर्य आदि ग्रहों से परमात्मांश निकलकर ही राम, कृष्ण आदि अवतार हुये हैं। वे अपने-अपने कार्यों को करके पुनः उन्हीं में लीन हो जाते हैं॥ ३०-३१॥

जीवांशनिःसृतास्तेषां तेभ्यो जाता नरादयः ।
तेऽपि तथैव लीयन्ते तेऽव्यक्ते समयान्ति हि ॥ ३२॥

उन्हीं (सूर्यादिग्रहों) में से जीवांश के निकलने से मनुष्य आदि जीवों की सृष्टि होती है, वे भी इहलोक में अपने-अपने कार्यों को करके अन्त में उन्हीं में लीन हो जाते हैं। ये ग्रह भी प्रलय के समय अव्यक्त परमात्मा में लीन हो जाते हैं॥ ३२॥

इदं ते कथितं विप्र स यस्मिन् वै भवेदिति ।
भूतान्यपि भविष्यन्ति तत्तत्सर्वज्ञतामियात् ॥ ३३॥
विना तज्ज्ञयौतिषं नान्यो ज्ञातुं शक्नोति कर्हिचित् ।
तस्मादवश्यमध्येयं ब्राह्मणैश्च विशेषतः ॥ ३४॥

हे विप्र! इस प्रकार से मैंने सृष्टिकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय जैसे होती है, हुई है और होगी– उन सभी को तुम से कहा। इन सबको वही सर्वज्ञ

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

(परमात्मांश पुरुष) ही जानता है। ३३। इन सभी बातों को बिना ज्यौतिष शास्त्र के कोई कभी भी नहीं जान सकता है। इसलिये इस शास्त्र का अध्ययन अवश्य करना चाहिये, विशेषकर ब्राह्मण को अवश्य करना चाहिए। ३४।

यो नरः शास्त्रमज्ञात्वा ज्यौतिषं खलु निन्दति ।
रौरवं नरकं भुक्त्वा चान्धत्वं चान्यजन्मनि ॥ ३५ ॥

इति बृहत्पाराशरहोरायां पूर्वखंडे सृष्ट्यादिक्रमशास्त्रावतरणं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

जो मनुष्य इस शास्त्र को न जानते हुये ज्यौतिष शास्त्र की निन्दा करता है वह रौरवनरक को भोगकर दूसरे जन्म में अन्धा होता है॥ ३५ ॥

इति पाराशरहोरायां सुबोधिन्यां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

❖

अथ राशिप्रभेदाध्यायः (२)

मैत्रेय उवाच-

यदव्यक्तात्मको विष्णुः कालरूपो जनार्दनः ।
तस्याङ्गानि निबोध त्वं क्रमान्मेषादिराशयः ॥ १ ॥

मैत्रेयजी बोले-जो व्यक्त (प्रकट रूप) विष्णु, काल (समय) रूपी जनार्दन हैं उनके अंगों का ज्ञान क्रम से मेषादि राशियों द्वारा बताइये॥ १ ॥

पराशर उवाच-

अहोरात्र्याद्यन्तलोपाद्धोरेति प्रोच्यते बुधैः ।
तस्य हि ज्ञानमात्रेण जातकर्म फलं वदेत् ॥ २ ॥
मेषो वृषश्च मिथुनः कर्कसिंहकुमारिकाः ।
तुलालिधनुषो नक्रकुम्भमीनास्ततः परम् ॥ ३ ॥

पराशरजी बोले-अहोरात्र शब्द के आदिम वर्ण 'अ' और अन्तिम वर्ण 'त्र' का लोप हो जाने से होरा शब्द होता है, जिसका ज्ञान होने से जातक के शुभ-अशुभ फल का ज्ञान होता है॥ २॥ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन- ये बारह राशियाँ हैं॥ ३॥

शीर्षाननौ तथा बाहू हृत्क्रोडकटिबस्तयः ।
गुह्योरुजानुयुग्मे वै युगले जङ्घके तथा ॥ ४ ॥

जन्म लग्न से उक्त बारह राशियाँ क्रम से सिर, मुख, दोनों भुजायें, हृदय, पेट, कटि, बस्ति (नाभिलिङ्ग के मध्यभाग को बस्ति कहते हैं), गुह्यस्थान (स्त्री-पुरुष के चिह्न) ऊरु, दोनों जानु, जंघे हैं॥ ४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चरणौ द्वौ तथा लग्नात् ज्ञेयाः शीर्षादयः क्रमात् ।
चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरौ नरस्त्रियौ ॥ ५ ॥

दोनों चरण काल पुरुष के अङ्ग में हैं। मेषादि राशियों के क्रम से चर, स्थिर, द्विस्वभाव तथा क्रूर, शुभ और पुरुष-स्त्री संज्ञायें हैं॥ ५ ॥

पित्तानिलस्त्रिधा त्वैक्यं श्लेष्मिकाश्च क्रियादयः ।
रक्तवर्णो बृहद्गात्रश्चतुष्पाद्रात्रिविक्रमी ॥ ६ ॥

पित्त, वायु, पित्त-वायु-कफ तीनों मिले हुये, और कफ प्रकृति है। मेष राशि का लाल वर्ण, बड़ा शरीर, चार पैर, रात में बलवान् है॥ ६ ॥

अथ मेषराशिस्वरूपम्-

पूर्ववासी नृपज्ञातिः शैलचारी रजोगुणी ।
पृष्ठोदयी पावकी च मेषराशिः कुजाधिपः ॥ ७ ॥

पूर्व दिशा, क्षत्रिय वर्ण, पर्वतीय प्रदेश में घूमनेवाली, रजोगुणी, पृष्ठोदयी अग्निराशि है और इसके स्वामी मंगल हैं॥ ७ ॥

अथ वृषराशिस्वरूपम्-

श्वेतः शुक्राधिपो दीर्घः चतुष्पादाच्छर्वरी बली ।
याम्येट् ग्राम्यो वणिग्भूमिः स्त्री पृष्ठोदयी वृषः ॥ ८ ॥

वृष राशि का श्वेत (सफेद) वर्ण, लम्बा शरीर, चार पैर, रात्रि बली, दक्षिण दिशा, ग्रामवासी, वैश्यवर्ण, भूमिप्रिय, पृष्ठोदयी है और शुक्र इसके स्वामी हैं॥ ८ ॥

अथ मिथुनराशिस्वरूपम्-

शीर्षोदयी नृमिथुनं सगदं च सवीणकम् ।
प्रत्यक्स्वामी द्विपाद्रात्रिबली ग्राम्याग्रगोऽनिली ॥ ९ ॥
समगात्रो हरिद्वर्णो मिथुनाख्यो बुधाधिपः ।

मिथुन राशि शीर्षोदय, पुरुष-स्त्री, पुरुष गदा को लिये और स्त्री वीणा को लिये हुए, पश्चिम दिशा का स्वामी, द्विपद, रात्रिबली, ग्राम में रहने वाला, वायु प्रकृति है। ९। समान (चौखूटी) शरीर, हरे रंग की है और बुध इसके स्वामी हैं।

अथ कर्कराशिस्वरूपम्-

पाटलो वनचारी च ब्राह्मणो निशिवीर्यवान् ॥ १० ॥
बहुपटुतरः स्थौल्यतनुः सत्त्वगुणी बली ।
पृष्ठोदयी कर्कराशिर्मृगाङ्कोऽधिपतिः स्मृतः ॥ ११ ॥

कर्क राशि का पाटल (थोड़ा लाल और सफेद मिला हुआ।) वर्ण, वनचारी, ब्राह्मण वर्ण, रात में बली है॥ १० ॥ अत्यन्त विद्वान्, स्थूल शरीर, जल में रहने वाली, पृष्ठोदयी राशि है और चन्द्रमा इसके स्वामी हैं॥ ११ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ सिंहराशिस्वरूपम्-

सिंहः सूर्याधिपः सत्त्वी चतुष्पात्क्षत्रियो बली ।
शीर्षोदयी बृहद्गात्रः पांडुः पूर्वेद्युवीर्यवान् ॥ १२ ॥

सिंह राशि सतोगुणी, चतुष्पद, क्षत्रिय वर्ण, बलवान्, शीर्षोदयी राशि, लम्बा शरीर, पांडुवर्ण, पूर्वदिशा का स्वामी, दिन में बली है और सूर्य इसके स्वामी हैं॥ १२॥

अथ कन्याराशिस्वरूपम्-

पार्वतीयाथ कन्याख्या राशिर्दिनबलान्विता ।
शीर्षोदया च मध्याङ्गा द्विपाद्याभ्यचरा स्मृता ॥ १३ ॥

कन्या राशि पर्वत में विशेष रुचिवाली, दिवाबली, शीर्षोदयराशि, मध्यम शरीर, द्विपद, दक्षिण दिशा में रहनेवाली, वैश्यवर्ण है॥ १३ ॥

ससस्यदहना वैश्या चित्रवर्णा प्रभञ्जिनी ।
कुमारी तमसा युक्ता बालभावा बुधाधिपः ॥ १४ ॥

धान को भूनती हुई चित्र वर्ण (छींट) के वस्त्र को पहनी हुई कन्या, तमोगुण से युक्त बालभाव वाली है और बुध इसके स्वामी हैं॥ १४ ॥

अथ तुलाराशिस्वरूपम्-

शीर्षोदयी द्युवीर्याढ्यस्तथा शूद्रो रजोगुणी ।
शुक्रोऽधिपो पश्चिमेशो तुलो मध्यतनुर्द्विपात् ॥ १५ ॥

तुलाराशि शीर्षोदयी, दिवाबली, शूद्रवर्ण, रजोगुणी, पश्चिम दिशा की स्वामी, मध्यम शरीरवाली है और शुक्र स्वामी हैं॥ १५ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्वरूपम्-

शीर्षोदयोऽथ स्वल्पाङ्गो बहुपाद् ब्राह्मणो बली ।
सौम्यस्थो दिनवीर्याढ्यः पिशङ्गो जलभूचरः ॥ १६ ॥
रोमस्वाढ्योऽतितीक्ष्णाङ्गो वृश्चिकश्च कुजाधिपः ।

वृश्चिक राशि शीर्षोदय, छोटा शरीर, अनेक चरण, ब्राह्मण वर्ण, उत्तर दिशा में बली, दिवाबली, धूम्रवर्ण, जलीय भूमि पर चलने वाली है॥ १६ ॥ रोम से युक्त शरीर, अत्यन्त तीखे अंगोवाली है और भौम स्वामी हैं।

अथ धनूराशिस्वरूपम्-

अश्वजंङ्घोत्वथ धनुर्गुरु स्वामी च सात्त्विकः ॥ १७ ॥
पिंगलो निशि वीर्याढ्यः पावकः क्षत्रियोद्विपाद् ।
आदावन्ते चतुष्पाच्च समगात्रो धनुर्धरः ॥ १८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्वस्थो वसुधाचारी तेजवान्पृष्ठतोद्गमी ।

धनु राशि को घोड़े का जंघा है, सात्त्विक राशि है॥ १७॥ पिंगल वर्ण, रात्रिबली, अग्निराशि, क्षत्रिय वर्ण, पूर्वार्ध द्विपद और उत्तरार्ध चतुष्पद, समान शरीर, धनुष को लिये हुए है॥ १८॥ पूर्वदिशा का स्वामी, भूमि पर रहने वाली, तेजस्वी, पृष्ठोदयी है और गुरु इसके स्वामी हैं।

अथ मकरराशिस्वरूपम्-

मन्दाधिपस्तमी भौमी याम्येट् च निशिवीर्यवान् ॥ १९॥
पृष्ठोदयी बृहद्गात्रः मकरो जलभूचरः ।
आदौ चतुष्पादन्ते च द्विपदो जलगो मतः ॥ २०॥

मकर राशि तमोगुणी, भूतत्त्व, दक्षिण दिशा का स्वामी, रात्रिबली है॥ १९॥ पृष्ठोदयी, बड़ा शरीर, जलीय भूमि में चलनेवाली, पूर्वार्ध चतुष्पद और उत्तरार्ध द्विपद, जल में रहनेवाली है और शनि स्वामी हैं॥ २०॥

अथ कुम्भराशिस्वरूपम्-

कुम्भः कुम्भी नरो बभ्रुः वर्णमध्यतनुर्द्विपात् ।
द्युवीर्यो जलमध्यस्थो वातशीर्षोदयी तमः ॥ २१॥
शूद्रः पश्चिमदेशस्य स्वामी दैवाकरिः स्मृतः ।

कुम्भ राशि-घड़ा लिये हुये, पुरुष नेवले के रंग के जैसा (भूरा) वर्ण, मध्यम शरीर, द्विपद, दिवाबली, जल में रहने वाली (जलचर), वायु प्रकृति, शीर्षोदयी, तम प्रकृति है॥ २१॥ शूद्रवर्ण, पश्चिम देश वा दिशा का स्वामी है और शनि स्वामी हैं।

अथ मीनराशिस्वरूपम्-

मीनौ पुच्छास्य संलग्नौ मीनराशिर्दिवाबली ॥ २२॥
जली सत्त्वगुणाढ्यश्च स्वस्थो जलचरो द्विजः ।
अपदो मध्यदेही च सौम्यस्थो ह्युभयोदयी ॥ २३॥

मीनराशि-दो मछलियों में एक का मुख दूसरे की पूँछ में लगा हुआ स्वरूप, दिन में बली है॥ २२॥ जलचर, सतोगुणी, ब्राह्मण वर्ण, चरणहीन, मध्यम शरीर, उत्तर दिशा का स्वामी, उभयोदयी है॥ २३॥

सुराचार्याधिपश्चास्य राशीनां गदितं मया ।
त्रिंशद्भागात्मकः स्थूलसूक्ष्माकरफलाय च ॥ २४॥

गुरु स्वामी हैं। इस प्रकार मैंने ३० अंश के राशियों का स्वरूप कहा, इनके स्थूल और सूक्ष्म फल ग्रन्थों में कहे हुये हैं॥ २४॥

इति पाराशरहोरायां पूर्वखण्डे सुबोधिन्यां राशिस्वरूपाध्यायः द्वितीयः॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ ग्रहस्वरूपाध्यायः (३)

पराशर उवाच-

कालात्मा च दिवानाथो मनः कुमुदबांधवः ।
सत्त्वं कुजो विजानीयाद् बुधो वाणीप्रदायकः ॥ १ ॥

पराशरजी बोले- हे विप्र! सूर्य कालपुरुष (उत्पन्न पुरुष) की आत्मा चन्द्रमा मन, मंगल सत्त्व, बुध वाणी है॥ १ ॥

देवेज्यो ज्ञानसुखदो भृगुवीर्यप्रदायकः ।
विचार्यतामिदं सर्वं छायासूनुश्च दुःखदः ॥ २ ॥
राजानौ भानुहिमगू नेता ज्ञेयो धरात्मजः ।
बुधो राजकुमारश्च सचिवौ गुरुभार्गवौ ॥ ३ ॥

गुरु ज्ञान और सुख, और शुक्र बल के तथा शनि दुःख के स्वामी हैं॥ २॥ ग्रहोंमें सूर्य और चन्द्रमा राजा, मंगल नेता, बुध राजकुमार, गुरु और शुक्र मन्त्री हैं॥ ३ ॥

प्रेष्यको रविपुत्रश्च सेना स्वर्भानुपुच्छकौ ।
एवं क्रमेण वै विप्र! सूर्यादीनां विचिन्तयेत् ॥ ४ ॥
रक्तश्यामो दिवाधीशो गौरगात्रो निशाकरः ।
अत्युच्चाङ्गो रक्तभौमो दूर्वाश्यामो बुधस्तथा ॥ ५ ॥

शनि दास और सेना राहु तथा केतु हैं। इस प्रकार सूर्यादि ग्रहों से विचार करना चाहिये॥ ४॥ हे द्विजश्रेष्ठ ! सूर्य का श्यामता लिये हुए रक्तवर्ण, चन्द्रमा का गौरवर्ण, मंगल का ऊँचा शरीर रक्तवर्ण, बुध का दूर्वा के समान श्यामवर्ण है॥ ५ ॥

गौरगात्रो गुरुर्ज्ञेयः शुक्रः श्यामस्तथैव च ।
कृष्णदेहो रवेः पुत्रो ज्ञायते द्विजसत्तम ॥ ६ ॥

गुरु का गौरवर्ण, शुक्र का श्याम वर्ण और शनि का काला वर्ण है॥ ६ ॥

वह्नय्म्बुशिखिजा विष्णुर्विडौजशचिका द्विज ।
सूर्यादीनां खगानां च नाथाः ज्ञेया क्रमेण च ॥ ७ ॥

सूर्य के अग्नि, चन्द्रमा के जल, भौम के स्वामिकार्त्तिक, बुध के विष्णु, गुरु के इन्द्र, शुक्र के इन्द्राणी और शनि के ब्रह्मा स्वामी हैं॥ ७ ॥

क्लीवौ द्वौ सौम्यसौरी च युवतीन्दुभृगुर्द्विज ।
नरा शेषाश्च विज्ञेया भानुभौमौ गुरुस्तथा ॥ ८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अग्निभूमिनभस्तोयवायवः क्रमतो द्विज।
भौमादीनां ग्रहाणां च तत्त्वान्यामी प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥

बुध और शनि ये नपुंसक, चन्द्रमा और शुक्र स्त्रीग्रह और शेष सूर्य-भौम और गुरु ये पुरुषग्रह हैं॥ ८॥ भौमादि ग्रहों में क्रम से अग्नि, भूमि, आकाश, जल, वायु- ये तत्त्व हैं॥ ९॥

गुरुशुक्रौ विप्रवर्णौ कुजार्कौ क्षत्रियौ द्विज।
शशिसौम्यौ वैश्यवर्णौ शनिः शूद्रो द्विजोत्तम ॥ १० ॥
चन्द्रसूर्यगुरुसौम्या भृग्वारशनयो द्विज!।
सत्त्वं रजस्तम इति स्वभावो ज्ञायते क्रमात् ॥ ११ ॥

हे द्विजोत्तम गुरु-शुक्र का ब्राह्मण वर्ण, भौम-सूर्य का क्षत्रियवर्ण, चन्द्रमा-बुध का वैश्यवर्ण और शनि का शूद्र वर्ण है॥ १०॥ चन्द्र, सूर्य, गुरु-इनका सतोगुणी स्वभाव, बुध, शुक्र का रजोगुणी स्वभाव और भौम, शनि का तमोगुणी स्वभाव है॥ ११॥

मधुपिङ्गलदृक्सूर्यश्चतुरस्रः शुचिर्द्विज।
पित्तप्रकृतिको श्रीमान्पुमानल्पकचोद्विज! ॥ १२ ॥
बहुवातकफः प्राज्ञश्चन्द्रो वृत्ततनुर्द्विज!।
शुभदृक्मधुवाक्यश्च चंचलो मदनातुरः ॥ १३ ॥

चन्द्रमा-वायु और कफ से युक्त प्रकृति, बुद्धिमान्, गोला-शरीर, सुन्दर नेत्र, मीठे वचन बोलनेवाला, चंचल और कामी है॥ १३॥

क्रूर रक्तेक्षणो भौमश्चपलोदारमूर्तिकः।
पित्तप्रकृतिकः क्रोधी कृशमध्यतनुर्द्विज! ॥ १४ ॥
वपुः श्रेष्ठो श्लिष्टवाक्य ह्यतिहास्यरुचिर्बुधः।
पित्तवान्कफवान्विप्र मारुतप्रकृतिकस्तथा ॥ १५ ॥

भौम-क्रूर स्वभाव, रक्तवर्ण की दृष्टि, चपल, उदार स्वभाव, पित्त प्रकृति, क्रोधी, पतली मध्यम कद के शरीरवाला है॥ १४॥ बुध-अच्छा शरीर, तोतली बोली वाला, अत्यन्त हँसी करनेवाला, पित्त-कफ वायु से युक्त प्रकृतिवाला है॥ १५॥

बृहद्गात्रो गुरुश्चैव पिंगलो मूर्धजेक्षणः।
कफप्रकृतिको धीमान् सर्वशास्त्रविशारदः ॥ १६ ॥

गुरु-लम्बा शरीर, शिर के पीले केश और दृष्टि वाला, कफ प्रकृति, बुद्धिमान्, सभी शास्त्रों को जाननेवाला है॥ १६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुखी कान्तवपुः श्रेष्ठः सुलोचनो भृगोः सुतः ।
काव्यकर्त्ता कफाधिक्यानिलात्मा वक्रमूर्धजः ॥ १७॥
कृशदीर्घतनुः सौरिः पिंगदृष्ट्यनिलात्मकः ।
स्थूलदन्तोऽलसो पंगुः खररोमकचो द्विज ! ॥ १८॥

शुक्र सुन्दर शरीर, सुखी, अच्छे सुन्दर नेत्रोंवाला, काव्य (कविता) करने वाला, कफ, वायुमिश्रित प्रकृति, टेढ़े शिर के बालों वाला है।। १७।। शनि दुर्बल लम्बा शरीर, पीले नेत्र, वायु प्रकृति, मोटे दाँत, आलसी, पंगु, रूखे रोम और बालों वाला है॥ १८॥

धूम्राकारो नीलतनुर्वनस्थोऽपि भयंकरः ।
वातप्रकृतिको धीमान् स्वर्भानुः प्रतिमःशिखी ॥ १९॥

राहु-धूयएँ के सदृश वर्ण, नीले रंग का शरीर, जंगल में रहनेवाला, भयंकर, वायु प्रकृति और बुद्धिमान् है। केतु का भी स्वरूप राहु के समान ही है।१९।

अस्थिरक्तस्तथा मज्जा त्वक्वसावीर्यस्नायवः ।
तासामीशा क्रमेणोक्ता ज्ञेया सूर्यादयो द्विज! ॥ २०॥
देवालय जलं वह्नी क्रीडादीनां तथैव च ।
कोशशय्याद्युत्कराणामीशाः सूर्यादयः क्रमात् ॥ २१॥

हे द्विज ! सूर्य आदि क्रम से अस्थि (हड्डी), रक्त, मज्जा, त्वक् (चर्म), वसा, वीर्य, स्नायु (नस) इनके स्वामी हैं।। २०।। एवं सूर्य आदि ग्रहों के क्रम से देवालय, जलाशय, अग्निस्थान, क्रीड़ास्थान, कोश (खजाना), शय्यास्थान, ऊसरभूमि ये स्थान हैं॥२१॥

अयनक्षणवासर्तुमासपक्षसमा द्विज ! ।
सूर्यादीनां क्रमाज्ज्ञेया निर्विशंकं द्विजोत्तम! ॥ २२॥
कटुलवणतिक्तमिश्र - मधुराम्लकषायकाः ।
क्रमेण सर्वे विज्ञेया सूर्यादीनां द्विजोत्तम! ॥ २३॥

सूर्य आदि ग्रह क्रम से अयन, क्षण (मुहूर्त्त), वासर (दिन), ऋतु, मास, पक्ष, वर्ष के स्वामी हैं।।२२।। सूर्य आदि ग्रहों के क्रम से कटु, लवण, तीता मिश्रित, मधुर, खट्टा और कसैला- ये रस हैं॥ २३॥

बुधेज्यौ बलिनौ पूर्वे रविभौमौ च दक्षिणे ।
वारुणे सूर्यपुत्रश्च सितचन्द्रौ तथोत्तरे ॥ २४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

निशायां बलिनश्चन्द्रकुजसौरा भवन्ति हि ।
सर्वदा ज्ञो बली ज्ञेयो दिनशेषा द्विजोत्तम ॥ २५ ॥

बुध-गुरु पूर्वदिशा (लग्न में) में, सूर्य-भौम दक्षिण दिशा (दशम) में, शनि पश्चिम (सप्तम) में, शुक्र-चन्द्रमा उत्तर (चतुर्थ) में बली होते हैं॥ २४॥ चन्द्रमा, भौम, शनि-ये रात में बली-बुध दिन, रात्रि दोनों में और शेष सूर्य, गुरु, शुक्र दिन में बली होते हैं॥ २५॥

कृष्णे च बलिनः क्रूराः सौम्याः वीर्ययुताः सिते ।
सौम्यायने सौम्यखेटो बली याम्यायनेऽपरः ॥ २६ ॥
स्वदिवससमहोरामासपैः कालवीर्यकम् ।
शकुबुगुशुचराद्या वृद्धितो वीर्यवत्तराः ॥ २७ ॥

कृष्णपक्ष में पापग्रह और शुक्लपक्ष में शुभग्रह बली होते हैं। उत्तरायण में शुभग्रह और दक्षिणायन में पापग्रह बली होते हैं॥ २६॥ जो ग्रह जिस दिन का, वर्ष का, होरा का और मास का स्वामी होता है, वह अपने दिन, वर्ष, होरा, मास में बली होता है। शनि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र और सूर्य यथोत्तर बली होते हैं। अर्थात् शनि से भौम, भौम से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्रमा और चन्द्र से सूर्य बली होता है॥ २७॥

स्थूलान् जनयति सूर्यो दुर्भगान् सूर्यपुत्रकः ।
क्षीरोपेतांस्तथा चन्द्रः कण्टकाद्यान्धरासुतः ॥ २८ ॥
गुरुज्ञौ सफलान्विप्र ! पुष्पवृक्षान्भृगोः सुतः ।
नीरसान्सूर्यपुत्रश्च एवं ज्ञेया खगाः द्विज ॥ २९ ॥

स्थूल वृक्षों का कारक सूर्य है। दुष्ट वृक्षों का कारक शनि, दूधवाले वृक्षों का चन्द्रमा तथा कांटेवाले वृक्षों का भौम है।। २८।। फूलवाले वृक्षों का गुरु-बुध, फूल के वृक्षों का शुक्र और नीरस वृक्षों का शनि कारक है॥ २९॥

राहुश्चांडालजातिश्च केतुर्जात्यंतरस्तथा ।
शिखिस्वर्भानुमन्दानां वल्मीकस्थानमुच्यते ॥ ३० ॥
चित्रकंथा फणीन्द्रस्य केतोश्छिद्रयुतो द्विज ।
सीसं राहोर्नीलमणिः केतोर्ज्ञेयो द्विजोत्तम ॥ ३१ ॥

राहु की चांडाल जाति और केतु वर्णसंकर जाति का है। केतु-राहु और शनि का वाल्मीक (विमौट) स्थान है॥ ३०॥ अनेक रंग के कपड़ों

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

से कथरी (गुदरी) राहु का और केतु का छेदों से युक्त वस्त्र है। राहु का सीसा और केतु का नीलमणि धातु है॥ ३१॥

गुरोः पीताम्बरं विप्र! भृगोः क्षौमं तथैव च।
रक्तक्षौमं भास्करस्य इंदोः क्षौमं सितं द्विज!॥ ३२॥
बुधस्य तु कृष्णक्षौमं रक्तवस्त्रं कुजस्य च।
वस्त्रं चित्रं शनेर्विप्र! पट्टवस्त्रं तथैव च॥ ३३॥

गुरु का पीताम्बर, शुक्र का रेशमी वस्त्र, सूर्य का लाल रंग का रेशमी वस्त्र, चन्द्रमा का श्वेत रेशमी वस्त्र है। बुध का काले रंग का, भौम का लाल रंग का वस्त्र और शनि का चित्रवर्ण पट्टवस्त्र है॥ ३३॥

भृगोर्ऋतुबसन्तश्च कुजभान्वोश्च ग्रीष्मकः।
चन्द्रस्य वर्षा विज्ञेया शरच्चैव तथा विदः॥ ३४॥
हेमन्तोऽपि गुरोर्ज्ञेयः शनेस्तु शिशिरो द्विज!।
अष्टौ मासाश्च स्वर्भानोः केतोर्मासत्रयं द्विज!॥ ३५॥

शुक्र की बसन्त ऋतु, भौम और रवि ग्रीष्मऋतु, चन्द्रमा की वर्षा ऋतु, बुध की शरद् ऋतु है॥ ३४॥ गुरु की हेमन्त ऋतु और शनि की शिशिर ऋतु है। राहु का ८ मास और केतु का ३ मास है॥ ३५॥

राह्वारपंगुचन्द्राश्च विज्ञेया धातुखेचराः।
मूलग्रहौ सूर्यशुक्रौ अपरा जीवसंज्ञकाः॥ ३६॥
ग्रहेषु मन्दो वृद्धोऽस्ति आयुर्वृद्धिप्रदायकः।
नैसर्गिके बहुसमान्ददाति द्विजसत्तम॥ ३७॥

राहु, भौम और चन्द्रमा धातु के स्वामी, सूर्य-शुक्र मूल के स्वामी और शेष बुध, गुरु, केतु जीव के स्वामी हैं॥ ३६॥ सभी ग्रहों में शनि वृद्ध (निर्बल) है, किन्तु निसर्ग आयुस्साधन करने में बहुत वर्ष को देता है॥ ३७॥

अथ ग्रहाणामुच्चनीचमाह-

अजो वृषो मृगः कन्या कुलीरझषतौलिकाः।
सूर्यादीनां क्रमादेतास्तुङ्गसंज्ञा प्रकीर्त्तिताः॥ ३८॥
दिग्गुणाष्टयमा भागा तिथिभूतर्क्षनखास्समाः।
स्वोच्चात्सप्तमभं नीचं पूर्वोक्तांशैः प्रकीर्त्तितम्॥ ३९॥

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला राशियों में १०, ३, २८, १५,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

५, २७, २० अंश सूर्यादि ग्रहों के उच्च होते हैं और अपनी उच्च राशि से सातवीं राशि में उतने ही अंश तक नीच होता है॥ ३८-३९॥

स्पष्टार्थ चक्र चित्र

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	ग्रहाः
मेष	वृष	मिथुन	कन्या	कर्क	मीन	तुला	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अंशाः
तुला	कर्क	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अंशाः

अथ ग्रहाणां मूलत्रिकोणमाह-

विंशतिरंशाः सिंहे कोणमपरे स्वभवनमर्कस्य ।
उच्चं भागत्रितयं वृषमिन्दोः शेषांशाःस्युस्त्रिकोणकाः॥ ४०॥
द्वादशभागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभंतु भौमस्य ।
उच्चफलं च कन्यायां बुधस्य तिथ्यंशकैः सदा भवेत् ॥ ४१ ॥

सूर्य का सिंह राशि में २० अंश तक मूल त्रिकोण है, शेष १० अंश स्वराशि है। चन्द्रमा का वृष राशि के आरम्भ से ३ अंश तक उच्च है, इसके बाद के अंश मूल त्रिकोण हैं॥ ४०॥ भौम का मेष राशि में १२ अंश तक मूल त्रिकोण है, शेष अंश स्वराशि है। बुध का कन्या राशि में १५ अंश तक उच्च, इसके बाद ५ अंश तक मूलत्रिकोण, और शेष अंश स्वराशि है॥ ४१॥

ततस्त्रिकोणजाते पंचभिरंशैः स्वराशिजं परतः ।
दशभिर्भागैर्जीवस्य त्रिकोणफलं स्वयं परं चापे ॥ ४२॥
शुक्रस्य तु तिथयोऽशास्त्रिकोणमपरे तुले स्वराशिश्च ।
शनेः कुम्भे नखांशास्त्रिकोणं परतस्तु स्वराशिजं ज्ञेयम् ॥ ४३॥

गुरु का धनु राशि में १० अंश तक मूलत्रिकोण तथा शेष अंश स्वराशि है॥ ४२॥ तुला राशि में १५ अंश तक शुक्र का मूलत्रिकोण और शेष अंश स्वराशि है। कुम्भराशि में २० अंश तक शनि का मूल त्रिकोण है तथा शेष अंश स्वराशि है॥ ४३॥

अथ ग्रहाणां नैसर्गिकमित्रामित्रत्वमाह-

रवेः समो ज्ञः सितसूर्यपुत्रावरी परे ये सुहृदो भवन्ति ।
चन्द्रस्य नारी रविचन्द्रपुत्रौ स्मृतास्तु शेषग्रहाः समाः ॥४४॥
समौ सितार्की शशिजश्च शत्रुर्मित्राणि शेषाः पृथिवीसुतस्य ।
शत्रुः शशी सूर्यसितौ च मित्रे समापरे स्युःशशिनंदनस्य॥ ४५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य के बुध सम, शुक्र-शनि शत्रु और शेष चन्द्रमा, भौम, गुरु मित्र हैं। चन्द्रमा के कोई शत्रु नहीं हैं, सूर्य बुध मित्र हैं और शेष ग्रह सम हैं॥ ४४॥ भौम के शुक्र, शनि सम हैं, बुध-शुक्र और शेषग्रह मित्र हैं। बुध के चन्द्रमा शत्रु, सूर्य-शुक्र मित्र और शेष ग्रह सम हैं॥ ४५॥

गुरोर्ज्ञसशुक्रौ रिपुसंज्ञकौ तु शनिः समोऽन्ये सुहृदो भवन्ति।
शुक्रस्य मित्रे बुधसूर्यपुत्रौ समौ कुजार्यावितरावरीतौ ॥४६॥
शनेः समो वाक्पतिरिन्दुसूनु शुक्रौ च मित्रे रिपवः परेऽपि।
ध्रुवं ग्रहाणां चतुराननेन शत्रुत्वमित्रत्वसमत्वमुक्तम् ॥४७॥

गुरु के बुध, शुक्र शत्रु, शनि सम और शेष ग्रह मित्र हैं। शुक्र के बुध, शनि मित्र, भौम, गुरु सम और शेष ग्रह शत्रु हैं॥ ४६॥ शनि के गुरु सम, बुध, शुक्र मित्र और शेषग्रह शत्रु हैं। इस प्रकार से ब्रह्मा जी ने ग्रहों के मित्र, सम, शत्रु को कहा है॥ ४७॥

अथ तात्कालिकमित्रशत्रुत्वमाह-

दशायबन्धुसहजस्वान्त्यस्थास्ते परस्परम्।
तत्काले सुहृदो ज्ञेयः शेषस्थाने त्वमित्रकम् ॥४८॥

जो ग्रह जिस ग्रह से १०।११।४।३।२।१२ वें स्थान में होता है, वह ग्रह उस ग्रह का तात्कालिक मित्र होता है, शेष स्थानों में शत्रु होता है॥ ४८॥

अथ पञ्चधामैत्रीमाह-

तात्कालिके निसर्गे च मित्रत्वे त्वधिमित्रकम्।
द्वयोर्मित्रसमत्वे च मित्रं शत्रुः समत्वके ॥४९॥

जो ग्रह जिस ग्रह का तात्कालिक और निसर्ग में मित्र होता है, वह उस ग्रह का अधिमित्र होता है। तत्काल में मित्र और निसर्ग में सम हो तो वह मित्र होता है, तात्कालिक शत्रु और नैसर्गिक सम हो तो शत्रु होता है।४९।

समौ तु शत्रुमित्रत्वे शत्रुशत्रौ त्वधिशत्रुकम्।
एवं पञ्चप्रकाराः स्युः ग्रहाणां मित्रता बुधैः ॥५०॥

नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक शत्रु या नैसर्गिक शत्रु और तात्कालिक मित्र हो तो सम होता है। तात्कालिक शत्रु और नैसर्गिक सम हो तो शत्रु होता है। और तात्कालिक शत्रु और नैसर्गिक शत्रु हों तो अधिशत्रु होता है। इस प्रकार ग्रहों की पाँच प्रकार की मैत्री होती है॥ ५०॥

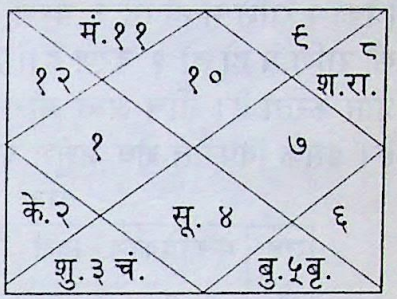
CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण

नैसर्गिक मैत्री चक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. मं. वृ.	सू. बु.	सू. चं. वृ.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	मित्राणि
बु.	मं. वृ. शु. श.	शु. श.	चं. बु. श.	श.	मं. बृ.	वृ.	समाः
शु. श.	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.		शत्रवः

जन्माङ्गम्



अथ तात्कालिक-मैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. बु. बृ. शु.	सू. बु. बृ. शु.	श.	सू. चं. बृ. शु. श.	सू. चं. बु. शु. श.	सू. चं. बु. बृ.	मं. बु. बृ.	मित्राणि
मं.श.	मं.श.	सू. चं. बु. बृ. शु.	मं.	मं.	मं. श.	सू. चं. शु.	शत्रवः

अथ पञ्चधा मैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. बृ.	सू. बु.		सू. शु.	सू. चं..	बु.	बु.	अधि-मित्रामि
	बृ. शु.	बु.	चं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	मित्राणि
मं. गु.		सू. चं. बृ. श.	म.	मं. बु. श.	सू. चं. श.	मं. शु.	समाः
०	मं.	शु.	०	०	०	०	शत्रवः
श.	श.	बु.	०	०	०	सू. चं.	अधि-शत्रवः

अथ ग्रहाणामुच्चादिबलमाह-

स्वोच्चे शुभं बलं पूर्णं त्रिकोणे पादवर्जितम् ।
स्वर्क्षे दलं मित्रगेहे पादमात्रं प्रकीर्तितम् ॥ ५१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पादार्धं समभे प्रोक्तं व्यर्थं नीचास्तशत्रुभे ।
तद्वद्दुष्टबलं ब्रूयाद् व्यत्ययेन विचक्षणः ॥५२॥

यदि ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो सम्पूर्ण शुभ बल, अपने मूल त्रिकोण राशि में हो तो ३ चरण, अपनी राशि में हो तो आधा बल, मित्र की राशि में हो तो १ चरण है॥ ५१॥ सम की राशि में हो तो आधा बल प्राप्त करता है। नीच अस्त और शत्रु की राशि में हो तो शून्य बल पाता है। इसके विपरीत शेष अशुभ बल पाता है॥ ५२॥

अथ वल चक्रम्

उच्च	मूल त्रिकोण	स्वर्क्ष	मित्र क्षेत्र	सम	नीच अस्त	शत्रु
१	०	०	०	७	०	०
०	४५	३०	१५	३०	०	०

अथ धूमाद्यप्रकाशग्रहानयनमाह-

सदा चतुर्भैः विश्वांशैः नखलिप्ताधिको रविः ।
धूमो नाम महादोषः सर्वकर्मविनाशकः ॥५३॥

सूर्य में ४ राशि १३ अंश २० कला जोड़ देने से धूम नाम का महादोष होता है, जो कि सभी कार्यों का विनाशक होता है॥ ५३॥

धूमो मंडलतः शुद्धो व्यतीपातोऽत्र दोषदः ।
सषड्भेऽत्र व्यतीपाते परिवेषस्तु दोषदः ॥५४॥

धूम को १२ राशि में घटा देने से शेष व्यतीपात नाम का दोष होता है। व्यतीपात में ६ राशि जोड़ देने से परिवेष नाम का दोष होता है॥ ५४॥

परिवेषश्युतश्चक्रादिन्द्रचापस्तु दोषदः ।
त्र्यंशोनात्यष्ट्यंशा युतश्चापः केतुग्रहो भवेत् ॥५५॥

परिवेष को १२ राशि में घटाने से इन्द्रचाप नामक दोष होता है। १७ अंश में अंश का तृतीयांश १० कला घटाने से शेष १६°। ४०° इन्द्रचाप में जोड़ने से केतु नाम का दोष होता है॥ ५५॥

एकराशियुते केतौ सूर्यः स्यात्पूर्ववत्समः ।
अप्रकाशग्रहाश्चैते दोषाः पापग्रहाः स्मृताः ॥५६॥

केतु में १ राशि जोड़ देने से पूर्वोक्त सूर्य के तुल्य हो जाता है। यही अप्रकाशग्रह हैं, जो कि दोषरूप पापग्रह हैं॥ ५६॥

उदाहरण-स्पष्ट सूर्य ३।१०।२६।२६ इसमें ४ राशि १३ अंश २० कला जोड़ने से ८।१।४६।२० धूम ग्रह हुआ। इसको १२ राशि में घटाने से

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

३।२८।१३।४० यह व्यतीपात ग्रह हुआ। इसमें ६ राशि जोड़ने से ९।२८।१३।४० यह परिवेष ग्रह हुआ। इसे १२ राशि में घटाने से २।१।४६।२० यह इन्द्रचाप हुआ। इसमें १६ अंश ४० कला जोड़ने से २।१८।२६।२० यह केतुग्रह हुआ। इसमें १ राशि जोड़ने से पूर्वोक्त सूर्य के तुल्य ३।१८।२६।२० हुआ।

अथाऽप्रकाशग्रहाणां फलमाह-

भान्विन्दुलग्नगेष्वेषु वंशायुर्ज्ञाननाशनम् ।
एषां बह्वर्कदोषाणां स्थितिः पद्मासनोदिताः ॥ ५७ ॥

पूर्वोक्त धूम आदि अप्रकाश ग्रह यदि सूर्य, चन्द्र, लग्न से युक्त हों तो क्रम से वंश, आयु और ज्ञान को नाश करते हैं। इस प्रकार दोषकारक अप्रकाश ग्रहों की स्थिति को ब्रह्मा ने कहा है॥ ५७॥

इति पाराशरहोरायां पूर्वखण्डे सुबोधिन्यां ग्रहस्वरूपाध्यायस्तृतीयः॥ ३ ॥

अथ लग्नाध्यायः (४)

तत्रादौ गुलिकादिकालज्ञानमाह-

रविवारादिशन्यन्तं गुलिकादि निरूप्यते ।
दिवसानष्टधा कृत्वा वारेशाद्गणयेत्क्रमात् ॥ १ ॥
अष्टमांशो निरीशः स्याच्छन्यंशो गुलिकः स्मृतः ।
रात्रिरप्यष्टधा भक्त्वा वारेशात्पंचमादितः ॥ २ ॥

रवि से शनि पर्यन्त वारों में गुलिक आदि का निरूपण कर रहे हैं। (जिस दिन इनका विचार करना हो उस दिन के) दिनमान में आठ का भाग देने से जो लब्ध हो उतना ही एक खंड का मान होता है। वारेश से (जिस दिन विचार कर रहे हों उस वार से खंडों के अनुसार अपने इष्टकाल तक) गिनने से॥ १॥ आठवें भाग का स्वामी कोई नहीं होता और शनि का खंड गुलिक होता है। इसी प्रकार रात्रिमान का भी (यदि रात्रि का जन्म हो तो) आठ भाग करके वारेश से पाँचवें वार से गिनने से॥ २॥

गणयेदष्टमो खंडो निष्पत्तिः परिकीर्त्तितः ।
शन्यंशो गुलिकः प्रोक्तो गुर्वंशो यमघंटकः ॥ ३ ॥

शनि का अंश (खंड) गुलिक होता है और आठवें खंड का कोई स्वामी नहीं होता है। शनि का अंश गुलिक, गुरु का अंश यमघंट होता है॥ ३॥

भौमांशो मृत्युरादिष्टो रव्यंशो कालसंज्ञकः ।
सौम्यांशोऽर्धप्रहरकः स्पष्टकर्मप्रदेशकः ॥ ४ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भौम का मृत्यु, रवि का काल और बुध का अर्धप्रहर होता है॥ ४॥

उदाहरण- जैसे संवत् २०३१ श्रावण कृष्ण १३ शनिवार को दिनमान ३२।५० है और इसी के बराबर इष्टकाल भी है। इसमें आठ का भाग देने से ४।६।१५ यह लब्धि हुई। यहाँ वारेश शनि से गणना करने से प्रथम खंड ही गुलिक हुआ। इसी को इष्टकाल मानकर सूर्य को स्पष्ट कर लग्न लाने से गुलिक लग्न ४।९।२६।२५ हुआ॥ ४॥

अथ गुलिक ध्रुवाङ्क चक्रम्

रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
७	६	५	४	३	२	१	दिवा
३	२	३	७	६	५	४	रात्रौ

अथ प्राणपदसाधनम्-

घटी चतुर्गुणा कार्या तिथ्याप्तैश्च पलैर्युताः।
दिनकरेणापहृतं शेषं प्राणपदं स्मृतम्॥ ५॥

यहाँ प्राणपद साधन के दो प्रकार दिये हैं –

१-इष्टकाल के घटी को ४ से गुणाकर एक जगह रख देवे, पलों में १५ का भाग देकर लब्धि को चतुर्गुणित इष्ट घटी में जोड़कर योगफल में १२ का भाग देने से जो शेष बचे वह प्राणपद की राशि होती है॥ ५॥

शेषात्पलान्तादिद्विगुणी विधाय राश्यंशसूर्यर्क्षनियोजिताय।
तत्रापि तद्राशिचरान् क्रमेण लग्नांशप्राणांशपदैक्यता स्यात्॥ ६॥

शेष बचे हुए पलों को दूना करने से अंश होता है, इस प्रकार से राशि और अंश मध्यम प्राणप्रद के होते हैं॥ ६॥

अथ च- **स्वेष्टकालं पलीकृत्य तिथ्याप्तं भादिकं च यत्।**
चरागद्विभगे भानौ यौज्यं स्वे नवमे सुते।
स्फुटं प्राणपदं तस्मात् पूर्ववच्छोधयेत्तनुम्॥ ७॥

इसमें सूर्य को राशि चर-स्थिर-द्विस्वभाव के अनुसार सूर्य की राशि अंश, सूर्य की राशि से नवीं राशि और अंश और सूर्य की राशि से पाँचवीं राशि और अंश को जोड़ देने से राश्यादि स्पष्ट प्राणपद होता है। ऐसा करने से यदि जन्मलग्न का अंश प्राणप्रद का अंश बराबर हो तो इष्टकाल शुद्ध होता है।

२-इष्टकाल को पलात्मक बनाकर उसमें १५ का भाग देकर लब्धि राशि और अंश लाकर उसमें ऊपर कहे हुये अनुसार सूर्य की राशि के अनुसार राशि अंश जोड़ने से स्पष्ट राश्यादि प्राणपद होता है। इससे जन्मलग्न को शुद्ध करना चाहिये। अर्थात् लग्न का अंश और प्राणपद का अंश समान होना चाहिये॥ ७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विना प्राणपदाच्छुद्धो गुलिकाद्वा निशाकरात् ।
तदशुद्धं विजानीयात्स्थावराणां तदेव हि ॥ ८ ॥

जो जन्मलग्न प्राणपद या गुलिक या चन्द्रमा से शुद्ध न की गई हो तो वह अशुद्ध होती है और वह स्थावर की जन्मलग्न होती है॥ ८॥

द्वयोर्हीनबलेऽप्येवं गुलिकात्परिचिन्तयेत् ।
तस्मात्तत्सप्तमस्थात्तत्तदंशाच्च कलत्रतः ॥ ९ ॥

इसलिये उससे सप्तम से या उसके अंश से लग्न का संशोधन करना चाहिये। दोनों निर्बल हों तो गुलिक (मांदी) का विचार करे॥ ९॥

तथैव तत्त्रिकोणे वा जन्मलग्नं विनिर्दिशेत् ।
मनुष्याणां पशूनां च द्वितीये दशमे रिपौ ॥ १० ॥

प्राणपद की राशि से त्रिकोण (५।९।१) राशि में मनुष्यों की जन्मलग्न की राशि होती है। २,६,१०वीं राशि पशुओं की है॥ १०॥

तृतीये मदने लाभे विहंगानां विनिर्दिशेत् ।
कीटसजलस्थानां शेषस्थानेषु संस्थितः ॥ ११ ॥

३।७ वीं राशि में चिड़ियों का और शेष राशियों में कीट, सर्प, जल में रहनेवाले जीवों का जन्म होता है॥ ११॥

उदाहरण- जैसे संवत् २०१३ श्रावण कृष्ण १३ शनिवार को इष्ट ३२।५० पर लग्न ९।१७ में जन्म हुआ। इष्टकालिक सूर्य ३।१८ है।

श्लो०-६१-६२ के अनुसार प्रथम प्रकार से प्राणपद का साधन-

इष्टघटी × ४ = ३२ × ४ = १२८
इष्टपल ÷ १५ = ५०÷१५=३ शेष५
१२८ + ३ = १३१
१३१÷१२=१० लब्धि का त्याग कर देने से शेष ११ प्राणपद की राशि और पल शेष को दूना करने से १० अंश यह मध्यम प्राणपद हुआ। सूर्य चर राशि में है, अतः सूर्य के राशि अंश में जोड़ने से ११।१०° + ३।१८।२२ ।२८ यह स्पष्ट प्राणपद हुआ।

श्लो० ६३ के अनुसार-
इष्टकाल ३२।२८।३०
इसका पल=१९४९।३० इसमें १५ का भाग देने से १२९ लब्धि राशि हुई और शेष १३।३० को दूना करने से २७ अंश हुआ। सूर्य को चर राशि में होने से सूर्य में जोड़ देने से १२९।२७

३।१८
१३३।१५

१।१५° यह स्पष्ट प्राणपद हुआ जिससे प्राणत्रिकोणे प्रवदन्ति लग्नम् और 'लग्नांश प्राणांशपदैक्यता स्यात्' यह सिद्ध होता है।

प्राणपद की राशि मिथुन से जन्मलग्न की राशि तक गिनने से जन्मलग्न की राशि आठवीं आती है, अतः इष्ट शोधन करना आवश्यक है जिससे दोनों

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

का परस्पर त्रिकोणत्व हो जाय, इसलिये इष्टकाल में १५ पल कम करने से ३२।३५ इष्टमान कर उपर्युक्त विधि से प्राणपद बनाने से १।२८ आया। यहाँ राशि तो ठीक आई, यानि वृषराशि जिससे जन्मलग्न ९वीं राशि है किन्तु लग्नांश और प्राणांश एक नहीं हुए अतः ६ पल और ३० विपल और घटा देने से शुद्ध इष्टकाल ३२।२८।३० हुआ। इससे प्राणपद बनाने से १।१५ आया जो कि उक्त वाक्य के अनुसार शुद्ध है।

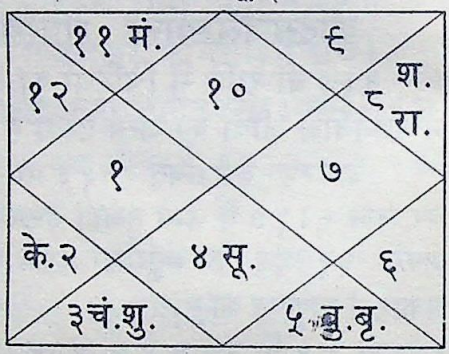
विशेष- वस्तुतः प्राणपद शब्द का अर्थ है प्राण देनेवाला पद (स्थान) या अंश। यह सूर्योदय से १५ पल में एक राशि का होता है। अतः ३ दंड में १२ राशि की पूर्ति हो जाती है और १ पल में २ अंश प्राणपद का होता है। इस नियम को ध्यान में रखकर इष्ट शुद्ध कर लेना चाहिये। उपर्युक्त शुद्ध किये हुए इष्टकाल द्वारा जन्माङ्ग का स्वरूप निम्नलिखित होगा।

संवत् २०१३ शके १८७८ श्रावणकृष्ण १३ शनिवासरे पुनर्वसुभे प्रथम चरणें इष्टम् ३२।२८।३० भयातम् १०।३२ भभोगः ५५।५३ लग्नम् ९।१५।२२।३७ शुभम्ए॥ ११॥

स्पष्टाग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	२	१०	४	४	२	७	७
१८	२२	२२	५	१२	५	१	१३
२६	३०	३२	२२	५०	३	४८	२७
३४	४७	८	५९	५४	५	५२	२६

जन्माङ्गम्



अथ निषेकलग्नानयनमाह-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्व मुनिपुङ्गव।
जन्मलग्नं च संशोध्य निषेकं परिशोधयेत् ॥१२॥
तदहं सम्प्रवक्ष्यामि मैत्रेय त्वं विचारय।
जन्मलग्नात् परिज्ञानं निषेकं सर्वजन्तुषु ॥१३॥

हे मुनिश्रेष्ठ मैत्रेय! अब मैं जन्मलग्न की शुद्धि के अनन्तर निषेक (गर्भाधान) लग्न की शुद्धि को कहता हूँ, इसका श्रवण करो॥ १२॥ सभी जन्म लग्न के ज्ञान से सभी जन्तुओं के गर्भाधान लग्न का ज्ञान हो जाता है॥ १३॥

यस्मिन् भावे स्थितो कोणस्तस्य मान्देर्यदन्तरम्।
लग्नभाग्यान्तरं योज्यं यच्च राश्यादि जायते ॥१४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मासादिस्तन्मितं ज्ञेयं जन्मतः प्राक् निषेकजम् ।
यदादृश्यदलेऽङ्केशस्तदेन्दोर्भुक्तभागयुक् ॥१५॥

जिस भाव में शनि हो उस भाव और मान्दि (गुलिक) लग्न का अन्तर कर उसमें लग्न और भाग्य भाव के अन्तर को जोड़ देने से जो राश्यादि होती है॥१४॥ जन्म से पूर्व के (निषेक काल के) मासादि का ज्ञान होता है। यदि लग्नेश अदृश्य चक्रार्ध (लग्न से सप्तम के बीच) में हो तो पूर्वोक्त मासादि में चन्द्रमा के भुक्त अंशादि को जोड़ने से मासादि होता है॥१५॥

तत्काले साधयेल्लग्नं शोधयेत्पूर्ववत्तनुम् ।
तस्माल्लग्नात्फलं वाच्यं गर्भस्थस्य विशेषतः ॥१६॥
शुभाशुभं वदेत् पित्रोर्जीवितं मरणं तथा ।
एवं निषेकलग्नेन सम्यग् ज्ञेयं स्वकल्पनात् ॥१७॥

इसे जानकर तात्कालिक लग्न को बनावे, वही गर्भाधान की लग्न होती है। उस लग्नसे गर्भस्थ प्राणी के शुभ-अशुभ फल कहते हैं।१६।माता-पिता के जीवन-मरण के शुभ-अशुभ फलों का विचार अपने कल्पनावश करें।१७।

उदाहरण- जैसे पूर्वोक्त जन्माङ्ग में शनि कर्मभाव की सन्धि में है, अतः सन्धि ७।११।५८।।३३ और गुलिक लग्न ४।६।२६।३५ का अन्तर ३।२।३१।५८ हुआ। इसमें लग्न ६।१५।३१।५ और भाग्य भाव ५।२४।४१।२५ का अन्तर ४।२०।५१।२६ जोड़ देने से ७।२३।२३।२४ अर्थात् जन्म से पूर्व ७ माह २३ दिन २३ घटी २४ पल पूर्व गर्भाधान हुआ था।

अथ भावलग्नानयनमाह-

सूर्योदयात्समारभ्य घटीपंच प्रमाणतः ।
जन्मेष्टकालपर्यन्तं गणनीयं प्रयत्नतः ॥१८॥
ओजलग्नेयदा जन्म सूर्यराश्यनुसारतः ।
समलग्ने जन्मलग्नात्यत्संख्या प्राप्यते द्विज ।
भावलग्नं विजानीयात् होरालग्नं तदुच्यते ॥१९॥

सूर्योदय से पाँच घटी के बराबर एक लग्न बीतती है। इसे भावलग्न या घटी लग्न कहते हैं॥१८॥ इसलिये इष्ट घटी पर्यन्त जितनी लग्न बीती हो उसमें यदि जन्मलग्न विषम राशि में हो तो सूर्य से और यदि समराशि में हो तो जन्मलग्न से उक्त संख्या गिनने से जो लग्न हो वही भावलग्न होती है॥१९॥

उदाहरण- इष्ट घटी ३२।२८।३० सूर्य ३।१८।२६ है। इष्ट घटी

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

में ५ से भाग देने से ६।२९।४२ लब्धि हुई, इसे सूर्य में जोड़ने से १०।२८।८ यह भावलग्न हुआ।

विशेष- इष्टकाल और लग्न की प्रवृत्ति सूर्योदय से होने के कारण सूर्य में ही जोड़ना चाहिये। यह युक्तिसंगत मालूम होता है।

अथ होरालग्नानयनमाह-

सार्धद्विघटिका विप्र. कालादिति विलग्नभात्।
प्रयान्ति लग्नं तन्नाम होरालग्नं द्विजोत्तम ॥२०॥
यज्जन्म विषमर्क्षेषु सूर्यादि गणयेत् क्रमात्।
समलग्ने यदा जन्म गणयेज्जन्मभाद्द्विज ॥२१॥

जन्मलग्न से ढाई घटी के तुल्य एक लग्न होती है, जिसे होरालग्न कहते हैं॥ २०॥ अतः इसके अनुसार इष्ट घटी पर्यन्त गिनने से जो संख्या हो उसमें यदि जन्म विषम लग्न में हो तो सूर्य की राशि से अन्यथा जन्म-लग्न से गणना करने से जो राशि हो वही होरालग्न होती है॥ २१॥

उदाहरण- इष्ट घटी ३२।२८।३० है, इसमें ढाई का भाग देने से लब्धि राश्यादि ०।२९।४२ हुई। इसमें सूर्य की राश्यादि जोड़ने से ४।१८।१८ यह राश्यादि होरालग्न हुआ।

घटी-लग्नानयनमाह-

घटीलग्नं प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं द्विजसत्तम।
सूर्योदयात्समारभ्य जन्मकालावधि क्रमात् ॥२२॥
एकैकं घटिकामानाल्लग्नं राश्यादिकं च यत्।
तदेव घटिकालग्नं कथितं ऋषिभिः पुरा ॥२३॥

हे द्विजश्रेष्ठ! मैं घटी लग्न को कह रहा हूँ, उसे सुनो। सूर्योदय से आरम्भ कर जन्म समय पर्यन्त क्रमसे।२२। एक-एक घटीके तुल्य एक राशि के हिसाब से जो राशि हो वही घटीलग्न होती है, ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है।२३।

राशीन् तत्र घटीतुल्या द्विभागाः पलसंमिताः।
योज्यं सदा स्पष्ट भानौ घटीलग्नं स्फुटं भवेत् ॥२४॥
क्रमाल्लग्नादिभावाँश्च संलिखेत् द्विजसत्तम।
सूर्यादि यत्र ऋक्षे च जन्मवत्संलिखेद्द्विज ॥२५॥

इसमें इष्ट-घटी के तुल्य राशि होती है, और एक पल में दो अंश होते हैं। इसके अनुसार जो राशि और अंश हो उसमें सदा सूर्य की राशि अंश को जोड़ देने से स्पष्ट घटी लग्न होती है। इसे लग्न मानकर

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

द्वादशभाव चक्र लिखकर जन्म-कालिक सूर्य आदि ग्रह जिन-जिन राशियों में हों, उन्हें उन्हीं-उन्हीं राशियों में लिख देवे॥ २४-२५॥

उदाहरण- इष्टकाल ३२।२८।३० है और सूर्य ३।१८।२६ है, उक्त प्रकार से ३२ राशि १४ अंश हुआ। इसमें सूर्य के राश्यादि को जोड़ने से ० राशि २ अंश, यह घटीलग्न हुआ।

अथ वर्णदलग्नानयनमाह-

जन्महोराख्यलग्नर्क्षसंख्या ग्राह्या पृथक् -पृथक् ।
ओजे लग्ने त्वेकयुग्मे चक्रशुद्धैकसंयुता ॥ २६॥

जन्मलग्नकी राशि और होरा लग्नकी राशि संख्या विषम हो तो अथवा दोनों सम हों तो, दोनों का योग करने से यदि विषम राशि हो तो वही वर्णद राशि होती है। दोनों में एक विषम और दूसरी सम हो तो सम को १२ राशि में घटाकर शेष को पहले में घटाने से शेष वर्णद राशि होती है॥२६॥

युग्मौजसाम्ये संयोज्य वियोज्यान्योऽन्यमन्यथा ।
मेषादितः क्रमादोजे मीनादेरुत्क्रमात्समे ॥ २७॥
एवं यल्लग्नमायाति वर्णदं तत् प्रकीर्तितम् ।
एवं द्वादशभावानां वर्णदं लग्नमानयेत् ॥ २८॥

विषम राशि में मेषादि क्रम से और सम राशि में मीनादि से उत्क्रम गणना से है॥ २७॥ जो लग्न हो वही वर्णद लग्न होता है। इस प्रकार सभी भावों का बर्णद लग्न बनाना चाहिये॥ २८॥

विशेष - १. जन्म लग्न और होरा लग्न, दोनों विषम हों तो दोनों का योग यदि विषम राशि हो तो वही वर्णद राशि होती है।

२. यदि दोनों सम हों तो दोनों को १२ राशि में से घटाकर शेषों का योग करने से यदि विषम राशि हो तो वही वर्णद राशि होती है।

३. यदि जन्म लग्न होरा लग्न दोनों में एक विषम और दूसरी सम हो तो सम राशि को १२ राशि में से घटाकर दोनों का अन्तर करने से शेष विषम राशि हो तो वर्णद राशि होती है।

उपर्युक्त तीनों प्रकारों से यह स्पष्ट है कि योग वा अन्तर करने से समराशि आवे तो उसे १२ राशि में पुनः घटा देने से वर्णद राशि होती है अर्थात् वर्णद राशि हमेशा विषम ही होती है।

उदाहरण- जन्म-लग्न ६।१५।२२।३७ होरा लग्न ४।१८।१८ है। यहाँ जन्म लग्न सम और होरा लग्न विषम है, अतः नियम ३ के अनुसार जन्म लग्न को १२ राशि में घटाने से शेष २।१४।३७।२३ हुआ, यही लग्न की वर्णद राशि है।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि द्वावोजराशौ वा समराशौ यदा द्विज ।
द्वयं संयोजनीयं वै संज्ञे या वर्णदा भवेत् ॥ २९॥
एकस्थाने ओजराशावपरे समभे द्विज ।
समं तु चक्रतः शोध्यं न्यूनसंख्यां विशोधयेत् ॥ ३०॥

यदि दोनों विषम या समराशि हों तो दोनों का योग करने से वर्णद राशि होती है॥ २९॥ एक विषम राशि हो और दूसरी समराशि हो तो समराशि को १२ राशि में घटाने से जो न्यून हो उसे पुनः घटाने से वर्णद होता है॥ ३०॥

मेषादिकेन गणयेत्क्रममार्गेण वै द्विज ।
यल्लब्धमंतिमो राशिः स राशिर्वर्णदो भवेत् ॥ ३१॥
युग्मलग्नेषु यज्जन्म मीनादेरपसव्यतः ।
क्रमेण लग्नहोरान्तं गणयेद् द्विजसत्तम ॥ ३२॥

मेष से क्रममार्ग से गणना करने से अंतिम राशि पर्यन्त जो राशि आवे, वही वर्णद होती है॥ ३१॥ समलग्न में जन्म होने से मीनादि अपसव्य मार्ग से गिनने से लग्न पर्यन्त गणना करनी चाहिये॥ ३२॥

ओजराशौ द्वयं लब्धं तथा द्वौ समराशिगौ ।
साजात्ये योजनं कार्यं जायते वर्णदा दशा ॥ ३३॥
वैजात्ये पूर्ववत्कार्याधिक्ये न्यूनं विशोधयेत् ।
मेषादि सव्यमार्गेण गणनीयं प्रयत्नतः ॥ ३४॥

यदि दोनों विषम राशि में अथवा दोनों समराशि में हों तो दोनों के सजातीय होने से दोनों का योग करने से वर्णद दशा होती है॥ ३३॥ दोनों विजातीय हों तो पूर्ववत् विषम में न्यून को घटाकर मेषादि से सव्यमार्ग से गणना करनी चाहिये॥ ३४॥

यल्लब्धमंतिमो राशिस्तद्राशिर्वर्णदो भवेत् ।
वर्षसंख्या विजानीयात् चरपर्याप्रमाणतः ॥ ३५॥
होरालग्नभयोर्नेया दुर्बला वर्णदा दशा ।
यत्संख्या वर्णदा लग्नात्तत्र संख्या क्रमेण तु ॥ ३६॥

जो लग्न से अंतिम राशि हो वही वर्णद राशि होती है, वही वर्णद संख्या चरादि क्रम से होती है॥ ३५॥ होरा लग्न से आई हुई वर्णद दशा दुर्बल होती है, वहाँ पर जन्म लग्न से लाई हुई दशा की संख्या लेनी चाहिए॥ ३६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमव्युत्क्रमभेदेन दशा स्यात् पुरुषस्त्रियोः ।
वर्णदा राशिमेषादि मीनादि गणयेत्क्रमात् ॥ ३७॥

क्रम-उत्क्रम भेद से पुरुष और स्त्री की दशा होती है और वर्णद राशि मेषादि और मीनादि से गिनना चाहिये॥ ३७॥

फल-विचारमाह-

वर्णदात्स्यात्त्रिकोणे च पापयुक् पापराशिकः ।
पापयोगकृते विप्र दशापर्यन्तजीवनम् ॥ ३८॥
रुद्रशूले यथैवायुर्निर्विशंकं द्विजोत्तम ।
तथैव वर्णदादप्यायुश्चिन्त्यं द्विजोत्तम ॥ ३९॥

हे विप्र! वर्णद राशि से त्रिकोण में पापग्रह की युति हो अथवा पापग्रह की राशि हो, उसमें पापग्रह की युति हो तो उसकी दशा पर्यन्त आयु होती है॥ ३८॥ जिस प्रकार रुद्रशूल पर्यन्त आयु होती है, उसी प्रकार वर्णद से भी आयु का विचार करना चाहिए॥ ३९॥

वर्णदात्सप्तमाद्राशेः कलत्रायुः विचिन्तयेत् ।
पंचमे तनयस्यायुर्मातुः स्यात्तुर्यभावके ॥ ४०॥
तृतीये भ्रातुरायुः स्याज्ज्येष्ठभ्रातुर्भवेद्द्विज ।
पितुस्तु नवमाद् भावादायुर्ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ४१॥

वर्णद से सातवीं राशि से स्त्री की और पाँचवीं राशि से पुत्र की, चौथी राशि से माता की आयु का विचार करना चाहिए॥ ४०॥ तीसरी राशि से भाई की और ग्यारहवें राशि से ज्येष्ठ भाई की, नवीं राशि से पिता की आयु का विचार करना चाहिए॥ ४१॥

शूलराशिदशायां वै प्रबलायामरिष्टकम् ।
वर्णदाल्लग्नवच्चिन्त्यं फलं सर्वं विचक्षणैः ॥ ४२॥
एवं तन्वादिभावानां कारयेद्वर्णदा दशा ।
पूर्ववच्च फलं ज्ञेयं शुभाशुभं द्विजोत्तम ॥ ४३॥

शूलराशि की दशा में उन लोगों को प्रबल अरिष्ट होता है। वर्णद लग्न से लग्नभाव के समान ही सभी बातों का विचार करना चाहिए॥ ४२॥ इसी

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकार लग्न आदि सभी भावों की वर्णद राशि बनानी चाहिए। उस पर से प्रत्येक भावों के शुभ-अशुभ फलों का विचार पूर्ववत् करना चाहिये॥ ४३॥

ग्रहाणां वर्णदा नैव राशीनां वर्णदा दशा।
यल्लब्धं पूर्वमब्दानां भानुभागं च कारयेत्॥ ४४॥

ग्रहों की वर्णद राशि नहीं होती है। इस प्रकार वर्णद राशि की दशा का जो वर्ष मिले उसमें १२ का भाग देकर॥ ४४॥

क्रमव्युत्क्रमभेदेन संलिखेद्वै दशान्तरम्।
चरस्थिरदशायां वै वर्णदायास्तथैव च॥ ४५॥
पूर्णायां कारकस्यैव केन्द्रस्थानां दशा भवेत्।
ततः पणफरस्थानामापोक्लिम दशां ततः॥ ४६॥

जैसे चर आदि दशा में क्रम-उत्क्रम से अन्तर्दशा लिखी जाती है, उसी प्रकार यहाँ भी अन्तर्दशा लिखें॥ ४५॥ पहले केन्द्रस्थ की दशा, इसके बाद पणफरस्थ की और इसके बाद आपोक्लिमस्थ की दशा होती है॥ ४६॥

इति पाराशरहोरायां पूर्वखण्डे सुबोधिन्यां लग्नाध्यायश्चतुर्थः॥ ४॥

❖ ❖ ❖

अथ षोडशवर्गप्रकरणम् (५)

वर्गान् षोडश संख्याकान् ब्रह्मा प्रोक्तं पितामहः।
तानहं सम्प्रवक्ष्यामि मैत्रेय श्रूयतामिति॥ १॥
क्षेत्रं होरां च द्रेष्काणश्चतुर्थांशः सप्तमांशकः।
नवांशो दशमांशश्च सूर्यांशः षोडशांशकः॥ २॥

हे मैत्रेय! लोक पितामह ब्रह्माजी ने जो सोलह वर्गों को कहा है, उसे मैं कहता हूँ॥ १॥ १ गृह, २ होरा, ३ द्रेष्काण, ४ चतुर्थांश, ५ सप्तमांश, ६ नवांश, ७ दशमांश, ८ द्वादशांश, ९ षोडशांश॥ २॥

त्रिंशांशो वेदवाह्वंशो भांशास्त्रिंशांशकस्तथा।
खवेदांशोऽक्षवेदांशः षष्ट्यंशश्च ततः परम्॥ ३॥

१० त्रिंशांश, ११ चतुर्विंशांश, १२ सप्तविंशांश, १३ त्रिंशदंशांश, १४ चत्वारिंशांश, १५ पंचचत्वारिंशांश, १६ षष्ट्यंश- ये १६ वर्ग हैं॥ ३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गृहहोराकथनम्-

तत्क्षेत्रं यस्य खेटस्य राशेर्यो यस्य नायकः ।
सूर्येन्दोर्विषमे राशौ समे तद्विपरीतकम् ॥ ४ ॥

जो ग्रह जिस राशि का स्वामी है, वही उसका गृह है। विषम राशि में पहली होरा सूर्य की और दूसरी चन्द्रमा की होती है। सम राशि में पहली होरा चन्द्रमा की और दूसरी सूर्य की होती है॥ ४॥

पितरश्चन्द्रहोरेशा देव्यः सूर्यस्य कीर्त्तिताः ।
राशेरर्द्धं भवेद्धोरा ताश्चतुर्विंशतिः स्मृताः ।
मेषादि तासां होराणां परिवृत्तिद्वयं भवेत् ॥ ५ ॥

चन्द्रमा के होरा के स्वामी पितर और सूर्य के होरा के स्वामी देवियाँ होती हैं। एक राशि का आधा १५ अंश का एक होरा होता है अर्थात् १२ राशियों में २४ होरा होती है इसलिये मेषादि राशियों की दो आवृत्ति होती है॥ ५॥

उदाहरण- जैसे लग्न ६।१५।२२।५७ है, लग्न सम राशि है और १५ अंश से अधिक है अतः दूसरी होरा सूर्य की है।

स्पष्टार्थ चक्र-

हो	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुम्भ	मीन	राशयः
१	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सूर्य	चंद्र	स्वामिनः
२	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चंद्र	सूर्य	स्वामिनः

द्रेष्काणमाह-

राशित्रिभागा द्रेष्काणास्ते च षट्त्रिंशदीरिताः ।
परिवृत्तित्रयं तेषां मेषादेः क्रमशो भवेत् ॥ ६ ॥
स्वपंचनवपानां च विषमेषु समेषु च ।
नारदागस्तिदुर्वासा द्रेष्काणेशाश्चरादिषु ॥ ७ ॥

एक राशि के तीसरे भाग का, अर्थात् १० अंश का एक द्रेष्काण होता है, अर्थात् एक राशि में ३ द्रेष्काण होते हैं। १२ राशि में कुल ३६ द्रेष्काण होते हैं॥ ६॥ विषम एवं सम राशि में पहले द्रेष्काण का स्वामी उसी राशि का स्वामी, दूसरे का उस राशि से पाँचवीं राशि का स्वामी और तीसरे का उस राशि से नवीं राशि का स्वामी होता है। और पहले द्रेष्काण के स्वामी नारद, दूसरे के अगस्त्य और तीसरे के दुर्वासा स्वामी होते है॥ ७॥

उदाहरण- जैसे जन्म लग्न ६।१५।२२।३७ हैं, इसमें दूसरा द्रेष्काण है जिसके स्वामी शुक्र है और अधिपति अगस्त्य हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

द्रेष्काण चक्र -

स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
नारद	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामिनः
अगस्त्य	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	स्वामिनः
दुर्वासा	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	स्वामिनः

अथ चतुर्थांशमाह-

स्वर्क्षादि केन्द्रपतयस्तुर्यांशेशाः क्रियादयः ।
सनकश्च सनन्दश्च कुमारश्च सनातनः ॥८॥

एक राशि में ७ अंश ३० कला के चार चतुर्थांश होते हैं। प्रत्येक राशि में उस राशि से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम राशियों के स्वामी क्रम से चतुर्थांश के स्वामी होते हैं और सर्वदा क्रम से सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन- ये स्वामी होते हैं॥ ८॥

उदाहरण- लग्न ९।१५।२२।३७ है, इसमें ३रा चतुर्थांश कर्क राशि के स्वामी चन्द्रमा का और अधिपति सनत्कुमार का है।

चतुर्थांशचक्र-

स्वामिनः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अंशाः
सनकः	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	७ ३०
सनन्दनः	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	१५
सनत्कुमारः	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	२२/३०
सनातनः	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	३०

अथ सप्तमांशमाह-

सप्तमांशास्त्वोजगृहे गणनीया निजेशतः ।
युग्मराशौ तु विज्ञेया सप्तमर्क्षादिनायकम् ॥९॥
क्षारक्षीरौ च दध्याज्यौ तथेक्षुरससंभवः ।
मद्यशुद्धजलावोजे समे शुद्ध जलादिकाः ॥१०॥

एक राशि में ४ अंश १७ कला के सात सप्तमांश होते हैं। विषम राशि में उसी राशि से और सम राशि में उससे सातवीं राशि से ७ सप्तमांश के

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्वामी होते हैं॥ ९॥ उसके क्षार, क्षीर, दधि आज्य, इक्षुरस, मद्य और शुद्ध जल विषम राशि में और सम राशि में शुद्ध जल, मद्य, इक्षुरस, आज्य, दधि, क्षीर, क्षार ये विशेष अधिकारी होते हैं॥ १०॥

उदाहरण- लग्न ९।१५।२२।३७ है। इसमें तीसरा सप्तमांश है, जिसके स्वामी बुध और विशेष अधिपति इक्षुरस हैं।

सप्तमांश चक्र-

पतयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अंशाः
क्षार	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	४ १७
क्षीर	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	८ ३४
दधि	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	१२ ५१
आज्य	४ चं.	११ शु.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	३ बु.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	१७ ८
इक्षु-रस	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	२१ २५
मद्य	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	२५ ४२
शुद्ध-जल	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ मं.	१० श.	५ सू.	७ शु.	३० ०

नवमांशाधिपतिमाह-

नवांशेशाश्चरे तस्मात्स्थिरे तन्नवमादितः।
उभये तत्पंचमादेरिति चिन्त्यं विचक्षणैः।
देवानृराक्षसाश्चैव चरादिषु गृहेषु च॥११॥

एक राशि में ३ अंश २० कला के नव नवमांश होते हैं। चर राशि में उसी राशि से, स्थिर राशि में उससे नवम राशि से और द्विस्वभाव राशि में उससे पाँचवी राशि से नव राशि तक प्रत्येक राशि ३ अंश २० कला के तुल्य होती है। क्रम से देवता, नर और राक्षस अंशेश होते हैं॥ ११॥

उदाहरण- लग्न ९।१५।२२।३७ में ३ अंश २० कला के हिसाब से पाँचवाँ नवमांश वृष राशि का हुआ। इसके स्वामी शुक्र और नर अंशेश हुए।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नवमांशचक्रम्-

अंशाः	स्वामी	सं.	मे.	बृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	बृ.	ध.	म.	कु.	मी.
३।२०	देवता	१	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.	क. चं.	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.	क. चं.	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.	क. चं.
६।४०	नर	२	बृ. शु.	कुं. श.	बृ. मं.	सिं. सु.	बृ. शु.	कुं. श.	बृ. मं.	मे. सु.	बृ. शु.	कुं. श.	बृ. मं.	सिं. सु.
१०	राक्षस	३	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.	कं. बु.
१३।२०	देवता	४	क. चं.	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.	कं. चं.	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.	कं. चं.	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.
१६।४०	नर	५	सिं. सू.	बृ. शु.	कुं. श.	बृ. मं.	सिं. सू.	बृ. शु.	कुं. श.	बृ. मं.	सिं. सू.	बृ. शु.	कुं. श.	बृ. मं.
२०	राक्षस	६	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.
२३।२०	देवता	७	तु. शु.	कं. चं.	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.	कं. चं.	मे. मं.	मं. श.	तु. शु.	कं. चं.	मे. मं.	मं. श.
२६।४०	नर	८	बृ. मं.	सिं. सू.	बृ. सू.	कुं. श.	बृ. मं.	सिं. सू.	बृ. सू.	कुं. श.	बृ. मं.	सिं. सू.	बृ. सू.	कुं. श.
३०	राक्षस	९	ध. बृ.	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.	ध. बृ.	कं. बु.	मि. बु.	मी. बृ.

अथ दशमांशमाह

दिगंशयाः ततश्चोजे युग्मे तन्नवमाद्वदेत् ।
पूर्वादि दश दिक्पाला इन्द्राग्नियमराक्षसाः ॥१२॥
वरुणो मारुतश्चैव कुबेरेशानपद्मजाः ।
अनन्तश्चोक्तमोजे तु समे स्याद् व्युत्क्रमेण च ॥१३॥

एक राशि में दश दशमांश प्रत्येक ३ अंश के होते हैं। यदि विषम राशि लग्न हो तो उसी राशि से और सम राशि हो तो उसमें नवीं राशि से दश दशमांश होते हैं। विषम राशि में क्रम से इन्द्र, अग्नि, यम, राक्षस, वरुण, मारुत, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा और अनन्त- इन पूर्वादि दिशाओं के दिक्पालों का होता है और सम राशि में उत्क्रम से अधिपति होते हैं॥ १२-१३॥

उदाहरण- लग्न ९।१५।२२।३७ है। इसमें ३ अंश के अनुसार छठा ६ दशमांश हुआ। लग्न राशि के सम होने से उससे ९ वीं राशि कन्या से गिनने से छठी राशि कुम्भ के स्वामी शनि का दशमांश हुआ। इसके मारुत स्वामी हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दशमांशचक्रम्-

विषमे स्वामिनः	अं.	मे.	बृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	बृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	समे स्वामिनः
इन्द्रः	३	१ मं.	१० श.	३ बु.	१२ बृ.	५ सू.	२ शु.	७ शु.	४ चं.	९ बृ.	६ बु.	११ श.	८ मं.	अनन्तः
अग्निः	६	२ शु.	११ श.	४ चं.	१ मं.	६ शु.	३ बु.	८ मं.	५ सू.	१० श.	७ शु.	१२ बृ.	९ बृ.	ब्रह्मा
यमः	९	३ बु.	१२ बृ.	५ सू.	२ शु.	७ शु.	४ चं.	९ बृ.	६ बु.	११ श.	८ मं.	१ मं.	१० शं.	ईशानः
राक्षसः	१२	४ चं.	१ मं.	६ बु.	३ बु.	८ मं.	५ सू.	१० श.	७ शु.	१० बृ.	९ बृ.	२ शु.	११ श.	कुबेरः
वरुणः	१५	५ सू.	२ शु.	७ शु.	४ चं.	९ बृ.	६ बु.	११ श.	८ मं.	१ मं.	१० श.	३ बु.	१२ बृ.	मारुत
मारुतः	१८	६ बु.	३ बु.	८ मं.	५ सू.	१० श.	७ शु.	१२ बृ.	९ बृ.	२ शु.	११ श.	४ चं.	१ मं.	वरुण
कुबेरः	२१	७ शु.	४ चं.	९ बृ.	६ बु.	११ श.	८ मं.	१ मं.	१० श.	३ बु.	१२ बृ.	५ सू.	२ शु.	राक्षस
ईशानः	२४	८ मं.	५ सू.	१० श.	७ शु.	१२ बृ.	९ बृ.	२ शु.	११ श.	४ चं.	१ मं.	६ बु.	३ बु.	यम
ब्रह्मा	२७	९ बृ.	६ बु.	११ श.	८ मं.	१ मं.	१० श.	३ बु.	१२ बृ.	५ सू.	२ शु.	७ शु.	४ चं.	अग्नि
अनन्तः	३०	१० श.	७ शु.	१२ बृ.	९ बृ.	२ शु.	११ श.	४ चं.	१ मं.	६ बु.	३ बु.	८ मं.	५ सू.	इन्द्र

अथ द्वादशांशमाह-.

द्वादशांशस्य गणना तत्तत्क्षेत्राद्विनिर्दिशेत् ।
तेषामधीशाः क्रमशो गणेशाश्वियमाहयः ॥ १४ ॥

एक राशि में १२ द्वादशांश २ अंश ३० कला के होते हैं। उनकी गणना उसी राशि से होती है। उनके स्वामी क्रम से गणेश, अश्विनीकुमार, यम और अहि (सर्प) होते हैं॥ १४॥

उदाहरण- लग्न ९।१५।२२।३७ है। यहाँ २।३० के अनुसार ७वाँ द्वादशांश मकर से गिनने से कर्क राशि के स्वामी चन्द्रमा का है। उसके स्वामी यम हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ द्वादशांश चक्रम्-

स्वामिनः	मे.	बृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंशाः
गणेश	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	२।३०
अश्विनी-कुमारौ	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	५।०
यम	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	७।३०
अहिः	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	१०।०
गणेशः	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	१२।३०
अश्विनी-कुमारौ	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	१५।०
यमः	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	१७।३०
अहिः	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु	२०।०
गणेशः	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	२२।३०
अश्विनी-कुमारौ	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	२५।०
यम	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	२७।३०
अहि	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृं.	१० श.	११ श.	३०।०

अथ षोडशांशमाह-

अजसिंहाश्वितो ज्ञेया नृपांशाः क्रमशः सदा ।
अजविष्णुहरः सूर्यो ह्योजे युग्मे प्रतीपकम् ॥ १५ ॥

एक राशि में १ अंश ५२ कला और ३० विकला का एक षोडशांश होता है। इस प्रकार एक राशि में १६ षोडशांश होता है। मेष आदि राशियों में क्रम से मेष, सिंह और धनु से आरम्भ होता है। इनके अज, विष्णु, हर और सूर्य स्वामी होते हैं॥ १५ ॥

उदाहरण-लग्न ९।१५।२२।३७ है। इसमें उक्त नियम से नवाँ षोडशांश धनु राशि के स्वामी गुरु का हुआ। इसके स्वामी ब्रह्मा हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षोडशांशचक्रम्-

सं.	विषमे स्वा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	समे स्वा.	अं. क. वि.
१	ब्र.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बु.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	सू.	१।५२।३०
२	वि.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	ह.	३।४५।०
३	ह.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	वि.	५।३७।३०
४	सू.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	ब्र.	७।३०।०
५	ब्र.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	सू.	९।२२।३०
६	वि.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	ह.	११।१५।०
७	ह.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	वि.	१३।७।३०
८	सू.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	ब्र.	१५।०।०
९	ब्र.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	सू.	१६।५२।३०
१०	वि.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	ह.	१८।४५।०
११	ह.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	वि.	२०।३७।३०
१२	सू.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	ब्र.	२२।३०।०
१३	ब्र.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	१ मं.	५ सू.	९ बृ.	सू.	२४।२२।३०
१४	वि.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	२ शु.	६ बु.	१० श.	ह.	२६।१५।०
१५	ह.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	३ बु.	७ शु.	११ श.	वि.	२८।७।३०
१६	सू.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	४ चं.	८ मं.	१२ बृ.	ब्र.	३०।०।०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ विंशांशमाह-

अथ विंशतिभागानामधिपा ब्रह्मणोदिताः ।
क्रियाच्चरे स्थिरे चापान्मृगेन्द्रा द्द्विस्वभावके ॥ १६ ॥
काली गौरी जया लक्ष्मीर्विजया विमला सती ।
तारा ज्वालामुखी श्वेता ललिता बगलामुखी ॥ १७ ॥

एक राशि में २० विंशांश १ अंश ३० कला के होते हैं। चर राशि में मेष से, स्थिर राशि में धनु से और द्विस्वभाव राशि में सिंह से आरम्भ होकर २० राशि तक होता है॥ १६॥ इनके स्वामी विषम राशि में क्रम से काली, गौरी, जया, लक्ष्मी, विजया, विमला, सती, तारा, ज्वालामुखी, श्वेता, ललिता और बगलामुखी एवं॥ १७॥

प्रत्यंगिरा शची रौद्री भवानी वरदा जया ।
त्रिपुरा सुमुखी चेति विषमे परिचिंतयेत् ॥ १८ ॥
समराशौ दया मेधा छिन्नशीर्षा पिशाचिनी ।
धूमावती च मातंगी बाला भद्राऽरुणाऽनला ॥ १९ ॥
पिंगला छुच्छुका घोरा वाराही वैष्णवी सिता ।
भुवनेशी भैरवी च मंगला ह्यपराजिता ॥ २० ॥

प्रत्यंगिरा, शची, रौद्री, भवानी, वरदा, जया, त्रिपुरा, सुमुखी है॥ १८॥ सम राशि में दया, मेधा, छिन्नशीर्षा, पिशाचिनी, धूमावती, मातंगी, वाला, भद्रा, अरुणा और अनला हैं॥ १९॥ पिंगला, छुच्छुका, घोरा, वाराही, वैष्णवी, सिता, भुवनेशी, भैरवी, मंगला और अपराजिता- ये स्वामी होते हैं॥ २०॥

उदाहरण- लग्न ९।१५।२२।३७ है, अतः ११वाँ त्रिंशांश कुम्भ राशि के अधिपति शनि का हुआ और इसके स्वामी पिंगला देवी हुई।

विंशांशचक्रम्-

सं.	विषमे स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	समे स्वामिनः	अं. क.
१	काली	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	दया	१।३०
२	गौरी	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	मेधा	३।०

इस चक्र का शेष पृष्ठ ५३ पर देखें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सं.	विषमे स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	समे स्वामिनः	अं. क.
३	जया	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	छिन्न-शीर्षा	४।३०
४	लक्ष्मी	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	पिशाचि.	६।०
५	विजया	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	धूमावति	७।३०
६	विमला	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	मातङ्गी	९।०
७	सती	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	बाला	१०।३०
८	तारा	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	भद्रा	१२।०
९	ज्वाला-मुखी	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	अरुणा	१३।३
१०	श्वेता	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	अनला	१५।०
११	ललिता	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	पिङ्गला	१६।३०
१२	बगला-मुखी	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	छुच्छुका	१८।०
१३	प्रत्य-ङ्गिरा	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	घोरा	१९।३०
१४	शची	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	वाराही	२१।०
१५	रौद्री	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	वैष्णवी	२२।३०
१६	भवानी	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	सिता	२४।०
१७	वरदा	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	५ सू.	१ मं.	९ बृ.	भुवनेश्वरी	२५।३०
१८	जया	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	६ बु.	२ शु.	१० श.	भैरवी	२७।०
१९	त्रिपुरा	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	७ शु.	३ बु.	११ श.	मङ्गला	२८।३०
२०	सुमुखी	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	८ मं.	४ चं.	१२ बृ.	अपराजि.	३०।०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सिद्धांशकमाह-

सिद्धांशकानामधिपाः सिंहादोजभके गृहे ।
कर्काद्युग्मभके खेटे स्कन्दः पशुधरोऽनलः ॥ २१ ॥
विश्वकर्मा भगो मित्रो भगोऽन्तकवृषध्वजाः ।
गोविन्दो मदनो भीमः सिंहादौ विषमे क्रमात् ।
कर्कादौ समभे भीमाद्विलोमेन विचिन्तयेत् ॥ २२ ॥

एक राशि में १ अंश १५ कला के २४ चतुर्विंशांश होते हैं। विषम राशि लग्न हो तो सिंह से और सम राशि में कर्क से गणना कर २४ राशियों का चतुर्विंशांश होता है। विषम राशि में क्रम से स्कंद, पशुधर, अनल, विश्वकर्मा, भग, मित्र, भग, अन्तक, वृषध्वज, गोविन्द, मदन, भीम फिर स्कंद से भीम पर्यन्त एवं सम राशि में भीम से उत्क्रम रीति से गिनने से स्वामी होते हैं॥ २१-२२॥

उदाहरण- लग्न ६।१५।२२।३७ सम राशि में कर्क से गिनने से १३वाँ कर्क राशि यानि चन्द्र का चतुर्विंशांश हुआ और उसके भीम स्वामी हुए।

चतुर्विंशांशचक्रम्-

सं.	विषमे स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	समे स्वामिनः	अं. क.
१	स्कन्दः	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	भीमः	१।१५
२	पशुधरः	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	मदनः	२।३०
३	अनलः	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	गोविन्द	३।४५
४	विश्वकः	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	वृषध्वजः	५।०
५	भगः	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	अन्तकः	६।१५
६	मित्रः	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	यमः	७।३०
७	यमः	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	मित्रः	८।४५
८	अन्तकः	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	भगः	१०।०
९	वृषध्वजः	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	विश्वकः	११।१५
१०	गोविन्दः	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	अनलः	१२।३०
११	मदनः	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	पशुधरः	१३।४५
१२	भीमः	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	स्कन्दः	१५।०
१३	स्कन्दः	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	भीमः	१६।१५
१४	पशुधरः	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	मदनः	१७।३०
१५	अनलः	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	गोविन्दः	१८।४५

इस चक्र का शेष आगे पृष्ठ ५५ पर देखें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सं.	विषमे स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	समे स्वामिनः	अं. क.
१६	विश्वकः	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	वृषध्वजः	२०।०
१७	भगः	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	अन्तकः	२१।१५
१८	मित्रः	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	यमः	२२।३०
१९	यमः	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	मित्रः	२३।४५
२०	अन्तकः	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	भगः	२५।०
२१	वृषध्वजः	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	विश्वकर्मा	२६।१५
२२	गोविन्दः	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	अनलः	२७।३०
२३	मदनः	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	पशुधरः	२८।४५
२४	भीमः	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	स्कन्दः	३०।०

भांशेशमाह-

नक्षत्रेशाः क्रमाद्धस्त्रयमवह्नि पितामहाः ।
चन्द्रेशादितिजीवाहि पितरो भगसंज्ञिताः ॥२३॥
अर्यमार्कत्वष्टमरुच्छक्राग्निमित्रवासवाः ।
निर्ऋत्युदर्कविश्वेऽज -गोविंदो वसवोऽम्बुपः ॥२४॥
ततोऽजयादहिर्बुध्न्यः पूषा चैव प्रकीर्त्तिताः ।
नक्षत्रेशास्तु भांशेशा भांशसंख्यः चरात्क्रमात् ॥२५॥

एक राशि में २७ अंश १ अंश ६ कला और ४० विकला के होते हैं। प्रत्येक राशियों में क्रम से चर राशि से आरम्भ होता है और उनके स्वामी नक्षत्रेश होते हैं। शेष चक्र में देखिये॥ २३-२५॥

उदाहरण-लग्न ९।१५।२२।३७ है। इसमें सिंह राशि यानि सूर्य भांशपति हुआ और नक्षत्रेश त्वष्टा हुए।

भांशचक्रम्-

सं.	स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं. क. वि.
१	अश्वि.कु.	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१।६।४०
२	यम	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२।१३।२०
३	अग्नि	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३।२०।०
४	ब्रह्मा	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४।२६।४०
५	चंद्रमा	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५।३३।२०
६	शङ्कर	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६।४०।०

इस चक्र का शेष पृष्ठ ५६ पर देखें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सं.	स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं. क. वि.
७	अदिति	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७।४६।४०
८	जीव	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८।५३।२०
९	अहि	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	१०।०।०
१०	पितर	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	११।६।४०
११	भग	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	१२।१३।२०
१२	अर्यमा	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१३।२०।०
१३	अर्क	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१४।२६।४०
१४	त्वष्टा	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	१५।३३।२०
१५	वायु	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	१६।४०।०
१६	शक्राग्नि	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	१७।४६।२०
१७	मित्र	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	१८।५३।२०
१८	वासव	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	२०।०।०
१९	निर्ऋति	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	२१।६।४०
२०	उदक	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	२२।१३।२०
२१	विश्वेदे	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	२३।२०।०
२२	गोविन्द	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	२४।२६।४०
२३	वसु	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	२५।३३।२०
२४	वरुण	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	२६।४०।०
२५	अजपात्	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	२७।४६।४०
२६	अहिर्बुध्न्य	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२८।५३।२०
२७	पूषा	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३०।०।०

अथ त्रिंशांशमाह-

त्रिंशांशेशाश्च विषमे कुजार्कीज्यज्ञ भार्गवाः।
पंचपंचाष्टसप्ताक्षभागा व्यत्ययतः समे ॥२६॥
वह्निः समीरशक्रौ च धनदो जलदस्तथा।
विषमेषु क्रमाज्ज्ञेया समराशौ विपर्ययम् ॥२७॥

विषम राशि में भौम, शनि, गुरु, बुध और शुक्र का क्रम से ५, ५, ८, ७, ५ अंश और सम राशि में शुक्र, बुध, गुरु, शनि और भौम का क्रम से ५, ७, ८, ५, ५, अंश त्रिंशांश होता है। विषम राशि में क्रम से वह्नि, वायु, इन्द्र, धनद और जलद तथा सम राशि में जलद, धनद, इन्द्र, वायु और अग्नि अधिपति होते हैं॥ २६-२७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण-लग्न ६।१५।२२।३७ है। लग्न सम है। अतः गुरु का त्रिंशांश हुआ और इन्द्र स्वामी हुए।

विषमे त्रिंशांशचक्रम्								समराशौ त्रिंशांशचक्रम्							
अं.	स्वामिनः	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.	अं.	वृ.	क.	कं.	वृ.	म.	मी.	स्वामिनः
५	वह्नि	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	जलद
१०	वायु	श.	श.	श.	श.	श.	श.	१२	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	धनदः
१८	इन्द्र	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	२०	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	इन्द्र
२५	धनद	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	२५	श.	श.	श.	श.	श.	श.	वायु
३०	जलद	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	३०	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	वह्नि

अथ खवेदांशमाह-

चत्वारिंशतिभागानामधिपा विषमे क्रियात्।
विष्णुश्चन्द्रो मरीचिश्च त्वष्टा धाता शिवो रविः॥२८॥
यमो यक्षेशगंधर्वौ कालो वरुण एव च।
समभे तुलतो ज्ञेयाः स्वस्वाधिपसमन्विताः॥२९॥

विषम राशि में मेष से और सम राशि में तुला राशि से ४० वाँ अंश आरम्भ होता है। क्रम से विष्णु, चन्द्र, मरीचि, त्वष्टा, धाता, शिव, रवि, यम, यक्षेश, गंधर्व, काल, वरुण यही स्वामी होते हैं॥२८-२९॥

उदाहरण- लग्न ६।१५।२२।३७ है। एक चालीसवाँ अंश ४५ कला का होता है। इस हिसाब से २१वाँ भाग मिथुन राशि बुध का अंश और यक्षेश स्वामी हुए।

खवेदांश चक्रम्-

सं.	स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं. क.
१	विष्णु	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	०।४५
२	चंद्रः	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	१।३०
३	मरीचि	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	२।१५
४	त्वष्टा	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	३।०
५	धाता	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	३।४५
६	शिव	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	४।३०
७	रवि	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	५।१५
८	यम	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	६।०

इस चक्र का शेष पृष्ठ ५८ पर देखें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सं.	स्वामिनः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं. क.
९	यक्षेश	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	६।४५
१०	गन्धर्व	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	७।३०
११	काल	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	८।१५
१२	वरुण	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	९।०
१३	विष्णु	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	९।४५
१४	चंद्रः	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	१०।३०
१५	मरीचि	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	११।१५
१६	त्वष्टा	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	१२।०
१७	धाता	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	१२।४५
१८	शिव	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	१३।३०
१९	रवि	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	१४।१५
२०	यम	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	१५।०
२१	यक्षेश	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	१५।४५
२२	गन्धर्व	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१६।३०
२३	काल	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	१७।१५
२४	वरुण	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१८।०
२५	विष्णु	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१८।४५
२६	चंद्रः	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	१९।३०
२७	मरीचि	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	२०।१५
२८	त्वष्टा	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	२१।०
२९	धाता	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	२१।४५
३०	शिव	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	२२।३०
३१	रवि	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	२३।१५
३२	यम	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	२४।०
३३	यक्षेश	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	२४।४५
३४	गन्धर्व	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	२५।३०
३५	काल	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	२६।१५
३६	वरुण	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	२७।०
३७	विष्णु	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	२७।४५
३८	चंद्रः	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२८।३०
३९	मरीचि	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	२९।१५
४०	त्वष्टा	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	३०।०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथाक्षवेदांशमाह-

तथाक्षवेदभागानामधिपाश्चलभे क्रियात् ।
स्थिरेसिंहाद्द्विस्वभावे चापाद्ब्रह्मेशकेशवाः ।
ईशाच्युतसुरज्येष्ठ - विष्णुकेशाश्चराधिषु ॥ ३० ॥

चर राशि में मेष से, स्थिर राशि में सिंह से और द्विस्वभाव राशि में धनु राशि से गणना करने से अक्षवेदांश के स्वामी होते हैं और चर, स्थिर, द्विस्वभाव के क्रम से ब्रह्मा, शंकर, विष्णु, शंकर, विष्णु, ब्रह्मा, विष्णु, ब्रह्मा, शंकर- ये स्वामी होते हैं॥ ३० ॥

उदाहरण- लग्न ६।१५।२२।३७ है। ४० कला का एक भाव होता है। अतः २४वाँ मीन राशि अर्थात् गुरु का अक्षवेदांश हुआ और विष्णु स्वामी हुए।

अक्षवेदांशचक्रम्

स्वामिनः	ब्रह्मा शंकर विष्णु	शं. वि. ब्र.	वि. ब्र. शं.	ब्र. शं. वि.	शं. वि. ब्र.	वि. ब्र. शं.	ब्र. शं. वि.	श. वि. ब्र.	वि. ब्र. शं.	ब्र. शं. वि.	शं. वि. ब्र.	विष्णु ब्रह्मा शंकर	स्वामिनः
सं.	मेष	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मीन	अं. क.
१	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	०।४९
२	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	१।२०
३	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	२।०
४	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	२।४०
५	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	३।२०
६	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	४।०
७	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	४।४०
८	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	५।२०
९	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	६।०६
१०	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	६।४०
११	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	७।२०
१२	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	८।०
१३	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	८।४०
१४	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	९।२०
१५	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	१०।०
१६	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	१०।४०
१७	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	११।२०

इस चक्र का शेष पृष्ठ ६० पर देखें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्वा	ब्रह्मा	शं.	वि.	ब्र.	शं.	वि.	ब्र.	श.	वि.	ब्र.	शं.	विष्णु	स्वा
मि	शंकर	वि.	ब्र.	शं.	वि.	ब्र.	शं.	वि.	ब्र.	शं.	वि.	ब्रह्मा	मि
नः	विष्णु	ब्र.	शं.	वि.	ब्र.	शं.	वि.	ब्र.	शं.	वि.	ब्र.	शंकर	नः
सं.	मेष	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मीन	अं. क.
१८	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	१२।०
१९	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	१२।४०
२०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	१३।२०
२१	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	१४।०
२२	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१४।४०
२३	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	१५।२०
२४	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१६।०
२५	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१६।४०
२६	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	१७।२०
२७	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	१८।०
२८	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	१८।४०
२९	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	१९।२०
३०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	२०।०
३१	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	२०।४०
३२	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	२१।२०
३३	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	२२।०
३४	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	२२।४०
३५	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	२३।२०
३६	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	२४।०
३७	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	२४।४०
३८	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२५।२०
३९	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	२६।०
४०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	२६।४०
४१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	२७।२०
४२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	२८।०
४३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	२८।४०
४४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	२९।२०
४५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	३०।०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ षष्ट्यंशमाह-

घोरश्च राक्षसो देवः कुबेरो यक्षकिन्नरौ ।
भ्रष्टः कुलघ्नो गरलो वह्निर्माया पुरीषकः ॥ ३१ ॥

विषम राशि में १ घोर, २ राक्षस, ३ देव, ४ कुबेर, ५ यक्ष, ६ किन्नर, ७ भ्रष्ट, ८ कुलघ्न, ९ गरल, १० अग्नि, ११ माया, १२ यम (पुरीष) ॥ ३१ ॥

अपांपतिर्मरुत्वांश्च कालः सर्पामृतेन्दुकाः ।
मृदुः कोमलहेरम्बब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ३२ ॥

१३ वरुण, १४ इन्द्र, १५ काल, १६ सर्प, १७ अमृत, १८ चन्द्रमा, १९ मृदु, २० कोमल, २१ हेरम्ब, २२ ब्रह्मा, २३ विष्णु, २४ शिव ॥ ३२ ॥

देवार्द्रौकलिनाशश्च क्षितीशकमलाकरौ ।
गुलिको मृत्युकालश्च दावाग्निर्घोरसंज्ञकः ॥ ३३ ॥

२५ देव, २६ आर्द्र, २७ कलिनाश, २८ क्षितीश, २९ कमलाकर, ३० गुलिक, ३१ मृत्यु, ३२ काल, ३३ दावाग्नि, ३४ घोर ॥ ३३ ॥

यमश्च कंटकसुधाऽमृतौ पूर्णनिशाकरः ।
विषदग्धकुलांतश्च मुख्यो वंशक्षयस्तथा ॥ ३४ ॥

३५ यम, ३६ कंटक, ३७ सुधा, ३८ अमृत, ३९ पूर्णचन्द्र, ४० विषदग्ध, ४१ कुलनाश, ४२ मुख्य, ४३ वंशक्षय ॥ ३४ ॥

उत्पातकालसौम्याख्याः कोमलः शीतलाभिधः ।
करालदंष्ट्रचन्द्रास्यौ प्रवीणः कालपावकः ॥ ३५ ॥

४४ उत्पात, ४५ काल, ४६ सौम्य, ४७ कोमल, ४८ शीतल, ४९ करालदंष्ट्र, ५० इन्दुमुख, ५१ प्रवीण, ५२ कालाग्नि ॥ ३५ ॥

दण्डभृन्निर्मलः सौम्यः क्रूरोऽतिशीतलोऽमृतः ।
पयोधिभ्रमणाख्यौ च चन्द्ररेखा त्वयुग्मपौ ॥ ३६ ॥
समेभेव्यत्यया ज्ञेयाः षष्ट्यंशाश्च प्रकीर्तितीः ।
षष्ट्यंशस्वामिनस्त्वोजे तदीशाद् व्यत्ययतः समे ॥ ३७ ॥

५३ दंडभृत्, ५४ निर्मल, ५५ सौम्य, ५६ क्रूर, ५७ अतिशीतल, ५८ अमृत, ५९ भ्रमण और ६० इन्दुरेखा ॥ ३६ ॥ विषम राशि में घोर आदि और सम राशि में चन्द्ररेखा आदि क्रम से षष्ट्यंश के अधिपति होते हैं ॥ ७ ॥

शुभषष्ट्यंशसंयुक्ताः ग्रहाः शुभफलप्रदाः ।
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ता नाशयन्ति खचारिणः ॥ ३८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभग्रह के षष्ट्यंश में ग्रह हो तो शुभफल देता है और क्रूरग्रह के षष्ट्यंश में हो तो नाश करता है।।३८।।

राशीन् विहाय खेटस्य द्विघ्नमंशाद्यमर्कहृत्।
शेषं सैकं च तद्राशिनाथ षष्ट्यंशपाः स्मृताः ॥३९॥

जिस ग्रह का षष्ट्यंश देखना हो उसके राशि को छोड़कर अंश, कला, विकला आदि को २ से गुणाकर गुणनफल में १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उसमें जोड़कर जो संख्या हो उतनी ही संख्या वाली ग्रह की राशि से जो राशि हो उसके स्वामी षष्ट्यंश के स्वामी होते हैं॥३९॥

उदाहरण- लग्न ९।१५।२२।३७ है। इसके राशि को छोड़कर अंशादि को २ से गुणा करने से ३०।४५।१४ हुआ। इसमें १२ से भाग देने पर शेष ६ बचा। इसमें १ एक और जोड़ देने से ७वां षष्ट्यंश हुआ। मकर से ७वीं राशि कर्क के स्वामी चन्द्रमा षष्ट्यंश के स्वामी हुए। दूना किये हुये अंश ३० में १ जोड़ देने से ३१ वाँ सम राशि में कुलिक षष्टयंश का अधिपति हुआ।

अथ षष्ट्यंश-चक्रम्

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामी	अं. क.
१	घोर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	इन्दुरेखा	०।३०
२	राक्षस	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भ्रमण	१।०
३	देव	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	पयोधीश	१।३०
४	कुबेर	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	सुधा	२।०
५	यक्ष	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अ.शीतल	२।३०
६	किन्नर	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	क्रूर	३।०
७	भ्रष्ट	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौम्य	३।३०
८	कुलघ्न	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	निर्मल	४।०
९	गरल	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	दण्डायुध	४।३०
१०	अग्नि	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	कालाग्नि	५।०
११	माया	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	प्रवीण	५।३०
१२	पुरीष	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	इन्दुमुखी	६।०
१३	अपांपति	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	दंष्ट्राकराल	६।३०
१४	मरुत्वान्	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शीतल	७।०
१५	काल	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कोमल	७।३०
१६	अहि	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	सौम्य	८।०
१७	अमृत	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कालरूप	८।३०

इस चक्र का शेष पृष्ठ ६३ पर देखें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामी	अं. क.
१८	चंद्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	उत्पात	९।०
१९	मृदु	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	वंशक्षय	९।३०
२०	कोमल	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कुलनाश	१०।०
२१	हेरम्ब	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	विषदग्ध	१०।३०
२२	ब्रह्मा	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	पूर्णचंद्र	११।०
२३	विष्णु	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	अमृत	११।३०
२४	महेश्वर	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सुधा	१२।०
२५	देव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	कण्टक	१२।३०
२६	आर्द्र	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	यम	१३।०
२७	कलिनाश	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	घोर	१३।३०
२८	क्षितीश्वर	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	दावाग्नि	१४।०
२९	कमलाकर	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	काल	१४।३०
३०	गुलिक	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	मृत्यु	१५।०
३१	मृत्यु	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	गुलिक	१५।३०
३२	काल	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कमलाक	१६।०
३३	दावाग्नि	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	क्षितीश्वर	१६।३०
३४	घोर	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	कलिनाश	१७।०
३५	यम	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	आर्द्रा	१७।३०
३६	कण्टक	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	देव	१८।०
३७	सुधा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	महेश्वर	१८।३०
३८	अमृत	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	विष्णु	१९।०
३९	पूर्णचंद्र	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	ब्रह्मा	१९।३०
४०	विषदग्ध	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	हेरम्ब	२०।०
४१	कुलनाश	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कोमल	२०।३०
४२	वंशक्षय	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	मृदु	२१।०
४३	उत्पात	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	चंद्र	२१।३०
४४	काल	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	अमृत	२२।०
४५	सौम्य	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अहि	२२।३०
४६	कोमल	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	काल	२३।०
४७	शीतल	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मरुत्वान्	२३।३०
४८	दंष्ट्राकराल	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	अपाम्पति	२४।०

इस चक्र का शेष पृष्ठ ६४ पर देखें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सं.	स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	स्वामी	अं. क.
४९	इंदुमुख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	पुरीष	२४।३०
५०	प्रवीण	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	माया	२५।०
५१	कालाग्नि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अग्नि	२५।३०
५२	दण्डायुध	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	गरल	२६।०
५३	निर्मल	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	कुलघ्न	२६।३०
५४	सौम्य	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भ्रष्ट	२७।०
५५	क्रूर	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	किन्नर	२७।३०
५६	अतिशीतल	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	यक्ष	२८।०
५७	सुधा	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कुबेर	२८।३०
५८	पयोधीश	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	देव	२९।०
५९	भ्रमण	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	राक्षस	२९।३०
६०	इन्दुरेखा	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	घोर	३०।०

अथ वर्गभेदामाह-

वर्गभेदानहं वक्ष्ये मैत्रेय! त्वं विधारय।
षड्वर्गा सप्तवर्गाश्च दिग्वर्गा नृपवर्गगाः॥४०॥

हे मैत्रेय! मैं वर्गभेद को कहता हूँ, उसे तुम सुनो। षड्वर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग और षोडश वर्ग होते हैं॥४०॥

भवंति वर्गसंयोगे षड्वर्गे किंशुकादयः।
द्वाभ्यां किंशुकनामा च त्रिभिर्व्यंजनमुच्यते॥४१॥

षड्वर्ग में दो, तीन आदि वर्गों के संयोग से किंशुक आदि संज्ञायें होती हैं। यथा-दो वर्ग में ग्रह हो तो किंशुक, तीन के संयोग से व्यंजन॥४१॥

चतुर्भिश्चामराख्यं च छत्रं पंचभिरेव च।
षड्भिः कुंडलयोगः स्यान्मुकुटाख्यं च सप्तभिः॥४२॥

चार के संयोग से चामर, पांच के संयोग से छत्र और छः वर्ग के संयोग से कुंडल नामक होता है। सप्तवर्ग में छः वर्ग तक तो पूर्वोक्त ही होते हैं, किन्तु सात वर्ग के संयोग से मुकुट होता है॥४२॥

सप्तवर्गेऽथ दिग्वर्गे पारिजातादिसंज्ञकाः।
पारिजातं भवेद्द्वाभ्यामुत्तमं त्रिभिरुच्यते॥४३॥

दशवर्गमें दो वर्गकि संयोगसे पारिजात, तीन वर्गकि संयोगसे उत्तम॥४३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चतुर्भिर्गोपुराख्यं स्याच्छरैः सिंहासनं तथा ।
पारावतं भवेत्षड्भिर्देवलोकं तु सप्तभिः ॥४४॥

चार वर्ग के संयोग से गोपुर, पाँच वर्ग के संयोग से सिंहासन, ६ वर्ग के संयोग से पारावत, सात वर्ग के संयोग से देवलोक॥ ४४॥

वसुभिर्ब्रह्मलोकाख्यं नवभिः शक्रवाहनम् ।
दिग्भिः श्रीधामयोगं स्यादथ षोडशवर्ग के ॥४५॥

आठ वर्ग के संयोग से ब्रह्मलोक, ९ वर्ग के संयोग से शक्रवाहन और दश वर्ग के संयोग से श्रीधाम योग होता है॥ ४५॥

भेदकं तु भवेद्द्वाभ्यां त्रिभिः स्यात्कुसुमाख्यकम् ।
चतुर्भिर्नागपुष्पं स्यात्पंचभिः कंदुकाह्वयम् ॥४६॥

षोडशवर्ग में २ वर्ग के संयोग से भेदक, ३ वर्ग के संयोग से कुसुम, चार वर्ग के संयोग से नागपुष्प, ५ वर्ग के संयोग से कंदुक॥ ४६॥

केरलाख्यं भवेत्षड्भिः सप्तभिः कल्पवृक्षकम् ।
अष्टभिश्चन्दनवनं नवभिः पूर्णचन्द्रकम् ॥४७॥

६ वर्ग के संयोग से केरल, ७ वर्ग के संयोग से कल्पवृक्ष, ८ वर्ग के संयोग से चन्द्रवन, ९ वर्ग के संयोग से पूर्णचन्द्र॥ ४७॥

दिग्भिरुच्चैःश्रवा नाम रुद्रैर्धन्वतरिर्भवेत् ।
सूर्यकान्तं भवेत्सूर्यैर्विश्वैः स्याद्विद्रुमाह्वयम् ॥४८॥

१० वर्ग के संयोग से उच्चैःश्रवा, ११ वर्ग के संयोग से धन्वन्तरि, १२ वर्ग के संयोग से सूर्यकान्त, १३ वर्ग के संयोग से विद्रुम॥ ४८॥

शक्रसिंहासनं शक्रैर्गोलोकं तिथिभिर्भवेत् ।
भूपैः श्रीवल्लभाख्यं स्याद्वर्गभेदैरुदाहृता ॥४९॥

१४ के संयोग से सिंहासन, १५ वर्ग के संयोग से गोलोक और १६ वर्ग के संयोग से श्रीवल्लभ नाम होता है॥ ४९॥

स्वोच्चमूलत्रिकोणस्वभवनाधिपतेः तथा ।
स्वारूढात्केन्द्रनाथानां वर्गा ग्राह्या सुधीमता ॥५०॥

जो ग्रह अपने उच्चराशि में, अपने मूलत्रिकोण राशि में, अपने राशि में और आरूढ़ लग्न से केन्द्रपतियों का वर्ग लेना चाहिए॥ ५०॥

अस्तंगता ग्रहजिता नीचगा दुर्बलास्तथा ।
शयनादिगतादुस्था उत्पन्ना योगनाशकाः ॥५१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जो अस्त हों, युद्ध में पराजित हों, अपने नीचराशि में हों, दुर्बल हों, शयनादि दुष्ट अवस्था में हों, उनका वर्ग अशुभ होता है॥ ५१॥

विशेष- गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांशक को षड्वर्ग कहते हैं। इनके साथ सप्तमांश को मिला देने से सप्तवर्ग होता है और इसमें दशमांश, षोडशांश-षष्ठांश को ले लेने से दशवर्ग होता है, शेष षोडशवर्ग होते हैं।

किंशुकादि-सप्तवर्गज-संज्ञाबोधक-चक्रम्-

२	३	४	५	६	७
किंशुकः	व्यञ्जनम्	चामरः	छत्रम्	कुण्डलः	मुकुटः

पारिजातादि दशवर्गज संज्ञाबोधकचक्रम्-

२	३	४	५	६	७	८	९	१०
पारिजातम्	उत्तमम्	गोपुरम्	सिंहासनम्	पारावतम्	देवलोकम्	ब्रह्मलोकम्	शक्रवाहनम्	श्रीधाम

षोडशवर्गजसंज्ञाबोधकचक्रम्-

२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
भेदकम्	कुसमाख्यम्	नागपुष्पम्	कन्दुकाख्यम्	केरलाख्यम्	कल्पवृक्षम्	चन्दनवनम्	पूर्णचन्द्रकम्	उच्चैःश्रवा	धन्वन्तरिः	सूर्यकान्तम्	विद्रुमाख्यम्	शक्रसिंहासनम्	गोलोकम्	श्रीवल्लभाख्यं

उदाहरण- पूर्वोक्त उदाहरणों में लग्न सप्तवर्गों में २ वर्ग में है, अतः किंशुक संज्ञा हुई। दशवर्ग के अनुसार २ वर्ग में है, अतः पारिजात संज्ञा में है और षोडशवर्ग के अनुसार ४ वर्ग में है, अतः नागपुष्प संज्ञा हुई। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों की संज्ञायें बनानी चाहिये।

इति पाराशरहोरायां सुबोधिन्यां पंचमः।

❖

अथ षोडशवर्गाविवेकाध्यायः

अथ षोडशवर्गेषु चिंतालग्नं वदाम्यहम्।
लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम्॥ १॥
द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं तुर्यांशे भाग्यचिन्तनम्।
पुत्रपौत्रादिकानां वै चिंतनं सप्तमांशके॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अब मैं षोडश वर्गों से विचारणीय विषयों को कह रहा हूँ। लग्न से शरीर सम्बंधी शुभ-अशुभ का विचार करना चाहिये, होरा से द्रव्य का॥१॥ द्रेष्काण से भाई का, चतुर्थांश से भाग्य का, सप्तमांश से पुत्र-पौत्रादि का॥२॥

नवमांशे कलत्राणां दशमांशे महत्फलम्।
द्वादशांशे तथा पित्रोश्चिंतनं षोडशांशके॥३॥

नवमांश से स्त्री का, दशमांश से बड़े कार्यों (राजसम्बंधी), का द्वादशांश से माता-पिता का, षोडशांश से वाहन के सुख-दुःख का॥३॥

सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च।
उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके॥४॥

विंशांश से उपासना के विज्ञान का विचार करना चाहिए॥४॥

विद्यायां वेदवाह्वंशे भांशे चैव बलाऽबलम्।
विंशाशके रिष्टफलं खवेदांशे शुभाशुभम्॥५॥
अक्षवेदांशभागे च षष्ट्यंशेऽखिलमीक्षयेत्।
यत्र कुत्रापि संप्राप्तः क्रूरषष्ट्यंशकाधिपः॥६॥

चतुर्विंशांश से विद्या का, सप्तविंशांश से बलाबल का, त्रिंशांश से अरिष्ट का, खवेदांश से शुभ-अशुभ का॥५॥ अक्षवेदांश और षष्ट्यंश से सभी वस्तुओं का विचार करना चाहिये। जहाँ पर (जिस भाव में) क्रूर ग्रह षष्ठ्यंशपति होता है॥६॥

तत्र नाशो न संदेहो प्राचीनानां वचो यथा।
यत्र कुत्रापि सम्प्राप्तः कालांशाधिपतिः शुभः॥७॥
तत्र वृद्धिश्च पुष्टिश्च प्राचीनानां वचो यथा।
इति षोडशवर्गाणां भेदास्ते प्रतिपादिताः॥८॥

उस भाव के फलों की हानि होती है। जिस किसी भाव में शुभग्रह षष्ट्यंश पति होता है, उस भाव संबंधी फलों की वृद्धि होती है। इस प्रकार सोलह वर्गों के भेद को मैंने कहा॥७-८॥

अथ विंशोपकबलमाह-

उदयादिषु भावेषु खेटस्य भवनेषु वा।
वर्गविश्वाबलं वीक्ष्य ब्रूयात्तेषां शुभाशुभम्॥९॥
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वर्गविश्वाबलं द्विज।
यस्य विज्ञानमात्रेण विपाकं दृष्टिगोचरम्॥१०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्न आदि भावों का और ग्रहों के राश्यादि से वर्ग विश्वाबल को देखकर उनके शुभ-अशुभ फलों को कहना चाहिये। अब मैं वर्ग विश्वाबल कह रहा हूँ, जिसके ज्ञानमात्र से फल साक्षात् दिखाई देता है॥ १०॥

गृहं विंशोपकं वीक्ष्य सूर्यादीनां खचारिणाम्।
स्वगृहोच्चे बलं पूर्णं शून्यं तत्सप्तमस्थिते॥ ११॥
ग्रहस्थितिवशाज्ज्ञेयं द्विराश्याधिपतिस्तथा।
मध्येऽनुपाततो ज्ञेया ओजयुग्मर्क्षभेदतः॥ १२॥

भावों के राशियों का और सूर्य आदि ग्रहों के विंशोपक बल को देखना चाहिए। अपने गृह, उच्च में पूर्ण बल तथा नीच में शून्यबल तथा मध्य में अनुपात से बल ले आना चाहिये॥११॥ ग्रहों की स्थितिवश, दो राशियों के अधिपति तथा विषम समराशि की स्थिति वश बल ले आना चाहिए॥ १२॥

सूर्यः होराफलं दद्युर्जीवार्कवसुधात्मजाः।
चन्द्रास्फुजिदर्कपुत्राश्चन्द्रहोरा - फलप्रदाः॥ १३॥

होरा वर्ग केवल रवि-चन्द्रमा का ही होता है, अतः शेष ग्रहों के फल विचार के लिए विशेष कह रहे हैं। गुरु, सूर्य, भौम- ये सूर्य के होराफल और चन्द्रमा, शुक्र, शनि, ये चन्द्र के होरा का फल देते हैं॥ १३॥

फलद्वयं बुधो दद्यात्समे चान्द्रं तदन्यके।
रवेः फलं स्वहोरादौ फलहीनं विरामके॥ १४॥

बुध दोनों के होरा का फल देता है। समराशि में चन्द्र के होरा का फल और विषम राशि में सूर्य के होरा का फल होता है। रवि के होरा के आदि में पूर्ण फल, अन्त में शून्य फल होता है॥ १४॥

मध्येऽनुपातात्सर्वत्र द्रेष्काणेऽपि विचिन्तयेत्।
गृहवत्तुर्यभागेऽपि नवांशादावपि स्वयम्॥ १५॥
सूर्यः कुजफलं धत्ते भार्गवस्य निशापतिः।
त्रिंशांशके विचिन्त्येवमत्रापि गृहवत् स्मृतम्॥ १६॥

मध्य में सर्वत्र अनुपात से फल लाना चाहिये। इसी प्रकार द्रेष्काण आदि से भी फल लाना चाहिये। गृह के ही समान चतुर्थांश में तथा नवांश आदि में भी फल समझना चाहिये॥ १५॥ त्रिंशांश में सूर्य, भौम का और चन्द्रमा, शुक्र का फल देता है। इसमें गृह के समान ही फल होता है॥ १६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ षट्-सप्त-वर्गाणां विंशोपकमाह-

लग्नहोरादृक्काणाङ्क - भागाः सूर्यांशका इति ।
त्रिंशांशकाश्च षड्वर्गाः तेषां विंशोपकाः क्रमात् ॥ १७॥
रसनेत्राब्धिपंचाश्विभूमयः सप्तवर्गके ।
स्थूलं फलं च संस्थाप्य तत्सूक्ष्मं च ततस्ततः ॥ १८॥

लग्न (गृह), होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश-ये ही षड्वर्ग कहे जाते हैं॥ १७॥ इनका विंशोपक बल क्रम से ६, २, ४, ५, २ ,१ है। यह स्थूल है, सूक्ष्म के लिये अनुपात करना चाहिए॥ १८॥

स सप्तमांशकं तत्र विश्वंका पंचलोचनम् ।
त्रयं सार्धद्वयं साधविदं द्वौराशिनायकाः ॥ १९॥

ये ही सप्तमांश के साथ मिलकर सप्तवर्ग कहे जाते हैं, इसका विंशोपक बलक्रम से ५, २, ३, २$\frac{१}{२}$, ४$\frac{१}{२}$, २, २, १ है॥ १९॥

अथ दशवर्गाणां विंशोपकमाह-

दशवर्गादिगंशाख्या कलांशाः षष्टिनायकाः ।
त्रयं क्षेत्रस्य विज्ञेया पंच षष्ठ्यंशकस्य च ॥ २०॥

पूर्वोक्त सप्तवर्ग में दशमांश, षोडशांश, षष्ट्यंश को मिला देने से दशवर्ग होता है। इसमें गृह का ३, षष्ट्यंश का ५ और शेष वर्गों का डेढ़ (१$\frac{१}{२}$) विंशोपक बल होता है॥ २०॥

अथ षोडशवर्गाणां विंशोपकमाह-

सार्धैकभागाः शेषाणां विश्वंकाः परिकीर्त्तिताः ।
अथ वक्ष्ये विशेषेण विश्वंकाः मम संमतम् ॥ २१॥

अब मैं षोडश वर्गों का विशेषतः विश्वाबल को कह रहा हूँ॥ २१॥

क्रमात् षोडश वर्गाणां क्षेत्रादीनां पृथक् पृथक् ।
होरांशभागदृक्काणे कुचन्द्रशशिनः क्रमात् ॥ २२॥

होरा का १, अंशभाग (त्रिंशांश) का १, द्रेष्काण का १॥ २२॥

कलांशस्य द्वयं ज्ञेयं त्रयं नन्दांशकस्य च ।
क्षेत्रे सार्धं च त्रितयं चतुः षष्ट्यंशकस्य हि ॥ २३॥

षोडशांश का २, नवमांश का ३, गृह का १$\frac{१}{२}$, षष्ट्यंश का ४॥ २३॥

अर्धमर्धं तु शेषाणां ह्येतत् स्वीयमुदाहृतम् ।
पूर्णं विश्वाबलं विंशो धृतिः स्यादधिमित्रके ॥ २४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मित्रे पंचदश प्रोक्तं समे दश प्रकीर्त्तितम् ।
शत्रौ सप्ताधिशत्रौ च पंच विश्वाबलं भवेत् ॥ २५ ॥

और शेष वर्गों का आधा-आधा ($\frac{१}{२}$) विंशोपक बल होता है। यह विंशोपक बल अपने वर्ग में पूर्ण २० होता है। अधिमित्र के वर्ग में १८॥ २४॥ मित्र के वर्ग में १५, सम के वर्ग में १०, शत्रु के वर्ग में ७ और अधिशत्रु के वर्ग में ५ विंशोपक बल होता है॥ २५॥

अथ विंशोपकबलस्य स्पष्टीकरणम्-

वर्गविश्वास्वविश्वघ्नाः पुनर्विंशतिभाजिताः ।
विश्वाफलोपयोग्यं तत्पंचोनं फलदो न हि ॥ २६ ॥
तदूर्ध्वं स्वल्पफलदं दशोर्ध्वं मध्यमं स्मृतम् ।
तिथ्यूर्ध्वं पूर्णफलदं बोध्यं सर्वं खचारिणाम् ॥ २७ ॥

वर्ग के विश्वा को उसी में गुणाकर उसमें २० का भाग देने से स्पष्ट विंशोपक बल फल कहने योग्य होता है। वह ५ से कम हो तो फल कहने योग्य नहीं होता है॥ २६॥ इसके ऊपर १० तक अल्प फल देने वाला, दश के ऊपर १५ तक मध्यम फल, इसके ऊपर २० तक पूर्ण फल देने वाला होता है। ऐसा सभी ग्रहों का समझना चाहिये॥ २७॥

अथ फलकथने विशेषः-

अथान्यदपि वक्ष्येऽहं मैत्रेय! त्वं विधारय ।
खेटाः पूर्णफलं दद्युः सूर्यात्सप्तमके स्थिताः ॥ २८ ॥
फलाभावें विजानीयात्समे सूर्यनभश्चरे ।
मध्येऽनुपातात्सर्वत्र ह्युदयास्तविंशोपकाः ॥ २९ ॥

हे मैत्रेय! अन्य प्रकारों को कहता हूँ- तुम सुनो! सूर्य के सातवें भाव में ग्रह हो तो पूर्ण फल देता है॥ २८॥ सूर्य के समान ही राशि अंशादि हो तो शून्य फल देता है और इसके मध्य में हो तो अनुपात से फल समझना चाहिये। ग्रहों के उदय-अस्त का भी विचार कर लेना चाहिए॥ २९॥

वर्गविश्वासमं ज्ञेयं फलमस्य द्विजर्षभः ।
यत्र यत्र फलं बद्ध्वा तत्फलं परिकीर्त्तितम् ॥ ३० ॥
वर्गविश्वाफलं चादावुदयास्तमः परम् ।
पूर्णं पूर्णेति पूर्वं स्यात् सर्वदेवं दैविचिन्तयेत् ॥ ३१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हे द्विजश्रेष्ठ ! वर्ग विंशोपक के अनुसार जो ग्रह जैसा फल देता हो उसके अनुसार ही उसके फल की कल्पना करें।। ३०।। पूर्ण, मध्यम, हीन और अल्प में दो-दो भेद हैं। श्लो० २६-२७ के अनुसार प्रत्येक पूर्ण आदि फलों में ५ का भेद है। अतः १५ से १७।। तक पूर्ण, १७।। २० तक अतिपूर्ण, १० से १२ तक मध्यम, १२।। से १५ तक अति मध्यम।। ३१।।

हीनं हीनेऽतिहीनं स्यात्स्वल्पाल्पेऽत्यल्पकं स्मृतम् ।
मध्यं मध्येऽतिमध्यं स्याद्यावत्तस्य दशास्थितिः ।। ३२।।

३।। से ५ तक हीन, ० से २।। तक अतिहीन, ७।। से १० तक स्वल्प और ५ से ७।। तक अतिस्वल्प होता है। इस प्रकार विंशोपक बल के अनुसार ग्रहों की दशा का फल समझना चाहिए।। ३२।।

अथ भावानां केन्द्रादिसंज्ञामाह-

अथान्यदपि वक्ष्यामि मैत्रेय! शृणु सुव्रत!।
लग्नतुर्यास्तवियतां केन्द्रसंज्ञा विशेषतः ।। ३३।।
द्विपंचरंध्रलाभाख्यं ज्ञेयं पणफराभिधम् ।
त्रिषड्भाग्यव्ययादीनामापोक्लिममिति द्विज ।। ३४।।

हे मैत्रेय ! सुव्रत! लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम भावों की केन्द्रसंज्ञा है।। ३३।। दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव की पणफर संज्ञा है। तीसरे, छठे, नवें और बारहवें भाव की आपोक्लिम संज्ञा है।। ३४।।

लग्नात्पंचमभाग्यस्य कोणसंज्ञा विधीयते ।
षष्ठाष्टव्ययभावानां दुःसंज्ञास्त्रिकसंज्ञकाः ।। ३५।।
चतुरस्रं तुर्यरंध्रं कथयन्ति द्विजोत्तम ।
स्वस्थादुपचयर्क्षाणि त्रिषडायां वराणि हि ।। ३६।।

लग्न, पंचम और नवम भाव को कोण कहते हैं। छठे, आठवें और बारहवें भाव को दुष्ट स्थान और त्रिक् कहते हैं।। ३५।। चौथे और आठवें को चतुरस्र कहते हैं। अपने स्थान से तीसरे, छठे, ग्यारहवें और दशम भाव को उपचय कहते हैं।। ३६।।

अथ तन्वादिभावानां संज्ञामाह-

तनुर्धनं च सहजो बंधुपुत्रारयस्तथा ।
युवती रंध्रधर्माख्यं कर्मलाभव्ययाः क्रमात् ।। ३७।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तनु, धन, सहज, बंधु, पुत्र, अरि, युवती (जाया), रंध्र, धर्म, कर्म, लाभ और व्यय- ये क्रम से बाहर भावों के नाम हैं॥ ३७॥

संक्षेपेणैतदुदितमन्यद् बुध्यानुसारतः ।
किंचिद्विशेषं वक्ष्यामि यथा ब्रह्ममुखाच्छ्रुतम् ॥ ३८॥

यह संक्षेप से कहा है, अन्य बुद्धि के अनुसार जानना। जैसा मैंने ब्रह्माजी के मुख से सुना है– उन विशेषों को कह रहा हूँ॥ ३८॥

नवमे च पितुर्ज्ञानं सूर्याच्च नवमेऽथवा ।
यत्किंचिद्दशमे लाभे तत्सूर्याद्दशमे शिवे ॥ ३९॥
तुर्ये तनौ धने लाभे भाग्ये यच्चिन्तनं च तत् ।
चन्द्रात्तुर्ये तनौ लाभे भाग्ये तच्चिन्तेयेद् ध्रुवम् ॥ ४०॥

लग्न से नवम स्थान में पिता का विचार किया जाता है, उसे सूर्य से नवम में भी करना चाहिए। इसी प्रकार लग्न से १०वें और ग्यारहवें में जो विचार किया जाता है, वही सूर्य से १०।११ भावों में भी करना चाहिए॥ ३९॥ लग्न से चौथे, दूसरे, ग्यारहवें और भाग्य में जो फल विचार किये जाते हैं वही चन्द्रमा से भी उन्हीं चौथे, दूसरे, ग्यारहवें और भाग्य भावों में करने चाहिए॥ ४०॥

लग्नाद्दुश्चिक्यभवने तत्कुजाद्द्विक्रमे स्थितात् ।
विचार्यं षष्ठभावस्य बुधात्षष्ठे विचिन्तयेत् ॥ ४१॥
पंचमस्य गुरोः पुत्रे जायायाः सप्तमे भृगोः ।
अष्टमस्य व्ययस्यापि मन्दान्मृत्यौ व्यये तथा ॥ ४२॥

लग्न से तीसरे भाव में जो विचार होता है, उसे भौम से तीसरे भाव में भी विचारना चाहिए। लग्न से छठे भाव में जो विचार होते है, वहीं बुध से छठें भाव में भी होता है॥ ४१॥ गुरु से पाँचवें भाव में पुत्र का और शुक्र से सातवें भाव में स्त्री का, शनि से आठवें और बारहवें भाव में उन भावों का विचार करना चाहिए॥ ४२॥

यद्भावाद्यत्फलं चिन्त्यं तदीशात्तत्फलं विदुः ।
ज्ञेयं तस्य फलं तद्धि तत्तच्चिन्त्यं शुभाशुभम् ॥ ४३॥

जिन-जिन भावों का विचार करना हो वह उन-उन भावों के स्वामियों से भी करना चाहिए॥ ४३॥

इति बृहत्पाराशरहोरायाः पूर्वखण्डे सुबोधिन्यां राशिस्वभावषोडश-वर्गादिकथनं तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राशिदृष्टिभेदाध्यायः

मेषादीनां च राशीनां द्वादशानां पृथक् पृथक् ।
दृष्टिभेदं प्रवक्ष्यामि शृणुत्वं द्विजसत्तम ॥ १ ॥

हे द्विजसत्तम ! मैं मेषादि १२ राशियों के दृष्टिभेद को पृथक-पृथक् कह रह रहा हूँ, उसे सुनो ॥ १ ॥

चरः स्थिरान्पश्यतिस्म स्थिरः पश्यति वै चरान् ।
उभयानु भयं विप्र पश्यतीत्ययमागमः ॥ २ ॥

चर राशियां स्थिर राशियों को, स्थिर राशियां चर राशियों को और द्विस्वभाव राशियां द्विस्वभाव राशियों को देखती हैं, यह आगम है ॥ २ ॥

समीपराशिं संत्यक्त्वा रार्शीस्त्रीननुपश्यति ।
सर्वोदाहरणं वक्ष्ये शृणु त्वं द्विजसत्तम ॥ ३ ॥

इनमें विशेषता यह है कि समीप की राशियों को छोड़कर तीन-तीन राशियों को सभी राशियां देखती हैं। इनका उदाहरण मैं कह रहा हूँ ॥ ३ ॥

मेषो वृषं परित्यज्य सिंहालिघटकं तथा ।
अनयैव क्रमणैव पश्यतिस्म द्विजोत्तम ॥ ४ ॥

मेष राशि वृष को छोड़कर सिंह, वृश्चिक, कुंभ राशि को देखती है, इसी प्रकार क्रम से आगे को राशियाँ भी देखती है ॥ ४ ॥

कर्कः सिंहं परित्यज्य वृश्चिकं च घटं वृषम् ।
तुलापि वृश्चिकं त्यक्त्वा कुम्भं सिंहं तथा वृषम् ॥ ५ ॥

कर्क राशि सिंह को छोड़कर वृश्चिक, कुंभ और वृष को, तुला राशि वृश्चिक को छोड़कर, कुंभ, सिंह और वृष को ॥ १५ ॥

नक्रो घटं परित्यज्य वृषसिंहौ च वृश्चिकम् ।
एवं चराणां दृष्टिश्च ज्ञायते द्विजसत्तम ॥ ६ ॥

हे द्विजसत्तम ! मकर राशि कुंभ को छोड़कर वृष, सिंह और वृश्चिक राशियों को देखती है। इस प्रकार चर राशियों की दृष्टि जानना ।।६।।

वृषो मेषं परित्यज्य मृगं कर्कं तुलां द्विज ।
सिंहः कर्कं परित्यज्य नक्रं मेषं तुलां द्विज ॥ ७ ॥

वृष, मेष को छोड़कर मकर, कर्क, तुला को देखती है। सिंह राशि कर्क को छोड़कर मकर, मेष, तुला को देखती है ॥ ७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वृश्चिकस्तु तुलां त्यक्त्वा कर्कं मेषं मृगं तथा ।
कुम्भश्च मकरं त्यक्त्वा मेषं कर्कं तुलां द्विज ॥ ८ ॥

हे द्विज ! वृश्चिक राशि तुला को छोड़कर कर्क, मेष, मकर को, कुम्भ राशि मकर राशि को छोड़कर मेष, कर्क, तुला को देखती हैं। । ८ । ।

युग्मः कन्या धनुर्मीनान् पश्यतीतिद्विजोत्तम ।
कन्या धनुर्मीनयुग्मं पश्यत्येवं न संशयः ॥ ९ ॥
धनुर्झषयुग्मकन्याः पश्यति द्विजसत्तम ।
मीनो युग्मांगको दंडान् पश्यति सुमते द्विज ॥ १० ॥

मिथुन राशि कन्या, धनु, मीन को तथा कन्या राशि धनु, मीन, मिथुन को देखती है॥ ९ ॥ हे द्विजसत्तम ! धनु राशि मीन, मिथुन, कन्या को और मीन राशि मिथुन, कन्या और धनु राशि को देखती है॥ १० ॥

सूर्यादयः क्रमेणैव पश्यन्ति च परस्परम् ।
राशित्रयं त्रयं विप्र सर्वराशिगत ग्रहाः ॥ ११ ॥

हे विप्र ! इसी प्रकार सूर्य आदि ग्रह भी तीन-तीन राशियों के क्रम से सभी राशियों को देखते हैं॥ ११ ॥

चरेषु संस्थिताः खेटाः पश्यन्ति स्थिरंसंस्थितान् ।
स्थिरेषु संस्थिताःखेटाःपश्यन्ति चर संस्थितान् ॥ १२ ॥
उभयस्थस्तु भान्वादिः पश्यन्त्युभयसंस्थितान् ।
निकटस्थं विना खेटाः निरीक्ष्यंते द्विजोत्तम ॥ १३ ॥

चर राशि पर बैठा हुआ ग्रह स्थिर राशि पर बैठे हुए ग्रह को, स्थिर राशि पर बैठा हुआ ग्रह चर राशि पर बैठे हुए ग्रह को और द्विस्वभाव राशि पर बैठा हुआ ग्रह द्विस्वभाव पर बैठे हुए ग्रह को देखता है, किन्तु निकटस्थ राशि को छोड़कर॥ १२-१३ ॥

दृष्टिचक्रमाह-

चक्रन्यासमहं वक्ष्ये यथावद् ब्रह्मणोदितम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण दृष्टिभेदः प्रकाश्यते ॥ १४ ॥
पूर्वे मेषवृषौ लेख्यौ कर्कसिंहौ च दक्षिणे ।
तुलालिवारुणे विप्र नक्रकुम्भे तथोत्तरे ॥ १५ ॥

जैसा कि ब्रह्माजी ने कहा है वैसा ही मैं दृष्टिचक्र को कह रहा हूँ जिसके जान लेने से दृष्टिभेद समझ में आ जाता है॥ १४ ॥ एक वर्गाकार चक्र बना

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कर पूर्व आदि दिशाओं की कल्पना कर पूर्व दिशा में मेष-वृष, दक्षिण में कर्क सिंह को, तुला-वृश्चिक को पश्चिम में, मकर-कुम्भ को उत्तर में॥ १५॥

अग्निकोणे तु मिथुनं नैर्ऋत्यामङ्गनां द्विज।
वायव्यां धनुषं लेख्यमीशान्यां च झषं लिखेद् ॥ १६॥

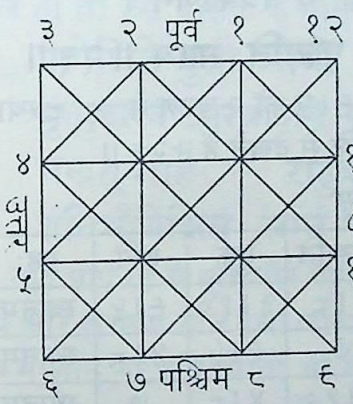
मिथुन को अग्निकोण में, कन्या को नैर्ऋत्य कोण में, वायव्य कोण में धनु को और ईशान्य कोण में मीन को लिखे॥ १६॥

चतुरस्रं च विन्यासं ज्ञायते द्विजसत्तम।
वृत्ताकारं विशेषेण ब्रह्मणा चोदितं पुरा ॥ १७॥

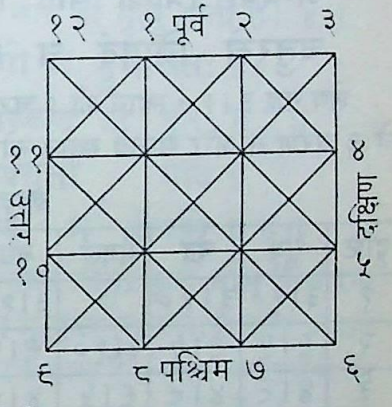
ब्रह्माजी ने विशेषकर इस चक्र को वृत्ताकार ही कहा है॥ १७॥

विशेष :- १७ वें श्लोक के अनुसार स्पष्ट है कि, राशियों की सव्यगणना ही ब्रह्मोदित है तथापि व्यवहार में ऐसा नहीं है अतः व्यवहार के अनुकूल मीनान्त से अपसव्य गणना का ही चक्र लिखा गया है। ऊपर के १५-१६ श्लोक सव्यगणना के अनुसार ही है। शेष चक्र से स्पष्ट है।

अपसव्यगणना



सव्यगणना



इति राशिदृष्टिभेदम्।

अथ ग्रहाणां दृष्टिचक्रमाह-

होराशास्त्रे मित्रदृष्टिः खेटानां च परस्परम्।
त्रिदशे च त्रिकोणे च चतुरस्रे च सप्तमे ॥ १८॥

होराशास्त्र में ग्रहों की भिन्न-भिन्न दृष्टियाँ कही गई हैं, वह इस प्रकार हैं। ग्रह अपने स्थान से ३।१०, ९।५, ४।८।७ स्थान को देखते हैं॥ १८॥

शनिर्देवगुरुर्भौमः परे च वीक्षणेऽधिकाः।
पदार्धं त्रिपदं पूर्णं वदन्ति गणकोत्तमाः ॥ १९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनिपादं त्रिकोणेषु चतुरस्रे द्विपादकम् ।
त्रिपादं सप्तमे विप्र ! त्रिदशे पूर्णमेव हि ॥ २० ॥

किन्तु शनि ६।५ स्थानको १ चरण से, ४।८ स्थानको २ चरण से, सातवें को ३ चरण से और ३।१० स्थान को पूर्णदृष्टि से देखता है॥ १९-२० ॥

चतुरस्रे गुरुः पादं सप्तमे च द्विपादकम् ।
त्रिपादं त्रिदशे विप्र पूर्णं पश्यति कोणभे ॥ २१ ॥

गुरु अपने स्थान से ४।८ भाव को १ चरण से, ७ स्थान को २ चरण से, ३।१० को ३ चरण से और ९।५ स्थान को पूर्णदृष्टि से देखता है॥ २१ ॥

सप्तमे पादमेकं च द्विपादं त्रिदशे द्विज ।
त्रिपादं च त्रिकोणेषु भौमः पूर्णं चतुरस्रगे ॥ २२ ॥

भौम अपने स्थान से सातवें स्थान को १ चरण से, ३।१० स्थान को २ चरण से, ९।५ स्थान को ३ चरण से और ४।८ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है॥ २२ ॥

अन्येषां त्रिदशे पादं द्विपादं च त्रिकोणगे ।
चतुरस्रे त्रिपादं च पूर्णं पश्यति सप्तमे ॥ २३ ॥

शेष ग्रह ३।१० स्थान को १ चरण से, ९।५ को २ चरण से, ४।८ स्थान को ३ चरण से और सातवें स्थान को पूर्णदृष्टि से देखते हैं॥ २३ ॥

ग्रहदृष्टिचक्रम्

दृष्टि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	ग्रहः
१	३।१०	३।१०	७	३।१०	४।८	३।१०	९।५	स्थानम्
२	९।५	९।५	३।१०	९।५	७	९।५	४।८	स्थानम्
३	४।८	४।८	९।५	४।८	३।१०	४।८	७	स्थानम्
४	७	७	४।८	७	९।५	७	३।१०	स्थानम्

इति दृष्टिभेदाध्यायः ।

इति पाराशरहोरायाः पूर्वखंडे सुबोधिन्यां दृष्टिभेदकं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

❖

अथाऽरिष्टाध्यायः

चतुर्विंशतिवर्षाणि यावद्गच्छन्ति जन्मतः ।
जन्मारिष्टं तु तावत्स्यादायुर्दायं न चिन्तयेत् ॥ १ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठाष्टरिष्फगश्चन्द्रः क्रूरैश्च सहवीक्षितः ।
जातस्य मृत्युदः सद्यस्त्वष्टवर्षैः शुभेक्षितः ॥ २ ॥

जन्म से २४ वर्ष की अवस्था तक बालारिष्ट होता है, अतः उक्त अवस्था तक बालकों के आयु की गणना नहीं करनी चाहिये॥ १॥ इसलिए बालारिष्ट को कह रहा हूँ-जन्म लग्न से ६।८।१२ भाव में चन्द्रमा हो और क्रूरग्रहों से देखा जाता हो तो बालक की शीघ्र ही मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा को शुभग्रह देखता हो तो ८वें वर्ष में अरिष्ट होता है॥ २॥

शशिवन्मृत्युदः सौम्याश्चेद्वक्राः क्रूरवीक्षिताः ।
शिशोर्जातस्य मासेन लग्ने सौम्यविवर्जिते ॥ ३ ॥
यस्य जन्मनिधीस्थाः स्युः सूर्यार्केन्दुकुजाभिधाः ।
तस्य त्वाशु जनित्री च भ्राता च निधनं लभेत् ॥ ४ ॥

यदि वक्री शुभग्रह ६।८।१२ भाव में हों और क्रूरग्रहों से देखे जाते हों और शुभग्रह जन्मलग्न में न हों तो बालक की एक मास में मृत्यु हो जाती है॥ ३॥ जिसके जन्माङ्ग में ५ वें स्थान में सूर्य, शनि, चन्द्रमा और मंगल हों तो उस बालक के माता और भाई की मृत्यु होती है॥ ४॥

पापेक्षिते युतो भौमो लग्नगो न शुभेक्षितः ।
मृत्युदस्त्वष्टमस्थोऽपि सौरेणार्केण वा पुनः ॥ ५ ॥
चन्द्रसूर्यग्रहे राहुश्चन्द्रसूर्ययुतो यदि ।
शनिभौमेक्षितं लग्नं पक्षमेकं स जीवति ॥ ६ ॥

यदि पापग्रह से युत और पापग्रह से देखा जाता हुआ भौम जन्मलग्न में हो और शुभग्रह से न देखा जाता हो तो मृत्युकारक होता है और आठवें भाव में शनि या रवि हों तो भी मृत्युकारक होते हैं॥ ५॥ चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण के समय का जन्म हो, लग्न में राहु, चन्द्रमा, सूर्य हों और शनि को भौम देखता हो तो बालक एक पक्ष (१५ दिन) तक जीता है॥ ६॥

कर्मस्थाने स्थितः सौरिः शत्रुस्थाने कलानिधिः ।
क्षितिजो सप्तमस्थाने समात्रा म्रियते शिशुः ॥ ७ ॥
लग्ने भास्करपुत्रश्च निधने चन्द्रमा यदि ।
तृतीयस्थो यदा जीवः स याति यममन्दिरम् ॥ ८ ॥

लग्न से दशम भाव में शनि हो, छठे भाव में चन्द्रमा हो, सातवें भाव में भौम हो तो माता के साथ ही बालक की मृत्यु होती है॥ ७॥ लग्न में

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनि हों, आठवें भाव में चन्द्रमा हो और तीसरे भाव में गुरु हो तो बालक की मृत्यु होती है॥ ८॥

होरायां नवमे सूर्यः सप्तमस्थः शनैश्चरः।
एकादशे गुरुः शुक्रो मासमेकं स जीवति॥९॥

अपने होरा में सूर्य नवमभाव में हो, सातवें भाव में शनि हो और ग्यारहवें भाव में गुरु-शुक्र हों तो १ मास में बालक की मृत्यु होती है॥ ९॥

व्यये सर्वे ग्रहा नेष्टा सूर्यशुक्रेन्दुराहवः।
विशेषान्नाशकर्त्तारो दृष्ट्या वा भङ्गकारिणः॥१०॥

१२वें भाव में सभी ग्रह अशुभ होते हैं, विशेषकर सूर्य, शुक्र, चन्द्रमा और राहु। इनकी दृष्टि भी हानिकर होती है॥ १०॥

पापान्वितः शशी धर्मे द्यूनलग्नगतो यदि।
शुभैरवीक्षितयुतस्तदा मृत्युप्रदः शिशोः॥११॥
सन्ध्यायां चन्द्रहोरायां गण्डान्ते निधनाय वै।
प्रत्येकं चन्द्रपापैश्च केन्द्रगैः स्याद्विनाशनम्॥१२॥

पापग्रह से युत चन्द्रमा ९वें या ७वें भाव में हो और शुभग्रह से दृष्टयुत न हो तो बालक की मृत्यु होती है॥ ११॥ प्रातः संध्या या सायं संध्या में चन्द्रमा की होरा में जन्म हो और गंडात हो तो बालक की मृत्यु होती है। प्रत्येक केन्द्रों में पापग्रह चन्द्रमा से युत हो तो भी मृत्यु होती है॥ १२॥

रवेस्तु मंडलार्द्धास्तात्सायं सन्ध्या त्रिनाडिका।
तथैवार्द्धोदयात्पूर्वं प्रातः सन्ध्या त्रिनाडिका॥१३॥

सूर्यबिंब के आधा अस्त हो जाने के बाद ३ दंड सायं संध्या और सूर्यबिंब के आधा उदय होने के पश्चात् ३ घटी प्रातः संध्या होती है॥ १३॥

चक्र - पूर्वापरार्धेषु क्रूरसौम्येषु कीटभे।
लग्नगे निधनं यान्ति नात्र कार्या विचारणा॥१४॥

यदि सभी पापग्रह चक्र के पूर्वार्ध में हो और परार्ध में शुभग्रह हों और कीटलग्न (कर्क राशि) जन्म लग्न हो तो बालक की मृत्यु होती है॥ १४॥

व्ययशत्रुगतैः क्रूरैर्मृत्युद्रव्यगतैरपि।
पापमध्यगते लग्ने सत्यमेव मृतिं वदेत्॥१५॥

यदि १२वें, ६ठवें और २रे भाव में पापग्रह हों, जन्मलग्न पापग्रह के मध्य में हो तो बालक की मृत्यु होती है॥ १५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नसप्तमगौ पापौ चन्द्रोऽपि क्रूरसंयुतः ।
यदा त्ववीक्षितः सौम्यैः शीघ्रान्मृत्युर्भवेत्तदा ॥ १६ ॥
क्षीणे शशिनि लग्नस्थे पापैः केन्द्राष्टसंस्थितैः ।
यो जातो मृत्युमाप्नोति स विप्रेश न संशयः ॥ १७ ॥

यदि लग्न और सातवें भाव में पापग्रह हों और चन्द्रमा भी क्रूरग्रह से युक्त हो और शुभ ग्रहों से न देखा जाता हो तो शीघ्र ही मृत्यु होती है॥ १६ ॥ क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, केन्द्र और आठवें भाव में पापग्रह हों तो बालक की मृत्यु होती है॥ १७ ॥

पापयोर्मध्यगश्चन्द्रो लग्नरंध्रान्त्यसप्तगः ।
अचिरान्मृत्युमाप्नोति यो जातः स शिशुस्थता ॥ १८ ॥

दो पापग्रहों के मध्य में होकर चन्द्रमा लग्न, आठवें या बारहवें या सातवें भाव में हो तो बालक की मृत्यु होती है॥ १८ ॥

पापद्वयमध्यगे चन्द्रे लग्ने समवस्थिते ।
सप्तमाष्टमेन पापेन मात्रा सह मृतः शिशुः ॥ १९ ॥

दो पापग्रहों के मध्य में चन्द्रमा लग्न में हो, सातवें-आठवें भाव में पापग्रह हों तो माता के साथ बालक की मृत्यु होती है॥ १९ ॥

शनैश्चरार्कभौमेषु रिष्फधर्माष्टमेषु च ।
शुभैरवीक्षमाणेषु यो जातो निधनं गतः ॥ २० ॥

शनि, सूर्य, भौम क्रम से १२,९,८वें भाव में हों और शुभग्रहों से न देखे जाते हों तो शीघ्र ही मृत्यु होती है॥ २० ॥

यद्द्रेष्काणे च यामित्रे यस्य स्याद्दारुणो ग्रहः ।
क्षीणचन्द्रो विलग्नस्थो सद्यो हरति जीवितम् ॥ २१ ॥

जिसके लग्न के द्रेष्काण और सातवें भाव में पापग्रह हों और क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो तो शीघ्र ही मृत्यु होती है॥ २१ ॥

आपोक्लिमस्थिताः सर्वे ग्रहाः बलविवर्जिताः ।
षण्मासं वा द्विमासं वा तस्यायुः समुदाहृतम् ॥ २२ ॥

सभी ग्रह निर्बल होकर आपोक्लिम (३।६।९।१२) भाव में हों तो ६ मास या दो मास की आयु होती है॥ २२ ॥

अथ मातृकष्टम्

चन्द्रमा यदि पापानां त्रितयेन प्रदृश्यते ।
मातृनाशो भवेत्तस्य शुभदृष्टे शुभं भवेत् ॥ २३ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि जन्म समय में चन्द्रमा को तीन पापग्रह देखते हों तो माता की मृत्यु होती है। शुभग्रह देखते हों तो शुभ होता है॥ २३॥

धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यो यथास्थितः।
यस्य मातुः भवेन्मृत्युर्मृते पितरि जायते॥ २४॥
पापात्सप्तमरंध्रस्थे चन्द्रे पापसमन्विते।
बलिभिः पापकैर्दृष्टे जातो भवति मातृहा॥ २५॥

धन भाव में राहु, बुध, शुक्र, शनि और सूर्य हों तो उसके पिता के मरने के बाद माता की मृत्यु होती है॥ २४॥ पापग्रह से सातवें-आठवें भाव में पापग्रह से युत चन्द्रमा हो तथा बलवान् पापग्रहों से देखा जाता हो तो उसकी माता की मृत्यु होती है॥ २५॥

उच्चस्थो वाथनी चस्थः सप्तमस्थो यदा रविः।
मातृहीनो भवेद्बालः अजाक्षीरेण जीवति॥ २६॥
चन्द्राच्चतुर्थगः पापो रिपुक्षेत्रे यदा भवेत्।
तदा मातृवधं कुर्यात्केन्द्रे यदि शुभो न चेत्॥ २७॥

जिसके जन्म समय में लग्न में सातवें भाव में उच्चराशि में या नीच राशि में सूर्य हो तो उसके माता की मृत्यु होती है और वह बालक बकरी के दूध से जीता है॥ २६॥ यदि अपने शत्रु की राशि का पापग्रह चन्द्रमा से चौथे हो और केन्द्र में शुभग्रह न हों तो माता की मृत्यु होती है॥ २७॥

द्वादशे रिपुभावे च यदा पापग्रहो भवेत्।
तदा मातुर्वधं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः॥ २८॥

जन्मलग्न से १२वें, छठें स्थान में पापग्रह हों तो माता का विनाश होता है। चौथे, दशवे स्थान में पापग्रह हो तो पिता की हानि होती है॥ २८॥

लाभे क्रूरो व्यये क्रूरो धने सौम्यस्तथैव च।
सप्तमे भवने क्रूरः परिवारक्षयंकरः॥ २९॥

लग्न और बारहवें भाव में पापग्रह हों, दूसरे भाव में शुभग्रह हों तथा सातवें भाव में क्रूरग्रह हों तो परिवार का नाश करने वाला होता है॥ २९॥

लग्नस्थे च गुरौ सौरि धने राहौ तृतीयगे।
इति चेज्जन्मकाले स्यान्माता तस्य नजीवति॥ ३०॥

लग्न में गुरु और शनि हों तथा दूसरे या तीसरे भाव में राहु हो तो माता नहीं जीती है॥ ३०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

क्षीणचन्द्रात्त्रिकोणस्थैः पापैः सौम्यविवर्जितैः ।
माता परित्यजेद्बालं षण्मासाच्च न संशयः ॥ ३१ ॥

क्षीण चन्द्रमा से त्रिकोण (९।५) में पापग्रह हों और शुभग्रह न देखते हों तो ६ मास के अन्दर ही माता बालक को त्याग देती है॥ ३१॥

एकांशकस्थौ मंदारौ यत्र कुत्र स्थितौ यदा ।
शशिकेन्द्रगतौ तौ वा द्विमातृभ्यां च जीवति ॥ ३२ ॥

एक ही नवमांश में शनि और भौम हों और कहीं बैठे हों अथवा चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो बालक दो माताओं से जीता है॥ ३२॥

अथ पितृकष्टम्-

लग्ने सौरिमदे भौमः षष्ठस्थाने च चन्द्रमाः ।
इति चेज्जन्मकाले स्यात्पिता तस्य न जीवति ॥ ३३ ॥

यदि जन्मलग्न में शनि, सातवें स्थान में भौम और छठें स्थान में चन्द्रमा हो तो उसका पिता नहीं जीता है॥ ३३॥

लग्ने जीवो धने मंदरविभौमबुधास्तथा ।
विवाहसमये तस्य जातस्य म्रियते पिता ॥ ३४ ॥

लग्न में गुरु हों, दूसरे स्थान में शनि, रवि, भौम, बुध हों तो उसके विवाह के समय में पिता की मृत्यु होती है॥ ३४॥

सूर्यः पापेन संयुक्तः सूर्यो वा पापमध्यगः ।
सूर्यात्सप्तमगः पापस्तदा पितृवधं भवेत् ॥ ३५ ॥

सूर्य पापग्रह के साथ हो अथवा पापग्रहों के मध्य में हो और सूर्य से सातवें भाव में पापग्रह हो तो पिता की मृत्यु होती है॥ ३५॥

सप्तमे भवने सूर्यः कर्मस्थो भूमिनंदनः ।
राहुर्व्यये च यस्यैव पिता कष्टेन जीवति ॥ ३६ ॥
दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रसमन्वितः ।
म्रियते तस्य जातस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ ३७ ॥

सातवें स्थान में सूर्य हो, दशम स्थान में भौम और बारहवें स्थान में राहु हों तो पिता कष्ट से जीता है॥ ३६॥ यदि दशम स्थान में शत्रु राशि में भौम हो तो पिता की शीघ्र ही मृत्यु होती है॥ ३७॥

रिपुस्थाने यदा चन्द्रो लग्नस्थाने शनैश्चरः ।
कुजश्च सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ ३८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भौमांशकस्थिते भानौ स्वपुत्रेण निरीक्षिते ।
प्राज्जन्मतो निवृत्तिःस्यान्मृत्युर्वापि शिशोः पितुः ॥ ३९ ॥

यदि छठे स्थान में चन्द्रमा, लग्न में शनि और सातवें में भौम हो तो पिता नहीं जीता है॥ ३८॥ भौम के नवांश में सूर्य हो और शनि से देखा जाता हो तो पिता नहीं जीता है॥ ३९॥

पाताले चाम्बरे पापा द्वादशे च यदा स्थितौ ।
पितरं मातरं हत्वा देशाद्देशान्तरं व्रजेत् ॥ ४० ॥
राहुजीवौ रिपुक्षेत्रे लग्ने वाथ चतुर्थके ।
त्रयोविंशतिमे वर्षे पुत्रस्तातं न पश्यति ॥ ४१ ॥

चतुर्थ, दशम और बारहवें स्थान में पापग्रह हों तो माता-पिता दोनों की मृत्यु होती है॥ ४०॥ राहु, गुरु छठें, लग्न या चौथे भाव में हों तो २३वें वर्ष में पुत्र पिता को नहीं देखता है॥ ४१॥★

भानुः पिता च जन्तूनां चन्द्रो माता तथैव च ।
पापदृष्टियुतो भानुः पापमध्यगतोऽपि वा ।
पित्रारिष्टं विजानीयाच्छिशोर्जातस्य निश्चितम् ॥ ४२ ॥
भानोः षष्ठाष्टमर्क्षस्थैः पापैः सौम्यविवर्जितैः ।
चतुरस्त्रगतैर्वापि पित्रारिष्टं विनिर्दिशेत् ॥ ४३ ॥

यदि सूर्य पापग्रह से दुष्टयुत होकर पापग्रह के मध्य में हो तो बालक के पिता का नाश होता है॥ ४२॥ सूर्य से छठे, आठवें भाव में पापग्रह हों तो पिता की मृत्यु होती है। सूर्य से छठें, आठवें भाव में पापग्रह हों, शुभग्रह न हों या चौथे, आठवें भाव में पापग्रह हों तो पिता को अरिष्ट होता है॥ ४३॥

इत्यरिष्टाध्यायः।

❖

अथारिष्टभङ्गाध्यायः (५)

एकोऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात्केन्द्रगतो यदि ।
अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा ॥ ४४ ॥
एक एव बली जीवो लग्नस्थो रिष्टसंचयः ।
हन्ति पापक्षयं भक्त्या प्रणाम इव शूलिनः ॥ ४५ ॥

यदि बुध, गुरु, शुक्र में से एक भी लग्न से केन्द्र में हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट

★ जीव का पिताकारक सूर्य और मातृकारक चन्द्रमा होता है।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

का वैसे ही नाश हो जाता है, जैसे सूर्य के उदय से अधंकार का नाश हो जाता है॥ ४४॥ यदि केवल गुरु ही बली होकर लग्न में हो तो अरिष्ट-समूह का नाश हो जाता है, जैसे भक्तिपूर्वक शंकर को प्रणाम करने से पाप समूह नष्ट हो जाते हैं॥ ४५॥

एक एव विलग्नेशः केन्द्रसंस्थो बलान्वितः।
अरिष्टं निखिलं हन्ति पिनाकी त्रिपुरं यथा॥४६॥

एक लग्नेश ही बली होकर केन्द्र में हो तो अरिष्ट का वैसे ही नाश होता है जैसे शंकर जी ने त्रिपुर राक्षस का नाश किया था॥ ४६॥

शुक्लपक्षे क्षपाजन्म लग्ने सौम्यनिरीक्षिते।
विपरीतं कृष्णपक्षे तथारिष्टविनाशनम्॥४७॥
व्ययस्थाने यदा सूर्यस्तुलालग्ने तु जायते।
जीवेत्स शतवर्षाणि दीर्घायुर्बालको भवेत्॥४८॥

शुक्ल पक्ष की रात्रि में जन्म हो और लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तथा कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो अरिष्ट का नाश होता है॥ ४७॥ यदि तुला लग्न में जन्म हो और बारहवें स्थान में सूर्य हो तो वह बालक १०० वर्ष तक जीता है॥ ४८॥

गुरुभौमौ यदा युक्तौ गुरुदृष्टोऽथवा कुजः।
हत्वारिष्टमशेषं च जनन्याः शुभकृद्भवेत्॥४९॥

गुरु-भौम एक भाव में हों अथवा गुरु से भौम देखा जाता हो तो अरिष्टों का नाश होता है और माता को सुख होता है॥ ४९॥

चतुर्थदशमे पापः सौम्यमध्ये यदा भवेत्।
पितुः सौख्यकरो योगः शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः॥५०॥

शुभग्रह के मध्य में चौथे, दशम भाव में पापग्रह हों, केन्द्रत्रिकोण में शुभग्रह हों तो पिता को सुख देता है॥ ५०॥

लग्नाच्चतुर्थे यदि पापखेटः केन्द्रत्रिकोणे सुरराजमन्त्री।
कुलद्वयानंदकरो प्रसूतः दीर्घायुरारोग्यसमन्वितश्च॥५१॥

लग्न से चौथे स्थान में पापग्रह हों, केन्द्र वा त्रिकोण में गुरु हों तो बालक दोनों कुलों (माता-पिता) को सुखदायक होता है॥ ५१॥

सौम्यान्तरगतैः पापैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः।
सद्यो नाशयतेऽरिष्टं तद्भावोत्थ फलं नतत्॥५२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभ ग्रह के मध्य में पापग्रह हों और शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो तो अरिष्ट का नाश होता है और उस भाव के फलों की वृद्धि होती है॥ ५२॥

इति बृहत्पाराशरहोरायांपाराशर होरायां पूर्वखंडे सुबोधिन्यामरिष्टभंगाध्यायः पञ्चमः।

❖

अथाऽप्रकाशग्रहफलाध्यायः (६)

तत्रादौ धूमग्रहफलम्-

शूरो विमलनेत्रांशः सुस्तब्धो निर्घृणः खलः।
मूर्तिस्थे धूमसंप्राप्ते गाढशेषो नरः सदा॥ १॥

यदि धूमग्रह प्रथम भाव में हो तो जातक शूरवीर, सुन्दर नेत्र और कंधे वाला, मूर्ख, निर्लज्ज, दुष्ट तथा बड़ा क्रोधी होता है॥ १॥

रोगी धनी तु हीनाङ्गो राज्यापहृतमानसः।
द्वितीये धूमसंप्राप्ते मंदप्राज्ञो नपुंसकः॥ २॥

दूसरे भाव में हो तो रोगी, धनी, विकलांग, राजा से अपहृत चित्तवाला, मंदबुद्धि और नपुंसक होता है॥ २॥

मतिमान् शौर्यसंग्रामे इष्टचित्तः प्रियंवदः।
धूमे सहजभावस्थे धनाढ्यो धनवान् भवेत्॥ ३॥
कलत्रांगपरित्यक्तो नित्यं मनसि दुःखितः।
चतुर्थे धूमसंप्राप्ते सर्वशास्त्रार्थचिन्तकः॥ ४॥

तीसरे भाव में हो तो बुद्धिमान्, पराक्रमी, शुद्धचित्त, मीठा बोलने वाला, धन संयुक्त धनी होता है॥ ३॥ चौथे भाव में हो तो स्त्री से त्यागा हुआ, नित्य दुःखी, सभी शास्त्रों का विचार करने वाला होता है॥ ४॥

स्वल्पापत्यो धनैर्हीनो धूमे पंचमसंस्थिते।
गुरुतः सर्वभक्षं च सुहृन्मन्त्रविवर्जितः॥ ५॥
बलवान्छत्रुवधको धूमे च रिपुभावगे।
बहुतेजोयुतः ख्यातः सदा रोगविवर्जितः॥ ६॥

पाँचवें भाव में हो तो थोड़े संतानवाला, निर्धन, गौरव से युक्त, सर्वभक्षी, अच्छे मित्रों से रहित होता है॥ ५॥ छठें भाव में हो तो बलवान्, शत्रु को मारने वाला, तेजस्वी, प्रसिद्ध और रोगहीन होता है॥ ६॥

निर्धनः सततं कामी परदारेषु कोविदः।
धूमे सप्तमभे प्राप्ते निस्तेजः सर्वदा भवेत्॥ ७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विक्रमेण परित्यक्तः सोत्साही सत्यसंगरः ।
अप्रियो निष्ठुरः स्वामी धूमे मृत्युगते सति ॥ ८॥

सातवें भाव में धूम हो तो निर्धन, निरंतर कामी, परस्त्रीगामी और तेजहीन होता है॥ ७॥ आठवें भाव में हो तो पराक्रम से त्यागी, उत्साही, सत्संकल्पवाला, अप्रिय, निष्ठुर स्वामी होता है॥ ८॥

सुतसौभाग्यसम्पन्नो धनी मानी दयान्वितः ।
धर्मस्थाने स्थिते धूमे धनवान् बन्धुवत्सलः ॥ ९॥
सुतसौभाग्यसंयुक्तः संतोषी मतिमान् सुखी ।
कर्मस्थे मानवो नित्यं धूमे सत्यपदस्थितः ॥ १०॥

नवम भाव में हो तो पुत्र, भाग्य संयुक्त, धनी, मानी, दयालु, धनी और बंधु प्रिय होता है॥ ९॥ दशम भाव में हो तो पुत्र तथा सौभाग्य संयुक्त, संतोषी, बुद्धिमान् और सुखी होता है॥ १०॥

धनधान्यहिरण्याढ्यो रूपवाँश्च कलान्वितः ।
धूमे लाभगते चैव विनीतो गीतकोविदः ॥ ११॥
पतितः पापकर्मा च द्वादशे धर्मसंगते ।
परदारेषु संसक्तो व्यसनी निर्घृणः शठी ॥ १२॥

ग्यारहवें भाव में हो तो धन-धान्य और सुवर्ण से युक्त, रूपवान् तथा कला जानने वाला होता है॥ ११॥ बारहवें भाव में हो तो पतित, पाप करने वाला, परस्त्रीगामी, व्यसनी और निर्लज्ज होता है॥ १२॥

इतिधूमफलम्।

अथ पातफलम्

मूर्त्तौ च पाते सम्प्राप्ते दुःखेनाङ्गप्रपीडितः ।
क्रूरो घातकरो मूर्खो द्वेष्यो बंधुजनेन च ॥ १॥
जिह्मोऽतिपित्तवान् भोगी धनस्थे पातसंज्ञके ।
निर्घृणश्च कृतघ्नश्च दुष्टात्मा पापकृत्तथा ॥ २॥

यदि लग्न में पात हो तो दुःखी, अङ्ग से पीड़ित, क्रूर प्रकृति, मूर्ख, भाइयों से द्वेष करने वाला होता है॥ १॥ दूसरे भाव में हो तो कुटिल, अत्यन्त पित्त प्रकृति, भोगी, निर्लज्ज, कृतघ्न, दुष्टात्मा और पापी होता है॥ २॥

स्थिरप्रज्ञो रणी दाता धनाढ्यो राजवल्लभः ।
सहजे पापसंप्राप्ते सेनाधीशो भवेन्नरः ॥ ३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बन्धव्याधिसमायुक्तः सुतसौभाग्यवर्जितः ।
चतुर्थगो यदा पातस्तदा स्यान्मनुजश्च सः ॥ ४ ॥

तीसरे भाव में हो तो सेनापति, स्थिरबुद्धि, संगति करने वाला, धनी तथा राजा का प्रियपात्र होता है॥ ३॥ चौथे भाव में हो तो बंधन और व्याधि संयुक्त, पुत्र और भाग्य से हीन मनुष्य होता है॥ ४॥

दरिद्रो रूपसंयुक्तः पातो पंचमगो यदि ।
कफपित्तानिलैर्युक्तो निष्ठुरो निरपत्रपः ॥ ५ ॥
शत्रुहन्ता सुपुष्टश्च सर्वास्त्राणां च ग्राहकः ।
कलासु निपुणः शान्तः पाते शत्रुगते सति ॥ ६ ॥

पाँचवें भाव में हो तो मनुष्य दरिद्र, रूपवान्, कफ-पित्त और वायु प्रकृति संयुक्त और क्रूर और निलर्ज्ज होता है॥ ५॥ छठें भाव में हो तो जातक शत्रु का नाशक, शरीर से पुष्ट, सभी अस्त्रों को धारण करने वाला, कला में निपुण और शान्त होता है॥ ६॥

धनदारसुतैस्त्यक्तः स्त्रीजितः कष्टजीविकः ।
पाते कलत्रगे कामी निर्लज्जः परसौहृदः ॥ ७ ॥
विकलांगो विरूपश्च दुर्भगो द्विजनिंदकः ।
मृत्युस्थाने स्थिते पाते रक्तपीडापरिप्लुतः ॥ ८ ॥

सातवें भाव में पात हो तो धन, स्त्री, पुत्र से हीन, स्त्री से पराजित हुआ, कष्ट से जीविका प्राप्त करने वाला, कामी और शत्रुओं से मित्रता करने वाला होता है॥ ७॥ आठवें भाव में पात हो तो अंगहीन, कुरूप, दरिद्र, ब्राह्मणनिंदक और रक्तपीड़ा से युक्त होता है॥ ८॥

बहुव्यापारको नित्यं बहुमित्रो बहुश्रुतः ।
धर्मभे पातसंप्राप्तो स्त्रीप्रियज्ञः प्रियंवदः ॥ ९ ॥
सश्रीको धर्मकृच्छान्तो धर्मकार्येषुछ्रकोविदः ।
कर्मस्थे पातसंप्राप्ते महाप्राज्ञो विचक्षणः ॥ १० ॥

नवम भाव में पात हो तो अनेक व्यापार को करने वाला, अनेक मित्रों वाला, अनेक शास्त्रों को जानने वाला, स्त्री को प्रिय और प्रिय बोलने वाला होता है॥ ९॥ दशम भाव में पात हो तो लक्ष्मी से युक्त, धार्मिक, शान्त, धर्मकार्य में पंडित होता है॥ १०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

प्रभूतधनवान्मानी सत्यवादी दृढव्रतः ।
अश्वाढ्यो गीतसंसक्तः पाते लाभगते सति ॥ ११ ॥

एकादश भाव में हो तो बहुत बड़ा धनी, मानी, सत्य बोलने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ, घोड़ा रखने वाला, गीत को जानने वाला होता है॥ ११ ॥

क्रोधी च बहुकर्माढ्यो व्यंगो धर्मस्य द्वेषकः ।
व्ययस्थाने गते पाते विद्वेषी निजबंधुभिः ॥ १२ ॥

बारहवें भाव में हो तो क्रोधी, अनेक कार्यों में संलग्न, अंगहीन, धर्मनिंदक और अपने बंधुओं से विद्वेष करने वाला होता है॥ १२ ॥

इति पातफलम्।

❖

अथ परिधिफलम्

विद्वान् सत्यरतः शान्तो धनवान्पुत्रवान्शुचिः ।
दाता च परिधौ मूर्तौ जायते गुरुवत्सलः ॥ १ ॥

यदि परिधि लग्न में हो तो जातक विद्वान, सत्य बोलने वाला, शान्तचित्त, धनी, पुत्रवान्, पवित्र, दाता और गुरुभक्त होता है॥ १ ॥

ईश्वरो रूपवान् भोगी सुखी धर्मपरायणः ।
धनस्थे परिधौ प्राप्ते प्रभुर्भवति मानवः ॥ २ ॥
स्त्रीवल्लभः सुरूपांगो देवस्वजनसंगतः ।
तृतीये परिधौ भृत्यो गुरुभक्तिसमन्वितः ॥ ३ ॥

दूसरे भाव में हो तो समर्थ, रूपवान्, भोगी, सुर्ख धर्मपरायण और समर्थ होता है॥ २ ॥ तीसरे भाव में हो तो स्त्रीप्रिय, सुन्दररूप, धन से पूर्ण, देवता और आपस के लोगों के अनुकूल, नौकर और गुरुभक्त होता है॥ ३ ॥

परिधौ सुखभावस्थे विस्मितं त्वरिमङ्गलम् ।
अक्रूरं त्वथ सम्पूर्णं कुरुते गीतकोविदः ॥ ४ ॥
लक्ष्मीवान् शीलवान् कान्तः प्रियवान् धर्मवत्सलः ।
पंचमे परिधौ जाते स्त्रीणां भवति वल्लभः ॥ ५ ॥

चौथे भाव में हो तो विस्मयालु, शत्रु का मंगल करने वाला, सरल और गीतज्ञ होता है॥ ४ ॥ पाँचवें भाव में हो तो लक्ष्मीवान्, शीलवान्, सुन्दर, धार्मिक और स्त्रियों का प्रिय होता है॥ ५ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

व्यक्तोऽर्थपुत्रवान् भोगी सर्वसत्वहिते रतः ।
परिधौ रिपुभावस्थे शत्रुहा जायते नरः ॥ ६ ॥

छठे भाव में हो तो प्रसिद्ध धनी, पुत्रवान्, भोगी, सभी का हित करने वाला, शत्रुयुक्त किन्तु शत्रु का नाश करने वाला होता है॥ ६ ॥

स्वल्पापत्यसुखैर्हीनो मंदप्रज्ञः सुनिष्ठुरः ।
परिधौ द्यूनभावस्थे स्त्रीणां व्याधिश्च जायते ॥ ७ ॥

यदि परिधि सातवें भाव में हो तो थोड़े संतान, सुख से हीन, मंदबुद्धि, निष्ठुर और उसकी स्त्री रोगिणी होती है॥ ७ ॥

अध्यात्मचिंतकः शान्तो दृढकार्यो दृढव्रतः ।
धर्मवांश्च ससत्यश्च परिधौ रंध्रसंस्थिते ॥ ८ ॥

आठवें भाव में हो तो अध्यात्म (वेदान्त) को जानने वाला, शान्त, दृढ़कार्य करने वाला, दृढ़निश्चयी, धार्मिक और बली होता है॥ ८ ॥

पुत्रान्वितः सुखी कान्तो धनाढ्यो लोलवर्जितः ।
परिधौ धर्मगे मानी अल्पसंतुष्टमानसः ॥ ९ ॥

नवम भाव में हो तो पुत्रयुक्त, सुखी, सुन्दर, धनी, स्थिर, अभिमानी और थोड़े में संतुष्ट होनेवाला होता है॥ ९ ॥

क्वचिदज्ञस्तथा भोगी दृढकायो ह्यमत्सरः ।
परिधौ दशमे प्राप्ते सर्वशास्त्रार्थपारगः ॥ १० ॥

दशम भाव में परिधि हो तो कदाचित् कोई मूर्ख होता है, भोगी, बली और सभी शास्त्र का विशारद होता॥ १० ॥

स्त्रीभोगी गुणवांश्चैव मतिमान् स्वजनप्रियः ।
लाभे च परिधौ जाते मन्दाग्निः समुपद्यते ॥ ११ ॥

एकादशभाव में हो तो स्त्रीभोगी, गुणी, बुद्धिमान्, बंधुप्रिय और मन्दाग्नि रोग से पीड़ित होता है॥ ११ ॥

व्ययस्थे परिधौ जाते गुरुनिंदापरायणः ।
दुःखी क्रोधाधिकश्चैव व्ययाधिक्यं च जायते ॥ १२ ॥

बारहवें भाव में हो तो गुरु की निंदा करने वाला, दुःखी, अत्यन्त क्रोधी और अधिक व्यय करने वाला होता है॥ १२ ॥

इति परिधिफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ चापफलम्

धनधान्यहिरण्याढ्यो कृतज्ञः सम्मतः सताम् ।
सर्वदोषपरित्यक्तश्चापे तनुगते नरः ॥ १ ॥
प्रियंवदः प्रगल्भाढ्यो विनीतो विद्ययाधिकः ।
धनस्थे चापसंप्राप्ते रूपवान् धर्मतत्परः ॥ २ ॥

यदि चापलग्न में हो तो जातक धन-धान्य से पूर्ण, सज्जनों के अनुकूल, कृतज्ञ, सभी दोषों से रहित होता है॥ १ ॥ दूसरे भाव में हो तो प्रिय बोलने वाला, प्रगल्भ, धनी, विनीत, विद्वान्, सुन्दर और धार्मिक होता है॥ २ ॥

कृपणोऽतिकलाभिज्ञश्चौर्यकर्मरतः सदा ।
सहजे धनुषि प्राप्ते हीनांगो मत्तसौहृदः ॥ ३ ॥
सुखी गोधनधान्यादिराजसम्मानपूजितः ।
धनुषि सुखसंस्थे तु नीरोगो न तु जायते ॥ ४ ॥

तीसरे भाव में हो तो कृपण, कला जानने वाला, हमेशा चोरी करने में आसक्त, अंग से हीन और मतवाले साथियों से युक्त होता है, चौथे भाव में हो तो सुखी, गौ, धन-धान्य से पूर्ण, राजसम्मान युक्त और नीरोग होता॥ ३-४ ॥

रुचिमान् दीर्घदर्शी च देवभक्तः प्रियंवदः ।
चापे पंचमभे जातो विवृद्धः सर्वकर्मसु ॥ ५ ॥
शत्रुहंताऽतिधूर्त्तश्च सुखी प्रतिरुचिः शुचिः ।
अरिस्थलगते चापे सर्वकर्मसमृद्धिभाक् ॥ ६ ॥

पाँचवें भाव में हो तो कांतिमान्, दीर्घदर्शी, देशभक्त, प्रिय बोलने वाला और सभी कामों में वृद्धि करने वाला होता है॥ ५ ॥ छठें भाव में हो तो शत्रु का नाश करने वाला, अत्यन्त धूर्त, प्रेम करने वाला, सुखी, पवित्र और सभी कामों में समृद्धि को प्राप्त करने वाला होता है॥ ६ ॥

ईश्वरो गुणसम्पूर्णः शास्त्रविद्धार्मिकः प्रियः ।
चापे सप्तमभावस्थे भवतीति न संशय ॥ ७ ॥

यदि चाप सातवें भाव में हो तो जातक ईश्वर सदृश गुणों से पूर्ण शास्त्र को जानने वाला, धार्मिक और प्रियभाषी होता है॥ ७ ॥

परकर्मरतः क्रूरः परदारपरायणः ।
अष्टमस्थानगे चापे करोति विफलान्तिकः ॥ ८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आठवें भाव में हो तो परकर्म में आसक्त, क्रूर, परस्त्रीगामी और अंतिम समय में अधिक कष्ट भोगने वाला होता है॥ ८॥

तपस्वी व्रतचर्यासु निरतो विद्ययाधिकः।
धर्मस्थ यदि चापे च मानज्ञो लोकविश्रुतः॥ ९॥
बहुपुत्रधनैश्वर्यो गोमहिष्यादिभाक् भवेत्।
कर्मस्थे चापसंयुक्ते जायते लोकविश्रुतः॥ १०॥

नवें भाव में हो तो मानी, लोक में प्रसिद्ध, तपस्वी, व्रतादि करने में आसक्त, विद्वान् होता है॥ ९॥ दशम भाव में हो तो बहुपुत्र, धन, ऐश्वर्य, गौ-भैंस से युक्त और लोक प्रसिद्ध होता है॥ १०॥

लाभगे चापसंप्राप्ते लाभयुक्तो भवेन्नरः।
नीरोगो दृढकर्माग्निमंत्रस्त्रीपरमार्थवित्॥ ११॥
खलोऽतिमानी दुर्बुद्धिर्निर्ल्लज्जो व्ययसंस्थितः।
चापे परस्त्रीसंयुक्तो जायते निर्धनः सदा॥ १२॥

ग्यारहवें भाव में हो तो लाभ से युक्त, नीरोग, क्रोधी, मंत्र, स्त्री और परमार्थ को जानने वाला होता॥ ११॥ बारहवें भाव में हो तो दुष्ट, अभिमानी, दुर्बुद्धि, निर्लज्ज, परस्त्रीयुक्त और निर्धन होता है॥ १२॥

इति चापफलम्।

❖

अथ शिखिफलम्

कुशलः सर्वविद्यासु सुखी वाङ्निपुणः पुमान्।
मूर्तिस्थे शिखिसंप्राप्ते सर्वकामान्वितो भवेत्॥ १॥

यदि लग्न में शिखि (केतु) हो तो सभी विद्याओं में निपुण, सुखी, वाक्चातुर्य प्रवीण और सभी कार्यो में चतुर होता है॥ १॥

वक्ता प्रियंवदः कांतो धनस्थानगते शिखि।
काव्यकृत्पंडितो मानी विनीतो वाहनान्वितः॥ २॥

दूसरे भाव में हो तो वक्ता, प्रिय बोलनेवाला, सुन्दर, कविता करने वाला, मानी, नम्र और वाहनयुक्त होता है॥ २॥

कदर्यः क्रूरकर्मा च कृशांगो धनवर्जितः।
शिखिनि सहजस्थे तु तीव्ररोगी प्रजायते॥ ३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तीसरे भाव में हो तो कृपण, क्रूर कर्म करने वाला, कृश शरीर वाला, धनहीन और कठिन रोगवाला होता है॥ ३॥

रूपवान् गुणसम्पन्नः सात्त्विको विश्रुतिप्रियः।
सुखस्थे तु शिखीजाते सदा भवति सौख्यभाक् ॥ ४॥

चौथे भाव में हो तो रूपवान्, गुण से युक्त, सात्विक, वेद को जानने वाला और सदा सुखी होता है॥ ४॥

सुखी भोगी कलाविच्च पंचमस्थानगः शिखी।
युक्तिज्ञो मतिमान् वाग्मी गुरुभक्तिसमन्वितः ॥ ५॥
मातृपक्षक्षयकरः रिपुहा बहुबांधवः।
रिपुस्थाने शिखिप्राप्ते शूरः कांतो विचक्षणः ॥ ६॥

पाँचवें भाव में हो तो युक्ति को जानने वाला, वक्ता, चतुर, गुरुभक्ति युक्त, सुखी, भोगी और कला को जानने वाला होता है॥ ५॥ छठे भाव में हो तो मातृपक्ष (मामा आदि) को नाश करने वाला, शत्रु को नाश करने वाला, बहुबांधवो वाला, शूरवीर, सुन्दर और विचक्षण होता है॥ ६॥

रक्तपीडाभिरतः कामी भोगसमन्वितः।
शिखी तु सप्तमस्थाने वेश्यास्तु कृतसौहृदः ॥ ७॥

यदि शिखी सातवें भाव में हो तो रक्तपीड़ा से युक्त, कामी, भोगयुक्त, वेश्या से मित्रता करने वाला होता है॥ ७॥

नीचकर्मरतः पापो निर्लज्जो निंदकः सदा।
मृत्युस्थाने शिखिप्राप्ते गतस्व्यपरपक्षकः ॥ ८॥

आठवें भाव में हो तो नीचकर्म में आसक्त, पापी, निर्लज्ज, निंदा करने वाला, नेत्रहीन, शत्रुपक्ष से युक्त होता है॥ ८॥

लिङ्गधारी प्रसन्नात्मा सर्वभूतहिते रतः।
धर्मभे शिखिनि प्राप्ते धर्मकार्येषु कोविदः ॥ ९॥

नवम भाव में हो तो चिह्नधारी (तिलकविशेष), प्रसन्न आत्मा, सभी प्राणियों के हित करने में आसक्त, धार्मिक कार्यो में पटु होता है॥ ९॥

सुखसौभाग्यसंपन्नः कामिनीनां च वल्लभः।
दाता द्विजसमायुक्तः कर्मस्थे शिखिनी भवेत् ॥ १०॥

दशम स्थान में हो तो सुख-सौभाग्य से संपन्न, स्त्रियों का प्यारा, दाता, ब्राह्मणों से आवृत्त होता है॥ १०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नित्यलाभः सुधर्मी च लाभे शिखिनि पूज्यते ।
धनाढ्यः शुभगः शूरः सुयज्ञश्चातिकोविदः ॥ ११ ॥
पापकर्मरतः शूरः श्रद्धाहीनोऽघृणो नरः ।
परदाररतो रौद्रः शिखिनि व्ययगे सति ॥ १२ ॥

एकादश भाव में हो तो नित्य लाभ से युक्त, धर्मात्मा, धनी, सुन्दर, शूरवीर, यशस्वी और पंडित होता है। ११। बारहवें भाव में हो तो पापकर्म में आसक्त, शूर, श्रद्धाहीन, निर्लज्ज परस्त्रीगामी और भयंकर होता है। १२।

इति शिखिफलम् ।

अथ गुलिकफलम्

रोगार्त्तः सततं कामी पापात्माधिगतः शठः ।
मूर्त्तिस्थे गुलिकेमन्दः खलभावोऽतिदुःखितः ॥ १ ॥
विकृतो दुःखितः क्षुद्रो व्यसनी च गतत्रपः ।
धनस्थे गुलिके जातो निःस्वो भवति मानवः ॥ २ ॥

यदि गुलिक लग्न में हो तो जातक निरंतर रोग से पीड़ित, कामी, पापात्मा, मूर्ख, दुष्टस्वभाव और अत्यन्त दुःखी होता है। । १ । । दूसरे भाव में हो तो विकृत, दुःखी, क्षुद्र, दुर्व्यसनी, निर्लज्ज और निर्धन होता है। । २ । ।

चार्वङ्गो ग्रामपः पुण्यसंयुक्तः सज्जनप्रियः ।
गुलिके तृतीयगे जाते जायते राजपूजितः ॥ ३ ॥
रोगी सुखपरित्यक्तः सदा भवति पापकृत् ।
यमात्मजे सुखस्थे तु वातपित्ताधिको भवेत् ॥ ४ ॥

तीसरे भाव में हो तो सुन्दर शरीर, ग्रामपति, पुण्यवान्, सज्जनों का प्रिय और राजपूजित होता है।। ३।। चौथे भाव में हो तो रोगी, सुख से हीन, सदा पाप करनेवाला और अधिक वातपित्त से पीड़ित होता है।। ४।।

विस्तुप्तिर्निर्धनोऽल्पायुर्द्वेषी क्षुद्रो नपुंसकः ।
सुतेसगुलिको जातो स्त्रीजितो नास्तिको भवेत् ॥ ५ ॥
वीतशत्रुः सुपुष्टाङ्गो रिपुस्थाने यमात्मजे ।
सुदीप्तः सम्मतः स्त्रीणां सोत्साहः सुदृढो हितः ॥ ६ ॥

पाँचवें भाव में हो तो निन्दा करने वाला, निर्धन, अल्पायु, द्वेषी, क्षुद्र, नपुंसक, स्त्री से जीता हुआ और नास्तिक होता है॥ ५॥ छठें भाव में हो तो शत्रु से रहित, पुष्टशरीर, तेजस्वी, स्त्रीप्रिय, उत्साही और दृढ़ विचार का हितकारी होता है॥६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रीजितः पापकृज्जारः कृशांगो गतसौहृदः ।
जीवितः स्त्रीधनेनैव सप्तमस्थे रवेः सुते ॥७॥
क्षुधालुर्दुःखितः क्रूरस्तीक्ष्णशेषोऽतिनिर्घृणः ।
रंध्रे प्राणहरो निःस्वो जायते गुणवर्जितः ॥८॥

यदि गुलिक सातवें भाव में हो तो जातक स्त्री से पराजित, पाप करने वाला, दुर्बल शरीर वाला, मित्रहीन, स्त्रीधन से जीविका वाला होता है॥७॥ आठवें भाव में हो तो भूख से पीड़ित, दुःखी, क्रूर, अधिक क्रोधी, अत्यंत निर्लज्ज, दरिद्र और गुणों से हीन होता है॥८॥

बहुक्लेशी कृशतनुर्दुष्टकर्मातिनिर्घृणः ।
मंदे धर्मस्थिते मंदः पिशुनो बहिराकृतिः ॥९॥
पुत्रान्वितः सुखी भोक्ता देवाग्न्यर्चनवत्सलः ।
दशमे गुलिके जातो योगधर्माश्रितः सुखी ॥१०॥

नवम भाव में हो तो अत्यंत दुःखी, दुर्बल शरीर, दुष्टकर्म को करने वाला, अत्यंत निर्लज्ज, मंदप्रकृति, कृपण और चुगलखोर होता है॥९॥ दशम भाव में हो तो पुत्र से युक्त, सुखी, सुख भोगने वाला, देवता व अग्नि का उपासक, योग साधन में संलग्न होता है॥१०॥

सुखी भोगी प्रजाध्यक्षो बंधूना च हिते रतः ।
लाभे यमानुजो जातो नीचांशः सार्वभौमकः ॥११॥
नीचकर्माश्रितः पापो हीनांगो दुर्भगोऽलसः ।
व्ययभे गुलिके जातो नीचेषु कुरुते रतिम् ॥१२॥

एकादश भाव में हो तो सुखी, भोगी, प्रजा का अध्यक्ष, बन्धुओं के हित में आसक्त, नीचे अंगों वाला और सार्वभौम के समान रहने वाला होता है॥११॥ बारहवें भाव में हो तो नीच कर्म में आसक्त, पापी, अंग से हीन, दरिद्र, आलसी और नीचों से प्रेम करने वाला होता है॥१२॥

इति गुलिकफलम्।

अथ प्राणपदफलम्

मूकोन्मत्तो जडांगस्तु हीनांगो दुःखितः कृशः ।
लग्ने प्राणपदे क्षीणो रोगी भवति मानवः ॥१॥
बहुधान्यो बहुधनो बहुभृत्यो बहुप्रजः ।
धनस्थानस्थिते प्राणे सुभगो जायते नरः ॥२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि प्राणपद लग्न में हो तो गूँगा, उन्मत्त, स्तब्ध, अंगहीन, दुःखी, कृश, रोगी और दुर्बल शरीर का होता है।।१।। दूसरे भाव में हो तो धन-धान्य से पूर्ण, अनेक मृत्य एवं अनेक संतति वाला और भाग्यशाली पुरुष होता है।।२।।

हिंस्रो गर्वसमायुक्तो निष्ठुरोऽतिमलिम्लुचे।
तृतीयगे प्राणपदे गुरुभक्तिविवर्जितः।।३।।
सुखस्थे तु सुखी कांतः सुहृद्रामासु वल्लभः।
गुरौ परायणः शीलः प्राणे वै सत्यतत्परः।।४।।

तीसरे भाव में हो तो हिंसा करने वाला, गर्व से युक्त, निष्ठुर, अत्यंत मलिन और गुरुभक्तिहीन होता है।। ३।। चौथे भाव में हो तो सुखी, सुन्दर, मित्र स्त्री का प्रिय, गुरुभक्त, सुशील और सत्यवक्ता होता है।। ४।।

सुखभाक् च क्रियोपेतस्त्वषचारदयान्वितः।
पञ्चमस्थे प्राणपदे सर्वकर्मसमन्वितः।।५।।
बंधुशत्रुवशस्तीक्ष्णो मन्दाग्निर्निर्दयः खलः।
षष्ठे प्राणोऽल्परोगश्च वित्तपोऽल्पायुरेव च।।६।।

पाँचवें भाव में हो तो सुख भोगने वाला, क्रिया से युक्त, दयायुक्त और सभी कामों में अनुरक्त होता है।। ५।। छठें भाव में हो तो बंधु एवं शत्रु के वश में रहने वाला, तीक्ष्ण स्वभाव, मंदाग्नि से युक्त, निर्दयी, दुष्ट, धनी और अल्पायु होता है।। ६।।

ईर्ष्यालुः सततं कामी तीव्ररौद्रवपुर्नरः।
सप्तमस्थे प्राणपदे दुराराध्यः कुबुद्धिमान्।।७।।
रोगसंतापितांगश्च प्राणपदेऽष्टमे सति।
पीडितः पार्थिवैर्दुःखैर्भृत्यबंधुसुतोद्भवैः।।८।।

यदि सातवें भाव में प्राणपद हो तो ईर्ष्यालु, कामी, भयानक शरीर, दुष्ट स्वभाव और मूर्ख होता है।।७।। आठवें भाव में हो तो रोग से पीड़ित, राजा, रोग, बंधु-पुत्र और शत्रु से पीड़ित होता है।।८।।

पुत्रवान् धनसंपन्नः सुभगः प्रियदर्शनः।
प्राणे धर्मस्थिते भृत्यः सदाऽदुष्टो विचक्षणः।।९।।
वीर्यवान् मतिमान् दक्षो नृपकार्येषु कोविदः।
दशमे वै प्राणपदे देवार्चनपरायणः।।१०।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नवम भाव में हो तो पुत्रवान्, धनी, भाग्यवान्, दर्शनीय नौकर से युक्त, पण्डित होता है।।६।। दशम भाव में हो तो बलवान्, बुद्धिमान, राजकार्य में चतुर, पंडित, देवपूजन में संलग्न होता॥१०॥

विख्यातो गुणवान् प्राज्ञो भोगी धनसमन्वितः।
लाभस्थानस्थिते प्राणे गौरांगो मानवत्सलः॥११॥
क्षुद्रो दुष्टस्तु हीनांगो विद्वेषी द्विजबन्धुषु।
व्यये प्राणे नेत्ररोगी काणो वा जायते नरः॥१२॥

एकादश भाव में हो तो प्रसिद्ध गुणी, बुद्धिमान्, भोगी, धनी, गौरवर्ण और मानी होता है॥११॥ बारहवें भाव में हो तो क्षुद्र, दुष्ट, हीनांग, ब्राह्मण, बंधुओंका द्वेषी, नेत्ररोगी अथवा काना होता है॥१२॥

इति प्राणपदफलम्।

इति पाराशरहोरायां पूर्वखंडेऽप्रकाशग्रहफलाध्यायः षष्ठः॥६॥

अथाऽर्गलाध्यायः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि अर्गलार्गलमुत्तमम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण ग्रहाणां च फलं वदेत्॥१॥
चतुर्थे च धने लाभे विद्यमानग्रहार्गला।
तस्य दृष्ट्यादिकं ज्ञेयं निर्विशंकं द्विजोत्तम॥२॥

अब मैं अर्गला योग के लक्षण और फल को कह रहा हूँ, जिसके ज्ञान से ग्रहों के फलों का ज्ञान होता है॥१॥ चौथे, दूसरे और एकादश भाव में ग्रहों के होने से अर्गला योग होता है और उसकी दृष्टि आदि पूर्वोक्त प्रकार से ही होती है॥२॥

एक ग्रहार्गलाल्पं च द्विग्रहा मध्यमा भवेत्।
त्रयेण ग्रहयोगेन अर्गला पूर्णमुच्यते॥३॥
राश्यर्गलापि सा ज्ञेया ग्रहयुक्ता विशेषतः।
तुर्यवित्तैकादशेषु यस्य कस्यार्गला भवेत्॥४॥

वह भी एक ग्रह के होने से अल्प, दो ग्रह के होने से मध्यम और तीन ग्रह के होने से पूर्ण अर्गला होती है॥३॥ इसी प्रकार किसी राशि से उक्त स्थानों में राशि की अर्गला होती है। चौथे, दूसरे और एकादश भाव की अर्गला किसी-किसी की होती है॥४॥

द्विविधा सार्गला विप्र ब्रह्मणा चोदितं पुरा।
शुभकृत् पापकृच्चैव तन्वादीनां विचिन्तयेत्॥५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भिन्नार्गला पुनर्वक्ष्ये चतुर्थार्गलपापयुक् ।
तृतीये तु यदा विप्र ! बहुपापयुते सति ॥६॥

तन्वादि भावों से शुभ ग्रह एवं पाप ग्रह कृत वह अर्गला दो प्रकार की होती है। जिसे हे विप्र ! ब्रह्माजी ने पहले ही कहा है।।५।। उससे भी भिन्न पाप युक्त एक अर्गला होती है जो कि चौथी होती है। वह तीसरे भाव में अधिक पापग्रहों के होने से होती है।।६।।

बहुपापा तृतीयस्था पापषड्वर्गयोगतः ।
पापार्जितः पापदृष्ट्या संयुक्तार्गलकारकः ॥७॥
तृतीये शुभसम्बन्धे शुभक्षेत्रे शुभान्विते ।
शुभवर्गे च षड्वर्गे विज्ञेयं तुर्यमर्गला ॥८॥

यदि तीसरे भाव में पापग्रह अधिक हों और पापग्रह षड्वर्ग में हों व पापग्रह की दृष्टि हो तो संयुक्त अर्गला होती है।।७।। अथवा तीसरे भाव में शुभग्रह का सम्बन्ध हो, शुभग्रह की राशि हो, शुभग्रह देखता हो, शुभग्रह का षड्वर्ग हो तो चौथा अर्गला योग होता है।।८।।

तुर्यवित्तैकादशे च पापयुग्वा शुभोऽपि वा ।
उभयक्षेत्रसम्बन्धे अर्गलां कारयेद्द्विज ॥९॥
तृतीये बहुपापस्थे बहुयुक्तार्गला भवेत् ।
निर्बाधिका तु सा ज्ञेया निर्विशङ्कं द्विजोत्तम ॥१०॥

चौथे, दूसरे, एकादश भाव में पापग्रह युत हो तो वा शुभग्रह हो दोनों के सम्बन्ध से अर्गला होती है।।९।। तीसरे भाव में बहुत से पापग्रह हों तो बहुयुक्त अर्गला होती है और इसे निर्बाध अर्गला कहते हैं।।१०।।

एकेन द्वितयेनापि अर्गला या भवेद् द्विज ।
सार्गला नैव विज्ञेया बहुपापयुतिं विना ॥११॥
चतुर्थे धनलाभस्था शुभपापकृतार्गला ।
तस्यापि बाधकाः खेटा व्योमारिष्फतृतीयगाः ॥१२॥

एक ग्रह या दो ग्रह के योग से जो अर्गला होती है वह फलद नहीं होती है।।११।। चौथे, दूसरे, एकादश में शुभग्रह एवं पापग्रह से अर्गला योग होता है किन्तु दशम, द्वादश और तीसरा स्थान उसका बाधक होता है।।१२।।

क्रमेण ज्ञायते विप्र चतुर्थे व्योमबाधकम् ।
धने च व्ययभावं च भवे-ज्ञेयं तृतीयकम् ॥१३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

निर्बाधका च फलदा न दातव्या सबाधका ।
चिन्तनीयं प्रयत्नेन तत्फलं द्विजपुंगव ॥ १४ ॥

चौथे का दशम, दूसरे का द्वादश और एकादश का तीसरा स्थान बाधक होता है। १३। अर्थात् बाधक स्थानों में ग्रहों के होने से अर्गला योग नहीं होता है। निर्बाध अर्गला फलदायक और सबाध अर्गला निष्फल होती है। १४।

अर्गलाया बाधकानां बाधकान् कथयेऽधुना ।
नूनं सा निर्बला खेटा ज्ञायते गणकैस्तदा ॥ १५ ॥
वित्तलाभचतुर्थानां यः पश्यति शुभार्गलाम् ।
व्ययभ्रातृनभस्थाश्चेद्विपरीतार्गला द्विज ॥ १६ ॥

अर्गला योग के बाधक ग्रहों के बाधकों को मैं कह रहा हूँ, निश्चय वह निर्बल ग्रह होता है॥ १५॥ दूसरे, ग्यारहवें और चौथे भाव को देखता हो तो शुभ अर्गला होती है। किन्तु १२वें, ३सरे और १०वें स्थान में स्थित ग्रह देखते हों तो विपरीत अर्गला होती है॥ १६॥

पुनर्योगार्गलं ज्ञेयं त्रिकोणे पूर्ववद्द्विज ।
पंचमे चार्गलास्थानं नवमस्तद्विरोधकः ॥ १७ ॥
विपरीतेन केतुश्च नवमेऽर्गलकारकः ।
पंचमस्थस्तद्विरोधो ज्ञायते गणकैर्द्विज ॥ १८ ॥

इसी प्रकार त्रिकोण (५।९) अर्गला योग होता है। ५वें भाव में ग्रह हो तो अर्गला होता है। किन्तु नवम भाव में कोई ग्रह हो तो अर्गला नहीं होता है॥ १७॥ यदि केतु ग्रह विपरीत यानि ९वें भाव में हो तो अर्गला योगकारक होता है और पाँचवें भाव में बाधक होता है॥ १८॥

क्रमेण केतुः प्रकरोत्यर्गलां द्विज ।
नवमस्थस्तद्विरोधो लग्नार्गलमिदं विदुः ॥ १९ ॥
राश्यर्गलं च खेटानां चिंतयेद्विविधार्गलम् ।
यस्या यस्या दशा प्राप्ता तस्यां तस्यां फलं भवेत् ॥ २० ॥

हे द्विज ! केतु ग्रह भी क्रम से अर्गला योग करता है। किन्तु नवमस्थ ग्रह उसका विरोधी होता है, इसे लग्नार्गल कहते हैं॥ १९॥ इसी प्रकार राशियों का भी अर्गला ग्रह योग के कारण अनेक प्रकार की अर्गला का विचार करना चाहिए। जब जिसकी दशा प्राप्त हो उसमें उसका फल होता है॥ २०॥

यत्र राशिस्थितः खेटस्तस्य पाकांतरे भवेत् ।
तत्काले च फलं वाच्यं निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ २१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जो-जो अर्गला योगकारक ग्रह हों, उनके दशा अन्तर में अर्गला योग का फल होता है॥ २१॥

सारांश— जिस किसी भाव या ग्रह का विचार किया जाय तो यह देखना चाहिये कि उस भाव या ग्रह से चौथे, दूसरे और ग्यारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो उस भाव या ग्रह का अर्गला योग होता है। किन्तु उक्त अर्गला योग का भंग भी होता है अर्थात् राशि का ग्रह से चौथे भाव में ग्रह के होने से अर्गला होता है, यदि राशि का ग्रह से दशमस्थ कोई ग्रह न हो। इसी दूसरे भाव में योग होता है किन्तु १२वें कोई ग्रह न हो तथा ग्यारहवें भाव में योग होता है, यदि तीसरे भाव में कोई ग्रह न हो। यदि योगकारक ग्रह से बाधक ग्रह निर्बल या संख्या में कम हों तो अर्गला का प्रतिबंध नहीं होता है। इसी प्रकार राशि या ग्रह से तीसरे भाव में तीन से अधिक शुभ ग्रह हों तो निर्विरोधी अर्गला योग होता है। इसी प्रकार ५वें भाव में भी अर्गला योग होता है, यदि नवम में कोई ग्रह न हो तो केतुग्रह का विपरीत अर्गला योग होता है अर्थात् बाधक स्थान में अर्गला और योगस्थान में प्रतिबंधक होता है।

अथाऽर्गलाफलम्।

पदे लग्ने सप्तमे वा निराभासार्गला द्विज।
निर्बन्धा चार्गला तत्र दृष्ट्या भाग्यं भवेन्नरः॥ २२॥

पद या लग्न से सातवें भाव में निराभास (निर्बाध) अर्गला होती है, यदि यह अर्गला हो तो भाग्यवान् मनुष्य होता है॥ २२॥

अर्गलां प्रतिबन्ध च प्रथमांघ्रेर्विचिन्तयेत्।
धनधान्यपुत्रपशु - दाराबन्धुकुलैर्युतः॥ २३॥
शरीरारोग्यमैश्वर्य - भृत्यवाहनसंयुतः।
हरभक्तः सुधर्मज्ञो दृष्ट्या भाग्यस्य लक्षणम्॥ २४॥

अर्गला का प्रतिबंध एक स्थान में स्थित ग्रह के प्रथम चरण और दूसरे के चौथे चरण से, तीसरे और दूसरे चरण से देखना चाहिये। ऊपर कहे हुये प्रथम श्लोक के अनुसार अर्गला हो तो मनुष्य धन-धान्य, पुत्र, पशु, स्त्री और बंधु-बान्धवों से युक्त, नीरोग शरीर, ऐश्वर्य, नौकर, वाहन और ऐश्वर्य से युक्त होता है॥ २४॥

शुभग्रहार्गला विप्र! बहुद्रव्यप्रदायका।
पापेन स्वल्पवित्तः स्यान्निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ २५॥
उभयार्गला भवेत्तत्र कदाचिद्धनवान् भवेत्।
कदाचिद्वित्तचिंतार्तिर्जायते द्विजसत्तम॥ २६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभग्रह की अर्गला बहुत द्रव्य को देने वाली होती है और पापग्रह की अर्गला अल्पधन को देने वाली होती है॥ २५॥ यदि दोनों (शुभ-पाप) से मिश्रित अर्गला हो तो कदाचित् धनी होता है। कदाचित् धन संबंधी चिंता से कष्ट होता है॥ २६॥

यत्र जन्मनि सोऽपि स्याच्छुभदृष्टे शुभार्गला।
तेन दृष्टेक्षिते लग्ने प्राबल्यायोपकल्प्यते॥ २७॥
यदि पश्येद्ग्रहस्तत्र विपरीतार्गलसंस्थितः।
प्रथमां तु विजानीयाद्विपरीतार्गलां द्विज॥ २८॥

यदि जन्मकाल में शुभग्रह से दृष्ट.शुभ अर्गला हो और उसी शुभग्रह से लग्न युत वा दृष्ट हो तो लग्न प्रबल होता है॥ २७॥ यदि अर्गला के प्रतिबंधक स्थानीय ग्रह यानी विपरीत अर्गला योगकारक ग्रह देखते हों तो विपरीत फल होता है॥ २८॥

लग्नसप्तमयोगेन भाग्ययोगं विचन्तयेत्।
भाग्यप्रबलता ज्ञेया लग्नसप्तशुभार्गला॥ २९॥
शुभार्गले स्ववृद्धिः स्यात्पापे स्वल्पधनं वदेत्।
उभयार्गले तु तत्रैव क्वचिद्वृद्धिः क्वचित् क्षयम्॥ ३०॥

लग्न और सप्तम के योग से भाग्य योग की चिन्ता करनी चाहिये। यदि लग्न, सप्तम में शुभकृत अर्गला हो तो भाग्य की प्रबलता जाननी चाहिये॥ २९॥ शुभग्रह की अर्गला में धन की वृद्धि और पापग्रह की अर्गला में अल्पधन होता है और शुभ एवं पापग्रह की मिश्रित अर्गला होने पर कहीं वृद्धि और कहीं ह्रास होता है॥ ३०॥

तत्तद्राशिदशायां तु अर्गलाफलसिद्धये।
शुभो वाऽप्यशुभो वापि ह्यर्गला फलदायकः॥ ३१॥

उन-उन राशियों के अर्गला फल को देने वाले शुभग्रह शुभफल और पापग्रह अशुभ फल को देने वाले होते हैं॥ ३१॥

इति बृहत्पाराशरहोरायां पूर्वखंडे सुबोधिन्यां अर्गलाफलकथनं नाम सप्तमोध्यायः।

अथ कारकाध्यायः

अथाग्रे सम्प्रवक्ष्यामि ग्रहाणां कारकान् द्विज।
आत्मादिकारकान् सप्त यथावत् कथयामि ते॥ १॥
रव्यादिशनिपर्यन्ता भवन्ति सप्तकारकाः।
अंशैः समौ ग्रहौ द्वौ च राह्वन्तान् गणयेद् द्विज॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हे द्विज ! अब मैं ग्रहों के आत्मा आदि सात कारकों को कहूँगा ॥ १ ॥ रवि आदि ग्रह सात किसी किसी के मत से राहु पर्यन्त आठ कारक होते हैं। यदि दो ग्रहों में अंश साम्य हो तो राहु पर्यन्त ८ ग्रहों में कारक का विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

रव्यादिपंगुपर्यन्तमंशाधिकग्रहो द्विज ।
कारकेन्द्रोऽथ स ज्ञेयो आत्माकारक उच्यते ॥ ३ ॥
अंशसाम्यग्रहो यत्र कलाधिक्यं च पश्यति ।
कलासाम्ये पलाधिक्यमात्माकारक ईर्यते ॥ ४ ॥

रवि से राहु पर्यन्त ग्रहों में भी जो ग्रह अंश से अधिक हो वह आत्मकारक ग्रहों का राजा होता है ॥ ३ ॥ जहाँ ग्रहों के अंश तुल्य हों वहाँ कला से अधिकता लेना चाहिये और कला समान हो तो विकला से जो अधिक हो वही आत्मकारक होता है ॥ ४ ॥

तत्र राशिकलाधिक्ये नैव ग्राह्याः प्रधानकः ।
अंशाधिक्ये कारकः स्यादल्पभागोऽन्तकारकः ॥ ५ ॥
मध्यांशो मध्यखेटः स्यादुपखेटः स एव हि ।
अधोऽधः कारका ज्ञेयाश्चराणि सप्तकारकाः ॥ ६ ॥

राशि और कला से अधिक हो तो वह आत्मकारक नहीं होता है। जिसका अंश अधिक हो वही आत्मकारक होता है, अल्प अंशवाला अंतिमकारक होता है ॥ ५ ॥ दोनों के मध्य अंश वाले अन्य कारक होते हैं- क्रम से जो कारक होते हैं उसी को उपकारक कहते हैं ॥ ६ ॥

तेषां मध्ये प्रधानं तु आत्मकारक उच्यते ।
जातकराट् स विज्ञेयः सर्वेषां मुख्यकारकः ॥ ७ ॥
यथा भूमौ प्रसिद्धोऽस्ति नराणां क्षितिपालकः ।
सर्ववार्ताधिकारी च बंधकृन्मोक्षकृत्तथा ॥ ८ ॥

इन सभी में आत्मकारक प्रधान जातक का स्वामी होता है, इसी को मुख्यकारक कहते हैं ॥ ७ ॥ जिस प्रकार पृथ्वी पर मनुष्यों में राजा बन्धन, मोक्ष आदि सभी बातों का अधिकारी होता है ॥ ८ ॥

पुत्रामात्यप्रजानां तु तत्तद्दोषगुणैस्तथा ।
बन्धकृन्मोक्षकृद्विप्र तथा सम्मानकारकः ॥ ९ ॥
तथैव कारको राजा ग्रहाणां आत्मकारकः ।
आत्मेत्यादि फलं दत्ते चान्यथा स्थापयेद्विज ॥ १० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वही पुत्र, मंत्री और प्रजाओं का उनके गुण दोष के अनुसार बंधन-मोक्ष तथा सम्मान आदि करने वाला होता है। उसी प्रकार कारकराज के वश से अन्य कारक फल देने वाले होते हैं॥ ९॥ जिस प्रकार राजा के क्रोधित होने से सभी मंत्री आदि अपने मन का कार्य करने में असमर्थ होते हैं॥ १०॥

यथा राजाज्ञया विप्र ! पुत्रामात्यादयोऽपि च ।
समर्था लोककार्येषु तथैवान्योन्यकारकः ॥ ११॥
कारकराजवश्येन फलदातान्यकारकः ।
यथा राजनि क्रुद्धे च सर्वेऽमात्यादयो द्विज ॥ १२॥
स्वजनानां कार्यकर्त्तुमसमर्था भवन्ति हि ।
स्निग्धे भूपे ह्यमात्यादिः स्वशत्रूणां द्विजोत्तम ॥ १३॥
अकार्यं कर्तुं नो शक्तस्तथैवान्योपकारकः ।
आत्मकारकवश्येन ह्यमात्यादि फलं ददुः ॥ १४॥

यदि राजा प्रसन्न होते हैं तो मंत्री आदि अपने शत्रु का भी अहित नहीं करते हैं उसी प्रकार अन्य कारक भी आत्मकारक के वश में होते हैं॥ ११-१४॥

आत्मकारकखेटेन न्यूनभागो हि यद्ग्रहः ।
अमात्यसंज्ञा तस्यैव ज्ञायते द्विजसत्तम ॥ १५॥
अमात्यन्यूनो भ्राता च भ्रातृन्यूनं च मातृकम् ।
मातृकारकखेटेन न्यूनभागो हि यो ग्रहः ॥ १६॥

आत्मकारक ग्रह से न्यून अंशवाला ग्रह अमात्यसंज्ञक होता है॥ १५॥ अमात्य से न्यून अंश वाला ग्रह भ्राताकारक, इससे न्यून अंश वाला मातृकारक, इससे न्यून पुत्रकारक होता है॥ १६॥

सपुत्रकारको ज्ञेयस्तद्धीनो ज्ञातिकारकः ।
ज्ञातिकारकखेटेन हीनभागो हि यो ग्रहः ॥ १७॥
दारकारकविज्ञेयो निर्विशंकं द्विजोत्तम ।
चराश्च कारकाः सप्त ब्रह्मणा चोदितः पुरा ॥ १८॥

इससे न्यून अंश वाला ग्रह ज्ञाति (जाति) कारक, इससे न्यून अंश वाला ग्रह॥ १७॥ स्त्रीकारक होता है। यही सात चरकारक होते हैं॥ १८॥

उदाहरण-पृष्ठ ३८में दिये गये स्पष्टग्रहों के अनुसार चरकारक इस प्रकार हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चरकारकग्रहाणां चक्रम्

आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	स्त्री	चर-
कारक	कारक	कारक	कारक	कारक	कारक	कारक	कारकाः
भौम	चंद्रमा	सूर्य	गुरु	बुध	शुक्र	शनि	ग्रहाः

अंशसाम्यौ ग्रहौ द्वौ च जायेतां यस्य जन्मनि ।
स्वकारकं विना विप्र लुप्यति चात्मकारकः ॥ १९ ॥
तत्कारको लुप्यति चेदन्यन्नैवास्ति कारकम् ।
कारकाणां स्थिराणां च मध्ये सञ्चिन्तयेद्द्विज ॥ २० ॥

जिसके जन्मकाल में दो ग्रह सम अंश वाले हों तो दोनों ही उस कारक के स्वामी होते हैं परन्तु उसका फल स्थिर कारक से कहना चाहिए॥ १९॥ क्योंकि वहाँ दोनों का नाश हो जाता है फिर स्थिरकारक से ही फल को देखना चाहिये॥ २०॥

अथयोगकारकमाह-

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि खेटान् कारकसंज्ञकान् ।
यस्य जन्मनि भावानां यथास्थाने च वै द्विज ॥ २१ ॥
स्वर्क्षे तुंगे च मित्रर्क्षे कंटके संस्थिता ग्रहाः ।
अन्योन्यकारका विप्र कर्मगास्तु विशेषतः ॥ २२ ॥

अब मैं योग करने वाले कारक ग्रहों को कह रहा हूँ॥ २१॥ जन्म समय ग्रह अपने उच्चराशि, अपनी राशि वा अपने मित्र की राशि में होकर परस्पर केन्द्र में हों तो परस्पर कारक (भाग्योदय) करने वाले होते हैं। इसमें भी दशम स्थान में विशेष योगकारक होते हैं॥ २२॥

लग्ने सुखे तथा कामे ग्रहभाववशेन च ।
भवन्ति कारका विप्र विशेषेण च खेगताः ॥ २३ ॥
स्वमित्रर्क्षोच्चगो हेतुरन्योन्यं यदि केन्द्रगः ।
ससुहृद्गणसंपन्नः सोऽपि कारक एव वै ॥ २४ ॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम में कारक होते हैं विशेषतः दशम में कारक होता है॥ २३॥ यदि ग्रह अपने मित्र, राशि, उच्च में होकर परस्पर केन्द्र में हों तो वे भी परस्पर कारक होते हैं॥ २४॥

नीचान्वये यस्य जन्म बभूव द्विजसत्तम ।
पतन्ति कारका लग्ने प्रधानत्वं स आप्नुयात् ॥ २५ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राज्ञां कुले समुत्पन्नो राजा भवति निश्चितम् ।
एवं कुलानुसारेण कारकाणां फलं भवेत् ॥ २६ ॥

नीच वंश में उत्पन्न हो और योगकारक ग्रहों से योग होता हो तो वह अपने कुल में प्रधान होता है।।२५।। और राजकुल में उत्पन्न हो और योग होता हो तो अवश्य ही राजा होता है। इस प्रकार कुल के अनुसार कारकों का फल होता है।।२६।।

अथ स्थिरकारकमाह-

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि कारकाणि स्थिराणि च ।
सूर्यादीनां ग्रहाणां च वीर्यवान् कारको भवेत् ॥ २७ ॥
बलवान् जायते विप्र जन्मनि रविशुक्रयोः ।
स पितृकारको ज्ञेयो निर्विशङ्कं द्विजोत्तम ॥ २८ ॥

अब मैं स्थिर कारकों को कह रहा हूँ। सूर्य आदि ग्रहों के बलाबल के अनुसार ये कारक होते हैं॥ २७॥ जन्मकाल में रवि और शुक्र में जो बलवान् हो वह पितृकारक होता है॥२८॥

चन्द्रारवोश्च बलवान् मातृकारक उच्यते ।
भौमतस्तु विशेषेण भगिनीदारभ्रातृकौ ॥ २९ ॥
बुधान्मातुलमाख्यातो मातृतुल्यानपि द्विज ।
गुरुणा चात्र विज्ञेया पुत्रस्वामिपितामहाः ॥ ३० ॥

चन्द्रमा और भौम में जो बलवान् हो वह मातृकारक होता है। विशेषतः भौम से बहिन और साला (स्त्री के भाई) का विचार होता है॥ २९॥ बुध से मामा और मातृसदृश (मौसी) आदि का विचार होता है। गुरु से पुत्र, स्वामी और पितामह आदि का विचार होता है॥ ३०॥

स्वभार्यामातृपितरौ तथा मातामही द्विज ।
भृगुद्वारा विजानीयादेतेषां शुक्रकारकाः ॥ ३१ ॥
सूर्याच्च पुण्यभे तात इन्दोर्माता च तुर्यतः ।
कुजात्तृतीयतो भ्राता मातुलो रिपुभाद्बुधात् ॥ ३२ ॥

अपनी स्त्री, सास-ससुर और नानी का विचार शुक्र से होता है, क्योंकि शुक्र ही उनका कारक होता है॥ ३१॥ सूर्य से ९ वें स्थान में पिता का, चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में माता का, भौम से तीसरे भाई का, बुध से छठे मामा का विचार होता है॥ ३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

देवेज्यात्पंचमे पुत्रो दैत्येज्याद्यूनभे स्त्रियः ।
मंदादष्टमतो मृत्युस्तातादीनां विचिन्तयेत् ॥ ३३ ॥

गुरु से पाँचवें पुत्र का, शुक्र से सातवें स्त्री का और शनि से आठवें भाव में आयु का विचार करना चाहिये॥ ३३ ॥

अथ भावकारकमाह-

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि विशेषं भावकारकम् ।
जनुर्लग्नं च विद्याद्वै आत्मकारकमेव च ॥ ३४ ॥
धनभावं विजानीयाद्दारकारकमेव च ।
एकादशे ज्येष्ठंभ्रातुस्तृतीये च कनिष्ठकाः ॥ ३५ ॥

अब विशेषकर भावकारकों को कह रहा हूँ। जन्मलग्न आत्मकारक, होता है॥ ३४ ॥ धनभाव स्त्रीकारक, ग्यारहवाँ ज्येष्ठ भाई का और तीसरा कनिष्ठ भाई का कारक है॥ ३५ ॥

सुते सुतं विजानीयाद्दारा सप्तमभावतः ।
सुतस्थाने ग्रहस्तिष्ठेत्सोऽपि कारक उच्यते ॥ ३६ ॥
सूर्यो गुरुः कुजः सोमो गुरुर्भौमः सितः शनिः ।
गुरुश्चन्द्रसुतो जीवो मन्दश्च भावकारकः ॥ ३७ ॥

पंचमभाव पुत्र का और सातवाँ स्त्री का कारक होता है। पाँचवें भाव में यदि कोई ग्रह हो तो वह भी उस भाव का कारक होता है॥ ३६ ॥ क्रम से सूर्य, गुरु, भौम, बुध, गुरु, भौंम, शुक्र, शनि, गुरु, बुध, गुरु और शनि– ये लग्नादि भावों के कारक होते हैं॥ ३७ ॥

पुनस्तन्वादयो भावाः स्थाप्यास्तेषां शुभाऽशुभम्।

लाभं तृतीयं रन्ध्रं च शत्रुभावव्ययं तथा ।
एषां योगेन यो भावस्तन्नाशं प्राप्नुयाद्ध्रुवम् ॥ ३८ ॥

फिर भी लग्न आदि भावों के शुभ-अशुभ को लिखकर उनके शुभाशुभ का निर्णय करना चाहिये। एकादश, तृतीय, आठवाँ, छठवाँ और बारहवाँ भाव- इनके साथ जिस भाव का सम्बन्ध होता है उस भाव के फल का नाश हो जाता है अर्थात् इन भावों के स्पष्ट राश्यादि का योग करने से जो भाव बने वह नष्ट हो जाता है॥ ३८ ॥

चत्वारो राशयो भद्राः केन्द्रकोणशुभावहाः ।
तेषां संयोगमात्रेण अशुभोऽपि शुभो भवेत् ॥ ३९ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

केन्द्र और कोण, ये चार भाव शुभद है, इनके संयोग से जो भाव हो वह भी शुभद होता है॥ ३६॥

अथ सूर्यादिग्रहाणां कारकत्वमाह

राज्यविद्रुमरक्तवस्त्रमाणिक्यराजवन-
पर्वतक्षेत्रपितृकारको रविः ॥ १ ॥
मातृमनः - पुष्टिगंधरसेक्षुगोधूमक्षारक -
द्विजशक्तिकार्यसस्यरजतादिकारकश्चन्द्रः ॥ २ ॥

राज्य, मूँगा, रक्तवस्त्र, माणिक्य, राज, वन, पर्वत, क्षेत्र और पिता का कारक सूर्य होता है॥ १ ॥ माता, मन, शरीरपुष्टि, गंधद्रव्य, रस, ऊख, गेहूँ, क्षारपदार्थ, ब्राह्मण, शक्तिकार्य, धान्य और चाँदी आदि का कारक चन्द्रमा है॥ २ ॥

सत्त्वसद्मभूमिपुत्रशीलचौर्यरोगब्रह्मभ्रातृ-
पराक्रमाग्निसाहसराजशत्रुकारकः कुजः ॥ ३ ॥
ज्योतिर्विद्यामातुलगणितकार्यनर्तनवैद्य -
हास्यभी श्रीशिल्पविद्यादिकारको बुधः ॥ ४ ॥

ओज, भवन, भूमि, पुत्र, शील, चोर, रोग, वह्म, भाई, पराक्रम, अग्नि, साहस, राजशत्रु के कारक भौम हैं॥ ३ ॥ ज्योतिष विद्या, मामा, गणित विद्या, नृत्य, वैद्यक, हास्य, भय, लक्ष्मी शिल्पविद्या का कारक बुध है॥ ४ ॥

स्वकर्मयजनदेवब्राह्मणधनगृहकांचन-
वस्त्रपुत्रमित्रांदोलनादिकारको गुरुः ॥ ५ ॥

अपने कार्य, यज्ञ, देवता, ब्राह्मण, धन, गृह, सुवर्ण, वस्त्र, पुत्र, मित्र, आंदोलन आदि के कारक गुरु हैं॥ ५ ॥

कलत्रकार्मुकसुखगीतशास्त्र-काव्यपुष्पसुकुमारयौवनाभरणरजत-यानस्वर्गलोकमौक्तिक-विभ वकवितारसादिकारको भृगुः॥ ६ ॥

स्त्री, धनुष, सुख, गीतशास्त्र, काव्यशास्त्र, पुष्प, यौवन, आभूषण, चाँदी, सवारी, स्वर्गलोक, मोती, वैभव, कविता, रस आदि कें कारक शुक्र हैं॥ ६ ॥

महिषहयगजतैलवस्त्रशृंगार-
प्रयाणसर्वराज्यसर्वायुधगृहयुद्ध-
संचारशूद्रनीलमणिविघ्नकेशशल्य-
शूलरोगदासदासीजनायुष्यकारकः शनिः ॥ ७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भैंस, घोड़ा, हाथी, तेल, वस्त्र, शृंगार, यात्रा, सभी प्रकार के आयुध, गृह, युद्धसंचार, शूद्र, नीलमणि, विघ्न, केश, हड्डी, शूलरोग, नौकर, नौकरानी, आयुष्य के कारक शनि हैं॥ ७॥

प्रयाणसमयसर्परात्रिसकलसुप्तार्थद्यूतकारको राहुः॥ ८॥
व्रणरोगचर्मातिशूलस्फुटक्षुधार्तिकारकः केतुः॥ ९॥

यात्राकाल, सर्प, रात्रि, सम्पूर्ण खोये हुये द्रव्य तथा जुआ का कारक राहु है॥ ८॥ फोड़ा आदि रोग, चर्मरोग, अत्यन्त शूल, भूख से कष्ट आदि का कारक केतु है॥ ९॥

इति कारकाध्यायः।

अथ कारकांशफलमाह

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि कारकांशाधिकान् ग्रहान्।
योग सम्बंधमात्रेण यथावत् फलदा ग्रहाः॥ १॥
स्वांशकारककुंडल्यां नवमांशाधिपोऽथवा।
यस्मिन् राशौ स्थिता विप्र तद्राशिफलमुच्यते॥ २॥

अब मैं कारकांश के स्वामी ग्रहों के फल को कह रहा हूँ, जिसके संबंध मात्र से योग का फल प्राप्त होता है॥ १॥ आत्मकारकांश कुंडली में नवांश के अधिपति जिस राशि में हो उसके अनुसार फल होता है॥ २॥

उदाहरण—कारकांश कुण्डली बनाने के लिए आत्मकारक ग्रह जिस नवमांश में हो वही लग्न स्थापित करके आत्मकारकादि ग्रह वहाँ-वहाँ स्थापित कर देना चाहिए। इस प्रकार पृष्ठ ३८ में दिये गये स्पष्ट ग्रहों के अनुसार भौम मेष के नवमांश में होने से कारकांश कुण्डली में मेष राशि स्थापित करके भौम को मेष में स्थापित किया गया शेष ग्रह अपने-अपने नवांश के अनुसार कुण्डली में स्थापित कर दिये गये है।

मेषादिमीनपर्यन्तं सर्वेषां फलमादिशेत्।
यथावद्भाषितं पूर्वं शूलिना रुद्रयामले॥ ३॥
अजांशकारकांशेषु तिष्ठन्ति च यदा ग्रहाः।
तदा मूषकमार्जारौ दुःखदौ भयकारकौ॥ ४॥

मेष से मीन पर्यन्त सभी राशियों का फल इस प्रकार है॥ ३॥ यदि आत्म कारक मेष राशि के नवांश में हो तो चूहा, बिलार आदि दुःख देते हैं॥ ४॥

सुयोगे च यदा विप्र मार्जारादि सुखप्रदौ।
वृषे च कारकांशे तु भयार्ती च चतुष्पदात्॥ ५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभे चतुष्पदात्सिद्धिरिति तत्त्वं द्विजोत्तम ।
मिथुने कारकांशे च कंड्वादिरोगसंभवः ॥ ६ ॥

शुभग्रह के योग से चूहा, बिलार आदि सुख देते हैं। वृष का नवांश हो तो चौपाये जानवरों से भय होता है॥ ५॥ शुभग्रह का योग हो तो चौपायों से सुख होता है। मिथुन के नवांश में कारक हो तो खुजली आदि रोगों की संभावना होती है॥ ६॥

कर्कांशे च जलाद्दुःखं जलभीतिर्न संशयः ।
कुष्ठादिरोगसंभूतिः शुभे फलविपर्ययः ॥ ७ ॥
सिंहांशे कारके खेटे तिष्ठत्येवं द्विजोत्तम ।
शुनकादि भयं दद्याच्छुभे सिद्धिप्रदायकः ॥ ८ ॥

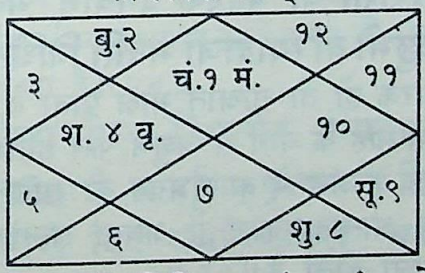
कर्क के नवांश में कारक हो तो जल से कष्ट वा जल का भय और कुष्ठ आदि रोग की संभावना होती है और शुभग्रह का योग हो तो फल में विपर्यय होता है॥ ७॥ सिंह के नवांश में हो तो खाज आदि से भय होता है, शुभग्रह का योग हो तो शुभफल होता है॥ ८॥

उदाहरण—पृष्ठ ३८ पर दिये हुये स्पष्ट ग्रहों के अनुसार चरकारक इस प्रकार है

चरकारकाः

आत्म-कारक	अनात्म-कारक	भ्रातृ-कारक	मातृ-कारक	पुत्र-कारक	जाति-कारक	दारा-कारक
भौम	चंद्रमा	सूर्य	गुरु	बुध	शुक्र	शनि

कारकांशचक्रम्-



कन्यायां कारकांशे चेत्तिष्ठत्यूवं फलं भवेत् ।
युग्मवत्कंडुरोगार्त्तिर्वह्निदोषेण दुःखभाक् ॥ ९ ॥
तुलाख्यं कारकांशे च व्यापारेषु रतोऽधिकः ।
क्रयविक्रयकर्त्ता च यदि जातो नृपालये ॥ १० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कन्यांश में आत्मकारक हो तो मिथुनांश के समान ही कंडु (खुजली) आदि रोग से कष्ट होता है और अग्निदोष से कष्ट की संभावना रहती है॥ ९॥ तुला कारकांश हो तो वह व्यापार में अधिक संलग्न, खरीद-बिक्री करने में पटु होता है॥ १०॥

वृश्चिके कारकांशे च सर्पादिभयकारकः।
मातुः पयोधरे पीडा जायते द्विजसत्तम॥ ११॥
चापस्थे कारकांशे च वाहनाद्भयमादिशेत्।
उच्चात्प्रपतनं वापि कोपी वस्तुसमन्वितः॥ १२॥

वृश्चिकांश में कारक हो तो सर्प आदि से भय, और माता के स्तन में पीड़ा होती है॥ ११॥ धनु कारकांश हो तो वाहन से गिरने का भय अथवा ऊँचे से गिरने का भय, कोई और वस्तु संग्रही होता है॥ १२॥

नक्रकारकांशे विप्र सिद्धिर्जलचरादयः।
शंखमुक्ताप्रवालादि - मत्स्यखेचरदेवताः॥ १३॥
कुम्भाख्यकारकांशे च तडागादीनि कारयेत्।
कीर्त्तिमान्धर्मवान्सोऽपि जायते द्विजसत्तम॥ १४॥

मकर के अंश में कारक के होने से शंख, मोती, मूँगा आदि से मछली एवं पक्षियों से तथा दैवबल से लाभ होता है॥१३॥ कुम्भांश में कारक हो तो तालाब आदि का रचयिता, यशस्वी और धार्मिक होता है॥१४॥

मीने च कारकांशे वै सायुज्यमुक्तिभाग्भवेत्।
शुभयोगे शुभं ब्रूयान्नशुभं विपरीतके॥ १५॥
शुभांशे शुभराशौ वा कारके धनवान् भवेत्।
लग्नांशे चेच्छुभो वा स्याद्राजा भवतिं निश्चितम्॥ १६॥

मीनांश में कारक हो तो साक्षात् मोक्ष पाता है, शुभग्रह के योग से शुभफल और पापग्रह के योग से अशुभ फल होता है॥ १५॥ यदि आत्मकारक शुभग्रह के अंश में वा शुभग्रह की राशि में हो तो जातक धनी होता है एवं आत्मकारकांश में अथवा लग्नांश में शुभग्रह हो तो निश्चय ही राजा होता है॥ १६॥

उपग्रहे शुभांशे चेत्स्वोच्चस्वर्क्षे शुभर्क्षभे।
पापदृग्योगरहिते चान्त्ये कैवल्यं विनिर्दिशेत्॥ १७॥
चन्द्रभृग्वारवर्गस्थे कारके पारदारिकः।
मिश्रे मिश्रं विजानीयाद्विपरीते विपर्ययम्॥ १८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि उपग्रह शुभग्रह के अंश में हो अथवा अपने उच्चराशि या अपनी राशि के शुभग्रह की राशि में हो, पापग्रह की दृष्टि और योग से रहित हो तो अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है॥ १७॥ यदि आत्मकारक चन्द्र, शुक्र या भौम के षड्वर्ग में हो तो परस्त्री का सुख भोगने वाला होता है। उपर्युक्त फलों में मिश्रित ग्रह (शुभ और पाप, दोनों) का संबंध हो तो मिश्रित फल और विपरीत हो तो विपरीत फल कहना चाहिये॥ १८॥

कारकांशस्थितग्रहाणां फलम्-

अथैकः कारकांशेषु रव्यादिस्तिष्ठति ग्रहः।
तेषां फलं प्रवक्ष्यामि शृणुत्वं द्विजसत्तम॥ १९॥
कारकांशे यदा सूर्यस्तिष्ठति द्विज वीर्ययुक्।
आदावंते पुमान् सोऽपि राजकार्येषु तत्परः॥ २०॥

अब सूर्यादि ग्रहों का फल आत्मकारकांश के अनुसार कह रहा हूँ॥ १९॥ यदि आत्मकारकांश में बलवान् सूर्य हो तो जातक अवस्था के आदि और अन्त में राजकर्मचारी होता है॥ २०॥

कारकांशे तु पूर्णेन्दु दैत्याचार्येण वीक्षितः।
शतभोगी भवेत्सोऽथ विद्याजीवी च जायते॥ २१॥
कारकांशे यदा भौमे बलाढ्येन युतेक्षिते।
रसवादी कुंतधारी वह्निकृज्जीवनं भवेत्॥ २२॥

यदि कारकांश में पूर्णचन्द्रमा हो और शुक्र से देखा जाता हो तो १०० वर्ष की आयु होती है और विद्या द्वारा जीविका होती है॥ २१॥ यदि कारकांश में भौम हो और किसी बली ग्रह से युत वा दृष्ट हो तो रस बनाने वाला, कुन्त (भाला) धारण करने वाला और अग्निद्वारा जीविका प्राप्त करने वाला होता है॥ २२॥

कारकांशे यदा सौम्यः तिष्ठत्येव बलाढ्यकः।
शिल्पको व्यवहारी च वणिक्कृत्यकरो द्विज॥ २३॥
कारकांशे गुरौ विप्र कर्मनिष्ठापरो भवेत्।
सर्वशास्त्राधिकारी च विख्यातः क्षितिमंडले॥ २४॥

यदि कारकांश में बुध हो तो और बली हो तो शिल्पी, व्यवहारी और बनिये का कार्य करने वाला होता है॥ २३॥ यदि कारकांश में गुरु हो तो कर्म करने वाला, सभी शास्त्रों का अधिकारी और पृथ्वी पर प्रसिद्ध होता है॥ २४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांशे यदा शुक्रो राजमान्यः सदा भवेत् ।
सदिन्द्रियः शतायुश्च कथनीयं द्विजोत्तम ॥२५॥
कारकांशे यदा सौरिर्मृत्युलोके प्रसिद्धियुक् ।
महतां कर्मणां वृत्तिः क्षितिपालेन पूजितः ॥२६॥

यदि कारकांश में शुक्र हो तो राजा से सम्मान प्राप्त करता है, सुन्दर और १०० वर्ष की आयुवाला होता है।२५। कारकांश में शनि हो तो संसार में प्रसिद्ध, बड़े कार्यों को करने वाला और राजा से पूजित होता है॥२६॥

कारकांशे यदा राहुर्धनुर्धारी प्रजायते ।
जांगल्यलौहयंत्रादि - कारकश्चोरसंयमी ॥२७॥
कारकांशे यदा केतुस्तिष्ठति द्विजसत्तम ।
व्यवहारी गजादीनामुशंति परद्रव्यके ॥२८॥

कारकांश में राहु हो तो धनुष धारण करने वाला, जंगली, लोहे के यंत्रों को बनाने वाला, चोर और संयमी होता है॥ २७॥ कारकांश में केतु हो तो हाथी आदि का व्यवहार दूसरे के द्रव्य से करनेवाला होता है॥ २८॥

कारकांशे यदा विप्र संस्थितौ रविसैंहिकौ ।
सर्पाद्भीतिर्भवेन्मृत्युः शुभदृष्ट्या निवर्तते ॥२९॥
कारकांशे भानुतमौ शुभषड्वर्गसंयुतौ ।
विषवैद्यो भवेन्नूनं विषहर्ता विचक्षणः ॥३०॥

यदि कारकांश में सूर्य और राहु हों तो सर्प से भय या मृत्यु होती है, शुभग्रह की दृष्टि हो तो निवृत्ति हो जाती है॥ २९॥ कारकांश में सूर्य और राहु हों और शुभ ग्रह के षड्वर्ग में हों तो विषवैद्य या विष का हरण करने वाला होता है॥ ३०॥

भौमेक्षिते कारकांशे भानुस्वर्भानुसंयुते ।
अन्यग्रहा न पश्यन्ति स्ववेश्मपरदाहकः ॥३१॥
सगुलिके कारकांशे पूर्णेन्दुवीक्षिते द्विज ।
सति चौरैर्नीतधनः स्वयं चौरोऽथवा भवेत् ॥३२॥

कारकांश में सूर्य और राहु हों, उसे भौम देखता हो और शेष ग्रह न देखते हों तो अपना और दूसरे का घर जलाने वाला होता है॥ ३१॥ कारकांश में गुलिक हो और पूर्ण चन्द्र से देखा जाता हो तो चोरों से धन अपहृत होता है अथवा स्वयं चोर होता है॥ ३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सगुलिके कारकांशे अन्यग्रहयुतेक्षिते ।
बुधदृष्टियुते वापि अंडवृद्धिः प्रजायते ॥ ३३ ॥
कारकांशे केतुयुक्ते पापग्रहनिरीक्षते ।
श्रोत्रच्छेदं भवेन्नूनं कर्णरोगार्तिना द्विज ॥ ३४ ॥

कारकांश में गुलिक हो और अन्यग्रहों से देखा जाता हो अथवा बुध से दृष्ट या युत हो तो अंडवृद्धि होती है। ३३। कारकांश में केतु हो और पाप ग्रह से देखा जाता हो तो कर्ण रोगसे पीड़ित होनेसे उसके कान काटे जाते है। ३४

कारकांशे स्थिते केतौ भृगुणा च समीक्षिते ।
युते वा जायते विप्र क्रियाकर्मसमन्वितः ॥ ३५ ॥
कारकांशे स्थिते केतौ शनिसौम्यनिरीक्षते ।
बलवीर्येण रहितो जायते सोऽपि मानवः ॥ ३६ ॥

कारकांश में केतु हो और शुक्र से दुष्ट वा युत हो तो क्रिया-कर्म से युक्त होता है॥ ३५॥ कारकांश में केतु हो और शनि-बुध से देखा जाता हो तो मनुष्य बलवीर्य से हीन होता है॥ ३६॥

सकेतौ कारकांशे च बुधशुक्रनिरीक्षिते ।
जायते पौनःपुनिको दासीपुत्रोऽथवा भवेत् ॥ ३७ ॥
सकेतौ कारकांशे च अन्यग्रहनिरीक्षिते ।
शनिदृष्टिविहीने च सत्याच्च रहितो भवेत् ॥ ३८ ॥

कारकांश में केतु हो और बुध-शुक्र से देखा जाता हो तो रुक-रुक कर बोलने वाला या दासीपुत्र होता है॥ ३७॥ कारकांश में केतु हो, शनि को छोड़कर उसे-शेषग्रह देखंते हों तो असत्य बोलने वाला होता है॥ ३८॥

कारकांशे यदा विप्र भृगुभास्करवीक्षिते ।
राजप्रेष्यो भवेद्बालो जायते नात्र संशयः ॥ ३९ ॥

यदि कारकांशको शुक्र-सूर्य देखतेहों तो जातक राजाका नौकर होता है। ३९

कारकांशाद्धनभावफलम्-

अंशात्कुटुम्बे भृग्वारवर्गे स्यात्पारदारिकः ।
तयोर्दृग्योगकाभ्यां च भवेदामरणं किल ॥ ४० ॥
केतुना प्रतिबंधः स्याद्गुरुणा स्त्रैण एव च ।
राहुणा चार्थनिवृत्तिः स्याद्धने एवं फलं भवेत् ॥ ४१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांश से धन भाव में शुक्र-भौम का षड्वर्ग हो तो वह परस्त्रीगामी होता है। यदि शुक्र-भौम देखते हों तो आमरण परस्त्रीगामी होता है॥४०॥ केतु देखता हो तो प्रतिबन्ध होता है, गुरु देखता हो तो स्त्री के वश में होता है, राहु देखता हो तो परस्त्री के लिये द्रव्य खर्च करता है॥ ४१॥

कारकांशात्तृतीये च पापखेटयुतेक्षिते।
सशूरो जायते बालो वीर्यवान्बहुविक्रमी॥४२॥
कारकांशात्तृतीये च शुभखेटयुतेक्षिते।
जायते तत्वहृदयः कातरोऽपि विशेषतः॥४३॥

कारकांशसे तीसरे भावमें पापग्रह युत हों वा देखते हो तो बालक शूर वीर एवं पराक्रमी होता है॥४२॥ कारकांश से तीसरे भाव में शुभग्रह हों वा देखते हों तो बालक शुद्ध हृदय का और विशेषकर कातर होता है॥४३॥

कारकांशात्तृतीये च षष्ठे पापयुतेक्षिते।
कृषिकर्मरतो नित्यं जायते नात्र संशयः॥४४॥

कारकांश से तीसरे-छठें भाव में पापग्रह हों या देखते हो तो बालक कृषिकर्म को करने वाला होता है॥ ४४॥

कारकांशाच्चतुर्थभावफलम्-

पाताले कारकांशाच्च शशिशुक्रयुतेक्षिते।
प्रासादवान् भवेद्बालो विचित्रगृहवान्भवेत्॥४५॥
कारकांशाच्च पाताले तुंगर्क्षे कोऽपि खेचरः।
हर्म्यमंदिरसंयुक्तो ह्यत्युच्चो बहुदीप्तिमान्॥४६॥

कारकांश से चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा-शुक्र युत हों वा देखतेहों तो विचित्र प्रासाद (किला) या गृह वाला होता है। ४५। चौथे में यदि कोई ग्रह अपने उच्चराशि का हो तो बहुत ऊँचा, खूबसूरत एवं प्रकाशमान् गृह होता है।४६।

कारकांशाच्च पाताले शनिराहुयुतेक्षिते।
विप्रेच्छाटनपट्टीयुग्जायते मंदिरं द्विज॥४७॥
कारकांशाच्च पाताले कुजकेतुशनीक्षिते।
ऐष्टिकं मन्दिरं तस्य जायते नात्र संशयः॥४८॥

कारकांश से चौथे भाव में शनि-राहु हों या देखते हो तो पत्थर का गृह होता है॥ ४७॥ कारकांश से चौथे भाव में भौम-केतु-शनि हों वा देखते हों तो ईंट का मकान होता है॥ ४८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांशाच्च पाताले गुरुयुक्तनिरीक्षिते ।
दारवं मंदिरं तस्य जायते नात्र संशयः ॥४९॥
कारकांशाच्च पाताले रवियुक्तनिरीक्षिते ।
तृणावेष्टितगृहं तस्य जायते नात्र संशयः ॥५०॥

कारकांश से चौथे भाव में गुरु युक्त हों वा देखते हों तो लकड़ी का गृह होता है॥ ४९॥ कारकांश से चौथे भाव में सूर्य युत हो वा देखता हो तो फूस (तृण) का गृह होता है॥ ५०॥

कारकांशात्पंचमभावफलम्-

स्वांशे तत्सुते वापि गुरुचन्द्राभ्यां च ग्रन्थकृत् ।
भृगुणा किंचिदूनोऽसौ तस्मान्यूनो बुधेन च ॥५१॥
सुराचार्येण सर्वज्ञः ग्रन्थकर्त्ता तथैव च ।
वेदवेदान्तविच्चापि न वाग्मी शाब्दिकोऽपि च ॥५२॥

आत्म कारकांश में अथवा उससे पाँचवें स्थान में चन्द्रमा-गुरु हों तो ग्रंथ बनाने वाला होता है। यदि शुक्र हो तो कुछ न्यून होता है और बुध हो तो और भी न्यून होता है॥ ५१॥ केवल गुरु हो तो सर्वज्ञ और ग्रन्थकर्त्ता होता है तथा वेद-वेदान्त को जानने वाला वैयाकारण होते हुये भी वाग्मी नहीं होता है॥ ५२॥

न्यायज्ञः धरणीजेन बुधे मीमांसकस्तथा ।
सभामूकस्तु शनिना गीतज्ञो रविणा तथा ॥५३॥
शशिना सांख्ययोगज्ञः काव्यज्ञश्च तथा द्विज ।
केतुना गणितज्ञश्च जायते नात्र संशयः ॥५४॥

यदि भौम हो तो नैयायिक, बुध हो तो मीमांसक, शनि हो तो सभा में मूक रहने वाला और सूर्य हो तो गानविद्या में पंडित होता है॥ ५३॥ चन्द्रमा हो तो सांख्यशास्त्र और काव्य का पण्डित और केतु हो तो गणित का पण्डित होता है॥ ५४॥

उक्तफलानां साफल्यं गुरुसम्बंधमात्रतः ।
कारकांशाद्धने केचित्फलमेवं ब्रुवन्ति हि ॥५५॥

जो योग ऊपर कहे गये हैं, सभी में गुरु का योग और दृष्टि हो तो योग का फल अवश्य होता है। किसी-किसी का मत है कि कारकांश से दूसरे स्थान में भी इसी प्रकार विचार करना चाहिये॥ ५५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांशात्षष्ठभावफलम्-

स्वांशात्तृतीये षष्ठे च पापस्तिष्ठेच्चेद् द्विज ।
कर्षको जायते बालः नात्र कार्या विचारणा ॥ ५६ ॥

आत्मकारक से तीसरे, छठें स्थान में पापग्रह हों तो जातक किसान होता है।५६

कारकांशात्सप्तमभावफलम्-

कारकांशाच्च द्यूनेचेद् गुरुचन्द्रयुते द्विज ।
सुंदरी गृहिणी तस्य पतिभक्तिपरायणा ॥ ५७ ॥
राहुणा विधवा भार्या जायते नात्र संशयः ।
शनिना च वयोऽधिक्या रोगिणी वातपस्विनी ॥ ५८ ॥

आत्मकारक से सातवें भाव में गुरु-चन्द्रमा हों तो जातक की स्त्री सुन्दरी और पतिव्रता होती है॥ ५७॥ यदि सातवें में राहु हो तो विधवा स्त्री का संयोग होता है। यदि शनि हो तो अवस्था में अधिक, रोगिणी या तपस्विनी होती है॥ ५८॥

भौमेन विकलांगी च तथा कांताद्यलक्षणा ।
रविणा स्वकुले गुप्ता आसक्ता परवेश्मनि ॥ ५९ ॥
बुधे कलावती ज्ञेया कलाभिज्ञा प्रजायते ।
शुक्रेण तद्विज्ञेया निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ ६० ॥

भौम हो तो अंग से हीन, सूर्य हो तो अपने कुल में गुप्तरीति से रहती हुई दूसरे के वश में रहती है॥ ५९॥ बुध हो तो कला को जानने वाली स्वयं कलाविद् होती है। इसी प्रकार शुक्र से भी जानना चाहिये॥ ६०॥

कारकांशादष्टमभावफलम्-

कारकांशाल्लये चन्द्रे कुजराहुनिरीक्षिते ।
क्षयरोगो भवेत्तस्य श्वासकासादिरोगयुक् ॥ ६१ ॥

कारकांश से आठवें भाव में चन्द्रमा हो और भौम-राहु से देखा जाता हो तो जातक को क्षयरोग और श्वास-कास रोग होता है॥ ६१॥

कारकांशान्नवमभावफलम्-

कारकांशाच्च नवमे शुभखेटयुतेक्षिते ।
सत्यवादी गुरोर्भक्तः स्वधर्मनिरतो भवेत् ॥ ६२ ॥
कारकांशाच्च नवमे पापग्रहयुतेक्षिते ।
स्वधर्मनिरतो बालो मिथ्यावादी भवेद् द्विज ॥ ६३ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांश से नवम स्थान शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो जातक सत्यवादी, गुरुभक्त अपने धर्म में आसक्त होता है॥६२॥ कारकांश से नवम स्थान पाप ग्रह से युत दृष्ट हो तो अपने धर्म से रहित और असत्यवादी होता है॥६३॥

कारकांशाच्च नवमे शनिराहुयुतेक्षिते।
गुरुद्रोही भवेद्विप्र शास्त्रेषु विमुखो नरः॥६४॥
कारकांशाच्च नवमे गुरुभानुयुतेक्षिते।
तदापि गुरुद्रोही स्याद् गुरुवाक्यं न मन्यते॥६५॥

कारकांश से नवमभाव शनि-राहु से दृष्टयुत हो तो गुरु से द्रोह करने वाला और मूर्ख होता है॥६४॥ कारकांश से नवमभाव गुरु-सूर्य से युत दृष्ट हो तो भी गुरुद्रोही और गुरुके वचन को न मानने वाला होता है॥६५॥

कारकांशाच्च नवमे भृगुभौमयुतेक्षिते।
षड्वर्गाधिकयोगे च मरणं पारदारिकः॥६६॥
कारकांशाच्च नवमे बुधयुक्तेक्षिते द्विज।
परस्त्रीसंगमाद्बालो बंधको जायते ध्रुवम्॥६७॥
कारकांशाच्च नवमे गुरुयुक्तेक्षिते यदा।
स्त्रीलोलुपो भवेद्बालो विषयी नैव जायते॥६८॥

कारकांश से नवम भाव शुक्र-भौम से युत व दृष्ट हो तो और इन्हीं का षड्वर्ग अधिक हो तो परस्त्री के द्वारा मरण होता है॥६६॥ कारकांश से नवम भाव बुध से युत दृष्ट हो तो परस्त्री संगम से दुष्ट प्रकृति का होता है॥६७॥ कारकांश से नवम भाव गुरु से युत दृष्ट हो तो स्त्री-लोलुप होता है किन्तु विषयी नहीं होता है॥६८॥

कारकांशाद्दशमभावफलम्-

दशमे कारकांशाच्च बुधेन समवीक्षिते।
व्यापारे बहुलाभश्च महत्कर्मविचक्षणः॥६९॥

कारकांश से दशमभाव बुध से देखा जाता हो तो व्यापार में बहुत लाभ और बड़े-बड़े काम होते हैं॥६९॥

कारकांशाच्च दशमे रविणा संयुतो यदि।
गुरुदृष्टे तदा विप्र! जायते योगकारकः॥७०॥
कारकांशाच्च दशमे शुभखेटनिरीक्षिते।
स्थिरचित्तो भवेद्बालो गंभीरो बहुवीर्यवान्॥७१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांश से दशम में रवि हो और गुरु से देखा जाता हो तो राजयोग होता है॥ ७०॥ कारकांश से दशम भाव को शुभग्रह देखता हो तो बालक स्थिरचित्त, गंभीर और बलवान् होता है॥ ७१॥

कारकांशाद्व्ययभावफलम्-

कारकांशाद्व्ययस्थाने उच्चस्थे च शुभग्रहे।
सद्गतिर्जायते तस्य शुभलोकमवाप्नुयात् ॥७२॥
कारकांशाद्व्यये केतौ शुभखेटैर्युतेक्षिते।
तदापि जायते मुक्तिः सायुज्यपदमाप्नुयात् ॥७३॥

कारकांश से बारहवें भाव में अपनी उच्चराशि में कोई शुभग्रह हो तो उस जातक को सद्गति और शुभ लोक की प्राप्ति होती है॥ ७२॥ कारकांश से बारहवें भाव में केतु शुभग्रह से युत वा दृष्ट हो तो भी मुक्ति होती है और स्वर्ग की प्राप्ति होती है॥ ७३॥

मेषेऽथ वापि कोदण्डे कारकांशाद् व्यये शिखी।
शुभग्रहेण संदृष्टे कैवल्यपदमाप्नुयात् ॥७४॥
केवलेऽपि व्यये केतुः पापग्रहयुतेक्षिते।
न मुक्तिर्जायते तस्य शुभलोकं न पश्यति ॥७५॥

कारकांश से बारहवें भाव में मेष वा धनु राशि में केतु हो, शुभग्रह से दृष्ट हो तो मोक्षपद की प्राप्ति होती है॥ ७४॥ केवल बारहवें भाव में केतु हो और पापग्रह से युत दृष्ट हो तो उसकी मुक्ति नहीं होती है और मोक्ष भी नहीं होता है॥ ७५॥

रविणा संयुते केतौ कारकांशाद् व्ययस्थिते।
गौर्यां भक्तिर्भवेत्तस्य शाक्तिको जायते नरः ॥७६॥
रविभक्तिर्भवेत्तस्य निर्विशंकं द्विजोत्तम।
चंद्रेणं संयुते केतौ कारकांशाद् व्ययस्थिते ॥७७॥
शुक्रेण संयुते केतौ कारकांशाद् व्ययस्थिते।
समुद्रतनयाभक्तिर्जायतेऽसौ समृद्धिमान् ॥७८॥

कारकांश से बारहवें भाव में केतु, सूर्य से युत हो तो पार्वती की भक्ति करने वाला शाक्त होता है॥ ७६॥ कारकांश से बारहवें केतु चन्द्रमा से युत हो तो सूर्य का उपासक होता है॥ ७७॥ कारकांश से बारहवें केतु शुक्र से युत हो तो लक्ष्मी का उपासक और धनी होता है॥ ७८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कुजेन स्कंदभक्तो वा जायते द्विजसत्तम ।
वैष्णवो बुधसौरिभ्यां गुरुणा शिवभक्तिमान् ॥७९॥

भौम से युत हो तो स्कंद (स्वामिकार्त्तिक) की भक्ति, बुध-शनि से युत हो तो विष्णु का उपासक, गुरु से युत हो तो शिव का उपासक होता है।७९।

राहुणा तामसीं दुर्गां भूतप्रेतादिसेवकृत् ।
हेरम्बभक्तः शिखिना स्कंदभक्तोऽथ वा भवेत् ॥८०॥
कारकांशाद् व्यये सौरिः पापराशौ यदा भवेत् ।
तदैव क्षुद्रदेवस्य भक्तिस्तस्य न संशयः ॥८१॥

राहु हो तो तामसी दुर्गा का और भूतप्रेतादि का सेवक होता है। केतु हों तो गणेश वा स्कंद का उपासक॥८०॥ कारकांश से बारहवें शनि पापग्रह की राशि में हो तो क्षुद्रदेवता का उपासक॥८१॥

पापर्क्षेऽपि व्यये शुक्रस्तदापि क्षुद्रसेवकः ।
कारकान्यूनभागो हि अमात्यो जायते ग्रहः ॥८२॥
अमात्यात् द्वादशे राशौ पापर्क्षे पापसंयुते ।
तदापि क्षुद्रदेवस्य भक्तिर्भवति निश्चितम् ॥८३॥

बारहवें भाव में पापग्रह की राशि में शुक्र हो तो भी क्षुद्र देवता का सेवक होता है। आत्मकारक से न्यून अंशवाला अमात्यकारक होता है॥८२।अमात्य से बारहवें भाव में पापग्रह की राशि पापयुत हो तो भी क्षुद्र देवता का उपासक होता है॥८३॥

विशेषफलमाह-

अंशात्त्रिकोणे पापे द्वे तांत्रिको जायते नरः ।
पापदृष्टे क्षुद्रदेवः शुभेन शुभसेवकः ॥८४॥
पापैर्निरीक्षिते तत्र तंत्रविग्राहको भवेत् ।
शुभैर्निरीक्षिते वापि तंत्रानुग्रहकारकः ॥८५॥

आत्मकारक से ९वें, ५वें भाव में दो पापग्रह हों तो जातक तांत्रिक होता है। पापग्रह देखता हो तो क्षुद्र देवता का और शुभग्रह देखता हो तो शुभ देवता का उपासक होता है॥८४॥ यदि पापग्रह देखते हों तो निग्राहक और शुभग्रह देखते हों तो अनुग्राहक होता है॥८५॥

कारकांशेन्दु शुक्रौ च शुभग्रहनिरीक्षितौ ।
रसवादी भवेद्बालो धातूनां भस्मकारकः ॥८६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्रेंदू बुधसंदृष्टो सद्वैद्यो हि नरो भवेत् ।
पीयूषपाणिः कुशलः सर्वरोगहरो द्विज ॥८७॥

कारकांश में चन्द्रमा और शुक्र हों तथा शुभग्रह से देखे जाते हों तो रस बनाने वाला वैद्य होता है॥ ८६॥ शुक्र-चन्द्रमा को बुध देखता हो तो सद्वैद्य-कुशल और सभी रोगों को हरने वाला होता है॥ ८७॥

अंशाच्चतुर्थगे चन्द्रे दैत्याचार्यनिरीक्षिते ।
श्वेतकुष्ठी भवेन्नूनं निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥८८॥
अंशाच्चतुर्थगे चन्द्रे धरापुत्रेण वीक्षिते ।
राजरोगो भवेत्तस्य रक्तपित्तार्त्तिको भवेत् ॥८९॥

कारक से चौथे स्थान में चन्द्रमा हो और शुक्र से देखा जाता हो तो श्वेत कुष्ठी होता है॥ ८८॥ कारक से चौथे स्थान में चन्द्रमा को भौम देखता हो तो राजरोग (यक्ष्मा) और रक्तपित्त से कष्ट होता है॥ ८९॥

अंशाच्चतुर्थगे चन्द्रे शिखिना वीक्षिते सति ।
नीलकुष्ठं भवेत्तस्य निर्विशङ्कं द्विजोत्तम ॥९०॥
चतुर्थे पंचमे वापि युतौ राहुकुजौ यदि ।
क्षयरोगो भवेत्तस्य चन्द्रदृष्ट्या विशेषतः ॥९१॥

केतु कारकांश से चौथे चन्द्रमा को देखता हो तो नीलकुष्ठ होता है॥ ९०॥ कारकांश से चौथे या पांचवे राहु-भौम हो तो क्षयरोग होता है। चन्द्रमा देखता हो तो विशेषकर कुष्ठरोग होता है॥ ९१॥

स्वांशात्तुर्ये सुते वापि केवलः संस्थितः कुजः ।
पिटकादि भवेत्तस्य निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥९२॥
तत्र स्थिते च शिखिना ग्रहणीरोगपीडितः ।
स्वर्भानुर्गुलिके तत्र विषवैद्यो विषार्त्तिकः ॥९३॥

कारकांश से चौथे या पाँचवें केवल भौम हो तो पिटक आदि क्षुद्र रोग होते हैं॥ ९२॥ यदि उन्हीं भावों में केतु हो तो संग्रहणी रोग होता है, यदि उक्त भावों में राहु और गुलिक हो तो विषवैद्य या विष से कष्ट पाने वाला होता है॥ ९३॥

कारकांशाद्धने तुर्ये केवले संस्थिते शनौ ।
धनुर्विद्याधिको बालो जायते नात्रसंशयः ॥९४॥
कारकांशात्सुखे वित्ते केवले संस्थिते शिखी ।
घटिकायंत्रवादी स्यादिष्टशोधनतत्परः ॥९५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांश से दूसरे या चौथे भाव में शनि हो तो धनुपविद्या को जानने वाला होता है॥ ९४॥ कारकांश से चौथे वा दूसरे भाव में यदि केतु हो तो घटिकायंत्र को जानने वाला होता है॥ ९५॥

उक्तस्थाने स्थिते सौम्ये जातस्तु परमहंसकः।
तथा संन्यस्तकं ज्ञेयं निर्विशंकं द्विजोत्तम॥९६॥
उक्तस्थानस्थिते राहौ लोहयंत्रादिकारकः।
रविणा खड्गधारी च कुजेन कुंतधारकः॥९७॥

पूर्वोक्त स्थान में बुध हो तो परमहंस या संन्यासी दंडधारी॥ ९६॥ राहु हो तो लोह के यंत्रों को बनाने वाला, रवि हो तो खड्ग धारण करने वाला और भौम हो तो कुंत (भाला) धारण करने वाला होता है॥ ९७॥

चंद्रेज्यौ कारकांशे च तथा तत्पंचमे स्थितौ।
ग्रंथकर्त्ता भवेन्नूनं सर्वविद्याविशारदः॥९८॥
उक्तस्थानगते शुक्रे स्वल्पग्रंथकरो द्विज।
उक्तस्थानगते सौम्ये किंचिद्ग्रंथकरो ह्यसौ॥९९॥

चन्द्रमा और गुरु कारकांश में हो अथवा उससे पाँचवें भाव में हो तो बालक सभी विद्याओं को जानने वाला और ग्रन्थकार होता है॥ ९८॥ यदि उक्त स्थान में शुक्र हो तो अल्प ग्रन्थकार होता है। यदि बुध हो तो कुछ ग्रन्थकार होता है॥ ९९॥

शुक्रेण काव्यकर्त्ता च प्राकृतग्रंथतत्परः।
गुरुणा सर्वग्रंथानां कारको द्विजसत्तम॥१००॥
उक्तस्थानगतः सौरिः सभाजाड्यो भवेन्नरः।
मीमांसको भवेन्नूनमुक्तस्थानगते बुधः॥१०१॥

शुक्र हो तो काव्य करने वाला, गुरु हो तो सभी ग्रन्थों को करने वाला होता है॥ १००॥ यदि शनि हो तो सभा-मूक होता है। उक्त स्थान में बुध हो तो मीमांसक होता है॥ १०१॥

कारकांशे धरासूनुर्लग्ने वा नवपंचमे।
नैयायिको भवेन्नूनं सुष्ठुकाव्यकरो नरः॥१०२॥
कारकांशे निशानाथे त्रिकोणे चाथ लग्नगे।
सांख्यशास्त्रज्ञनिपुणो जायते मतिमान्नरः॥१०३॥

कारकांश लग्न में वा नवम पंचम में हो तो नैयायिक और कविता करने

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वाला होता है॥ १०२॥ कारकांश में वा त्रिकोण वा लग्न में यदि चन्द्रमा हो तो सांख्य- शास्त्र को जानने वाला होता है॥ १०३॥

कारकांशे स्थिते केतौ पंचमे वापि संस्थिते।
गणितज्ञो भवेन्नूनं ज्योतिशास्त्रविशारदः॥ १०४॥
सुराचार्येण सम्बन्धात्साम्प्रदायिकसिद्धिकृत्।
ये योगा पंचमे भावे यथावद्भाषितं मया॥ १०५॥

कारकांश में या पाँचवे भाव में केतु हो तो गणित को जानने वाला ज्योतिष शास्त्र में प्रवीण होता है॥ १०४॥ सभी योगों में गुरु का सम्बन्ध होने से साम्प्रदायिक कार्यों की सिद्धि होती है। जो योग पाँचवें भाव में कहा है, उसमें गुरु का योग होने से फल होता है॥ १०५॥

वित्तस्थानेऽपि ते ज्ञेया पूर्ववत्फलसिद्धिदम्।
कोऽपि तृतीयभावे तु कथयंति पुरा द्विज॥ १०६॥
कारकांशे धने केतौ तथा भाग्यालये गते।
पापग्रहेण संदृष्टे वाचालश्च भवेन्नरः॥ १०७॥

जो योग मैंने पाँचवें भाव में कहे हैं उन्हें दूसरे भाव में भी जानना चाहिए। कोई प्राचीन आचार्य तीसरे भाव में भी देखने को कहे हैं॥ १०६॥ कारकांश में वा उससे दूसरे या ९वें भाव या ५वें भाव में केतु हो और पापग्रह से देखा जाता हो तो मनुष्य वाचाल होता है॥ १०७॥

अंशाल्लग्नात्तथारूढ़ाद्धने रंध्रे स्थिते द्विज।
पापसाम्ये च विज्ञेयो योगः केमद्रुमो भवेत्॥ १०८॥
चंद्रदृष्टिविशेषेण योगः केमद्रुमो मतः।
द्वितीयाष्टमभावाभ्यां योगोऽयं कथ्यते द्विज॥ १०९॥

कारकांश लग्न तथा आरूढ़ लग्न से दूसरे, आठवें भाव में यदि समान पापग्रह हो तो केमद्रुम योग होता है॥ १०८॥ चन्द्रमा देखता हो तो विशेष रूप से केमद्रुम होता है। दूसरे और आठवें भाव से विशेषकर यह होता है॥ १०९॥

कारकांशेषु ये योगाः पूर्वोक्ता गदितो मया।
तत्तद्राशिदशापाके सर्वेषां फलमादिशेत्॥ ११०॥
एवं दशाप्रदाद्राशेर्द्वितीयाष्टमयोर्द्विज!।
ग्रहसाम्ये च विज्ञेयः केमद्रुः शशिनेक्षिते॥ १११॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारकांश से जिन योगों को मैंने कहा है, उनका फल उन राशियों के दशा-अन्तर दशा में होता है॥११०॥ इसी प्रकार दशाप्रद राशि से दूसरे, आठवें भाव में ग्रह साम्य हो और चन्द्रमा देखता हो तो केमद्रुम योग होता है।१११।

दशाप्रारंभसमये शोधयेज्जन्मलग्नवत् ।
सूर्यादिखेचरान् स्पष्टान् साधयेज्जन्मवद् द्विज ॥११२॥
तत्र वित्ताष्टमे भावे ग्रहसाम्यो यदा भवेत् ।
तदा केमद्रुमो ज्ञेयश्चन्द्रदृष्ट्या विशेषतः ॥११३॥

दशा प्रवेश समय में सूर्यादि ग्रहों और लग्न को साधना चाहिये॥११२॥ उस समय उक्त भावों में ग्रहसाम्य और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो केमद्रुम योग होता है॥११३॥

एवं तन्वादिभावानां दशारंभेषु योजयेत् ।
तत्तद्ग्रहानुसारेण फलं वाच्यं बुधैः सदा ॥११४॥

इसी प्रकार तनु आदि भावों की दशा के आरम्भ में भी योजना करनी चाहिये, क्योंकि उस समय के ग्रह के अनुसार ही फल होता है॥११४॥

इति बृहत्पाराशरहोरायां पूर्वखंडे सुबोधिन्यां कारकांशफलकथनं नामाऽष्टमोऽध्यायः।

अथाऽऽरूढफलाध्यायः

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि राश्यारूढपदं द्विज ।
राशीनां द्वादशानां तु यावदीशाश्रयो भवेत् ॥१॥
संख्या त्वीशोदयादग्रे समाना तत्पदं वदेत् ।
राशिवद्ग्रह आरूढं ज्ञायते गणकैर्जनैः ॥२॥

अबमैं राशि का आरूढ़-पद कहता हूँ-बारहों राशियों का उसके स्वामी जहाँ बैठे हों-उस राशि के राशि की संख्या जितनी हो॥१॥ उतनी संख्या और आगे गिनने से जो राशि हो वही आरूढ़ लग्न या पद होता है। इसी प्रकार अर्थात् राशि के ही समान ग्रहों का भी आरूढ़ लग्न होता है॥२॥

यावद्दूरं यस्य राशिस्तावत्संख्या क्रमेण वै ।
अग्रे लग्नारूढपदं ज्ञायते द्विजसत्तम ॥३॥
जनुर्ल्लग्नाल्लग्नस्वामी यावद्दूरं हि तिष्ठति ।
तावद्दूरं तदग्रे च लग्नारूढं च कथ्यते ॥४॥

जिस ग्रह की राशि उस ग्रह से जितनी दूर हो उतनी ही संख्या आगे उस ग्रह की लग्नारूढ़ राशि होती है॥३॥ जन्म लग्न से लग्नेश

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जितनी दूर राशि पर हो उतनी ही राशि आगे जो राशि हो उसे लग्नारूढ़ राशि कहते हैं॥ ४॥

यदि लग्नेश्वरः स्वर्क्षे कलत्रे संस्थितोऽथवा।
आरूढलग्नमित्याहुर्जन्मलग्नं द्विजोत्तम॥ ५॥
एवं तन्वादिभावानां भावारूढपदं भवेत्।
यत्र यत्र ग्रहा लग्ने तत्र तत्र सुसंलिखेत्॥ ६॥

यदि लग्नेश अपनी राशि के सप्तम में हो तो जन्मलग्न ही आरूढ़ लग्न होती है॥ ५॥ इसी प्रकार तन्वादि भावों का प्रत्येक का आरूढ़ बनाना चाहिए॥ ६॥ इस प्रकार लग्नारूढ़ को लग्न मानकर चक्र बनावे उसमें जो ग्रह जिस स्थान में हों, वहाँ लिखकर फल कहे।

विशेष- यहाँ पद और आरूढ़ शब्द दोनों एकार्थक हैं। जैमिनि के मत से यदि लग्नेश लग्न से चौथे भाव में हो तो चतुर्थ भाव-गत राशि और सातवें भाव में हो तो दशम भाव-गत राशि लग्न का पद होता है। जैसे मिथुन लग्न का स्वामी बुध, वृश्चिक राशि में है, मेषादि गणना से मिथुन से वृश्चिक की संख्या ५ है, अतः वृश्चिक से पाँचवीं मेष राशि ही मिथुन लग्नका पद हुआ। प्रायः लग्नके पद से ही विचार करना चाहिए।

पदादेकादशस्थानफलम्-

पदादेकादशे स्थाने शुभग्रहयुतेक्षिते।
लक्ष्मीवाञ्जायते बालः प्रजावाञ्छीलसंयुतः॥ ७॥
वित्तोपार्जनन्यायेन नीतिवाञ्जायते सदा।
नरो न नास्तिको नूनं न तु शास्त्रविरुद्धकृत्॥ ८॥

पद से ११वें भाव में शुभग्रह हों या देखते हों तो बालक धनी, पुत्रवान् और शीलवान् होता है॥ ७॥ सन्मार्ग से द्रव्य पैदा करने वाला, नीतियुक्त होता है और धार्मिक तथा शास्त्रज्ञ होता है॥ ८॥

पदादेकादशे विप्र! पापखेटयुतेक्षिते।
अन्यायोपार्जितं वित्तं विरुद्धं शास्त्रमार्गतः॥ ९॥
मिश्रैर्मिश्रफलं ज्ञेयमुच्चमित्रादिक्षेत्रगः।
बहुधा जायते लाभो यत्र तत्र द्विजोत्तम॥ १०॥

यदि पद से ११वें भाव में पापग्रह हों वा पापग्रह देखते हों तो अन्याय से द्रव्य को पैदा करने वाला और शास्त्र से अनभिज्ञ होता है॥ ९॥ यदि शुभ-ग्रह और पापग्रह दोनों से दृष्टयुत हो तो दोनों का फल होता है। यदि उच्चमित्र आदि गृह में हो तो प्रायः लाभ ही होता है॥ १०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आरूढाल्लाभभवनं ग्रहः पश्येत्तु न व्ययम् ।
यस्य जन्मनि सोऽपि स्यात्प्रबलो धनवानपि ॥ ११ ॥
दृष्टग्रहाणां बाहुल्ये तथा द्रष्टरि तुंगगे ।
सार्गले चापि तत्रापि बह्वर्गलसमागमे ॥ १२ ॥

यदि शुभाशुभ ग्रह उच्चराशि में बैठे हों और ११वें भाव को देखते हों तो अनेक प्रकार से लाभ होता है, परन्तु १२वें भाव को न देखते हों तो ॥ ११ ॥ यदि बहुत से ग्रह अपनी उच्चराशि में होकर ११वें भाव को देखते हों और अर्गला योग करते हों ॥ १२ ॥

शुभग्रहार्गले तत्र तत्राप्युच्चग्रहार्गले ।
सुखानि स्वामिनां दृष्टे लग्नभाग्यादिगेन वा ॥ १३ ॥
जातस्य पुंसः प्राबल्यं निर्दिशेदुत्तरोत्तरम् ।
उक्तयोगेषु खेटाश्चेद्द्वादशं नैव पश्यति ॥ १४ ॥

उच्चराशिस्थ शुभग्रह का अर्गला योग हो तो बालक अत्यंत सुख को पाता है ॥ १३ ॥ लग्न, भाग्य में बैठे हुये ग्रह से देखा जाता हो जो द्वादशभाव को न देखता हो तो जातक उत्तरोत्तर उन्नति करता है ॥ १४ ॥

पदाद्द्वादशभावादीनां फलम्-

आरूढाद्द्वादशे विप्र ! शुभपापयुतेक्षिते ।
व्ययाधिक्यं भवेदेवं विशेषोपार्जनात्तथा ॥ १५ ॥
शुभग्रहे सुमार्गेषु कुमार्गात्पापखेचरैः ।
मिश्रैर्मिश्रफलं वाच्यं यथालाभेषु पूर्ववत् ॥ १६ ॥

पद से १२वें भाव में शुभग्रह-पापग्रह युत हों अथवा देखते हों तो विशेष लाभ के कारण द्रव्य का अधिक खर्च होता है ॥ १५ ॥ शुभग्रह का सम्बन्ध होने से सुमार्ग में और पापग्रह का संबंध होने से कुमार्ग में व्यय होता है। दोनों (शुभ-पाप) के रहने से दोनों में व्यय होता है ॥ १६ ॥

आरूढाद्द्वादशे शुक्रे भानुश्चर्भानुवीक्षिते ।
राजमूलाद्व्ययं वाच्यं चन्द्रदृष्ट्या विशेषतः ॥ १७ ॥

आरूढ़ से १२वें शुक्र हो, सूर्य राहु से देखा जाता हो तो राजा के द्वारा व्यय होता है। चन्द्रमा देखता हो तो विशेष व्यय होता ही है ॥ १७ ॥

आरूढाद्द्वादशे सौम्ये शुभखेटयुतेक्षिते ।
ज्ञातिमध्ये व्ययो नित्यं पापदृक्कलहाद्व्ययः ॥ १८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आरूढ़ से १२वें भाव में बुध हो और शुभग्रह से दृष्ट वा युत हो तो जाति (भाई-बंधु) में व्यय होता है और पापग्रह देखता हो तो कलह होने से व्यय होता है॥ १८॥

पदाद्व्यये सुराचार्ये वीक्षिते चान्यखेचरैः।
करमूलाद्व्ययं वाच्यं करव्याजेन वै द्विज॥ १९॥
आरूढाद् द्वादशे सौरिः धरापुत्रेण संयुते।
अन्यग्रहेक्षिते विप्र भ्रातृमूलाद्धनव्ययम्॥ २०॥

पद से १२वें भाव में गुरु हो और अन्य ग्रहों से देखे जाते हों तो कर (लगान) आदि से व्यय होता है॥ १९॥ आरूढ़ से व्यय भाव में शनि हों और भौम से देखें जाते हों और शेष ग्रहों से देखे जाते हों तो भाई, कुटुम्ब के कारण धन का व्यय होता है॥ २०॥

पदाद्द्वादशे भावे ये योगाः गदिता मया।
लाभस्थानेषु ते योगा लाभयोगकराः सदा॥ २१॥

पद से बारहवें भाव में जिन योगों को मैंने कहा है, वे ही योग लाभ भाव में हो तो लाभ करने वाले होते हैं॥ २१॥

पदात्सप्तमभावफलम्-

पदाच्च सप्तमे राहुरथवा संस्थितः शिखी।
उदरव्यथायुतो बालः शिखिना पीडितोऽधिकम्॥ २२॥
पदाच्च सप्तमे केतुः पापखेटयुतेक्षिते।
साहसी श्वेतकेशी च दीर्घलिंगी भवेन्नरः॥ २३॥

पद से सातवें भाव में राहु अथवा केतु हो तो बालक पेट की बीमारी से व्यथित रहता है। केतु से अधिक पीड़ायुक्त होता है॥ २२॥ पद से सातवें केतु हो और पापग्रह से युत वा दृष्ट हो तो बालक साहसी, सफेद बालों वाला और दीर्घलिंगी होता है॥ २३॥

पदाच्च सप्तमे स्थाने गुरुशुक्रनिशाकराः।
एको द्वयं त्रयं वा स्याल्लक्ष्मीवान् कारयेद्बुधः॥ २४॥
तुंगर्क्षे सप्तमे खेटे शुभो वाप्यशुभः पदात्।
श्रीमान् सोऽपि भवेन्नूनं सत्कीर्तिसहितो द्विज॥ २५॥
ये योगाः सप्तमे भावा आरूढात् कथिता मया।
ते योगाः द्यूनवच्चिन्त्या वित्तभावेऽपि वै द्विज॥ २६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पद से सातवें भाव में गुरु, शुक्र, चन्द्रमा तीनों हों वा इनमें से एक या दो हों तो बालक धनी होता है॥ २४॥ पद से सातवें भाव में अपने उच्चराशि में शुभग्रह या पापग्रह में से कोई हो तो बालक कीर्त्तिमान् और लक्ष्मीवान् होता है॥ २५॥ पद से सातवें भाव में जिन योगों को मैंने कहा है, उनको उसी प्रकार दूसरे भाव में भी विचार करना चाहिये॥ २६॥

तुङ्गस्थो रौहिणेयो वा जीवो वा शुक्र एव वा।
एको बली धनगतः श्रियं दिशति देहिनः॥ २७॥
ये योगाश्च पदे लग्ने यथावद् गदिता मया।
कारकांशस्थकुंडल्यां निर्बाधका विचिन्तयेत्॥ २८॥

यदि बुध, गुरु, शुक्र इनमें से कोई भी अपनी उच्चराशि में बली होकर धनभाव में हो तो धन को देता है॥ २७॥ जो योग लग्न पद में कहे गये हैं, उनको कारकांश कुंडली में भी देखना चाहिए॥ २८॥

आरुढादष्टमे पापे सौरेः स्याच्छुभवर्जितः।
तथा वित्तालये पापे पूर्ववज्ज्ञायते फलम्॥ २९॥

पद से अष्टम स्थान में पापग्रह या शुभग्रह रहित शनि हो और द्वितीय भाव में पापग्रह हो तो पूर्ववत् फल होता है॥ २९॥

आरूढाद्वित्तभे सौम्ये सर्वदेशाधिपो भवेत्।
सर्वज्ञो वा भवेद्बालः कविर्वाग्मी च भार्गवि॥ ३०॥
आरूढात्केन्द्रकोणेषु तथा लाभपदे द्विज।
लग्नदारपदे वापि सबलग्रहसंयुते॥ ३१॥

पद से दूसरे भाव में शुभग्रह हो तो सभी देशों का स्वामी होता है अथवा सर्वज्ञ होता है। केवल शुक्र हो तो कवि और वक्ता होता है॥ ३०॥ पद से केन्द्र तथा कोण में वा लाभ पद में लग्न दारपद में बलवान् ग्रह हों तो श्रीमान् और प्रसिद्ध होता है॥ ३१॥

श्रीमांश्च जायते नूनं देशं विख्यातिमान् भवेत्।
षष्ठाष्टमे व्ययस्थाने श्रीमान्स न भवेत्तदा॥ ३२॥

यदि छठें, आठवें, बारहवें स्थान में हों तो श्रीमान् नहीं होता है॥ ३२॥

टिप्पणि– ग्रन्थान्तरे– षष्ठाष्टमे व्यये खेटस्तत्तद्भावेषु तिष्ठति। यद्यद्भावेषु यद् वैरं लग्नारूढे विचिन्तयेत्॥ आरूढः पुत्रमित्रैस्तु त्रिलाभकेन्द्रगो यदि। द्वयोर्मैत्री त्रिकोणेषु साम्यं द्वेषोऽन्यथा भवेत्॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पदाल्लग्ने सप्तमे वा केन्द्रत्रिकोणोपचये ।
सुवीर्यसंस्थिते खेटे भार्याभर्तृसुखप्रदः ॥ ३३ ॥
एवं लग्नपदाद्विप्र पुत्रभावादि चिन्तयेत् ।
मित्रामित्रे विजानीयात्त्रिकभावेषु वै द्विज ॥ ३४ ॥

पद से लग्न में वा सातवें वा केन्द्र, त्रिकोण, उपचय स्थान में बली ग्रह हों तो स्त्री, भाई आदि का सुख होता है॥ ३३॥ इसी प्रकार लग्न पद से पुत्रभाव आदि का भी विचार करना चाहिये। यदि दोनों में मित्रता हो तो मित्रता, अन्यथा शत्रुता होती है॥ ३४॥

लग्नारूढं दारपदं मिथः केन्द्रगते यदि ।
लाभे वा त्रित्रिकोणे वा तदा राजा धराधिपः ॥ ३५ ॥
एवं दारादिभावानामर्जयित्वारि मित्रता ।
जातकद्वयमालोक्य चिन्तनीयं विचक्षणैः ॥ ३६ ॥

लग्नपद और दारपद परस्पर केन्द्रगत, लाभ, तृतीय वा त्रिकोण में हो तो पृथ्वी का राजा होता है॥ ३५॥ इसी प्रकार दारा आदि भावों के शत्रु-मित्रादि का विचार कर उनके फलों को भी कहना चाहिए॥ ३६॥

इतिपाराशरहोरायां पूर्वखंडे सुबोधिन्यां आरूढफलाध्यायः नवमः।

❖

उपपदप्रकरणम्

पराशर उवाच-

अधुना सम्प्रवक्ष्याम्युपपदं च द्विजोत्तम ।
यस्य विज्ञानमात्रेण जायते फलसूचकः ॥ १ ॥
लग्ने विषमे विप्र धनस्य पदोपपदम् ।
समे लग्ने व्ययस्य च पदमुपपदं भवेत् ॥ २ ॥

अब मैं उपपद को कह रहा हूँ, जिसके ज्ञान से फल का निर्णय होता है॥ १॥ लग्न यदि विषम हो तो धनभाव का पद उपपद होता है, यदि समलग्न हो तो बारहवें का पद उपपद होता है॥ २॥

तदेवोपारूढगौणपदं च कथ्यते द्विज ।
तस्मादेव फलं सवं शुभाशुभं विचारयेत् ॥ ३ ॥
पापाक्रान्ते पापयुते पापर्क्षे पापवीक्षिते ।
पापसंबंधसंयोगे उपपदाद् द्वितीयके ॥ ४ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उपपद को ही उपारूढ़ और गौणपद कहते हैं। इसी से शुभ-अशुभ फलों का विचार करना चाहिये॥ ३॥ उपपद से दूसरे भाव में पापग्रह हो, पापग्रह की राशि हो, पापग्रह से देखा जाता हो तो॥ ४॥

प्रव्रज्या योगो विज्ञेयः संन्यासो भवति ध्रुवम्।
तथा भार्याविरोधी स्यादथवा स्त्रीविनाशकृत्॥ ५॥
रवेः पापत्वमात्रैव सिंहर्क्षे स्वोच्चभे सति।
पूर्वोक्तं नो फलं ज्ञेयं जायते गृहिणीसुखम्॥ ६॥

प्रव्रज्या (संन्यास) योग होता है। इसमें उत्पन्न बालक अवश्य संन्यासी होता है तथा स्त्री का विरोधी वा स्त्री का नाश करने वाला होता है॥ ५॥ यदि सूर्य सिंह राशि में वा अपनी उच्चराशि में हो तो सूर्य पापग्रह नहीं होता है, ऐसी स्थिति का सूर्य उक्त भाव में हो तो प्रव्रज्या योग नहीं होता, अपितु स्त्री का सुख होता है॥ ६॥

मेषादिपापराशौ चेत्संस्थिते दिवसाधिपे।
पूर्वोक्तं च फलं ज्ञेयं प्रव्रज्यादारनाशकः॥ ७॥
उपपदाच्च द्वितीयं वै शुभसम्बंधदृष्टियुक्।
शुभर्क्षे शुभसंयोगे पूर्वोक्तफलदो भवेत्॥ ८॥

यदि मेषादि पापराशियों में सूर्य हों तो पूर्वोक्त फल होता है और स्त्री का नाश होता है। ७॥ उपपद से दूसरे भाव में शुभग्रह का संबंध हो, शुभग्रह देखते हों अथवा शुभग्रह की राशि हो तो पूर्वोक्त फल होता है॥ ८॥

उपपदे द्वितीये वा नीचांशे नीचखेटयुक्।
नीचसंबंधयोगे वा प्रवज्या दारनाशकृत्॥ ९॥
उच्चांशे उच्चराशौ वा उच्चसंबंधदृष्टियुक्।
बहुदारा भवेत्तस्य रूपलक्षणसंयुताः॥ १०॥
उपपदे द्वितीये वा युग्मर्क्षे संस्थिते यदा।
तत्र प्रजातः पुरुषः बहुदारसमन्वितः॥ ११॥

उपपद में अथवा उससे दूसरे भाव में नीचांश वा नीच राशि में ग्रह युक्त हो अथवा नीचस्थग्रह से संबंध हो तो प्रव्रज्या योग और स्त्री का नाश होता है॥ ९॥ यदि उच्चांश का उच्चराशि में उच्चस्थ ग्रह से संबंध और दृष्टि हो तो उसे रूपवती अनेक स्त्रियाँ होती है॥ १०॥ उपपद वा दूसरे भाव में मिथुन राशि हो तो जातक को अनेक स्त्रियाँ होती हैं॥ ११॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उपपदे द्वितीये वा स्वस्वामिखेटसंयुते ।
उत्तरायुषि निर्दारो भवत्येव न संशयः ॥ १२ ॥
स्वराशौ संस्थिते वापि नित्याख्ये दारकारके ।
उत्तरायुषि भो विप्र ! निर्दारः स नरो भवेत् ॥ १३ ॥

उपपद या दूसरा भाव अपने स्वामी शुभग्रह से युत हो तो आयुष्य के उत्तरार्ध में बिना स्त्री के पुरुष होता है॥ १२-१३॥

उपपदेऽपि तुंगर्क्षे नित्याख्ये दारकारके ।
उत्तमकुलाद्दारलाभो नीचस्थे तु विपर्ययः ॥ १४ ॥
शुभग्रहयुते दृष्टे उपपदे दारकारके ।
सुन्दरी लभ्यते भार्या भव्या रूपवती द्विज ॥ १५ ॥

उपपद में उच्च में नित्य स्त्री कारक हो तो उत्तमकुल से स्त्री का लाभ होता है। नीच राशि में हो तो विपर्यय होता है॥ १४॥ उपपद और स्त्रीकारक शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो बहुत सुन्दरी स्त्री प्राप्त होती है॥ १५॥

उपपदे द्वितीये वा शनिराहुयुते सति ।
अपवादात्स्त्रियस्त्यागो भार्यानाशोऽथवा भवेत् ॥ १६ ॥
उपपदे च द्वितीये वा शिखिशुक्रौ स्थितौ यदा ।
रक्तप्रदररोगार्त्ता जायते तस्य भामिनी ॥ १७ ॥

उपपद वा द्वितीय में शनि राहु युत हो तो अपवाद के कारण स्त्री का त्याग या स्त्री का नाश होता है॥ १६॥ उपपद वा द्वितीय में केतु-शुक्र युत हो तो स्त्री रक्तप्रदर के रोग से रोगिणी होती है॥ १७॥

उपपदादिषु संयोगो बुधकेत्वोर्द्विजोत्तम ।
अस्थिस्रावयुता बाला गृहे तस्य न संशयः ॥ १८ ॥
रविराहुस्तथा पंगुरुपपदे योगकारकः ।
अस्थिज्वरवती बाला तप्तांगा च दिवानिशम् ॥ १९ ॥

यदि बुध-केतु का संयोग हो तो अस्थिस्रावसे स्त्री रोगिणी होती है।१८। रवि, राहु, शनि उपपद में हो तो स्त्री अस्थिज्वर से पीड़ित होती है।१९।

उपपदे बुधकेतुभ्यां योगसंबंधके द्विज ।
स्थूलांगी गृहिणी तस्य जायते नात्र संशयः ॥ २० ॥
उपपदे बुधक्षेत्रे भौमर्क्षे चाथवा द्विज ।
मंदारौ संस्थितौ तत्र नासिकारोगयु भवेत् ॥ २१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उपपद में बुध-केतु का योग वा सम्बन्ध हो तो उसकी स्त्री स्थूल शरीर की होती है॥ २०॥ उपपद में बुध की राशि या भौम की राशि हो और शनि भौमयुत हों तो स्त्री की नाक में रोग होता है॥ २१॥

यदि तत्र युतो सौरिः गुरुणा सहितो भवेत्।
कर्णरोगवती बाला नेत्ररोगयुता तथा॥ २२॥
कुजसौम्यौ चान्यक्षेत्रे उपपदे द्विजोत्तम।
योगे स्वर्भानुदेवेज्यौ दंतार्ता गृहिणी भवेत्॥ २३॥

यदि गुरु-शनि का योग हो तो स्त्री कान तथा आँख के रोगवाली होती है॥ २२॥ यदि भौम-बुध वा गुरु-राहु उपपद में हो तो दाँत के रोग से स्त्री पीड़ित होती है॥ २३॥

उपपदे च कुम्भस्थे मीनस्थेऽपि तथा द्विज।
शनिस्वर्भानुयोगश्चेत्पंग्वंगी तस्य भामिनी॥ २४॥
ये योगाः पूर्वकथिता मया ते विप्रसत्तम।
शुभयुग् दृष्टिसंयोगे न भवेयुः फलप्रदाः॥ २५॥

उपपद में कुम्भ या मीन राशि हो और उसमें शनि-राहु का योग हो तो उसकी स्त्री पङ्गु (वातव्याधि से) होती है॥ २४॥ पूर्वोक्त जो योग कहे गये हैं वे यदि शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो फलप्रद नहीं होते हैं॥ २५॥

लग्नादुपदाद्वापि यो राशिः सप्तमो द्विज।
तदीशात्तन्नवांशाच्च फलमेव विचारयेत्॥ २६॥
शनिः शुक्रस्तथा चांद्रिःसप्तमांशग्रहेभ्यश्च।
नवमे संस्थितो विप्र अपत्यरहितो नरः॥ २७॥

लग्न से वा उपपद से सातवीं राशि के जो स्वामी और उसके नवांश से भी इसी प्रकार फल का विचार करना चाहिये॥ २६॥ उक्त प्रकार से सप्तमेश से नवम में शनि-शुक्र और बुध हो तो पुरुष पुत्रहीन होता है॥ २७॥

पदोपपदलग्नाच्च सप्तमांशग्रहेभ्यश्च।
नवमस्थे गुरौ भानौ स्वर्भानौ योगकृत्तथा॥ २८॥
बहुपुत्रो भवेन्नूनं प्रतापी बलवीर्ययुक्।
प्रचंडविजयी विप्र रिपुनिग्रहकारकः॥ २९॥

उपपद से वा सप्तमांश ग्रह से नवमभाव में गुरु, सूर्य, राहु का योग हो तो॥ २८॥ बड़े बलवान् पराक्रमी, प्रतापी शत्रुओं का दमन करनेवाले अनेक पुत्र होते हैं॥ २९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उक्तस्थाने निशानाथे एकपुत्रो भवेद् द्विज ।
उक्तस्थामे शुभे पापे पुत्रसौख्यं विलंबितम् ॥ ३० ॥
उक्तस्थाने कुजशनिर्जायते च ह्यपुत्रवान् ।
परपुत्रयुतो वापि सहोढसुतवान् भवेत् ॥ ३१ ॥

उक्त स्थान में चन्द्रमा हो तो एक पुत्र होता है, यदि उक्त स्थान में शुभ-पाप दोनों हों तो विलंब से पुत्र का सुख होता है॥ ३० ॥ उक्त स्थान में भौम-शनि हों तो पुत्रहीन होता है और दूसरे के पुत्र से (दत्तक पुत्र) पुत्रवान् होता है वा सहोदर के पुत्र से पुत्रवाला होता है॥ ३१ ॥

उक्तस्थाने चोजराशौ बहुपुत्रप्रदो भवेत् ।
युग्मराशौ स्थिते तत्र स्वल्पापत्यो भवेन्नरः ॥ ३२ ॥
उपपदे सिंहलग्ने निशानाथयुतेक्षिते ।
स्वल्पापत्यो भवेन्नूनं कन्यायां कन्यका भवेत् ॥ ३३ ॥

उक्त स्थान में विषम राशि हो तो बहुत पुत्र होते हैं। समराशि हो तो अल्प संतान होती हैं॥३२॥ उपपद में सिंह लग्न हो और चन्द्रमा से युत वा दृष्ट हो तो थोड़ी संतान होती हैं, कन्या राशि हो तो कन्या होती है॥३३॥

सुतभावनवांशाच्च तथापि पुत्रकारकात् ।
यद्वात्रिंशांशकुंडल्यां तदंशाच्च सदा द्विज ॥ ३४ ॥
तदीशाच्चिन्तयेद्विप्र संततेर्योगमुत्तमम् ।
एवं सर्वप्रकारेण चिन्तनीयं सदा बुधैः ॥ ३५ ॥

पंचमभाव के नवांश से, पुत्रकारक से अथवा त्रिंशांश कुंडली या उसके नवांश से॥ ३४ ॥ वा उसके स्वामी से संतान भाव के उत्तम योगों का विचार करना चाहिए॥ ३५ ॥

उपारूढाच्चत्र्यायस्थौ शनिराहू भ्रातृनाशदौ ।
एकादशे ज्येष्ठभ्रातुस्तृतीये च कनिष्ठकम् ॥ ३६ ॥
उपपदैकादशस्थाने तृतीये दानवेज्यके ।
व्यवहितगर्भस्य नाशःस्याद्यथा संभवति द्विज ॥ ३७ ॥

उपपद से ३, ११वें भाव में शनि-राहु हों तो भाइयों का नाश होता है। ११वें में ज्येष्ठ भाई का और तीसरे से छोटे भाई का विचार करना चाहिए॥ ३६ ॥ उपपद से ११वें, ३रे स्थान में शुक्र हो तो उससे व्यवहित गर्भ से माता का नाश हो जाता है॥ ३७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नाद्वा पिलये भावे दैत्याचार्ययुतेक्षिते।
व्यवहितगर्भस्य नाशः स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥३८॥
तृतीयैकादशे विप्र! कुजेज्यबुधचन्द्रमाः।
भ्रातृबाहुल्यता वाच्या प्रतापी बलवत्तरः ॥३९॥

लग्न से आठवें भाव में शुक्र युत हो वा देखता हो तो भी व्यवहित गर्भ का नाश होता है॥ ३८॥ उपपद से ३रे, ११वें भाव में भौम, गुरु, बुध, चन्द्रमा हों तो प्रतापी, बलवान् तथा अधिक भाई होते हैं॥ ३९॥

शन्यारसंयुते दृष्टे तृतीयैकादशे द्विज।
कनिष्ठज्येष्ठयोर्नाशं भिन्नस्थे भिन्नभावहृत ॥४०॥
भ्रातृस्थाने युते सौरे लाभस्थे वा तृतीयगे।
स्वमात्रमेवशेषः स्यादन्यं नश्यंति वै द्विज ॥४१॥

३, ११ को शनि-भौम देखते हों वा युत हों तो छोटे-बड़े दोनों भाइयों का नाश होता है। भिन्न भावों में हो तो उन भावों का नाश करते हैं॥ ४०॥ यदि शनि ३रे वा ११ वें हो तो केवल अपने बच जाता है और सभी भाई नष्ट हो जाते हैं॥ ४१॥

तृतीयैकादशे केतुर्बाहुल्यं स्याद्भगिन्ययोः।
भ्रात्रोः स्वल्पसुखं तस्य निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥४२॥
सप्तमेशाद् द्वितीये वै सैंहिकेययुतेक्षिते।
दंष्ट्रावान् स भवेद्बालो बहुभाग्ययुतो भवेत् ॥४३॥

३, ११वें भाव में केतु हो तो बहनें अधिक होती हैं और भाइयों का सुख अल्प होता है॥ ४२॥ सप्तमेश से दूसरे भाव में राहु युक्त हो अथवा देखता हो तो बालक के दाँत बड़े-बड़े होते हैं और वह भाग्यशाली होता है॥ ४३॥

सप्तमेशाद् द्वितीये चेत्पुच्छनाथयुतेक्षिते।
स्तब्धवाग् जायते बालस्तथा स्खलितवाग्द्विज ॥४४॥
आरूढान्मृत्युभावस्थे पापाख्ये शुभवर्जिते।
शुभसंबंधरहिते चौरो भवति निश्चितम् ॥४५॥

सप्तमेश से दूसरे भाव को केतु देखता हो वा युत हो तो बालक हकलाकर बोलने वाला होता है॥ ४४॥ पद से आठवें भाव में पापग्रह हों, शुभग्रह से सम्बन्ध न हो तो चोर होता है॥ ४५॥

आरूढभावे सौम्ये तु सर्वदेशाधिपो भवेत्।
सर्वज्ञस्तत्र जीवे स्यात्कविर्वाग्मी च भार्गवे ॥४६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सप्तमे द्वादशे स्थाने सैंहिकेययुतेक्षिते ।
ज्ञानवांश्च भवेद्बालो बहुभाग्ययुतो द्विज ॥४७॥

पद में बुध हो तो चक्रवर्त्ती होता है, गुरु हो तो सर्वज्ञ होता है और शुक्र हो तो कवि तथा वक्ता होता है॥ ४६॥ सातवें, बारहवें भाव में राहु हो अथवा देखता हो तो बालक ज्ञानी तथा बहुत भाग्यशाली होता है॥ ४७॥

आरूढाच्च पदाद् वापि धनस्थे शुभखेचरे ।
सर्वद्रव्याधिपो धीमान् जायते द्विजसत्तम ॥४८॥
उपपदाद्धनपो यत्र वर्तते वित्तभे यदा ।
पापखेचरसंयुक्ते चौरो भवति निश्चितम् ॥४९॥

आरूढ़ में वा पद से दूसरे भाव में शुभग्रह हो तो सम्पूर्ण द्रव्य का अधिपति और बुद्धिमान् होता॥४८॥ उपपद से द्वितीयेश यदि धनभाव में हो और पापग्रह से संबंध करता हो तो निश्चय ही वह चोर होता है॥४९॥

अमात्यानुचराद्विप्र देवभक्तिं विचिंतयेत् ।
नीचत्वादेव नीचत्वं शुभपापाच्छुभाशुभम् ॥५०॥
कारकांशे पापखगैः पापांशे पापयोगकृत् ।
पापवर्गे शुभैर्हीने जायते परजातकः ॥५१॥

भ्रातृकारक से भी पूर्ववद् देवभक्ति का विचार करना चाहिये। यदि नीचग्रह का सम्बन्ध हो तो नीच देवता और शुभ पाप के सम्बन्ध द्वारा शुभ-पाप देवता को समझना चाहिये॥ ५०॥ कारकांश में पापग्रह, पापांश में पापग्रह से योग करते हुए पापग्रह के वर्ग में हों, शुभग्रह का सम्बन्ध न हो तो दूसरे से उत्पन्न हुआ होता है॥ ५१॥

इतिपाराशरहोरायांपूर्वखंडे सुबोधिन्यां उपपदफलं नाम दशमोऽध्यायः।

अथ कारक-मारक-विचाराध्यायः

पंचमं नवमं चैव विशेषधनमुच्यते ।
चतुर्थं दशमं चैव विशेषसुखमुच्यते ॥१॥
चन्द्रभानू विना सर्वे मारके मारकाधिपाः ।
षष्ठाष्टमव्ययेशास्तु राहुः केतुस्तथैव च ॥२॥

पाँचवाँ और नवम स्थान विशेष धन स्थान होता है और चौथा तथा दशम विशेष सुख स्थान होता है॥ १॥ चन्द्रमा, सूर्य को छोड़कर शेष सभी ग्रह मारकेश होते हैं। छठा, आठवाँ, बारहवाँ स्थान के स्वामी और राहु तथा केतु, ये सभी मारकेश होते हैं॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

केन्द्राधिपतयः सौम्याः शुभं नैव दिशंति च ।
क्रूराः नैवाशुभं कुर्युः कोणपौ शुभदायकौ ॥ ३ ॥
धनेशो हि व्ययेशश्च संयोगात्फलदौ मतौ ।
लाभारिन्र्यधिपा पापा रंध्रेशो न शुभप्रदः ॥ ४ ॥

यदि शुभग्रह केन्द्र के स्वामी हों तो शुभ फल नहीं देते हैं, पापग्रह केन्द्राधिपति हों तो अशुभ फल नहीं देते हैं। यदि कोण (९/५) के स्वामी हों तो शुभफल देते हैं॥ ३ ॥ द्वितीयेश और व्ययेश संयोगवश (साहचर्य) फल देते हैं। ११। ६। ३ भावोंके स्वामी पाप होते हैं, अष्टमेश शुभद नहीं होता है। ४।

जायाकुटुम्बकाधीशौ मारकौ परिकीर्त्तितौ ।
क्रूराश्चेते ग्रहा ज्ञेया क्षीणचन्द्रो रविस्तथा ॥ ५ ॥
शनिर्भौमश्च विज्ञेया प्रबला ह्युत्तरोत्तराः ।
लग्नाम्बुद्यूनकर्माणि प्रबलान्युत्तराणि हि ॥ ६ ॥

सप्तम और दूसरे भाव के स्वामी मारकेश होते हैं। क्षीणचन्द्र और रवि, ये क्रूर ग्रह हैं॥ ५ ॥ शनि, भौम- ये क्रूर ग्रह कहे जाते हैं और उत्तरोत्तर प्रबल होते हैं। लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम- ये उत्तरोत्तर प्रबल होते हैं॥ ६ ॥

सुतधर्मौ तथा ख्यातौ प्रबलौ चोत्तरोत्तरौ ।
लाभारित्रितयस्थानं त्वधोऽधः प्रबलं भवेत् ॥ ७ ॥
पुनर्मारकयोर्मध्ये ह्युत्तरं प्रबलं मतम् ।
भाग्यस्थानाद्व्ययं विप्र तस्माच्चैवाशुभं वदेत् ॥ ८ ॥

पंचम और नवम उत्तरोत्तर प्रबल होते हैं। ११। ६। ३ स्थान क्रमशः प्रबल होते हैं॥ ७॥ मारकों के मध्य में द्वितीयेश से सप्तमेश प्रबल मारक होता है। भाग्य स्थान से व्यय स्थान (अष्टम) से भी अशुभ फल होता है॥ ८॥

एतत्स्थानानुसारेण ग्रहाणां मानमालिखेत् ।
चन्द्रज्ञगुरुशुक्राणां केन्द्रदोषो यथोत्तरम् ॥ ९ ॥
तथैव ग्रहाः क्रूरा प्रबलाश्चैवोत्तरोत्तरम् ।
भाग्येशः सर्वदा सौम्यो न क्रूरः फलदायकः ॥ १० ॥

इस प्रकार ग्रहों की शुभ-अशुभ फलों की तालिका लिखकर फल का विचार करें। चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र का केन्द्र दोष यथोत्तर बलवान् होता है॥ ९ ॥ उसी प्रकार उसमें स्थित ग्रह भी यथोत्तर वली होते हैं। भाग्येश सर्वदा शुभफल देने वाला होता है, किन्तु क्रूरग्रह हो तो शुभ फलदायक नहीं होता है॥ १० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पुत्राधिपोऽपि शुभदः क्रूरोऽपि सुखदः स्मृतः ।
त्रिलाभरिपुमृत्यूनां पतयो दुःखदायकाः ॥ ११ ॥
यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम् ।
यद्-यद्भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम् ॥ १२ ॥

पंचमेश शुभग्रह हो या पापग्रह हो तो भी शुभफल ही देता है। ३। ११।६।८ के अधिपति दुःखदायी होते हैं॥ ११॥ राहु-केतु जिन-जिन भावों में हों, जिन जिन भावेशों से युत हों उनके अनुसार फल को देते हैं॥ १२॥

मंदसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ ।
न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः ॥ १३ ॥
परतंत्रेण जीवस्य पापकर्माणि निश्चितम् ।
कविः साक्षान्निहंता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ १४ ॥

मेष लग्न में उत्पन्न बालक को शनि, बुध, शुक्र पापफल देनेवाले और गुरु-सूर्य शुभफल देनेवाले होते हैं। शनि-गुरु योग मात्र से शुभदायक नहीं होते किन्तु सहायक होते हैं॥ १३॥ गुरु के पारतंत्र्य होने से (व्ययेश होने के कारण-पाप संबंध से) पापफल देना भी निश्चित है। शुक्र साक्षात् मारकेश होता है॥ १४॥

मंदादयो निहंतारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः ।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियोद्भवैः ॥ १५ ॥

शनि आदि पापग्रह भी मारकेश के सहयोग से मारक होते हैं। इस प्रकार मेषलग्न में उत्पन्न जातक के शुभ-अशुभ फलों का निर्णय करना चाहिये॥ १५॥

विशेष- यहाँ मेष लग्न के स्वामी भौम अष्टमेश होने के कारण अशुभ हैं किन्तु लग्नेश होने के कारण शुभ फल देने वाले के सहायक हैं, शनि केन्द्राधिपति होने के कारण शुभद है, किन्तु लाभाधिपति होने के कारण पापी हो गया, बुध ३।६ भाव का अधिपति होने के कारण अशुभ, शुक्र मारकस्थान (२।७) का स्वामी अर्थात् केन्द्रेश होने के कारण अशुभ, सूर्य (५) का स्वामी होने से शुभ गुरु व्ययेश और भाग्येश होने के कारण अपने सहयोगी के अनुसार पापफलद भी हो सकता है। इसी प्रकार प्रत्येक लग्नों में समझना चाहिये।

वृषलग्नम्-

जीवशुक्रेन्दवः पापाः शुभौ शनिदिवाकरौ ।
राजयोगकरः साक्षादेक एव रवेः सुतः ॥ १६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जीवादयो ग्रहाः पापाः संति मारकलक्षणाः ।
बुधः स्वल्पफलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः ॥ १७॥

वृष लग्न वाले को गुरु, शुक्र, चन्द्रमा पापफल देनेवाले, शनि-सूर्य शुभ फलदायक और राजयोगकारक होते हैं॥ १६॥ गुरु, शुक्र, चन्द्रमा- ये पापफल दायक मारकेश के फल को देने वाले होते हैं और बुध अल्प शुभ फल देने वाला होता है। ऐसा लक्षण वृषलग्न वालों का होता है॥ १७॥

अथ मिथुनलग्नम्-

भौमजीवारुणः पापा एक एव कविः शुभः ।
शनैश्चरेण जीवस्य योगो मेषभवो यथा ॥ १८॥
नायं शशी निहंता स्याल्लक्षणं पापनिष्फलम् ।
ज्ञातव्यानि द्वंद्वजस्य फलान्येतानि सूरिभिः ॥ १९॥

मिथुन लग्नवाले को भौम, गुरु, सूर्य पापफल देनेवाले, केवल एकमात्र शुक्र शुभ फल देने वाला होता है। शनि-गुरु का योग मेषलग्न वाले के समान ही फलदायक होता है॥ १८॥ चन्द्रमा मारक नहीं होता है किन्तु, साहचर्यानुसार फल देने वाला होता है। इस प्रकार मिथुन लग्न वालों के फल का विचार करना चाहिये॥ १९॥

अथ कर्कलग्नम्-

भार्गविन्दुसुतौ पापौ भौमेज्यशशिनः शुभाः ।
एकग्रहस्तु भवेत्साक्षान्महीसुतौ योगकारकः ॥ २०॥
निहन्ता रविजोऽन्ये च साहचर्यात्फलप्रदाः ।
कुलीरसंभवस्यैव फलान्युक्तानि सूरिभिः ॥ २१॥

कर्क लग्नवाले को शुक्र-बुध पाप फल देने वाले और भौम, गुरु, चन्द्रमा शुभ फल देने वाले होते हैं। केवल भौम ही एक राजयोगकारक होता है॥ २०॥ शनि मारकेश होता है, अन्य ग्रह साहचर्य के अनुसार फल देते हैं। ऐसा कर्क लग्न वाले का फल होता है॥ २१॥

अथ सिंहलग्नम्-

बुधशुक्रार्कजाः पापाः भौमेज्यार्काः शुभप्रदाः ।
प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं गुरु-शुक्रयोः ॥ २२॥
घ्नंति सौम्यादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः ।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहे यस्य जनुर्भवेत् ॥ २३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सिंह लग्नवाले को बुध-शुक्र-शनि पाप फल देने वाले और भौम-गुरु-सूर्य शुभ फल देने वाले होते हैं। गुरु-शुक्र के योगमात्र से शुभ फल नहीं होता है॥ २२॥ बुधपाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश होता है। ऐसा सिंह लग्नवालों का फल होता है॥ २३॥

अथ कन्यालग्नम्-

कुजजीवेन्दवः पापा एक एव भृगुः शुभः।
भार्गविन्दुसुतावेव भवेतां योगकारकौ॥ २४॥
निहन्ता कविरन्ये तु मारकास्तु कुजादयः।
प्रतीक्षते फलान्युक्तान्येवं कन्याभवे बुधैः॥ २५॥

कन्या लग्नवाले को भौम, गुरु-चन्द्रमा पापफल देने वाले, केवल शुक्र ही शुभ फलदायक है। शुक्र-बुध योगकारक होते हैं॥ २४॥ मारकेश शुक्र ही होता है, अन्य भौम आदि मारकेश के साहचर्य से फल देते हैं। यह कन्या लग्न का फल है॥ २५॥

अथ तुलालग्नम्-

जीवार्कमहीजाः पापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ।
भवेतां राजयोगस्य कारकौ चंद्रतत्सुतौ॥ २६॥
कुजो निहंति जीवाद्याः परे मारकलक्षणाः।
निहंतारः फलान्येवं काव्यो न तु तुलाभवः॥ २७॥

तुला लग्नवाले को गुरु, सूर्य, भौम पापफल देनेवाले, शनि-बुध शुभ फलदाता, चन्द्रमा-बुध राजयोगकारक होते हैं॥ २६॥ भौम मारकेश होता है, गुरु आदि अन्य ग्रह जो मारकेश के लक्षण के हैं, वे अनिष्टकारक और शुक्र समफलदाता होता है, ऐसा तुला लग्न का फल जानना चाहिए॥ २७॥

अथ वृश्चिकलग्नम्-

सौम्यभौमसिताः पापाः शुभौ गुरुनिशाकरौ।
सूर्यचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ॥ २८॥
जीवो निहंता सौम्याद्या हंतारो मारकाह्वयाः।
तत्तत्फलानि विज्ञान्येवं वृश्चिकजन्मनः॥ २९॥

वृश्चिक लग्नवाले को बुध, भौम, शुक्र पाप फल देने वाले, गुरु-चन्द्रमा शुभ फल देने वाले और सूर्य-चन्द्रमा योगकारक होते हैं॥ २८॥ गुरु मारकेश होता है, बुध आदि मारक के समान ही फलदाता होते हैं। ऐसा वृश्चिक लग्न वाले का फल होता है॥ २९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ धनुर्लग्नम्-

एक एव कविः पापः शुभौ सौम्यदिवाकरौ ।
योगो भास्करसौभ्याम्यां निहंता भास्करःसुतः ॥ ३० ॥
घ्नंति शुक्रादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः ।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं चापजस्य मनीषिभिः ॥ ३१ ॥

धनुलग्नवाले को शुक्र पाप फल देने वाला, बुध-सूर्य शुभफल देने वाले, सूर्य, बुध का योग राजयोगकारक होता है॥ ३० ॥ शनि मारकेश होता है, शुक्र आदि मारकेश के समान ही पापफल देने वाले होते हैं, ऐसा धनु लग्न का फल होता है॥ ३१ ॥

अथ मकरलग्नम्-

कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ ।
स्वयं चैव निहंता स्यान्मंदो भौमादयः परे ॥ ३२ ॥
तल्लक्षणानि हंतारः कविरेकः सुयोगकृत् ।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं विबुधैर्मृगजन्मनः ॥ ३३ ॥

मकर लग्न वाले को भौम, गुरु, चन्द्रमा पाप फल देने वाले, शुक्र और चन्द्रमा शुभ फल देने वाले, शनि मारकेश होता है। भौम आदि मारकेश के लक्षण के समान होने से मारक होते हैं॥ ३२ ॥ शुक्र योगकारक होता है। इस प्रकार का फल मकर लग्न का होता है॥ ३३ ॥

अथ कुम्भलग्नम्-

जीवचन्द्रकुजाः पापा एको दैत्यगुरुः शुभः ।
राजयोगकरः शुक्रोः भौमश्चैव बृहस्पति ॥ ३४ ॥
निहंता संति भौमाद्या मारकत्वेन लक्षिताः ।
एवमेव फलान्यूहान्येतानि घटजन्मनः ॥ ३५ ॥

कुम्भ लग्न वाले को गुरु, चन्द्रमा, भौम पापफल देने वाले, शुक्र केवल राजयोगकारक होता है॥ ३४ ॥ भौम-गुरु मारकेश होते हैं, अन्य ग्रह भी मारकेश से संबंधित होने से उनके फलों को देते हैं॥ ३५ ॥

अथ मीनलग्नम्-

मंदशुक्रांशुमद् पापाः सौम्यो भौमविधू शुभौ ।
महीसुतगुरुश्चैव भवेतां योगकारकौ ॥ ३६ ॥
भौमः मारकत्वेऽपि न हंतामंदज्ञौ पापिनः ।
इत्यूहानि फलान्येवं बुधैस्तु झषजन्मनः ॥ ३७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मीन लग्नवाले को शनि, शुक्र, सूर्य पाप फल देनेवाले, बुध, भौम, चन्द्रमा शुभफलदायक, भौम-गुरु राजयोगकारक होते हैं॥ ३६॥ भौम मारकेश होते हुये भी मारता नहीं है, किन्तु शनि-बुध मारक होते हैं। इस प्रकार मीन लग्न का फल जानना चाहिये॥ ३७॥

एतच्छास्त्रानुसारेण मारकान्निर्दिशेद् बुधः।
चन्द्रसूर्यौ विना सर्वे मारकाः परिकीर्त्तिताः॥ ३८॥
स्वदशायां स्वभुक्तौ च नराणां निधनं न हि।
क्वचिद्दशायामिच्छन्ति स्वभुक्तौ न कदाचन॥ ३९॥

इस शास्त्र के अनुसार मारकेश का निर्देश करना चाहिये। रवि-चन्द्र को छोड़कर शेष सभी ग्रह मारकेश होते हैं॥ ३८॥ मारकेश की दशा और अन्तर्दशा में मृत्यु नहीं होती है। किसी-किसी के मत से मारकेश की दशा में मृत्यु होती है और कभी अन्तर्दशा में नहीं होती है॥ ३९॥

इति पाराशरहोरायां पूर्वखंडे सुबोधिन्यां कारक-
मारकादिविचारो नामैकादशोऽध्यायः।

❖

अथ द्वादशभावविचाराध्यायः

तनो रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम्।
शीलं वै प्रकृतिं चैव तनुस्थानाद्विचारयेत्॥ १॥
धनं धान्यं कुटुम्बं च मृत्युजालममित्रकम्।
धातुरत्नादिकं सर्वं धनस्थानाद् विचारयेत्॥ २॥

प्रथम भाव से शरीर, रूप (रंग), ज्ञान, वर्ण (ब्राह्मणादि), बल, निर्बल, शील (स्वभाव) और प्रकृतिका विचार करना चाहिये।१। दूसरे भावमें धन, धान्य,कुटुम्ब,मृत्यु,शत्रु और धातु,रत्न आदिका विचार करना चाहिये।२।

विक्रमं भृत्यभ्रात्रादि चोपदेशप्रयाणकम्।
पित्रोर्वै मरणं विप्र दुश्चिक्याच्च निरीक्षयेत्॥ ३॥
वाहनस्याथ बन्धूनां मातृसौख्यादिकानपि।
निधिक्षेत्रं गृहं चापि पातालाच्च निरीक्षयेत्॥ ४॥

तीसरे भावसे नौकर, भाई, उपदेश, यात्रा और पिताके मरणका विचार करना चाहिये॥ ३॥ चौथे भाव से वाहन (सवारी), बंधुओं का, मातृ-सुख का, निधि (गड़ेधन का), क्षेत्र, (खेत), गृह का विचार करना चाहिये॥ ४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यंत्रमंत्रौ तथा विद्या बुद्धेश्चैव प्रबंधकम् ।
पुत्रराज्यापभ्रंशादि पश्येत्पुत्रालयाद् बुधः ॥ ५ ॥
मातुलांतकशंकानां शत्रूंश्चैव व्रणादिकान् ।
सपत्नीमातरञ्चापि शत्रुस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ ६ ॥

पाँचवें भाव से यंत्र, मंत्र, विद्या, बुद्धि, प्रबन्ध, पुत्र और राज्य के स्खलन का विचार करना चाहिये ॥ ५ ॥ छठें भाव से मामा के मरण की शंका, शत्रु और व्रण का तथा सौतेली माँ का विचार करना चाहिये ॥ ६ ॥

जायामध्वप्रयाणं च व्यापारं हृतवीक्षणम् ।
मरणं च स्वदेहस्य जायाभावान्निरीक्षयेत् ॥ ७ ॥
ऋणदानग्रहणयोर्गुदि चैवांकुरादयः ।
गत्यनूकादिकं सर्वं पश्येद्रंधाद्विचक्षणः ॥ ८ ॥

सप्तम भाव से स्त्री, मार्ग, यात्रा, व्यापार, नष्ट वस्तु और मृत्यु का विचार करना चाहिये ॥ ७ ॥ आठवें भाव से ऋण देना-लेना, गुदा की बीमारी, पूर्वजन्म और इस जन्म का विवरण-ये सब विचार करना चाहिये ॥ ८ ॥

भाग्यं धर्मं च श्यालं च भ्रातृपत्न्यादिकांस्तथा ।
तीर्थयात्रादिकं सर्वं धर्मस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ ९ ॥
राज्यं चाकाशवृत्तिं च मानं चैव पितुस्तथा ।
प्रवासस्य ऋणस्यापि व्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ १० ॥

नवम भाव से भाग्य, साला का, भाई की स्त्री तथा तीर्थ यात्रा आदि का विचार करना चाहिये ॥ ९ ॥ दशम स्थान से राज्य, आकाशवृत्ति, प्रतिष्ठा, पिता, परदेश आदि का विचार करना चाहिये ॥ १० ॥

नानावस्तुभवस्यापि पुत्रजायादिकस्य च ।
लाभवृद्धिपशूनां च भवस्थानाद्विचारयेत् ॥ ११ ॥
व्ययं च वैरिवृत्तान्तं फलमन्त्यादिकं तथा ।
व्ययभावाच्च तत्सर्वं ज्ञातव्यं हि विपश्चिता ॥ १२ ॥

एकादश भाव से अनेक वस्तुओं की प्राप्ति, पुत्र, स्त्री, पशुओं की वृद्धि तथा लाभ आदि का विचार करना चाहिये ॥ ११ ॥ बारहवें भाव से व्यय, शत्रु का वृत्तांत आदि का विचार करना चाहिये ॥ १२ ॥

यो यो भावपतिर्नष्टस्त्रिकेशाद्यैश्च संयुतः ।
भावं न वीक्षते सम्यग्ग्रहो वापि मृतो यदा ॥ १३ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्थविरो वा भवेत्खेटः सुप्तो वापि प्रपीडितः ।
तदा तद्भावजं सौख्यं नष्टं ब्रूयाद्विशंकितः ॥ १४ ॥

जिन-जिन भावों के स्वामी अस्त हों, त्रिकेश (६।८।१२ के स्वामी) से युत हों, अपने भाव को न देखते हों, मृत अवस्था॥ १३॥ वृद्ध अथवा सुप्त हों वा पीडित हों तो उन भावों के फल नष्ट हो जाते हैं॥ १४॥

यदा सौम्यग्रहैर्दृष्टो भावो भावेशसौम्ययुक् ।
युवा प्रबुद्धराजस्थः कुमारो वापि तद्भवेत् ॥ १५ ॥
ईशेक्षणवशात्तत्र भावसौख्यं वदेद् बुधः ।
एवं हि सर्वभावेषु ज्ञेयो साधारणो नयः ॥ १६ ॥

जो भाव शुभग्रह से दृष्ट हों, जो भाव अपने स्वामी वा शुभग्रह से युत हो, भावेश युवा, प्रबुद्ध, राजकुमार अवस्था में हो॥ १५॥ भाव को भावेश देखता हो तो उस भाव के सुख की वृद्धि होती है। यह नियम सभी भावों में साधारणतः समझना चाहिये॥ १६॥

अथ ग्रहाणां कारकत्वम्-

शुक्रः शुक्रश्च नेत्रं च चन्द्रमा मनसस्तथा ।
आत्मा वै दिनकृत्तत्र जीवो जीवितसौख्यदः ॥ १७ ॥
क्रोधः पराक्रमो भौमो बुधो बालत्वधीमतः ।
शनिर्दुःखप्रदो ज्ञेयो राहुरैश्वर्यप्रदायकः ॥ १८ ॥

शुक्र धातु का स्वामी, नेत्र और मन का चन्द्रमा, आत्मा का सूर्य, गुरु सुख को देने वाला है॥ १७॥ क्रोध, पराक्रम का भौम, बुध, बुद्धि का, शनि दुःख का और राहु ऐश्वर्य का स्वामी होता है॥ १८॥

शिरोनेत्रे तथा कर्णे नासा चापि कपोलकौ ।
हनूमुखं तथा वाच्यं लग्नादाद्यद्रेकाणके ॥ १९ ॥
लग्नान्मध्यद्रेकाणे च कंठांशौ बाहुकौ तथा ।
पार्श्वे च हृदयक्रोडे नाभिं चैव यथाक्रमम् ॥ २० ॥

एक लग्न में तीन द्रेष्काण होते हैं। यदि जन्म समय लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्न को मुख, २, १२ भाव को नेत्र, ३, ११ भाव को कान, ४, १२ को नाक, ५, ९ भाव को कपोल, ६, ८ भाव को दाढ़ी, ७ भाव को मुख की कल्पना करनी चाहिये॥ १९॥ दूसरा द्रेष्काण हो तो

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्न को कण्ठ, २, १२ भाव को कंधा, ३, ११ भाव को बाहु, ४, १० भाव को पार्श्व, ५, ९ भाव को हृदय, ६, ८ भाव को पेट, ७ भाव को नाभि की कल्पना करनी चाहिये॥ २०॥

बस्तिर्लिङ्गगुदे वृषणावुरू जानुजंघके।
पदेति चैवमुदितैर्वाममङ्गं तृतीयके॥ २१॥
यस्मिन्नङ्गे स्थितः क्रूरस्तत्र चिह्नं समादिशेत्।
ससौम्यैर्नियतं विप्र सौम्यैर्लक्ष्मं समादिशेत्॥ २२॥

तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न को बस्ति (नाभि, लिंग के मध्य का स्थान) २। १२ भाव को लिंग और गुदा ३। १० भाव को जङ्घा, ५। ९ भाव को घुटना, ६। ८ भाव को ठेहुने के नीचे, ७ भाव को पैर समझना चाहिए। सप्तम से १२ भाव तक वाम भाग और लग्न से छठे भाव तक दाहिने भाग की कल्पना करनी चाहिये॥ २१॥ अंग के जिस भाग में पापग्रह हों वहाँ चिह्न कहना। यदि बुध के साथ पापग्रह हों तो निश्चय ही चिह्न होता है और शुभग्रह हों तो उस अंग में लक्षण होता है॥ २२॥

अथ तनुभावफलम्-

देहाधिपः पापयुतोऽष्टमस्थो व्ययारिगो वांगसुखं निहन्ति।
सर्वत्र भावेषु च योजनीयमेवं बुधैर्भाववशात्फलं हि।२३।
पापो विलग्नाधिपतिर्विलग्ने चन्द्रेण युक्तो यदि बालकः स्यात्।
तदातिरोगं स हि केन्द्रसंस्थस्त्रिकोणलाभेषु गदं निहन्ति।२४।

लग्नेश पापग्रह से युत होकर आठवें, बारहठें, छठें हों तो शरीर सुख नहीं होता है। यही नियम सभी भावों का है यानी जिस भाव का स्वामी पापग्रह से युत होकर ६, ८, १२वें भाव में हो तो उस भाव के फल का अभाव होता है॥ २३॥ यदि लग्नेश पापग्रह चन्द्रमा से युक्त होकर लग्न में हो तो बालक अत्यन्त रोगी होता है। यदि वह केन्द्र त्रिकोण और लाभ भाव में हो तो रोग का नाश करता है॥ २४॥

लग्नाधिपोऽथ जीवो वा शुक्रो वा यदि केन्द्रगः।
स जातो धनवांल्लोके दीर्घायू राजवल्लभः॥ २५॥

लग्नेश वा गुरु या शुक्र केन्द्र में हो तो जातक धनी-दीर्घायु और राजप्रिय होता है॥ २५॥

केन्द्रत्रिकोणेषु न यस्य पापाः
लग्नाधिपः सुरगुरुश्च चतुष्टयस्थौ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भुक्त्वा सुखानि विविधानि च पुण्यकर्मा
जीवेत्तु वर्षशतमेव विमुक्तरोगः ॥ २६ ॥

जिसके जन्माङ्ग में केन्द्र-त्रिकोण भाव में पापग्रह न हों और लग्नेश तथा गुरु केन्द्र में हों तो वह बालक पुण्यकर्त्ता, अनेक प्रकार के सुखों को भोगने वाला एवं दीर्घायु होता है॥ २६॥

लग्नेशे चरराशिस्थे शुभग्रहनिरीक्षिते ।
कीर्त्तिः श्रीमान् महाभोगी देहपुष्टिसमन्वितः ॥ २७॥
शुक्रो बुधोऽथवा जीवो लग्ने चन्द्रसमन्वितः ।
लग्नात्केंद्रगतो वापि राजलक्षणसंयुतः ॥ २८॥

लग्नेश चरराशि में हो, शुभग्रह से देखा जाता हो तो बालक यशस्वी, भोगों को भोगने वाला और बलवान् होता है॥ २७॥ यदि शुक्र, बुध वा गुरु चन्द्रमा से युत होकर लग्न में हो अथवा वे केन्द्र में गये हो तो बालक राजलक्षण से युक्त होता है॥ २८॥

रविचन्द्रौ च ह्येकस्थावेकांशकसमन्वितौ ।
त्रिमात्रं च त्रिभिर्मासैर्भ्रात्रा पित्रा च जीवति ॥ २९॥
लग्ने राहुसमायुक्ते तथा सोमनिरीक्षिते ।
लग्नांशे मंदसूरी चेज्जातश्च यमलो भवेत् ॥ ३०॥

रवि चन्द्रमा एक स्थान में एक ही अंश में हो तो बालक को तीन मास के अन्दर तीन मातायें होती हैं और वह भाई तथा पिता द्वारा जीवित रहता है॥ २९॥ लग्न में राहु हो, उसे चन्द्रमा देखता हो तथा लग्न के नवमांश में शनि-गुरु हो तो यमल बालक होते हैं॥ ३०॥

अथ धनभावफलम्-

शुक्रेण युक्तो यदि नेत्रनाथः शुक्रस्य स्वोच्चांशगृहेगतो वा ।
संबंधवान्स्याद्यदि देहपेन नेत्रं विधत्ते विपरीतभावम् ॥ ३१॥
तत्र स्थितौ चन्द्ररवी निशांधं जात्यंधतां नेत्रपदेहपार्काः ।
पैत्रर्क्षनाथेन युतास्तदांन्ध्यं कुर्वन्ति मात्रादिफलं तथेदृक् ॥ ३२॥

यदि धन भाव का स्वामी शुक्र से युक्त हो और शुक्र के उच्च, नवांश, गृहमें हो और लग्नेश से सम्बन्ध करता हो तो टेढ़े नेत्र होते हैं॥ ३१॥ यदि चन्द्र-सूर्य धनेश से-लग्नेशसे युक्त होकर द्वितीयस्थ हो तो जन्मांध होता है। पिता आदि के स्वामी से युत हों तो उन्हें भी अन्धा समझना चाहिये॥ ३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दोषकृन्न च सर्वत्र स्वोच्चस्वर्क्षगतो ग्रहः।
षडादित्रयसंस्थश्चेत्तदा दोषकृच्छुभः ॥ ३३॥
वागीशवाग्गृहाधीशौ षडादित्रयसंस्थितौ।
मूकर्तां कुरुतेऽप्येवं पितृमातृगृहाधिपाः ॥ ३४॥

यदि दोषकर्त्ता ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो दोष नहीं करता। यदि छठें आठवें, बारहवें हो तो दोष करता है॥ ३३॥ गुरु और द्वितीये छठें, आठवें बारहवें भाव में हो तो मूक (गूंगा) होता है। इसी प्रकार पिता-माता आदि के भावेश हों तो उन्हें भी मूक कहना चाहिये॥ ३४॥

विद्याधिपौ जीवबुधावविद्यामरित्रयस्थौ कुरुतोऽथ तौ चेत्।
केन्द्रत्रिकोणस्थगृहोच्चसंस्थौ प्रयच्छतां द्रागनवद्यविद्याम् ॥ ३५॥

गुरु-बुध और द्वितीयेश छठें, आठवें और बारहवें भाव में हो तो मूर्ख होता है, यदि ये केन्द्र त्रिकोण या अपने गृह उच्च राशि में हो तो शीघ्र ही विद्वान् होता है॥ ३५॥

धनाधिपो गुरुर्यस्य धनराशिस्थितो यदि।
भौमेन सहितो वापि धनवान् स नरो भवेत् ॥ ३६॥
धनेशे लाभराशिस्थे लाभेशे वा धनङ्गते।
तावुभौ केन्द्रराशिस्थौ धनवान्स नरो भवेत् ॥ ३७॥

धनेश गुरु और भौम दूसरे भाव में हो तो पुरुष धनी होता है॥ ३६॥ धनेश ११वें भाव में हो और लाभेश दूसरे भाव में हो अथवा दोनों केन्द्र में हो तो धनी होता है॥ ३७॥

धनेशे केन्द्रराशिस्थे लाभेशे तत्त्रिकोणगे।
गुरुशुक्रयुते दृष्टे धनलाभमुदीरयेत् ॥ ३८॥
वित्तेशो रिपुभावस्थो लाभेशो तद्गतो यदि।
वित्तलाभौ पापयुक्तौ दृष्टौ निर्धन एव सः ॥ ३९॥

धनेश केन्द्र में हो और लाभेश उससे त्रिकोण में हो और गुरु, शुक्र से युत वा दृष्ट हो तो धन का लाभ होता है॥ ३८॥ धनेश, लाभेश छठें में हो, अथवा धन लाभ पापयुत और पापदृष्ट हो तो निर्धन होता है॥ ३९॥

वित्तलाभाधिपौ दुःस्थौ पापखेचरसंयुतौ।
जन्मप्रभृतिदारिद्र्यं भिक्षान्नं लभते नरः ॥ ४०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठाष्टमव्ययस्थौ चेद्धनलाभाधिपौ यदि ।
लाभे कुजे धने राहौ राजदंडाद्धनक्षयः ॥४१॥

धनेश, लाभेश पापग्रह से युत होकर छठें, आठवें, बारहवें भाव में हो तो जन्मसे ही दरिद्र होता है और भिक्षा माँगकर खाने वाला होता है॥४०॥ यदि धनेश एवं लाभेश छठें, आठवें, बारहवें भाव में हो और ११वें भाव में भौम, धन भाव में राहु हो तो राजदंड से धन का नाश होता है॥ ४१॥

लाभे जीवे धने शुक्रे तदीशे शुभसंयुते ।
व्यये शुभग्रहयुते धर्ममूलाद्धनव्ययः ॥४२॥

११वें भाव में गुरु, दूसरे भाव में शुक्र हो और धनेश शुभग्रह से युत हो और बारहवें भावमें शुभग्रह हो तो धर्मके कारण द्रव्यका व्यय होता है।४२।

कुटुम्बराशेरधिपः ससौम्ये केन्द्रत्रिकोणे च सुहृद्गृही वा ।
सौम्यर्क्षयुक्तो यदि जातपुण्यः कुटुम्ब संरक्षणवाग्विभूतः ॥४३॥
कुटुम्बनाथे परमोच्चयुक्ते देवेन्द्रपूज्ये च समीक्षिते वा ।
तथाविधे तद्भवनेऽभिजातः सहस्ररक्षो भुवनप्रतापी ॥४४॥

द्वितीय भाव का स्वामी शुभग्रह से युक्त होकर केन्द्र-त्रिकोण में मित्र क्षेत्र में वा अपनी राशि में वा शुभग्रह की राशि में हो तो पुण्यवान् कुटुम्ब की रक्षा करने वाला होता है॥ ४३॥ धनेश अपने उच्च में हो और गुरु से देखा जाता हो तो सहस्र द्रव्य को रखने वाला होता है॥ ४४॥

तन्नाथे भृगुणा बुधेन सहिते पारावतांशे तथा ।
स्वोच्चेनाथ सुहृद्गृहे धनपतौ स्वस्थानकोलाहलः ॥४५॥
कुटुम्बराशिस्थपतौ यदि स्याद्भृगौ बुधे तादृशभावनाथे ।
स्वोच्चे सुहृत्क्षेत्रगतेऽथवा स्यात्परोपकारीजनरक्षकः स्यात् ॥४६॥

धनेश शुक्र-बुध से युक्त हो पारावतांश में हो। अपने उच्च का मित्र के गृह में हो तो प्रसिद्ध धनी होता है॥ ४५॥ धनेश शुक्र वा बुध अपने उच्च, मित्र के गृह में हो तो परोपकारी, जनरक्षक होता है॥ ४६॥

नेत्रेशे बलसंयुक्ते शोभनाक्षो भवेन्नरः ।
षष्ठाष्टमव्यये युक्ते नेत्रे वैकल्यमादिशेत् ॥४७॥
धनेशे पापसंयुक्ते धने पापसमन्विते ।
असत्यवादी पिशुनः पवनव्याधिसंयुतः ॥४८॥

धनेश बलवान् हो तो सुन्दर नेत्रों वाला होता है। यदि छठें, आठवें, बारहवें भाव में हो तो नेत्र में विकारवाला होता है॥ ४७॥ धनेश पापग्रह

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

से युत हो और धनभाव में पापग्रह हो तो झूठ बोलने वाला, कृपण और वातव्याधि से युक्त होता है॥ ४८॥

अथ सहजभावफलम्-

सभौमो भ्रातृभावेशो त्रिकभिन्नं च चेत् स्थितः।
भ्रातृक्षेत्रगतो वापि भ्रातृभावं विनिर्दिशेत्॥ ४९॥
तौ पापयोगतः पापक्षेत्रयोगेन वा पुनः।
उत्पाट्य सहजान्सद्यो निहन्ता शास्त्रनिश्चयात्॥ ५०॥

मङ्गल के साथ तीसरे भाव के स्वामी त्रिक (६।८।१२) से भिन्न स्थान में वा तीसरे भाव में हो तो भाइयों का सुख होता है॥ ४९॥ वे ही दोनों पापग्रह से युत हों और त्रिक में हों तो भाइयों का जन्म होता है, किन्तु वे बचते नहीं है॥ ५०॥

स्त्रीग्रहो भ्रातृभावेशः स्त्रीग्रहो भ्रातृगोऽपि वा।
भगिनी स्यात्तदा भ्राता पुंगृहे पुंग्रहो यदि॥ ५१॥
भ्रातृभे कारके वापि शुभयुक्तनिरीक्षिते।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत्॥ ५२॥

यदि भ्रातृभाव का स्वामी स्त्रीग्रह हो और तीसरे भाव में भी स्त्रीग्रह हो तो बहिनें होती हैं। पुरुष ग्रह हो तो भाई होते हैं॥ ५१॥ भ्रातृभाव वा भ्रातृकारक शुभग्रह से युत-दृष्ट हो और भ्रातृभाव पूर्णबलवान् हो तो भाइयों की वृद्धि होती है॥ ५२॥

केन्द्रत्रिकोणगे वापि स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे।
नाथे वा कारके वापि भ्रातृलाभं वदेद् बुधः॥ ५३॥
भ्रातृभे बुधसंयुक्ते तदीशे चन्द्रसंयुते।
कारके मंदसंयुके भगिन्येकाग्रतो भवेत्॥ ५४॥

यदि भ्रातृभावेश वा भ्रातृकारक केन्द्र-त्रिकोण में अपने उच्चमित्र आदि स्ववर्ग में हों तो भाइयों का लाभ होता है॥ ५३॥ भ्रातृभावेश चन्द्रमा से युक्त हो और भ्रातृभाव में बुध हो और भ्रातृकारक शनि से युत हो तो उसके पहले एक बहन होती है॥ ५४॥

पश्चात् सहोदरोऽप्येकस्तृतीयस्तु मृतो भवेत्।
कारके राहुसंयुक्ते विक्रमेशस्तु नीचगः॥ ५५॥
पश्चात्सहोदराभावः पूर्वं तु तत्त्रयं भवेत्।
भ्रातृस्थानाधिपे केन्द्रे कारके तत्त्रिकोणगे॥ ५६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उसके बाद एक भाई होता है और तीसरा मर जाता है। भ्रातृ-कारक राहु से युक्त हो और तृतीयेश नीच राशि में हो तो॥ ५५॥ उससे छोटे भाइयों का अभाव और उससे बड़े ३ भाई होते हैं। भ्रातृ-स्थान का स्वामी केन्द्र में हो और भातृकारक उससे त्रिकोण में॥ ५६॥

जीवेन सहितश्चोच्चे संख्या द्वादश सोदराः।
तत्र पूर्वद्वयं गर्भं जातकाच्च तृतीयकम्॥५७॥
सप्तमश्चैव नवमो द्वादशश्च मृतिप्रदः।
शेषाः सहोदराः षड्वै भवेयुर्दीर्घजीविनः॥५८॥
व्ययेशेन युते भौमे गुरुणा सहितोऽपि वा।
भ्रातृस्थाने शशियुते सप्तसंख्यास्तु सोदराः॥५९॥

गुरु के साथ अपने उच्चराशि में हो तो १२ भाई होते हैं। उसमें २ बड़े तीसरा॥ ५७॥ सातवाँ, नवां और बारहवाँ मर जाता है, शेष ६ भाई दीर्घ-जीवी होकर रहते हैं॥ ५८॥ व्ययेश से भौम युत हो वा गुरु से युक्त हो और तीसरे भाव में चन्द्रमा हो तो सात भाई होते हैं॥ ५९॥

अथ चतुर्थभावफलम्-

गेहाधिनाथेन युते तु गेहे देहाधिपेनापि गृहाभिलब्धिः।
युते षडादौ तु विपर्ययः स्याद् गृहाधिपे देहपतौ च तद्वत्॥६०॥
केन्द्रत्रिकोणे च शुभग्रहेण युते समीचीनगृहाभिलब्धिः।
क्षेत्रस्य चिंतासदनाधिपेन जीवेन चिंता तु सुखस्य कार्या॥६१॥

यदि सुख भाव सुखेश और लग्नेश से युक्त हो तो गृहका लाभ होता है। यदि लग्नेश सुखेश ६।८।१२ भाव में हो तो गृहप्राप्ति नहीं होती है॥ ६०॥ यदि दोनों केन्द्र त्रिकोण में हों और शुभग्रह से युक्त हों तो सुन्दर गृह प्राप्त होता है। गृहादि की चिंता सुखेश से, गुरु से सुख की चिन्ता होती है॥ ६१॥

दिव्यांगनावाहनवस्तुभूषा चिंता तु कार्या भृगुणा बुधैर्वै।
तमः शनिभ्यामभिचिन्त्यमायुर्रर्केण तातः शशिना च माता॥६२॥
बुधेन बुद्धिः सदनर्क्षसंस्थां गतेन भावेशयुतेन वा स्यात्।
केन्द्रत्रिकोणेषु गतेषु तत्र प्रपश्यता वापि स्वतुंगगेन॥६३॥

स्त्री, वाहन, आभूषण की चिन्ता शुक्र से, राहु-शनि से आयु की चिंता, सूर्य से पिता और चन्द्रमा से माता की चिंता करनी चाहिये॥ ६२॥ बुध से बुद्धि की चिंता, जब ये कारक उन-उन भावों में भावेशों से

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

युत हों तो उन-उन पदार्थों की वृद्धि कहनी चाहिये। सुखेश केन्द्र-त्रिकोण में उच्च में गये हुए ग्रह से दृष्ट हो॥ ६३॥

स्वकीये स्वांशगे स्वोच्चे सुखस्थानस्थितो यदि।
सुखवाहनवृद्धिः स्याच्छंखभेर्यादिवाद्ययुक् ॥६४॥
विचित्रसौधप्राकारं मंडितं गृहमादिशेत्।
कर्माधिपेन सहिते नाथे केन्द्रे कोणेऽवस्थिते ॥६५॥

अपने राशि, उच्च और अपने अंश में होकर सुख स्थान में हो तो विचित्र प्राकार से मंडित गृह होता है॥ ६४॥ यदि सुखेश, कर्मेश से युत होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो तो सुन्दर गृह होता है॥ ६५॥

बन्धुस्थानेश्वरे सौम्ये शुभग्रहनिरीक्षिते।
शशिजे लग्नसंयुक्ते बंधुपूज्यो भवेन्नरः ॥६६॥
मातुः स्थाने शुभयुते तदीशे स्वोच्चराशिगे।
कारके बलसंयुक्ते मातुः दीर्घायुरादिशेत् ॥६७॥

सुखेश शुभग्रह हो और शुभग्रह से देखा जाता हो तथा बुध लग्न में हो तो मनुष्य बंधुपूज्य होता है॥ ६६॥ सुख स्थान में शुभग्रह हो, सुखेश उच्चराशि में हो और मातृकारक वली हो तो माता दीर्घायु होती है॥ ६७॥

सुखेशे केंद्रभावस्थे तथा केन्द्रे स्थितो भृगुः।
शशिजे स्वोच्चराशिस्थे विद्वान् पण्डित एव सः ॥६८॥
सुखे मंदे रवियुते चन्द्रो भाग्यगतो यदि।
लाभस्थानगते भौमे गोमहिष्यादिलाभकृत् ॥६९॥

सुखेश केन्द्र में हो और शुक्र भी केन्द्र में हो, बुध अपनी उच्च राशि में हो तो बालक विद्वान् एवं पंडित होता है॥ ६८॥ सुख स्थान में रवि-शनि हों, चन्द्रमा नवम स्थान में हो और लाभ स्थान में भौम हो तो गाय-भैंस आदि का लाभ होता है॥ ६९॥

लग्नस्थानाधिपे सौम्ये सुखेशे नीचराशिगे।
कारके व्ययराशिस्थे सुखेशे लाभसंयुते।
द्वादशे वत्सरे प्राप्ते लाभो वै वाहनस्य च ॥७०॥
वाहने रविसंयुक्ते स्वोच्चे तद्राशिनायके।
शुक्रेण संयुते तत्र द्वात्रिंशे वाहनं भवेत् ॥७१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नेश शुभग्रह हो, सुखेश नीच राशि में हो, कारक बारहवें भाव में हो और सुखेश ११वें भाव में हो तो॥७०॥ १२वें वर्ष में वाहन का लाभ होता है। सुख भाव में रवि हो, सुखेश अपने उच्चराशि का हो और शुक्र से युक्त हो तो ३२वें वर्ष में वाहन का लाभ होता है॥७१॥

कर्मेशेन युते बंधुनाथे तुङ्गांशसंयुते।
द्विचत्वारिंशके प्राप्ते नरो वाहनभाग्भवेत्॥७२॥
लाभेशे सुखराशिस्थे सुखेशे लाभसंयुते।
द्वादशे वत्सरे प्राप्ते नरो वाहनलाभकृत्॥७३॥

कर्मेश युत होकर सुखेश अपने उच्च राशि में हो तो ४२वें वर्ष में वाहन प्राप्त होता है॥७२॥ लाभेश सुख भाव में और सुखेश लाभ भाव में हो १२वें वर्ष में वाहन का लाभ होता है॥७३॥

चरग्रहसमायुक्ते सुखे तद्राशिनायके।
षष्ठे भौमे व्ययगते मूकत्वं प्राप्यते नरः॥७४॥
भावपस्य शुभत्वे तु फलं ज्ञेयं शुभं बुधैः॥७५॥

भावेश और भाव के शुभता के आधार पर ही शुभफल की प्राप्ति होती है॥७४॥ सुख भाव चरग्रह से युक्त हो तथा सुखेश छठे भाव में और व्ययभाव में भौम हो तो जातक मूक (गूंगा) होता है॥७५॥

अथ पंचमभावफलम्-

षडादित्रयसंस्थे तु सुताधीशो त्वपुत्रता।
केन्द्रत्रिकोणसंस्थे तु पुत्रलाभाभिसंभवः॥७६॥
षष्ठस्थाने सुताधीशे लग्नेशे कुजवेश्मनि।
म्रियते प्रथमापत्यं काकवंध्यत्वमाप्नुयात्॥७७॥

पंचमेश ६।८।१२वें भाव में हो तो सन्तान का अभाव होता है। यदि केन्द्र वा त्रिकोण में हो तो संतान का सुख होता है॥७६॥ छठे भाव में पंचमेश हो और लग्नेश भौम की राशि में हो तो प्रथम संतान नष्ट हो जाती है तथा स्त्री काकवंध्या होती है॥७७॥

सुताधीशो हि नीचस्थः षडादित्रयसंस्थितः।
काकवंध्या भवेन्नारी सुते केतुबुधौ यदि॥७८॥
सुतेशो नीचगो यत्र सुतस्थानं न पश्यति।
सुते सौरिबुधौ स्यातां काकवंध्यत्वमाप्नुयात्॥७९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पंचमेश अपनी नीचराशि का ६।८।१२वें भाव में हो और पाँचवें भाव में केतु-बुध हों तो स्त्री काकवंध्या होती है॥ ७८॥ पंचमेश नीच राशि का हो और पंचम भाव को न देखता हो और पंचम में शनि-बुध हो तो स्त्री काकवंध्या होती है॥ ७९॥

भाग्येशो मूर्तिवर्ती च सुतेशो नीचगो यदि।
सुते केतुबुधौ स्यातां सुतं कष्टाद्विनिर्दिशेत्॥ ८०॥
षडादित्रयसंस्थोऽपि नीचो वाप्यरिसंस्थितः।
पापाक्रांते सुतस्थाने पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत्॥ ८१॥

भाग्येश लग्न में हो, पंचमेश अपनी नीच राशि में हो और पाँचवें भाव में केतु-बुध हों तो कष्ट से पुत्र होता॥ ८०॥ पंचमेश ६।८।१२ में हो अथवा नीच में शत्रु की राशि में हो और पंचम भाव में पापग्रह हो तो कष्ट से पुत्र होता है॥ ८१॥

अथ दत्तकपुत्रयोगः-

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेऽथवा पुनः।
मन्दमान्दियुते दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः॥ ८२॥
पंचमे षडग्रहैर्युक्ते तदीशे व्ययराशिगे।
लग्नेशे दुर्बलो चेत्स्यात्तदा दत्तादयः सुताः॥ ८३॥

पंचम स्थान मे बुध की राशि (३।६) हो अथवा शनि की राशि (१०।११) हो उसमें शनि और गुलिक हो वा उससे देखा जाता हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ ८२॥ पाँचवें भाव में ६ ग्रह हों, पंचमेश १२वें भाव में हो और लग्नेश, चन्द्रमा बलवान् हो तो दत्तक पुत्र से सुख होता है॥ ८३॥

अथ सन्तानयोगमाह-

सुतभवने जीवसौम्ययाते बलसहितेन विलोकितेयुते वा।
बहुसुतजननं वदंति संतः सुतभवनेशबलेन चिन्त्यमेतत्॥ ८४॥

संतान भाव में शुक्र, गुरु, बुध हो तथा बलवान् ग्रह से देखे जाते हों वा युत हों और सुतेश बली हो तो अनेक संतानें होती हैं॥ ८४॥

सुतेशे शशिसंयुक्ते तद्द्रेष्काणगतेऽपि वा
तदा हि कन्यकालाभं प्रवदेन्मतिमान्नरः।
सुतेशे राहुसंयुक्ते सुतस्थानं समाश्रितम्
न बीक्ष्यतेन्दुगुरुणा परजातो भवेन्नरः॥ ८५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुतेश चन्द्रमा से युक्त हो अथवा उसके द्रेष्काण में हो तो अधिक कन्याएँ होती हैं। पञ्चमेश राहु युक्त होकर पञ्चम भाव में हो और उसे चंद्रमा तथा गुरु न देखते हों तो परजात होता हैं॥ ८५॥

सुतेशे नरराशिस्थे राहुणा सहितो शशी।
पुत्रस्थानं गते मंदे परजातं वदेच्छिशुम्॥८६॥
लग्नाद्दशमे चन्द्रे लग्नादष्टमगो गुरुः।
पापयुक्तेऽथ संदृष्टे अन्यबीजं न संशयः॥८७॥

सुतेश पुरुष राशि में हो और चन्द्रमा राहु से युत हो और पंचम स्थान में शनि हो तो दूसरे से उत्पन्न बालक होता है॥ ८६॥ लग्न से दसवें भाव में चन्द्रमा हो तथा लग्न से आठवें भाव में गुरु हो तथा पापग्रह से युत दृष्ट हो तो दूसरे से उत्पन्न बालक होता है॥ ८७॥

पुत्रस्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नाच्चेद् द्वित्रिकोणभे।
गुरुणा संयुते दृष्टे पुत्रभाग्यमुपैति सः॥८८॥
त्रिचतुःपापसंयुक्ते सुते च सौम्यरहिते।
सुतेशे नीचराशिस्थे नीचसंस्थो भवेच्छिशुः॥८९॥

यदि पंचमेश अपनी उच्चराशि में होकर लग्न से २।९।५ भाव में हो और गुरु से युत दृष्ट हो तो पुत्रसुख को भोगने वाला होता है॥ ८८॥ पाँचवें भाव में ३ या ४ पापग्रह हों और शुभग्रह न हों और पंचमेश नीच राशि में हो तो बालक नीच कर्म करने वाला होता है॥ ८९॥

पुत्रप्राप्ति-वियोगसमयश्च-

पुत्रस्थानं गते जीवे तदीशे भृगुसंयुते।
द्वात्रिंशे च त्रयस्त्रिंशे वत्सरे पुत्रलाभकृत्॥९०॥
सुतेशे केन्द्रभावस्थे कारकेण समन्विते।
षट्त्रिंशे त्रिंशदब्दे च पुत्रोत्पत्तिं विनिर्दिशेत्॥९१॥

पंचम स्थान में गुरु हो और पंचमेश शुक्र से युत हो तो ३२ वें वा ३३वें वर्ष में पुत्र का लाभ होता है॥ ९०॥ पंचमेश कारक से युत होकर केन्द्र में हो तो ३६ वर्ष में पुत्र उत्पन्न होता है॥ ९१॥

लग्नाद्भाग्यगते जीवे जीवाद्भाग्यगते भृगौ।
लग्नेशे भृगुसंयुक्ते चत्वारिंशे सुतं लभेत्॥९२॥
पुत्रस्थानं गते राहौ तदीशे पापसंयुते।
नीचराशिगते जीवे द्वात्रिंशे पुत्रमृत्युदः॥९३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्न से नवम स्थान में गुरु हो और गुरु से भाग्य ६वें भाव में शुक्र हो तथा लग्नेश शुक्र से युक्त हो तो ४० वर्ष में पुत्र का लाभ होता है॥ ६२॥ पाँचवे भाव में राहु हो, पंचमेश पाप से युत हो और गुरु अपनी नीच राशि में हो तो ३२वें वर्ष में पुत्र की मृत्यु होती है॥ ६३॥

जीवात् पंचमगे पापे लग्नात् पुत्रं गतेऽपि च।
षड्विंशे च त्रयस्त्रिंशे चत्वारिंशे सुतक्षयः॥६४॥
लग्ने मान्दिसमायुक्ते लग्नेशे नीचराशिगे।
षट्पंचाशदब्देषु पुत्रशोकाकुलो भवेत्॥६५॥

गुरु से पाँचवे भाव में पापग्रह हों और लग्न से पाँचवे भाव में भी पाप ग्रह हों तो २६वें और ४०वें वर्ष में पुत्र का नाश होता है॥ ६४॥ लग्न में गुलिक हो और लग्नेश अपनी नीच राशि में हो तो ५६वें वर्ष में पुत्रशोक होता है॥ ६५॥

संतानसंख्याज्ञानमाह-

चतुर्थे पापसंयुक्ते षष्ठे चैव तथैव हि।
सुतेशे परमोच्चस्थे लग्नेशेन समन्विते॥६६॥
कारके शुभसंयुक्ते दशसंख्यास्तु सूनवः।
परमोच्चगते जीवे धनेशे राहुसंयुते॥६७॥
भाग्येशे भाग्यसंयुक्ते संख्यानां नव सूनवः॥६८॥

यदि ४,६ भाव में पापग्रह हों, सुतेश लग्नेश से युत होकर परम उच्च में हो, सुतभावकारक शुभ ग्रह से युत हो तो दश पुत्र होते हैं॥ ६६॥ गुरु परमोच्च में हो, धनेश राहु से युत हो और भाग्येश भाग्यस्थान में हो तो ६पुत्र होते हैं॥ ६७-६८॥

पुत्रभाग्यगते जीवे सुतेशे बलसंयुते।
धनेशे कर्मराशिस्थे वसुसंख्यास्तु सूनवः॥६९॥
पंचमात् पंचमे मंदे सुतस्थे च तदीश्वरे।
सूनवः सप्तसंख्याश्च द्विगर्भे यमलं भवेत्॥१००॥

पंचम वा भाग्य स्थान में गुरु हों, पंचमेश बली हो और धनेश १० वें स्थान में हो तो ८ पुत्र होते हैं॥ ६९॥ पाँचवे भाव से पंचम में शनि हो, पाँचवे भाव में पंचमेश हो तो ७ पुत्र होते हैं जिनमें २ यमल (जुड़वाँ) होते हैं॥ १००॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वित्तेशे पंचमस्थे च सुतस्थे पंचमाधिपे ।
षट्संख्या च सुतप्राप्तिस्तेषां च त्रिप्रजामृतिः ॥ १०१ ॥
लग्नात्पंचमगे जीवे जीवात्पंचमगे शनौ ।
मंदात्पंचमगे राहौ पुत्रमेकं विनिर्दिशेत् ॥ १०२ ॥

धनेश पाँचवें भाव में, पंचमेश पंचम में हो तो ६ पुत्र होते हैं, जिसमें तीन मर जाते हैं॥ १०१ ॥ लग्न से पाँचवें भाव में गुरु, गुरु से पाँचवें भाव में शनि हों, शनि से पाँचवें राहु हो तो १ पुत्र होता है॥ १०२॥

पंचमे पापसंयुक्ते जीवात्पंचमगे शनौ ।
सुतेशे भौमसंयुक्ते लग्नेशे धनसंगते ।
जातं जातं विनाशं च दीर्घायुश्चैव मानवः ॥ १०३ ॥

पंचम में पापग्रह हो और गुरु से पांचवें भाव में शनि हो, पंचमेश भौम से युक्त हो, लग्नेश धन भाव में हो तो जितने बालक उत्पन्न हों सभी मर जावें॥ १०३॥

अथ षष्ठभावफलम्-

षष्ठाधिपोऽपि पापश्चेद् देहे वाप्यष्टमे स्थितः ।
तदा व्रणो भवेद्देहे षष्ठस्थानेऽप्ययं विधिः ॥ १०४ ॥
एवं पित्रादिभावेशास्तत्तत्कारकसंयुताः ।
व्रणाधिपयुताश्चापि षष्ठाष्टमयुता यदि ॥ १०५ ॥

षष्ठेश (६ठें भाव का स्वामी) पापग्रह हो और जन्मलग्न वा आठवें भाव में बैठा हो तो शरीर में व्रण (घाव) के चिह्न होते हैं, छठें भाव में हो तो भी वही फल होता है॥ १०४॥ इसीं प्रकार पिता आदि भावेशों के साथ षष्ठेश से युक्त होकर ६।८ भाव में हो तो उनके शरीर में भी व्रण के चिह्न कहना चाहिये॥ १०५॥

तेषामपि व्रणं वाच्यमादित्ये च शिरोव्रणम् ।
इन्दुना च मुखे कंठे भौमज्ञेन च नाभिषु ॥ १०६ ॥
गुरुणा नासिकायां च भृगुणा नयने पदे ।
शनिना राहुणा कुक्षौ केतुना च तथा भवेत् ॥ १०७ ॥
लग्नाधिपः कुजक्षेत्रे बुधस्य यदि संस्थितः ।
यत्र कुत्र स्थितो ज्ञेन वीक्षितो मुखरुक्प्रदः ॥ १०८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य षष्ठेश हो तो शिर में चन्द्रमा हो तो मुख या कंठ में, भौम-बुध हों तो नाभि में॥ १०६॥ गुरु हो तो नाक में, शुक्र हों तो आँख और पैर में, शनि-राहु हों तो कुक्षि (कोख) में, केतु से भी कुक्षि में चिह्न कहना चाहिए॥ १०७॥ लग्नेश भौम की राशि में वा बुध की राशि में होकर कहीं पर बैठा हो तथा बुध से देखा जाता हो तो मुख में रोग होता है॥ १०८॥

कुष्ठयोगः -

लग्नाधिपो कुजबुधौ चन्द्रेण यदि संयुतौ।
राहुणा शनिना सार्धं कुष्ठं तत्र विनिर्दिशेत्॥१०९॥
लग्नाधिपं विना लग्ने स्थितश्चेत्तमसा शशी।
श्वेतकुष्ठं तथा कृष्णकुष्ठं च शनिना सह॥११०॥

यदि भौम या बुध लग्नेश होकर चन्द्रमा, राहु वा शनि से युत हो तो कुष्ठ रोग होता है॥ १०९॥ यदि लग्नेश को छोड़कर चन्द्रमा, राहु के साथ लग्न में हो तो सफेद कुष्ठ होता है। शनि के साथ हो तो काला कुष्ठ होता है॥ ११०॥

गण्डादिरोगयोगाः-

कुजेन रक्तकुष्ठं स्यात्तत्तदेवं विचारयेत्।
लग्ने षष्ठाष्टमाधीशौ रविणा यदि संस्थितौ॥१११॥
ज्वरगण्डः कुजे ग्रंथिः शस्त्रव्रणमथापि वा।
बुधेन पित्तं गुरुणा रोगाभावं विनिर्दिशेत्॥११२॥

भौम के साथ हो तो लाल कुष्ठ होता है। यदि सूर्य से युत होकर षष्ठेश अष्टमेश लग्न में हों तो ज्वर से उत्पन्न गण्ड रोग, भौम से युत हो तो गठिया व शस्त्र से आघात, बुध हो तो पित्त से उत्पन्न गण्ड और गुरु हो तो रोग का अभाव कहना चाहिए॥ ११२॥

स्त्रीभिः शुक्रेण शनिना वायुना संयुतो यदि।
गण्डश्चाण्डालतो नाभौ तमः केत्वोर्युते भयम्॥११३॥
चन्द्रेण गण्डः सलिलैः कफश्लेष्मादिना भवेत्।
एवं पित्रादिभावानां तत्तत्कारकयोगतः॥११४॥

शुक्र से युत हो तो स्त्रीजनित रोग, शनि से युत हो तो वायुजनित गण्ड, राहु से युत हो तो चांडाल से नाभि में गंड रोग और केतु से युत हो तो भय होता है॥ ११३॥ चन्द्रमा से युत हो तो जल से रोग तथा कफरोग

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

होता है। इसी प्रकार पिता आदि के भावेशों से उन लोगों के भी रोग का विचार करना चाहिए॥ ११४॥

रोगप्राप्तिसमयः-

गण्डो तेषां भवेदेवमूह्यमत्र मनीषिभिः।
रोगस्थानगते पापे तदीशे पापसंयुते॥ ११५॥
राहुणा संयुते मंदे सर्वदा रोगसंयुतः।
रोगस्थानगते भौमे तदीशे रंध्रसंयुते।
षड्वर्षे द्वादशे वर्षे ज्वररोगी भवेन्नरः॥ ११६॥

छंठे स्थान में पापग्रह हो, षष्ठेश पापयुत हो, राहु से शनि युत हो तो सर्वदा रोगी होता है॥ ११५॥ षष्ठ स्थान में भौम हो और षष्ठेश आठवें भाव में हो तो छठे-बारहवें वर्ष में ज्वर रोग से युक्त होता है॥ ११६॥

षष्ठस्थानगते जीवे तद्गृहे चन्द्रसंयुते।
द्वाविंशकोनविंशके कुष्ठरोगं विनिर्दिशेत्॥ ११७॥
रोगस्थानं गतो राहुः केन्द्रे मान्दिसमन्वितः।
लग्नेशे नाशराशिस्थे षड्विंशे क्षयरोगता॥ ११८॥

छठे भाव में गुरु हो और गुरु की राशि में चन्द्रमा हो तो २२वें या १९वें वर्ष में कुष्ठरोग होता है॥ ११७॥ छठे भाव में राहु हो, केन्द्र में गुलिक हो, लग्नेश आठवें भाव में हो तो २६वें वर्ष में क्षयरोग होता है॥ ११८॥

व्ययेशे रोगराशिस्थे तदीशे व्ययराशिगे।
त्रिंशद्वर्षैकोनवर्षे गुल्मरोगं विनिर्दिशेत्॥ ११९॥
रिपुस्थानगते चन्द्रे शनिना संयुते यदि।
पंचपंचाशताब्देषु रक्तकुष्ठं विनिर्दिशेत्॥ १२०॥

व्ययेश छठे भाव में हो और षष्ठेश बारहवें भाव में हो तो ३०वें वा २९वें वर्ष में गुल्म रोग होता है॥ ११९॥ छठे भाव में शनि से युत चन्द्रमा हो तो ५५वें वर्ष में रक्तकुष्ठ होता है॥ १२०॥

लग्नेशे लग्नराशिस्थे मंदे शत्रुसमन्विते।
एकोनषष्टिवर्षे तु वातरोगार्दितो भवेत्॥ १२१॥
रंध्रेशे रिपुराशिस्थे व्ययेशे लग्नसंस्थिते।
चन्द्रे षष्ठेशसंयुक्ते वसुवर्षे मृगाद्भयम्॥ १२२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नेश लग्न में हों और शनि छठे भाव में हो तो ५९वें वर्ष में वातरोग होता है॥ १२१॥ अष्टमेश छठे भाव में हो और व्ययेश लग्न में हो, चन्द्रमा षष्ठेश से युत हो तो ८वें वर्ष में मृग से भय होता है॥ १२२॥

षष्ठाष्टमगतो राहुस्तस्मादष्टगते शनौ॥ १२३॥
बालस्य जन्मतो विज्ञ आद्ये चैव द्वितीयके।
वत्सरेऽग्निभयं तस्य त्रिवर्षे पक्षिदोषभाक्॥ १२४॥
षष्ठाष्टमगते सूर्ये तद्व्यये चन्द्रसंयुते।
पंचमे नवमेऽब्दे च जलभीतिं विनिर्दिशेत्॥ १२५॥

छठे, आठवें भाव में राहु हो, उससे आठवें भाव में शनि हो तो बालक को १, २ वर्ष में अग्नि का भय और ३ वर्ष में पक्षी का भय होता है॥ १२३-१२४॥ ६, ८ भाव में सूर्य हो, उससे बारहवें चन्द्रमा हो तो ५, ९ वर्ष में जल से भय होता है॥ १२५॥

अष्टमे मंदसंयुक्ते रंध्राद्वे द्वादशे कुजः।
त्रिंशांके च दशांके च स्फोटकादि विनिर्दिशेत्॥ १२६॥
रंध्रेशे राहुसंयुक्ते तदंशे रंध्रकोणगे।
द्वाविंशेऽष्टादशे वर्षे ग्रंथिमेहादिपीडनम्॥ १२७॥

आठवें भाव में शनि हो, उससे बारहवें भाव में भौम हो तो ३०वें वा १०वें वर्ष में चेचक आदि का भय होता है॥ १२६॥ अष्टमेश, राहु से युत होकर अपने ही अंश में आठवें ५।९ भाव में हो तो २२वें वा १८वें वर्ष में गठिया, प्रमेह आदि से पीड़ा होती है॥ १२७॥

लाभेशे रिपुभावस्थे तदीशे लाभराशिगे।
एकत्रिंशदेकचत्वारि शत्रुमूलाद्धनक्षयः॥ १२८॥
सुतेशे रिपुभावस्थे षष्ठेशे गुरुसंयुते।
व्ययेशे लग्नभावस्थे तस्य पुत्रो रिपुर्भवेत्॥ १२९॥

लाभेश छठे भाव में हो और षष्ठेश लाभ भाव में हो तो ३१वें, ४१वें वर्ष में शत्रु द्वारा द्रव्य का व्यय होता है॥ १२८॥ पंचमेश छठे भाव में हो, षष्ठेश गुरु से युत हो और व्ययेश लग्न में हो तो उसका पुत्र शत्रु होता है॥ १२९॥

लग्नेशे षष्ठराशिस्थे तदीशे षष्ठराशिगे।
दशमैकोनविंशे च शुनकाद्भीतिरुच्यते॥ १३०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नेश छठे भाव में हो, षष्ठेश षष्ठ भाव में हो तो १०वें वर्ष में कुत्ता से भय होता है॥ १३०॥

अथ सप्तमभावफलम्-

कलत्रपो विनास्वर्क्षषडादित्रयसंस्थितः।
रोगिणीं कुरुते नारीं तथा तुंगादिकं विना॥ १३१॥
सप्तमे तु स्थिते शुक्रेऽतीवकामी भवेन्नरः।
यत्र कुत्र स्थिते पापयुते स्त्रीमरणं भवेत्॥ १३२॥

सप्तमेश यदि अपनी राशि से भिन्न राशि में ६।८।१२ भाव में नीचादि राशि में हो तो स्त्री रोगिणी होती है॥ १३१॥ सातवें स्थान में शुक्र हो तो पुरुष अत्यन्त कामी होता है। कहीं किसी भाव में शुक्र पापग्रह से युत हो तो स्त्री की मृत्यु होती है॥ १३२॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः।
पत्नी योगस्थिता तस्य भूतानि म्रियतेऽचिरात्॥ १३३॥
षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसम्भवः।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति॥ १३४॥

सप्तमस्थानगत राहु को दो पापग्रह देखते हों, तो पत्नी होकर मर जाती है॥ १३३॥ छठे स्थान में मङ्गल, सातवें राहु, अष्टम में शनि हो तो उसकी स्त्री मर जाती है॥ १३४॥

दाराधिपः पुण्यग्रहेण युक्तो दृष्टोऽपि वा पूर्णबलः प्रसन्नः।
सौभाग्ययुक्तो गुणवान्प्रभुश्च दाता विभोग्यं बहुधान्ययुक्तः॥१३५॥
कलत्रेशेऽस्तनीच - शत्रुराशिगतेष्वपि ।
बहुभार्यान्तरं विद्याद्रोगिणीं च विशेषतः॥१३६॥

यदि सप्तमेश शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो, पूर्ण बलवान् हो, अस्तंगत आदि न हो तो पुरुष भाग्यवान्, गुणी, दाता, धन-धान्य से युक्त होता है॥ १३५॥ सप्तमेश अस्तंगत हो, नीचराशि में हो, शत्रुराशि में हो तो अनेक स्त्री रोगिणी होती हैं॥ १३६॥

परमोच्चगते सप्ताधिनाथे मंदराशौ शुभखेचरेण दृष्टे।
अथवा भृगुसदने तुंगे बहुभार्या प्रवदन्ति बुद्धिमन्तः॥ १३७॥

सप्तमेश परमोच्च में होकर शनि की राशि में शुभग्रह से देखा जाता हो अथवा शुक्र की राशि में उच्च का हो तो अनेक स्त्रियाँ होती है॥ १३७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वंध्यासंगो भवेद्भानौ चन्द्रे राशिसमस्त्रियः ।
कुजे रजस्वलासंगो वंन्ध्यासंगश्च कीर्त्तितः ॥ १३८॥

सातवें सूर्य हों तो विधवा से सम्बन्ध होता है, चन्द्रमा हो तो सप्तमस्थ राशि की जाति से, भौम हो तो रजस्वला और बंध्या से॥ १३८॥

बुधे वेश्या च हीना च वणिक् स्त्री वा प्रकीर्त्तितः ।
गुरोर्ब्राह्मणभार्यास्याद् गर्भिणीसङ्ग एव च ॥ १३९॥

बुध हो तो वेश्या, हीना या बनिया की स्त्री से, गुरु हो तो ब्राह्मणी वा गर्भिणी से॥ १३९॥

हीना च पुष्पिणी वाच्या मन्दराहुफणीश्वरैः ।
कुजेऽथ सुस्तनी मन्दे व्याधिदौर्बल्यसंयुता ।
कटिनोर्ध्वकुचार्ये च शुक्रे स्थूलोत्तमस्तनी ॥ १४०॥
पापे द्वादशकामस्थे क्षीणचन्द्रस्तु पंचमे ।
जातश्च भार्यावश्यः स्यादिति जातिविरोधकृत् ॥ १४१॥

शनि-राहु-केतु हों तो नीचजाति और रजोधर्मवती से सम्पर्क होता है, सप्तम में भौम हो तो अच्छे स्तनोंवाली, शनि हो तो रोगिणी, दुर्बल, भौम-गुरु हो तो कठिन ऊँचे कुचों वाली, शुक्र हो तो मोटे उन्नत कुचों वाली स्त्री होती है॥ १४०॥ १२वें, ७वें भाव में पापग्रह हों और क्षीण चन्द्रमा पाँचवें भाव में हो तो पुरुष स्त्री के वश में होता है और जाति से विरोध करने वाला होता है॥ १४१॥

जामित्रे मंदभौमे च तदीशे मन्द भूमिगे ।
वेश्या वा जारिणी वापिं तस्य भार्या न संशयः ॥ १४२॥
भौमांशकगते शुक्रे भौमक्षेत्रगतेऽथवा ।
भौमयुक्ते च दृष्टे वा भगचुम्बनतत्परः ॥ १४३॥

सातवें भाव में शनि-भौम हों अथवा सप्तमेश शनि-भौम के गृह में हो तो उसकी स्त्री वेश्या या जारिणी होती है। यदि शुक्र भौम के नवांश में हो वा भौम की राशि में हो अथवा भौम से युत वा दृष्ट हो तो पुरुष भगचुम्बन करने वाला होता है॥ १४२-१४३॥

मंदांशकगते शुक्रे मंदक्षेत्रगतेऽपि वा ।
मंदयुक्ते च दृष्टे च शिश्नचुम्बनतत्परः ॥ १४४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दारेशे स्वोच्चराशिस्थे दारे शुभसमन्विते ।
दारे लग्नेशसंयुक्ते सत्कलत्रसमन्वितः ॥ १४५ ॥

शुक्र-शनि के नवाँश में अथवा शनि की राशि में हो, शनि से युत वा दृष्ट हो तो शिश्न (लिंग) चुम्बन करने वाला होता है॥ १४४॥ सप्तमेश अपनी उच्चराशि में हो और सप्तम में शुभग्रह हों तथा लग्नेश भी सातवें में हो तो अच्छी स्त्री से युक्त होता है॥ १४५॥

कलत्रनाथे रिपुनीचसंस्थे मूढोऽथवा पापनिरीक्षिते वा ।
कलत्रभे पापयुते च दृष्टे कलत्रहानिं प्रवदंति संतः ॥ १४६ ॥
षष्ठाष्टमव्ययस्थे चेन्मदेशो दुर्बलो यदि ।
नीचराशिगतो वापि दारनाशं विनिर्दिशेत् ॥ १४७ ॥

सप्तमेश शत्रु राशि में वा अपनी नीचराशि में हो अथवा अस्तंगत हो, पापग्रह से युत वा दृष्ट हो और सप्तमभाव पापयुक्त वा पापदृष्ट हो तो स्त्री की हानि होती है॥ १४६॥ सप्तमेश दुर्बल होकर ६।८।१२वें भाव में हो वा नीचराशि में हो तो स्त्री का नाश होता है॥ १४७॥

कलत्रस्थानगे चन्द्रे तदीशे व्ययराशिगे ।
कारको बलहीनश्च दारसौख्यं न विद्यते ॥ १४८ ॥

सप्तमभाव में चन्द्रमा और सप्तमेश १२वें भाव में हो और कारक निर्बल हो तो स्त्री का सुख नहीं होता है॥ १४८॥

भार्याधिपे नीचगृहे च पापे पापर्क्षगे वा बहुपापयुक्ते ।
क्लीबे ग्रहे सप्तमराशिसंस्थे तस्योदयांशे द्विकलत्रसिद्धिः ॥ १४९ ॥

सप्तमेश नीचराशि में हो और पापग्रह हो, पापग्रह की राशि में हो वा पापग्रह से युत हो और नपुंसक ग्रह सातवें भाव में हो वा नपुंसक की राशि सातवें भाव में हो तो २ स्त्रियाँ होती हैं॥ १४९॥

कलत्रस्थानगे भौमे शुक्रे जामित्रगे शनौ ।
लग्नेशे रंध्रराशिस्थे कलत्रत्रयवान् भवेत् ॥ १५० ॥
द्विस्वभावगते शुक्रे स्वोच्चे तद्राशिनायके ।
दारेशे बलसंयुक्ते बहुदारसमन्वितः ॥ १५१ ॥

सातवें भाव में भौम-शुक्र-शनि हों और लग्नेश आठवें भाव में हो तो ३ स्त्रियाँ होती हैं।१५०। शुक्र द्विस्वभाव राशि में हो, द्विस्वभाव राशि का स्वामी अपने उच्चमें हो और सप्तमेश बलीहो तो अनेकस्त्रियाँ होती हैं।१५१।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विवाहसमयमाह-

दारेशे शुभराशिस्थे स्वोच्चस्वर्क्षगतो भृगुः।
पंचमे नवमेऽब्दे च विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१५२॥
दारस्थानगते सूर्ये तदीशे भृगुसंयुते।
सप्तमैकादशे वर्षे विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१५३॥

सप्तमेश शुभग्रह की राशि में हो, शुक्र अपने उच्च या अपनी राशि में हो तो पाँचवें या नवें वर्ष में विवाह होता है॥ १५२॥ सप्तम भाव में सूर्य हो, सप्तमेश शुक्र से युत हो तो ७वें या १२वें वर्ष में विवाह होता है॥ १५३॥

कुटुम्बस्थानगे शुक्रे दारेशे लाभराशिगे।
दशमे षोडशाब्दे च विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१५४॥
लग्नकेन्द्रगते शुक्रे लग्नेशे मंदराशिगे।
वत्सरैकादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥१५५॥

दूसरे भाव में शुक्र हो और सप्तमेश ११वें भाव में हो तो विवाह १०वें या १६वें वर्ष में होता है॥ १५४॥ लग्न वा केन्द्र में शुक्र हो और लग्नेश शनि की राशि में हो तो, ११वें वर्ष में विवाह होता है॥ १५५॥

लग्नात्केन्द्रगते शुक्रे तस्मात्कामगते शनौ।
द्वादशैकोनविंशे च विवाहः प्रायशो भवेत् ॥१५६॥
चन्द्राज्ञामित्रगे शुक्रे शुक्राज्ञामित्रगे शनौ।
वत्सरेऽष्टादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥१५७॥

लग्न से केन्द्र में शुक्र हो, उससे सातवें भाव में शनि हो तो १२वें वा १९ वें वर्ष में विवाह होता है॥ १५६॥ चन्द्रमा से सातवें भाव में शुक्र और शुक्र से सातवें भाव में शनि हो तो १८वें वर्ष में प्रायः विवाह होता है॥१५७॥

धनेशे लाभराशिस्थे लग्नेशे कर्मराशिभे।
अब्दे पंचदशे जाते विवाहं लभते नरः ॥१५८॥
धनेशे लाभराशिस्थे लाभेशे धनराशिगे।
अब्दत्रयोदशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥१५९॥

द्वितीयेश लाभभाव में हो और लग्नेश १०वें भाव में हो तो १५वें वर्ष में विवाह होता है॥१५८॥ धनेश (द्वितीयेश) लाभभाव में और लाभेश (११भाव का स्वामी) धनभाव में हो तो १३ वर्ष में विवाह होता है॥१५९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रंध्राज्ञामित्रगे शुक्रे तदीशे भौमसंयुते।
द्वाविंशे सप्तविंशाब्दे विवाहो लभते नरः ॥१६०॥
दारांशकगते लग्ननाथे दारेश्वरे व्यये।
त्रयोविंशे च षड्विंशे विवाहं लभते नरः ॥१६१॥

अष्टमभाव से सातवें भाव में शुक्र हो और सप्तमेश भौम से युत हो तो २२वें या २७वें वर्ष में विवाह होता है॥ १६०॥ सप्तम भाव के नवांश में लग्नेश हो और सप्तमेश बारहवें भाव में हो तो २३ वें या २६वें वर्ष में विवाह होता है॥ १६१॥

रंध्रांशे दारराशिस्थे लग्नांशे भृगुसंयुते।
पंचविंशे त्रयस्त्रिंशे विवाहं लभते नरः ॥१६२॥
भाग्याद्भाग्यगते शुक्रे तद्व्यये राहुसंयुते।
एकत्रिंशात्त्रयस्त्रिंशे दारलाभं विनिर्दिशेत् ॥१६३॥

अष्टम भाव की नवांश राशि सातवें भाव में हो और लग्न के नवांश में शुक्र युत हो तो २५वें या ३३वें वर्ष में विवाह होता ॥ १६२॥ भाग्यस्थान से भाग्यभाव में शुक्र हो, उससे बारहवें भाव में राहु हो तो ३१वें वा ३३वें वर्ष में विवाह होता है॥ १६३॥

भाग्याज्ञामित्रगे शुक्रे तद्द्यूने दारनायके।
त्रिंशे वा सप्तत्रिंशाब्दे विवाहं लभते नरः ॥१६४॥

भाग्यभाव से ७वें भाव में शुक्र हो, उससे सातवें भाव में सप्तमेश हो तो ३०वें वा ३७वें वर्ष में विवाह होता है॥ १६४॥

स्त्रीमृत्युसमयमाह-

दारेशे नीचराशिस्थे शुक्रे रंध्रारिसंयुते।
अष्टादशे त्रयस्त्रिंशे वत्सरे दारनाशनम् ॥१६५॥
मदेशे नाशराशिस्थे व्ययेशे मदराशिगे।
तस्य चैकोनत्रिंशाब्दे दारनाशं विनिर्दिशेत् ॥१६६॥

सप्तमेश अपनी नीच राशि में हो और शुक्र ८,६ भाव में हो तो १८वें या ३३ वें वर्ष में स्त्री का नाश होता है॥ १६५॥ सप्तमेश ८वें भाव में और व्ययेश सातवें भाव में हो तो २९वें वर्ष में स्त्री का नाश होता है॥ १६६॥

कुटुम्बस्थानगे राहुः कलत्रे भौमसंयुते।
पाणिग्रहे विवाहे च सर्पदंष्ट्रे वधूमृतिः ॥१६७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रंध्रस्थानगते शुक्रे तदीशे सौरिराशिगे ।
द्वादशैकोनविंशाब्दे दारनाशं विनिर्दिशेत् ॥ १६८ ॥

दूसरे भाव में राहु हो और सातवें भाव में भौम हो तो विवाह के बाद ही सर्प के काटने से स्त्री की मृत्यु होती है॥ १६७॥ आठवें भाव में शुक्र हो और अष्टमेश शनि की राशि में हो तो १२वें या २९वें वर्ष में स्त्री की मृत्यु होती है॥ १६८॥

लग्नेशे नीचराशिस्थे धनेशे निधनं गते ।
त्रयोदशे तु संप्राप्ते कलत्रस्य मृतिं वदेत् ॥ १६९ ॥
शुक्राज्ञामित्रगे चन्द्रे चन्द्राज्ञामित्रगे बुधे ।
रंध्रेशे सुतभावस्थे प्रथमं दशमाब्दिकम् ॥ १७० ॥
द्वाविंशे च द्वितीयं च त्रयस्त्रिंशं तृतीयकम् ।
विवाहं लभते मर्त्यो नात्र कार्या विचारणा ॥ १७१ ॥

लग्नेश अपनी नीच राशि में हो और धनेश आठवें भाव में हो तो १३वें वर्ष में स्त्री की मृत्यु होती है॥ १६९॥ शुक्र से सातवें भाव में चन्द्रमा हो और चन्द्रमा से सातवें भाव में बुध हो तथा अष्टमेश पाँचवें भाव में हो तो पहला विवाह १०वें वर्ष में, दूसरा २२वें वर्ष में और तीसरा ३३वें वर्ष में होता है॥ १७०-१७१॥

अथाष्टमभावफलमाह-

आयुःस्थानाधिपः पापैः सहैव यदि संस्थितः ।
करोत्यल्पायुषं जातं लग्नेशोऽप्यत्र संस्थितः ॥ १७२ ॥
एवं हि शनिना चिंता कार्या तर्कैर्विचक्षणैः ।
कर्माधिपेन च तथा चिन्तनं कार्यमायुषः ॥ १७३ ॥

अष्टमेश पापग्रह और लग्नेश के साथ आठवें भाव में हो तो जातक अल्पायु होता है॥ १७२॥ इसी प्रकार तर्क द्वारा शनि और कर्मेश से भी आयु का विचार करना चाहिए॥ १७३॥

षष्ठे व्ययेऽपि षष्ठेशो व्ययाधीशो रिपौ व्यये ।
लग्नेऽष्टमे स्थितो वापि दीर्घमायुः प्रयच्छति ॥ १७४ ॥
स्वस्थाने स्वांशके वापि मित्रेशे मित्रमंदिरे ।
दीर्घायुषं करोत्येव लग्नेशोऽष्टमपः पुनः ॥ १७५ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठेश ६ या १२भाव में हो और व्ययेश ६ या १२ भाव में हो अथवा लग्न वा आठवें भाव में हो तो दीर्घायु होता है॥ १७४॥ लग्नेश, अष्टमेश और पंचमेश अपने भाव में अपने नवांश में वा मित्र की राशि में हो तो दीर्घायु होता है॥ १७५॥

लग्नाष्टमकर्मेशमंदाः केन्द्रत्रिकोणयोः।
लाभे वा संस्थितास्तद्वत् दिशेयुर्दीर्घमायुषम् ॥ १७६॥
अष्टमाधिपतौ केन्द्रे लग्नेशे बलवर्जिते।
विंशद्वर्षाण्यसौ जीवेद् द्वात्रिंशत्परमायुषम् ॥ १७७॥

लग्नेश, अष्टमेश, कर्मेश और शनि केन्द्र-त्रिकोण और लाभ भाव में हों तो दीर्घायु होता है॥ १७६॥ अष्टमेश केन्द्र में हो और लग्नेश निर्बल हो तो २० वर्ष वा ३२ वर्ष की आयु होती है॥ १७७॥

रंध्रेशे नीचराशिस्थे रंध्रे पापग्रहैर्युते।
लग्नेशे दुर्बले यस्य अल्पायुर्भवति ध्रुवम् ॥ १७८॥
रंध्रेशे पापसंयुक्ते रंध्रे पापग्रहैर्युते।
व्यये क्रूरग्रहैर्जार्ते जातमात्रं मृतिर्भवेत् ॥ १७९॥

अष्टमेश अपनी नीच राशि में हो, अष्टम भाव में पापग्रह हों और लग्नेश दुर्बल हो तो अल्पायु होती है॥ १७८॥ अष्टमेश पापग्रह से युक्त हो, आठवें भाव में पापग्रह हों और बारहवें भाव में पापग्रह हों तो उत्पन्न होते ही मृत्यु हो जाती है॥ १७९॥

केन्द्रत्रिकोणपापस्थाः षष्ठाष्टेषु शुभा यदि।
लग्ने रंध्रेशनीचस्थे जातः सद्यो मृतो भवेत् ॥ १८०॥
पंचमे पापसंयुक्ते रंध्रेशे पापसंयुते।
रंध्रे पापग्रहैर्युक्ते अल्पायुष्यः प्रजायते ॥ १८१॥

केन्द्र-त्रिकोण में पापग्रह हों, ६।८ भाव में शुभग्रह हों, लाभ में अष्टमेश अपनी नीचराशि का हो तो शीघ्र ही मृत्यु होती है॥ १८०॥ पाँचवें भाव में पापग्रह हो, अष्टमेश पापग्रह से युत हो और अष्टमभाव पापग्रह से युत हों तो अल्पायु होता है॥ १८१॥

रंध्रेशे रंध्रराशिस्थे चन्द्रे पापसमन्विते।
शुभदृग्रहिते विद्वन् मासांते च मृतिर्भवेत् ॥ १८२॥
लग्नेशे स्वोच्चराशिस्थे चन्द्रे लाभसमन्विते।
रन्ध्रस्थानगते जीवे दीर्घायुष्यं न संशयः ॥ १८३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अष्टमेश आठवें भाव में और चन्द्रमा पापयुक्त हो, शुभग्रह से न देखा जाता हो तो मास के अन्त में मृत्यु होती है॥ १८२॥ लग्नेश अपनी उच्चराशि में हो और चन्द्रमा लाभभाव में हो तथा आठवें भाव में गुरु हो तो दीर्घायु होता है, इसमें संशय नहीं है॥ १८३॥

अथ नवमभावफलमाह-

गुरुस्थानगते जीवे तदीशे केन्द्रसंस्थिते।
लग्नेशे बलसंयुक्ते बहुभाग्याधिपो भवेत्॥ १८४॥
भाग्येशे बलसंयुक्ते भाग्ये भृगुसमन्विते।
लग्नात्केंद्रगते जीवे पितृभाग्यसमन्वितः॥ १८५॥

नवम स्थान में गुरु हो, नवमेश केन्द्र में हो और लग्नेश बलवान् हो तो बड़ा ही भाग्यवान् होता है॥ १८४॥ भाग्येश बलवान् हो, भाग्यस्थान में शुक्र हो, लग्न से केन्द्र में गुरु हो तो पिता भाग्यवान् होता है॥ १८५॥

भाग्यस्थानाद् द्वितीये वा सुखे भौमसमन्विते।
भाग्येशे नीचराशिस्थे पिता निर्धन एव च॥ १८६॥
भाग्येशे परमोच्चस्थे भाग्यांशे जीवसंयुते।
लग्नाच्चतुष्टये शुक्रे पिता दीर्घायुरादिशेत्॥ १८७॥

भाग्यस्थान से दूसरे वा चौथे स्थान में भौम हो और भाग्येश नीच राशि में हो तो पिता निर्धन होता है॥ १८६॥ भाग्येश परम उच्चांश में हो, गुरु भाग्यांश में हो, लग्न से केन्द्र में शुक्र हो तो पिता दीर्घायु होता है॥ १८७॥

भाग्येशे केन्द्रभावस्थे गुरुणा च निरीक्षिते।
तत्पिता वाहनैर्युक्तो राजा वा तत्समो भवेत्॥ १८८॥
भाग्येशे कर्मभावस्थे कर्मेशे भाग्यराशिगे।
शुभयोगे धनाढ्यश्च कीर्तिमांस्तत्पिता भवेत्॥ १८९॥
परमोच्चांशगे सूर्ये भाग्येशे लाभसंस्थिते।
धर्मिष्ठो नृपवात्सल्यः पितृभक्तो भवेन्नरः॥ १९०॥

भाग्येश केन्द्र में गुरु से देखा जाता हो तो उसका पिता वाहन से युक्त राजा वा उसके समान होता है॥ १८८॥ भाग्येश कर्मभाव में हो, कर्मेश भाग्यभाव में हो और शुभग्रह से किसी प्रकार का संपर्क हो तो उसका पिता धनी और कीर्त्तिमान् होता है॥ १८९॥ सूर्य परम उच्चांश में हो भाग्येश लाभभाव में हो तो, जातक धर्मिष्ठ, राजा का प्रेमपात्र और पितृभक्त होता है॥ १९०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नात्त्रिकोणगे सूर्ये भाग्येशे सप्तमस्थिते ।
गुरुणा सहिते दृष्टे पितृभक्तिसमन्वितः ॥ १६१ ॥
भाग्येशे धनभावस्थे धनेशे भाग्यराशिगे ।
द्वात्रिंशात्परतो भाग्यं वाहनं कीर्तिसंभवः ॥ १६२ ॥

लग्न से त्रिकोण में सूर्य हो, भाग्येश धनभाव में और धनेश भाग्यभाव में हो तो ३२वें वर्ष के बाद भाग्य, वाहन और कीर्ति का लाभ होता है॥१६१-१६२॥

पितृवैरयोगः-

लग्नेशे भाग्यराशिस्थे षष्ठेशे भाग्यराशिगे ।
अन्योन्यवैरं ब्रुवते जनकः कुत्सितो भवेत् ॥ १६३ ॥

लग्नेश भाग्यभाव में हो और षष्ठेश भाग्यभाव में हो तो परस्पर पिता-पुत्र में वैर होता है तथा पिता निन्दनीय होता है॥ १६३॥

भिक्षाशनयोगः-

कर्माधिपेन सहितो विक्रमेशो च निर्बलः ।
नीचास्तगो च भाग्येशो योगो भिक्षाशनप्रदः ॥ १६४ ॥

यदि निर्बल तृतीयेश कर्मेश से युक्त हो और भाग्येश नीच वा अस्त हो तो जातक भिक्षा से उदरपूर्त्ति करने वाला होता है॥ १६४॥

पितृमरणयोगमाह-

षष्ठाष्टमव्यये भानू रंध्रेशे भाग्यसंयुते ।
व्ययेशे लग्नराशिस्थे षष्ठेशे पंचमे स्थिते ।
जातस्य जननात्पूर्वं जनकस्य मृतिं वदेत् ॥ १६५ ॥
रंध्रस्थानगते सूर्ये रंध्रेशे भाग्यभावगे ।
जातस्य प्रथमाब्दे च पितुर्मरणमादिशेत् ॥ १६६ ॥

सूर्य ६।८।१२ भाव में हो और अष्टमेश भाग्य भाव में हो तथा व्ययेश लग्न में और षष्ठेश पाँचवें भाव में हो तो बालक के जन्म से पूर्व ही पिता की मृत्यु हो जाती है॥ १६५॥ आठवें स्थान में सूर्य हो और अष्टमेश भाग्यभाव में हो तो बालक के पहले वर्ष में ही पिता की मृत्यु होती है॥ १६६॥

व्ययेशे भाग्यराशिस्थे नीचांशे भाग्यनायके ।
तृतीये षोडशे वर्षे जनकस्य मृतिर्भवेत् ॥ १६७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नेशे नाशराशिस्थे रंन्ध्रे भानुसंयुते।
द्वितीये द्वादशे वर्षे पितुर्मरणमादिशेत् ॥१९८॥

व्ययेश भाग्यभाव में, भाग्येश नीचांश में हो तो तीसरे वा सोलहवें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ १९७॥ लग्नेश आठवें भाव में और अष्टमेश सूर्य से युत हो तो दूसरे वा १२वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ १९८॥

भाग्याद्रन्ध्रगते राहौ भाग्याद्भाग्यगते रवौ।
राहुणा सहिते सूर्ये चन्द्राद्भाग्यगते शनौ।
सप्तमैकोनविंशाब्दे तातस्य मरणं भवेत् ॥१९९॥
भाग्येशे व्ययराशिस्थे व्ययेशे भाग्यराशिगे।
चतुश्चत्वारिवर्षाच्च पितुर्मरणमादिशेत् ॥२००॥

भाग्यभाव से आठवें भाव में राहु हो अथवा भाग्य से भाग्यभाव में रवि, राहु से युक्त हो और चन्द्रमा से भाग्यभाव में शनि हो तो ७वें या १९वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ १९९॥ भाग्येश १२वें भाव में और व्ययेश भाग्यभाव में हो तो ४४वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥२००॥

रव्यंशे च स्थिते चन्द्रे लग्नेशे रंध्रसंयुते।
पंचत्रिंशैकचत्वारिंशद्वर्षे पितृनाशनम् ॥२०१॥
पितृस्थानाधिपे सूर्ये मंदभौमसमन्विते।
पंचाशद्वत्सरे प्राप्ते जनकस्य मृतिर्भवेत् ॥२०२॥

सूर्य के नवांश में चन्द्रमा हो और लग्नेश आठवें भाव में हो तो ३५वें वा ४१वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ २०१॥ पितृ स्थान (१०) का स्वामी सूर्य हो और शनि-भौम से युत हो तो ५०वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ २०२॥

भाग्यात्सप्तमगे सूर्ये भातृसप्तमगस्तमः।
षष्ठे वा पंचविंशाब्दे पितुर्मरणमादिशेत् ॥२०३॥
रंध्रजामित्रगे मंदे मंदाज्जामित्रगे रवौ।
त्रिंशैकविंशे षड्विंशे जनकस्य मृतिर्भवेत् ॥२०४॥

भाग्यभाव से ७वें सूर्य हो और भ्रातृभाव से सातवें राहु हो तो छठें वा २५वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ २०३॥ आठवें से सातवें भाव में शनि हो और शनि से ७वें भाव में राहु हो तो ३०वें, २१वें, वा २६वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ २०४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भाग्येशे नीचराशिस्थे तदीशे भाग्यराशिगे ।
षड्विंशे च त्रयस्त्रिंशे पितुर्मरणमादिशेत् ॥ २०५ ॥
रव्यंशे स्थिते चन्द्रे लग्नेशे रन्ध्रसंयुते ।
पञ्चत्रिंशैक - चत्वारिंवत्सरे पितृनाशनम् ॥ २०६ ॥

भाग्येश नीच राशि में और नीच राशि का स्वामी भाग्यभाव में हो तो २६वें वा ३३ वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ २०५ ॥ चन्द्रमा सूर्य के नवमांश में हो, लग्नेश अष्टमभाव गत हो तो ३५वें या ४१ वें वर्ष में पिता की मृत्यु होती है॥ २०६ ॥

परमोच्चांशगे शुक्रे भाग्येशेन समन्विते ।
भ्रातृस्थाने शनियुते बहुभाग्याधिपो भवेत् ॥ २०७ ॥
गुरुणा संयुते भाग्ये तदीशे केन्द्रराशिगे ।
विंशद्वर्षात्परं चैव बहुभाग्यं विनिर्दिशेत् ॥ २०८ ॥

भाग्येश से युत शुक्र परम उच्चांश में हो और भ्रातृस्थान में शनि हो तो वह बड़ा भाग्यवान् होता है॥ २०७ ॥ भाग्य स्थान में गुरु हो और भाग्येश केन्द्र में हो तो २०वर्ष के बाद भाग्योदय होता है॥ २०८ ॥

परमोच्चांशगे सौम्ये भाग्येशे भाग्यराशिगे ।
षट्त्रिंशत् परं चैव बहुभाग्यं विनिर्दिशेत् ॥ २०९ ॥
लग्नेशे भाग्यराशिस्थेभाग्येशे लग्नसंयुते ।
गुरुणा संयुते द्यूने धनवाहनलाभकृत् ॥ २१० ॥

बुध परम उच्चांश में हो और भाग्येश भाग्यभाव में हो तो ३६वें वर्ष के बाद भाग्योदय होता है॥ २०९ ॥ लग्नेश भाग्यभाव में और भाग्येश लग्न में हो तथा गुरु सप्तम भाव में हो तो धन-वाहन से युक्त होता है॥ २१० ॥

अथ भाग्यहीनयोगः-

भाग्याद्भाग्यगतो राहुर्भाग्येशे निधनं गते ।
भाग्येशे नीचराशिस्थे भाग्यहीनो भवेन्नरः ॥ २११ ॥
भाग्यस्थानगते मन्दे शशिना च समन्विते ।
लग्नेशे नीचराशिस्थे भिक्षाशी च नरो भवेत् ॥ २१२ ॥

भाग्य स्थान से नवमभाव में राहु हो तथा भाग्येश अपनी नीच राशि का आठवें भाव में हो तो मनुष्य भाग्यहीन होता है॥ २११ ॥ भाग्य स्थान में शनि, चन्द्रमा के साथ हो और लग्नेश नीच राशि में हो तो भिक्षा का अन्न खाने वाला होता है॥ २१२ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ दशमभावफलमाह-

कर्माधिपो बलोनश्चेत्कर्मवैकल्यमादिशेत् ।
सैंहिः केन्द्रत्रिकोणस्थो ज्योतिष्टोमादियागकृत् ॥ २१३ ॥
दशमे पापसंयुक्ते लाभे पापसमन्विते ।
दुष्कृतिं लभते मर्त्यः स्वजनानां विदूषकः ॥ २१४ ॥

कर्मेश निर्बल हो तो जातक कर्महीन होता है। राहु केन्द्र-त्रिकोण में हो तो ज्योतिष्टोमादि यज्ञ करने वाला होता है॥ २१३॥ दशमभाव में पाप-ग्रह और लाभ भाव में पापग्रह हों तो जातक दुष्कीर्त्ति पाता है॥ २१४॥

कर्मेशे नाशराशिस्थे राहुणा संयुतेऽपि च ।
जनद्वेषी महामूर्खो दुष्कृतिं लभते नरः ॥ २१५ ॥
कर्मेशे द्यूनराशिस्थे मंदभौमसमन्विते ।
द्यूनेशे पापसंयुक्ते शिश्नोदरपरायणः ॥ २१६ ॥

कर्मेश राहु से संयुक्त होकर आठवें भाव में हो तो मनुष्यों से द्वेष करने वाला, महामूर्ख और दुष्कर्म में प्रवृत्त होता है॥ २१५॥ कर्मेश शनि-भौम से युत होकर सप्तमभाव में हो और सप्तमेश पाप से युत हो तो जातक शिश्न द्वारा उदरपूर्त्ति (जीविका) करने वाला होता है॥ २१६॥

तुंगराशिं समाश्रित्य कर्मेशे गुरुसंयुते ।
भाग्येशे कर्मराशिस्थे यानैश्वर्यप्रतापवान् ॥ २१७ ॥
लाभेशे कर्मराशिस्थे कर्मेशे लग्नसंयुते ।
तावुभौ केन्द्रगौ वापि सुखजीवनभाग्भवेत् ॥ २१८ ॥

अपनी उच्चराशि में कर्मेश गुरु से युत हो और भाग्येश कर्मराशि में हो तो जातक मान-ऐश्वर्य से युक्त प्रतापी होता है॥ २१७॥ लाभेश कर्मराशि में हो और कर्मेश लग्न में हो अथवा दोनों केन्द्र में हों तो सुखी जीवन वाला होता है॥ २१८॥

कर्मेशे बलसंयुक्ते मीने गुरुसमन्विते ।
वस्त्राभरणसौख्यादि लभते नात्र संशयः ॥ २१९ ॥

कर्मेश बलवान् होकर मीनराशि में गुरु से युत हो तो जातक वस्त्र, आभूषण, सुख आदि से युक्त होता है॥ २१९॥

अथ कर्महीनयोग-

लाभस्थानगते सूर्ये राहुभौमसमन्विते ।
रविपुत्रेण संयुक्ते कर्मच्छेत्ता भवेन्नरः ॥ २२० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य लाभभाव में, राहु-भौम शनि से युत हो तो जातक कर्महीन होता है॥ २२०॥

अथ शुभकर्मयोगाः-

मीने जीवे भृगुसुते लग्नेशे बलसंयुते।
स्वोच्चराशिगते चन्द्रे सम्यग्ज्ञानार्थवान् भवेत् ॥ २२१॥
कर्मेशे लाभराशिस्थे लाभेशे लग्नसंस्थिते।
कर्मराशिस्थिते शुक्रे रत्नवान् स नरो भवेत् ॥ २२२॥

मीनराशि में गुरु-शुक्र हों, लग्नेश बलवान् हो और चन्द्रमा अपनी उच्चराशि में हो तो ज्ञानी और धनी होता है॥ २२१॥ कर्मेश लाभभाव में और लग्नेश लग्न में तथा शुक्र कर्मभाव में हो तो मनुष्य रत्नों से युक्त होता है॥ २२२॥

केन्द्रत्रिकोणगे कर्मनाथे स्वोच्चसमाश्रिते।
गुरुणा सहिते दृष्टे स कर्मसहितो भवेत् ॥ २२३॥
कर्मेशे लग्नभावस्थे लग्नेशेन समन्विते।
केन्द्रत्रिकोणगे चन्द्रे सत्कर्मनिरतो भवेत् ॥ २२४॥

अपनी उच्च राशि में कर्मेश केन्द्र-त्रिकोण में और गुरु से युत दृष्ट हो तो मनुष्य कर्म श्रेष्ठ होता है॥ २२३॥ कर्मेश लग्न में लग्नेश के साथ हो, केन्द्र-त्रिकोण में चन्द्रमा हो तो पुरुष सत्कर्म में निरत होता है॥ २२४॥

कर्मस्थानगते चन्द्रे तदीशे तत्त्रिकोणगे।
लग्नेशे केन्द्रभावस्थे सत्कीर्तिसहितो भवेत् ॥ २२५॥
लाभेशे कर्मभावस्थे कर्मेशे बलसंयुते।
देवेन्द्रगुरुणा दृष्टे सत्कीर्तिसहितो भवेत् ॥ २२६॥

कर्मस्थान में चन्द्रमा हो और कर्मेश उससे त्रिकोण में हो तथा लग्नेश केन्द्र में हो तो कीर्त्ति से युक्त होता है॥ २२५॥ लाभेश कर्मभाव में हो और कर्मेश बलवान् हो, गुरु से देखा जाता हो तो सत्कीर्ति से युक्त होता है॥ २२६॥

कर्मस्थानाधिपे भाग्ये लग्नेशे कर्मसंयुते।
लग्नात्पंचमगे चन्द्रे ख्यातकीर्त्तिः विनिर्दिशेत् ॥ २२७॥

कर्मेश भाग्यभाव में और लग्नेश कर्मभाव में हो तथा लग्न से पाँचवें भाव में चन्द्रमा हो तो विख्यात कीर्तिवाला पुरुष होता है॥ २२७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ अशुभयोगः-

कर्मस्थानगते मन्दे नीचखेचरसंयुते ।
कर्मांशे पापसंयुक्ते कर्महीनो भवेन्नरः ॥ २२८ ॥

कर्म स्थान में शनि नीच राशिस्थ ग्रह से युत हो और कर्मांश में पाप-ग्रह हो तो जातक कर्महीन होता है॥ २२८॥

कर्मेशे नाशराशिस्थे कर्मस्थे पापखेचरे ।
कर्मभात्कर्मगे पापे कर्मवैकल्यमादिशेत् ॥ २२९ ॥

कर्मेश आठवें भाव में हो और कर्मभाव में पापग्रह हो तथा कर्म भाव में कर्म स्थान में पापग्रह हो तो पुरुष कर्महीन होता है॥ २२९॥

अथैकादशभावफलमाह-

लाभाधिपो यदा लाभे तिष्ठेत्केंद्रत्रिकोणयोः ।
बहुलाभं तदा कुर्यादुच्चसूर्यांशगोऽपि वा ॥ २३० ॥
लाभेशे धनराशिस्थे धनेशे केन्द्रसंस्थिते ।
गुरुणा सहिते भावे गुरुलाभं विनिर्दिशेत् ॥ २३१ ॥

लाभेश लाभ भाव में या केन्द्र-त्रिकोण में हो वा अपने उच्च में वा सूर्यांश में हो तो भी फल का बहुत लाभ होता है॥ २३०॥ लाभेश धनराशि में हो और धनेश केन्द्र में हो, गुरु से युत हो तो अधिक लाभ होता है॥ २३१॥

लाभेशे लाभभावस्थे शुभग्रहसमन्विते ।
षट्त्रिंशे वत्सरे प्राप्ते सहस्रद्वयनिष्कभाक् ॥ २३२ ॥
केन्द्रत्रिकोणगे भावनाथे शुभसमन्विते ।
चत्वारिंशे तु सम्प्राप्ते सहस्रार्धं च निष्कभाक् ॥ २३३ ॥

लाभेश लाभ भाव में शुभग्रह से युत हो तो ३६वें वर्ष में सहस्र निष्क (मोहर) का लाभ होता है॥ २३२॥ लाभेश शुभग्रह से युत होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो तो ४० वें वर्ष में पाँच सौ मोहरों का लाभ होता है॥ २३३॥

लाभस्थाने गुरुयुते धने चन्द्रसमन्विते ।
भाग्यस्थानगते शुक्रे षट्सहस्राधिपो भवेत् ॥ २३४ ॥
लाभाच्च लाभगे जीवे गुरुचन्द्रेण संयुते ।
धनधान्याधिपः श्रीमान् रत्नाद्याभरणैर्युतः ॥ २३५ ॥

लाभ भाव में गुरु हो और धन स्थान में चन्द्रमा हो तथा भाग्य स्थान में शुक्र हो तो ६ हजार मोहर का अधिपति होता है॥ २३४॥ लाभस्थान

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

से लाभ में गुरु, चन्द्रमा से युत हो तो धनधान्य का स्वामी, श्रीमान्, रत्न आदि आभूषणों से युक्त होता है॥ २३५॥

लाभेशे लग्नभावस्थे लग्नेशे लाभसंयुते।
त्रयस्त्रिंशे तु संप्राप्ते सहस्रनिष्कभाग्भवेत्॥ २३६॥
धनेशे लाभराशिस्थे तदीशे धनराशिगे।
विवाहात्परतश्चैव बहुभाग्यं समादिशेत्॥ २३७॥
धनेशे लाभराशिस्थे लाभेशे भ्रातृसंस्थिते।
भ्रातृभावाद्धनप्राप्तिर्दिव्याभरण संयुतः॥ २३८॥

लाभेश लग्न में हो और लग्नेश लाभ भाव में हो तो ३३वें वर्ष में १ हजार मोहर का लाभ होता है॥ २३६॥ धनेश लाभ भाव में और लाभेश धनभाव में हो तो विवाह के बाद अनेक प्रकार से भाग्योदय होता है॥ २३७॥ तृतीय भावेश ११वें भाव में और लाभेश तीसरे भाव में हो तो भाइयों से धन का लाभ होता है॥ २३८॥

अथ द्वादशभाव फलम्-

चन्द्रो व्ययाधिपो धर्मलाभमंत्रेषु संस्थितः।
स्वोच्चस्वर्क्षनिजांशे वा लाभधर्मात्मजांशके।
दिव्यागारादिपर्यंको दिव्यगंधैकभोगवान्॥ २३९॥
परार्थ्यं रमणो दिव्यवस्त्रमाल्यादिभूषणः।
परार्थ्यसंयुतो वित्तो दिनानि नवति प्रभुः॥ २४०॥

चन्द्रमा व्ययेश होकर ९।११।५वें भाव में हो वा अपनी उच्चराशि, अपनी राशि-धन भाव के नवांश में हो अथवा लाभ नवम-पंचम के नवांश में हो तो दिव्य मकान, शय्या, गंध, दूसरे के द्रव्य को भोगने वाला होता है॥ २३९-२४०॥

एवं स्वशत्रुनीचांशेऽष्टमांशे वाष्टमे रिपौ।
संस्थितः कुरुते जातं कांतासुखविवर्जितम्॥ २४१॥
व्ययाधिक्य-परिक्लान्तं दिव्यभोगनिराकृतम्।
स हि केन्द्रत्रिकोणस्थः स्वस्त्रियालंकृतः स्वयम्॥ २४२॥

इसी प्रकार अपने शत्रु के, नीचराशि के नवांश में, अष्टमभाव के नवांश में, आठवें या छठे भाव में हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है॥ २४१॥ और अधिक खर्च से खिन्न होकर दिव्य भोग आदि से रहित होता है। यदि वह केन्द्र-त्रिकोणमें हो तो स्त्रीसुखसे युक्त होता है॥२४२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नस्य पूर्वार्धगतानभोगाः फलं प्रदद्युस्तु प्रत्यक्षकं ते।
परार्धषट्कोपगताः परोक्षं फलं वदंतीति बुधाः पुराणाः॥ २४३॥

लग्न के पूर्वार्ध (१० से ३ भाव तक) मतान्तर से (७।८।९।१०।११।१२) में स्थित ग्रह प्रत्यक्ष में फल देने वाले होते हैं और परार्ध (४।५।६।७।८।९) भाव में मतांतर से (१।२।३।४।५।६) में स्थित ग्रह परोक्ष (अप्रत्यक्ष रूप) से फल देने वाले होते हैं॥ २४३॥

व्ययस्थानगतो राहुर्भौमार्करविसंयुतः।
तदीशेऽप्यर्कसंयुक्ते नरके पतनं भवेत्॥ २४४॥
व्ययस्थानगते सौम्ये तदीशे स्वोच्चराशिगे।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे मोक्षः स्थान्नात्र संशयः॥ २४५॥

बारहवें भाव में राहु-भौम सूर्य के साथ हो, व्ययेश भी सूर्य से युक्त हो तो जातक नरक में जाता है॥ २४४॥ बारहवें भाव में बुध हो, व्ययेश अपनी उच्च राशिमें हों, शुभ ग्रहसे युत और दृष्ट हों तो मोक्ष होता है।२४५।

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः॥ २४६॥
व्ययेशे शुभराशिस्थे व्ययर्क्षे शुभसंयुते।
शुभग्रहेण संदृष्टे स्वदेशात्संचरो भवेत्॥ २४७॥

व्ययेश पापग्रह से युत हो और व्यय भाव में पापग्रह हो और पापग्रह से देखा जाता हो तो देश-विदेश में जानेवाला होता है॥ २४६॥ व्ययेश शुभराशि में हो और व्ययभाव में शुभग्रह हो, शुभग्रह से देखा जाता हो तो अपने देश से अन्य देश को जाने वाला होता है॥ २४७॥

व्यये मन्दादिसंयुक्ते भूमिजेन समन्विते।
शुभदृष्टैर्न संप्राप्तिः पापमूलाद्धनार्जनम्॥ २४८॥
लग्नेशे व्ययराशिस्थे व्ययेशे लग्नसंयुते।
भृगुपुत्रेण संयुक्ते धर्ममूलाद्धनव्ययम्॥ २४९॥

व्ययभाव शनि-भौम से युत हो, शुभग्रह से न देखा जाता हो तो पाप करने से धन की हानि होती है।२४८। लग्नेश बारहवें भाव में हो और व्ययेश लग्नमें हो, शुक्र से युत हो तो धर्म करनेमें धनका व्यय होता है।२४९।

इति पराशर होरायां पूर्वखंडे सुबोधिन्यां द्वादशभावविचारो नाम द्वादशोऽध्यायः।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ भावेशफलाध्यायः

अथ लग्नेशभावफलम्-

लग्नेशे लग्नगे पुंसः सुखी भुजपराक्रमी ।
मनस्वी चातिचांचल्यो द्विभार्यो परगोऽपि वा ॥ १ ॥
लग्नेशे धनगे लाभे सलाभः पण्डितो नरः ।
सुशीलो धर्मविन्मानी बहुदारगुणैर्युतः ॥ २ ॥

लग्नेश लग्न में हो तो जातक सुखी, पराक्रमी, मनस्वी, अत्यन्त चंचल, दो स्त्रियों वाला और परस्त्रीगामी भी होता है॥ १ ॥ लग्नेश धनस्थान में या लाभस्थांन में हो तो जातक लाभ से युक्त, पंडित, सुशील, धर्मात्मा, ज्ञानी और अनेक स्त्रियों से युक्त होता है॥ २ ॥

लग्नेशे सहजे षष्ठे सिंहतुल्यपराक्रमी ।
सर्वसंपद्युतो मानी द्विभार्यो मतिमान् सुखी ॥ ३ ॥
लग्नेशे दशमे तुर्ये पितृमातृसुखान्वितः ।
बहुभ्रातृयुतः कामी गुणसौंदर्यसंयुतः ॥ ४ ॥

लग्नेश तीसरे या छठे भाव में हो तो जातक सिंह के समान पराक्रमी, सभी सम्पत्तियों से युक्त, मानी, दो स्त्रियों वाला और बुद्धिमान् तथा सुखी होता है॥ ३ ॥ लग्नेश दशम या चतुर्थ भाव में हो तो पिता-माता के सुख से युक्त, अनेक भाइयों वाला, कामी, गुण-सौंदर्य से युक्त होता है॥ ४ ॥

लग्नेशे पंचमे दानी सुतसौख्यं च मध्यमम् ।
प्रथमापत्यनाशः स्यात्क्रोधी लोभी नृपप्रियः ॥ ५ ॥
लग्नेशे सप्तमे यस्य भार्या तस्य न जीवति ।
विरक्तो वा प्रवासी वा दरिद्रो वा नृपोऽपि वा ॥ ६ ॥

लग्नेश पाँचवें भाव में हो तो जातक दानी, मध्यम संतान सुख वाला, प्रथम संतान से हीन, क्रोधी, लोभी और राजप्रिय होता है॥५॥ लग्नेश सातवें भाव में हो तो स्त्री का विनाश होता है, चाहे वह व्यक्ति विरक्त हो या परदेशी हो, अथवा दरिद्र हो या राजा हो॥ ६ ॥

लग्नेशे व्ययगेऽष्टस्थे सिद्धविद्याविशारदः ।
द्यूती चौरो महाक्रोधी परनार्यतिभोगकृत् ॥ ७ ॥
लग्नेशे नवमे पुंसो भाग्यवान् जनवल्लभः ।
विष्णुभक्तः पटुर्वाग्मी पुत्रदारधनैर्युतः ॥ ८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नेश १२वें या ८वें भाव में हो तो जातक सिद्धों की विद्या में निपुण, जुआ खेलने वाला, चोर, क्रोधी अथवा परस्त्रीगामी होता है॥ ७॥ लग्नेश नवम भाव में हो तो पुरुष भाग्यवान्, जनप्रिय, विष्णुभक्त, पंडित, वक्ता और पुत्र-स्त्री से युक्त होता है॥ ८॥

अथ धनेशभावफलम्-

धनेशे च तनौ पुत्री स्वकुटुम्बस्य कंटकः।
धनवान्निष्ठुरः कामी परकार्येषु तत्परः॥९॥
धनेशे धनगे मर्त्यः धनवान् गर्वसंयुतः।
भार्याद्वयं त्रयं वापि पुत्रहीनः प्रजायते॥१०॥

धनेश लग्न में हो तो जातक पुत्रवान्, अपने कुटुम्ब का कंटक, धनी, निष्ठुर, कामी और दूसरे के कार्य में तत्पर होता है॥ ९॥ धनेश धन भाव में हो तो जातक धनी, धर्म से युक्त होता है, उसे २ या ३ स्त्रियाँ होती हैं और पुत्रहीन होता है॥ १०॥

धनेशे सहजे तुर्ये विक्रमी मतिमान् गुणी।
परदाराभिमानी च लोभी वा देवनिन्दकः॥११॥
धनेशे सुतभावस्थे पुत्रतो धनवान् भवेत्।
कृपणो दुःखभाग्जातो यशस्वी पुत्रवान् भवेत्॥१२॥

धनेश तीसरे या चौथे भाव में हो तो जातक पराक्रमी, बुद्धिमान्, गुणी, रायी स्त्री का अभिमान करने वाला, लोभी या देवनिन्दक होता है॥ ११॥ धनेश पाँचवें भाव में हो तो पुत्र से धनी, कृपण, दुःख भोगने वाला, यशस्वी और पुत्रवान् होता है॥ १२॥

धनेशे शत्रुगे शत्रोर्धनं प्राप्नोति निश्चितम्।
शत्रुतो वित्तनाशः स्याज्जंघोर्वोर्भवेच्च रुक्॥१३॥
धनेशे सप्तमे वैद्यः परजायाभिगामिनः।
जाया तस्य भवेद्वेश्या माता च व्यभिचारिणी॥१४॥

धनेश छठे भाव में हो तो शत्रु से धन प्राप्त करने वाला, पुत्र द्वारा धन नाश वाला और जंघा तथा ऊरु प्रदेश में रोगयुक्त होता है॥ १३॥ धनेश सातवें भाव में हो तो जातक वैद्य होता है, परस्त्रीगामी होता है, उसकी स्त्री वेश्या और माता व्यभिचारिणी होती है॥ १४॥

धनेशे मृत्युगेहस्थे भूमिद्रव्यं लभेद् ध्रुवम्।
जायासौख्यं भवेत्स्वल्पं ज्येष्ठभ्रातृसुखं न हि॥१५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धनेशे नवमे लाभे धनवानुद्यमी पटुः ।
बाल्ये रोगी सुखी पश्चाद्यायवदायुः समाप्यते ॥ १६ ॥

धनेश आठवें भाव में हो तो जातक को भूमिगत द्रव्य का लाभ, स्त्री का अल्प सुख और ज्येष्ठ भाई का सुख नहीं होता है॥ १५॥ धनेश नवम भाव वा लाभ भाव में हो तो जातक धनी, उद्यमी, विद्वान् होता है, बाल्य अवस्था में रोगी और पीछे आयु पर्यन्त सुखी होता है॥ १६॥

धनेशो दशमे यस्य कामी मानी च पंडितः ।
बहुदारधनैर्युक्तः सुतहीनो प्रजायते ॥ १७॥
धनेशे व्ययगे ज्ञानी साहसी धनवर्जितः ।
जीविका नृपगेहाच्च ज्येष्ठपुत्रसुखं न हि ॥ १८॥

धनेश दशम भाव में हो तो जातक कामी, मानी, पंडित, अनेक स्त्री तथा धन से युक्त और पुत्रहीन होता है॥ १७॥ धनेश बारहवें भाव में हो तो जातक ज्ञानी, साहसी, धनहीन, राजगृह से जीविकावाला और ज्येष्ठपुत्र के सुख से हीन होता है॥ १८॥

अथ सहजेशभावफलम्-

तृतीयेशे तनौ लाभे स्वभुजार्जितवित्तवान् ।
मूर्खः कृशो महारोगी साहसी परसेवकः ॥ १९॥
गुदाभंजनिकः स्थूलः परभार्याधने रुचिः ।
स्वल्पारम्भो सुखी न स्यात्तृतीयेशे धनंगते ॥ २०॥

तृतीयेश लग्न या लाभ भाव में हो तो जातक अपनी कमाई से धनी, मूर्ख, कृश, महारोगी अपितु साहसी, दूसरे का सेवक होता है॥ १९॥ तृतीयेश दूसरे भाव में हो तो जातक स्त्री के स्वभाव का स्थूल, परस्त्री के धन से कार्य आरम्भ करने वाला, और सुखी नहीं होता है॥ २०॥

तृतीयेशे तृतीयस्थे विक्रमी सुतसंयुतः ।
धनयुक्तो महाहृष्टों भुनक्ति सुखमद्भुतम् ॥ २१॥
तृतीयेशे सुखे कर्मे पंचमे वा सुखी सदा ।
अतिक्रूरा भवेद्भार्या धनाढ्यो मतिमान् भवेत् ॥ २२॥

तृतीयेश तीसरे भाव में हो तो जातक पराक्रमी, पुत्रवान्, धनी, प्रसन्न और अद्भुत सुखको भोगने वाला होता है॥ २१॥ तृतीयेश चौथे, दशवें और पाँचवें भाव में हो तो जातक सदा सुखी, अतिक्रूरा स्त्री से युक्त, धनी और बुद्धिमान् होता है॥ २२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीयेशो रिपौ यस्य भ्राता शत्रुर्महाधनी।
मातुलानां सुखं न स्यान्मातुल्या भोगमिच्छति ॥२३॥
तृतीयेशेऽष्टमे द्यूने राजद्वारे मृतिर्भवेत्।
चौरो वा परगामी वा बाल्ये कष्टं दिने दिने ॥२४॥

तृतीयेश छठे भाव में हो तो जातक का भाई शत्रु होता है, जातक स्वयं महाधनी, मामा के सुख से हीन और मामी से संभोग की इच्छा वाला होता है॥२३॥ तृतीयेश आठवें या सातवें भाव में हो तो जातक की मृत्यु राजद्वार में होती है, चोर, परस्त्रीगामी और बाल्य समय में कष्ट भोगने वाला होता है॥२४॥

तृतीयेशे व्यये भाग्ये स्त्रीभिर्भाग्योदयो भवेत्।
पिता तस्य महाचौरः सुखेऽपि दुःखदर्शकः ॥२५॥

तृतीयेश बारहवें या भाग्यभाव में हो तो जातक का भाग्योदय स्त्री के द्वारा होता है और उसका पिता बड़ा चोर होता है॥२५॥

अथ सुखेशभावफलम्-

सुखेशे लग्नगे वापि पितृपुत्रौ च स्नेहलौ।
पितृपक्षवैरिकलितं पितृनाम्ना प्रसिद्ध्यति ॥२६॥
सर्वसंपद्युतो मानी साहसी कुहकान्वितः।
कुटुम्बसंयुतो भोगी सुखेशे च धनस्थिते ॥२७॥

सुखेश लग्न में हो तो पिता-पुत्र में स्नेह होता है, चाचा आदि से वैरभाव और पिता के नाम से प्रसिद्धि होती है॥२६॥ सुखेश धनभाव में हो तो जातक सभी सम्पत्तियों से युक्त, मानी, साहसी, इन्द्रजाल करने वाला, कुटुम्ब से युक्त और भोगी होता है॥२७॥

सुखेशे सहजे लाभे नित्यरोगी भवेन्नरः।
उदारो गुणवान्दाता स्वभुजार्जितवित्तवान् ॥२८॥
तुर्येशे तुर्यगे मंत्री भवेत्सर्वधनाधिपः।
चतुरः शीलवान् मानी धनाढ्यः स्त्रीप्रियः सुखी ॥२९॥

सुखेश तीसरे या ग्यारहवें भाव में हो तो जातक नित्यरोगी, उदार, गुणी, दाता और अपने परिश्रम से द्रव्य पैदा करने वाला होता है॥२८॥ सुखेश-सुख भाव में हो तो मंत्री, सभी प्रकार की संपत्ति से युक्त, चतुर, शीलवान्, मानी, धनी और स्त्रीप्रिय तथा सुखी होता है॥२९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तुर्येशे पंचमे भाग्ये सुखी सर्वजनप्रियः ।
विष्णुभक्तिरतो मानी स्वभुजार्जितवित्तवान् ॥ ३० ॥
सुखेशे शत्रुगेहस्थे सदा स्याद्बहुयातृकः ।
क्रोधी चौरोऽभिचारी च दुष्टचित्तो मनस्व्यपि ॥ ३१ ॥

सुखेश पाँचवें या नवम भाव में हो तो जातक सुखी, सर्वजनप्रिय, विष्णुभक्त, मानी और अपने पराक्रम से द्रव्य पैदा करने वाला होता है॥ ३० ॥ सुखेश छठे भाव में हो तो जातक हर समय परदेश में रहनेवाला, क्रोधी, चोर, घात करनेवाला, दुष्ट और मनस्वी होता है॥ ३१ ॥

सुखेशे सप्तमे लग्ने बहुविद्यासमन्वितः ।
पित्रार्जितधनत्यागी सभायां मूकवद्भवेत् ॥ ३२ ॥
सुखेशे व्ययरंध्रस्थे सुखहीनो भवेन्नरः ।
पितृसौख्यं भवेदल्पं क्लीबो वा जारजोऽपि वा ॥ ३३ ॥

सुखेश सातवें भाव में हो तो जातक अनेक विद्याओं से युक्त, पिता के धन को त्यागने वाला, सभा में मूक होता है॥ ३२ ॥ सुखेश बारहवें या ८वें स्थान में हो तो जातक सुखहीन होता है और उसे पिता का अल्पसुख, नपुंसक अथवा वह जार से उत्पन्न हुआ होता है॥ ३३ ॥

सुखेशे कर्मगेहस्थे राजमान्यो भवेन्नरः ।
रसायनी महाहृष्टो भुनक्ति सुखमद्भुतम् ॥ ३४ ॥

सुखेश कर्म भाव में हो तो जातक राजमान्य, रसायन क्रिया को जानने वाला, प्रसन्न और सुख को भोगने वाला होता है॥ ३४ ॥

अथ सुतेशभावफलम्-

सुतेशे लग्नसहजे मायावी पिशुनो महान् ।
लोष्ठं दत्तवान्नैव काचिद्द्रव्यस्य का कथा ॥ ३५ ॥
सुतेशे चायुधि धने बहुपुत्री न संशयः ।
कासश्वाससुखी न स्यात्क्रोधयुक्तो धनान्वितः ॥ ३६ ॥

पंचमेश लग्न और तीसरे भाव में हो तो जातक मायावी, चुगुलखोर होता है॥ ३५ ॥ पञ्चमेश ८वें वा २भाव में हो तो जातक अनेक पुत्रों से युक्त कासश्वासरोगी, क्रोधी और धनी होता है॥ ३६ ॥

सुतेशे मातृभवने चिरं मातृसुखं भवेत् ।
लक्ष्मीयुक्तः सुबुद्धिश्च सचिवो प्यथवा गुरुः ॥ ३७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुतेशे पंचमे यस्य तस्य पुत्रो न जीवति।
क्षणिकः क्रूरभाषी च धनिको मतिमान् भवेत् ॥३८॥

सुतेश ४थे भाव में हो तो जातक को माता का सुख अधिक, लक्ष्मीयुक्त, बुद्धिमान्, मंत्री वा गुरु होता है। मुहूर्त्त को जानने वाला, टेढ़ा बोलने वाला, धनी और बुद्धिमान् होता है॥ ३७॥ सुतेश ५वें भाव में हो तो जातक का पुत्र नहीं जीता है॥ ३८॥

सुतेशे षष्ठरिःफस्थे पुत्रः शत्रुत्वमाप्नुयात्।
मृतापत्यो दत्तपुत्रो धनपुत्रोऽथवा भवेत् ॥३९॥
सुतेशे कामगे मानी सर्वधर्मसमन्वितः।
तुंगवष्टिस्तनुस्वामी भक्तियुक्तैकचेतसा ॥४०॥

सुतेश छठें, बारहवें भाव में हो तो जातक का पुत्र से शत्रुता होती है और उसके पुत्र मर जाते हैं, उसे दत्तक पुत्र वा क्रीत पुत्र होता है॥ ३९॥ सुतेश ७वें भाव में हो तो जातक मानी, सभी धर्मो से युक्त, ऊँची नाक वाला और भक्ति युक्त होता है॥ ४०॥

सुतेश नवमे कर्मे पुत्रो भूपसमो भवेत्।
अथवा ग्रंथकर्त्ता च विख्यातः कुलदीपकः ॥४१॥
सुतेश लाभभवने पंडितो जनवल्लभः।
ग्रंथकर्त्ता महादक्षो बहुपुत्र - धनान्वितः ॥४२॥

सुतेश ९वें या १०वें भाव में हो तो जातक के पुत्र राजा के समान होते हैं अथवा प्रसिद्ध ग्रंथकर्त्ता होता है॥४१॥ सुतेश लाभ भाव में हो तो जातक पंडित, जनप्रिय, ग्रंथकर्त्ता, दक्ष, अनेक पुत्र और धन से युक्त होता है॥४२॥

अथ षष्ठेशभावफलम्-

षष्ठेशे सप्तमे लाभे लग्ने वा कीर्त्तिमान् भवेत्।
धनवान् गुणवान् मानी साहसी पुत्रवर्जितः ॥४३॥
षष्ठेशे कर्मवित्तस्थे साहसी कुलविश्रुतः।
परदेशे सुखी वक्ता स्वकर्मे चैकनिष्ठिकः ॥४४॥

षष्ठेश सातवें, ग्यारहवें या लग्न में हो तो जातक कीर्त्तिमान्, धनवान्, गुणी, मानी, साहसी और पुत्रहीन होता है॥ ४३॥ षष्ठेश दशम वा दूसरे भाव में हो तो जातक साहसी, कुल में विख्यात, परदेशी, वक्ता और अपने कर्म में निष्णात होता है॥ ४४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठेशे सहजे तुर्ये क्रोधेनारक्तलोचनः ।
मनस्वी पिशुनो द्वेषी चलचित्तोऽतिवित्तवान् ॥ ४५ ॥
षष्ठेशे पंचमे यस्य चलमित्रधनादिकम् ।
दयायुक्तः सुखी सौम्यः स्वकार्ये चतुरो महान् ॥ ४६ ॥

षष्ठेश तीसरे या चौथे भाव में हो तो जातक का नेत्र क्रोध से रक्त वर्ण का, मनस्वी, चुगुलखोर, द्वेष करने वाला, अस्थिरचित्त और अत्यन्त धनी होता है। ४५। पाँचवें भावमें हो तो जातकके मित्र तथा धन चंचल होते हैं। दयावान्, सुखी, सौम्यमूर्त्ति और अपने कार्य में अत्यन्त चतुर होता है ॥ ४६॥

षष्ठेशे रिपुभावस्थे स्वज्ञातिः शत्रुवद्भवेत् ।
परजातिर्भवेन्मित्रं भूमौ न चलति ध्रुवम् ॥ ४७ ॥
षष्ठेशेऽमष्टरिःफस्थे रोगी शत्रुर्मनीषिणाम् ।
परजायाभिगामी च जीवहिंसासु तत्परः ॥ ४८ ॥

षष्ठेश छठें भाव में हो तो जातक के जातिवाले ही उसके शत्रु होते हैं, परजाति के लोग मित्र होते हैं और हमेशा सवारी से चलता है ॥ ४७ ॥ षष्ठेश ८वें या १२वें भाव में हो तो जातक रोगी और अच्छे लोगों का शत्रु, परस्त्रीगामी और हिंसक होता है ॥ ४८ ॥

षष्ठेशो नवमे यस्य काष्ठपाषाणविक्रयी ।
व्यवहारे क्वचिद्धानिः क्वा चिद्वृद्धिर्भवेत्किल ॥ ४९ ॥

षष्ठेश नवम स्थान में हो तो जातक लकड़ी, पत्थर आदि बेचने वाला, व्यापार में कभी हानि और कभी वृद्धिवाला होता है ॥ ४९ ॥

अथ सप्तमेशभावफलम्-

सप्तमेशे तनौ चास्ते परजायासु लम्पटः ।
दुष्टो विचक्षणो धीरो वातरुक् स्थीयते हृदि ॥ ५० ॥
द्यूनेशे नवमे वित्ते नानास्त्रीभिः समागमः ।
आरम्भी दीर्घसूत्री च स्त्रीषु चित्तं हि केवलम् ॥ ५१ ॥

सप्तमेश लग्न या सप्तम में हो तो जातक परस्त्री में आसक्त, दुष्ट, पंडित, वातरोगी होता है ॥ ५० ॥ सप्तमेश नवम और दूसरे भाव में हो तो अनेक स्त्रियों में आसक्त, कार्य को आरम्भ करने वाला, दीर्घ सूत्री, आलसी और केवल स्त्री में चित्त को लगाने वाला होता है ॥ ५१ ॥

द्यूनेशे सहजे लाभे मृतपुत्रः प्रजायते ।
कदाचिज्जीवति सुता यत्नात्पुत्रोऽपिजायते ॥ ५२ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

द्यूनेशे दशमे तुर्ये नास्य जाया पतिव्रता।
धर्मात्मा सत्यसंयुक्तः केवलं दन्तरोगवान् ॥५३॥

सप्तमेश ३रे या ११वें भाव में हो तो जातक के सन्तान नहीं जीते हैं, कदाचित् कन्या जीती है, यत्न करने से पुत्र भी जीता है॥५२॥ सप्तमेश दशम या चतुर्थ भाव में हो तो जातक की स्त्री पतिव्रता नहीं होती है, जातक सर्वगुणसंपन्न, मानी और सर्वसम्पत्तिवान् होता है॥५३॥

सर्वगुणयुतो मानी भवेत्सर्वधनाधिपः।
सदैव हर्षसंयुक्तः सप्तमेशे सुते स्थिते ॥५४॥
जायेशे चाष्टमे षष्ठे रोगिणी कामिनी लभेत्।
क्रोधयुक्तो भवेद्वापि न सुखं लभते क्वचित् ॥५५॥

सप्तमेश पाँचवें भाव में हो तो जातक सभी गुणों से युक्त, मानी, सभी प्रकार के धनों से युक्त, सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है॥५४॥ सप्तमेश ६या ८भाव में हो तो जातक की स्त्री रोगिणी होती है, जातक क्रोधी होता है और सुखी नहीं रहता है॥५५॥

द्वादशस्थे सप्तमेशे दरिद्रः कृपणो महान्।
चारुकन्या भवेद्भार्या वस्त्राजीवी च निर्धनी ॥५६॥

सप्तमेश १२वें भाव में हो तो जातक दरिद्र, अत्यन्त कृपण, स्त्री सुन्दरी और वस्त्र से जीविका करने वाला तथा निर्धन होता है॥५६॥

अथाष्टमेशभावफलम्-

अष्टमेशे तनौ कामे भार्यायुग्मं समादिशेत्।
विष्णुद्रोहरतो नित्यं व्रणरोगी प्रजायते ॥५७॥
धनं तस्य भवेत्स्वल्पं गतं वित्तं न लभ्यते।
अष्टमेशे धने बाहुबलहीनः प्रजायते ॥५८॥

अष्टमेश लग्न या सातवें भाव में हो तो जातक की दो स्त्रियाँ होती हैं, सदा विष्णु का द्रोह करने वाला और व्रणरोगी होता है॥५७॥ अष्टमेश धनस्थान में हो तो जातक अल्प धन वाला, बाहुबल से हीन और नष्ट हुये द्रव्य को न पाने वाला होता है॥५८॥

अष्टमेशे तृतीये चेत् भ्रातृहीनो भवेन्नरः।
बंधुद्वेषी सुहृद्वेषी व्यंगो दुर्बलदेहभाक् ॥५९॥
अष्टमेशे सुखे कर्मपिशुनो बंधुवर्जितः।
मातापित्रोर्भवेन्मृत्युः स्वल्पकालेन भीतियुक् ॥६०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अष्टमेश तीसरे भाव में हो तो जातक भ्रातृहीन, बंधुओं से द्वेष करने वाला, अंगहीन और दुर्बल शरीर का होता है॥ ५९॥ अष्टमेश चौथे भाव में हो तो जातक कर्महीन, बंधुहीन और अल्प अवस्था में ही मातृ-पितृविहीन होता है॥ ६०॥

अष्टमेशे सुते लाभे तस्य वृद्धिर्न जायते।
द्रव्यं न स्थीयते गेहे स्थिरबुद्धिर्भवेज्जनः॥ ६१॥
अष्टमेशे व्यये षष्ठे नित्यं रोगी प्रजायते।
जलसर्पादिकाद्धातो भवेत्तस्य च शैशवे॥ ६२॥

अष्टमेश पाँचवें या ग्यारहवें भाव में हो तो जातक बुद्धिहीन, द्रव्यहीन और मूर्ख होता है॥ ६१॥ अष्टमेश छठे या बारहवें भाव में हो तो जातक सदा रोगी, शैशव अवस्था में जल या सर्पभय से पीड़ित होता है॥ ६२॥

द्यूती चौरोऽन्यथावादी गुरुनिंदासु तत्परः।
अष्टमेशेऽष्टमस्थाने भार्यापररता भवेत्॥ ६३॥
अष्टमेशे तपःस्थाने महापापी च नास्तिकः।
सुतहा ह्यथवा वन्ध्या परभार्याधने रुचिः॥ ६४॥

अष्टमेश अष्टमभाव में हो तो जातक की स्त्री दूसरे में आसक्त होती है और वह जुआड़ी, चोर, असत्य बोलने वाला और गुरु की निंदा करने वाला होता है॥ ६३॥ अष्टमेश नवम भाव में हो तो जातक महापापी, नास्तिक, पुत्रनाशक या वंध्या और परस्त्री परधन-लोलुप होता है॥ ६४॥

अष्टमेशे स्थिते माने नीचकर्म प्रवृत्तिवान्।
प्रेष्यो च जारजो क्रूरो मातृहीनो भवेन्नरः॥ ६५॥

अष्टमेश दशमभाव में हो तो जातक नीच कर्म में रत, दासकर्म करने वाला, जार से उत्पन्न, क्रूर और मातृसुख से हीन होता है॥ ६५॥

अथ भाग्येशभावफलम्-

भाग्येशे च मदे कल्पे गुणवान्कीर्त्तिमान्भवेत्।
कदाचिन्न भवेत्सिद्धं यत्कार्यं कर्त्तुमिच्छति॥ ६६॥
भाग्येशे सहजे वित्ते सदा भाग्यानुचिंतकः।
धनवान् गुणवान् कामी पंडितो जनवल्लभः॥ ६७॥

भाग्येश लग्न या सप्तम भाव में हो तो जातक गुणी, कीर्त्तियुक्त होता है, उसे जिस कार्य को करने की इच्छा होती है, वह कभी सिद्ध नहीं होता

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

है॥ ६६॥ भाग्येश तीसरे या दूसरे भाव में हो तो जातक सदा भाग्यवान्, धनी, गुणी, कामी, पंडित और जनवल्लभ होता है॥ ६७॥

भाग्येशे दशमे तुर्ये मंत्री सेनापतिर्भवेत्।
पुण्यवान्सुयशो वाग्मी साहसी क्रोधवर्जितः॥६८॥
भाग्येशे पंचमे लाभे भाग्यवान् जनवल्लभः।
गुरुभक्तिरतो मानी धीरो धीरगुणैर्युतः॥६९॥

भाग्येश दशम या चतुर्थ भाव में हो तो जातक मंत्री वा सेनापति, पुण्यवान्, यशस्वी, बुद्धिमान्, साहसी और क्रोधरहित होता है॥ ६८॥ भाग्येश पाँचवें या लाभ भाव में हो तो जातक भाग्यवान्, जनता का प्रेमी, गुरु की भक्ति में आसक्त, मानी तथा धीर होता है॥ ६९॥

धनधान्ययुतो नित्यं गुण-सौन्दर्यसंयुतः।
बहुभ्रातृसुखं युक्तं भाग्येशे नवमे सति॥७०॥
भाग्येशे त्रिकभावे चेत्भाग्यहीनो भवेन्नरः।
मातुलस्य सुखं न स्याज्ज्येष्ठभ्रातृसुखं तथा॥७१॥

भाग्येश नवम भाव में हो तो जातक धन-धान्य, गुण-सौंदर्य तथा अनेक भाइयों से युक्त होता है॥ ७०॥ भाग्येश ६, ८, १२ भावों में हो तो जातक भाग्यहीन, मामा और ज्येष्ठ भाई के सुख से हीन होता है॥ ७१॥

अथ कर्मेशभावफलम्-

कर्मेशाधिपतौ लग्ने कवितागुणसंयुतः।
बाल्ये रोगी सुखी पश्चादर्थवृद्धिर्दिने दिने॥७२॥
धने मदे च सहजे कर्मेशो यदि संस्थितः।
मनस्वी गुणवान् वाग्मी सत्यधर्मसमन्वितः॥७३॥

कर्मेश लग्न में हो तो जातक कविता करने वाला, बाल्यकाल में रोगी, पीछे सुखी और प्रतिदिन धन में वृद्धि करने वाला होता है॥ ७२॥ कर्मेश २, ३, ७ भावों में हो तो जातक मनस्वी, गुणी, बुद्धिमान् और सत्य बोलने वाला होता है॥ ७३॥

दशमेशे सुखे कर्मे ज्ञानवान्सुखविक्रमी।
गुरुदेवार्चनरतो धर्मात्मा सत्यसंयुतः॥७४॥
दशमेशे सुते लाभे धनवान् पुत्रवान् भवेत्।
सर्वदा हर्षसंयुक्तः सत्यवादी सुखी नरः॥७५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कर्मेश चौथे या दशम भाव में हो तो जातक ज्ञानी, सुखी, विक्रमी, गुरु, देवता के पूजन में रत, धर्मात्मा और सत्यवादी होता है॥ ७४॥ कर्मेश पाँचवें या एकादश भाव में हो तो जातक धनी, पुत्रवान, सर्वदा प्रसन्नचित्त, सत्यवादी और सुखी होता है॥ ७५॥

कर्मेशोऽरिव्यये यस्य शत्रुभिः परिपीडितः।
चातुर्यगुणसंपन्नः क्वचिच्च न सुखी नरः॥ ७६॥
कर्मेशो रंध्रगे जातो क्रूरो चौरोऽथवा धूर्त्तः।
अल्पायुरसद्वक्ता मातृसंतापकारकः॥ ७७॥

कर्मेश छठे या बारहवें भाव में हो तो जातक शत्रुओं से पीड़ित, चतुर और कभी सुखी न रहने वाला होता है॥ ७६॥ कर्मेश आठवें भाव में हो तो जातक क्रूर, चोर अथवा धूर्त और झूठ बोलने वाला तथा माता को संताप देने वाला होता है॥ ७७॥

कर्मेशो नवमे यस्य स भवेत्कुलपालकः।
सद्बंधुमित्रसंयुक्तः भातृभक्तोऽथ पूजकः॥ ७८॥

कर्मेश नवम भाव में हो तो जातक कुलपालक, श्रेष्ठ बंधु-मित्र से युक्त और मातृभक्त होता है॥ ७८॥

अथ लाभेशभावफलम्-

लाभेशे संस्थितेलग्ने धनवान्सात्विको महान्।
समदृष्टिर्महान्वक्ता कौतुकी च भवेत्सदा॥ ७९॥
लाभेशे च धने पुत्रे नानासुखसमन्वितः।
पुत्रवान्धार्मिकश्चैव सर्वसिद्धियुतः पुमान्॥ ८०॥

लाभेश लग्न में हो तो जातक धनी, सात्त्विक, समदृष्टि, वक्ता और कौतुकी होता है॥ ७९॥ लाभेश दूसरे या पाँचवें भावमें हो तो जातक अनेक सुखों से युक्त, पुत्रवान्, धार्मिक और सभी पदार्थों से युक्त होता है॥ ८०॥

लाभेशे सहजे तुर्ये तीर्थेषु तत्परो महान्।
कुशलः सर्वकार्येषु केवलं शूलरोगवान्॥ ८१॥

लाभेश तीसरे या चौथे भाव में हो तो जातक तीर्थयात्रा में तत्पर, सभी कार्यों में कुशल और शूलरोग से युक्त होता है॥ ८१॥

लाभेशे षष्ठभवने नानारोगसमन्वितः।
सर्वं सुखं भवेत्तस्य प्रवासी परसेवकः॥ ८२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लाभेश छठे भाव में हो तो जातक अनेक रोगों से युक्त, प्रवासी और दूसरे का नौकर होता है॥ ८२॥

लाभेशे सप्तमे रंध्रे भार्या तस्य न जीवति।
उदारो गुणवान्कर्मी मूर्खो भवति निश्चितम्॥ ८३॥
लाभेशे गगने धर्मे राजपूज्यो धनाधिपः।
चतुरः सत्यवादी च निजधर्मसमन्वितः॥ ८४॥

लाभेश सातवें या आठवें भाव में हो तो जातक की स्त्री नहीं जीती है वह गुणी, उदार और मूर्ख होता है॥ ८३॥ लाभेश, दशम या नवम भाव में हो तो जातक राजा से पूज्य, धनी, चतुर, सत्यवक्ता और अपने धर्म से युत होता है॥ ८४॥

लाभेशे संस्थिते लाभे स वाग्मी भवति ध्रुवम्।
पाण्डित्यं कविता चैव वर्धते च दिने दिने॥ ८५॥
प्राप्तिस्थानाधिपे रिःफे म्लेच्छसंसर्गकारकः।
कामुको बहुकांतश्च क्षणिको लम्पटः सदा॥ ८६॥

लाभेश लाभ भाव में हो तो जातक बुद्धिमान्, पंडित और कवि होता है॥ ८५॥ लाभेश बारहवें भाव में हो तो जातक नीचों से संसर्ग करने वाला, कामी, अनेक स्त्रियों वाला और लम्पट होता है॥ ८६॥

अथ व्ययेशभावफलम्-

व्ययेशे मदने लग्ने जायासौख्यं भवेन्न हि।
दुर्बलः कफरोगी च धनविद्याविवर्जितः॥ ८७॥

व्ययेश सातवें या लग्न में हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता, जातक दुर्बल, कफरोगी और धन-विद्या से हीन होता है॥ ८७॥

व्ययेशे च धने रन्ध्रे विष्णुभक्तिसमन्वितः।
धार्मिकः प्रियवादी च सम्पूर्णगुणसंयुतः॥ ८८॥

व्ययेश दूसरे या आठवें भाव में हो तो जातक विष्णुभक्त, धार्मिक प्रियभाषी, गुणी होता है॥ ८८॥

भायद्विषी प्रियद्वेषी गुरुद्वेषी भवेन्नरः।
व्ययेशे सहजे धर्मे स्वशरीरस्य पोषकः॥ ८९॥
पुत्रहीनो महदुःखी तीर्थाटनपरो भवेत्।
कृपणो रोगयुक्तश्च व्ययेशे च सुते सुखे॥ ९०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

व्ययेश तीसरे या नवम भाव मे हो तो जातक अपने शरीर का पोषक, द्वेषी, मित्रद्रोही और गुरुद्रोही होता है॥ ८९॥ व्ययेश पाँचवें या चौथे भाव में हो तो जातक पुत्ररहित, महादुःखी, तीर्थाटन करने वाला, कृपण और रोंगी होता है॥ ९०॥

व्ययेशेऽरिव्यये पापी मातृमृत्युविचिन्तकः ।
क्रोधी सन्तानदुःखी च परजायासु लम्पटः ॥ ९१ ॥
व्ययेशे दशमे लाभे पुत्रसौख्यं भवेन्न हि ।
मणिमाणिक्यमुक्तादि धत्ते किंचित्समालभेत् ॥ ९२ ॥

व्ययेश छठे या बारहवें भाव में हो तो जातक पापी, माता की मृत्यु का कारण, क्रोधी, संतान से कष्ट और परस्त्रीगामी होता है॥ ९१ ॥ व्ययेश दशम या एकादश भाव में हो ते जातक पुत्रसुख से हीन, मणि-माणिक्य आदि के होते हुए भी सुखहीन होता है॥ ९२॥

एतत्ते कथितं विप्र भावेशानां तु यत् फलम् ।
बलाबलविवेकेन सर्वेषां फलमादिशेत् ॥ ९३ ॥
ग्रहे पूर्णबले प्राप्ते फलं पूर्णं समादिशेत् ।
अर्धमर्धबले प्राप्ते हीने पादं समादिशेत् ॥ ९४ ॥
भावानां द्वादशानां च सर्वेषां फलमादिशेत् ।
उक्तं भावस्थितानां च भावेशानां फलं मया ॥ ९५ ॥

जो भावेशों के फल कहे गये हैं वे ग्रहों के बल के अनुसार ही होते है॥ ९३॥ ग्रह पूर्णबली हो तो पूर्णफल, मध्यबली हो तो आधा फल और हीनबली हो तो चतुर्थांश फल देता है॥ ९४-९५॥

इति पाराशरहोरायां पूर्वखण्डेसुबोधिन्यां भावेशफलाध्यायः त्रयोदशः॥ १३॥

❖

अथ नाभसादियोगाध्यायः

अधुना नाभसा योगाः कथयामि सविस्तरः ।
अष्टादशशतगुणितास्तेषां भेदाः समासतः ॥ १ ॥
आश्रयाख्यास्त्रयो योगाः दशयोगद्वयं ततः ।
आकृतिर्विंशतिः संख्या योगानां सप्तकं स्मृतम् ॥ २ ॥

अब मैं नाभस योगों को विस्तारपूर्वक कह रहा हूँ, जिनके भेद १८०० होते हैं॥ १ ॥ जिसमें आश्रय योग ३, दल योग २, आकृति योग २० और संख्या योग ७ मुख्य हैं॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तेषां नामानि-

रज्जुयोगो मूसलश्च नलो मालाभुजङ्गमौ ।
गदायोगश्च शकटः शृंगाटकविहंगमौ ॥ ३ ॥
हलवज्रयवाश्चैव कमलो वापियूपकौ ।
शरशक्तिदंडनौकाकूटछत्रधनूषि च ॥ ४ ॥
अर्धेन्दुयोगश्चक्राख्यः समुद्रश्चेति विंशतिः ।
वीणादामनिकायोगः पाशकेदारशूलकाः ॥ ५ ॥
युगगोलौ ततः प्रोक्तौ योगाद्वात्रिंशका इमे ।
तेषां च लक्षणं वक्ष्ये यथाबुद्धिविवेकतः ॥ ६ ॥

रज्जु, मुसल, नल-ये आश्रय योग हैं और माला, सर्प-ये दल योग हैं। गदा, शकट, शृंगाटक,पक्षी, हल, वज्र, यव, कमल, वापी, यूप, शरशक्ति, दंड, नौका, कूट, छत्र, धनुष, अर्धचन्द्र, चक्र, समुद्र-ये २० आकृतियोग हैं। वीणा, दाम, पाश, केदार, शूल, युग, गोल- ये ७ संख्या योग हैं। ये सभी मिलकर ३२ नाभस योग कहे जाते हैं। अब इनके लक्षण कह रहा हूँ॥ ३-६॥

अथाऽऽश्रययोगलक्षणम्-

सर्वे चरस्था अपि वा स्थिरस्था द्विदेहसंस्था यदि वा भवन्ति ।
क्रमेण रज्जुर्मुशलं नलश्च योगत्रयं स्यादिदमाश्रयाख्यम् ॥ ७ ॥

यदि सभी ग्रह चर राशि में हो तो रज्जु योग, सभी स्थिर राशि में हों तो मुशल योग और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशि में हों तो नल योग होता है-ये तीन आश्रय योग हैं॥ ७॥

अथ दलयोगद्वयमाह-

केन्द्रत्रये सौम्यखगैस्तु माला खलग्रहैर्व्यालसमाह्वयः स्यात् ।
इदं तु योगद्वितयं दलाख्यं मुनीश्वरेण प्रतिपादितं हि ॥ ८ ॥

यदि किसी भी तीन केन्द्रों में शुभग्रह हो तो माला योग होता है। यदि पापग्रह हो तो व्याल योग होता है। ये दोनों दलयोग हैं॥ ८॥

अथविंशत्याकृतियोगमाह-

आसन्नकेन्द्रद्वयगैर्गदाख्यो लग्नास्तसंस्थैः शकटः समस्तैः ।
खबन्धुयातैर्विहगः प्रदिष्टः शृंगाटकं लग्ननवात्मजस्थैः ॥ ९ ॥

यदि सभी ग्रह समीप के दो केन्द्रों में हों तो 'गदा' योग होता है। सभी ग्रह केवल लग्न और सप्तम में हों तो शकट योग होता है। यदि सभी ग्रह दशम और चतुर्थ में हों तो 'विहग' योग होता है। सभी ग्रह लग्न-नवम और पाँचवें भाव में हों तो 'शृंङ्गाटक' योग होता है॥ ९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धनादिस्वास्थैस्त्रिमदायगैर्वा चतुर्थरन्ध्रव्ययसंस्थितैर्वा ।
नभस्तलस्थैर्हलनामयोगः किलोदितोऽयं निखिलागमज्ञैः ॥१०॥
लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्चमेषूरणबन्धुयातैः ।
वज्राभिधस्तैर्विपरीतसंस्थैर्यवश्च मिश्रैः कमलाभिधानः ॥११॥

सभी ग्रह २,६,१०,३,७,११,४, ८,१२में हों तो 'हल' नाम का योग होता है।१०। शुभग्रह लग्न और सप्तम भाव में हों और पापग्रह दशम और चतुर्थभाव में हों तो 'वज्र' योग होता है। इसके विपरीत यानि १,७ भाव में पापग्रह और ४,१० भाव में शुभ ग्रह हो तो 'यव' योग होता है। यदि सभी केन्द्रों में मिश्रित'शुभ-पाप' ग्रह बैठे हों तो'कमल' योग होता है।११।

त्यक्त्वाकेंद्राणि चेत्खेटा शेषस्थानेषु संस्थिताः ।
वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥१२॥
लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचरेन्द्रैः ।
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलुजातकज्ञैः ॥१३॥

यदि केन्द्र से भिन्न (पणफर) में सभी ग्रह हो तो (वापी) योग होता है॥१२॥ सभी ग्रह लग्न के चौथे भाव के अन्दर ही हों तो'यूप' योग होता है। सभी ग्रह लग्न से, चौथे से सप्तम के अन्दर हों तो 'शर' योग होता है। सभी ग्रह सप्तम से दशम के अन्दर हों तो 'शक्ति' योग होता है। सभी ग्रह दशम से लग्न के अन्दर हो तो 'दण्ड' योग होता है॥१३॥

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथकूटसंज्ञः ।
छत्रं धनुश्चान्यगृहप्रवृत्तैर्नोपूर्वकैर्योग इहार्धचन्द्रः ॥१४॥
तनोर्धनाद्यैकगृहान्तरेण स्युः स्थानषट्के गगनेचरेन्द्राः ।
चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगा इतीहाकृतिजाश्चविंशत् ॥१५॥

सभी ग्रह लग्न से सातवें भाव के अन्दर हों तो 'नौका' योग होता हैं। सभी ग्रह चतुर्थ से दशम भाव के अन्दर सातघरों में हों तो 'कूट' योग होता है। सभी ग्रह सप्तम से लग्न पर्यन्त सात भावों में हों तो 'छत्र' योग होता है। सभी ग्रह दशम से चतुर्थ भाव के अन्दर सात भावों में हों तो 'चाप' योग होता है इसके अतिरिक्त भावों में ग्रह हों तो 'समुद्र योग' होता है॥१४॥ लग्न से ११वें भाव तक एक-एक भाव छोड़कर (१, ३, ५, ७, ९, ११) सभी ग्रह हों तो 'चक्र' और धन भाव से बारहवें भाव के बीच में एक-एक स्थान छोड़कर (२, ४, ६, ८, १०, १२) सभी ग्रह हों तो 'समुद्र' योग होता है॥१५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ये योगाः कथितः पुरावहुतरास्तेषामभावे भवेद्-
गोलश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः।
केदारश्च चतुर्गृहगतैर्ग्रहैः पाशस्तु पंचस्थितैः
षट्स्थैर्दामनिका च सप्तगृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥१६॥

पूर्वोक्त योगों के अभाव में निम्नलिखित योग होते हैं। यदि सभी ग्रह एक ही राशि में हों तो 'गोल' योग, दो भावों में हों तो 'युग' तीन गृहों में हों तो 'शूल' योग, चार भावों में हों तो 'केदार' योग, पाँच राशियों में सभी ग्रह हों तो 'पाश' योग, ६ राशियों में हों तो 'दामिनी योग' और सभी ग्रह ७ राशियों में हों तो 'वीणा' नामक योग होता है॥ १६॥

रज्जुयोगफलम्-

अटनप्रियाःसुरूपाःपरदेशस्वास्थ्यभाग्गिनो मनुजाः।
क्रूरा खलस्वभावा रज्जुप्रभवा सदा कथिताः ॥१७॥

रज्जु योग में उत्पन्न पुरुष भ्रमणशील, स्वरूपवान्, परदेश में रहनेवाला, क्रूर और खल स्वभाव का होता है॥ १७॥

मुगलयोगफलम्-

मानज्ञानधनैश्वर्यैर्युक्ता नृपप्रियाः ख्याताः।
बहुपुत्राःस्थिरचित्तामुसलसमुत्थाभवन्ति नराः ॥१८॥

मुगल योग में उत्पन्न पुरुष मान, ज्ञान, धन, ऐश्वर्य से युक्त, राजा का प्रिय, प्रसिद्ध, अनेक पुत्रों वाला और स्थिरचित्त वाला होता है॥ १८॥

नलयोगफलम्-

न्यूनातिरिक्तदेहा धनसंचयभागिनोऽतिनिपुणाश्च।
बंधुहिताश्च सुरूपा नलयोगे सम्प्रसूयन्ते ॥१९॥
नित्यं सुखप्रधाना वाहनवस्त्रान्नभोगसम्पन्नाः।
कांताः सुबहुस्त्रीका मालायां संप्रसूताः स्युः ॥२०॥

नलयोग में उत्पन्न पुरुष हीन और अधिक अंगों वाला, धनसंचय करने वाला, अत्यन्त चतुर, बंधुओं का हितैषी, सुरूप होता है॥ १९॥ माला योग में उत्पन्न पुरुष नित्य सुखी, वाहन, वस्त्र भोग से संपन्न, सुंदर शरीर, अनेक स्त्रियों से युक्त होता है॥ २०॥

सर्पयोगफलम्-

विषमाः क्रूरा नि स्वा नित्यं दुःखार्दिताः सुदीनाश्च।
परभक्षणनिरताः सर्पप्रभवा भवन्ति नराः ॥२१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सर्प योग में उत्पन्न पुरुष कुटिल, क्रूर, निर्धन, नित्य दुःखी, दीन और दूसरे के भक्ष्य, भोज्य से विरत रहने वाला होता है॥ २१॥

गदायोगफलम्-

सततोद्युक्तार्थवशा यज्वानः शास्त्रगेयकुशलाश्च ।
धनकनकरत्नसंपत्संयुक्ता मानवा गदायां तु ॥ २२॥

गदा योग में उत्पन्न पुरुष निरन्तर धन के लिये उद्योगी, यज्ञ करने वाला, शास्त्र और संगीत में कुशल, धन, सुवर्ण, रत्न से युक्त होता है॥ २२॥

शकटयोगफलम्-

रोगार्ताः कुनखा मूर्खाः शकटानुजीविनो निःस्वाः ।
मित्रस्वजनविहीनाः शकटे जाता भवंति नराः ॥ २३॥

शकट योग में उत्पन्न पुरुष रोगी, कुनखी, मूर्ख, गाड़ी से जीविका चलाने वाला और मित्र तथा स्वजनों से हीन होता है॥ २३॥

विहगयोगफलम्-

भ्रमणरुचयो विकृष्टा दूताःसुरतानुजीविनो धृष्टाः ।
कलहप्रियाश्च नित्यं विहगे योगे सदा जाताः ॥ २४॥

विहग 'पक्षी' योग में उत्पन्न पुरुष भ्रमणशील, परतन्त्र, दूत, सुरत से जीविका चलाने वाला, ढीठ और झगड़ालू होता है॥ २४॥

शृंङ्गाटकयोगफलम्-

प्रियकलहाः समरसहाः सुखिनो नृपतेः प्रियाः शुभकलत्राः।
आढ्या युवतिद्वेष्याः शृंगाटकसंभवाः मनुजाः ॥२५॥

शृंगाटक योग में उत्पन्न पुरुष कलहप्रिय, झगड़ालू, सुखी, राजा का प्रिय, सुन्दर स्त्री से युक्त और स्त्री का द्वेषी होता है॥ २५॥

हलयोगफलम्-

बह्वाशिनो दरिद्राः कृषीबला दुःखिताश्च सोद्वेगाः ।
बन्धुसुहृद्भिः सक्ताः प्रेष्या हलसंज्ञके सदा पुरुषाः ॥ २६॥

हल योग में उत्पन्न पुरुष बहुभोजी, दरिद्र, कृषि करने वाला, दुःखी, उद्वेग से युक्त, बन्धु तथा मित्रों में आसक्त और दास होता है॥ २६॥

वज्रयोगफलम्-

आद्यंतवयः सुखिनः शूराः सुभगा निरीहाश्च ।
भाग्यविहीना वज्रे जाता खला विरुद्धाश्च ॥ २७॥

वज्र योग में उत्पन्न पुरुष आदि और अंत, बाल्य और वृद्ध अवस्था में सुखी, शूर, सुन्दर, निर्दय, भाग्यहीन होता है॥ २७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यवयोगफलम्-

व्रतनियममंगलपरा वयसो मध्ये सुखार्थपुत्रयुताः ।
दातारः स्थिरचित्ता यवयोगभवाः सदा पुरुषाः ॥२८॥

यव योग में उत्पन्न पुरुष व्रत, नियम, मंगल को करने वाला, आयुष्य के मध्य में सुख, धन, पुत्र से युक्त, दाता और स्थिरचित्त होता है॥ २८॥

कमलयोगफलम्-

विभवगुणाढ्याः पुरुषाः स्थिरायुषो विपुलकीर्त्तयः शुद्धाः ।
शुभशतकाः पृथ्वीशाः कमलभवा मानवाः नित्यम् ॥२९॥

कमलयोग में उत्पन्न पुरुष धन-ऐश्वर्य, गुणों से युक्त, दीर्घायु, अत्यन्त कीर्तिमान्, सैकड़ों शुभ कार्य करने वाला राजा होता है॥ २९॥

वापीयोगफलम्-

निधिकरणे निपुणाधियः स्थिरार्थसुखसंयुताः सुतयुताश्च ।
नयनसुखसंप्रहृष्टा वापीयोगेन राजानः ॥३०॥

वापी योग में उत्पन्न पुरुष धन संग्रह में चतुर, स्थिर धन और सम्पत्ति से युक्त, पुत्रवान्, नेत्र को सुख देने वाले पदार्थों से युक्त राजा होता है॥३०॥

यूपयोगफलम्-

आत्मविदिज्यानिरतः स्त्रिया युतः सत्त्वंसंपन्नः ।
व्रतयमनियमे यूपे जातो विशिष्टश्च ॥३१॥

यूपयोग में उत्पन्न पुरुष ज्ञानी, यज्ञकर्त्ता, स्त्री से युत, सत्ययुक्त, व्रत-नियम में संयुक्त और विशिष्ट व्यक्ति होता है॥ ३१॥

शरयोगफलम्

इषुकरणे च समर्था मृगयाधनसेविताश्च मांसादाः ।
हिंस्राः कुशिल्पकराः शरयोगे मानवाः प्रसूयन्ते ॥३२॥

शरयोग में उत्पन्न पुरुष बाण बनाने वाला, आखेट के धन से सुखी, मांस खाने वाला, हिंसक, कुत्सित शिल्प करने वाला होता है॥ ३२॥

शक्तियोगफलम्-

धनरहितविफलदुःखितनीचालसाश्चिरायुषः पुरुषाः ।
संग्रामबुद्धिनिपुणाः शक्त्यां जाताः स्थिराः सुभगाः ॥३३॥

शक्ति योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र, निष्फल, दुःखी, नीच, आलसी, दीर्घजीवी, झगड़ालू बुद्धि का और निपुण होता है॥ ३३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दंडयोगफलम्-

हतदारपुत्रनिःस्वाः सर्वत्र च निर्घृणाः स्वजनबाह्याः ।
दुःखितनीचप्रेष्या दण्डप्रभवा भवन्ति नराः ॥ ३४ ॥

दंडयोग में उत्पन्न पुरुष स्त्री-पुत्र से हीन, निर्धन, निर्लज्ज, अपने स्वजनों से त्यक्त, दुःखी और नीचों का दास होता है॥ ३४ ॥

नौकायोगफलम्

सलिलोपजीविविभवाः बह्वाशाः ख्यातकीर्त्तयो दुष्टाः ।
कृपणा मलिना लुब्धा नौसंजाताः खलाः पुरुषाः ॥ ३५ ॥

नौका योग में उत्पन्न पुरुष जल से उत्पन्न पदार्थों से जीविका चलाने वाला, बहुत भोजन करने वाला, प्रसिद्ध कीर्त्ति वाला, दुष्ट, कृपण, मलिन और लोभी होता है॥ ३५ ॥

कूटयोगफलम्-

अनृतकथनवधपापा निष्किंचनाः शठाः क्रूराः ।
कूटसमुत्था नित्यं भवंति गिरिदुर्गवासिनो मनुजाः ॥ ३६ ॥

कूट योग में उत्पन्न पुरुष झूठ बोलने वाला, पापी, वधिक, धूर्त्त, क्रूर, नित्य झूठा, व्यापार करने वाला, पहाड़ और जंगलोंमें रहने वाला होता है॥ ३६॥

छत्रयोगफलम्-

स्वजनाश्रयो दयावान्नानानृपवल्लभः प्रकृष्टमतिः ।
प्रथमेऽन्त्ये वयसि नरः सुखवान्दीर्घायुरातपत्री स्यात् ॥ ३७ ॥

छत्रयोग में उत्पन्न पुरुष अपने जनों को आश्रय देने वाला, दयावान्, अनेक राजाओं का प्रिय, उत्तम बुद्धि से युक्त, प्रथम और अन्तिम अवस्था में सुखी, दीर्घायु होता है॥ ३७ ॥

चापयोगफलम्-

आनृतिकगुप्तपालाश्चौराः कितवाश्च कानने निरताः ।
कार्मुकयोगे जाता भाग्यविहीनाः शुभा वयोर्मध्ये ॥ ३८ ॥

चापयोग में उत्पन्न पुरुष झूठ बोलने वाला, जेलखाने का मालिक, चोर, धूर्त, जंगल का प्रेमी, भाग्यहीन और अवस्थाके मध्य में सुखी होता है॥ ३८॥

अर्धचन्द्रयोगफलम्-

सेनापतयः सर्वे कान्तशरीरा नृपप्रिया बलिनः ।
मणिकनकभूषणयुता भवन्ति योगे वार्धचंद्राख्ये ॥ ३९ ॥

अर्धचन्द्रयोग में उत्पन्न होने वाले सभी पुरुष सुन्दर शरीर के सेनापति, राजा के प्रिय, बली, मणि, सुवर्ण और आभूषण से युक्त होते हैं॥ ३९ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चक्रयोगफलम्-

प्रणताशेषनराधिपकिरीटरत्नप्रभास्फुरितपादः ।
भवति नरेन्द्रो मनुजश्चक्रे यो जायते योगे ॥४०॥

चक्र योग में उत्पन्न पुरुष अनेक राजाओं के रत्नजटित मुकुटों से नमस्कार किया जाने वाला राजा होता है॥ ४०॥

समुद्रयोगफलम्-

बहुरत्नधनसमृद्धा भोगयुता धनजनप्रियाः ससुताः।
उदधिसमुत्थाः पुरुषाः स्थिरविभवाः साधुशीलाश्च ॥४१॥

समुद्रयोग में उत्पन्न पुरुष अनेक रत्न एवं धन से समृद्ध, भोगयुक्त, जनप्रिय, पुत्रवान्, स्थिर धनवाला और सज्जन होता है॥ ४१॥

वीणायोगफलम्-

प्रियगीतनृत्यवाद्यनिपुणाः सुखिनश्च धनवन्तः ।
नेतारो बहुभृत्या वीणायां कीर्तिताः पुरुषाः ॥४२॥

वीणा योग में उत्पन्न पुरुष गीत, नाच और बाजा का प्रेमी, निपुण, सुखी, धनी, नेता तथा अनेक नौकरों वाला होता है॥ ४२॥

दामिनीयोगफलम्-

दामिन्यामुपकारी नयधनयुक्तो महेश्वरः ख्यातः ।
बहुसुतरत्नसमृद्धो धीरो जायेत विद्वांश्च ॥४३॥

दामिनी योग में उत्पन्न पुरुष नीति और धन से युक्त, प्रभु, प्रसिद्ध, अनेक पुत्र, रत्न से समृद्ध और धीर तथा पंडित होता है॥ ४३॥

पाशयोगफलम्-

पाशे बन्धनभाजः कार्ये दक्षाः प्रपंचकाराश्च ।
बहुभाषिणो विशीला बहुभृत्याः सम्प्रतानाश्च ॥४४॥

पाश योग में उत्पन्न पुरुष बंधन को भोगने वाले, कार्य में चतुर, प्रपंची, बहुत बोलने वाले, दुःशील और अनेक नौकरों से युक्त तथा परिवार वाले होते हैं॥ ४४॥

केदारयोगफलम्-

सुबहूनामुपयोज्याः कृषीवलाः सत्यवादिनः सुखिनः ।
केदारे संभूताश्चलस्वभावा धनैर्युक्ताः ॥४५॥

केदार योग में उत्पन्न पुरुष बहुतों का उपकारी, कृषिकर्त्ता, सत्यवादी, सुखी, चंचल और धनी होता है॥ ४५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शूलयोगफलम्-

तीक्ष्णालसधनहीना हिंस्राः सुबहिष्कृता महाशूराः ।
संग्रामे लब्धयशस्काः शूले योगे भवंति नराः ॥४६॥

शूल योग में उत्पन्न पुरुष बड़ा आलसी, निर्धन, हिंसक, जाति-बहिष्कृत, शूरवीर, संग्राम में लब्धकीर्त्ति वाला होता है॥ ४६॥

युगयोगफलम्-

पाखंडवादिनो वा धनरहिता वा बहिष्कृता लोके ।
सुतमातृधर्मरहिता युगयोगे ये नरा जाताः ॥४७॥

युग योग में उत्पन्न पुरुष पाखण्डी, निर्धन, लोक में बहिष्कृत, पुत्र-माता के धर्म से हीन होता है॥ ४७॥

गोलयोगफलम्-

बलसंयुक्ता विधना विद्याविज्ञानवर्जिता मलिनाः ।
नित्यं दुःखितदीना गोले योगे भवन्ति नराः ॥४८॥
सर्वास्वपि दशास्वेते भवेयुः फलदायिनः ।
प्राणिनामिति विज्ञेयाः प्रवदन्ति तवाग्रजाः ॥४९॥

गोलयोग में उत्पन्न पुरुष बलवान्, निर्धन, विद्या से हीन, मलिन, हमेशा दुःखी और दीन होता है॥ ४८॥ इन योगों का फल सभी ग्रहों की दशा में होता है, यह पूर्वजों का निर्णय है॥ ४९॥

इति बृहत्पाराशरहोरायां पूर्वखण्डे सुबोधिन्या नाभसयोगाध्यायः चतुर्दशः ॥१४॥

❖

अथाऽनेकयोगाध्यायः

अथ गजकेसरीयोगस्तत्फलञ्चाह-

केन्द्रस्थितेदेवगुरौ शशांकाद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्केनीचास्तहीनैर्गजकेसरीति ॥१॥

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है, और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुए शुक्र-गुरु और बुध से देखा जाता हो तो गजकेसरी योग होता है॥ १॥

गजकेसरिसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।
मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियंकरो भवेत् ॥२॥

इस योग में उत्पन्न पुरुष धनी, मेधावी, गुणी एवं राजा का प्रिय करने वाला होता है॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथामलायोगस्तत्फलं चाह-

लग्नाद्वा चन्द्रलग्नाद्वा दशमे शुभसंयुते।
योगोऽयममला नाम कीर्तिराचन्द्रतारकी ॥३॥
राजपूज्यो महाभोगी दाता बन्धुजनप्रियः।
परोपकारी गुणवानमलायोगसंभवः ॥४॥

जन्मलग्न से अथवा चन्द्रमा से दशम स्थान में केवल शुभग्रह हों तो अमला योग होता है। अमला योग में उत्पन्न पुरुष की कीर्त्ति जब तक चन्द्रमा आकाश में रहेगा तब तक रहती है और वह राजा से पूज्य, महाभोगी, दाता और बंधुओं का प्रिय होता है॥ ३-४॥

अथ शुभाशुभयोगस्तत्फलञ्चाह-

शुभाशुभाढ्ये यदि जन्मलग्ने शुभाशुभाख्यौ भवतस्तदानीम्।
व्ययस्वगैः पापशुभैर्विलग्नात्पापाख्यसौम्यग्रहकर्त्तरी च॥५॥

यदि लग्न में शुभग्रह युत हों तो शुभयोग और पापग्रह युत हों तो अशुभ योग होता है। १२।२ भाव में पापग्रह हो तो पापकर्तरी और शुभग्रह हो तो शुभकर्त्तरी होती है॥ ५॥

शुभयोगभवो वाग्मी रूपशीलगुणान्वितः।
पापयोगोद्भवः कामी पापकर्मपरार्थयुक् ॥६॥

शुभ योग वा शुभ कर्त्तरी हो तो जातक बुद्धिमान, रूप-शील-गुण से युक्त होता है। पापग्रह से उत्पन्न योग हो तो जातककामी पापकर्म करने वाला होता है॥ ६॥

अथ पर्वतयोगस्तत्फलञ्चाह-

सौम्येषु केन्द्रगृहगेषु सपत्नरंध्रे शुद्धेऽथवा शुभयुते यदि पर्वतःस्यात्।
लग्नान्त्यपौ यदि परस्परकेन्द्रयातौ मित्रेक्षितौ भवति पर्वतनामयोगः।७।
भाग्यान्वितः पर्वतयोगजातो विद्याविनोदाभिरतः प्रदाता।
कामो परस्त्रीजनकेलिलोलस्तेजो यशस्वी पुरनायकः स्यात्।८।

यदि सातवें-आठवें भाव में कोई ग्रह न हो अथवा शुभग्रह से युत हो और केन्द्रों में शुभग्रह हो तो पर्वत योग होता है। लग्नेश और व्ययेश परस्पर केन्द्र में हों और मित्रग्रह से देखे जाते हों तो पर्वत योग में उत्पन्न पुरुष भाग्यवान्, विद्वान और दाता होता है॥ ७-८॥

अथ काहलयोगस्तत्फलञ्चाह-

अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबंधुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कर्मेश्वरेण सहिते तु विलोकिते वा
स्वोच्चे स्वके सुखपतौ यदि काहलः स्यात् ॥ ९॥
ओजस्वी साहसी मूर्खश्चतुरङ्गबलैर्युतः ।
यत्किंचिद् ग्रामनाथस्तु काहले जायते नरः ॥ १०॥

गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हो और लग्नेश बली हो तो काहल योग होता है। यदि सुखेश अपने उच्च या अपनी राशि का होकर कर्मेश से युत हो तो काहल योग होता है। इस योग में उत्पन्न पुरुष तेजस्वी, साहसी, मूर्ख, सेवा के बल से युक्त कुछ ग्रामों का स्वामी होता है॥ ९-१०॥

अथ चामरयोगस्तत्फलञ्चाह-

लग्नेश्वरे केन्द्रगते स्वतुंगे जीवेक्षिते चामरनामयोगः ।
सौम्यद्वये लग्नगृहे कलत्रे नवास्पदे वा यदि चामरः स्यात्॥ ११॥
योगे जातश्चामरे राजपूज्यो विद्वान् वाग्मी पण्डितो वा महीपः ।
सर्वज्ञः स्याद्वेदशास्त्राधिकारी जीवेल्लोके सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ १२॥

लग्नेश अपनी उच्चराशि का होकर केन्द्र में हो और गुरु से देखा जाता हो तो (चामर) योग होता है। यदि लग्न सप्तम वा नवम वा दशम में दो शुभग्रह हों तो (चामर) योग होता है। चामर योग में उत्पन्न पुरुष राजा से पूज्य, विद्वान्, वक्ता, पंडित वा राजा, सर्वज्ञ, वेद-शास्त्र का अधिकारी तथा ७० वर्ष तक जीने वाला होता है॥ ११-१२॥

अथ शङ्खयोगः-

अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ सुतशत्रुनाथौ लग्नाधिपे बलयुते यदि शङ्खयोगः ।
लग्नाधिपे चगगनाधिपतौ चरस्थे भाग्याधिपेबलयुतेतु तथा वदन्ति॥१३॥
शङ्खे जातो भोगशीलो दयालुः स्त्रीपुत्रार्थक्षेत्रवान् पुण्यकर्मा ।
शास्त्रज्ञानाचारसाधुक्रियावान् जीवेल्लोके वत्सराणामशीतिः ॥१४॥

पंचमेश, षष्ठेश परस्पर केन्द्र में हों, लग्नेश बलवान् हों तो 'शंख' योग होता है। लग्नेश-कर्मेश दोनों चर राशि में हों, भाग्येश बली हो तो (शङ्ख) योग होता है। शङ्ख योग में उत्पन्न पुरुष भोगी, दयालु, स्त्री, पुत्र, धन और क्षेत्र से युक्त, पुण्य कर्म करनेवाला, पंडित, सज्जन और ८० वर्ष तक जीने वाला होता है॥ १३-१४॥

अथ भेरीयोगमाह-

स्वांत्योदयास्तभवनेषु वियच्चरेषु कर्माधिपे बलयुते यदि भेरियोगः ।
केन्द्रे गतेसुरगुरौ सितलग्ननाथौ भाग्येश्वरेबलयुते तु तथैव वाच्यम् ॥१५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दीर्घायुषो विगतरोगभया नरेन्द्रा
बह्वर्थभूमिसुतदारयुताः प्रसिद्धाः ।
आचारभूरिसुखशौर्यमहानुभावा
भेरीप्रजातमनुजा निपुणाः कुलीनाः ॥ १६ ॥

यदि २।१२।७ भाव में ग्रह हों और कर्मेश बली हों तो 'भेरी' योग होता है। भाग्येश बली हो, गुरु, शुक्र, लग्नेश केन्द्र में हों तो 'भेरी' योग होता है। भेरी योग में उत्पन्न पुरुष दीर्घायु, नीरोग, निर्भय, राजा, भूमि, धन, पुत्र, स्त्री से युक्त, प्रसिद्ध, आचारवान्, सुख-पराक्रम से युक्त, निपुण और कुलीन होता है॥ १५-१६॥

अथ मृदङ्गयोगमाह-

उच्चग्रहांशकपती यदि कोणकेन्द्रे
तुङ्गस्वकीयभवनोपगते बलाढ्ये ।
लग्नाधिपे बलयुते तु मृदंगयोगः
कल्याणरूपनृपतुल्ययशःप्रदः स्यात् ॥ १७ ॥

जन्मकाल में जो ग्रह उच्चराशि का हो उसके नवांश का स्वामी यदि केन्द्र, कोण में अपने उच्च स्वगृह में हो, बली हो और लग्नेश बली हो तो 'मृदंग' योग होता है। इस योग में उत्पन्न पुरुष कल्याणकारी, राजा के समान यश वाला होता है॥ १७॥

अथश्रीनाथयोगमाह-

कामेश्वरे कर्मगते स्वतुंगे कर्माधिपे भाग्यपसंयुते च ।
श्रीनाथयोगःशुभदस्तदानीं जातो नरःशक्रसमो नृपालः ॥१८॥

सप्तमेंश दशमस्थान में हो, अपनी उच्चराशि में कर्मेश भाग्येश के साथ हो तो 'श्रीनाथ' योग होता है। इसमें उत्पन्न पुरुष इन्द्र के समान राजा होता है॥ १८॥

अथ शारदयोगः-

योगः शारदसंज्ञकः सुतगते कर्माधिपे चन्द्रजे
केन्द्रस्थे दिननायके निजगृहप्राप्तेऽतिवीर्यान्विते ।
चन्द्रात्कोणगते पुरन्दरगुरौ सौम्यत्रिकोणे कुजे
लाभे वा यदि देवमन्त्रिणि बुधात्तच्छारदासंज्ञकः ॥ १९ ॥
स्त्रीपुत्रबन्धुसुखरूपगुणानुरक्ता
भूपप्रिया गुरुमहीसुरदेवभक्ताः ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विद्याविनोदरतिशीलतपोबलाढ्या
जाताः स्वधर्मनिरता भुवि शारदाख्ये ॥ २० ॥

यदि पाँचवें भाव में कर्मेश हो, बुध केन्द्र में हो और सूर्य अपनी राशि में अत्यन्त बली हो, अथवा चन्द्रमा से ६,५ भाव में गुरु हो, बुध से त्रिकोण में भौम हो, बुध से लाभ भाव में गुरु हो तो 'शारद' योग होता है। शारद योग में उत्पन्न पुरुष विद्या का विनोदी, कामी, शीलवान्, तपस्वी, अपने धर्म में निरत, स्त्री, पुत्र, बन्धु के सुख से युक्त, राजा का प्रिय, गुरु, ब्राह्मण, देवता का भक्त होता है॥ १६-२० ॥

अथ मत्स्ययोगः-

लग्नधर्मगते पापे पंचमे सदसद्युते
चतुरस्त्रगते पापे योगोऽयं मत्स्यसंज्ञकः ।
कालज्ञः करुणासिन्धुर्गुणधीबलरूपवान्
यशोविद्यातपस्वी च मत्स्ययोगसमुद्भवः ॥ २१ ॥

लग्न से नवमभाव में पापग्रह हो, पाँचवें भाव में शुभग्रह-पापग्रह दोनों हों, चौथे या आठवें भाव में पापग्रह हों तो 'मत्स्य' योग होता है। मत्स्य योग में उत्पन्न पुरुष ज्योतिषी, करुणा की मूर्त्ति, गुणी, विद्वान्, बली, रूपवान्, यशस्वी, तथा तपस्वी होता है॥ २१ ॥

अथ कूर्मयोगः-

कलत्रपुत्रारिगृहेषु सौम्याः स्वतुङ्गमित्रांशकराशियाताः ।
तृतीयलाभोदयगास्त्वसौम्या मित्रोच्चसंस्था यदि कूर्मयोगः ॥ २२ ॥
विख्यातकीर्त्तिर्भुवि राज्यभोगी धर्माधिकः सत्त्वगुणप्रधानः ।
धीरः सुखी वागुपकारकर्त्ता कूर्मोद्भवो मानवनायको वा ॥ २३ ॥

अपने उच्च वा मित्रांश वा अपनी राशि में शुभग्रह ७।५।६ भाव में हो और अपने मित्र वा उच्च की राशि में गये हुये पापग्रह ३।११।१ भाव में हो तो 'कूर्म' योग होता है। कूर्मयोग में उत्पन्न पुरुष प्रसिद्ध कीर्त्तिवाला, राज्यभोग करने वाला, धार्मिक, सात्त्विक, धीर, सुखी, वाणी से उपकार करनेवाला अथवा राजा होता है॥ २२-२३ ॥

अथ खड्गयोगमाह-

भाग्येशे धनभावस्थे धनेशे भाग्यराशिगे ।
लग्नेशे केन्द्रकोणस्थे खड्गयोग इतीरितः ॥ २४ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वेदार्थशास्त्रनिखिलागमतत्त्वयुक्ति-
बुद्धिप्रतापबलवीर्यसुखानुरक्ताः ।
निर्मत्सराश्च निजवीर्यमहानुभावाः
खड्गे भवन्ति पुरुषाः कुशलाः कृतज्ञाः ॥२५॥

भाग्येश धनभाव में हो और धनेश भाग्यभाव में हो और लग्नेश केन्द्र कोण में हो तो 'खड्गयोग' होता है। खड्ग,योग में उत्पन्न पुरुष वेद के अर्थ को जानने वाला, शास्त्र तथा समस्त आगम शास्त्र के तत्त्व को जाननेवाला, बुद्धिमान्, प्रतापी, बलवान्, सुखी, मत्सरता से रहित, अपने पराक्रम से श्रेष्ठ, कुशल और कृतज्ञ होता है॥ २४-२५॥

अथ लक्ष्मीयोगफलम्-

केन्द्रमूलत्रिकोणस्थे भाग्येशे परमोच्चगे ।
लग्नाधिपे बलाढ्ये च लक्ष्मीयोग इतीरितः ॥२६॥
गुणाभिरामो बहुदेशनाथो विद्यामहात्कीर्तिरनङ्गरूपः ।
दिगन्तविश्रान्तनृपालवन्द्यो राजाधिराजो बहुदारपुत्रः॥२७॥

भाग्येश अपने परम उच्च में होकर केन्द्र (१।४।७।१०) वा अपने मूलत्रिकोण राशि में हो और लग्नेश बलवान् हो तो 'लक्ष्मी' योग होता है। लक्ष्मी योग में उत्पन्न पुरुष गुणों से युक्त, अनेक देशों का स्वामी, विद्या तथा महत्कीर्ति से युक्त, कामदेव के समान स्वरूप, सभी दिशानों में प्रसिद्ध, राजाओं से पूज्य, राजाओं का राजा और अनेक स्त्री-पुत्रों से युक्त होता है॥ २६-२७॥

अथ कुसुमयोगस्तत्फलञ्चाह-

स्थिरलग्ने भृगौ केन्द्रे त्रिकोणेन्दौ शुभेतरे ।
मानस्थानगते सौरे योगोऽयं कुसुमो भवेत् ॥२८॥

स्थिरलग्न (२।५।८।११) में जन्म हो और शुक्र केन्द्र में हो, चन्द्रमा ५वें भाव में हो और १०वें स्थान में शनि हो तो 'कुसुम' योग होता है॥२८॥

दाता महीमंडलनाथवंद्यो भोगी महावंशजराजमुख्यः।
लोके महाकीर्त्तियुतः प्रतापी नाथो नराणां कुसुमोद्भवः स्यात्।२९।

कुसुम योग में उत्पन्न पुरुष दाता, राजाओं से वंद्य, भोगी, उत्तम-कुल में उत्पन्न, राजाओं में मुख्य, संसार में कीर्त्तियुक्त, प्रतापी और राजा होता है॥ २९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ पारिजातयोगस्तत्फलंचाह-

विलग्ननाथस्थितराशिनाथः स्थानेशराशीशतदंशनाथः।
केन्द्रत्रिकोणायगतो यदि स्यात्स्वतुङ्गगो वा यदि पारिजातः॥ ३०॥
मध्यान्तसौख्यः क्षितिपालवंद्यो युद्धप्रियो वारणवाजियुक्तः।
स्वकर्मधर्माभिरतो दयालुर्योगो नृपः स्याद्यदि पारिजातः॥ ३१॥

लग्नेश जिस राशि में हो, उसका स्वामी जिस राशि में हो, उसका स्वामी वा उनके नवांश का स्वामी यदि केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में अथवा अपनी उच्चराशि में हो तो 'पारिजात' योग होता है। पारिजात योग में उत्पन्न पुरुष मध्य और अन्तिम अवस्था में सुखी, राजा से वंदनीय, युद्धप्रिय, हाथी-घोड़े से युक्त, अपने धर्म-कर्म में रत, दयालु होता है॥ ३०-३१॥

अथ कलानिधियोगस्तत्फलं चाह-

द्वितीये पंचमे जीवे बुध-शुक्र-युतेक्षिते।
क्षेत्रे तयोर्वा संप्राप्ते योगः स्यात्स कलानिधिः॥ ३२॥
कामी कलानिधिभवा सुगुणाभिरामः
संस्तूयमानचरणो नरपालमुख्यैः।
सेनातुरंगमदवारणशंखभेरी-
वाद्यान्वितो विगतरोगभयारिसंघः॥ ३३॥

दूसरे या पाँचवें स्थान में गुरु हो, बुध-शुक्र से युत वा दृष्ट हों अथवा इन्हीं की राशि में हों तो कलानिधि योग होता है। 'कलानिधि' योग में उत्पन्न पुरुष कामी, सुन्दर, गुणों से युक्त, राजाओं से पूज्यचरण वाला, सेना, घोड़ा, मतवाले हाथी, शंख, भेरी आदि बाजाओं से युक्त, रोग, भय और शत्रु से रहित होता है॥ ३२-३३॥

अथ पारिजातादियोगफलानि-

सपारिजातद्युचरः सुखानि नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।
सगोपुरांशो यदि गोधनानि सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम्॥ ३४॥
करोति पारावतभागयुक्तो विद्यायशःश्रीविपुलं नराणाम्।
सदेवलोको बहुयानसेनामैरावतस्थो यदि भूपतित्वम्॥ ३५॥

अपने पारिजात भाग (पृष्ठ ५३) में ग्रह हो तो सुख होता है। उत्तम वर्ग में हो तो नीरोग करता है। गोपुरांश में हो तो गौ और धन देता है। सिंहासनांश में हो तो विभूति अर्थात् ऐश्वर्य को देता है। पारावत भाग में हो तो विद्या, यश, विपुल लक्ष्मी को देता है। देवलोकांश में

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हो तो अनेक सवारी और सेना से युक्त होता है। ऐरावत अंश में हो तो जातक राजा होता है॥ ३४-३५॥

अथ लग्नाधियोगस्तत्फलञ्चाह-

लग्नाच्च दाराष्टमगेहसंस्थैः शुभैर्न पापग्रहयोगदृष्टैः।
लग्नाधियोगो हि तथा प्रसिद्धः पापैः सुखस्थानविवर्जितैश्च॥३६॥
लग्नाधियोगे बहुशास्त्रकर्त्ता विद्याविनीतश्च बलाधिकारी।
मुख्यस्तु निष्कापटिको महात्मा लोके यशोवित्तगुणाधिकः स्यात्॥३७॥

लग्न से सातवें, आठवें भाव में शुभग्रह पापग्रह से दृष्ट युत न हों और चौथे भाव में पापग्रह न हों तो 'लग्नाधियोग' होता है। लग्नाधियोग में उत्पन्न जातक अनेक शास्त्रों को बनाने वाला, विद्वान्, नम्र, सेनाधिकारी, मुख्यतः निष्कपट महात्मा और संसार में यश, धन और गुण से प्रसिद्ध होता है॥ ३६-३७॥

अथ चन्द्रयोगानाह-

सहस्ररश्मितश्चन्द्रे कंटकादिगते सति।
न्यूनमध्यवरिष्ठानि धनधीनैपुणानि च॥३८॥
स्वांशे वा स्वाधिमित्रांशे स्थितो चेद्दिवसे शशी।
गुरुणा दृश्यते तत्र जातो वित्तसुखान्वितः॥३९॥
स्वाधिमित्रांशगश्चंद्रो दृष्टो दानवमन्त्रिणा।
निशासु कुरुते लक्ष्मीं छत्रध्वजसमाकुलम्।
विपर्यस्थे तु शीतांशौ जायतेऽल्पधना नराः॥४०॥

यदि सूर्य से चन्द्रमा केन्द्र में हो तो जातक को धन, बुद्धि और निपुणता अल्प होती है। चन्द्रमा पणफर में हो तो धन, बुद्धि और निपुणता मध्यम होती है और चन्द्रमा आपोक्लिम में हो तो धन आदि उत्तम होते हैं। यदि दिन में जन्म हो और चन्द्रमा गुरु से देखा जाता हुआ अपने नवांश में वा अधिमित्र के अंश में हो तो जातक धनी और सुखी होता है। रात्रि का जन्म हो और चन्द्रमा अपने अधिमित्रांश में होकर शुक्र से देखा जाता हो तो लक्ष्मी, छत्र, ध्वज से युक्त मनुष्य होता है। इसके विपरीत चन्द्रमा हो तो अल्प धनी होता है॥ ३८-४०॥

अथ चन्द्राधियोगस्तत्फलञ्चाह-

शशिनः सौम्याः षष्ठे द्यूने वा निधनसंस्थिते।
स्यादधियोगो जाताः सौम्यैः सबलैर्धराधीशः।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मध्यबलैर्मन्त्री स्यादधमबलैः सैन्यनायकः ॥४१॥
चन्द्राद्वृद्धिगतैः सौम्यैः धर्मशीलो महाधनी ।
द्वाभ्यां समोऽल्पवसुमानेकेन परिकीर्त्तितः ।
चन्द्राल्लग्नाद्ग्रहाभावे दरिद्रो दुःखितो भवेत् ॥४२॥

चन्द्रमा से शुभग्रह ६।७।८। भाव में हो तो 'अधियोग' होता है। यदि शुभग्रह बली हों तो अधियोग में उत्पन्न जातक राजा होता है। मध्यम बली हों तो मंत्री, अधम बली हो तो सेनानायक होता है। चन्द्रमा से (३।६।११) भाव में शुभग्रह हों तो जातक धर्मशील, महाधनी होता है। दो शुभ-ग्रह हों तो समधनी और एक शुभग्रह हो तो अल्पधनी होता है। यदि चन्द्रमा से वा लग्न से उक्त स्थानों में ग्रह न हों तो दरिद्र होता है॥४१-४२॥

अथसुनफाऽनफादियोगानाह-

शीतांशोर्द्रविणस्थितैश्च सुनफायोगोऽनफाऽन्त्यस्थितैः
स्वांत्यस्थैः खचरैर्भवेद् दुरुधरा पंकेरुहेशोज्झितैः ।
चेत्वित्तव्ययगा भवन्ति न खगा केमद्रुमः स्यात्तदा
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिता योगाः शशांकोद्भवाः ॥४३॥

चन्द्रमा से दूसरे भाव में सूर्य को छोड़कर शेषग्रहों में से कोई हो तो 'सुनफा' योग, बारहवें भाव में हो तो 'अनफा' योग, चक्र से दूसरे बारहें भाव में ग्रह हो तो 'दुरुधरा' योग होता है। यदि चक्र से २,१२ भाव में ग्रह न हों 'केमद्रुम' योग होता है। ये ४ प्रकार के चन्द्रयोग मुनियों ने कहा है॥४३॥

अथ सुनफायोगफलम्-

भूमीपतेश्च सचिवः सुकृती कृती च
नूनं भवेन्निजभुजार्जितवित्तयुक्तः ।
ख्यातः सदाखिलजनेषु विशालकीर्त्या
बुध्याधिकश्च मनुजः सुनफाभिधाने ॥४४॥

सुनफा योगमें उत्पन्न पुरुष राजमन्त्री, सुन्दर, यशस्वी, अपने बाहुबल से उपार्जित धन से युक्त, प्रसिद्ध, बड़ी कीर्तिवाला, बुद्धिमान् होता है॥४४॥

अथाऽनफायोगफलम्-

प्रभुर्विनीतः शुभवाग्विलासः सच्छीलशाली गुणपूर्त्तियुक्तः ।
उदारकीर्त्तिः स्मरतुष्टचित्तो नित्यं नरः स्यादनफाभिधाने॥४५॥

अनफा योग में उत्पन्न पुरुष समर्थ, नम्र, सुन्दरवाणीवाला, शीलवान, गुणवान, उदार, कीर्त्तियुक्त और कामी होता है॥४५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ दुरुधरायोगफलम्-

सद्वित्तसद्वारणबाहधात्रीसौख्याभियुक्तः सततं हतारिः ।
कान्तासुनेत्रांचललालसः स्याद्योगे सदा दौरधरे मनुष्यः ॥ ४६ ॥

दुरुधरा योग में उत्पन्न पुरुष धन, वाहन सुख से युक्त, विजित शत्रुपक्ष वाला, स्त्री से सन्तुष्ट होता है॥ ४६ ॥

अथ केमद्रुमयोगफलम्-

सद्वित्तसूनुवनितात्मजनैर्विहीनः
प्रेष्यो भवेत्तु मनुजो हि विदेशवासी ।
नित्यं विरुद्धधिषणो मलिनः कुवेषः
केमद्रुमे च मनुजाधिपतेः सुतोऽपि ॥ ४७ ॥

केमद्रुम योग में उत्पन्न जातक धन, पुत्र, स्त्री, बन्धु से हीन होता है, दास और परदेशी होता है, नित्य मलिन कुवेषधारी होता है चाहे, वह राजा का ही लड़का हो तो भी॥ ४७ ॥

अथकेमद्रुमभंगयोगः-

प्रालेयांशुः सूतिकाले यदा वै सर्वैः खेटैर्वीक्ष्यमाणास्तदा वै ।
दीर्घायुष्यं राजयोगं मनुष्यं सत्कोशाढ्यं हंति केमद्रुमंच ॥ ४८ ॥

यदि जन्म समय में चन्द्रमा सभी ग्रहों से देखा जाता हो तो जातक के केमद्रुम योगके दुष्टफलका नाशकर दीर्घायु, धनी और राजा बनाताहै॥४८॥

सर्वे खेटाः केन्द्रकोणेषु संस्था दुष्टो योगश्चापि केमद्रुमोऽयम् ।
दुष्टं सर्वं स्वं फलं संविहाय कुर्युः पुंसां सत्फलं वै विचित्रम् ॥ ४९ ॥

यदि सभी ग्रह केन्द्र कोण में हों तो यह दुष्ट केमद्रुम योग का नाश कर उसके दुष्ट फलों का भी नाश कर मनुष्य को शुभ फल देते हैं॥ ४९ ॥

सर्वेषु चन्द्रयोगेसु चेदं यत्नाद्विचिंतयेत् ।
केमद्रुमादिका योगाः संभवेऽस्य लयं ययुः ॥ ५० ॥

सभी चक्र योगों में इसका विशेष विचार करना चाहिए। क्योंकि सभी शुभ योगों के रहते यदि केमद्रुम योग हो तो उसका नाश होता है॥ ५० ॥

अथ रवियोगानाह-

व्ययधनयुतखेटैर्वोशिवेशी दिनेशाद्-
उभयचरिकयोगश्चोभयस्थानसंस्थैः ।
निजगृहसुहृदुच्चस्थानयातैश्च जाता-
बहुधनसुखयुक्ता राजतुल्या भवन्ति ॥ ५१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य से बारहवें ग्रह हो तो 'वोशि' योग, दूसरे भाव में हो तो 'वेशि' योग और २।१२ दोनों भावों में ग्रह हो तो 'उभयचरिक' योग होता है। योगकर्त्ता ग्रह यदि अपने गृह वा मित्रगृह वा अपने उच्चस्थान में हो तो जातक बहुत धन, सुख से युक्त, राजा के समान होता है॥ ५१॥

अथवोशियोगफलम्-

स्यान्मंददृष्टिर्बहुकर्मकर्त्ता पश्यत्यधश्चोन्नतपूर्वकायः।
असत्यवादी यदि वोशियोगो प्रसूतिकाले मनुजस्य यस्य ॥५२॥

वोशि योग में उत्पन्न पुरुष मन्द दृष्टिवाला, बहुत कार्य करने वाला, नीचे देखने वाला, ऊँचा शरीर और झूठ बोलने वाला होता है॥ ५२॥

अथवेशियोगफलम्-

चेत् संभवे यस्य च वेशियोगे भवेद्दयालुः पृथुपूर्वकायः।
स्याद्वाग्विलासालसतासमेतस्तिर्यक्प्रचारः खलु तस्य दृष्टे ॥५३॥

वेशि योग में उत्पन्न जातक दयालु, मोटा शरीर, वाणी बोलने में चतुर, आलसी और तिरछी निगाह वाला होता है॥ ५३॥

अथोभयचरीयोगफलम्-

सर्वसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः
सत्त्वाधिकः समशरीरविराजमानः।
नात्युच्चकः सरलदृक् प्रबलामलश्री-
युक्तःकिलोभयचरीप्रभवो नरः स्यात् ॥ ५४॥

उभयचरी योग में उत्पन्न जातक सबका सहन करने वाला, स्थिर स्वभाव, अत्यन्त समृद्ध, अधिक बलवान् शरीर वाला, छोटा कद, एक-सी सीधी दृष्टि और अधिक लक्ष्मी से युक्त होता है॥ ५४॥

इति योगाध्यायः।

अथ राजयोगादिफलाध्यायः।

पराशर उवाच-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि राजयोगादिकं परम्।
ग्रहाणां स्थानभेदेन राशिदृष्टिवशात्फलम् ॥ १॥

पराशर ने कहा-अब मैं राजयोग आदि को कह रहा हूँ जो कि ग्रहों के स्थान भेद और राशि दृष्टिवश से फल देने वाले होते हैं॥ १॥

तपस्थानाधिपो राजा मंत्री मंत्राधिपो भवेत्।
उभावन्योऽन्यसंदृष्टो जातश्चेदिह राज्यभाक् ॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इनमें मुख्य दो ग्रह होते हैं–१.भाग्येश राजा होता है और २.पंचमेश मंत्री होता है, दोनों का परस्पर दृष्टिसंबन्ध हो तो जातक राजा होता है।२।

यत्र कुत्रापि संयुक्तौ तौ वापि समसप्तमौ।
राजवंशोद्भवो बालो राजा भवति निश्चितम् ॥ ३॥
वाहनेशस्तथा माने मानेशो वाहने स्थितः।
बुद्धिधर्माधिपाभ्यां तु दृष्टश्चेदिह राज्यभाक् ॥ ४॥

उक्त दोनों ग्रह कहीं पर एक साथ हों, अथवा एक दूसरे से सातवें भाव में हों तो इस योग में राजा का लड़का राजा होता है॥३॥ सुखेश दशमस्थान में और कर्मेश सुख स्थान में हो और पंचमेश नवमेश से देखा जाता हो तो राजयोग होता है॥ ४॥

सुतेशकर्मेशसुखेशलग्ननाथा यदा धर्मपसंयुताश्चेत्।
नृपोत्तमश्चेदिह वारणाढ्यः स्वतेजसा व्याप्तदिगन्तरालः॥ ५॥

पंचमेश, कर्मेश, सुखेश, लग्नेश यदि धर्मेश से युत हों तो हाथी-घोड़े आदि से युक्त अपने तेज से दिशाओं में प्रसिद्ध उत्तम राजा होता है॥ ५॥

सुखकर्माधिपौ चैव मंत्रिनाथेन संयुतौ।
धर्मेशेनाऽथ वा युक्तौ जातश्चेदिह राज्यभाक् ॥ ६॥

सुखेश-कर्मेश यदि पंचमेश धर्मेश से युत हों तो जातक राज्य का अधिकारी होता है॥ ६॥

सुतेश्वरो धर्मपसंयुतश्चेल्लग्नेश्वरेणापि युतो विलग्ने।
सुखेऽथवा मानगृहेऽथ वा स्याद्राज्याभिषिक्तो यदि राजवंश्यः॥ ७॥

पंचमेश, धर्मेश लग्नेश से युत होकर लग्न में हो वा चतुर्थ वा दशम स्थान में हो तो यदि राजा का लड़का हो तो वह राजा होता है॥ ७॥

धर्मस्थाने गुरुक्षेत्रे स्वगृहे भृगुसंयुते।
पंचमाधिपसंयुक्ते जातश्चेदिह राज्यभाक् ॥ ८॥

नवम स्थान में गुरु की राशि हो और अपने स्थान में शुक्र हो तथा पंचमेश से युक्त हो तो राजा होता है॥ ८॥

निशार्धाच्च दिनार्धाच्च परं सार्धद्विनाडिका।
शुभो तदुद्भवो राजा धनी वा तत्समोऽपि वा ॥ ९॥
चन्द्रः कविं कविश्चन्द्रं पश्यति लाभतृतीयगः।
शुक्राच्चन्द्रे ततः शुक्रे तृतीये वाहनार्थवान् ॥१०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आधी रात के बाद और दोपहर के बाद ढ़ाई घटी २$\frac{१}{२}$ शुभ बेला होती है, इस समय में उत्पन्न बालक धनी के समान होता है॥९॥ चन्द्रमा शुक्र को और शुक्र चन्द्रमा को एकादश, तीसरे भाव में होकर परस्पर देखते हों तो वाहन और धन से पूर्ण होता है। इसमें चाहे जो तीसरे भाव में हो॥१०॥

अथ चतुर्विधसम्बन्धमाह-

प्रथमः स्थानसम्बंधो दृष्टिजस्तु द्वितीयकः।
तृतीयस्त्वेकतो दृष्टिः स्थित्येकत्र चतुर्थकः॥११॥

योगकर्त्ता ग्रह परस्पर एक दूसरे के राशि में हों, अथवा परस्पर देखते हों, अपने-अपने स्थान में होकर देखते हों वा एक ही राशि में हों-यह चार प्रकार के संबन्ध ग्रहों के होते हैं॥११॥

अथ पारिजातादियोगफलम्-

तन्वीशः पारिजातस्थस्तदा दाता भवेन्न हि।
उत्तमे चोत्तमो दाता गोपुरे पुरुषत्वयुक्॥१२॥
सिंहासने भवेन्मान्यः शूरः पारावतांशके।
सभासदो देवलोके द्वितीये च मुनिर्मतः॥१३॥

यदि लग्नेश पारिजात अंशमें हो तो जातक दाता नहीं होताहै। उत्तमांश में हो तो उत्तम दाता होता है। गोपुरमें हो तो पुरुषत्व से युक्त होता है।१२। सिंहासनांश में सर्वजनमान्य, पारावतांश में हो तो शूरवीर, देवलोकांश में हो तो सभासद और दूसरे में हो तो मुनि समान होता है॥१३॥

ऐरावते गजे दुष्टो दिग्योगो न भवेद् ध्रुवम्।
सुखेशो वापि जायेशो राज्येशोऽप्येवमेव हि॥१४॥
पारिजाते सुताधीशो विद्या चैव कुलोचिता।
उत्तमे चोत्तमा विद्या गोपुरे भवनांकिता॥१५॥

ऐरावत में दुष्ट होता है, इसी प्रकार सुखेश, सप्तमेश और कर्मेश के फल को जानना चाहिए॥१४॥ पंचमेश पारिजातांश में हो तो कुलानुसार विद्या होती है। उत्तमांश में हो तो उत्तम विद्या, गोपुरांश में हो तो कुलानुसार होती है॥१५॥

सिंहासने तथा वाच्या साचिव्येन युता तथा।
पारावते तथा वाच्यं ब्रह्मविद्यासमन्वितम्॥१६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुतेश देवलोकस्थे कर्मयोगान्वितो भवेत् ।
उपासना द्वितीये स्याद्भक्तिस्त्वैरावते भवेत् ॥ १७॥

सिंहासन में मंत्रित्वयोग्यविद्या और पारावत में ब्रह्मविद्या युक्त विद्या होती है॥ १६॥ पंचमेश देवलोकांश में हो तो जातक कर्मयोगी, दूसरे में उपासक, ऐरावत में भक्तियुक्त होता है॥ १७॥

धर्मेशे पारिजातस्थे तीर्थकृत्त्वत्र जन्मनि ।
पूर्वेऽपि मनुजो जातो ह्युत्तमे चोत्तमो भवेत् ॥ १८॥
गोपुरे मखकर्त्ता च परे चैवात्र जन्मनि ।
सिंहासने भवेद्धीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ १९॥

धर्मेश पारिजातांश में हो तो इस जन्म और पूर्वजन्म, दूसरे जन्म में दोनों में तीर्थयात्री होता है, उत्तमांश में उत्तम॥ १८॥ गोपुरांश में हो तो इस जन्म और पर जन्म में यज्ञकर्त्ता होता है। सिंहासनांश में हो तो धीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय होता है॥ १९॥

सर्वधर्मपरित्यागी धर्मैकपदमाश्रितः ।
पारावते परे चैव हंसश्चैवात्र जन्मनि ॥ २०॥
लगुडी पितृदंडी स्याद्देवलोके न संशयः ।
द्वितीये चन्द्रपदं गच्छेत्कृत्वा वै हयमेधकम् ॥ २१॥

सभी धर्मों को त्यागकर एक धर्म का व्यवस्थापक होता है। पारावतांश में इस जन्म और परजन्म में जातीय पुरुष होता है॥ २०॥ देवलोकांश में हो तो दंडधारी संन्यासी, दूसरे में अश्वमेध यज्ञ करके इन्द्रपद को पाता है॥ २१॥

ऐरावते तु धर्मात्मा स्वयंधर्मा भविष्यति ।
श्रीरामः कुंतिपुत्रो वा द्वितीयो न भविष्यति ॥ २२॥

ऐरावतांश में हो तो स्वयं धर्माचार्य होता है, चाहे श्रीराम हों वा युधिष्ठिर होता है॥ २२॥

अथ विशेषयोगफलम्-

अथ योगफलं ब्रूमो ज्ञातव्यं च विशेषतः ।
पारिजातादिकानां च फलमेवैकसंस्थितम् ॥ २३॥
लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणं च विष्णुस्थानं च केन्द्रकम् ।
तयोः सम्बंधमात्रेण राजयोगादिकं भवेत् ॥ २४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अब विशेषकर योगफल को कह रहा हूँ, पारिजातादि योगों से भिन्न इनका फल होता है॥ २३॥ त्रिकोण (९।५) लक्ष्मी का स्थान और केन्द्र (१।४।७।१०) विष्णु का स्थान है, इन दोनों के संबंध मात्र से राजयोग होता है॥ २४॥

केन्द्रपुत्रेशयोर्योगे योगोऽमात्याभिधो भवेत्।
पारिजातादिके तौ च तदा स प्रबलो भवेत्॥ २५॥
लग्नेशेन धनेशाद्यान्नैव योगः प्रकीर्त्तितः।
मंत्रेशोऽमात्यतां याति सप्तमाधीशयोगतः॥ २६॥

केन्द्रेश और पंचमेश के योग से 'अमात्य' नाम का योग होता है, यदि योगकारक पारिजातादि वर्ग में हो तो प्रबल राजयोग होता है ॥२५॥ लग्नेश के साथ धनेश आदि के सम्बन्ध से योग नहीं होता है। पंचमेश-सप्तमेश से योग होता हो तो अमात्य योग होता है॥ २६॥

कर्मेशस्य तु योगेन राजा साचिव्यतामियात्।
केंद्रधर्मेशयोर्योगे राजा वै राजवंदितः॥ २७॥
धर्मकर्माधिपौ चैव व्यत्यये तावुभौ स्थितौ।
युक्तश्चेद्वै तदा वाच्यः सर्वसौख्यसमन्वितः॥ २८॥

इसी में कर्मेश योग करता हो तो राजा या मन्त्री होता है। केन्द्रेश और नवमेश का योग हो तो राजा से वंदित राजा होता है॥ २७॥ धर्मेश, कर्मेश व्यत्यय से अर्थात् धर्मेश कर्म में और कर्मेश धर्म भाव में अथवा एकत्र युक्त हों तो सभी सुखों से युक्त होता है॥ २८॥

पारिजाते स्थितौ तौ तु दण्डे लोकानुशिक्षकः।
उत्तमे चोत्तमो भूयो गजवाजिरथादिमान्॥ २९॥
गोपुरे नृपशार्दूलो पूजितांघ्रिर्नृपैर्भवेत्।
सिंहासने चक्रवर्ती सर्वक्षोणीशपालकः॥ ३०॥

यदि धर्मेश कर्मेश पारिजात में हों तो राजा दंड का शिक्षक होता है। उत्तमांश में हों तो हाथी- घोड़े से युक्त उत्तम राजा होता है॥ २९॥ गोपुरांश में हो तो राजाओं में सिंह, राजाओ में पूज्य चरण वाला राजा होता है। सिंहासनांश में हो तो सभी राजाओं का पालन करने वाला चक्रवर्त्ती राजा होता है॥ ३०॥

इति राजयोगादिविचारकथनम्।

❖

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राजयोगाध्यायः

पराशर उवाच-

अथातः संप्रवक्ष्यामि राजयोगा द्विजोत्तम ।
येषां विज्ञानमात्रेण नृपपूज्यो जनो भवेत् ॥ १ ॥
ये ये योगाः पुरा शंभुभाषिताः शैलजाग्रतः ।
तेषां सारमहं वक्ष्ये तवाग्रे द्विजनन्दन ॥ २ ॥

पराशर ने कहा– हे विप्र ! अब मैं राजयोगों को कहता हूँ, जिसके जानने से मनुष्य राजा से पूज्य होता है॥ १ ॥ पहले शंकरजी ने पार्वतीजी से जिन-जिन योगों को कहा था, मैं उनके सार को तुमसे कह रहा हूँ॥ २ ॥

चिंतयेत्कारके लग्ने जनुर्लग्नेऽथवा द्विज ।
राजयोगप्रदातारौ लग्नौ द्वौ प्रथमोदितौ ॥ ३ ॥
आत्मकारकपुत्राभ्यां राजयोगं प्रकल्पयेत् ।
तनुपंचमनाथाभ्यां तथैव द्विजसत्तम ॥ ४ ॥
विलग्नात्पंचमाधीशः पुत्रात्माकारको द्वयः ।
विप्रसम्बंधयोगेन ज्ञेयाः वीर्यबलान्विताः ॥ ५ ॥

आत्मकारकांश लग्न और जन्म लग्न, यही दो लग्न मुख्यतः राजयोग कारक होते हैं॥ ३ ॥ आत्मकारक और पंचमेश से राजयोग को देखना चाहिये। इसी प्रकार जन्मलग्न और उससे पंचमाधिपति द्वारा राजयोग देखना चाहिये।। ४।। जन्मलग्नेश तथा पंचमेश के सम्बन्ध से तथा आत्मकारक और उससे पंचमेश, इन दोनों के बलाबल के अनुसार उत्तम, मध्यम और अधम राजयोग होता है॥ ५ ॥

लग्नेऽथ पंचमे वापि लग्नेशे पंचमाधिपे ।
पुत्रात्मकारकौ विप्र लग्ने वा पंचमेऽपि च ॥ ६ ॥
सम्बंधे वीक्षिते तत्र दृष्टैवं पंचमाधिपे ।
स्वोच्चे स्वांशे स्वभे वापि शुभग्रहनिरीक्षिते ॥ ७ ॥
महाराजेति योगोऽयं सोऽत्र जातः सुखी नरः ।
गजवाजिरथैर्युक्तः सेनासंगमनेकधा ॥ ८ ॥

लग्नेश और पंचमेश लग्न में वा पंचम भाव में हो, आत्मकारक और पंचमेश लग्न वा पंचम में हो, दोनों का किसी प्रकार का सम्बन्ध हो, और अपने उच्च, नवांश या राशि में हो तो 'महाराज' योग होता है। इसमें उत्पन्न पुरुष सुखी, हाथी, घोड़ा और रथ सेना आदि से युक्त होता है॥ ६-८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भाग्येशः कारके लग्ने पंचमे सप्तमेऽपि वा ।
राजयोगप्रदातारौ गजवाजिधनैरपि ॥ ९ ॥
कारकाद् द्विचतुर्थे च पंचमे भावगे द्विज ।
शुभखेटो न संदेहो राजयोगं ददाति च ॥१०॥

भाग्येश और आत्मकारक लग्न, पंचम वा सप्तम में हो तो हाथी-घोड़े और धन से युक्त राज्य को देते हैं॥ ९॥ कारक से २, ४, ५ भाव में शुभग्रह हों तो निश्चय राजयोग करते हैं॥ १०॥

कारकात् त्रितये षष्ठे राश्योरुभय पापयुक् ।
राजवंशोद्भवो विप्र राजयोगस्तथा भवेत् ॥ ११ ॥
लग्नाधीशाद्द्यूननाथाद्धने तुर्ये च पंचमे ।
शुभखेटयुते विप्र राजा च भवति ध्रुवम् ॥ १२ ॥

कारक से ३, ६ वा लग्न से ३, ६ भाव में पापग्रह युक्त हों तो राजयोग होता है॥ ११॥ लग्नेश से वा सप्तमेश से ४ वा ५ भाव में शुभग्रह युत हो तो निश्चय ही राजा होता है॥ १२॥

कारके पंचमे शुक्रे सितेन्दुयुतवीक्षितः ।
तन्वारूढपदे लग्ने राजवर्गो भवेन्नरः ॥ १३ ॥
जन्माङ्गे च हि होराङ्गे कलांगे येन केनचित् ।
रव्यादि दृष्टिमात्रेण स राजा भवति ध्रुवम् ॥ १४ ॥

कारकांश वा पांचवें भाव में शुक्र हो और शुक्र चन्द्रमा से युत दृष्ट हो, लग्न वा आरूढ़ लग्न में हो तो राजा होता है॥१३॥ जन्मलग्न वा होरा लग्न वा पदलग्न सूर्यादि किसी ग्रह से देखा जाता हो तो राजा होता है॥१४॥

स्वक्षेत्रे तु नवांशे वा द्रेष्काणे भानुजादयः ।
लग्नं च सप्तमं विप्र पश्यंति राजयोगदाः ॥ १५ ॥
पूर्णदृष्टे पूर्णयोगमर्धे चार्धं विधीयते ।
पादेन पादयोगं च राजयोगमिदं क्रमात् ॥ १६ ॥

अपनी राशि, नवांश, द्रेष्काण में सूर्य आदि ग्रह होकर लग्न वा सप्तम को देखे तो राजयोग होता है॥ १५॥ पूर्णदृष्टि हो तो पूर्ण, अर्ध दृष्टि हो तो आधा, पाद दृष्टि हो तो चौथाई राजयोग होता है॥ १६॥

षट्कुंडल्यंतरे विप्र पश्यंति भास्करादयः ।
राजयोगप्रदातारौ निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ १७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नस्थाने पूर्णदृष्ट्या सप्तमे स्वल्पवीक्षिते।
स्वल्पराज्यप्रदो विप्र षट्लग्नेषु विचिंतयेत् ॥१८॥

षड्वर्ग कुण्डली के लग्न को सूर्य आदि ग्रह देखते हों तो राजयोग होता है॥१७॥ यदि लग्न को पूर्णदृष्टि से और सप्तम को अल्प दृष्टि से देखते हों तो अल्प राजयोग होता है॥१८॥

एवं नवांशकुंडल्यां द्रेष्काणेऽपि विचिंतयेत्।
लग्नसप्तमयोः खेटो राजयोगप्रदायकः ॥१९॥
उच्चग्रहे राजयोगो लग्नद्वयमथापि चेत्।
राशेर्द्रेष्काणतोंऽशाच्च राशेरंशादथापि वा ॥२०॥

इसी प्रकार नवांश कुंडली और द्रेष्काण कुण्डली को भी देखना चाहिये, क्योंकि लग्न और सप्तम को देखने वाला ग्रह राजयोगकारक होता है॥१९॥ इन दोनों भावों को अपने उच्च में बैठा ग्रह देखता हो अथवा लग्न और दूसरे भाव को देखता हो तो राजयोग होता है॥२०॥

जन्मकालघटीलग्न एकेनैव निरीक्षिते।
उच्चारूढे तु संप्राप्ते चन्द्राक्रांते विशेषतः ॥२१॥
क्रांते वा गुरुशुक्राभ्यां केनाप्युच्चग्रहेण वा।
दुष्टार्गलाग्रहाभावे राजयोगो न संशयः ॥२२॥

भावलग्न, होरालग्न और घटीलग्न को कोई ग्रह देखता हो तो राजयोग होता है। इसमें भी लग्नपद वा चन्द्र के साथ कोई उच्चस्थ ग्रह हो तो विशेष राजयोग होता है॥२१॥ लग्नपद वा चन्द्र के साथ कोई उच्च ग्रह हो, उसमें गुरु, शुक्र का योग हो और पापग्रह कृत अर्गला योग न हो तो निःसंशय राजयोग होता है॥२२॥

शुभारूढ़े तत्र चन्द्रे धने देवगुरुस्तथा।
राजयोगप्रदाता च निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥२३॥
शुभे लग्ने शुभे त्वर्थे तृतीये पापखेचरैः।
चतुर्थे तु शुभे प्राप्ते राजा वा तत्समोऽपि वा ॥२४॥

अथवा पदस्थान में चन्द्रमा हो, उससे दूसरे गुरु हों तो निश्चय ही राजयोग होता है॥२३॥ शुभग्रह लग्न, द्वितीय और चतुर्थ में हो और तीसरे भाव में पापग्रह हो तो राजा के समान होता है॥२४॥

उच्चस्थे हरिणाङ्के वा जीवो वा शुक्र एव वा।
एको बली धनगतः श्रियं दिशति देहिनः ॥२५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नं पश्यंति ये खेटास्ते सर्वे शुभदायिनः ।
नीचखेटोऽपि लग्नं चेत्पश्येद्राजा प्रकीर्त्तितः ॥ २६ ॥

यदि चन्द्रमा, गुरु वा शुक्र में कोई अपनी उच्चराशि का बली होकर दूसरे भाव में हो तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है॥ २५॥ लग्न को जो ग्रह देखते हैं वे सभी शुभ देने वाले होते हैं, यदि अपनी नीच राशि में स्थित ग्रह लग्न को देखता हो तो राज्यदायक होता है॥ २६॥

षष्ठाष्टमे तृतीये च लाभे सम्बंधनीचकृत् ।
यो ग्रहः पश्यते लग्नं राजयोगप्रदायकः ॥ २७॥
राजयोगो जन्मलग्नं पश्येदुच्चग्रहो यदि ।
षष्ठाष्टमगते नीचे लग्नं पश्यति योगकृत् ॥ २८॥

छठे, आठवें और तीसरे भाव में अपने नीचराशि का ग्रह भी योगकारक होता है। इनमें से जो ग्रह लग्न को देखता हो वह राजयोगकारक होता है॥ २७॥ यदि अपनी उच्चराशि में स्थित ग्रह को देखता हो तो राजयोग होता है। छठे, आठवें में अपने नीच राशि में बैठा ग्रह को देखे तो राजयोग होता है॥ २८॥

षष्ठाष्टमाधिपे नीचे लग्नं पश्यतिवाथवा ।
तृतीये लाभगे नीचे लग्नं पश्यति राज्यदः ॥ २९॥
षष्ठाष्टमाधिपौ खेटौ शुभौ नीचाश्रितौ यदा ।
पश्यतो जन्मलग्नं च राजयोग उदाहृतः ॥ ३० ॥

अथवा षष्ठेश वा अष्टमेश अपने नीचराशि में होकर लग्न को देखते हों अथवा तीसरे, ग्यारहवें भाव में होकर लग्न को देखते हों तो राजयोग करते हैं। षष्ठेश, अष्टमेश शुभग्रह हों अपने नीचराशि में होकर लग्न को देखते हों तो राजयोग होता है॥ ३०॥

इति राजयोगाध्यायः।

❖

अथ राजप्रधानयोगाध्यायः

राज्येशोऽपि जनुर्ल्लग्नादमात्येशयुतेक्षिते ।
अमात्यकारकेणापि प्रधानत्वं नृपालये ॥ १ ॥
लाभेशो वीक्षिते लाभे पापदृष्टिविवर्जिते ।
तदा राज्यालये विप्र प्रधानत्वं कुलेऽपि च ॥ २ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राज्येश (दशमेश) जन्म लग्न से, पंचमेश से और अमात्यकारक से युत दृष्ट हो तो राजा के यहाँ प्रधान होता है॥ १॥ लाभेश लाभ स्थान को देखता हो और पापग्रह से दृष्ट युत न हो तो राजा के यहाँ प्रधान होता है॥ २॥

अमात्यकारकेणापि कारकेन्द्रेशसंयुते।
तीव्रबुद्धियुतो बालः सेनाधीशोऽपि जायते॥ ३॥
कारके केन्द्रकोणेषु तुंगर्क्षे चापि संस्थिते।
भाग्यपेन युते दृष्टे राजमंत्री प्रजायते॥ ४॥

आत्मकारक के राशीश अमात्यकारक से युक्त दृष्ट हो तो बालक बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि का सेनापति होता है॥ ३॥ आत्मकारक अपने उच्च का होकर केन्द्र (१।४।७।१०) वा कोण (९।५) में हो और भाग्येश से युत वा दृष्ट हो तो राजमंत्री होता है॥ ४॥

कारको यस्य राशीशे लग्नगे संयुतेक्षिते।
मंत्रित्वमुख्योगोऽयं वार्धके नात्र संशयः॥ ५॥
कारके शुभसंयुक्ते पंचमे सप्तमेऽपि वा।
यत्कारके यदा प्राप्तेतत्कारके धनं लभेत्॥ ६॥

आत्मकारक ही जन्मराशीश होकर लग्न में और भाग्येश से युत वा दृष्ट हो तो वृद्धावस्था में मुख्यमंत्री होता है॥ ५॥ आत्मकारक शुभग्रह से युक्त होकर पाँचवें वा सातवें भाव में जिस भाव के कारक से युक्त होता है उसके द्वारा धन का लाभ होता है॥ ६॥

भाग्यरूढ़पदे लग्ने कारके नवमेऽपि वा।
राजयोगप्रदातारौ निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ ७॥
लाभेशो लाभभवने पापदृष्टिविवर्जितः।
कारके शुभसंयुक्ते लाभं तस्य नृपालयात्॥ ८॥

भाग्यभाव का पद लग्न में हो वा आत्मकारक नवमभाव में हो तो राज सम्बन्धकारक होते हैं॥ ७॥ लाभेश लाभभावमें हो, पापग्रहसे न देखा जाता हो, आत्मकारक शुभग्रह से युत हो तो राजा के यहाँ से लाभ होता है॥ ८॥

कारकात्तुर्यभावस्थौ सितेन्दू द्विजसत्तम।
आदावंते विशेषस्य राजचिह्नेन संयुतः॥ ९॥

कारक से चौथे भाव में शुक्र और चन्द्रमा हों तो आयु के पूर्वार्ध में और अन्तिम में राजचिह्नों से युक्त होता है॥ ९॥

इति राजप्रधानयोगाध्यायः।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ धनयोगाध्यायः

अथातः संप्रवक्ष्यामि धनयोगं विशेषतः ।
पंचमे तु भृगुक्षेत्रे तस्मिन् शुक्रेण वीक्षिते ।
लाभे शनैश्चरयुते बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ १ ॥
पंचमे सौम्यकक्षेत्रे तस्मिन् सौम्ययुते यदि ।
लाभे तु चन्द्रभौमौऽथ बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ २ ॥

अब मैं विशेष धन योगों को कहता हूँ। पांचवें भाव में शुक्र की राशि (२।७) हो और उसे शुक्र देखता हो तथा एकादश में शनि हो तो बहुधन का स्वामी होता है॥ १ ॥ पांचवें भाव में बुध की राशि (३।६) हो और उसमें बुध युत हो तथा एकादश भाव में चन्द्रमा, भौम हो तो बहुत द्रव्य का स्वामी होता है॥ २ ॥

पंचमे तु शनिक्षेत्रे तस्मिन् सूर्यसुतो यदि ।
लाभे सोमात्मजस्थे वा बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ३ ॥
पंचमे तु रविक्षेत्रे तस्मिन् रवियुते यदि ।
लाभे रवीन्दुसंस्थे तु बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ४ ॥

पांचवें भाव में शनि की राशि (१०।११) हो और उसमें शनि युत हो तथा एकादशभाव में बुध हो तो अनेक द्रव्य का स्वामी होता है॥ ३ ॥ पांचवें भाव में सूर्य की राशि (५) हो और उसमें सूर्य हो तथा लाभभाव में रवि-चन्द्रमा हों तो बहुत द्रव्य का स्वामी होता है॥ ४ ॥

पंचमे तु शनिक्षेत्रे तस्मिन् शनियुते यदि ।
लाभे भौमेन संयुक्ते बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ५ ॥
पंचमे तु गुरुक्षेत्रे तस्मिन् गुरुयुते यदि ।
लाभे तु चन्द्रभौमौ चेद्बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ६ ॥

पांचवें भाव में शनि की राशि (१०।११) हो और शनि युत हो तथा लाभ भाव में भौम हों तो बहुत द्रव्य का स्वामी होता है॥ ५ ॥ पांचवें भाव में गुरु की राशि (९।१२) हो और उसमें गुरु युत हो और लाभ भाव में चन्द्रमा, भौम हों तो वह बहुत द्रव्य का स्वामी होता है॥ ६ ॥

भानुक्षेत्रगते लग्ने तस्मिन् भानौ स्थिते यदि ।
भौमेन गुरुणा युक्ते दृष्टे वा स्याद्युतो धनैः ॥ ७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रक्षेत्रगते लग्ने तस्मिंश्चन्द्रयुते यदि।
जीवभौमयुते दृष्टे जातोऽवश्यं धनी भवेत् ॥८॥

सूर्य की राशि जन्मलग्न हो और सूर्य युत हो और मंगल गुरु से युत वा दृष्ट हो तो धनी होता है॥ ७॥ चन्द्रमा की राशि लग्न में हो और चन्द्रमा से युत हो और गुरु भौम से युतदृष्ट हो तो धनी होता है॥ ८॥

भौमक्षेत्रगते लग्ने तस्मिन्भौमयुते यदि।
सोमशुक्रार्कजैर्दृष्टे युक्ते श्रीमान्नरो भवेत् ॥९॥
गुरुक्षेत्रगते लग्ने तस्मिन् गुरुयुते यदि।
सौम्यभौमयुते दृष्टे यातो यस्तु धनीश्वरः ॥१०॥

मंगल की राशि लग्न में हो और उसमें भौमयुत हो और बुध, शुक्र, शनि से दृष्ट युत हो तो धनी होता है॥ ९॥ गुरु की राशि लग्न में हो और उसमें गुरु युत हो और बुध, भौम से दृष्टयुत हो तो धनी होता है॥ १०॥

बुधक्षेत्रगते लग्ने तस्मिन् सौम्ययुते यदि।
शनिशुक्रयुते दृष्टे जातो यस्तु धनी नरः ॥११॥
भृगुक्षेत्रगते लग्ने तस्मिन् भृगुयुते यदि।
शनिसौम्ययुते दृष्टे जातो यस्तु धनी भवेत् ॥१२॥

बुध की राशि लग्न में हो और उसमें बुध युक्त हो और शनि, शुक्र से युत दृष्ट हो तो धनी होता है॥ ११॥ शुक्र की राशि लग्न में हो और शुक्र युत हो और शनि बुध से युत दृष्ट हो तो धनी होता है॥ १२॥

ये ये ग्रहा धर्मपबुद्धिपाभ्यां युक्ताऽथ दृष्टाश्च सुखप्रदास्ते।
रंध्रेश्वरादिव्ययपैर्युताः स्युः शोकप्रदा मारकनायकैश्च ॥१३॥

जो-जो ग्रह भाग्येश, पंचमेश से युत दृष्ट होते हैं— वे अपने दशा-अन्तर में शुभ फलद होते हैं और जो अष्टमेश, षष्ठेश और व्ययेश से युत होते हैं वे तथा मारकेश अपने समय में दुःखद होते हैं॥ १३॥

क्रूरसौम्यविभागेन स्वस्थानादिवशात्तथा।
ग्रहाणां स्थानभेदेन राशिदृष्टिवशात्फलम् ॥१४॥

इस प्रकार क्रूर तथा शुभ ग्रह के अपने स्थानादि भेद से ग्रहों के बलाबल को विचारकर फलादेश समझना चाहिए॥ १४॥

इति धनयोगाऽध्यायः।

❖

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ दरिद्रयोगाध्यायः

लग्नेशे वै रिष्फगते रिष्फेशे लग्नमागते ।
मारकेशयुते दृष्टे जातः स्यान्निर्धनः पुमान् ॥ १ ॥

जन्म लग्नेश बारहवें भाव में और व्ययेश लग्न में हो, मारकेश से युत दृष्ट हो तो मनुष्य निर्धन होता है॥ १ ॥

लग्नाधिपे शत्रुगृहं गते वा षष्ठेश्वरे लग्नगतेऽपि वा चेत् ।
विलग्नपे मारकनाथदृष्टे जातो भवेन्निर्धनकोऽपि मुख्यः ॥२॥

लग्नेश छठे भाव में हो और षष्ठेश लग्न में हो और लग्नेश मारकेश से दृष्ट हो तो निर्धन होता है॥ २ ॥

लग्नेन्दू केतुयुक्तौ वा लग्नेशे निधनं गते ।
मारकेशयुते दृष्टे जातो वै निर्धनो भवेत् ॥ ३ ॥
षष्ठाष्टमव्ययगते लग्नेशे पापसंयुते ।
मारकेशयुते दृष्टे राजवंशोऽपि निर्धनः ॥ ४ ॥

लग्न और चन्द्रमा केतु से युत हो तथा लग्नेश आठवें भाव में हो, मारकेश से युत दृष्ट हो तो मनुष्य निर्धन होता है॥ ३ ॥ लग्नेश पापग्रह से युत होकर ६ । ८ । १२ भाव में गया हो और मारकेश से युत दृष्ट हो तो राजबालक होकर भी निर्धन होता है॥ ४ ॥

विलग्ननाथेऽरिविनाशरिष्फनाथेन युक्ते यदि पापदृष्टे ।
मित्रात्मजेनाथयुतेऽपि दृष्टे शुभैर्न दृष्टे स भवेद्दरिद्रः ॥ ५ ॥

लग्नेश ६ । ८ । १२ भावों के स्वामी से युक्त होकर पापग्रह से दृष्ट होकर शनि से भी युत हो तथा शुभग्रह से न दृष्ट हो तो मनुष्य दरिद्र होता है॥ ५ ॥

मंत्रेशो धर्मनाथश्च षष्ठव्ययस्थितौ क्रमात् ।
दृष्टो चेन्मारकेशेन जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥ ६ ॥

पंचमेश और धर्मेश क्रम से ६ । १२ भाव में हों और मारकेश से देखे जाते हों तो जातक निर्धन होता है॥ ६ ॥

पापग्रहे लग्नगते राज्यधर्माधिपौ विना ।
मारकेशयुते दृष्टे जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥ ७ ॥

कर्मेश और नवमेश के अतिरिक्त अन्य पापग्रह लग्न में हो और मारकेश से युत दृष्ट हों तो जातक निर्धन होता है॥ ७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यद्भावेशो रंध्ररिष्फारिसंस्थो यद्भावस्था रंध्ररिष्फारिभेशाः।
पापैर्दृष्टो मंददृष्टोऽथवा चेद्दुःखाक्रांतश्चंचलो निर्धनःस्यात् ॥८॥

जो भावेश (३।८।१२) में स्थित हों और जिस भाव में (६।८।१२) के स्वामी हों, पापग्रह वा शनि से दृष्ट हों तो जातक दुःखी, चंचल और दरिद्र होता है॥ ८॥

चन्द्राक्रांतनवांशेशो मारकेशयुतो यदि।
मारकस्थानगो वापि जातो सौ निर्धनो भवेत् ॥९॥
विलग्नेशनवांशेशौ रिष्फषष्ठाष्टगौ यदि।
मारकेशयुतौ दृष्टौ जातोऽसौ निर्धनो नरः ॥१०॥

चन्द्रमा के नवांश का स्वामी मारकेश से युत हो अथवा मारक स्थान में हो तो जातक निर्धन होता है॥ ९॥ लग्नेश के नवांश का स्वामी १२।६।८ भाव में हो और मारकेश से युत दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता है॥ १०॥

शुभस्थानगताः पापाः पापस्थाने गताः शुभाः।
धनार्तिर्जायते बालो भोजनेन प्रपीडितः ॥११॥
कारकाद्वा विलग्नाद्वा रंध्रे रिष्फे द्विजोत्तम।
लग्नकारकयोर्दृष्ट्या दरिद्रार्त्तियुतो नरः ॥१२॥
लग्नाद्वा कारकाद्वापि द्वादशे यस्य वै द्विज।
लग्नकारकयोर्दृष्ट्या व्ययशीलो भवेन्नरः ॥१३॥

शुभग्रह की राशि में पापग्रह और पापग्रह की राशि में शुभग्रह हो तो जातक को धन और अन्न, दोनों का कष्ट होता है॥ ११॥ कारक से वा लग्न से ८।१२ वें भाव को कारक और लग्नेश न देखते हों तो जातक दरिद्र होता है॥ १२॥ लग्न वा कारक से १२वें भाव पर लग्नेश वा कारक की दृष्टि हो तो जातक अधिक व्यय करने वाला होता है॥ १३॥

ये ये ग्रहा धर्मपबुद्धिपाभ्यां युक्ता न दृष्टा बहुदुःखदास्ते।
रंध्रादिषष्ठव्ययपैर्युतास्ते व्ययप्रदा मारकनाथकेन।१४।

जो जो ग्रह त्रिकोणेश से युत दृष्ट न होकर त्रिकेश(६।८।१२) से युत हों और मारकेश से दृष्ट हों वे अपनी दशा में दुःखदायी होते हैं॥ १४॥

अथ दरिद्रभंगयोगाः-

धनसंस्थौ च भौमेन्दू कथितौ धननाशकौ।
बुधेक्षितौ महावित्तं कुरुतस्तत्रगः शनिः ॥१५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

निःस्वतां कुरुते तत्र रविर्नित्यं यमेक्षितः ।
महाधनयुतं ख्यातं शन्यदृष्टः करोत्यसौ ॥ १६ ॥

धन भाव में भौम-चन्द्रमा धननाशक होते हैं, किन्तु बुध से देखे जाते हों तो महाधनी होता है एवं शनि हो तो भी महाधनी होता है॥ १५॥ दूसरे भाव में रवि हो और शनि से देखा जाता हो तो दरिद्र होता है, किन्तु शनि न देखता हो तो महाधनी होता है॥ १६॥

धनभावगताः सौम्याः कुर्वन्त्येव धनं बहु ।
बुधदृष्टो गुरुस्तत्र निर्धनं कुरुते नरम् ॥ १७॥
बुधश्चंद्रेक्षितस्तत्र सर्वस्वं हंति निश्चितम् ।
क्रूरखेटादियोगैश्च दारिद्र्यं संभवेन्नृणाम् ॥ १८॥

धनभाव में शुभग्रह हों तो बहुत धन होता है किंतु उसी भाव में गुरु हों और बुध देखता हो तो निर्धन होता है॥ १७॥ यदि बुध हो और चन्द्रमा देखता हो तो सर्वस्व का नाश होता है, क्रूरग्रह आदि के योग से जातक को दरिद्रयोग होता है॥ १८॥

इति दरिद्रयोगाध्यायः ।

अथ ग्रहाणामवस्थाध्यायः

मैत्रेय उवाच-

आदित्यादिग्रहाणां च ह्यवस्था च पृथक् पृथक् ।
भेदाः कतिविधाः संति कथय त्वं कृपानिधेः! ॥ १ ॥

मैत्रेय ने कहा- हे कृपानिधि! सूर्य आदि ग्रहों की अवस्थाओं के भेद और उनकी संख्या पृथक्-पृथक् मुझसे कहें॥ १॥

पराशर उवाच-

भास्करादिग्रहाणां च ह्यवस्था विविधानि च ।
षण्णवत्याश्रितावस्था सारभूतं वदाम्यहम् ॥ २॥

पराशर जी ने कहा-सूर्य आदि ग्रहों की अनेक अवस्थायें हैं, जिनकी संख्या ९६ है। उनमें सारभूत प्रधान अवस्थाओं को कह रहा हूँ॥ २॥

अथ जाग्रताद्यवस्था तत्फलंचाह-

त्रिंशदंशं त्रिभागं च कल्पयित्वा पृथक्-पृथक् ।
विषमादिक्रमेणैव समे वै विपरीतकम् ॥ ३॥
विज्ञानं प्रथमं पुंसां जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिकाः ।
विशेषतः परीक्षणां स्याज्जागरः कार्यसाधकः ॥ ४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तीस अंशात्मक राशि के तीन भाग करके दश अंश के एक एक भाग का विषम राशि में जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्त अवस्था होती है और सम-राशि में विलोम (सुषुप्त, स्वप्न, जाग्रत्) अवस्था होती है। परीक्षण से यह निश्चित है कि जाग्रत अवस्था में कार्य सिद्ध होता है॥ ३-४॥

स्वप्नावस्था मध्यफला उपदेष्टा गुरुर्यदि।
निष्फला चरमावस्था ज्ञातव्या मुनिसत्तम॥ ५॥

स्वप्नावस्था मध्यम फलदायक और सुषुप्त अवस्था निष्फल होती है॥ ५॥

अथ दीप्तादयवस्था तत्फलंचाह-

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शांतोदीनोऽतिदुःखितः।
विकलश्च खलः क्रोधी नवधा खेचरो भवेत्॥ ६॥
उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्यादधिमित्रके।
मुदितो मित्रभे शांतः समभे दीन उच्यते॥ ७॥

दीप्त, स्वस्थ, मुदित, शांत, दीन, अतिदुःखी, विकल, खल और कोपी- ये नव अवस्थायें होती हैं॥ ६॥ जो ग्रह अपनी उच्चराशि में होता है वह दीप्त होता है, अपने अधिमित्र के गृह में हो तो स्वस्थ, मित्र के गृह में हो तो मुदित, सम के गृह में हो तो दीन होता है॥ ७॥

शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः।
खलः खलग्रहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः॥ ८॥

शत्रु की राशि में हो तो अतिदुःखी, पापग्रह के साथ हो तो विकल, पाप ग्रह की राशि में हो तो खल और सूर्य के साथ हो तो कोपी होता है॥ ८॥

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्यं धनवाहने च।
स्त्रीपुत्रलाभं शुभबंधुपूजां क्षितीश्वरान्मानमुपैति विद्याम्॥ ९॥
स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वस्थो नृपाल्लब्धधनादिसौख्यम्।
विद्यां यशः प्रीतिमहत्वमाराद्दारार्थभूम्यात्मजधर्ममेति॥ १०॥

दीप्त ग्रह की राशि में पृथ्वी का लाभ, उत्साह, पराक्रम, धन, वाहन, स्त्री-पुत्र का लाभ, शुभकार्य, बंधुओं से प्रतिष्ठा और राजा से प्रतिष्ठा का लाभ होता है॥ ९॥ स्वस्थग्रह की दशा में स्वस्थता, राजा से प्राप्त धन आदि का सुख, विद्या, यश, धर्म- धन, आदि का लाभ होता है॥ १०॥

मुदान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिकं गंधसुतीर्थधैर्यम्।
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं ह्यादियानाम्बरभूषणाप्तिम्॥ ११॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दशाविपाके सुखधर्ममेति शांतस्य भूपुत्रकलत्रयानम्।
विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं बह्वर्थदेशाधिपपूज्यतां च॥ १२॥

मुदित ग्रह की दशा में वस्त्र, गन्ध, तीर्थयात्रा, धैर्य, पुराण आदि का श्रवण, घोड़ा आदि सवारियों का लाभ, आभूषण का लाभ होता है ॥११॥ शांत की दशामें सुख, धर्म का लाभ, भूमि, स्त्री, सवारी, विद्या का विनोद, धर्मशास्त्र, बहुत धन, राजाओं से पूज्य होता है॥ १२॥

स्थानच्युतिबन्धुविरोधिता च दीनस्य खेटस्य दशाविपाके।
जीवत्यसौ कुत्सितहीनवृत्त्या व्यक्तो जनै रोगनिपीडितः स्यात्॥१३॥
दुःखार्दितस्यापि दशाविपाके नानाविधंदुःखमुपैति नित्यम्।
विदेशगो बंधुजनैर्विहीनश्चौराग्निभूपैर्भयमातनोति॥१४॥

दीनग्रह की दशा में स्थान-च्युति, बंधुओं से विरोध, कुत्सितवृत्ति से जीविका, लोगों से त्यागा हुआ और रोग से पीड़ित होता है॥ १३॥ अति दुःखी ग्रह की दशा में अनेक प्रकार के दुःखों से युक्त, विदेश यात्रा, बंधुओं से त्याज्य, चोर, अग्नि और राजा से भय होता है॥ १४॥

वैकल्पखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम्।
मित्रादिकानां मरणं विशेषात्स्त्रीपुत्रयानांबरचोरपीडाम्॥ १५॥
दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम्।
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निंदाम्॥ १६॥

विकलग्रह की दशा में शरीर में विकलता, मन में विकार, मित्रादिकों का मरण, स्त्री-पुत्र, सवारी आदि की पीड़ा होती है॥ १५॥ खल ग्रह की दशा में कलह वियोग, पिता का वियोग, शत्रु द्वारा जन, धन भूमि का नाश और अपने ही लोगों से नित्य निंदा होती है॥ १६॥

कोपान्वितस्यापि दशाविपाके पापाः समायांति बहुप्रकारैः।
विद्याधनस्त्रीसुतबंधुनाशं पुत्रादिकृच्छ्रं खलु नेत्ररोगम्॥ १७॥

कोपी ग्रह की दशा में अनेक प्रकार के पापकर्म, विद्या, धन, स्त्री, पुत्र और बंधुओं का नाश, पुत्रादि को कष्ट और नेत्ररोग होता है॥ १७॥

अथ बालाद्यवस्थाफलम्-

बालो रसांशैरसभे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाथ वृद्धः।
मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्था कथिता ग्रहाणाम्॥ १८॥

एक राशि में षष्ठांश के तुल्य बाल, कुमार, युवा, वृद्ध, मृत– ये पांच अवस्थाएं होती हैं॥ १८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

फलं तु किंचिद्वितनोति बालश्चार्द्धं कुमारो यतते न पुंसाम्।
युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः फलं च दृष्टं मरणं मृताख्यम्॥१९॥

समराशि में ये विलोम होती हैं। बाल साधारण-कुमार में आधा, युवा में कुछ, वृद्ध में संपूर्ण और मृत में मृत्यु होती है॥१९॥

अथ प्रवासाद्यवस्थाफलम्-

प्रवासनष्टा च मृता जया हास्या रतिर्मुदा।
भुक्ता ज्वरा च कंपा च सुस्थितिर्नाम सन्निभा॥२०॥
षष्ठिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतम्।
शराब्धिहृल्लब्धतोऽर्काच्छेषावस्था द्विजोत्तम॥२१॥

प्रवास, नष्टा, मृत, जय, हास्य, रति, मुद, सुदा, युक्त, ज्वर, कंप और स्थिर ये १२ अवस्थाएँ होती हैं॥२०॥ गत नक्षत्र की संख्या को ६० से गुणाकर उसमें नक्षत्र के भुक्त घटी को जोड़कर ४ से गुणाकर उसमें ४५ से भाग देवे तो लब्धि तुल्य अवस्था होती है, लब्धि १२ से अधिक हो तो उसमें १२ से भाग देने से शेषगत अवस्था होती है॥२१॥

प्रवासः प्रवासोपगे जन्मकालेऽर्थ-
नाशस्तु नष्टोपगे मृत्युभीतिः।
मृतावस्थिते स्याज्जयायां जयस्तु
विलासस्तु हास्योपगे कामिनीभिः॥२२॥
रतौ स्याद्रतिः क्रीडिता सौख्यदात्री
प्रसुप्तापि निद्रां कलिं देहपीडाम्।
भयं तापहानिः सुखं स्यात्तु भुक्त्वा
ज्वरा कंपिता सुस्थितासु क्रमेण॥२३॥

अवस्थाओं के नाम के अनुसार ही उनके फल होते हैं॥२२-२३॥

अथ लज्जिताद्यवस्था तत् फलंचाह-

लज्जितो गर्वितश्चैव क्षुधितस्तृषितस्तथा।
मुदितः क्षोभितश्चैव ग्रहावस्थाः प्रकीर्त्तिताः॥२४॥
पुत्रगेहगतः खेटो राहुकेतुयुतो भवेत्।
रविमंदकुजैर्युक्तो लज्जितोग्रह एव च॥२५॥

लज्जित, गर्वित, क्षुधित, तृषित, मुदित, क्षोभित, ये ६ ग्रहों की अवस्थाएँ होती हैं॥२४॥ पाँचवें भाव में ग्रह राहु केतु रवि शनि और भौम से युक्त हो तो लज्जित होता है॥२५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तुंगस्थानगतो वापि त्रिकोणेऽपि भवेत्पुनः ।
गर्वितः सोऽपि गदितो निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ २६ ॥
शत्रुगेही शत्रुयुक्तो रिपुदृष्टो भवेद्यदि ।
क्षुधितः स च विज्ञेयः शनियुक्तो यथा तथा ॥ २७ ॥

यदि अपनी उच्चराशि वा मूल त्रिकोण में हों तो गर्वित होता है॥ २६॥ शत्रु की राशि में हो, शत्रु से युक्त हो, शत्रु से देखा जाता हो अथवा शनि से युक्त हो तो क्षुधित होता है॥ २७॥

जलराशौ स्थितः खेटः शत्रुणा चावलोकितः ।
शुभग्रहा न पश्यंति तृषितः स उदाहृतः ॥ २८ ॥
मित्रगेही मित्रयुक्तो मित्रेण चावलोकितः ।
गुरुणा सहितो यश्च मुदितः स प्रकीर्त्तितः ॥ २९ ॥

ग्रह जलराशि में हो अपने शत्रु से देखा जाता हो, शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो तृषित होता है॥ २८॥ यदि ग्रह मित्र के गृह में हो, मित्र से युक्त हो और मित्र से देखा जाता हो और गुरु से युक्त हो तो मुदित होता है॥ २९॥

रविणा सहितो यश्च पापाः पश्यंति सर्वथा ।
क्षोभितं तं विजानीयाच्छत्रुणा यदि वीक्षितः ॥ ३० ॥
येषु येषु च भावेषु ग्रहास्तिष्ठन्त सर्वथा ।
क्षुधितः क्षोभितो वापि स नरो दुःखभाजनः ॥ ३१ ॥

रवि से युक्त हो और केवल पापग्रह से दृष्ट हो और शत्रु से देखा जाता हो तो क्षोभित होता है॥ ३०॥ जिन-जिन भावों में क्षुधित और क्षोभित ग्रह रहते हैं, उन-उन भाव के फलों का नाश होता है॥ ३१॥

एवं क्रमेण बोद्धव्यं सर्वभावेषु पंडितैः ।
बलाबलविचारेण वक्तव्यः फलनिर्णयः ॥ ३२ ॥
अन्योन्यं च मुदा युक्तं फलं मिश्रं वदेत्पुनः ।
बलहीने तथा हानिः सबले च महाफलम् ॥ ३३ ॥

इसी प्रकार सभी भावों में बलाबल के विचार से फल का निर्णय करना चाहिए॥ ३२॥ परस्पर मुदित ग्रह हों तो मिश्रित फल होता है, यदि ग्रहहीन बल हो तो हानि और बली हो तो अधिक फल होता है॥ ३३॥

कर्मस्थाने स्थितो यस्य लज्जितस्तृषितस्तथा ।
क्षुधितः क्षोभितो वापि स नरो दुःखभाजनः ॥ ३४ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुतस्थाने भवेद्यस्य लज्जितो ग्रह एव च।
सुतनाशो भवेत्तस्य एकस्तिष्ठति सर्वदा ॥३५॥
क्षोभितस्तृषितश्चैव सप्तमे यस्य वा भवेत्।
म्रियते तस्य नारी च सत्यमाहुर्द्विजोत्तम ॥३६॥

जिसके कर्मभाव में लज्जित वा तृषित ग्रह हो अथवा क्षुधित वा क्षोभित ग्रह हो तो वह मनुष्य दुःखी होता है॥ ३४॥ जिसके पुत्रस्थान में लज्जित ग्रह हो तो उसके पुत्र का नाश होता है॥ ३५॥ जिसके सातवें भाव में क्षोभित वा तृषित ग्रह हो तो उसकी स्त्री का नाश होता है॥ ३६॥

नवालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम्।
सदार्थलाभं व्यवहारवृद्धिं फलं विशेषादिह गर्वितस्य ॥३७॥

गर्वित ग्रह की दशा में नूतन मकान, बगीचा का सुख, नृपत्व, कला में पटुता, सदा धन का लाभ, व्यवहार में कुशलता होती है॥ ३७॥

भवति-मुदितयोगे वासशालाविशाला
विमलवसन - भूषाभूमियोषासु सौख्यम्।
स्वजनजनविलासो भूमिपागारवासो
रिपुनिवहविनाशो - बुद्धिविद्याविकाशः ॥३८॥

मुदित ग्रह की दशा में, विशाल भवन का लाभ, सुन्दर वस्त्र-भूषण-स्त्री का सुख, स्वजन विलास, राजगृह में निवास, शत्रुओं के समूह का नाश और बुद्धिविद्या का विकास होता है॥ ३८॥

दिशति लज्जितभाववशाद्रतिं विगतराममतिं विमतिक्षयम्।
सुतगदागमनं गमनं वृथा कलिकथाभिरुचिं न रुचिं शुभे ॥३९॥
संक्षोभितस्यापि फलं विशेषाद्दरिद्रजातं कुमतिं च कष्टम्।
करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनादिबाधामवनीशकोपात् ॥४०॥

लज्जित ग्रह की दशा में ईश्वर में अनिच्छा, सुन्दर बुद्धि की हानि, पुत्र को कष्ट, व्यर्थ भ्रमण, झगड़ा आदि में रुचि, और धर्म में अरुचि होती है॥ ३९॥ क्षोभित ग्रह की दशा में दरिद्रता, दुर्बुद्धि, कष्ट, धन का नाश, पैर में कष्ट, राजा के कोप से धन प्राप्ति में बाधा होती है॥ ४०॥

क्षुभितग्रहवशाद्वै शोकमोहादितापः
परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नराणा-
मखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधो विषादात् ॥ ४१ ॥
तृषितखगभवे स्वेनांगनासंगमध्ये-
भवति गदविकारो दुष्टकार्याधिकारः ।
निजजनपरिवादादर्थहानिः कृशत्वं
खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव ॥ ४२ ॥

क्षुभित ग्रह की दशा में शोक, मोह, परिजनों के कष्ट से मानसी व्यथा, कृशता, शत्रु से विवाद, धन की हानि और विरोध से बुद्धि की हानि होती है॥ ४१ ॥ तृषित ग्रह की दशा में स्त्री के संसर्ग से रोग, दुष्ट कार्य का अधिकार, अपने ही लोगों के विवाद से धन की हानि, कृशता, दुष्टों से कष्ट और मानहानि होती है॥ ४२ ॥

अथ शयनाद्यवस्थानयनम्-

शयनं चोपवेशं च नेत्रपाणिप्रकाशनम् ।
गमनागमनं चाथ सभायां वसतिं तथा ॥ ४३ ॥
आगमं भोजनं चैव नृत्यलिप्सां च कौतुकम् ।
निद्रां ग्रहाणां चेष्टां च कथयामि तवाग्रतः ॥ ४४ ॥

१शयन, २ उपवेशन, ३नेत्रपाणि, ४प्रकाशन, ५गमन, ६आगमन, ७ सभावास, ८आगम, ९ भोजन, १०नृत्यलिप्सा, ११कौतुक, १२ निद्रा॥ ४३ ॥ १२ निद्रा की १२ अवस्था और उनकी चेष्टाओं को कहता हूं॥ ४४ ॥

यस्मिन्नृक्षे भवेत्खेटस्तेन तं परिपूरयेत् ।
पुनरंशेन संपूर्य स्वनक्षत्रं नियोजयेत् ॥ ४५ ॥
यातदंडं तथा लग्नमेकीकृत्य सदा बुधः ।
रविणा हरते भागं शेषं कार्ये नियोजयेत् ॥ ४६ ॥

जिस नक्षत्र में ग्रह हो उसकी संख्या से ग्रह संख्या को गुणा कर दे, गुणन फल को ग्रह के नवांश संख्या से गुणा कर दे, गुणनफल में जन्म नक्षत्र संख्या को जोड़ दे और इसमें इष्टघटी और लग्न की संख्या को जोड़कर उसमें १२ का भाग देने से शेष के तुल्य शयन आदि अवस्था होती है॥ ४५-४६ ॥

नाक्षत्रिकदशाक्रमेण पुनः पूरणमाचरेत् ।
नामाक्षरेण संयुक्ते हर्तव्यं रविणा ततः ॥ ४७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रवौ पंच तथा देयं चन्द्रे दद्याद् द्वयं तथा।
कुजे द्वयं च संयुक्तं बुधे त्रीणि नियोजयेत् ॥४८॥

फिर शेषांक को उसी से गुणाकर गुणनफल में नाम के आद्यक्षर के अनुसार स्वरांक को जोड़ दे और १२ से भाग देवे, शेष में ग्रह का ध्रुवांक जोड़ देवे॥४७॥ जैसे रवि का ५, चन्द्र का २, भौम का २, बुध का ३ ॥४८॥

गुरौ बाणाः प्रदेयाश्च त्रयं दद्याच्च भार्गवे।
शनौ त्रयमथो देयं राहौ दद्याच्चतुष्टयम् ॥४९॥
शेषं हृतं च रामेण ग्रहाणां त्रिविधं भवेत्।
दृष्टिं चेष्टां विचेष्टां च कथयामि तवाग्रतः ॥५०॥

गुरु का ५, शुक्र का ३, शनि का ३, और राहु का ४, ॥४९॥ जोड़कर ३ का भाग देने से १ बचे तो दृष्टि, २ बचे तो चेष्टा और ३ या ० बचे तो विचेष्टा होती है॥५०॥

स्वराङ्कचक्र

१	२	३	४	५
अ.	इ.	उ.	ए.	ओ.
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह

उदाहरण- जैसे सूर्य ३।१८।२६।१४ जन्म नक्षत्र पुनर्वसु, इष्ट घटी ३२ और जन्म लग्न मकर है। सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में है उसकी संख्या ९ है, रवि की संख्या १ को गुणा किया तो ९ हुआ, रवि के नवांश संख्या ६ से गुणा करने से ६x९=५४ हुआ। इसमें जन्म नक्षत्र संख्या ७ इष्टघटी ३२ और जन्मलग्न संख्या १० इन तीनों को जोड़ने से १०३ हुआ इसमें १२ का भाग देने से शेष ७ बचा, अतः सातवीं सभावास अवस्था सूर्य की हुई। फिर शेष को उसी से गुणा करने से ४९ हुआ इसमें दिनेश के आद्यअक्षर का स्वरांक ५ जोड़कर १२ से भाग देने से ६ शेष बचा, इसमें रवि का ध्रुवांक ५ जोड़कर तीन का भाग देने से २ बचा अतः चेष्टा अवस्था हुई।

दृष्ट्यादिफलम्-

दृष्टौ स्वल्पफलं ज्ञेयं चेष्टायां विपुलं धनम्।
विचेष्टायां फलं न स्यादेवं दृष्टिफलं विदुः ॥५१॥
शुभाशुभं ग्रहाणां च समीक्ष्याथ बलाबलम्।
तुंगस्थाने विशेषेण बलं ज्ञेयं तथा बुधैः ॥५२॥

दृष्टि में ग्रहों की अवस्था का अल्पफल, चेष्टा में अधिक फल और विचेष्टा में निष्फल होता है॥५१॥ ग्रहों का शुभाशुभ और बलाबल का विचार कर फलादेश करना चाहिए॥५२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ रवेः द्वादशावस्थाफलम्-

मंदाग्निरोगो बहुधा नराणां स्थूलत्वमंघ्रेरपि पित्तकोपः।
व्रणं गुदे शूलमुरः प्रदेशे यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते॥ ५३॥
दरिद्रताभारविहारशाली विवादविद्याभिरतो नरः स्यात्।
कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तः सूर्यो यदा चेदुपवेशनस्थः॥ ५४॥

यदि सूर्य शयन अवस्था में हो तो जातक को मन्दाग्निरोग, चरण में स्थूलता, पित्त प्रकोप, गुदा में व्रण, हृदय में शूल होता है॥ ५३॥ उपवेशन अवस्था में हो तो दरिद्रता को भोगने वाला, कठोर चित्त वाला, नष्ट धनवाला होता है॥ ५४॥

नरः सदानंदधरः विवेकी परोपकारी बलवित्तयुक्तः।
महासुखीराजकृपाभिमानी दिवाधिनाथो यदिनेत्रपाणौ॥ ५५॥
उदारचित्तः परिपूर्णवित्तः सभासुवक्ताबहुपुण्यकर्त्ता।
महाबली सुदररूपशाली प्रकाशने जन्मनि पद्मनीशे॥ ५६॥

नेत्रपाणि अवस्था में हो तो सदा आनन्द भोगनेवाला, विवेकी, परोपकारी, बली, धनी, महासुखी, राजा की कृपा से अभिमानी होता है॥ ५५॥ प्रकाशन में हो तो उदारचित्तवाला, धन से पूर्ण, सभा में वक्ता, अनेक पुण्य करने वाला, महाबली, सुन्दर रूप वाला होता है॥ ५६॥

प्रवासशाली किल दुःखमाली सदालसी धीधनवर्जितश्च।
भयातुरः कोपपरो विशेषादिवाधिनाथे गमने मनुष्यः॥ ५७॥
परदाररतो जनतारहितो बहुधा गमने गमनाभिरुचिः।
कृपणः खलताकुशलो मलिनं दिवसाधिपतौ मनुजः कुमतिः॥ ५८॥

गमन अवस्था में हो तो जातक प्रवास में रहने वाला, दुःखी, सदा आलसी, बुद्धि-धन से रहित, भयातुर तथा क्रोधी होता है॥ ५७॥ आगमन अवस्था में हो तो परस्त्री में आसक्त, जनमत से रहित, यात्रा में रुचि, कृपण, दुष्टता में कुशल और मलिन होता है॥ ५८॥

सभागते हिते नरः परोपकारतत्परः
सदार्थरत्नपूरितो दिवाकरे गुणाकरे।
वसुन्धरानवांबरालयान्वितो महाबली
विचित्रमित्रवत्सलः कृपाकलाधरः परः॥ ५९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सभा अवस्था में हो तो परोपकारी, सदा धन, रत्न से परिपूर्ण, गुणों का भण्डार, भूमि, नूतनवस्त्र, गृह से युक्त, महाबली, अनेक मित्रों से युक्त और कृपालु होता है॥ ५९॥

क्षोभितो रिपुगणैः सदा नरश्चंचलः खलमतिः कृशस्तथा।
धर्मकर्मरहितो मदोद्धतश्चागमे दिनपतौ यदा तदा॥ ६०॥

आगम अवस्था में सूर्य हो तो जातक शत्रुओं से क्षुभित, चंचल, दुष्ट बुद्धि, कृशशरीर, धर्मकर्म से रहित और उद्धत स्वभाव का होता है॥ ६०॥

मदांधसंधिवेदनापरांगनाधनक्षयो
बलक्षयः पदे पदे यदा तदा हि भोजने।
असत्यता शिरोव्यथा तथा वृथान्नभोजनं
रवावसत्कथारतिः कुमार्गगामिनी मतिः॥ ६१॥

भोजन अवस्था में हो तो जातक मदांध, संधियों में वेदना, परस्त्री से द्रव्य की हानि, बल की हानि, असत्यभाषी, शिर में पीड़ा, व्यर्थ अन्न और भोजन करने वाला, व्यर्थ बकवाद करने वाला, कुमार्गगामी होता है॥ ६१॥

विज्ञलोकैः सदा मंडितः पंडितः काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्वितः।
राजपूज्यो धरामंडले सर्वदा नृत्यलिप्सागते पद्मिनीनायके॥ ६२॥
सर्वदानंदधर्ता जनो ज्ञानवान्यज्ञकर्त्ता धराधीशसद्मस्थितः।
पद्मबंधावरातेर्भयं स्वाननः काव्यविद्याप्रलापी मुदा कौतुके॥ ६३॥

नृत्यलिप्सा में हो तो सदा विज्ञजनों से आवृत्त, पंडित, काव्य करने वाला, राजा से पूज्य होता है॥ ६२॥ कौतुक अवस्था में हो तो सदा आनन्द करने वाला, ज्ञानी, यज्ञ करने वाला, राजगृह में रहने वाला, शत्रु से भयभीत, सुन्दर मुख और काव्य करने वाला होता है॥ ६३॥

निद्राभरारक्तनिभे भवेतां निद्रागते लोचनपद्मयुग्मे।
रवौ विदेशे वसतिर्जनस्य कलत्रहानिः कतिधार्थनाशः॥ ६४॥

निद्रा अवस्था में हो तो निद्रा से भरे नेत्रों वाला, विदेशी, स्त्री की हानि और अनेक प्रकार से धन का नाशक होता है॥ ६४॥

अथ चन्द्रावस्थाफलम्-

जनुःकाले क्षपानाथे शयनं चेदुपागते।
मानी शीतप्रधानश्च कामी वित्तविनाशकः॥ ६५॥

यदि चन्द्रमा शयन अवस्था में हो तो उसकी दशा में जातक मानी, शीतल स्वभाव, कामी और धन का नाश करने वाला होता है॥ ६५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रोगार्दितो मंदमतिर्विशेषाद्वित्तेन हीनो मनुजः कठोरः।
अकार्यकारी परवित्तहारी क्षपाकरे चेदुपवेशनस्थे॥ ६६॥

उपवेशन अवस्था में हो तो रोगी, मंदबुद्धि, धनहीन, कठोर, कुकर्म में रत, दूसरे के धन को हरण करने वाला होता है॥ ६६॥

नेत्रपाणौ क्षपानाथे महारोगी नरो भवेत्।
अनल्पजल्पको धूर्त्तः कुकर्मनिरतः सदा॥ ६७॥
यदा राकानाथे गतवति विकाशं च जनने
विकाराः संसारे विमलगुणराशेरवनिपात्।
नवाशामाला स्यात्करितुरगलक्ष्म्या परिवृता
विभूषा योषाभिः सुखमनुदिनं तीर्थगमनम्॥ ६८॥

नेत्रपाणि अवस्था में हो तो महारोगी, व्यर्थ बोलने वाला, धूर्त्त और कुकर्म करने वाला होता है॥ ६७॥ यदि प्रकाश अवस्था में हो तो संसार में प्रसिद्ध, अपने गुणों से राजा से द्रव्य प्राप्त करने वाला, हाथी, घोड़ा, लक्ष्मी से युक्त, स्त्री से सुखी और तीर्थयात्री होता है॥ ६८॥

सितेतरे पापरतो निशाकरे विशेषतः क्रूरतरो नरो भवेत्।
सदाक्षिरोगैःपरिपीड्यमानो बलक्षपक्षे गमने भयातुरः॥ ६९॥

यदि चन्द्रमा कृष्णपक्ष में गमन अवस्था में हो तो पापी और क्रूर स्वभाव का नेत्र रोगी और शुक्ल पक्ष में भयभीत होता है॥ ६९॥

विधवागमने मानी पादरोगी नरो भवेत्।
गुप्तपापरतो दीनो मतितोषविवर्जितः॥ ७०॥

आगमन अवस्था में हो तो मानी, चरण में रोग युक्त, गुप्त पाप करने वाला, दीन, मलिन और असंतोषी होता है॥ ७०॥

सकलजनवदान्यो राजराजेन्द्रमान्यो
रतिपतिसमकान्तिः शांतिकृत्कामिनीनाम्।
सपदि सदसि याते चारुविंबे शशांके-
परमरीतिप्रीतिविज्ञो गुणज्ञः॥ ७१॥

सभावस्था में हो तो सभी मनुष्यों में श्रेष्ठ, राजाओं का मान्य, कामदेव के समान सुन्दर, स्त्रियों को सुखदाता, प्रीति की रीति को जानने वाला और गुणी होता है॥ ७१॥

विधावागमने मर्त्यो वाचालो धर्मपूरितः।
कृष्णपक्षे द्विभार्यः स्याद्रोगी दुष्टनरो हठी॥ ७२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आगम अवस्था में हो तो वक्ता, धर्मात्मा, कृष्णपक्ष हो तो दो स्त्री वाला, रोगी, दुष्ट और हठी होता है॥७२॥

भोजने जनुषि पूर्णचन्द्रमा मानयानजनतासुखं नृणाम्।
आतनोति वनितासुतासुखं सर्वमेव न सितेतरे शुभम्॥७३॥

भोजन अवस्थामें हो तो मान-प्रतिष्ठा, सवारी और सुख से संपन्न, स्त्री, पुत्रसे सुखी होता है। कृष्णपक्षका चन्द्रमा हो तो उक्त फल नहीं होता।७३।

नृत्यलिप्सागते चन्द्रे सबले बलवान्नरः।
गीतज्ञो हि रसज्ञश्च कृष्णो पापकरो भवेत्॥७४॥

नृत्यलिप्सा अवस्था में हो और चन्द्रमा शुक्लपक्ष का हो तो बलवान्, गीतज्ञ, रसज्ञ होता है और कृष्णपक्ष का हो तो पापी होता है॥७४॥

कौतुकभवनं गतवति चन्द्रे भवति नृपत्वं वा धनपत्वम्।
कामकलासु सदा कुशलत्वं वारवधूरतिरमणपटुत्वम्॥७५॥
निद्रागते जन्मनि मानवानां कलाधरे जीवयुतं महत्त्वम्।
यदांगनासंचितवित्तनाशः शिवालयं रौति विचित्रमुच्चैः॥७६॥

कौतुक अवस्था में हो तो राजा या धनी, कामकला में कुशल और स्त्रियों का प्रेमी होता है॥७५॥ निद्रा अवस्था में हो, गुरु से युत हो तो प्रतिष्ठावान् होता है, गुरु से युत न हो, चन्द्रमा क्षीण हो तो स्त्री और संचित धन का नाशक और सियारिन उसके घर में उच्चस्वर से रोती है॥७६॥

अथ भौमावस्थाफलम्-

शयने वसुधापुत्रे जंतुरङ्गे व्रणो भवेत्।
बहुना कण्डुना युक्तो दद्रुणा च विशेषतः॥७७॥
बली सदा पापरतो नरः स्यादसत्यवादी नितरां प्रगल्भः।
धनेन पूर्णो निजधर्महीनो धरासुतश्चेदुपवेशनस्थः॥७८॥

शयन अवस्था में भौम हो तो जातक के शरीर में बहुधा व्रण, खुजली और दाद से पीड़ित रहता है॥७७॥ उपवेशन अवस्था में हो तो पापरत, असत्यभाषी, प्रगल्भ, धन से पूर्ण तथा अपने धर्म से हीन होता है॥७८॥

यदा भूमिसुते लग्ने नेत्रपाणिमुपागते।
दरिद्रता सदा पुंसामन्यभे नगरेशता॥७९॥
प्रकाशो गुणस्यापि वासः प्रकाशे
धराधीशभर्त्तुः सदा मानवृद्धिः।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुते भूसुते पुत्रकांतावियोगो
भवेद्राहुणा दारुणो वा निपातः ॥ ८० ॥

यदि नेत्रपाणि अवस्था में लग्न में हो तो सदा दरिद्र, अन्यभाव में हो तो नगरसेठ होता है ॥ ७९ ॥ प्रकाशावस्था में हो तो गुणों का विकास, राजा से सम्मान, यदि पाँचवे भाव में भौम हो तो पुत्र-स्त्री का वियोग, राहु से युक्त हो तो घोर पतन होता है ॥ ८० ॥

गमनागमने कुरुतेऽनुदिनं व्रणजालभयं वनिताकलहः ।
बहुदद्रुककण्डुभयं बहुधा वसुधातनयो वसुहानिकरः ॥ ८१ ॥
आगमने गुणशाली मणिमाली वा करालकरवाली ।
गजगता रिपुहंता परिजनसन्तापहारको भौमे ॥ ८२ ॥

गमन अवस्था में हो तो सदा यात्रा करने वाला, व्रणभय, स्त्री से कलह, दाद, खुजलीका भय और धन की हानि होती है ॥ ८१ ॥ आगमन अवस्था में गुणी, मणियों की माला धारण करने वाला, भीषण तलवार से युक्त, हाथी पर चलने वाला, शत्रुनाशक, अपने परिजनों के संताप को हरने वाला होता है ॥ ८२ ॥

तुंगे युद्धकलाकलापकुशलो धर्मध्वजो वित्तपः
कोणे भूमिसुते सभामुपगते विद्याविहीनः पुमान् ।
अंतेऽपत्यकलत्रमित्ररहितः प्रोक्तेतरस्थानगे-
ऽवश्यं राजसभाबुधो बहुधनी मानी च दानी जनः ॥ ८३ ॥

अपनी उच्चराशि में होकर सभा अवस्था में हो तो युद्धकला में निपुण, धर्मध्वजी, धनी होता है, यदि ५ । ९ भाव में हो तो विद्या से रहित होता है। १२ भावमें हो तो पुत्र, स्त्री और मित्र से रहित होता है। इनसे भिन्न स्थानों में हो तो राजसभा का पंडित, बड़ा धनी, मानी और दानी होता है ॥ ८३ ॥

आगमे भवति भूमिजे जनो धर्मकर्मरहितो गदातुरः ।
कर्णशूलगुरुशूलरोगवानेव कातरमतिः कुसंगमी ॥ ८४ ॥
भोजने मिष्टभोजी च जनने सबले कुजे ।
नीचकर्मकरो नित्यं मनुजो मानवर्जितः ॥ ८५ ॥

आगम अवस्था में भौम हो तो जातक धर्म-कर्म से हीन, रोगी, कान में दर्द, बड़े शूल रोग से पीड़ित, कातरबुद्धि और दुष्टों की संगति करने वाला होता है ॥ ८४ ॥ भोजन अवस्था में हो तो मिठाई खानेवाला, नीचकर्म करने वाला और अप्रतिष्ठित होता है ॥ ८५ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नृत्यलिप्सागते भूसुते जन्मिनामिंदिराराशिरायाति भूमीपतेः।
स्वर्णरत्नप्रवालैः सदामंडिता वासशालानराणां भवेत्सर्वदा॥८६॥
कौतुकी भवति कौतुके कुजे मित्रपुत्रपरिपूरितो जनः।
उच्चगे नृपतिगेहमंडितः पूजितो गुणवरैर्गुणाकरैः॥८७॥

नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो राजा के यहाँ से लक्ष्मी की प्राप्ति, सदा सुवर्ण, रत्न, मूँगा आदि से युक्त गृह वाला होता है॥८६॥ कौतुक अवस्था में हो तो कौतुक करने वाला, मित्र, पुत्र से परिपूर्ण, यदि उच्च में भौम हो तो राजगृह और गुणियों से पूजित होता है॥८७॥

निद्रावस्थां गते भौमे क्रोधी धीधनवर्जितः।
धूर्त्तो धर्मपरिभ्रष्टो मनुष्यो गदपीडितः॥८८॥

निद्रा अवस्था में भौम हो तो क्रोधी, बुद्धि-धन से हीन, धूर्त्त, धर्म से भ्रष्ट और रोगी होता है॥८८॥

अथ बुधावस्थाफलम्-

क्षुधातुरो भवेदंगे खंजो गुंजानिभेक्षणः।
अन्यभे लम्पटो धूर्त्तो मनुजो शयने बुधे॥८९॥

बुध शयन अवस्था में होकर लग्न में हो तो भूखा, चलने में असमर्थ, गुंजा के समान (लाल) नेत्रों वाला होता है। अन्य भावों में हो तो लम्पट और धूर्त्त होता है॥८९॥

शशांकपुत्रे जनुरंगगेहे यदोपवेशे गुणराशिपूर्णः।
पापेक्षिते पापयुते दरिद्रो हिते शुभे वित्तसुखी मनुष्यः॥९०॥

उपवेशन अवस्था में बुध लग्न में हो तो गुणी, पापग्रह से युत दृष्ट हो तो दरिद्र, शुभग्रह वा मित्र से युत दृष्ट हो तो धनी होता है॥९०॥

विद्याविवेकरहितो हिततोषहीनो
मानी जनो भवति चंद्रसुतेऽक्षिपाणौ।
प्रजालये सुतकलत्रसुखेनहीनः
कन्याप्रजो नृपतिगेहबुधो वरार्थः॥९१॥

नेत्रपाणि अवस्था में हो तो विद्याविवेक से रहित, मित्रतारहित, अभिमानी, ५वें भाव में बुध हो तो स्त्री-पुत्र के सुख से रहित, कन्या संततिवाला, राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है॥९१॥

दाता दयालुः खलु पुण्यकर्ता विकाशने चन्द्रसुते मनुष्यः।
अनेकविद्यार्णवपारगंता विवेकपूर्णः खलवर्गहन्ता॥९२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गमनागमने भवतो गमने बहुधा वसुधाधिपतेर्भवने।
भवनं च विचित्रमलं रमया विदि नुश्च जनुः समये नितराम्॥ ६३॥

प्रकाश अवस्था में हो तो दानी, दयालु, पुण्यात्मा, अनेक विद्याओं को जानने वाला, विवेकी और दुष्टों का दमन करने वाला होता है॥ ६२॥ गमन अवस्था में हो तो राजगृह में जाने वाला, लक्ष्मी से पूर्ण गृहवाला होता है। यही फल आगमन अवस्था का भी होता है॥ ६३॥

सपदि विदिजनानामुच्चगे जन्मकाले
सदसि धनसमृद्धिः सर्वदा पुण्यवृद्धिः।
धनपतिसमता वा भूपता मंत्रिता वा
हरिहरपदभक्तिः सात्त्विकी मुक्तिलब्धिः॥ ६४॥

सभा अवस्था में हो तो धनी, पुण्यकर्त्ता, उच्चराशि में हो तो बहुत धनी, राजा का मंत्री तथा ईश्वर का भक्त और अंत में मुक्ति पाने वाला होता है॥६४॥

आगमे जनुषि जन्मिनां यदा चन्द्रजे भवति हीनसेवया।
अर्थसिद्धिरपि पुत्रयुग्मता बालिका भवति मानदायिका।६५।
भोजने चन्द्रजे जन्मकाले यदा जन्मिनामर्थहानिः सदा वादतः।
राजभीत्या कृशत्वं चलत्वं मतेरंगसंगो न जाया न मायासुखम्।६६।

आगमन अवस्था में हो तो नीच सेवा से धन प्राप्त करने वाला, २ पुत्र और एक कन्या प्रतिष्ठा को देनेवाली होती है॥ ६५॥ भोजन अवस्था में हो तो वादविवाद (मुकदमे में) में द्रव्य की हानि, राजभय, कृशता, मन की अस्थिरता, शरीर, स्त्री तथा धन का सुख नहीं होता है॥ ६६॥

नृत्यलिप्सागते चन्द्रजे मानवो मानयानप्रवालव्रजैः संयुतः।
मित्रपुत्रप्रतापैः सभा पंडितः पापभे वारवामारतो लम्पटः॥६७॥

नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मान,वाहन,रत्न,मित्र, पुत्र और प्रताप से युक्त होता है। पापराशि में हो तो वेश्याप्रेमी और लम्पट होता है॥६७॥

कौतुके चन्द्रजे जन्मकाले नृणामंगभे गीतविद्याऽनवद्या भवेत्।
सप्तमे नैधने वारवध्वारतिः पुण्यभे पुण्ययुक्ता मतिः सद्गतिः॥६८॥

कौतुकावस्था में होकर लग्न में हो तो गीत विद्या का पंडित, सातवें-आठवें भाव में हो तो वेश्यागामी, ९वें भाव में हो तो पुण्यवान् बुद्धि होती है।६८।

निद्राश्रिते चन्द्रसुते न निद्रासुखं सदा व्याधिसमाधियोगः।
सहोत्थवैकल्यमनल्पतापो निजेन वादो धनमाननाशः॥ ६९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

निद्रावस्था में हो तो निद्रा से सुख, आधि-व्याधि से पीड़ित, सहोदर से हीन, अधिक सन्ताप, अपने कुटुम्बसे विवाद और धन का नाश होता है।९९।

अथ गुरोरवस्थाफलम्-

वचसामधिपे तु जनुः समये शयने बलवानपि हीनरवः।
अतिगौरतनुः खलुदीर्घहनुः सुतरामरिभीतियुतो मनुजः॥ १००॥
उपवेशं गतवति यदि जीवे वाचालो बहुगर्वपरीतः।
क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः करजंघास्यपदव्रणयुक्तः॥ १०१॥

यदि जन्म समय में गुरु शयनावस्था में हो तो बलवान् होते हुये भी जातक हीन शब्द (मंद स्वर), अत्यन्त गौरवर्ण, लम्बी दाढ़ीवाला और निरन्तर शत्रु के भय से युक्त होता है॥ १००॥ उपवेशन अवस्था में हो तो वक्ता, अत्यन्त गर्वीला, राजा और शत्रु से संताप पाने वाला, हाथ, जंघा, मुख और पैर में घाव से युक्त होता है॥ १०१॥

नेत्रपाणिं गते देवराजार्चिते रोगयुक्तो वियुक्तो वरार्थश्रिया।
गीतनृत्यप्रियः कामुकः सर्वदा गौरवर्णो विवर्णोद्भव! प्रीतियुक्।१०२।

नेत्रपाणि अवस्था में हो तो रोगी, धन से हीन, गाने-नाचने का प्रेमी, कामी, गौरवर्ण, विजातियों से प्रेम करने वाला होता है॥ १०२॥

गुणानामानंदं विमलसुखकंदं वितनुते
सदा तेजः पुंजं व्रजपतिनिकुंजं प्रतिगमम्।
प्रकाशं चेदुच्चे द्युतमुपगतो वासवगुरु-
र्गुरुत्वं लोकानां धनपतिसमत्वं तनुभृताम्॥ १०३॥

प्रकाश अवस्था में हो तो गुणों का आनन्द, स्वच्छ सुख के समूहों का आनन्द, तेजस्वी कृष्णचन्द्र के स्थान (वृन्दावन) को जाने को उद्यत, यदि गुरु उच्चराशि का हो तो संसार में मान्यता और कुबेर के समान धनी होता है॥ १०३॥

साहसी भवति मानवः सदा मित्रवर्गसुखपूरितो सदा।
पंडितो विविधवित्तमंडितो वेदविदादिगुरौ गमं गते॥ १०४॥
आगमने जनता वरजाया यस्य जनुः समये हरिमाया।
मुंचति नालमिहालयमद्धा देवगुरौ परितः परिविद्धा॥ १०५॥

यदि गमनावस्था में हो तो साहसी, मित्रवर्ग के सुख से पूर्ण पण्डित, अनेक सम्पत्तियों से युक्त और वेद को जानने वाला होता है॥ १०४॥ आगमन अवस्था में हो तो उसके गृह में जनता, सुन्दरी स्त्री और लक्ष्मी (धन) सदा उपस्थित रहती है॥ १०५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुरगुरुसमवक्ता शुभ्रयुक्ता फलाढ्यः
सदसि सपदि पूर्णो वित्तमाणिक्ययानैः ।
गजतुरगरथाढ्यो देवताधीशपूज्यो
जनुषि विविधविद्यागर्वितो मानवः स्यात् ॥ १०६ ॥

सभावस्था में हो तो बृहस्पति के समान वक्ता, सुन्दर मोतियों से युक्त, धन, रत्न, हाथी, घोड़ा, रथ आदि सवारियों से युक्त, इन्द्र से पूज्य और अनेक विद्याओं को जानने वाला गर्वयुक्त होता है॥ १०६॥

नानावाहनमानयानपटलीसौख्यं गुरावागमे
भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं विद्यानवद्या भवेत् ।
क्षोणीपालसमानतानवरतं चातीव हृद्यामतिः
काव्यानंदरतिः सदा हितगतिः सर्वत्र मानोन्नतिः ॥ १०७ ॥

आगमन अवस्था में हो तो संसार में मान-प्रतिष्ठा से युक्त, अनेक वाहन समूह से युक्त, नौकर, पुत्र, स्त्री, मित्र का सुख, उत्तम विद्या, राजा के समान, अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धिवाला, काव्यप्रेमी, अच्छे मार्ग से चलने वाला और मान-मर्यादा वाला होता है॥ १०७॥

भोजने भवति देवगुरौ यस्य तस्य सततं सुभोजनम् ।
नैव मुंचति रमालयं तदा वाजिवारणरथैश्च मंडितम् ।१०८।
नृत्यलिप्सागते राजमानी धनी देवताधीशवंद्यः सदा धर्मवित् ।
तंत्रविज्ञो बुधैर्मण्डितः पंडितः शब्दविद्यानवद्यो हि सद्योजनः ।१०९।

भोजनावस्था में हो तो उसे निरंतर सुन्दर भोजन मिलता है, कभी भी धन उसका साथ नहीं छोड़ता है, हमेशा घोड़ा, हाथी, रथ आदि सवारियों से घिरा रहता है॥ १०८॥ नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो राजा से मान्य, धनी, धर्म को जानने वाला, तन्त्रविद्या को जानने वाला, पंडितों से घिरा हुआ श्रेष्ठ पंडित और शब्दशास्त्र (व्याकरण) का पंडित होता है॥ १०९॥

कुतूहली सकौतुके महाधनी जनःसदा
निजान्वये च भास्करः कृपाकलाधरः सुखी ।
निलिंपराजपूजिते सुतेन भूनयेन वा
युतो महाबली धराधिपेन्द्रसद्मपंडितः ॥ ११० ॥
गुरौ निद्रागते यस्य मूर्खता सर्वकर्मणि ।
दरिद्रता परिक्रान्तं भवनं पुण्यवर्जितम् ॥ १११ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कौतुक अवस्था में हो तो कुतूहली, महाधनी, अपने घर में सूर्य के समान तेजस्वी, कृपालु, सुखी, पुत्र, भूमि और नीतिमान्, महाबली और राज-पण्डित होता है॥ ११०॥ निद्रावस्था में हो तो वह सभी कर्मो में मूर्खता करने वाला, दरिद्रता से युक्त और पुण्यहीन होता है॥ १११॥

अथ भृगोरवस्थाफलम्-

जनो बलीयानपि दन्तरोगी भृगौ महारोषसमन्वितः स्यात्।
धनेन हीनं शयनं प्रयाते वराङ्गनासङ्गमलंपटश्च॥११२॥
यदि भवेदुशना उपवेशने नवमणिव्रजकांचनभूषणैः।
सुखमजस्रमरिक्षय आदरादवनिपादपि मानसमुन्नतिः॥११३॥

यदि जन्म समय शुक्र शयन अवस्था में हो तो जातक बलवान् होते हुये भी दंतरोगी, महाक्रोधी, निर्धन और स्त्री-लंपट होता है॥ ११२॥ उप-वेशन अवस्था में हो तो नूतन मणि, सुवर्ण के आभूषणों से सुखी, शत्रुओं का नाश करनेवाला, राजासे आदर और प्रतिष्ठामें वृद्धिवाला होता है॥ ११३॥

नेत्रपाणिंगते लग्नगेहे कवौ सप्तमे मानभे यस्य तस्य ध्रुवम्।
नेत्रपाते निपातो धनानामलं चान्यभे वासशाला विशाला भवेत्।११४।
स्वालये तुङ्गभे मित्रभे भार्गवि तुङ्गमातङ्गलीलाकलापी जनः।
भूपतेस्तुल्य एवं प्रकाशं गते काव्यविद्याकलाकौतुकी गीतवित्।११५।

नेत्रपाणि अवस्था में शुक्र लग्न, सप्तम वा दशम भाव में हो तो न देखने से धन का नाश होता है, अन्य भाव में हो तो बड़ा मकान होता है॥ ११४॥ प्रकाश अवस्था में हो और अपने उच्च, स्वगृह या मित्रगृह में हो तो मतवाले हाथी के समान बलवान्, राजा के सदृश धनी, सुखी, काव्य और संगीत में पारंगत होता है॥ ११५॥

गमने जनने शुक्रे तस्य माता न जीवति।
आधियोगो वियोगश्च जनानामरिभीतितः॥११६॥
आगमनं भृगुपुत्रे गतवति वित्तेश्वरो मनुजः।
सत्तीर्थभ्रमशाली नित्योत्साही करांघ्रिरोगी च॥११७॥

गमन अवस्था में हो तो माता नहीं जीती है, मानसिक चिन्ता, बंधुओं का वियोग और शत्रु से भय होता है॥ ११६॥ आगमन अवस्था में हो तो महाधनी, तीर्थयात्री, उत्साही और पैर के रोग से युक्त होता है॥ ११७॥

अनायासेनालं सपदि महसा याति सहसा
प्रगल्भत्वं राज्ञः सदसि गुणविज्ञः किल कवौ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सभायामायाते रिपुनिवहहन्ता धनपतेः
समत्वं वा दाता बलतुरगगन्ता नरवरः ॥११८॥

सभावस्था में हो तो अनायास ही अपने ही प्रताप से राजदरबार में प्रगल्भता होती है, स्वयं गुणी, शत्रु का नाश करने वाला, महाधनी, दाता और हाथी तथा घोड़े की सवारी पर चलनेवाला होता है॥ ११८॥

आगमे भार्गवि नागमो जन्मिनामर्थराशेररातेरतीव क्षतिः।
पुत्रपातो निपातो जनानामपि व्याधिभीतिः प्रियाभोगहानिर्भवेत्।११९।
क्षुधातुरो व्याधिनिपीडितः स्यादनेकधारातिभयार्दितश्च।
कवौ यदा भोजनगे युवत्या महाधनी पंडितमण्डितश्च।१२०।

आगमन अवस्था में हो तो शत्रुद्वारा धन की अधिक हानि, पुत्र परिजनों का वियोग, रोग का भय और स्त्री के सुख की हानि होती है॥ ११९॥ भोज़न अवस्था में हो तो भूख से व्याकुल, रोग से पीडित और बारम्बार शत्रु से पीडित होता है॥ १२०॥

काव्यविद्यानवद्या च हृद्या मतिः सर्वदा नृत्यलिप्सागते भार्गवि।
शंखवीणामृदंगादिगानध्वनिव्रातनैपुण्यमेतस्य वित्तोन्नतिः।१२१।
कौतुकभवनं गतवति शुक्रे शुक्रेशत्वं सदसि महत्त्वम्।
हृद्या विद्या भवति च पुंसः पद्मा निवसति सद्मादरतः।१२२।

नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो काव्य करने वाला, बुद्धिमान्, वीणा-मृदङ्ग आदि बाजों को बजाने में चतुर और धन की उन्नति करने वाला होता है॥ १२१॥ कौतुक अवस्था में हो तो इन्द्र के समान पराक्रमी, सभा में चतुर, उत्तम विद्या और गृह में सदा लक्ष्मी के वास वाला होता है॥ १२२॥

परसेवारतो नित्यं निद्रामुपगते कवौ।
परनिंदापरो वीरो वाचालो भ्रमते महीम् ॥१२३॥

यदि निद्रावस्था में हो तो दूसरे की सेवा करने वाला, दूसरे की निन्दा करने वाला, व्यर्थ बोलनेवाला और व्यर्थ घूमने वाला होता है॥ १२३॥

अथ शनेरवस्थाफलम्-

क्षुत्पिपासापरिक्रान्तो विश्रान्तः शयने शनौ।
वयसि प्रथमे रोगी ततो भाग्यवतां वरः ॥१२४॥

यदि शनि शयनावस्था में हो तो जातक बाल्यकाल में रोगी, भूख, प्यास से पीड़ित रहता है, परन्तु वृद्धावस्था में भाग्यवान् होता है॥ १२४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भानोः सुते चेदुपवेशनस्थे करालकारातिजनानुतप्तः।
अपायशाली खलु दद्रुमाली नराऽभिमानी नृपदण्डयुक्तः॥१२५॥

उपवेशन अवस्था में हो तो प्रबल, शत्रुद्वारा पीड़ित, व्यर्थ अपव्यय करने वाला, दाद, खुजली आदि रोग वाला, अभिमानी और राजदंड से दंडित होता है॥ १२५॥

नयनपाणिगते नृपनंदने परमया रमया रमयायुतः।
नृपतितो हिततो मतितोषकृद्बहुकलाकलितो विमलोक्तिकृत्।१२६।
नानागुणग्रामधनाधिशाली सदा नरो बुद्धिविनोदमाली।
प्रकाशने भानुसुते सुभानुः कृपानुरक्तो हरपादभक्तः।१२७।

नेत्रपाणि अवस्था में हो तो परम सुन्दरी स्त्री और संपत्ति से युक्त, राजा और मित्रों से उपकृत, अनेक कलाओं का ज्ञाता और प्रिय बोलने वाला होता है॥ १२६॥ प्रकाश अवस्था में हो तो अनेक गुण-ग्राम धन से युक्त, बुद्धिमान, कृपालु और ईश्वरभक्त होता है॥ १२७॥

महाधनी नन्दननन्दितः स्यादपायकारी रिपुभूमिहारी।
गमे शनौ पंडितराजभावं धरापतेरायतने प्रयाति॥ १२८॥

गमन अवस्था में हो तो महाधनी, पुत्र से युक्त, खर्चीला, शत्रु की भूमि को लेने वाला, राजा का पंडित होता है॥ १२८॥

आगमने पर्दगदभयुक्तः पुत्रकलत्रसुखेन विमुक्तः।
भानुसुते भ्रमते भुवि नित्यं दीनमना विजनाश्रयभावम्॥ १२९॥

आगमन अवस्था में हो तो स्थान का भय, रोग भय, पुत्र, स्त्री के सुख से रहित, दीन स्थिति में निरंतर घूमने वाला होता है॥ १२९॥

रत्नावलीकांचनमौक्तिकानां व्रातेन नित्यंव्रजति प्रमोदम्।
सभागते भानुसुते नितांतं नयेन पूर्णो मनुजो महौजाः॥ १३०॥

सभा अवस्था में हो तो रत्न, सुवर्ण, मुक्ता के समूह से नित्य आनंदित, नीतियुक्त, महातेजस्वी होता है॥ १३०॥

आगमे गदसमागमो नृणामब्जबंधुतनये यदा तदा।
मंदमेव गमनं धरापतेर्याचनाविरहिता मतिः सदा॥ १३१॥

आगमन अवस्था में हो तो रोगयुक्त, मंदगति और राजा से लाभ पाने की बुद्धि से हीन होता है॥ १३१॥

सङ्गते जनुषि भानुनंदनेभोजनं भवतिभोजनं रसैः।
संयुतं नयनमन्दताननना मोहतापपरितापिता मतिः॥ १३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भोजन अवस्था में हो तो सरस भोजन का लाभ, नेत्रज्योति मन्द और माया-मोह से मन्द बुद्धि वाला होता है॥ १३२॥

नृत्यलिप्सागते मन्दे धर्मात्मा वित्तपूरितः।
राजपूज्यो नरो धीरो महावीरो रणाङ्गणे॥ १३३॥

नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो धर्मात्मा, धन से पूर्ण, राजा से पूज्य, धीर और महावीर होता है॥ १३३॥

भवति कौतुकभावमुपागते रविसुते वसुधावसुपूरितः।
अतिसुखी सुमुखी सुखपूरितः कवितयामलया कलया नरः॥१३४॥
निद्रागते वासरनाथपुत्रे धनी सदा चारुगुणैरुपेतः।
पराक्रमी चंडविपक्षहंता सुवारकान्तारतिरीतिविज्ञः॥१३५॥

कौतुक अवस्था में हो तो भूमि, धन से पूर्ण, अत्यन्त सुखी, स्त्री सुख से पूर्ण और कविता करने वाला होता है॥ १३४॥ निद्रा अवस्था में हो तो धनी, सुन्दर गुणों से युक्त, पराक्रमी, दुष्टों का नाश करने वाला और वेश्यागामी होता है॥ १३५॥

अथ राहोरवस्थाफलम्-

यदागमो जन्मनि यस्य राहौ क्लेशाधिकत्वं शयनं प्रयाते।
वृषेऽथ युग्मेऽपि च कन्यका मजे समाजो धनधान्यराशेः॥१३६॥
उपवेशनमिह गतवति राहौ दद्रुगदेन जनः परितप्त।
राजसमाजयुतो बहुमानी वित्तसुखेन सदा रहितः स्यात्॥१३७॥

यदि राहु जन्म समय में शयन अवस्था में हो तो जातक अधिक क्लेश से युक्त होता है। किन्तु वृष, मिथुन, कन्या या मेष में शयन अवस्था में हो तो धनधान्य से पूर्ण होता है॥ १३६॥ उपवेशन अवस्था में हो तो दाद से पीड़ित, राजा से सम्मानित, अभिमानी, धनसुख से हीन होता है॥ १३७॥

नेत्रपाणावगौ नेत्रे भवतो रोगपीडिते।
दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः॥ १३८॥

नेत्रपाणि अवस्था में हो तो नेत्र रोग से पीड़ित, दुष्ट सर्प, शत्रु और चोर के भय से मुक्त और धन की हानि होती है॥ १३८॥

प्रकाशने शुभासने स्थितिः कृतिः शुभा नृणां
धनोन्नतिर्गुणोन्नतिः सदा विदामगाविह।
धराधिपाधिकारिता यशोलता तता भवे
न्नवीननीरदाकृतिर्विदेशतो महोन्नतिः॥ १३९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकाश अवस्था में हो तो सुन्दर स्थान, सुन्दर यश, धन और गुण की उन्नति, राजा से अधिकार की प्राप्ति, नूतन मेघ के समान आकृति और विदेश में उन्नति पाने वाला होता है॥ १३९॥

गमने च यदा राहु बहुसंतानवान्नरः।
पंडितो धनवान्दाता राजपूज्यो नरो भवेत्॥ १४०॥
राहावागमने क्रोधी सदा धीधनवर्जितः।
कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा॥ १४१॥

गमन अवस्था में राहु हो तो बहुत संतान वाला, पंडित, धनी, दाता, राजा से पूज्य होता है॥ १४०॥ आगमन अवस्था में हो तो क्रोधी, बुद्धि तथा धन से हीन, कुटिल, कृपण, कामी होता है॥ १४१॥

सभागतो यदा राहुः पंडितः कृपणो नरः।
नानागुणपरिक्रांतो वित्तसौख्यसमन्वितः॥ १४२॥

सभा अवस्था में राहु हो तो पंडित और कृपण, अनेक गुणों से युक्त, धन सुख से युक्त होता है॥ १४२॥

चेदगावागमं यस्य याते तदा व्याकुलत्वं सदारातिभीत्या भयम्।
महद्बंधुवादो जनानां निपातो भवेद्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वम्। १४३।

आगमन अवस्था में हो तो हमेशा शत्रु भय से भयभीत और व्याकुल, बंधुओं से बड़ा विवाद और पतन, धन की हानि, मूर्खता और कृशता होती है॥ १४३॥

भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत्।
मन्दबुद्धिः क्रियाभीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः॥ १४४॥
नृत्यलिप्सागते राहौ महाव्याधिविवर्धनम्।
नेत्ररोगी रिपोर्भीतिर्धनधर्मक्षयो नृणाम्॥ १४५॥

भोजन अवस्थामें हो तो भोजनके बिना विकल, मन्दबुद्धि, कार्यमें आलसी, स्त्री-पुत्र के सुख से रहित होता है॥ १४४॥ नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो महाव्याधि का भय, नेत्रमें रोग, शत्रुभय, धन-धर्म का नाश होता है॥१४५॥

कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत्।
परदाररतां नित्यं परवित्तापहारकः॥ १४६॥
निद्रावस्थां गते राहौ गुणग्रामयुतो नरः।
कान्तासन्तानवान् धीरो गर्वितो बहुवित्तवान्॥ १४७॥

कौतुकावस्था में हो तो स्थानहीन, परस्त्रीगामी और परधनहरण

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

करनेवाला होता है॥ १४६॥ निद्रावस्था में हो तो गुण समूह से युक्त, स्त्री-सन्तान से युक्त, धीर, गर्वीला और अधिक धनी होता है॥ १४७॥

अथ केतोरवस्थाफलम्-

मेषे वृषेऽथ युग्मे वा कन्यायां शयनं गते।
केतौ धनसमृद्धिः स्यादन्यभे रोगवर्धनम्॥ १४८॥
उपवेशं गते केतौ दद्रुरोगविवर्धनम्।
अरिवातनृपव्यालचौरशंका समंततः॥ १४९॥

केतु शयनावस्था में मेष, वृष, मिथुन वा कन्या राशि में हो तो जातक धनी होता है, अन्य राशि में हो तो रोग की वृद्धि होती है॥ १४८॥ उपवेशनावस्था में हो तो दाद रोग की वृद्धि, शत्रु, वायु, राजा, सर्प, चोर का भय होता है॥ १४९॥

नेत्रपाणिं गते केतौ नेत्ररोगः प्रजायते।
दुष्टसर्पादिभीतिश्च रिपुराजकुलादपि॥ १५०॥
केतौ प्रकाशने संज्ञे धनवान् धार्मिकः सदा।
नित्यं प्रवासी चोत्साही सात्त्विको राजसेवकः॥ १५१॥

नेत्रपाणि अवस्था में हो तो नेत्र रोग, दुष्ट सर्प आदि का भय, शत्रु तथा राजकुल से भी भय होता है॥१५०॥ प्रकाश अवस्था में हो तो धनी, धार्मिक, नित्य परदेशी, उत्साही, सात्त्विक और राजसेवक होता है॥१५१॥

गमनेच्छायां भवेत्केतुर्बहुपुत्रो महाधनः।
पंडितो गुणवान्दाता जायते च नरोत्तमः॥ १५२॥
आगमे च यदा केतुर्नानारोगो धनक्षयः।
दंतघाती महारोगी पिशुनः परनिंदकः॥ १५३॥

गमन अवस्था में हो तो महाधनी, पंडित, गुणी और दाता होता है॥ १५२॥ आगमन अवस्था में हो तो अनेक रोग होता है, धन का नाश, दंतरोग, महारोग, कृपण, दूसरे की निंदा करने वाला होता है॥१५३॥

सभावस्थां गते केतौ वाचालो बहुगर्वितः।
कृपणो लम्पटश्चैव धूर्तविद्याविशारदः॥ १५४॥
यदागमे भवेत्केतुः केतुः स्यात्पापकर्मणाम्।
बन्धुवादरतो दुष्टो रिपुरोगप्रपीडितः॥ १५५॥

सभावस्था में हो तो वाचाल, गर्वीला, कृपण, लम्पट और धूर्त्त विद्या का पंडित होता है॥ १५४॥ आगम अवस्था में केतु हो तो पापकर्म

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

करनेवालों में श्रेष्ठ, बंधुओं से विवादरत, दुष्ट और शत्रु तथा रोग से पीड़ित होता है॥ १५५॥

भोजने तु जनो नित्यं क्षुधया परिपीडितः।
दरिद्रो रोगसंतप्तः केतौ भ्रमति मेदिनीम्॥ १५६॥
नृत्यलिप्सागते केतौ व्याधिना विकलो भवेत्।
बुद्बुदाक्षो दुराधर्षो धूर्तोऽनर्थकरो नरः॥ १५७॥

भोजन अवस्था में हो तो भूख से पीड़ित, दरिद्र, रोग से संतप्त होकर घूमता है। १५६। नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो व्याधि से विकल, चकाचौंध नेत्रवाला, किसीके वशमें न होनेवाला, धूर्त्त और अनर्थकारी होताहै। १५७।

कौतुकी कौतुके केतौ नटवामारतिप्रियः।
स्थानभ्रष्टो दुराचारी दरिद्रो भ्रमते महीम्॥ १५८॥
निद्रावस्थां गते केतौ धनधान्यसुखं महत्।
नानागुणविनोदेन कालो गच्छति जन्मिनाम्॥ १५९॥

कौतुक अवस्था में हो तो वेश्या आदि से प्रेम करने वाला, स्थान-भ्रष्ट, दुराचारी और दरिद्र होता है॥ १५८॥ निद्रा अवस्था में हो तो धनधान्य का बड़ा सुख होता है, अनेक गुणों की चर्चा में समय व्यतीत करने वाला होता है॥ १५९॥

अथ ग्रहावस्थानुसारेण भावफलम्-

शयने येषु भावेषु यस्य तिष्ठन्ति सद्ग्रहाः।
नित्यं तस्य शुभज्ञानं निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ १६०॥
भोजने येषु भावेषु पापास्तिष्ठन्ति सर्वथा।
तदा सर्वविनाशोऽपि नात्र कार्या विचारणा॥ १६१॥

जन्म समय शयन अवस्था में स्थित शुभ ग्रह जिन-जिन भावों में होता है तो उन उन भावों के फलों को शुभकारक होता है॥ १६०॥ एवं भोजन अवस्था में गया हुआ पापग्रह जिन भावों में होता है, उनके फलों का नाश करता है॥ १६१॥

निद्रायां च यदा पापो जायास्थाने शुभं वदेत्।
यदि पापग्रहैर्दृष्टो न शुभं च कदाचन॥ १६२॥
सुतस्थाने स्थितः पापो निद्रायां शयनेऽपि वा।
तदा शुभं भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा॥ १६३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि निद्रा अवस्था में पापग्रह सातवें भाव में हो तो शुभफल, यदि पापग्रह से दृष्ट हो तो अशुभ फल करता है॥ १६२॥ पाँचवें भाव में निद्रा या शयन अवस्था में पापग्रह हो तो शुभद नहीं होता है॥ १६३॥

मृत्युस्थानस्थितः पापो निद्रायां शयनेऽपि वा।
तदा तस्यापमृत्युः स्याद्राजतः परतस्तथा॥ १६४॥
शुभग्रहैर्यदा युक्तः शुभैर्वा यदि वीक्षितः।
तदा च मरणं तस्य गंगायां च विशेषतः॥ १६५॥

आठवें स्थान में पापग्रह निद्रा या शयन अवस्था में हो तो उसकी अपमृत्यु राजा के द्वारा या शत्रु के द्वारा होती है॥ १६४॥ यदि पापग्रह शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो गङ्गा नदी में मृत्यु होती है॥ १६५॥

कर्मस्थाने यदा पापः शयने भोजनेऽपि वा।
तदा कर्मविपाकः स्यान्नानादुःख प्रदायकः॥ १६६॥
दशमस्थो निशानाथो कौतुके च प्रकाशने।
तदैव राजयोगः स्यान्निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ १६७॥
बलाबलविचारेण ज्ञायते च शुभाशुभम्।
एवं क्रमेण बोद्धव्यं सर्वभावेषु बुद्धिमान्॥ १६८॥

कर्मभाव में पापग्रह शयन या भोजन अवस्था में हो तो कर्म से अनेक दुःख होते हैं॥ १६६॥ दशम स्थान में चन्द्रमा कौतुक या प्रकाशन अवस्था में हो तो राजयोग होता है॥ १६७॥ ग्रहों के बल और निर्बलता को देखकर शुभ-अशुभ फलों को बुद्धिमान् को जानना चाहिये॥ १६८॥

इति ग्रहाणामवस्थाध्यायः।

अथ आयुर्दायाध्यायः

मैत्रेय उवाच-

दरिद्रधनयोगौ च कथितौ प्राङ्महामुने!
नराणामायुषो ज्ञानं कथं जातं महामुने॥ १॥

मैत्रेय ने कहा- हे मुने! आपने दरिद्र और धन योग को कहा, हे महामुने! मनुष्यों के आयु का ज्ञान कैसे होता है, इसे कहिये॥ १॥

पराशर उवाच-

साधु पृष्टं त्वया विप्र! नराणां हितकाम्यया।
आयुर्ज्ञानं प्रवक्ष्यामि दुर्लभं यत् सुरैरपि॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पराशरजी ने कहा – हे विप्र! मनुष्यों के हित की कामना से तुमने बड़ा ही उत्तम प्रश्न किया है। अब मैं आयुष्य ज्ञान को कहता हूँ जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है॥ २॥

अंशायुस्साधनम्-

समाहता भांशकलाविलिप्ता गजाभ्रचन्द्रैर्ग्रहपर्ययेभ्यः।
विकर्त्तनैः संविहृतावशेषेऽब्दमासाद्यस्त्रादिकमायुरेवम् ॥ ३॥
होरादायोष्येवमत्राधिवीर्यलग्नं चेद्राशितुल्यैस्तथाब्दकैः।
युक्तं शेषं भागपूर्वद्विनिघ्नं वाणैर्भक्तं मासपूर्वैर्युतं तत् ॥ ४॥

ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला को १०८ से गुणा कर १२ से भाग देने से शेष वर्ष मास दिन घटी आदि ग्रह की आयु होती है॥ ३॥ इसी प्रकार लग्न की भी आयु होती है, किन्तु लग्न अधिक बली हो तो लग्न राशि के तुल्य वर्ष और शेष अंशादि को २ से गुणाकर ५ से भाग देने से मास आदिं की आयु होती है॥ ४॥

अंशायुषि साधने विशेषः-

नीचेऽस्तगेऽर्द्धमरिभे त्रिलवं हरंति नास्तंगतौ शनिसितौ व्ययतोऽत्र वामम्।
सर्वार्धकत्रिकचतुर्थशरर्तुभागान्हरंत्यशुभदाः शुभदास्तदर्धम्।५।

यदि ग्रह अपनी नीचराशि में हो या अस्त हो तो आयु का आधा, शत्रु की राशि में हो तो आयु का तीसरा भाग कम आयु देता है। किन्तु शनि-शुक्र अस्त होते हुये भी आधी हानि नहीं करते हैं। बारहवें भाव से विलोम सम्पूर्ण, आधा, तृतीयांश, चतुर्थांश, पंचमांश और षष्ठांश पापग्रह अपनी आयु की हानि करते हैं और शुभग्रह इन्हीं भावों में आधी हानि करते हैं। अर्थात् १२वें भाव में पाप ग्रह हो तो अपने संपूर्ण आयु का नाश, ग्यारहें भाव में हो तो आधा इत्यादि॥ ५॥

एकस्थानस्थिताश्चेत्युर्द्वात्रयो गगनेचराः।
तदा बलयुतः खेटो हरत्येकेन चापरे ॥ ६॥

एक ही स्थान में दो-तीन ग्रह बैठे हों तो उनमें जो बलवान् हो उसी के आयु का अपहरण होता है॥ ६॥

वर्गोत्तमस्वर्क्षनवांशदृक्के द्विसंगुणं तत्सकलं विधेयम्।
वक्रोच्चयोस्तत्त्रिगुणं विधेयं द्वित्रिगुणत्वे त्रिगुणं सकृच्च॥ ७॥

जो ग्रह वर्गोत्तम नवांश, अपनी राशि या नवांश या द्रेष्काण में हो उसके संपूर्ण आयु को दूना कर देना चाहिये। जो वक्री हो या अपने उच्चराशि में

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हो तो उसकी आयु को तिगुना कर देना चाहिये। एक ही ग्रह की आयु द्विगुणित और त्रिगुणित करनी हो तो केवल त्रिगुणित ही करना चाहिये॥७॥

अंशायुसाधन का उदाहरण

पृ. ३८ में दिये हुये स्पष्ट ग्रह चक्र और जन्माङ्ग को देखना चाहिये। सूर्य ३।१८।२६।३४ है।

३	१८	२६	३४×१०८
३२४	८६४	६४८	४३२
४	१०८	२१६	३२४
३२८	१६४४	२८०८	३६७२ ÷ ६०
६६	४७	६१	
३२ ÷ १२	३६० ÷१२	१६६१ ÷ ३०	२८६६ ÷ ६०
८ शेष	६ शेष	११ शेष	४६ शेष	१२ शेष

= ८।६।११।४६।१२ सूर्यायुर्दायवर्षादि।

इसी प्रकार से लग्न सहित सभी ग्रहों के अंशायु का साधन करना चाहिये।

असंस्कृतांशायुचक्रम्

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	ग्रहायु
८	०	०	१	३	७	३	६	वर्ष
६	६	६	७	१०	६	३	१	मास
११	१	३	११	७	५	१६	२६	दिन
४६	२४	५०	२२	३७	३३	५७	७	घटी
१२	३६	२४	१२	१२	०	३६	४८	पल

विशेष संस्कार

सूर्य सातवें भाव में है, अतः सूर्यायुर्वर्षादि = ८।६।११।४६।१२÷६ = १।५।१।५८।१२ लब्धि वर्षादि हुई है। इस लब्धि को सूर्यायु = ८।६।११।४६।१२ में

लब्धि – १।५।१।५८।१२ को घटाया तो

= स्पष्टसूर्यायुवर्षादि ७।१।६।५१।० हुये।

चन्द्र में हानि-वृद्धि के कोई योग न होने के कारण स्पष्ट चन्द्रायुर्वर्षादि ०।६।१।२४।३६ हुये।

भौम अपने नवमांश (मेष) में होने के कारण भौमायु ०।६।३।५०। २४ x २ = ०।१८।७।४०।४८ भौम का स्पष्टायुर्वर्षादि हुआ।

बुध में हानि-वृद्धि के कोई योग न होने से स्पष्ट बुधायुर्वर्षादि = १।७।११। २२।१२। हुये।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरु आठवें भाव में है अतः आधा भाग कम होना चाहिये अतः गुरु की आयु वर्षादि ३।१०।७।३७।१२÷२=१।११।३।४८।३६ लब्धि गुरु आयुर्वर्षादि ३।१०।७।३७।१२ में

लब्धि १।११।३।४८।३६ घटाया तो

शेष १।११।३।४८।३६ वर्षादि हुये।

गुरु अपने द्रेष्काण का है अतः हानिकृत गुरु आयुर्वर्षादि १।११।३।४८।३६ x २=२।२२।७।३७।१२ स्पष्ट गुरु की आयु हुई।

शुक्र में कोई हानि-वृद्धि के योग न होने से स्पष्ट शुक्रायुर्वर्षादि ७।६।५।३३।० हुये।

शनि शत्रु राशि में है अतः शनि के आयु वर्षादि ३।६।१५।५७।३६÷३ लब्धि १।२।५।१९।१२ को घटाना चाहिये। अतः शनि का आयुवर्षादि ३।६।१५।५७।३६ में

लब्धि १।२।५।१९।१२ को घटाया तो

स्पष्ट शन्यायु २।४।१०।३८।२४ वर्षादि हुये।

लग्नायु को त्रैराशि द्वारा लाना चाहिये जिसके लिये नीचे दी हुई तालिका से काम लेना चाहिये।

		अर्थात्
१ राशि वा ३० अंश	= १ वर्ष = १२ मास	१ राशि = १२ मास
∴ १ मास	= $\frac{३०}{१२}$ = २$\frac{१}{२}$ अंश	१ अंश = १२ दिन
∴ १ अंश	= १२ दिन = ६० कला	१ कला = १२ घटी
∴ १ दिन	= ५ कला = ६० घटी	१ विकला = १२ पल
∴ १ कला	= १२ घटी = ६० विकला	
∴ १ घटी	= ५ विकला = ६० पल	
∴ १ विकला	= १२ पल	

तात्पर्य यह हुआ कि अंश को २ से गुणाकर ५ से भाग देने से लब्धि मास शेष को ६ से गुणा कर देने से दिन होता है। एवं कला को २ से गुणा कर १० से भाग देने से लब्धि दिन, शेष को ६ से गुणा कर देने से घटी होता है। विकला को २ से गुणाकर १० से भाग देने से लब्धि घटी और शेष को ६ से गुणा करने से पल होता है।

लग्न राश्यादि ९।१५।३२।५१ बलवान् है, अतः राशितुल्य वर्ष ९ प्राप्त हुआ। शेष अंशादि १५।३२।५१ का त्रैराशिक द्वारा मासादि क़ा साधन-

अंश १५ x २ = ३० ÷ ५ = लब्धि ६ मास, शेष ० x ६ = ० दिन, कला ३२ x २ = ६४ ÷ १० = लब्धि ६ दिन, शेष ४ x ६ = २४ घटी, विकला ५१ x २ = १०२ ÷ १० = लब्धि १० घटी, शेष २ x ६ ÷ १२ पल।

राशितुल्य वर्षादि = ९।०।०।०।०

अंशोत्पन्न मासादि = ०।६।०।०।०

कलोत्पन्न दिनादि = ०।०।६।२४।०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विकलोत्पन्न घट्यादि = ०।०।६।१०।१२
योग फल = ६।६।६।३४।१२ में
पूर्वोक्तलग्नायुर्वर्षादि = ६।१।२६।६।३८ को जोड़ा तो
स्पष्ट लग्नायुर्वर्षादि = १५।८।५।४२।० हुये।

संस्कृतांशायुचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	ग्रहायु	योग
७	०	०	१	२	७	२	१६	वर्ष	४०
१	६	१८	७	२२	६	४	८	मास	४
६	१	७	१	७	६	१०	६	दिन	२६
५१	२४	४०	२२	३७	३३	३८	४२	घटी	४६
०	३६	४८	१२	२२	०	२४	०	पल	२२

अथ पिण्डायुस्साधनम्

१-तत्रादौ पिण्डायुषि वर्षाणि-

नन्देन्दवो पंच यमाः शरक्ष्मा भास्कराश्च पंचेन्दवः कुपक्षाः।
नखाश्च रव्यादि मुखग्रहाणां पिण्डायुषोऽब्दाः निजोच्चगानाम् ॥७॥

सूर्यादि ग्रह अपनी उच्चराशि में हों तो पिण्डायुसाधन में क्रम से १६, २५, १५, १२, १५, २१, २०सूर्यादि ग्रहों के वर्ष होते हैं॥ ७॥

निसर्गायुस्साधने वर्षादिः-

कृत्येकद्वयंकधृत्यश्च नखपंचाशदेव हि।
सूर्यादीनां क्रमादब्दाः स्वोच्चे नैसर्गिके द्विज ॥८॥

सूर्यादि ग्रह अपनी उच्चराशि में हों तो क्रम से २०, १, २, ६, १८ २०, ५० वर्ष नैसर्गिक आयु में होते हैं॥ ८॥

पिंड-निसर्गायुस्साधनम्-

स्वोच्चशुद्धो ग्रहः शोध्यः षड्भादूनो भमंडलात्।
षड्भाधिको यथास्थित एव लिप्तानिघ्नो निजाब्दैः ॥९॥
खाभ्ररसभूनेत्रैर्भक्ते प्राप्यते तु यत्फलम्।
वर्षमासादिनादिकं तद्धि पिण्डायुः स्फुटं भवेत्
एवं क्रिया निसर्गेऽपि हानिवृद्धिस्तु पूर्ववत् ॥१०॥

जिस ग्रह की पिण्डायु या निसर्गायु साधन करना हो उसके राश्यादि को उसके परमोच्च राश्यादि में घटाकर शेष ६ राशि से न्यून हो तो उसे १२ राशि में घटावे, यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो राश्यादि को कला बनाकर उसे ग्रहवर्षसंख्या (पिण्डायु साधन में पिण्डायु ग्रहवर्ष

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

निसर्गायुसाधन में नैसर्गिक ग्रहवर्ष) से गुणा कर॥ ९॥ २१६०० से भाग देने से लब्धि वर्ष, मास, दिनादि पिण्डायु या निसर्गायु होते हैं॥ १०॥

पिण्डायु साधन का उदाहरण-

सूर्योच्चांशराश्यादि = ०।१०।०।० में
सूर्य = ३।१८।२६।३४ को घटाया तो
उच्चांशान्तर ८।१२।३३।२६ हुआ

नोट- यह ६ राशि से अधिक है अतः १२ राशि में नही घटाया गया। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह का त्रक शुद्ध उच्चांशान्तरचक्र नीचे लिखा है।

ग्रहोच्चांशान्तर चक्रम्-

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
८	१०	११	१०	१०	९	११	राशि
२१	१०	५	२३	२२	२१	१८	अंश
३३	२९	२७	२२	९	९६	११	कला
२६	१३	५२	५९	६	५५	८	विकला

सूर्यपिण्डायुसाधनम्-

*उदाहरण-*परमोच्चांशान्तर ८।२१।३३।२६ पिण्डायु वर्ष १९

राशि ८ × १९ = मास १५२ ÷ १२ = वर्षादि १२।८
अंश २१ × १९ = दिन ३९९ ÷ ३० = मासादि १३।९
कला ३३ × १९ = घटी ६२७ ÷ ६० = दिनादि १०।२७
विकला २६ × १९ = पल ४९४ ÷ ६० = घट्यादि ८।१४
वर्षादि = १२।८।०।०।०
मासादि = ०।१३।९।०।०
दिनादि = ०।०।१०।२६।०
घट्यादि = ०।०।०।८।१४

सूर्यायुर्वर्षादि = १२।२१।१९।३५।१४ इस प्रकार प्रत्येक ग्रहों के पिंडायु एवं निसर्गायु साधन कर असंस्कृतपिण्डायुचक्र और असंस्कृतनिसर्गायु चक्र दिया जाता है।

असंस्कृत पिण्डायुचक्रम्-

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रहायु
१२	२०	१३	१०	१२	१७	१८	वर्ष
२१	१८	११	९	१७	०	१६	मास
१९	२२	२१	१०	२	१०	३	दिन
३५	१	५८	३५	१६	५५	४२	घटी
२४	२५	०	४८	३०	१५	४०	पल

असंस्कृत-निसर्गायुचक्रम्-

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रहायु
१३	०	१	८	१५	१५	४६	वर्ष
१८	१०	१०	१	१३	१४	१०	मास
११	१०	१०	०	११	१८	९	दिन
२६	२९	५५	२०	४२	५८	१६	घटी
०	१३	५४	५१	४८	२०	४०	पल

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विशेष- सूर्य सातवें भाव में है, अतः सूर्य का पिंडायु वर्षादि २१।२१।१६।३५।२४÷६=२।३।१८।१५।५४

लब्धि वर्षादि हुई। इस लब्धि को सूर्यायु-

१२।२१।१६।३५।२४ में

लब्धि २।३।१८।१५।५४ को घटाया तो

शेष स्पष्ट सूर्यायुर्वर्षादि १०।१८।१।१६।३० हुये।

चन्द्र में हानिवृद्धि के कोई लक्षण न होने से स्पष्ट चन्द्रायुर्वर्षादि २०।१८।२२।१०।२५ हुये।

भौम अपने नवांश में है, अतः भौमायु १३।११।२१।५८।० × २=२७।११।१३।५६।० भौमायु हुआ।

बुध में हानिवृद्धि के कोई योग न होने से बुधायुर्वर्षादि १०।६।१०।३५।४८ हुआ।

गुरु आठवें भाव में है, गुरु के आयु का आधा भाग घटाकर शेष को दूना करने से गुरु की आयु में से घटाकर शेष को दूना करने से गुरु की स्पष्टायु वर्षादि ६।८।१८।१५ हुई।

शुक्र में कोई हानिवृद्धि के योग न होने से शुक्रायुवर्षादि १७।०।१०। ५५।१५ हुई।

शनि शत्रुराशि में है, शनि के आयु का तृतीय भाग = १८।१६।३। ४२।४०÷३ =६।५।११।१४।१३ को शन्यायु में घटाने से शेष १२।१०।२२।२८।२७ शनि की स्पष्टायु हुई।

संस्कृतपिण्डायुचक्रम्-

सूर्य	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	योग	ग्रहायु
१०	२०	२७	१०	६	१७	१२	४	११२	वर्ष
१८	१८	११	६	८	०	१०	७	३	मास
१	२२	१३	१०	१८	१०	२२	२६	८	दिन
१६	१०	५६	३५	८	५५	२८	७	३३	घटी
३०	२५	०	४८	१५	१५	२७	४८	२८	पल

निसर्गायु में विशेष- सूर्य सातवें भाव में है, अतः नैसर्गिक सूर्यायु का छठा भाग घटाने से स्पष्ट सूर्यायु नैसर्गिक वर्षादि ६।७।१।६।१५ हुई।

चन्द्र में कोई हानिवृद्धि नहीं हुई।

भौम अपने नवांश में है, अतः भौम की आयु दूनी हुई

=२।२०।२१ ।५१।४८

बुध में कोई हानिवृद्ध नहीं हुई।

गुरु आठवें भाव में है, अतः गुरु की आयु का आधा भाग घटाना चाहिये

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

और अपने द्रेष्काण में है अतः दूना करना चाहिये, इसलिये गुरु की आयु ज्यों की त्यों रही।

शुक्र की आयु में कोई संस्कार नहीं है।

शनि शत्रु राशि में है, अतः शन्यायु का तीसरा भाग उसमें घटाने से शनि की आयु = ८।७।४।५८।५८ हुई।

संस्कृत-निसर्गायुचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	योग	ग्रहायु
६	०	२	८	१५	१५	८	४	६७	वर्ष
७	१०	२०	१	१३	१४	७	७	११	मास
३२	१०	२१	०	११	१८	४	२६	१०	दिन
२८	२६	५५	२०	४३	५८	५८	७	३	घटी
१५	१३	४८	५१	४८	२०	५८	४८	१	पल

अत्र लग्नायुस्साधनम्-

राशीन् विहाय लग्नस्य लिप्तीकृत्य तथा द्विज।
शतद्वयेन भक्ते च फलं वर्षादिकं च यत्
सबले लग्ने फलं त्वत्र पूर्वोक्तं नैवमत्र हि ॥११॥

यहाँ बलवान् लग्न हो तो लग्न की राशि को त्याग कर अंशादि को कला बनाकर दो सौ से भाग देने से वर्षादि फल होता है, यही लग्न की आयु यहाँ होती है॥११॥

विशेषः-

क्रूरे लग्नस्थिते विद्वन् लग्नस्यांशसंख्यया।
निघ्नं क्रूरग्रहस्यायुः भक्ताष्टोत्तरशतेन च
लब्धं वर्षादिकं शोध्यं ग्रहस्यायुः स्फुटो भवेत् ॥१२॥

यदि लग्न में क्रूरग्रह हो तो लग्न के नवमांश संख्या से उस ग्रह की आयु को गुणाकर १०८ से भाग देने से लब्ध वर्षादि को उस ग्रह की आयु में घटाने से शेष ग्रह की स्पष्टायु होती है॥१२॥

उदाहरण- जन्मलग्न राश्यादि ६।१५।३२।५१है, राशि का त्याग कर अंशादि १५।३२।५१ का विकला बनाया तो अंश १५×६०+३२=६३२ कला हुई। ६३२×६०+५१=५५६७१ विकला हुई इसमें १२००० से भाग देने से लब्धि ४ (वर्ष) शेष ७६७१ × १२=६५६५२÷१२०००= लब्धि ७ मास, शेष ११६१२ × ३०=४३४६५६÷१२०००=लब्धि १२६ दिन, शेष १४६०× ६०= ६३६००÷१२०००= लब्धि ७ घटी, शेष ६६०० × ६०=५७६०००÷ १२००० लब्धि ४८ पल लग्नायु प्राप्त हुई।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आयुग्रहणे विशेषः-

अंशायुः सबले लग्ने सूर्ये ग्राह्यं तु पैण्डकम् ।
चन्द्रे नैसर्गिकं ग्राह्यं बलसाम्ये द्वयोस्तथा ॥ १३ ॥
योगार्धमायुस्तत्र स्यादिति प्राज्ञैः विनिश्चितम् ।
त्रयोऽप्येते बलाढ्यश्चेत्सर्वेषां योगत्र्यंशकः ।
आयुः ग्राह्यं तु सर्वेषामिति प्रोक्तं पुरातनैः ॥ १४ ॥

यदि लग्न बली हो तो अंशायु ही मुख्य आयु होती है, सूर्य बली हो तो पिण्डायु और चन्द्रमा बली हो तो निसर्गायु प्रधान आयु होती है॥ १३ ॥ इनमें दो समान बली हों तो दोनों की आयु का योगार्ध मुख्य आयु होती है, यदि तीनों समान बली हों तो तीनों के आयु योग का तृतीयांश स्पष्टायु होती है॥ १४ ॥

अथ नानाजातीयमायुः-

गृध्रोलूकशुकध्वांक्षसर्पाणां च सहस्रकम् ।
श्येनवानरभल्लूकमण्डूकानां शतत्रयम् ॥ १५ ॥
पञ्चाशदुत्तरशतं राक्षसानां प्रकीर्त्तितम् ।
नराणां कुञ्जराणां च विंशोत्तरशतं विदुः ॥ १६ ॥

गिद्ध-उल्लू-शुक-कौआ और सर्पों की एक हजार वर्ष की आयु होती है। बटेर-वानर-भालू-मेढक की तीन सौ वर्ष की आयु होती है॥ १५ ॥ राक्षसों की १५० वर्ष की आयु होती है। मनुष्य और हाथियों की १२० वर्ष की आयु होती है॥ १६ ॥

द्वात्रिंशदायुरश्वानां पञ्चविंशत् खरोष्ट्रयोः ।
वृषमाहिषयोश्चैव चतुर्विंशतिवत्सराः ॥ १७ ॥

घोड़ों की ३२ वर्ष की आयु होती है। गधा और ऊंट की २५ वर्ष की आयु होती है। बैल और भैंसा की आयु २४ वर्ष की होती है॥ १७ ॥

विंशत्यायुर्मयूराणां छागादीनां च षोडश ।
हंसस्य पञ्चनवकं पिकानां द्वादशाब्दकाः ॥ १८ ॥
तद्वत्पारावतानां च कुक्कुटस्याष्टवत्सराः ।
बुद्बुदानामण्डजानां सप्तसंख्याः समाः स्मृताः ॥ १९ ॥
अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि आयुर्दायगतिं तव ।
यस्य विज्ञानमात्रेण कालज्ञो भवति ध्रुवम् ॥ २० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मोर की २० वर्ष की आयु होती है। बकरा आदि की १६ वर्ष की आयु होती है। हंस की १४ वर्ष की आयु होती है, कोकिल और कबूतर की १२ वर्ष की आयु होती है॥ १८॥ मुर्गा की ८ वर्ष आयु होती है। बुलबुलों की ७ वर्ष की आयु होती है॥ १९॥ अन्य रीति से आयु जानने की रीति कह रहा हूँ, जिसके जान लेने से मनुष्य कालज्ञ हो जाता है॥ २०॥

लग्नेशाष्टमेशाभ्यां योगैकः कथितो द्विज।
द्वितीयं शनिचन्द्राभ्यां चिन्तनीयं सदा द्विज॥ २१॥
होरालग्नलग्नाभ्यां तृतीयं च विचिंतयेत्।
लग्नेन्दूमदने वापि चिंतयेल्लग्नचन्द्रतः॥ २२॥

प्रथम लग्नेश और अष्टमेश से १ योग। द्वितीय शनि और चन्द्रमा से॥ २१॥ तथा तीसरा होरा लग्न और जन्मलग्न से होता है। दूसरे योग में यदि चन्द्रमा जन्मलग्न या सातवें भाव में हो तो लग्न और चन्द्रमा से अन्यथा शनि और चन्द्रमा से जो आयु आवे उसे लेना चाहिये॥ २२॥

चरे चरे स्थिते द्वौ च लग्नरंध्राधिपौ यदि।
दीर्घायुर्योगो विज्ञेयो निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ २३॥
स्थिरर्क्षे लग्ननाथो हि लयेशे द्वंद्वभे स्थिते।
तदा दीर्घायुषो योगः संभवेद्गणिताग्रणीः॥ २४॥

यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि में हों॥२३॥ अथवा एक स्थिर और दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो दीर्घायु योग होता है॥२४॥

लग्नाधीशे स्थिते द्वंद्वे स्थिरे रंध्राधिपे स्थिते।
दीर्घायुर्योगो विज्ञेयो निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ २५॥
अथातः संप्रवक्ष्यामि मध्यायुर्योगमुत्तमम्।
चरे लग्नाधिपे विप्र स्थिरे रंध्रपतिर्यदि॥ २६॥

यदि लग्नेश और अष्टमेश में से एक चर राशि में दूसरा स्थिर राशि में हो तो मध्मायु योग होता है॥ २५॥ अथवा दोनों द्विस्वभाव राशि में हों तो भी मध्मायु योग होता है॥ २६॥

तदा मध्यायुषं विद्याद् द्वौ द्वंद्वे मध्यमायुषः।
अधुनाल्पायुर्योगं च तवाग्रे कथयाम्यहम्॥ २७॥
लग्नाधीश्वरे यस्य द्वंद्वभे रंध्रनायके।
तस्याल्पायुर्महाप्राज्ञ निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ २८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नेश और अष्टमेश दोनों में एक चर राशि में दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो अल्पायु योग होता है॥ २७॥ अथवा लग्नेश और अष्टमेश दोनों स्थिर राशि में ही हों तो भी अल्पायु योग होता है॥ २८॥

स्थिरे स्थिरे स्थितौ द्वौ चेल्लग्नरंध्राधिपौ द्विज।
अल्पायुस्तत्र विज्ञेयं सृष्टिकर्त्रा प्रणोदितम्॥ २९॥
एकरूपत्वयोगौ द्वौ तृतीयो भिन्नरूपकः।
द्वयोर्योगेन संग्राह्यं न ग्राह्यं चैकरूपतः॥ ३०॥

इसी प्रकार शनि, चन्द्रमा या लग्न-चन्द्रमा तथा होरालग्न और जन्मलग्न से भी आयु लाना चाहिये॥ २९॥ यदि तीनों प्रकार में दो प्रकार से एक आयु और तीसरे से भिन्नायु आती हो तो दो प्रकार से आई हुई आयु को ही लेना चाहिए॥ ३०॥

योगत्रयं त्रयंरूपं भिन्नं भिन्नं भवेद्द्विज।
होरालग्नविलग्नाभ्यां प्राप्तायुर्योगनिश्चितम्॥ ३१॥
अथाहं सम्प्रवक्ष्यामि आयुर्वर्षाणि भोद्विज।
यस्य ज्ञानं विना विद्वन् स्पष्टायुर्नोपलभ्यते॥ ३२॥

यदि तीनों प्रकारसे भिन्न-भिन्न आयु आती हो तो होरा लग्न और लग्न से जो आयु आए हों उसे ही लेना चाहिये।३१। हे द्विज! अब मैं आयु के वर्गों को कह रहा हूँ, जिसके ज्ञानके बिना आयुकी स्पष्टता नहीं होती है।३२।

रसाङ्कैर्गजाभ्रेन्दुभिः शून्यमासैस्त्रिधा दीर्घमायुः कलौ सम्प्रदिष्टम्।
चतुःषष्टिवाह्वद्र्यशीतिप्रमाणैर्मतं मध्यमायुर्नृणां वत्सरैः स्यात्।३३।

९०, १०८, १२० वर्ष ये तीन प्रकार की दीर्घायु कलियुग में होती है। ६४।७२।८० वर्ष की मध्यमायु होती है॥ ३३॥

तथा द्वित्रिषड्वह्नि - शून्याब्धिवर्षै -
र्भवेदल्पमायुर्नराणां युगान्ते॥ ३४॥
योगत्रयेण दीर्घायुस्तदा ग्राह्यं खवेदकम्।
योगद्वयेन संप्राप्ते ग्राह्यं षट्त्रिंशताब्दकम्॥ ३५॥

३२,३६,४० वर्ष की अल्पायु का प्रमाण कहा है।३४। यदि ३ प्रकार से दीर्घायु आए तो ४०वर्ष का खंड और दो प्रकार से दीघार्यु हो तो ३६ वर्ष का।३५।

योगैकेन सदा ग्राह्यं द्वात्रिंशन्मिताब्दकम्।
एवमल्पायुयोगे तु प्रोक्ताच्च विपरीतकम्॥ ३६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तथा लग्नेशाष्टमेशाभ्यां मध्यमायुः समागते ।
ग्राह्यं चत्वारिंशन्मितं वर्षं च द्विजसत्तम ॥ ३७॥

और एक प्रकार से दीर्घायु हो तो ३२ वर्ष का खंड लेना चाहिये। इसी प्रकार अल्पायु योग में इसके विपरीत यानि ३ प्रकार से अल्पायु हो तो ३२ वर्ष, दो प्रकार से अल्पायु हो तो ३६ और एक प्रकार से अल्पायु हो तो ४० वर्ष का खंड स्पष्टायु साधन में लेना चाहिये॥ ३६॥ इसी प्रकार लग्नेश अष्टमेश से मध्यमायु हो तो ४० वर्ष॥ ३७॥

लग्नेन्दुना वा चन्द्रमन्दाभ्यां मध्यायुः समागते ।
खंडं ग्राह्यं तदा विद्वन् षट्त्रिंशन्मिताब्दकम् ॥ ३८॥
होरालग्नलग्नाभ्यां मध्यमायुः समागते ।
ग्राह्यं तत्र सदा विप्र द्वात्रिंशन्मिताब्दकम् ॥ ३९॥

लग्नचन्द्र वा शनिचन्द्र से मध्यमायु हो तो ३६ वर्ष॥ ३८॥ और होरा लग्न जन्मलग्न से मध्यमायु हो तो ३२ वर्ष का खंड लेना चाहिये॥ ३९॥

अथायुर्बोधकचक्रम्-

दीर्घायुः चरे लग्नेश चरेऽष्टमेशः	दीर्घायुः स्थिरे लग्नेशः द्विस्वभावेऽष्टमेशः	दीर्घायुः द्विस्वभावे लग्नेशः स्थिरेष्टमेशः
मध्यायुः चरे लग्नेशः स्थिरेऽष्टमेशः	मध्यायुः स्थिरे लग्नेशः चरेऽष्टमेशः	मध्यायुः द्विस्वभावे लग्नेशः द्विस्वभावेऽष्टमेशः
हीनायुः चरे लग्नेशः द्विस्वभावेऽष्टमेशः	हीनायुः स्थिरे लग्नेशः स्थिरेऽष्टमेशः	हीनायुः द्विस्वभावे लग्नेशः चरेऽष्टमेशः

अथायुःखण्डबोधकचक्रम्-

आयुः	प्रकारत्रयेण	खण्डम्	वर्षम्
दीर्घायुः	प्रकारत्रयेण	१	१२०
	प्रकारद्वयेन	२	१०८
	प्रकारैकेन	३	९६
मध्यायुः	प्रकारत्रयेण	१	८०
	प्रकारद्वयेन	२	७२
	प्रकारैकेन	३	६४
अल्पायुः	प्रकारत्रयेण	१	४०
	प्रकारद्वयेन	२	३६
	प्रकारैकेन	३	३२

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ स्पष्टायुःसाधनप्रकारः-

योगकारकखेटानां राशीन्त्यक्त्वांशकस्य च ।
योगं कृत्वा भजेत्तत्र योगकारकसंख्यया ॥४०॥

योगकारक ग्रहों की राशियों को छोड़कर शेष अंशादिकों का योग करके योग कारक ग्रहों की संख्या (१,२,३ आदि) से भाग देवे॥ ४०॥

लब्धघ्नं प्राप्तखंडेन त्रिंशता तु विभाजितम् ।
लब्धं वर्षादिकं यच्च प्राप्तखंडे तु शोधयेत् ॥४१॥

भाग देने से लब्धि को आयु के अनुसार अल्पायु के प्राप्त खंड से गुणाकर, गुणनफल में ३० का भाग देने से लब्ध वर्षादि को दीर्घायु या मध्यायु के प्राप्त खंडों में घटाने से॥ ४१॥

शेषं वर्षादिकमत्र स्पष्टायुः परिकीर्त्तितम् ।
एवं स्पष्टक्रिया प्रोक्ता ब्रह्मणा शंकरादिभिः ॥४२॥

शेष वर्षादि स्पष्टायु होती है, ऐसा ब्रह्मा एवं शंकर जी द्वारा कहा गया है॥ ४२॥

उदाहरण- (पृ. ३८) के जन्माङ्गचक्र और (आयुर्बोधक चक्र पृ. २५१) के अनुसार-

लग्नेश शनि स्थिर	(८) में	} मध्यायु
अष्टमेश सूर्य चर	(४) में	
शनि स्थिर	(८) में	} दीर्घायु
चन्द्र द्विस्वभाव	(३) में	
होरा लग्न पृ. (४०) स्थिर	(२) में	} मध्यायु
जन्मलग्न चर	(१०) में	

पृ. २५० श्लो. ३३ के अनुसार दो प्रकार से मध्यायु, तथा आयुखण्ड बोधक चक्र (पृ. २५१) के अनुसार मध्यायु का दूसरा खण्ड (७२ वर्ष) प्राप्त हुआ।

लग्नेश शनि १।४८।५२
अष्टमेश सूर्य १८।२६।३४
होरा लग्न १५।०।०
जन्म लग्न १५।२३।३७

} योगकर्त्ता ४ हैं, अतः चारों के अंशादि का योग किया गया है।

५०।३८।३÷४ = १२।३९।३०।४५

अंशादि १२।३९।३०।४५ x ३६ (द्वितीय खण्ड पृ.२५१)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

३०)४५५।४२।२७।० (१५ वर्ष)
३०
१५५
१५०
५ × १२
६०
+ ४२
३०) १०२ (३ मास)
९०
१२ × ३०
३६०
+ २७
३०)३८७ (१२ दिन)
३०
८७
६०
२७ × ६०
३०)१६२० (५४ घटी)
१५०
१२०
१२०
x लब्धि वर्षादि = १५।३।१२।५४।०

मध्यायु द्वितीय खण्ड वर्षादि ७२।०।०।०।० में
लब्धि वर्षादि = १५।३।१२।५४।० घटाने से
स्पष्टायुर्वर्षादि = ५६।८।१७।६।०
शेष स्पष्टायु होती है, शेष स्पष्ट है।।४२।।

तत्र विशेषः-

अथ योगत्रये विप्र शनियोगं करोति चेत्।
एकएकादशह्रासः कक्ष्याह्रासस्त्वयं क्रमात् ॥४३॥
ततः फलविशेषार्थं गुणदोषौ वदाम्यहम्।
गुणैः प्रपूरितः सौरिः कक्ष्यावृद्धिं करोति च ॥४४॥

हे विप्र! तीनों प्रकार की आयु के योगों में यदि शनि योग करता हो तो क्रूर से कक्ष्या का ह्रास होता है॥४३॥ अतः उसके गुण-दोष को कह रहा हूँ। गुणों से युक्त शनि कक्ष्या वृद्धि को करता है॥४४॥

दोषयुक्ता भवेद्धानिस्ताभ्यां निर्णय उच्यते।
अत्यल्पायुर्भवेदल्पमल्पान्मध्यं प्रजायते ॥४५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मध्यमाज्ञायते दीर्घं कक्ष्यावृद्धेश्च लक्षणम् ।
एवं नीचारिगः सौरिः पापदृष्टिसमन्वितः ॥ ४६ ॥

यदि दोषयुक्त हो तो कक्ष्या की हानि करता है अर्थात् अत्यन्त अल्पायु हो तो मध्यायु ॥ ४५ ॥ मध्यायु हो तो दीर्घायु करता है। इसी प्रकार शनि अपनी नीच राशि, शत्रु की राशि में पापग्रह से दृष्ट और युत हो तो ॥ ४६ ॥

कक्ष्याह्रासकृतो विप्र त्रिभागेनायुहानिकृत् ।
दीर्घाद्भवति मध्यायुर्मध्यादल्पायुरेव च ॥ ४७ ॥
अल्पादत्यल्पकं याति बाल्ये निधनसंभवः ।
लग्नेशे वापि होरेशे केवलं शनिसंयुते ॥ ४८ ॥

कक्ष्या की हानि करता है। अर्थात् दीर्घायु हो तो मध्यायु, मध्यायु हो तो अल्पायु ॥ ४७ ॥ और अल्पायु हो तो अत्यल्पायु होता है तथा बाल्यकाल में ही मरण हो जाता है। लग्नेश वा होरेश केवल शनि से युत हो ॥ ४८ ॥

पापर्क्षे पापयुक्ते वा पापदृष्टिसमन्विते ।
कक्ष्याह्रासं न कुर्वीत विना नीचारिगे द्विज ॥ ४९ ॥
एवं तुंगादिरहितः कक्ष्यावृद्धिं न कारयेत् ।
शुभर्क्षे शुभसंयुक्ते शुभदृष्टौ च तुंगगे ॥ ५० ॥

पापग्रह की राशि में वा पापयुक्त हो, पाप ग्रह से देखा जाता हो, यदि नीच राशि या शत्रु की राशि में न हो तो कक्ष्या का ह्रास नहीं करता है ॥ ४९ ॥ इसी प्रकार उच्चादि से रहित हो तो कक्ष्या वृद्धि को नहीं करता है। यदि शनि शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से युक्त और शुभ ग्रह से दृष्ट होकर अपने उच्च में हो ॥ ५० ॥

पापयोगेन रहिते कक्ष्यावृद्धिकरः शनिः ।
एवं नीचादिदोषेण कक्ष्याह्रासः प्रजायते ॥ ५१ ॥
गुरुणा स्थानसंबंधेऽप्येवं वृद्धिर्भविष्यति ।
लग्ने वा सप्तमे वापि तुंगादिगुणसंयुते ॥ ५२ ॥

और पाप ग्रह के योग से रहित हो तो कक्ष्या की वृद्धि करता है। इसी प्रकार नीचादि दोष के कारण कक्ष्या का ह्रास होता है। । ५१ । । इसी प्रकार गुरु भी स्थान संबंध से आयु में वृद्धि करता है। यदि गुरु लग्न में वा सप्तम में उच्चादि गुणों से युक्त हो ॥ ५२ ॥

शुभर्क्षे शुभदृग्युक्ते कक्ष्यावृद्धिकरो गुरुः ।
जीवने संशयो यस्य अल्पायुर्वृद्धिकारकम् ॥ ५३ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अल्पायुषि च मध्यायुर्मध्यापे दीर्घमायुषि ।
एवं भेदानुभेदेन कथयामि तवाग्रतः ॥ ५४ ॥

शुभ राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट और युक्त हो तो कक्ष्या की वृद्धि करता है॥ ५३ ॥ अल्पायु हो तो मध्यायु, मध्यायु हो तो दीर्घायु को करता है, इस प्रकार भेदानुभेद से मैंने ह्रास-वृद्धि तुमसे कहा॥ ५४ ॥

अथ अमितायुर्योगः-

गुरुचन्द्रौ च कर्काङ्गे बुधशुक्रौ च केन्द्रगौ ।
शेषे लाभत्रिषष्ठस्थश्चेदमितायुस्तदा भवेत् ॥ ५५ ॥

जन्म लग्न कर्क हो, उसमें गुरु-चन्द्रमा हों, बुध-शुक्र केन्द्र में हो और शेष ग्रह ११।३।६ भाव में हो तो अमित आयु होती है॥ ५५ ॥

अथ मुनितुल्यायुर्योगः-

देवलोकांशके मन्दे भौमे पारावतांशके ।
गुरौ सिंहासने लग्ने जातो मुनिसमो भवेत् ॥ ५६ ॥

देवलोकांश में शनि हो, भौम पारावतांश में हो और गुरु सिंहासनांश में होकर लग्न में हो तो मुनि समान आयुवाला होता है॥ ५६ ॥

अथ युगान्तायुर्योगः-

गोपुरांशे गुरौ केन्द्रे शुक्रे पारावतांशके ।
त्रिकोणे कर्कटे लग्ने युगान्तं स तु जीवति ॥ ५७ ॥

गोपुरांश में होकर गुरु चन्द्र में हो, शुक्र पारावतांश में होकर त्रिकोण में हो और कर्क लग्न में जन्म हो तो युगान्त पर्यन्त आयु होती है॥ ५७॥

अथ पूर्णायुर्योगः-

चतुष्टये शुभैर्युक्ते लग्नेशे शुभसंयुते ।
गुरुणा दृष्टिसंयोगे पूर्णमायुस्तु जायते ॥ ५८ ॥
केन्द्रस्थिते च लग्नेशे गुरुशुक्रसमन्विते ।
ताभ्यां निरीक्षिते वापि पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ५९ ॥

यदि केन्द्र में शुभ ग्रह हो, लग्नेश शुभग्रह से युक्त हो और गुरु से देखा जाता हो तो दीर्घायु होता है॥ ५८ ॥ लग्नेश केन्द्र में हो और गुरु-शुक्र से युत वा दृष्ट हो तो पूर्णायु होती है॥ ५९ ॥

स्वोच्चस्थितैस्त्रिभिः खेटैर्लग्नरन्ध्रेशसंयुतैः ।
रंध्रे पापविहीने च दीर्घमायुः समादिशेत् ॥ ६० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लयस्थितैस्त्रिभिः खेटैः स्वोच्चमित्रस्ववर्गगैः ।
लग्नेशे बलसंयुक्ते पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ६१ ॥

कोई तीन ग्रह अपनी उच्च राशि में लग्नेश अष्टमेश से युत हों और अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो तो दीर्घायु होती है॥६०॥ अपने उच्च राशि वा मित्र की राशि में या अपने वर्ग में होकर तीन ग्रह और लग्नेश बली हो तो पूर्ण आयु होती है॥ ६१॥

स्वोच्चस्थितेन केनापि खेचरेण समन्वितः ।
रंध्रनाथो शनिर्वापि पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ६२ ॥
त्रिषडायगताः पापाः शुभाः केन्द्रत्रिकोणगाः ।
लग्नेशो बलसंयुक्तः पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ६३ ॥

अपने उच्च में गये हुए किसी ग्रह में अष्टमेश या शनि युत हो तो पूर्ण आयु होती है॥ ६२॥ ३।६।११ भाव में पापग्रह हों और शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हों तथा लग्नेश बली हो तो पूर्ण आयु होती है॥ ६३॥

षट्सप्तरंध्रभावेषु संयुक्तेषु शुभेषु च ।
त्रिषडायेषु पापेषु पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ ६४ ॥
अथायुर्बाधकं विप्र कथयामि तवाग्रतः ।
दीर्घायुर्योगं संप्राप्य प्रकारशकलेष्वपि ॥ ६५ ॥

६।७।८ भाव में शुभ ग्रह हों और ३।६।११ भाव में पापग्रह हों तो पूर्ण आयु होती है॥ ६४॥ आयु के बाधक योगों को कह रहा हूँ॥ ६५॥

अथ निधनसमयज्ञानम्-

किं दशायां च निधनमिति ज्ञातुमपेक्षया ।
निर्णयं तस्य कुर्वीत तवाग्रे कथयाम्यहम् ॥ ६६ ॥
दीर्घे द्विसप्ततिवर्षे तदूर्ध्वं चिंतयेन्मृतिम् ।
षट्त्रिंशदकादूर्ध्वं च चिंतयेन्मध्यमायुषि ॥ ६७ ॥

तीनों प्रकार से दीर्घायु योग के प्राप्त होने पर किस दशा में मृत्यु होती है, इसके ज्ञान के लिये मैं निर्णय कह रहा हूँ॥ ६६॥ दीर्घायु योग में ७२ वर्ष के बाद और मध्यायु योग में ३६ वर्ष के बाद मृत्यु का विचार करना चाहिये॥ ६७॥

अथ स्पष्टं प्रवक्ष्यामि मलिने द्वारबाह्ययोः ।
नवांशे निधनं तस्य त्रिशूलिभाषितं पुरा ॥ ६८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

द्वारद्वारेशयोर्विप्र मालिन्ये तन्नवांशके।
जातस्य हि भवेन्मृत्युः सत्यमेव न संशयः ॥६६॥

द्वार राशि और बाह्य राशि के पापाक्रांत होने से उसकी दशा में मृत्यु होती है॥ ६८॥ अथवा द्वार राशि वा द्वारेश के पापाक्रांत होने से उसकी दशा में मृत्यु होती है॥ ६९॥

पाकभोगद्वये विप्र चिन्तनीयं प्रयत्नतः।
स्वयं पापः पापदृष्टे पापखेटसमन्विते।
तन्नवांशदशाकाले निधनं च भवेद् ध्रुवम् ॥७०॥
अथवा योगायुर्दायसमाप्तिसमयेष्वपि।
प्रोक्ते मूलाश्रयीभूते चिंतनीयं द्विजोत्तम ॥७१॥

दोनों दशाओं में (दशा-अंतर्दशा) में अर्थात् द्वारेश स्वयं पापी हो अथवा पापग्रह से देखा जाता हो वा पापयुक्त हो तो उसकी दशा या अंतरदशा में मृत्यु होती है॥ ७०॥ अथवा योगज आयु की समाप्ति समय में मृत्यु काल के समीप की दशा में मृत्यु का विचार करना चाहिये॥ ७१॥

खंडे वा यदि पाकस्य बाह्यस्य मलिने यदि।
दशा न हि समाप्येत तत्त्रिकोणाब्दके मृतिः ॥७२॥

अथवा बाह्य राशि के मलिन होने के समय उसके खंड में यदि दशा न समाप्त हो तो उसके त्रिकोण राशि के वर्ष में मृत्यु होती है॥७२॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि मृत्युयोगापवादकम्।
शुभदृष्ट्या शुभयोगे शुभखेचरसंयुते ॥७३॥
न च द्वारे न बाह्ये च द्वारेशे चोपलक्षिते।
द्वारेशाश्रयनवांशभुक्तौ च निधनं भवेत् ॥७४॥

यदि द्वारबाह्य राशि वा उनके स्वामी शुभ ग्रह से युक्त वा शुभ दृष्टि से युक्त हों तो॥ ७३॥ उक्त द्वार-बाह्य राशि वा इनके स्वामियों की दशा के अंतर में मृत्यु नहीं होती है, किन्तु द्वारेश के आश्रयीभूत नवांश की दशा में मृत्यु होती है॥ ७४॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रकारं वै द्वितीयकम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण आयुर्दासूचको भवेत् ॥७५॥
कारकात्तत्सप्तमाद्विप्र अष्टमेशो तयोर्द्वयोः।
मध्ये चैको बली चिन्त्यःसोऽपि ह्यायुःप्रदो ग्रहः ॥७६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अब मैं आयु के निर्णय का दूसरा प्रकार कह रहा हूँ, जिसके ज्ञान मात्र से आयु के जानने वाला मनुष्य होता है॥ ७५॥ आत्मकारक और उससे सातवां भाव दोनों से जो अष्टमेश, दोनों अष्टमेशों में जो बली हो॥ ७६॥

केंद्रादित्रिकयोगेन दीर्घमध्याल्पतायुषि।
स विज्ञेया महाप्राज्ञ तवाग्रे प्रवदाम्यहम्॥ ७७॥
केन्द्रे स्थितेऽपि दीर्घायुर्मध्यायुः पणफरे स्थिते।
आपोक्लिमे स्थिते त्वल्पमायुर्भवति निश्चितम्॥ ७८॥

वह यदि केन्द्र में हो तो दीर्घायु, पणफर में हो तो मध्यायु और आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होता है॥ ७७॥ इसी प्रकार लग्न और उससे सप्तम भाव, दोनों से अष्टमेश, इन दोनों अष्टमेशों में जो बली हो वह यदि केन्द्र में हो तो दीर्घायु, पणफर में हो तो मध्यायु और आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होती है॥ ७८॥

लग्नात्तत्सप्तमाद्विप्र अष्टमेशो तयोर्द्वयोः।
ताभ्यां मध्ये बली चैकः स्थितः केन्द्रादिपूर्ववत्।
दीर्घमध्याल्पभेदेन आयुर्निश्चित्य पूर्ववत्॥ ७९॥
पूर्ववदद्वंद्वखंडस्य त्रैराशिकक्रमेण च।
आयुर्दायकृते स्पष्टं प्रवक्ष्यामि इदं वचः॥ ८०॥

हे विप्र! लग्न और सप्तम से जो अष्टमेश, दोनों में जो एक बली हो उसके केन्द्रादि में रहने से पूर्ववत् दीर्घ, मध्य, अल्पायु का निर्णय करना चाहिये॥ ७९॥ इस प्रकार दीर्घ आदि में आयु का निर्णय करके पूर्व कहे हुये आयु को स्पष्ट करके निर्णय इस प्रकार करना चाहिये॥ ८०॥

स्वस्मिन् समबले खेटेऽनधिके च बले द्विज।
न वीर्यतायां दीर्घादि विपरीतायुषि भवेत्॥ ८१॥
दीर्घमध्ये च वाल्पं च स्वल्पं वा किंचिदेव च।
विपरीतं योगभंगे सत्यमेव न संशयः॥ ८२॥

यदि आयु कर्त्ता ग्रह समान बल के अथवा अल्प बल के हों तो दीर्घादि विपरीत आयु होते हैं॥ ८१॥ दीर्घ, मध्य, अल्प वा उससे कुछ कम आयु होती है। इस प्रकार योग भंग होने से विपरीत आयु होती है॥ ८२॥

अथा ग्रेऽनेकभेदानामायुषो निर्णयः कृतः।
दीर्घादित्रयरूपेण इत्युक्तं ब्रह्मणोदितम्॥ ८३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जन्मलग्नाष्टमेशौ द्वौ चिंतयेज्जन्मपत्रके ।
पंचमैकादशे विप्र दीर्घायुश्च प्रजायते ॥८४॥

आयु जानने का दूसरा प्रकार कह रहा हूँ, जिसे दीर्घादि तीनों प्रकार से ब्रह्मा ने कहा है॥ ८३॥ जन्माङ्ग चक्र में लग्नेश और अष्टमेश यदि ५।११ भाव में हों तो दीर्घायु॥ ८४॥

लाभे तृतीयगे वापि मध्यमायुर्विचिंतयेत् ।
लाभे वित्ते त्रिकोणे वा ह्यायुरल्पं भवेद् द्विज ॥८५॥
गतायुर्लाभगौ द्वौ चेज्जातकोऽपि न जीवति ।
एवं समस्तजन्तूनामीदृग्योगं विचिन्तयेत् ॥८६॥

११।३ भावों में हों तो मध्यमायु और ११।२।५।९। में हों तो अल्पायु॥ ८५॥ और दोनों ११ भाव में हों तो गतायु होता है और जातक नहीं जीता है, इस प्रकार से सभी प्राणियों के आयुर्दाय का निर्णय करना चाहिये॥ ८६॥

अथैवं भिन्नमार्गेण आयुर्दायं निरूप्यते ।
तनुतन्वीशतद्राशिपत्युर्भानां त्रिकोणके ॥८७॥
अल्पमध्यचिरायुष्यं रूपवर्णप्रमाणतः ।
अष्टमेशादियोगेन निर्याणं कारयेद्ग्रहः ॥८८॥

पुनः प्रकारान्तर से आयु का निर्णय कह रहा हूँ। लग्न, लग्नेश और उनके राशियों के स्वामी से त्रिकोण में॥ ८७॥ अल्प, मध्य और दीर्घायु रूप वर्ष प्रमाण से होती है। इसमें अष्टमेश आदि के योग से निर्माणकर्ता ग्रह होता है॥ ८८॥

लग्नत्रिकोणगेऽल्पायुर्लग्नेशस्य त्रिकोणगे ।
मध्यमायुर्विजानीयान्निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥८९॥
लग्नेशात्स्वीयराशीशे त्रिकोणे रंध्रनायके ।
दीर्घायुषि प्रदातव्यं पुरा शंभुप्रणोदितम् ॥९०॥

लग्न त्रिकोण में अल्पायु, लग्नेश से त्रिकोण में मध्यमायु॥ ८९॥ लग्नेश वा जन्मराशीश वा अष्टमेश त्रिकोण में हो तो दीर्घायु होता है॥ ९०॥

तेषां मध्ये त्रिकोणानां विभागे च नवं कथम् ।
स्वल्पमध्यचिरायुष्यं द्वादशाद्वाधिकेन च ॥९१॥
अल्पायुषस्त्रयो भेदास्त्रयस्थाने पृथक् पृथक् ।
विलग्नेशाष्टमेशादि लग्नस्थेऽपि द्विजोत्तम ॥९२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यहाँ पर त्रिकोण के विभाग में नव भेद कैसे हो? यहाँ प्रत्येक त्रिकोण में अल्प, मध्य, दीर्घायु बारह-बारह वर्ष का भेद होता है।९१। अल्पायु का तीन भेद तीनों स्थानों में होता है। यदि लग्नेश अष्टमेश लग्न में हों तो।९२।

द्वादशाब्द भवेदायुश्चतुर्विंशति पंचमे ।
नवमे च षट्त्रिंशाब्दमित्येवं न तु संशयः ॥९३॥
लग्नेशराशिकोणेषु लग्नरंध्राधिपा यदि ।
तत्र स्थितेष्टवेदाब्दं षष्ट्यब्दं पंचमे स्थिते ॥९४॥

१२ वर्ष, पाँचवें भाव में हों तो २४ वर्ष और नवें भाव में हों तो ३६ वर्ष की अल्पायु होती है॥९३॥ लग्नेश के राशि से त्रिकोण में लग्नेश अष्टमेश हों तो तीन भेद होता है राशि में हों तो ४८ वर्ष, पांचवे भाव में हो तो ६० वर्ष॥९४॥

नवमस्थे द्विसप्ताब्दं तन्नवकमिदं मतम् ।
लग्नेशाश्रितराशीशात्त्रिकोणेषु स्थिते द्विज ॥९५॥
लग्नेशादष्टमेशादि त्रिभागं दीर्घमायुषि ।
लग्नस्थे चतुरशीतिः पंचमें षट्नवात्मकः ॥९६॥

और नवें भाव में हों तो ७२ वर्ष की मध्यमायु होती है। लग्नेश जिस राशि में हो उसके स्वामी से त्रिकोण में लग्नेश अष्टमेश हों तो दीर्घायु के तीन भेद होते हैं॥९५॥ लग्नेश अष्टमेश के योग से दीर्घायु में भी तीन भेद होते हैं। लग्न में हों तो ८४ वर्ष पांचवें भाव में हों तो ९६ वर्ष॥९६॥

नवमेऽष्टोत्तरशतं वर्षेष्वायुर्विनिर्णयः ।
द्वादशाब्दानुपाते च ह्येतच्छम्भुप्रणोदितम् ॥९७॥
रविः कुजः शनी राहुर्मरणे बलिनः क्रमात् ।
विशेष दुर्बलं हित्वा गृह्णीयाद्बलिनः सुधीः ॥९८॥

नवम भाव में हों तो १०८ वर्ष की दीर्घायु होती है। यही १२ वर्ष के अनुपात से शंभु ने कहा है॥९७॥ सूर्य, भौम, शनि और राहु ये प्रबल मारक होते हैं, इनमें जो विशेष दुर्बल हों उन्हें छोड़कर प्रबल को ही लेना चाहिये॥९८॥

केतुश्च शनिवन्मृत्युनाथ सम्बद्धमादिशेत् ।
शनिना राहुणा वापि युक्ते सौम्ये रवोक्षिते ॥९९॥
पर्यायमेकं तन्मध्ये एकराशौ मृतिं वदेत् ।
तयोस्तु शुभयोगेन तद्दशामृतिमादिशेत् ॥१००॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

केतु भी शनि के समान ही मारक होता है। शनि वा राहु के साथ शुभ ग्रह युत हो, सूर्य से देखा जाता हो तो ॥९९॥ एक पर्याय के मध्य में ही मृत्यु करता है। दोनों यदि शुभ युक्त हों तो उनकी दशा में मृत्यु होती है ॥१००॥

भोगराशौ दुर्बले वा प्रबले ग्रहसंस्थिते ।
तथापि निर्दिशेत्काले मरणं नात्र संशयः ॥१०१॥
केतौ चैवासनस्थे वा नाथे वाऽशुभवीक्षिते ।
केतोर्दशान्ते मृत्युः स्याच्छुभदृष्टेन किंचन ॥१०२॥

अन्तरदशा की राशि दुर्बल हो वा प्रबल ग्रह से युक्त हो तो उसके समय में मृत्यु कहना चाहिये ॥१०१॥ यदि केतु अन्त्य में हो अथवा उस राशि के स्वामी पापग्रह से देखे जाते हों तो केतु की दशा में मृत्यु होती है। शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो कुछ भी नहीं होता है ॥१०२॥

तन्वधीशाष्टमेशाभ्यां योगेनायुः कृते द्विज ।
अष्टमेशस्य स्वोच्चस्थे चरपर्याब्दप्रमाणके ॥१०३॥
अर्धाधिकाब्दं दत्त्वैव योजयेत्पूर्वमायुषि ।
एवं नाथान्तरीत्या च चरपर्यातिरिक्तकः ॥१०४॥

लग्नेश अष्टमेश से आयु योग होता हो और अष्टमेश अपनी उच्च राशि में हो तो चर पर्याय के वर्ष में ॥१०३॥ आधे से अधिक वर्ष पूर्व आयु में जोड़कर विचार करना चाहिये। इस प्रकार राशि स्वामी तक चर पर्याय में विचार करना चाहिये ॥१०४॥

मर्यादयापि यदायुरष्टमेशेन दीयते ।
तत्सर्वमर्धाधिक्ये च विधेयं द्विजसत्तम ॥१०५॥
एवं रन्ध्रपतिर्विप्र नीचराशिगतोऽपि च ।
तद्ग्रहेण दीयमानमायुरर्द्धं च नाशयेत् ॥१०६॥

मर्यादा के अनुसार अष्टमेश जिस आयु को देता हो उसमें अर्धाधिक्य कर देना चाहिये ॥१०५॥ इसी प्रकार अष्टमेश नीच राशि में हो तो उससे प्राप्त आयु का आधा ह्रास हो जाता है ॥१०६॥

एवं रन्ध्रपतिर्विप्र नीचखेटेन संयुतः ।
तद्ग्रहेण दीयमानमायुरर्द्धं विनश्यति ॥१०७॥
एवं रन्ध्रपतिर्विप्र तुंगखेटेन संयुतः ।
तद्ग्रहेण दीयमानमायुरर्द्धं च वर्धति ॥१०८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा अष्टमेश किसी नीच राशि में स्थित ग्रह से युक्त हो तो भी प्राप्त आयु का आधा ह्रास होता है॥ १०७॥ इसी प्रकार अष्टमेश उच्च स्थित ग्रह से युक्त हो तो उससे प्राप्त आयु का आधा बढ़ता है॥ १०८॥

एवमुक्तंच विप्रेन्द्र परमायुर्विनिश्चितम् ।
लग्नेशाष्टमेशाभ्यां योगायुर्दायमागते ॥ १०९॥
तेषु संस्कारमाज्ञेयमिदं पूर्वोक्तसंकथाम् ।
लग्नेशादायुरित्येवं तत्तद्योगफलात्मकम् ॥ ११०॥

इस प्रकार मैंने आयु का निर्णय तुमसे कहा। लग्नेश अष्टमेश के योग से आये हुए आयुर्दाय का॥ १०९॥ यथोचित संस्कार करके जो फल उच्च नीचादि के अनुसार आवे॥ ११०॥

संयुक्ताश्च ग्रहा उच्चनीचादिगुणदोषतः ।
वृद्धिह्रासावुक्तरीत्या कार्या वै सम्प्रदायतः ॥ १११॥
द्वित्र्यादिमृत्युयोगश्च प्रबलः पूर्वभाषितः ।
नैसर्गिकोऽपि वीर्याय तस्य पाके मृतिर्भवेत् ॥ ११२॥

उसे आयु में जोड़ देना चाहिए और संप्रदाय के अनुसार ह्रास वृद्धि भी कर देना चाहिए॥ १११॥ यदि पूर्व में कहे हुये दो या तीन प्रबल मृत्यु योग हों तो नैसर्गिक योग कारक भी बलवान् होते हैं, उसी की दशा में मृत्यु कहनी चाहिये॥ ११२॥

रव्यारराहुपंगूनां चतुः खेटान्तरे बली ।
तस्य योगानुसारेण जातकस्य मृतिर्वदेत् ॥ ११३॥
अष्टमेशेन संयुक्तः शनिराहुः कुजो रविः ।
न वीक्ष्यंते ग्रहैर्वापि तस्य मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥ ११४॥

रवि, भौम, राहु और शनि- इन चारों में जो बलवान् हो उसी की दशा में मृत्यु होती है॥ ११३॥ यदि शनि, राहु, भौम और रवि में से कोई अष्टमेश से युत हो, अन्य ग्रहों से न देखे जाते हों तो उनकी दशा में मृत्यु होती है॥ ११४॥

एषां मध्येषु प्रबला सा तत्स्वामिकराशिगे ।
पाके मृत्युं विजानीयान्निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ ११५॥
एषां चतुर्ग्रहाणां च मध्ये चैको बली क्वचित् ।
तस्य राशिदशाकाले मृतिस्थानं विनिर्दिशेत् ॥ ११६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इनमें जो प्रबल हो तो उसके स्वामी के राशि की दशा में निःसंशय मृत्यु होती है॥ ११५॥ इन चारों ग्रहों में कोई एक बली ग्रह हो तो उस ग्रह की राशि-दशा में मृत्यु होती है॥११६॥

मृत्युस्थानाभिभूतायां सिद्धायां च महादशा।
तत्तस्यापि क्रमेणैव तदमतरमृतिप्रदा॥११७॥
शुभग्रहेण सम्बंधे शनी राहु कुजो रविः।
तत्तत्स्वामिदशाकाले मरणं च विनिर्दिशेत्॥११८॥

मृत्युकारक ग्रह के निर्णयानुसार उसकी अंतर्दशा में भी मृत्यु होती है॥ ११७॥ यदि शनि, राहु, भौम, रवि शुभग्रह से सम्बन्ध करते हों तो भी उनकी दशा में मृत्यु होती है॥११८॥

तदाश्रयराशिपाके मृत्युर्भवति निश्चितम्।
निर्विशंकं महाप्राज्ञ पुरा शम्भुप्रणोदितम्॥११९॥
सुखदुःखादि संब्रूयात्पाकराशौ विचिंतयेत्।
योगान्नरगता तत्तु तत्तद्वीर्यानुसारतः॥१२०॥

एवं उनके आश्रयभूत राशि की दशा में भी मृत्यु होती है॥११९॥ पाकेश्वर के अनुसार सुख-दुःखादि उस ग्रह के योग और बल के अनुसार कहना चाहिए॥ १२०॥

सबलायां सुखं ब्रूयाद्दुर्बला दुःखदायिका।
वैषम्येन फलं वाच्यं तथा मरणमेव च॥१२१॥
द्वादशे दशमे वापि संस्थिते पुच्छनायके।
पापदृष्टे दशाप्राप्ते तदनंतरगते मृतिः॥१२२॥

यदि बलवान् हो तो सुख और निर्बल हो तो दुःख देने वाला होता है, वैषम्य हो तो मृत्यु होती है॥१२१॥ यदि केतु १२ या १० भाव में हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उसकी दशा और अंतर में मृत्यु होती है॥१२२॥

द्वादशे दशमे केतुः शुभग्रहनिरीक्षितः।
नायं योगो महाप्राज्ञ न कष्टं न मृत्युकृत्॥१२३॥
प्राणिनीत्युक्तं विप्रेन्द्र! प्राणानयनमुच्यते।
राश्याधीनं बलं ज्ञेयं तदुक्तं कथ्यतेऽधुना॥१२४॥

यदि १२ या १० भाव में केतु हो और शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो यह योग न तो कष्टकारक होता है और न मृत्युकारक होता है॥ १२३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पहले बल की चर्चा कर आये हैं, अतः उसका विचार कह रहे हैं। राशि के अधीन ही बल का विचार होता है॥१२४॥

अग्रहात्सग्रहो ज्यायान्सग्रहे त्वधिकग्रहः।
साम्ये चरस्थिरद्वंद्वाः क्रमात्युर्बलशालिनः॥१२५॥
अथदीर्घादियोगेषु त्रिषु च द्विजसत्तम।
कक्षाह्रासकृते योगान्दर्शयामि तवाग्रतः॥१२६॥

जो ग्रह अकेले हैं, उसकी अपेक्षा ग्रहयुक्त ग्रह बली होता है, ग्रह युक्त ग्रह यदि समान ग्रहों से युक्त हों तो जो संख्या में अधिक ग्रहों से युक्त हो वह उसकी अपेक्षा बली होता है,. इसमें भी समानता हो तो चर राशि में बैठे हुये की अपेक्षा स्थिर राशिवाला और इसकी अपेक्षा द्विस्वभावस्थ बली होता है॥१२५॥ दीर्घायु, मध्यायु और अल्पायु योगों में कक्षा के ह्रास की स्थिति को कह रहा हूँ॥१२६॥

लग्नसप्तमयोर्विप्र द्विर्द्वादशकयोरपि।
षष्ठरन्ध्राधिपस्यापि जनुर्ल्लग्ने विचिन्तयेत्॥१२७॥
पापाक्रान्ते पापयोगे पापमध्यत्वमागते।
कक्षाह्रासौ विजानीयान्निर्विशाङ्कं द्विजोत्तम॥१२८॥

लग्न सप्तम, द्वितीय द्वादश, षष्ठ-अष्टम इनके अधिपति॥१२७॥ पापाक्रांत, पापग्रह, पापग्रह से युक्त और पापग्रह के मध्यम में हों तो कक्षा का ह्रास होता है॥१२८॥

दीर्घस्य मध्यमा याता भवेदायुषि मध्यमे।
अल्पादल्पं च विज्ञेयं कक्षाह्रासस्य लक्षणम्॥१२९॥
कक्षाह्रासो यदार्थोऽपि पूर्ववज्जायते ध्रुवम्।
अथैवं लग्नकुंडल्यां पापयोगत्रिकोणके॥१३०॥

अर्थात् दीर्घायु हो तो मध्यायु, मध्यायु हो तो अल्पायु और अल्पायु हो तो उससे भी अल्पआयु होती है, यही कक्षाह्रास का लक्षण है॥१२९॥ कक्षाह्रास होने से आर्थिक स्थिति में न्यूनता आ जाती है। इसी प्रकार लग्न कुंडली में भी त्रिकोण में पाप योग से कक्षा ह्रास होता है॥१३०॥

लग्नपंचमभाग्येषु पापयोगकृते द्विज।
कक्षाह्रासो भवेद्विप्र निर्विशंकं विधेः सुत॥१३१॥
अत्रास्मिन्कारके लग्ने चिन्तयेज्जनिलग्नवत्।
कारकांशे द्यूनराशेः पापमध्यत्वमेव हि॥१३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्न, पंचम और नवम भाव में पाप ग्रह का योग होने से कक्षा का ह्रास होता है॥ १३१॥ कारक लग्न से भी जन्मलग्न के समान ही विचार करना चाहिये। कारकांश से सप्तम भी पापमध्य में हो तो भी कक्षा ह्रास होता है॥ १३२॥

एको योगः स विज्ञेयः कक्षाह्रासं च पूर्ववत्।
अथैककक्षाह्रासस्य चापवादं वदाम्यहम्॥ १३३॥
एकस्थकक्षाह्रासं च वित्तपे चान्यथा भवेत्।
पूर्ववच्छुभयोगेन कक्षावृद्धिर्भविष्यति॥ १३४॥

अब इसका अपवाद कह रहा हूँ॥ १३३॥ जिसमें शुभ योग होने से कक्षावृद्धि होती है॥ १३४॥

जनुर्ल्लग्ने कारके च चिन्तयेत्पूर्ववद्द्विज।
लग्ने द्यूने धने रिष्फे षष्ठे रंध्रे स्थलत्रये॥ १३५॥
शुभखेटकृते योगे कक्षावृद्धिर्भवत्यपि।
चिन्तयेत्पूर्ववद्विप्र त्रिकोणेषु स्थलद्वये॥ १३६॥

लग्न, सप्तम, द्वितीय, द्वादश, षष्ठ और अष्टम-इनमें किसी तीन स्थान में॥ १३५॥ शुभ ग्रह का योग हो तो कक्षा की वृद्धि होती है। इसी प्रकार दोनों त्रिकोणों में भी विचार करना चाहिये॥ १३६॥

जनुर्ल्लग्नं कारकं च शुभयोगं करोति चेत्।
कक्षावृद्धिर्न संदेहो भविष्यति द्विजोत्तम॥ १३७॥
कारके च त्रिकोणस्थे नीचस्थाः पापखेचराः।
कक्षाह्रासो महाप्राज्ञ द्वितयेन भविष्यति॥ १३८॥

तथा जन्मलग्न और कारक शुभ ग्रह से योग करता हो तो कक्षा की वृद्धि होती है, इसमें सन्देह नहीं है॥ १३७॥ यदि कारक त्रिकोण में हो और पाप ग्रह अपनी नीचराशि में हों तो दोनों से कक्षा का ह्रास होता है॥ १३८॥

कारकांशात्त्रिकोणेषु शुभखेटे शुभस्थले।
कक्षावृद्धिर्भवेत्तत्र न संदेहो द्विजोत्तम॥ १३९॥
कारके पापखेटाच्च अन्त्यगे पापसंयुते।
कक्षाह्रासो भवेत्तत्र प्रणीते द्विजसत्तम॥ १४०॥

कारकांश में त्रिकोण में शुभराशि में शुभग्रह हों तो कक्षा में वृद्धि होती है॥ १३९॥ पापग्रह १२वें भाव में कारक हो और पापग्रह से युक्त हो तो कक्षा का ह्रास होता है॥ १४०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारके शुभसंयुक्ते स्वतुंगे शुभखेचराः।
कक्षावृद्धिर्भवेत्तत्र निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥१४१॥
पापकारकजैर्ह्रासो वृद्धिर्वा कथिता द्विज।
अथैव गुरुणा कक्षाह्रासवृद्धिं वदाम्यहम् ॥१४२॥

कारक शुभग्रह से युक्त हो और शुभ ग्रह अपने उच्च में हो तो कक्षा वृद्धि होती है॥१४१॥ इस प्रकार पाप ग्रह से उत्पन्न कक्षा की ह्रास-वृद्धि मैंने कहा। इसी प्रकार गुरु से कक्षा का ह्रास-वृद्धि कह रहा हूँ॥१४२॥

वित्ते व्यये लग्नषष्ठे त्रिकोणे पापयोर्द्विज।
कक्षाह्रासो भवेत्तत्र पूर्ववद् द्विजसत्तम ॥१४३॥
गुरौ नीचे स्वतुङ्गे च संयुक्तेऽशुभखेचरैः।
कक्षाह्रासो भवेत्तत्र निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥१४४॥

गुरु से दूसरे, बारहवें, लग्न, छठे और त्रिकोण में पाप ग्रह हों तो कक्षा का ह्रास पूर्ववत् होता है॥१४३॥ गुरु अपने नीच में अथवा अपने उच्चराशि में पापग्रहों से संयुक्त हो तो कक्षा का ह्रास होता है॥१४४॥

वित्तगे च गुरौ ज्ञेयं पूर्ववन्नियमं द्विज।
प्रागुक्तार्थकृतेयं च कक्षा सर्वा प्रकथ्यते ॥१४५॥
तथैव शुभयोगेषु चापवादं वदाम्यहम्।
उक्तस्थाने शुभैर्योगे पूर्णेन्दुशुक्रयोर्द्विज ॥१४६॥

गुरु दूसरे भाव में हो तो पूर्ववत् कक्षा ह्रास-वृद्धि को समझना चाहिये। पूर्वोक्त कक्षाक्रम के ही लिये यह सब कहा गया है॥१४५॥ उक्त स्थानों में शुभग्रह के योग का अपवाद कह रहा हूँ। उक्त स्थानों में शुभग्रह का योग पूर्णचन्द्र शुक्र का हो तो॥१४६॥

योगप्रकरणे कक्षाह्रासाय न तु वृद्धये।
तत्रैकराशिवृद्धिश्च भवत्येव न संशयः ॥१४७॥
पूर्ववच्चोक्तपापेषु शनिना योगकारकः।
कक्षाह्रासश्च तत्रैव यत्रैको राशिह्रासकृत् ॥१४८॥

कक्षा का ह्रास ही होता है न कि वृद्धि, एक राशि की वृद्धि ही होती है॥१४७॥ पूर्वोक्त पाप ग्रह योग में शनियोग करता हो तो वहाँ पर कक्षा ह्रास में एक राशि का ह्रास होता है॥१४८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ स्थिरदशायां मृत्युसमयज्ञानम्-

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि विशेषेण द्विजोत्तम।
आलम्ब्य स्थिरदशायां योगान्निधनमेव च ॥१४६॥
त्रित्रिभिराशिभिरेकं खंडाश्चत्वार एव च।
कस्मिन्खण्डे च निधनं तस्य योगं विचिंतयेत् ॥१५०॥

अब मैं स्थिर के अनुसार चार खण्ड के अनुसार मृत्यु समय को कह रहा हूँ॥१४६॥ तीन-तीन राशियों के चार खण्ड होते हैं, किस खण्ड में मृत्यु होगी। इसको कहता हूँ॥१५०॥

योगत्रयमहं वक्ष्ये दीर्घमध्यात्पभेदतः।
चतुःखंडेषु यत्रायुरागतं तत्र चिंतयेत् ॥१५१॥
दीर्घायुर्योगवत्तत्तु यस्मिन् खण्डे समागते।
तस्मिन्खण्डे च निधनं भवत्यपि न सन्देहः ॥१५२॥

दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु के भेद चारों खण्डों में जहाँ समाप्त हो उसी समय मृत्यु को कहना चाहिए॥१५१-१५२॥

वक्ष्यमाणप्रकारेण मध्यमाल्पायुषि द्विज।
निधनाश्नयखंडेषु लक्षणाक्रांतया दशा ॥१५३॥
तद्दशायां च निधनं भवत्येव द्विजोत्तम।
कदाचिन्न मृतिस्तत्र क्लेशदुःखभयानि च ॥१५४॥

इसी प्रकार मध्यायु और अल्पायु के खण्डों में जिस खण्ड की जिस दशा में मृत्यु का सन्देह हो उसी खण्ड में उसे कहना चाहिये॥१५३॥ यदि कदाचित् मृत्यु न हो तो उस समय क्लेश, दुःख और भय होता है॥१५४॥

भवन्ति तत्र संस्कारं पुनरित्थं वदाम्यहम्।
पापद्वयमध्यगते राशिपाके मृतिर्भवेत् ॥१५५॥
लग्नाद्वा कारकाद्विप्र पापाक्रांते त्रिकोणके।
द्वादशाष्टमराश्येवं पापाक्रांतं भवेदपि ॥१५६॥

पापग्रहों के मध्य में स्थित राशि की दशा में मृत्यु होती है॥१५५॥ लग्न से आत्मकारक से त्रिकोण में पापग्रह हों अथवा १२वीं राशि में पापग्रह हों॥१५६॥

तद्दशायां च निधनं जातकस्य न संशयः।
खंडे स्थिरदशायां च चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥१५७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पापराशेस्त्रिकोणेषु द्वादशाष्टमराशिषु ।
पापाक्रान्ते तद्दशायां निधनं भवति ध्रुवम् ॥ १५८ ॥

तो उस राशि की दशा में मृत्यु कहना चाहिये॥ १५७॥ पापग्रह की राशि से त्रिकोण में अथवा १२।८वीं राशि में पापग्रह हो तो उस राशि की दशा में मृत्यु होती है।।१५८।।

शुभमध्ये मृतिर्नैव पापमध्ये मृतिर्भवेत् ।
भूयोऽपि निधनार्थाय राशिदोषं वदाम्यहम् ॥ १५९ ॥
द्वादशाष्टमपत्योश्च दृष्टौ क्षीणेन्दुशुक्रयोः ।
तद्दशायां च निधनं भवत्येव न संशयः ॥ १६० ॥

शुभग्रह के मध्य की राशि में मृत्यु नहीं होती है और पापग्रह के मध्य की राशि की दशा में मृत्यु होती है। फिर भी निधन राशि के दोष को कह रहा हूँ॥ १५९॥ १२।८ के स्वामी क्षीणचन्द्र और शुक्र से देखे जाते हों तो उनकी दशा में निधन होता है॥ १६०॥

क्षीणेन्दोः केवलं दृष्टिः शुक्रदृष्टिश्च केवलम् ।
दृष्टिमात्रेण निधनं स्थिरदशायां विचिंतयेत् ॥ १६१ ॥
मृत्युस्थाने तु या दृष्टिः पापमध्यर्क्षं प्रपश्यति ।
तस्य दशां समालोक्य व्योमषष्ठाधिपाद् द्विज ॥ १६२ ॥

केवल क्षीणचन्द्र और शुक्र की दृष्टि भाव से स्थिर दशा में मृत्यु होती है॥१६१॥ पापग्रह के मध्य में स्थित अष्टम स्थान को पूर्वोक्त (क्षीण चन्द्र वा शुक्र) वा १०,६ भाव के स्वामी देखते हों तो इसकी दशा में॥१६२॥

निरीक्षते नवांशेषु द्वयोः स्थाने द्विजोत्तम ।
तत्रैव निधनं ज्ञेयं भाषितं च तवाग्रके ॥ १६३ ॥
पूर्वोक्तनिधनस्थाने महापाकं नरेष्वपि ।
व्योमषष्ठाधिपौ विप्र तयोरंशं निरीक्षिते ॥ १६४ ॥
राशेरंतर्दशाकाले निधनं भवति ध्रुवम् ।
अंतर्दशायां रूपे द्वे निधनस्थानमेव च ॥ १६५ ॥

अथवा १०,६ के स्वामी से देखी जाती हुई अष्टमस्थ पापद्वयमध्य स्थित राशि की अन्तर्दशा में निधन होता है॥१६३॥ पूर्वोक्त निधन स्थान के समय महादशामें १०,६ भावों के नवांशराशि के अन्तर में निधन होता है॥१६४-१६५॥

इत्यायुर्दायप्रकरणम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ मारक-प्रकरणम्

पराशर उवाच-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि निधनार्थे विशेषतः।
प्रकारांतर्दशायास्तच्च रुद्रादिद्विजसत्तम ॥१॥
लग्नद्यूनाष्टमेशौ यौ तयोर्मध्ये च यो बली।
प्राणिरुद्रः स विज्ञेयः निधनार्थे विचिन्त्यताम् ॥२॥

अब मैं विशेषकर निधन के सम्बन्ध में दशा अंतर्दशा के विषय में रुद्रग्रह द्वारा कह रहा हूँ॥१॥ लग्न और सप्तम से जो अष्टमेश उनमें बली हो वही रुद्रग्रह होता है॥२॥

तयोर्मध्ये बली चिन्त्यः शुभदृष्टेन संयुते।
दुर्बलः सोऽपि गौणाख्यो रुद्रग्रह इतीर्यते ॥३॥
तत्रैव प्राणिरुद्रस्य विशेषं गणयेत्फलम्।
प्रवक्ष्यामि तवाग्रे च शृणुष्व त्वं महामते ॥४॥

वह शुभ दृष्ट वा शुभ युक्त हो तो बली होता है॥३॥ जो दुर्बल है, वह भी रुद्रग्रह होता है॥४॥

शुभैर्युक्ते शुभैर्दृष्टे शुभसम्बन्धकारकः।
प्राणीरुद्रः स विज्ञेयस्तत्सीमांत्तमायुरेव च ॥५॥
रुद्रशूलान्तमायुः स्यात् त्रिकोणान्ते तथा पुनः।
लग्नांते पञ्चमांते च नवमान्ते त्रयस्थले ॥६॥

कारक यदि शुभग्रह से युक्त हो वा शुभदृष्ट हो वा संबंध करता हो, बली हो तो वह रुद्रग्रह होता है। इसी के आधीन आयु होती है॥५॥ रुद्र शूलान्त पर्यन्त अथवा उसके त्रिकोण राशि पर्यन्त आयु होती है, लग्नान्त, पंचमान्त और नवमान्त- इन्हीं तीनों को त्रिकोणान्त समझना चाहिये॥६॥

चिन्तनीयं महाप्राज्ञ तत्तद्राशिदशान्तरे।
अल्पमध्यं च दीर्घायुर्योगभेदा न संशयः ॥७॥
तत्राप्यायुः समायोगे त्रिकोणमध्यमोत्तरे।
आयुस्तत्रैव विज्ञेयं तदग्रे च क्रमेण च ॥८॥
योगे मध्यायुषं प्राप्ते त्रिकोण मध्यमान्तगे।
आयुर्दायसमाप्तिश्च निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दीर्घायुर्योगसंलब्धे त्रिकोणे नवमान्तगे ।
दशांतरे महाप्राज्ञ आयुर्दाय समाप्तये ॥ १० ॥

इन्हीं खंडों में अल्पायु, मध्यायु और दीर्घायु के भेदों को समझना चाहिए। लग्न से पंचमान्त अल्पायु, नवमांत पर्यन्त मध्यमायु और इसके बाद दीर्घायु को समझना चाहिए॥ ७-१० ॥

अथैवं लग्नद्यूनादि आरभ्य च दशाक्रमः ।
प्रवृत्तिर्जन्मतो ज्ञेया निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ ११ ॥
यत्र रुद्रग्रहस्यापि शुभदत्वं न भाव्यते ।
तत्र जीवस्य नष्टत्वान्नेदं फलमिति स्थितिः ॥ १२ ॥

इसी प्रकार लग्न सप्तमादि से आरम्भ कर दशाक्रम जन्म से ही जानना चाहिये॥ ११ ॥ जिसमें रुद्रग्रह का भी शुभदत्व नहीं होता है, जहाँ पर जीव के नष्ट हो जाने से उपरोक्त फल नहीं होता है॥ १२ ॥

अथैव रुद्रशूलांतमायुर्दायेति कारणे ।
योगेऽस्मिंश्च समुत्कर्षात्किंचिद्दर्शयति द्विज ॥ १३ ॥
प्राणीरुद्रशुभैर्दृष्टे पूर्वोक्तफलदायकः ।
शुभयोगे न संदेहो रुद्रशूलान्तमायुषि ॥ १४ ॥

इसी प्रकार से रुद्र शूलान्त आयुर्दाय होने का कारण होता है, उसका कारण कह रहा हूँ॥ १३ ॥ यदि रुद्रग्रह शुभ दृष्ट हो तो पूर्वोक्त फल को देने वाला होता है और शुभयुक्त हो तो रुद्रशूलान्त आयु होती है, इसमें संदेह नहीं है॥ १४ ॥

स्थित एव फलं जन्म कथितं कारणांतरे ।
निरुक्ते शुभसंयोगे किं कीर्तयति भो द्विज ॥ १५ ॥
पूर्वमेव फलं साधो समुत्कृष्टे तदेव चेत् ।
सुतरां तदेव वक्तव्यं निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ १६ ॥

कारणान्तर से पूर्वोक्त फल होता है, किन्तु शुभयोग में कोई कारणांतर नहीं होता है॥ १५-१६ ॥

अनेन पूर्वयोगेन फलं किंचिद्धि न्यूनता ।
आद्योदितादुक्तकालात् पूर्वं पश्चान्मृतिर्यदि ॥ १७ ॥
निरुक्तयोगश्च तदा ह्यपवादं वदाम्यहम् ।
रविं विहाय नितरां पापयोगो भवेद्द्विज ॥ १८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इसमें भी यदि पूर्वोक्त फल यदि उत्कृष्ट हो तो वही होता है। यदि पूर्वोक्त फल में कुछ न्यूनता हो और उसके पूर्व पीछे मृत्यु हो जाय तो यह योग निष्फल होता है॥ १७-१८॥

योगोऽयं निष्फलो वाच्यः पुरा ब्रह्मप्रणोदितः।
इदं फलं न भवति योगेस्मिन्द्विजसत्तम॥१९॥
नाशयोगस्य वक्तव्यं फलं वापि भयंकरम्।
अधुना सम्प्रवक्ष्यामि गौणरुद्रस्य वै द्विज॥२०॥

किन्तु नाश होने के योग का फल भयंकर होता है। अब मैं गौण रुद्र का विवेचन कर रहा हूँ॥ १९-२०॥

गुणप्रकर्षेण फलं विशेषेण तवाग्रतः।
गौणरुद्रे महाप्राज्ञ मन्दारेन्दुनिरीक्षिते॥२१॥
अभावे शुभयोगस्य पापयोगोत्तरे तथा।
शूलान्तात्फल विप्रेन्द्र आयुर्दायं भवत्यपि॥२२॥

अब मैं गुण की प्रकर्षता से फल विशेष को कह रहा हूँ। गौणरुद्र शनि, भौम, चन्द्र से देखा जाता हो॥२१॥ शुभग्रह का योग न हो, पापयोग भी न हो, वा पाप योग हो अथवा भौम, शनि, चन्द्रमा के साथ और भी शुभग्रह की दृष्टि हो तो रुद्राश्रित राशि के अग्रिम राशि की दशा में मृत्यु होती है॥२२॥

शुभदृष्टे वा शूलान्तात्परञ्चायुर्भवेदपि।
योगद्वय परत्वेन योजनीयं न संशयः॥२३॥
एतद्योगद्वयं किञ्चिन्न्यूनतायामपि द्विज।
नेदं फलं प्रवक्तव्यं मैत्रेय भाषितं पुरा॥२४॥

शुभग्रह के योग के अभाव में पापग्रह का योग होते हुये दोनों योगों का एक के बाद दूसरे का विचार करन चाहिए॥ २३॥ इन दोनों के योगों के न्यून होने से पूर्व का फल नहीं होता है॥ २४॥

शुभदृष्टिभवे चैव योगे च परपूर्ववत्।
शुभदृष्टावसन्त्यां च पापयोगाद्यभावतः॥२५॥
कृत एको हि योगश्च पूर्वयोगजमेव च।
अशुभयोगे शुभदृष्टौ योगोऽयमपरो द्विज॥२६॥

शुभ दृष्टि होते हुये अथवा शुभ दृष्टि के अभाव में पाप योगादि के अभाव में शुभ दृष्टि के होते हुये एक योग होता है॥ २५॥ पापग्रह के योग में शुभ दृष्टि के होते हुये दूसरा योग होता है॥ २६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पापयोगैरभावे च शुभदृष्टौ च संयुते ।
[१]कैमुतिकाख्यन्यायेन सिद्धो योगस्तृतीयकः ॥ २७॥
पुरा प्रोवाच यच्छम्भुस्तवाग्रे कथयाम्यहम् ।
द्वितीययोजनायां तु शुभदृष्टिसमन्विते ॥ २८॥

पाप योग के अभाव में शुभ दृष्टि होते हुये कैमुतिक[१] न्याय से तीसरा योग भी होता है॥ २७॥ पूर्व में शम्भु ने जो कहा था, उसे मैंने तुमसे कहा। दूसरे योग में पापयोग शुभदृष्टि में॥ २८॥

पापयोगस्य चाभावे योगः प्रथम उच्यते ।
पापयोगे महाप्राज्ञ शुभदृष्टे प्रभावके ॥ २९॥
द्वितीययोगपक्षेऽहं पूर्वस्मिन् द्विजसत्तम ।
पापयोगस्य चाभावे पापदृष्टि विवर्जितः ॥ ३०॥

पापग्रह के योग के अभाव में प्रथमयोग और पापग्रह योग में शुभदृष्टि में दूसरा॥ २९॥ अथवा पापयोग के अभाव में पापदृष्टि के न होने में॥ ३०॥

कैमुतिकाख्यन्यायेन तृतीयो योग उच्यते ।
अथैवं प्राणिरुद्रस्य ह्युक्ता पक्षांतरे कथा ॥ ३१॥
तत्रैव प्रथमे योगे शुभदृष्टि विवर्जिते ।
शुभयोगादियोगश्च द्वितीयोक्तेन योगकृत् ॥ ३२॥

कैमुतिकन्याय से यह तीसरा योग हुआ। यह प्राणी रुद्र के पक्षान्तर से स्वरूप कहा है॥ ३१॥ प्रथम योग में शुभ दृष्ट से रहित होने में शुभादि योग होने से॥ ३२॥

तृतीयेन द्वयस्यापि योगभङ्गं करोत्यपि ।
अधुनोक्तत्रयाभावे मंदादिदृष्टिमात्रतः ॥ ३३॥
एवं स्थिते सुयोगश्च निःशंकं प्रतिपाद्यते ।
अशुभैः खेचरैर्दृष्टे पापयोग इति स्थितिः ॥ ३४॥
शुभयोगविहीने च मन्दारेन्दुनिरीक्षिते ।
तदायुः परतो विप्र समानादिति योजयेत् ॥ ३५॥

तीसरे से दूसरे के साथ योग होने से, तथा उक्त तीनों योगों के अभाव

१ कैमुतिकन्याय- अर्थापत्ति को कहते हैं, जैसे चूहा लकड़ी को खा गया तो इससे मृदुपदार्थ मिठाई आदि को भी खा सकता है।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

में शून्यादि दृष्टि के भेद को निर्विशंक कह रहा हूँ॥ ३३॥ अशुभ ग्रह की दृष्टि और पापयोग॥ ३४॥ शुभ योग से हीन शनि भौम चन्द्र से दृष्ट हो तो रुद्रशूल के बाद तक आयु होती है॥ ३५॥

प्रथमे द्वितीये संतः पापयोगैरभावतः।
योगो भंगमपेक्षा च तृतीयोक्तमिदं वदेत्॥ ३६॥
पापदृष्टिमात्रमेवं योगनिर्वाहकारणे।
अपवादविहीनेन इत्येवोक्तं तृतीयके॥ ३७॥
रुद्राभ्यां प्राणिगौणाभ्यां ताभ्यामाश्रितमेव च।
गुणविशेषे आयुरंतं वक्ष्यामीह महामते॥ ३८॥

प्रथम द्वितीय योग में पापयोग के अभाव में योग भंग होने से तीसरे योग की उत्पत्ति होती है॥ ३६॥ केवल पाप ग्रह मान्य की दृष्टि से योग होने के कारण तीसरा योग होता है॥ ३७॥ अब दोनों रुद्रों से और उनके आश्रित से गुण विशेष से आयु का निर्णय कर रहा हूँ॥ ३८॥

गौणरुद्रे शुभैर्योगे शुभदृष्टिसमन्विते।
रुद्रशूलान्तमायुश्च योजनीयं द्विजोत्तम॥ ३९॥
पूर्वोक्तप्राणिरुद्रेण द्वियोगप्राणकेन च।
द्वाभ्यां शूलान्तमायुश्च तवाग्रे कथितं मया॥ ४०॥

गौणरुद्र शुभग्रह से योग करता हो और शुभदृष्टि से युक्त हो तो रुद्रशूलान्त आयु होती है॥ ३९॥ पूर्वोक्त बली (प्राणि) रुद्र से जो दो योग कहे हैं, उनमें दोनों रुद्रों के शूलान्त पर्यन्त आयु होती है॥ ४०॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि द्वयोर्निर्वाहकारणम्।
तयोः रूपं भिन्नभिन्नं शृणुष्व मुनिसत्तम॥ ४१॥
प्राणिरुद्रे शुभैर्दृष्टे योगोऽयं द्विजसत्तम।
शुभयोगेति का वार्त्ता शूलान्तायुर्विनिश्चितम्॥ ४२॥

अब दोनों के निर्वाह के कारण कह रहा हूँ। दोनों के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं॥ ४१॥ प्राणिरुद्र शुभग्रहों से देखा जाता हो और शुभयोग हो तो रुद्र शूलान्त आयु होती है॥ ४२॥

गौणरुद्रे शुभैर्दृष्टे योगोऽयं क्लेशदायकः।
रोगशोकभयं कर्त्ता मृत्युं नैव करोति च॥ ४३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभयोगे महाप्राज्ञ! योगोऽयं बलवत्तरः।
तस्य शूलान्तमायुश्च निर्विशंकं न संशयः॥४४॥

गौण रुद्र शुभग्रहों से दृष्ट हो तो क्लेशदायक, रोग-शोक दायक, भयकारक होता है न कि मृत्यु कारक॥४३॥ यदि इस योग में शुभयोग भी हो तो निश्चय ही इसके शूलान्त पर्यन्त आयु होती है॥४४॥

उभौ रुद्रौ शुभैर्दृष्टावथवा योगद्वयोरपि।
शुभग्रहेण क्लेशश्च रुद्रशूलान्तमायुषि॥४५॥
प्राणी चाप्राणिरुद्राभ्यां कृतयोगद्वयेन च।
तयोर्वा सम्प्रवक्ष्यामि तवाग्रे द्विजसत्तम॥४६॥

दोनों रुद्र शुभ ग्रहों से दृष्ट और योग करते हों तो रुद्रशूलान्त आयु न होकर केवल क्लेशमात्र होता है॥४५॥ बलवान् या निर्बल रुद्रों से दोनों योगों में जो विशेषता होती है, उसे कह रहा हूँ॥४६॥

मार्त्तण्डरहितो चान्यः पापयोगकृते द्विज।
योगद्वयं न भवति पापयुक्तं द्वयोरपि॥४७॥
शुभयोगः शुभैर्दृष्टैरुभयेऽपि विना रविम्।
पापयोगकृते विप्र भययोगो विनश्यति॥४८॥

दोनों रुद्रों के दोनों योगों में सूर्य को छोड़कर अन्य पापग्रह योग करते हों तो दोनो योग नहीं होते हैं॥४७॥ शुभयोग शुभग्रह से दृष्ट दोनों हों तो पापग्रह से उत्पन्न भययोग निवृत्त हो जाता है॥४८॥

शुभयोगः शुभैर्दृष्टिरभावे न भवत्यपि।
यत्रायुः कथयांचक्रुर्वक्तव्यं च द्विजसत्तम॥४९॥
उभयोः पापयोगे च कश्चिद्रोगार्तिको भवेत्।
क्लेशः शोको नृपाद्भीतिः देशपर्यटनं द्विज॥५०॥

शुभयोग शुभदृष्टि के अभाव में भी कुछ नहीं होता है॥४९॥यदि दोनों पाप योग करते हों तो कुछ रोग आदि होते हैं। क्लेश, शोक, राजा से भय, और देशपर्यटन होता है॥५०॥

शुभदृष्टेरभावे च शुभयोगविवर्जिते।
पापयोगप्रभावेण मरणं सारणं दृशा॥५१॥
शुभयोगदृष्ट्यभावे पापयोगे द्विजोत्तम।
शुभवर्गो पापवर्गो तवाग्रे कथयाम्यहम्॥५२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभ दृष्टि के अभाव में शुभयोग के बिना पापयोग के प्रभाव से मरण होता है॥ ५१॥ अब मैं शुभ वर्ग और पाप वर्ग को कह रहा हूँ॥ ५२॥

अर्कारमंदफणिनः क्रमात्क्रूरा यथाक्रमम्।
चन्द्रोऽपि क्रूर एवात्र क्वचिदंगारकाश्रयात् ॥ ५३॥
गुरुकविशिखिज्ञाश्च यथापूर्वं शुभग्रहाः।
क्रूरखेटा महाप्राज्ञ चार्काद्या उत्तरोत्तरम् ॥ ५४॥

सूर्य, भौम, शनि और राहु-ये यथाक्रम से क्रूर होते हैं। चन्द्रमा भी कभी भौम के संसर्ग से क्रूर होता है॥ ५३॥ गुरु, शुक्र, केतु और बुध-ये यथाक्रम से शुभ ग्रह हैं। सूर्यादि ग्रह क्रूर होते हैं॥ ५४॥

क्रूराः क्रूरभगाश्चैव महत्क्रूरा भवन्ति च।
शुभक्षेत्रगतैः क्रूरैः क्रूरता ह्युपशाम्यति ॥ ५५॥
गुर्वादयः शुभग्रहा यथापूर्वं बुधः कविः।
कवितः केतु विज्ञेयः केतुतो वाक्पतिर्दिज ॥ ५६॥

क्रूरग्रह, क्रूरग्रह की राशि में हों तो बड़े क्रूर होते हैं। शुभग्रह की राशि में क्रूरग्रह हों तो उनकी क्रूरता शान्त हो जाती है॥ ५५॥ गुरु आदि शुभग्रह बुध से शुक्र यथापूर्व बली होते हैं। शुक्र से केतु और केतु से गुरु क्रम से उत्तरोत्तर बली होते हैं॥ ५६॥

क्रमेणैव विजानीयाच्छुभखेटोत्तरोत्तरम्।
यथापूर्वं क्रूरग्रहाः क्रूराश्रयसमागते ॥ ५७॥
एवं क्रौर्यं समापन्नं क्रौर्यं तु शोभनाश्रयः।
एवं गुर्वादिसौम्याश्च शुभाः श्रेयातिशोभनाः ॥ ५८॥

इसी क्रम से क्रूरग्रह क्रूरराशि में यथाक्रम से बली होते हैं॥ ५७॥ एवं गुरु आदि शुभ ग्रह भी शुभराशि में अत्यन्त शुभद होते हैं॥ ५८॥

क्रूराश्रये सौम्यखेटाः सौम्यता नश्यते क्वचित्।
एवमेवापरायुक्तिं कथयामि द्विजोत्तम ॥ ५९॥
प्रत्येकं शुभराशिस्थो उच्चस्थो वा बुधः शुभः।
गुरुशुक्रौ च सौम्यस्थौ ततोऽन्ये च शुभाः स्मृताः ॥ ६०॥

कभी-कभी क्रूरग्रह की राशि में गये हुये शुभग्रह अपनी शुभता को नाश कर देते हैं॥ ५९॥ प्रत्येक शुभराशि में वा अपनी उच्चराशि में बुध शुभद होता है एवं गुरु, शुक्र शुभराशि में अत्यन्त शुभद होते हैं॥ ६०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्वस्मिन् पापयोगेन योगभंगद्वये द्विज ।
निरूपितं तवाग्रे च निर्विशंकं न संशयः ॥ ६१ ॥
योगद्वयेऽपि भंगार्थे पापदृष्टौ विशेषकम् ।
न दर्शयति कदापि स्यात् तवाग्रे कथयामि वै ॥ ६२ ॥

एवं पूर्वोक्त पापग्रह के योग से दोनों पूर्वोक्त भंगयोग कहा गया है॥ ६१ ॥ किन्तु दोनों योगों में विशेषतः पापदृष्टि अपेक्षित है॥ ६२ ॥

शुभग्रहाणामभावे मन्दारेन्दुनिरीक्षिते ।
पापयोगे शुभैर्दृष्टे परतश्चायुषि द्विज ॥ ६३ ॥
प्राणिरुद्रेऽप्यगौणेन शुभयोगविवर्जिते ।
पापयोगेऽथवा दृष्टे तथा शुभनिरीक्षिते ॥ ६४ ॥

शुभग्रहों की दृष्टि न हो, शनि, भौम चन्द्रमा देखते हों अथवा पापग्रह का योग वा दृष्टि हो, शुभग्रह देखता हो तो पूर्ववत् तारतम्य से फल का विचार करना चाहिए॥ ६३-६४ ॥

व्यापारतानुविज्ञेया पूर्ववद् द्विजसत्तम ।
अत्रोपपदपापाच्च राहोरप्युपलक्षणम् ॥ ६५ ॥
एवं सूर्यातिरिक्तोऽपि पापयोगस्तथैव च ।
तस्यैवेहानुवादाच्च राहोश्चोपबृंहणात् ॥ ६६ ॥

इसी प्रकार उपपद की चर्चा से राहु की चर्चा से उपलक्षण मात्र है॥ ६५ ॥ सूर्य के अतिरिक्त पापग्रह के योग से भी योग होता है॥ ६६ ॥

परिग्रहदर्शनाच्च परतो रुद्रमाश्रयात् ।
शुभस्थाने आयुरंतः शूलत्रयमलंघनात् ॥ ६७ ॥
न तु शूलदशायां च आयुरंतं द्विजोत्तम ।
एवं शूले चेत्तदन्तशूलरीत्येति बाधके ॥ ६८ ॥

इन परिग्रहों के रहते हुये रुद्रग्रह के आश्रय से शूलान्त पर्यन्त आयु होती है॥ ६७ ॥ किन्तु शूल में मृत्यु न होकर उसके अन्त में मृत्यु होती है॥ ६८ ॥

पूर्वोक्तपापयोगेन शुभयोगेन दृष्टितः ।
कृतयोगद्वयस्यापि भंगार्थे च वदाम्यहम् ॥ ६९ ॥
शुभयोगेन वै विप्र पापयोगोऽतिदुर्बलः ।
शुभदृष्टिकृतो योगः पापदृष्टे कथं क्षमः ॥ ७० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्वोक्त दोनों योगों के भंग के लिए कह रहा हूँ। शुभग्रह का योग होने से पापग्रह का योग दुर्बल हो जाता है॥ ६९॥ एवं शुभदृष्टि होते हुये पापग्रह की दृष्टि कैसे समर्थ हो सकती है॥ ७०॥

न भंजनसमर्थश्च कोटियत्ने कृते द्विज।
शुभकृद्योगभंगार्थे पापयोगमपेक्षितम्॥ ७१॥
शुभयोगे दृष्टिकृते पापयोगोऽपि भंजकः।
शुभदृष्टिकृते योगः पापयोगो विनश्यति॥ ७२॥

शुभग्रह जनित योग के भंग के लिये पापग्रह जनित योग होना आवश्यक है॥ ७१॥ शुभग्रह का योग वा दृष्टि होने से पापयोग का भंग हो जाता है॥ ७२॥

यदायुर्दायमध्यस्थं वेदितव्यं द्विजोत्तम।
पापमात्रस्य शूलत्वे प्रथमर्क्षे मृतिं वदेत्॥ ७३॥
द्वौ रुद्रौ पूर्ववक्ष्येऽहं यदि चैकत्रसंस्थितौ।
मित्रमध्यमशूलर्क्षे शुभमात्रेऽन्तिमे मृतिः॥ ७४॥

केवल पापयोग की दृष्टि मात्र ही हो तो प्रथम शूल में ही मृत्यु होती है॥ ७३॥ पूर्वोक्त दोनों रुद्र यदि एक ही स्थान में हों तो मध्यम शूल में मृत्यु होती है॥ ७४॥

द्वयोः पापे च प्रथमे शूले मृत्युर्भवत्यपि।
यद्येकरुद्रः पापी च द्वितीयः शुभखेचरः॥ ७५॥
मध्ये शूले मृतिर्विप्र निर्विशंकं भविष्यति।
शुभग्रहद्वयं विप्र एकत्र यदि तिष्ठति॥ ७६॥

यदि एक रुद्र पापी हो और दूसरा शुभ हो तो मध्य शूल में मृत्यु होती है॥ ७५॥ और शुभमान्य का संबंध हो तो तीसरे शूल में मृत्यु होती है॥ ७६॥

अंतर्शूले मृतिर्ज्ञेया शूलिना भाषितं पुरा।
एवं भेदानुभेदेन विद्यात् सर्वत्र बुद्धिमान्॥ ७७॥
शूलक्षेत्रे च द्वौ रुद्रौ यदि पापोऽथवा शुभः।
मिश्रग्रहोऽथवा विप्र चिंतयेद्बलवत्तरः॥ ७८॥

इस प्रकार के भेदानुभेद से सर्वत्र विचार करना चाहिये। यह आवश्यक है कि दोनों रुद्र पाप वा शुभ हैं॥ ७७॥ वा मिश्रग्रह हैं और दोनों में बली कौन है॥ ७८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दीर्घायुरायुयोगेन भंगाभावे द्विजोत्तम ।
मृत्युः शूलदशायां च पापयोगं विना रविः ॥७६॥
क्रूराश्च येषु क्षेत्रेषु शुभानामाश्रयेषु च ।
निर्याणमितरेषां तु शूलर्क्षे निर्दिशेदयम् ॥८०॥

दीर्घायु योग में भंग के अभाव में रवि के बिना अन्य पापग्रहों के योग होने से शूल दशा में मृत्यु होती है॥ ७६॥ क्रूरग्रह जिस राशि में शुभग्रह के आश्रय से हों तो यह निर्याण अन्य ग्रहों के शूल में कहना चाहिये॥ ८०॥

शुभानामत्र पक्षे तु तथा क्रूराश्रयेषु च ।
तस्मिन् जातकशूलर्क्षे मृतिं ब्रूयान्न संशयः ॥८१॥
यद्यप्राणिरुद्रयोगे यत्किंचिन्न्यूनना द्विज ।
तर्हि रुद्राश्रयं तच्च त्रिधा न परतोऽपि च ॥८२॥

शुभग्रहों के पक्ष में क्रूरग्रहों के आश्रय में शूलर्क्ष में जातक की मृत्यु होती है॥ ८१॥ यदि निर्बल रुद्र के योग में कुछ न्यूनता हो तो रुद्राश्रय के द्वारा मृत्यु का विचार करना चाहिये॥ ८२॥

रुद्राश्रयेऽपि चायुर्दा समाप्तिर्भवति ध्रुवम् ।
प्रायेण चिंतयेद्विप्र पूर्वापरप्रयत्नतः ॥८३॥
यद्बाह्यप्राणिरुद्रस्य योगे पूर्णे भवत्यपि ।
रुद्रशूलपरत्वेन आयुर्दायसमाप्तये ॥८४॥

रुद्राश्रय में भी आयु की समाप्ति होती है॥ ८३॥ जो बाह्य प्राणीरुद्र के योग में पूर्ण आयु होने से रुद्र शूलान्त आयु कहा है॥ ८४॥

रुद्राश्रयेण प्रायेण शूलमेकद्वयं त्रयम् ।
उल्लंघनं कृतं विप्र यदि योगविशेषता ॥८५॥
तर्हि रुद्राश्रयेणैवं प्रायेणायुर्भविद् ध्रुवम् ।
तावद्वर्षेण कथनं जीवनं जातकस्य च ॥८६॥

तथा रुद्राश्रय से प्रायः एक, दो या तीसरे शूल का उल्लघंन योग-विशेष से किया है तो वह प्रायः रुद्राश्रय से ही होता है॥ ८५॥ अतः उतना ही वर्ष जातक का जीवन कहना चाहिये॥ ८६॥

इत्युक्तं च प्रयाणे च पूर्वं रुद्राश्रयाद्द्विज ।
आयुर्योगसमाप्तिश्च कष्टयोगादिकारकम् ॥८७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रुद्राश्रयात्तु ह्येवं च निरुक्तं चायुषि द्विज।
किञ्चिद्विशेषरूपं च तवाग्रे दर्शयामि च ॥८८॥

उक्त योगादि निधन को प्रायः रुद्र के आश्रय से कहा है॥ ८७॥ अब कुछ विशेष रूप से कह रहा हूँ॥ ८८॥

मेषलग्ने विशेषेण आयुरुद्राश्रयान्तके।
कुष्ठरोगादि कुर्वीत पूर्णायुर्न समाप्यते ॥८९॥
द्वंद्वराशौ स्थितौ रुद्रौ प्राणी गौणद्वयेऽपि वा।
रुद्राश्रये तदन्ते वा आयुर्दायं भवत्यपि ॥९०॥

मेष लग्न में रुद्राश्रयांत में कुष्ठ रोगादि होता है और पूर्णायु को नहीं भोगता है॥ ८९॥ मिथुन राशि में रुद्र हो तो रुद्राश्रय में वा उसके अन्त में आयु की समाप्ति होती है॥ ९०॥

आयुर्वा योगभेदेन प्रथमे मध्यमोत्तमे।
दर्शयामि तवाग्रे च कथां शंभुप्रचोदिताम् ॥९१॥
स्वल्पायुः प्रथमे शूले मध्यमायुर्द्वितीयके।
दीर्घायुश्च तृतीयांते शूले च निधनं भवेत् ॥९२॥

पूर्व में जो अल्पायु, मध्यमायु और दीर्घायु योग कहा है॥ ९१॥ उसमें अल्पायु हो तो प्रथम शूल में, मध्यायु हो तो द्वितीय शूल में और दीर्घायु हो तो तृतीय शूलान्त तक आयु होती है॥ ९२॥

ततो फलविशेषार्थं माहेश्वरग्रहं द्विज।
लक्षयंति तवाग्रे च तस्मादायुर्विनिश्चितम् ॥९३॥
चिंतयेत्कारके लग्ने ह्यष्टमेशो महेश्वरः।
अथैवान्यप्रकारेण माहेश्वरं वदाम्यहम् ॥९४॥

ग्रह का निर्णय कह रहा हूँ॥ ९३॥ आत्मकारक से अष्टमेश महेश्वर ग्रह होता है। अन्य प्रकार के माहेश्वर ग्रह को कह रहा हूँ॥ ९४॥

कारके तुंगराशिस्थे स ग्रहो बलवत्तरः।
रिःफरन्ध्राधिपोर्मध्ये सोऽपि माहेश्वरो ग्रहः ॥९५॥
कारकाच्च ग्रहाभावे नाथो माहेश्वरो भवेत्।
रिष्फरन्ध्राधिपौ विप्र बले सामान्यतां यदि ॥९६॥

आत्मकारक अपनी उच्चराशि में हो तो आत्मकारक से १२, ६ वें भाव के स्वामियों में जो बली हो वहाँ महेश्वरग्रह होता है॥ ९५-९६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

द्वयं माहेश्वरं यातो यथा रुद्रग्रहौ द्वयम् ।
ताभ्यां च निर्णयार्थाय प्रकारान्यं वदाम्यहम् ॥ ९७॥

यदि दोनों में बल की समानता हो तो दोनों माहेश्वर होते हैं॥ ९७॥

स्वकारकस्य योगश्चेद्राहुकेतुरवीन्विना ।
माहेश्वरो भवत्येव विकल्पेन द्विजोत्तम ॥ ९८॥
कारकस्याष्टमे पापग्रहो माहेश्वरो भवेत् ।
रविचन्द्रौ च चान्द्रिश्च गुरुः शुक्रः शनिस्तमः ॥ ९९॥

यदि आत्मकारक के साथ राहु-केतु हों॥ ९८॥ अथवा आत्मकारक से आठवें हों तो कारक से षष्ठेश रवि, चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, शनि॥ ९९॥

शिखिना गणनायां च यः षष्ठः कारकग्रहात् ।
सोऽपि माहेश्वरो ज्ञेयो नवभागसमुच्चयात् ॥ १००॥

केतु में से जो छठें हो वह माहेश्वर होता है॥ १००॥

माहेश्वरग्रहस्यापि ब्रह्मसाहित्यकेन च ।
ततो ब्रह्मग्रहं वक्ष्ये विशेषेण फलाय वै ॥ १०१॥
लग्नाद्वा सप्तमाद्वापि रिपुरन्ध्रव्ययाधिपाः ।
एतेषु बलवान्विप्र मेषादि विषमस्थिते ॥ १०२॥

माहेश्वर ग्रह के अनुसार ही ब्रह्मग्रह की भी परिचर्या होने के कारण ब्रह्मग्रह का विचार कह रहा हूं॥ १०१॥ लग्न वा उससे सप्तम इन दोनों में जो बलवान् उससे ६। ८। १२ भाव के स्वामियों में जो बलवान् हो वह मेषादि विषम राशियों में हो॥ १०२॥

लग्नसप्तमयोर्मध्ये राशेश्च बलवान्भवेत् ॥
उच्चैरपृष्ठःभागाद्य संयोगो विद्यमानतः ॥१०३॥
एतद् गुणत्रयाद् युक्तः सोऽपि ब्रह्मग्रहः स्मृतः ।
लग्नस्य पृष्ठभागं च द्यूनाल्लग्नावधिर्द्विज ॥१०४॥

और लग्न वा सप्तम के पृष्ठभाग में उक्त तीनों गुणों से युक्त हो तो वह ब्रह्मग्रह होता है॥ १०३॥ सप्तम से लग्न पर्यन्त ६ भाव लग्न का पृष्ठ भाग॥ १०४॥

सप्तमस्य पृष्ठभागं षट्कलग्नादिकं द्विज ।
बलवान्विषमस्थोऽपि ब्रह्मखेटः स उच्यते ॥ १०५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मणा लक्षणाक्रांते बलवान्वापि पातयोः।
शनिराहुरथो केतुर्यदि षष्ठो ग्रहो द्विज ॥१०६॥

और लग्न से सप्तम भाव के अन्दर सप्तम का पृष्ठभाग होता है॥१०५॥ यदि ब्रह्मग्रह के लक्षण से युक्त शनि, राहु वा केतु हो तो इन में जो बलवान् हो, इनसे षष्ठेश ब्रह्मा होता है॥१०६॥

रव्यादिगणनायां च शन्यादौ तृतीयो ग्रहः।
स्थानात्षष्ठराशिगे च षष्ठराश्यधिपोऽथवा ॥१०७॥
सोऽपि ब्रहमग्रहो ज्ञेयो निर्विशंकं द्विजोत्तम।
बहुना ब्रह्मणाक्रांते को ग्रहो ग्राह्यमाणकः ॥१०८॥

सूर्यादि गणना से शनि आदि शनि से तीसरा ग्रह स्थान से ६ अथवा षष्ठेश॥१०७॥ यदि बहुत से ग्रह ब्रह्मा के लक्षण के हों तो वही ब्रह्मग्रह होता है, जिसका॥१०८॥

संदेहे निर्णयं चात्र तवाग्रे कथयामि च।
द्वित्र्यादिकग्रहाणां च योगो ब्रह्मेति लक्षितः ॥१०९॥
योगः स्वजातिर्यो ग्राह्यःकारकं याति यो ग्रहः।
बहूनामधिको भागः सोऽपि ब्रह्मा ग्रहोच्यते ॥११०॥

अधिक अंश होता है, वही ब्रह्मा होता है॥१०९-११०॥

राहुर्ब्रह्मत्वयोगेन अधिकारी यदा भवेत्।
विपरीतं विजानीयात्सर्वेषु न्यूनभागकम् ॥१११॥
इत्येकपापे पूर्वोक्तं ब्रह्मणा ग्रहकारकात्।
रन्ध्राधीशोऽष्टमस्थो वा जात्यप्राणैक्यवाक्यतः ॥११२॥

यदि राहु ब्रह्मयोग का अधिकारी हो तो वहाँ विपरीत समझना चाहिये अर्थात् न्यूनांश वाला ही ब्रह्मा होता है॥१११॥ अथवा आत्मकारक से अष्टमस्थ ग्रह वा अष्टमेश ब्रह्मा होता है॥११२॥

द्वौ ब्रह्मा विपरीतार्थे ह्यथवा बहुब्रह्मणा।
सामान्यभागान्तरे हि कतमो ग्राह्यमाणकः ॥११३॥
सर्वे भागसमानास्तु अग्रहात्सग्रहो बली।
इति न्यायेन विज्ञेयं बलवान् ब्रह्मणोच्यते ॥११४॥
ब्रह्मत्वेन प्रधानेन ब्रह्मकार्यं करोत्यपि।
स च ब्रह्मग्रहो ग्राह्यः पुरा शम्भुप्रचोदितः ॥११५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि पूर्वोक्त लक्षण से युक्त दो ब्रह्मा हों और अंशों में साधारण न्यूनाधिकता हो तो कौन सा ग्रह ब्रह्मा होगा। अथवा सभी के अंश समान हों तो जो ग्रह युक्त हो वही बली होता है, इत्यादि रीति से जो बलवान् हो वही ब्रह्मा होता है॥ ११३-११५॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि ब्रह्ममाहेश्वरस्य च।
विशेषेण फलं सम्यग्तवाग्रे द्विजनंदन॥ ११६॥
ब्रह्मग्रहाश्रितेशस्य दशादिः परिचिन्तयेत्।
माहेश्वरर्क्षपर्यन्तं जातकस्यायुषि द्विज॥ ११७॥
तत्तद्राशित्रिकोणेषु राशिरंतर्गते मृतिः।
चराच्च स्थिरपर्यन्तं दशायां चिन्तयेद् द्विज॥ ११८॥

हे द्विजनंदन! अब मैं विशेष रूप से ब्रह्म और माहेश्वरग्रहों के फल को तुमसे कह रहा हूँ॥ ११६॥ ब्रह्मग्रहाश्रित राशि की दशा को बनाना और माहेश्वर ग्रह की राशि की दशा को बनाना चाहिए। ब्रह्मग्रह की राशिदशा से माहेश्वर ग्रह की राशि दशा पर्यन्त ही जातक की आयु होती है॥ ११७॥ दशाओं के त्रिकोण राशियों के अंतर्दशा में मृत्यु होती है। अतः चर से स्थिर राशि की दशा पर्यन्त यह विचार करना चाहिये॥ ११८॥

तथा महादशायां च आयुर्दायं विलोकयेत्।
विंशोत्तर्यादिकं चैव यथान्यायेषु योजयेत्॥ ११९॥
माहेश्वरस्य यो राशिरष्टमेशाश्रयी द्विज।
तत्तद्राशित्रिकोणेषु राशावन्तर्गते मृतिः॥ १२०॥

तथा विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा में भी आयु का विचार करना चाहिये॥ ११९॥ अथवा माहेश्वर से अष्टमेश के आश्रयीभूत जो राशि उस राशि से त्रिकोण राशि की अन्तर्दशा में मृत्यु होती है॥ १२०॥

अत्राब्द इति निर्देशात्तत्तद्राशिदशाक्रमः।
अब्दो द्वादशधाभागे अंतरैकेकराशि च॥ १२१॥
षष्ठाष्टमेशौ भवतो मारकावष्टमेश्वरः।
प्रायेण मारको राशिदशास्त्वत्र विशेषतः॥ २२॥

यहाँ पर वर्ष दशाक्रम से लेना चाहिये और वर्ष में १२ का भाग देने से अन्तर्दशा का वर्ष होता है॥ १२१॥ षष्ठेश और अष्टमेश मारक होते हैं, किन्तु प्रायः अष्टमेश ही मुख्य कारक होता है॥ १२२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठभे पापभूयिष्ठे षष्ठेशो मुख्यमारकः।
षष्ठात् त्रिकोणगो वापि मुख्यमारक इष्यते ॥१२३॥
मध्यायुषि मृतिः षष्ठदशायामष्टमस्य वा।
षष्ठात् त्रिकोणस्य पुनर्दीर्घाल्पविषये भवेत् ॥१२४॥

छठें स्थान में अधिक पापग्रह हों तो षष्ठेश ही मुख्यमारक होता है अथवा षष्ठेश से त्रिकोण राशि मारक होती है॥१२३॥ यदि मध्यायु हो तो छठी वा आठवीं दशा में मृत्यु होती है। दीर्घायु और अल्पायु हो तो छठे से त्रिकोण की दशा में मृत्यु होती है॥१२४॥

षष्ठे बलयुते तस्य त्रिकोणे मृतिमादिशेत्।
षष्ठेशश्चेद्बलाढ्यःस्यात्तत्त्रिकोणे मृतिर्वदेत् ॥१२५॥
व्यवस्थेयं समस्तापि कारकादिदशास्वपि।
बलिनः शुक्रशशिनोर्ग्राह्यं षष्ठाष्टमादिकम् ॥१२६॥

यदि छठा स्थान बली हो तो उसके त्रिकोण में मृत्यु होती है, यदि षष्ठेश बलवान् हो तो उसके त्रिकोण में मृत्यु होती है॥१२५॥ यह व्यवस्था सभी कारक दशाओं में होती है। शुक्र-चन्द्रमा बली हों तो छठें, आठवें को लेना चाहिये॥१२६॥

इति रुद्रमाहेश्वरब्रह्मग्रहादिमारकाध्यायः।

अथ पित्रादिनिर्याणाध्यायः

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि पित्रादेश्च द्विजोत्तम।
योगं निर्याणकाख्यातं यथा शम्भुप्रणोदितम् ॥१॥
लग्नसप्तमयोर्मध्ये यो राशिर्बलवान्द्विज।
तस्य राशेः समारभ्य क्रमेण पूर्ववद् द्विज ॥२॥

हे द्विजोत्तम ! अब मैं पित्रादिकों के मरण समय को कह रहा हूँ जैसा कि शंकर जी ने कहा है॥१॥ लग्न और सप्तम में जो राशि बलवान् हो उस राशि के अनुसार॥२॥

प्रवर्त्तकदशारीत्या रुद्रशूलदशान्तरे।
भविष्यति पितुर्मृत्युर्निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥३॥
लग्नाद्वा सप्तमाद्वापि नवराशिर्बली द्विज।
निर्विशंकं भवेत्तस्य शम्भुना कथितं पुरा ॥४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

प्रवर्तमान दशा से रुद्रशूल के दशा अन्तर में निश्चय ही पिता की मृत्यु होती है॥ ३॥ लग्न और सप्तम में जो बली राशि हो उससे नवम राशि वह पितृकारक होती है॥ ४॥

मातापित्रोः कारकाभ्यां चिंतयेत्पूर्ववद्द्विज।
तदायुर्निधनः चापि दीर्घादीनां प्रभेदतः॥ ५॥
भानुभार्गवयोर्मध्ये सद्वीर्याधिक्यतो द्विज।
ग्रहादित्यादिरीत्या च सखेटः पितृकारकः॥ ६॥

एवं माता-पिता के कारकों से पूर्ववत् उनके आयु का विचार करना चाहिये॥ ५॥ सूर्य और शुक्र में जो बली हो वह सूर्यादि ग्रहों में पितृकारक होता है॥ ६॥

चन्द्रमंगलयोर्मध्ये तथैव रविशुक्रयोः।
बलेन रहितः सोऽपि पापग्रहनिरीक्षितः॥ ७॥
पित्रादिकर्त्ता भजते यथाक्रमं द्विजोत्तम।
उभयोर्बलसाम्ये च उभौ पित्रादिकारकौ॥ ८॥

चन्द्र-भौम में जो बलवान् हो वह मातृकारक होता है, इन चारों ग्रहों में निर्बल भी कारक होता है। किन्तुं वह निर्बल पापग्रह से देखा जाता हो तो॥ ७॥ दोनों के बल समान हों तो दोनों पित्रादिकारक होते हैं। यहाँ दो प्रकार से बली और निर्बल लेना चाहिए॥ ८॥

द्विविधं चिंत्तयेत्तत्र प्राण्यप्राणिविभेदतः।
पित्रादिकारकस्यैवं प्राणिफलं वदाम्यहम्॥ ९॥
पित्रादिकारके विप्र शुभग्रहनिरीक्षिते।
मातृकारकाश्रयीभूत - राशिरेतत्त्रिकोणके॥ १०॥

इस प्रकार दो तरह के बली और निर्बल कारक होते हैं जिसमें बलवान् पित्रायादि कारक के फल को कह रहा हूँ॥ ९॥ पित्रादि कारक शुभग्रह से देखा जाता हो एवं मातृकारक भी शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो उनके आश्रयीभूत राशि के त्रिकोण राशि की॥ १०॥

दशायां निधनं वाच्यं मातापित्रोरथ त्रयम्।
इति प्राणिकारकस्य तवाग्रे कथितं फलम्॥ ११॥
अप्राणिकारकस्यैवमष्टमेशो बलान्वितः।
तस्याश्रयीभूतराशित्रिकोणे निधनं भवेत्॥ १२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दशा में माता-पिता की मृत्यु कहना चाहिये, इसप्रकार बली कारक से फल को कहा॥ ११॥ तथा निर्बल कारक से अष्टमेश बली हो तो उसके आश्रयी भूतराशि के त्रिकोण राशि की दशा में मृत्यु होती है॥ १२॥

यदा रंध्रेशे वीर्याढ्यं तच्छूले निधनं भवेत्।
पितृमातृकारकयोः शूले निधनमेव च॥ १३॥

यदि अष्टमेश बली हो तो उसके शूल में अथवा पितृ-मातृ कारक के शूल में मृत्यु होती है॥ १३॥

अथ बाल्ये पितृमरणयोगमाह-

पित्रोः कारकयोर्विप्र प्राण्यप्राणिहीनोऽपि च।
अर्कहीने पापयोगे शुभयोगविवर्जिते॥ १४॥
द्वादशाद्बान्नयून वर्षे पित्रोर्मृत्युयथाक्रमम्।
रविदृष्टावशुभयोगे नायं योगो द्विजोत्तम॥ १५॥

पितृ कारक और मातृकारक के बली और निर्बल होते हुये भी यदि कारक रवि को छोड़कर अन्य पापग्रहों के साथ हों तथा शुभग्रह से योग न होता हो तो॥ १४॥ बारह वर्ष की अवस्था के अन्दर ही बालक के माता-पिता की मृत्यु हो जाती है। सूर्य देखते हों और पाप ग्रह का योग होता हो तो यह योग नहीं होता है॥ १५॥

रव्यारूढ विलग्नेऽपि पित्रोर्भावं विचारयेत्।
तद्दशायां फलं वाच्यं पित्रोर्दुःखसुखादिकम्॥ १६॥

रवि के आरूढ़ लग्न से भी पितृभाव का विचार कर उनकी दशा में माता-पिता के दुःख सुख का विचार करना चाहिये॥ १६॥

अथ मातुर्निर्याणम्-

लग्नाद्वा सप्तमाद्वापि बली राशितुर्यकः।
तस्याः शूलदशायां च मातुर्मृत्युर्न संशयः॥ १७॥

लग्न वा सप्तम में जो बली हो उससे चौथी राशि की शूलदशा में माता की मृत्यु होती है॥ १७॥

अथ भ्रातृनिर्याणम्-

लग्नाद्वा सप्तमाद्वापि बली वीक्षेत्तृतीयकम्।
तस्याः शूलदशायां च भ्रातृनिर्याणमेव च॥ १८॥

लग्न और सप्तम में जो बली हो उससे राशि की शूलदशा में भाई का निधन होता है॥ १८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ ज्येष्ठभ्रातुर्निर्याणम्-

लग्नाद्वा सप्तमाद्वापि लाभराशिर्बली द्विज ।
तस्याः शूलदशायां च निर्याणमग्रजस्य च ॥१९॥

लग्न वा सप्तम में जो बली हो उससे ११वीं राशि की शूलदशा में ज्येष्ठ भाई की मृत्यु होती है॥ १९॥

भगिनी-पुत्रयोर्निर्याणम्-

लग्नाद्वा सप्तमाद्वापि राशिपंचमके बली ।
तस्याः शूलदशायां च निर्याणं भगिनीपुत्रयोः ॥२०॥

लग्न और सप्तम में जो बली हो उससे पांचवी राशि की शूलदशा में भगिनी और पुत्र का निर्याण होता है॥ २०॥

अथ कलत्रनिर्याणमाह-

कलत्रकारकः खेटस्तथा स्त्रीराशिचिन्तनम् ।
तत्त्रिकोणदशायां च कलत्रनिधनं भवेत् ॥२१॥

स्त्रीकारक और सप्तम में जो बली हो उससे त्रिकोण राशि की दशा में स्त्री का निधन होता है॥ २१॥

अथान्येषां निर्याणमाह-

तत्तत्कारकाश्च ये ये च त्रिकोणदशांतरे ।
तेषां च मातुलोदीनां निधनं भवति ध्रुवम् ॥२२॥

इसके अतिरिक्त जिसके निधन का विचार करना हो उसके कारकों के आश्रयी- भूत राशि की दशा अन्तर में उन लोगों का (मामा आदि का) निधन कहना चाहिए॥ २२॥

अथ मृत्युसमयेकष्टादिज्ञानमाह-

लग्नाद्वा कारकाच्चापि तृतीये पापखेचरे ।
युते दृष्टेऽथवा विप्र दुष्टं मरणमुच्यते ॥२३॥
तत्तत्कारकतदीशात्तृतीये पापयोगकृत् ।
तेषां तेषां प्रवक्तव्यं दुष्टं मरणमेव च ॥२४॥

लग्न वा कारकसे तीसरे स्थान में पापग्रह युत हों वा देखते हों तो जातक का दुर्मरण (कष्ट से) होता है॥ २३॥ जिन लोगों के कारक और भावेश से तीसरे भाव में पापग्रह का योग हो उनका दुष्ट मरण कहना चाहिये॥२४॥

तत्तद्भावात्कारकेशात्तृतीये शुभदृष्टियुक् ।
तेषां तेषां प्रवक्तव्यं मरणं शुभमेव च ॥२५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभाशुभद्वये योगे दृष्टौ वापि तृतीयके।
शुभाऽशुभात्मकं विप्र मरणं भवति ध्रुवम् ॥२६॥

जिन-जिन भावों वा कारकेशों से तीसरे भाव में शुभग्रह का योग और दृष्टि हो तो उनका मरण सुख से होता है॥ २५॥ यदि शुभ-पाप दोनों युत होकर देखते हों तो सुख-दुःख दोनों मरण के समय होता है॥ २६॥

अथ मरणनिमित्तान्याह-

तृतीये भानुना दृष्टे तथा युक्ते बलाढ्यके।
राजहेतोश्च मरणं निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥२७॥
सहजे शशिना युक्ते दृष्टे वा यक्ष्मया मृतिः।
तृतीये शनिराहुभ्यां दृष्टे वापि युतेन वा ॥२८॥

तृतीय भाव बलवान् सूर्यसे युत वा दृष्ट हो तो राजाके कारण मृत्यु होती है॥२७॥ तीसरे भाव को चन्द्रमा देखता हो वा उसमें युत हो तो यक्ष्मा रोग से मृत्यु होती है। तीसरा भाव शनि-राहु से युत वा दृष्ट हो तो॥ २८॥

विषार्त्तिमरणं वाच्यं जलाद्वा वह्निपीडनात्।
गर्तादुच्चाच्च पतनं बंधनाद्वा मृतिर्भवेत् ॥२९॥
तृतीये चन्द्रमान्दी च षष्ठे वापि युते द्विज।
कृमिकुष्ठादिना तस्य मरणं च विनिर्दिशेत् ॥३०॥

विष से वा जल से अथवा अग्नि पीड़ा से मृत्यु होती है। अथवा ऊँचाई से गिरने वा बंधन से मृत्यु होती है॥२९॥ दूसरे भाव में वा छठे भाव में चन्द्रमा तथा गुलिक हों वा देखते हों तो कृमि वा कुष्ठरोग से मृत्यु होती है॥ ३०॥

तृतीये गुरुणा दृष्टे युक्ते शोकादिना मृतिः।
तृतीये भृगुयुग्दृष्टे मेहरोगेण वै मृतिः ॥३१॥
बहुयुक्ते तृतीये च बहुरोगयुता मृतिः।
तृतीये केतु सत्खेटैर्योगे दृष्टेऽथवा द्विज ॥३२॥

तीसरे भाव को गुरु देखता हो वा उसमें युत हो तो शोफ रोग से मृत्यु होती है॥ ३१॥ यदि बहुत से ग्रह तीसरे भाव में हो तो बहुत रोगों से मृत्यु होती है। तीसरे भाव में शुभ ग्रह हों वा देखते हों॥ ३२॥

तत्रैव चन्द्रयोगे च तत्तद्रोगेण वै मृतिः।
कुजेन व्रणशस्त्राग्निदाहाद्यैर्मृत्युमादिशेत् ॥३३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीये सौम्यसंयुक्ते दृष्टे वापि तथा द्विज ।
ज्वरेण तस्य मृत्युः स्यान्निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ ३४ ॥

और चन्द्रमा का भी योग हो तो उनके रोग से मृत्यु होती है। तीसरे भाव में मंगल हो या उसे देखता हो तो व्रण-शस्त्र अग्नि से जलने आदि से मृत्यु होती है॥ ३३॥ तीसरे भाव में बुध हो अथवा उसे देखता हो तो ज्वर से मृत्यु होती है॥ ३४॥

अथ मरणप्रदेशज्ञानमाह-

तृतीये शुभयोगेन शुभदेशे मृतिर्भवेत् ।
पापेन कीकटे देशे मिश्रे मिश्रस्थले मृतिः ॥ ३५ ॥

तीसरे भाव में शुभग्रह का योग हो तो शुभ प्रदेश में मृत्यु होती है। पाप ग्रह का योग हो तो दुष्ट स्थान में और शुभ-पाप दोनों हो तो मिश्र स्थान में मृत्यु होती है॥ ३५॥

अथ ज्ञानपूर्वकं मृत्युमाह-

तृतीये गुरुशुक्राभ्यां योगे ज्ञानेन वै मृतिः ।
गुरुशुक्रातिरिक्तानां योगे शिथिलता मृतौ ॥ ३६ ॥

तीसरे भाव में गुरु-शुक्र हों तो ज्ञानपूर्वक मृत्यु होती है। इन दोनों से भिन्न ग्रह हों तो मृत्यु समय में अज्ञानता होती है॥ ३६॥

इति निधनप्रकरणम्।

❖

अथ मारकभेदाध्यायः

त्रिविधाश्चायुषो योगाः स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमाः ।
द्वित्रिंशात्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत् ।
चतुःषष्ट्याः पुरस्तात्तु ततो दीर्घमुदाहृतम् ॥ १ ॥
उत्तमायुः शतादूर्ध्वं ज्ञातव्यं मुनिसत्तम ।
चतुर्विंशतिवर्षान्तमायुर्ज्ञातुं न शक्यते ॥ २ ॥

तीन प्रकार के आयु के योग कहे गये हैं जो कि अल्पायु, मध्यमायु और उत्तमायु वा दीर्घायु के नाम से प्रसिद्ध हैं। ३२ वर्ष से पूर्व अल्पायु होती है, इसके बाद ६४वर्ष की अवस्था तक मध्यमायु होती है। इसके बाद दीर्घायु होती है॥ १॥ इसके बाद १००वर्ष तक दीर्घायु और इसके ऊपर उत्तमायु होती है। जन्म से २४ वर्ष पर्यन्त आयु का ज्ञान नहीं होता है अर्थात् उक्त समय तक आयु के ऊपर निर्भर नहीं रहना चाहिये॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जपहोमचिकित्साद्यैर्बालरक्षां तु कारयेत् ।
पितृदोषैर्मृताः केचित्केचिन्मातृग्रहैरपि ॥ ३ ॥
अपरेऽरिष्टयोगाच्च त्रिविधा बालमृत्यवः ।
अल्पायुर्योगजातस्य विपत्तारां मृतिं वदेत् ॥ ४ ॥

तब तक यानी २४ वर्ष की अवस्था पर्यन्त जप, होम-चिकित्सा आदि से बालकों की रक्षा करनी चाहिये। उक्त वर्ष के अन्दर कोई पिता के ग्रहों से, कोई माता के ग्रहों से ॥ ३ ॥ और कोई अरिष्ट योग से मर जाते हैं, इस तरह तीन प्रकार से बालकों की मृत्यु होती है। जिनकी अल्पायु होती है उनकी विपत्तारा की दशा में मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

जातस्य मध्यमायुष्ये प्रत्यरौ च मृतिर्भवेत् ।
दीर्घायुर्योगजातानां वधभे तु मृतिर्भवेत् ॥ ५ ॥
अष्टमर्क्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम् ।
द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ६ ॥

मध्यमायुयोग वाले की प्रत्यरि तारा की दशा में और दीर्घायु योग वाले की वध तारा की दशामें मृत्यु होती है ॥ ५ ॥ जन्मलग्न से तीसरा और आठवाँ स्थान आयु का होता है और दूसरा तथा सातवाँ मारक स्थान होता है ॥ ६ ॥

महामारकसंज्ञौ तौ मांदिकेतू इति स्मृतौ ।
जायाकुटुम्बकाधीशौ मारकावष्टमेश्वरौ ॥ ७ ॥
प्रायेण मारको राशिदशास्तत्राविशेषतः ।
षष्ठभे पापभूयिष्ठे षष्ठेशो मुख्यमारकः ॥ ८ ॥

मांदि और केतु महामारक होते हैं और सप्तम, द्वितीय और आठवें भाव के स्वामी मारकेश होते हैं ॥ ७ ॥ प्रायः इन स्थानों की राशियां मारक होती हैं। छठे स्थान में अधिक पाप ग्रह हो तो षष्ठेश मुख्य मारक होता है ॥ ८ ॥

षष्ठत्रिकोणगो वापि मुख्यमारक इष्यते ।
मध्यायुषि मृतिः षष्ठदशायामष्टमस्य वा ॥ ९ ॥
षष्ठात्त्रिकोणस्य पुनर्दीर्घाल्पविषयो भवेत् ।
षष्ठे बलयुते तस्य त्रिकोणे मृतिमादिशेत् ॥ १० ॥

छठे से त्रिकोण भी मारक होता है। मध्यायु में छठे या आठवीं दशा में मृत्यु होती है ॥ ९ ॥ दीर्घायु में षष्ठ से त्रिकोण की दशा में मृत्यु होती है। षष्ठस्थान वा षष्ठेश बली हो तो उसके त्रिकोणकी दशामें मृत्यु होती है। १० ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठेशश्चेद्बलाढ्यः स्यात्तत्त्रिकोणे मृतिं वदेत् ।
व्यवस्थेयं समस्तापि कारकादिदशास्वपि ॥ ११ ॥
मारकेशदशाकाले मारकस्थस्य पापिनः ।
पाके पापयुजां पाके संभवे निधनं भवेत् ॥ १२ ॥

यह व्यवस्था सम्पूर्ण मारक दशा के लिये हैं ॥ ११ ॥ मारकेश की दशा में मारकस्थान स्थित पापग्रहके अन्तर्दशामें संभावना हो तो मृत्यु होती है । १२ ।

असंभवे व्ययाधीशदशायां मरणं नृणाम् ।
अभावे व्ययभावेशसम्बंधिग्रहभुक्तिषु ॥ १३ ॥
तद्भावेऽष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः ।
मंदश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रहयोगतः ॥ १४ ॥

यदि असंभव हो तो व्ययेश की दशा में मृत्यु होती है। इसके अभाव में व्ययेश के सम्बंधी ग्रह के अंतर में मृत्यु होती है ॥ १३ ॥ इसके अभाव में अष्टमेश की दशा में मृत्यु होती है। शनि पाप ग्रह से युक्त हो और मारकेश के साथ योग करता हो तो ॥ १४ ॥

तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता पापकृच्छनिः ।
मारक ग्रहसम्बंधी पापकर्त्ता शनिस्तदा ।
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता भवति ध्रुवम् ॥ १५ ॥
एतद्दशांतभुक्त्यादौ विचार्य्यैव मृतिं वदेत् ।
षष्ठद्रेष्काणपश्चैव तथा वैनाशिकाधिपः ॥ १६ ॥

सभी ग्रहों को छोड़कर वही मारक हो जाता है ॥ १५ ॥ छठे द्रेष्काण (लग्न से २२ वें द्रेष्काण) का स्वामी और २३वें नक्षत्र का स्वामी ॥ १६ ॥

विपत्ताराप्रत्यरीशौ वधमेशस्तथैव च ।
आद्यंतपौ च विज्ञेयौ चन्द्राक्रांतगृहात्तथा ॥ १७ ॥
दशाक्षिप्तेषु कालेषु मारको मरणप्रदः ।
दुष्टतारापतेः पाके निर्याणं कथितं बुधैः ॥ १८ ॥

विपत्तारा, प्रत्यरितारा, वध तारा का स्वामी, चन्द्र राशि से द्वितीय द्वादश के स्वामी ॥ १७ ॥ अपने-अपने दशाकाल में मारक होते हैं अथवा पूर्वोक्त दुष्ट ताराओं के स्वामी की दशा में मृत्यु होती है ॥ १८ ॥

मारकग्रहाश्रितो राशिर्मारकस्वामिनोऽथवा ।
ताभ्यां महादशाकाले विंशोत्तर्याः स्थिरादिकः ॥ १९ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पापे मृत्युर्विजानीयान्निर्विशंकं द्विजोत्तम ।
मारका बहवः खेटा यदि वीर्यसमन्वितः ॥ २० ॥

मारकेश के आश्रित राशि वा मारकेश जिस भाव में बैठा हो उस राशि की महादशा में पापग्रह के अंतर में विंशोत्तरी के अनुसार मृत्यु होती है॥ १९॥ यदि बलवान् बहुत से ग्रह हों तो सबसे बली होता है॥ २०॥

तत्तद्दशान्तरे विप्ररोगकष्टादिसंभवः ।
षष्ठाधिपदशायां च निधनं भवति ध्रुवम् ॥ २१ ॥
न्यूनातिरिक्त भेदेन बहुखेटास्तु मारकाः ।
दुर्बलाश्रयराशीशदशास्वल्पार्तिदा भवेत् ॥ २२ ॥

वही मारक होता है किन्तु उन लोगों के दशा-अन्तर के समय कष्टादि होता है, षष्ठेश की दशा में मृत्यु होती है॥ २१॥ न्यूनातिरिक्त अधिक मारक हों तो दुर्बल राशीश की दशा में अल्प कष्ट होता है॥ २२॥

प्रबलस्य दशायां च महारोगार्त्तिमृत्युवत् ।
भयशोकमृताद्भीतिस्तस्कराग्निभयं भवेत् ॥ २३ ॥
मारकस्य दशायां च महत्यां निधनाश्रयी ।
भूतामंतर्दशामाह तवाग्रे कथयामि भोः ॥ २४ ॥

प्रबल की दशा में महारोग से कष्ट और मृत्यु होती है और भय, शोक, मृत्युभय, चोरभय तथा अग्निभय होता है॥ २३-२४॥

मारकग्रहाश्रयीभूतमहापाके विचिंतयेत् ।
कारकाच्च विलग्नाद्वा सप्तमाद्वा द्वितीयकम् ॥ २५ ॥

मारकेश के आश्रित राशि की दशा-अंतर्दशाकाल में उपरोक्त सभी बातोंका विचार करना चाहिये, कारकसे अथवा लग्नसे, सप्तमसे, दूसरे। २५।

षष्ठाष्टरिःफनाथान्तमपहाराष्टके मृतिः ।
तेषामंतर्दशाधीशास्तेषां मध्ये बलाढ्यकः ॥ २६ ॥
तदीयान्तर्दशाकाले निधनं भवति ध्रुवम् ।
अपरा पापकाले तु रोगदुःखार्तिवान्द्विज ॥ २७ ॥

छठे, आठवें, बारहवें – इन आठों के स्वामियों की दशादि में मृत्यु कहना, इनमें भी बलवान्।।२६।। अन्तर्दशेश के समय में मृत्यु होती है और अन्य लोगों की अंतर्दशा आदि में रोग-दुःख आदि होता है॥ २७॥

इति मारकभेदाध्यायः।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथाष्टकवर्गाध्यायः

ज्ञात्वादौ करणस्थानं विन्दुरेखे च वर्गणाम् ।
क्रमादष्टकवर्गस्य पृथक्कृत्य फलं वदेत् ॥ १ ॥

पहले भाव और ग्रहों के करण (शून्य) स्थान (रेखा) अर्थात् बिन्दु और रेखाओं का भली भांति ज्ञान करके तब अष्टकवर्ग के फल को कहना चाहिये। (इसका विस्तृत विवरण उत्तरार्ध में देखना चाहिये) ॥ १ ॥

अथ रवेरष्टकवर्गः

स्वारार्किभ्यो दिनेशः स्वसुखमृतितपःरवास्तलाभाद्ययातः
शुक्रादस्तारिरिष्फे अरितनयतपोलाभवर्त्तीसुरेज्यात् ।
चन्द्राल्लाभारिकर्मत्रिषु शशितनयात्सांत्यधर्मात्मजेषु
प्रोक्तो लग्नाद्व्ययांबूपचयगृहगतः सुप्रशस्तोऽष्टवर्गात् ॥ २ ॥

अपने स्थान से तथा भौम और शनि से १, २, ४, ८, ६, १०, ७ और ११ इन स्थानों में सूर्य शुभफलदायक होता है। शुक्र से ७, ६, १२ स्थानों में, गुरु से ६, ५, ६, ११ स्थानों में, चन्द्रमा से ११, ६, १०, ३ स्थानों में, बुध से पूर्वोक्त स्थानों (११।६।३।१०) के साथ ११, ६ स्थानों में और जन्मलग्न से १२, ४, ३, ६, १०, ११ स्थानों में शुभफल देता है अर्थात् रेखाप्रद होता है॥ २॥

रवेरष्टकवर्गाङ्काः

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
१	३	१	३	५	६	१	३
६	६	५	५	६	७	४	४
४	१०	४	६	६	१२	४	६
७	११	७	६	११		७	१०
८		८	१०			८	११
६		६	११			६	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथ चन्द्राष्टकवर्गः-

इन्दुर्लग्नात्षडायत्रिदशषु कुसुतात्सस्वधर्मात्मजेषु
स्वात्सास्ताद्येषु सूर्यात्समदनमृतिषु त्र्यायधीषट्सु मंदात् ।
ज्ञात्केन्द्रात्मजाष्टत्रिषु विबुधगुरोःकेन्द्ररंध्रन्त्यलाभे
शुक्राद्धीधर्मबंधुस्मरसहजनभो लाभगश्च प्रशस्तः ॥ ३ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्राष्टक वर्ग चक्रम्

सोम	१	३	६	७	१०	११		
मंगल	२	३	५	६	९	१०	११	
बुध	१	३	४	५	७	८	१०	११
गुरु	१	४	७	८	१०	११	१२	
शुक्र	३	४	५	७	९	१०	११	
शनि	३	५	६	११				
रवि	३	६	७	८	१०	११		
लग्न	३	६	१०	११				

जन्मलग्न से ६, ११, ३, १० स्थानों में चन्द्रमा शुभफल देता है। भौम से २, ३, ५, ६, ९, १०, ११ स्थानों में, अपने स्थान से १, ३, ६, ७, १०, ११ स्थानों में, सूर्य से ३, ६, ७, ८, १०, ११ स्थानों में, शनि से ३, ११, ५, ६, स्थानों में, बुध से १, ४, ७, १०, ५, ८, ३, स्थानों में, गुरु से १, ४, ७, १०, ८, १२, ११ स्थानों में तथा शुक्र से ५,९,४,७,३,१०,११ स्थानों में शुभफल देता है॥ ३॥

अथ भौमाष्टकवर्गः-

केन्द्रायस्वाष्टगः स्वादुपचयतनयेष्वर्कतः षट्त्रिलाभे
प्रालेयांशोः शुभश्च प्रथमसहजषट्लाभमध्येषु लग्नात्।
ज्ञात्षट्त्र्ययात्मजेषु व्ययरिपुदशमायेषु जीवाच्च
शुक्रात् षट्लाभांत्याष्टमेषु क्षितिज इनसुतात्केन्द्रायधर्मे ॥ ४॥

भौम अपने स्थान से १, ४, ७, १०, ११, २, ८ स्थानों में शुभफल देता है। सूर्य से ३, ६, १०, ११, ५ स्थानों में, चन्द्रमा से ६, ३, ११ स्थानों में, लग्न से १, ३, ६, ११, १० स्थानों में, बुध से ६, ३, ११, ५, स्थानों में, गुरु से १२, ६, १०, ११ स्थानों में, शुक्र से ६, ११, १२, ८ स्थानों में और शनि से १, ४, ७, १०, ११, ९ स्थानों में शुभ फल देता है॥ ४॥

अथ भौमाष्टकवर्गचक्रम्

मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	लग्न
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
१०				१०			
११				११			

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ बुधाष्टकवर्गः-

ज्ञःशुक्रात्स्वाद्यलाभाष्टमनवमसुखेसत्रिपुत्रेकुजार्क्याः
साज्ञा दारेऽथ जीवाद्व्ययरिपुनिधनायेषुशस्तो दिनेशात् ।
धीधर्मान्त्यारिलाभे त्रितनुदशयुते स्वात्सषडाप्तिरंध्रे
व्योमाम्बुधिरिंदुतोऽरिस्वमृतितनुव्योमलाभाब्धिलग्नात् ॥५॥

बुध ग्रह शुक्र से २, १, ११, ८, ६, ४, ३, ५ स्थानों में शुभ फल होता है। शनि से १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११ स्थानों में, गुरु से १२, ६, ८, ११ स्थानों में, सूर्य से ५, ६, १२, ६, ११ स्थानों में, अपने स्थान से ५, ६, १२, ६, ३, १, १० स्थानों में, चन्द्रमा से २, ४, ६, ८, १०, ११ और लग्न से ६, २, ८, १, १०, ११, ४ स्थानों में शुभफल देता है॥ ५॥

अथ बुधाष्टकवर्गचक्रम् -

बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	लग्न
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	६	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
६		५	८	१२	१०	८	८
१०		८	६		११	६	१०
११		६	१०			१०	११
१२		११	११			११	

अथ गुर्वष्टकवर्गः-

जीवो भौमात्स्वकेन्द्रागममृतिषु रवेः सधीधर्मेष्वथश्चात् ।
स्वत्रिष्विन्दुजात्षट्स्वसुखसुततनुर्व्योमधर्मागमेषु ॥
लग्नात्सास्तेषु चन्द्रात्स्मरगुरुधनधीप्राप्तिभेष्वर्कपुत्रात् ।
धीषट्त्र्यंतेषु शुक्रात्स्वसुतशुभमतो लाभविद्वेषिभेषु ॥ ६ ॥

गुरु भौम से २, १, ४, ७, १०, ११, ८ स्थानों में शुभफल देता है, सूर्य से १, २, ४, ५, ८, ६, १०, ११ स्थानों में, बुध से ६, २, ४, ५, १, १०, ६, ११ स्थानों में, लग्न से १, २, ३, ४, ५, ६ ७, १०, ११ स्थानों में, चंद्रमा से ७, ६, २, ५, ११ स्थानों में, शनि से ५, ६, ३, २ स्थानों में, शुक्र से २, ५, ६, ११, ६ स्थानों में शुभफल देता है॥ ६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ गुर्वष्टकवर्गचक्रम्-

गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	लग्न
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	४	७	४	४	४
४	६	१२	५	६	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	६	७
१०			६		१२	१०	६
११			१०			११	१०
			११				११

अथ शुक्राष्टकवर्गः-

चन्द्रो व्यस्तारिखेषु व्यरिमदननभोऽन्त्येषु लग्नात्प्रशस्तो व्यंतास्तारातिषु स्वाद्व्ययनिधनभवेष्वर्कतो दैत्यमंत्री ।
धीधर्माष्टास्तिबंधुत्रिदशसु रविजाद्धीतपःस्वाष्टलाभे जीवात् ज्ञाद्धीत्रिलाभक्षतनवसुकुजाद्धीभवापोक्लिमेषु ॥७॥

शुक्र चन्द्रमा से ७, ६, १० स्थानों को छोड़कर शेष १, २, ३, ४, ५, ८, ६, १०, ११, १२ स्थानों में शुभफल देता है। लग्न से ६, ७, १०, १२ को छोड़कर शेष स्थानों में, अपने स्थान से १२, ६, ७ को छोड़कर शेष स्थानों में, सूर्य से १२, ८, ११ स्थानों में, शनि से ५, ६, ८, ११, ४, ३, १० स्थानों में, गुरु से ५, ६, २, ८, ११ स्थानों में, बुध से ५, ३, ११, ६, ६ स्थानों में और भौम से ५, ११, ३, ६, ६, १२ स्थानों में शुभफल देता है॥७॥

अथ शुक्राष्टकवर्गचक्रम्-

शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	लग्न
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	६	३
४	८		४	६	६	१०	४
५	६		५	११	११	११	५
८	१०		८	१२			८
६	११		६				६
१०			११				११
११			१२				

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ शनेरष्टकवर्गः-

स्वात्सौरिस्त्र्यायपुत्रारिषु धरणिसुतात्सव्ययाज्ञेषु ।
सूर्यात्केन्द्रेस्वायाष्टसु ज्ञाद्वायमृतिस्वभवारातिधर्मेषु ।
चन्द्रात्षट्त्र्यायस्थो विलग्ना दुपचयहिबुकाद्येषुषट्त्र्याप्ति
रिष्फेषु शुक्राद्वाचस्पतेश्च व्ययतनयभवारातिषु सुप्रशस्तः ॥ ८ ॥

शनि अपने स्थान से ३,११,५,६ स्थानों में शुभफल देता है। भौम से ३,५,६, १२,१० स्थानों में, सूर्य से १, ४, ७, १०, २, ११, ८ स्थानों में, बुध से १२, ८, २, ११, ६, ८ स्थानों में, चन्द्रमा से ६, ३, ११ स्थानों में, लग्न से ३, ६, १०, ११, १ स्थानों में, शुक्र से ६, ३, ११, १२ स्थानों में, गुरु से १२, ५, ११, ६ स्थानों में शुभफल देता है॥ ८॥

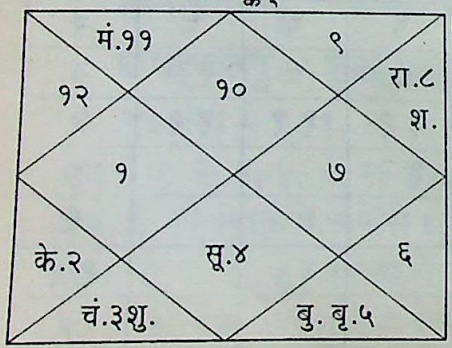
अथ शनेरष्टकवर्गचक्रम्-

शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	लग्न
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	०	१२	३	९
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

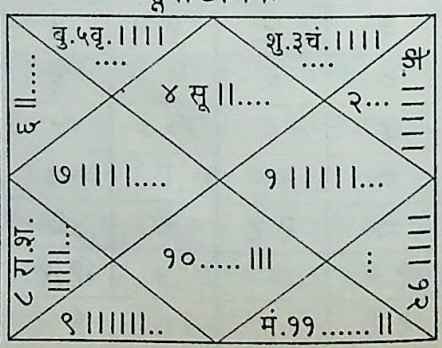
अष्टकवर्गसाधन-

सूर्याष्टकवर्ग में सूर्य अपने स्थान से (जन्म के समय जिस राशि में है) १।२।४।७।८।९।१०।११ स्थान में शुभ फल देता है तथा अन्य स्थानों में अशुभ फल देता है। जैसे निम्नलिखित जन्माङ्कचक्र में सूर्य कर्क राशि में है, अतः ४।५।७।१०।११। १२।१।२ राशियों में शुभ फलसूचक रेखा देगा और अन्य राशियों में बिन्दु रूप अशुभसूचक रेखा देगा। इसी प्रकार सभी ग्रह अपने-अपने स्थान से शुभ और अशुभसूचक रेखा और बिन्दु को देते हैं। जैसा कि नीचे चक्र के में दिया गया है।

जन्माङ्कम्



सूर्याष्टकवर्गः-



CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्याष्टकवर्गः ।४८

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	
रा.	४	३	११	५	५	३	८	१०	
४	।			।			।		३
५	।	।	।				।		४
६			।				।		२
७	।		।	।				।	४
८		।	।			।	।	।	५
९			।	।	।	।	।	।	६
१०	।			।	।				३
११	।		।				।		३
१२	।	।	।					।	४
१	।	।		।	।			।	५
२	।		।	।		।	।		५
३				।	।		।	।	४

चन्द्राष्टकवर्गः ।४९

ग्रह	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.	
रा.	३	११	५	५	३	८	४	१०	
३	३	।	।	।	।			।	५
४	४		।		।				२
२	५	।		।	।	।			४
४	६					।	।	।	३
५	७		।	।		।		।	४
६	८	।	।	।	।			।	५
५	९	।	।	।		।		।	५
७	१०	२					।	।	२
४	११			।	।	।		।	४
५	१२	।	।	।	।	।	।		७
५	१	।	।			।	।	।	५
४	२			।	।			।	६

भौमाष्टकवर्गः ।३९

ग्रह	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.	
रा.	११	५	५	३	८	४	३	१०	
११	।								२
१२	।							।	२
१				।		।	।		३
२	।		।	।	।	।			५
३		।	।		।			।	४
४			।		।				२
५	।				।		।		३
६	।				।	।			३
७		।						।	२
८	।			।	।	।	।	।	६
९	।	।				।			३
१०		।	।	।				।	४

बुधाष्टकवर्गः ।५४

ग्रह	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.	
रा.	५	५	३	८	४	३	११	१०	
२	५	।		।	।			।	।	५
६	।		।	।			।	।	४
३	।	।		।	।		।	।	४
८	।	।	।	।	।	।	।	।	५
८	।	।	।	।	।	।	।	।	४
९	।	।	।	।	।	।	।	।	५
९	।	।	।	।	।	।	।	।	४
११	।	।	।	।	।	।	।	।	४
१२	।	।	।	।	।	।	।	।	४
१	।	।	।	।	।	।	।	।	४
२	।	।	।	।	।	।	।	।	४
३	।	।	।	।	।	।	।	।	६
४	।	।	।	।	।	।	।	।	५

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुर्वष्टकवर्गः। ५६

ग्रह	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.	
रा.	५	३	८	४	३	११	५	१०	
५	।			।		।	।		४
६	।					।	।	।	४
७	।	।	।	।	।			।	६
८	।	।		।		।	।	।	६
९					।	।	।		३
१०			।	।			।	।	४
११	।	।		।	।	।		।	६
१२	।	।	।	।		।			५
१		।	।	।	।		।	।	६
२	।			।		।	।	।	५
३	।						।	।	३
४		।		।	।			।	४

शुक्राष्टकवर्गः। ५२

ग्रह	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	ल.	
रा.	३	८	४	३	११	५	५	१०	
५	।	।	।	।	।	।	।		७
६	।	।		।	।				४
७	।	।		।				।	४
८	।	।		।				।	४
९	।			।	।	।			४
१०								।	१
११					।	।	।		८
१२	।	।		।	।	।		।	६
१	।	।	।	।				।	५
२	।	।					।	।	४
३	।	।		।	।	।	।	।	६
४	।	।	।			।	।	।	४

शन्यष्टकवर्गः। ३९

ग्रह	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	ल.	
रा.	८	४	३	११	५	५	३	१०	
८	।		।	।				।	४
९				।					१
१०	।	।		।	।	।		।	६
११		।							१
१२	।				।			।	३
१	।	।	।	।	।	।	।	।	७
२		।			।		।		३
३				।	।	।		।	४
४		।		।	।	।			४
५		।	।						२
६	।								१
७		।						।	२

लग्नाष्टकवर्गः। ४९

ग्रह	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
रा.	१०	४	३	११	५	५	३	८	
८					।	।	।	।	४
९				।		।	।	।	४
१०	।		।		।				३
११		।	।	।		।	।	।	६
१२		।			।	।			३
१	।	।	।		।	।	।		५
२				।			।		२
३			।		।	।	।	।	५
४		।	।		।	।	।	।	५
५			।				।		३
६	।		।	।	।	।		।	६
७		।		।		।			३

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

त्रिकोणशोधनम्-

त्रिकोणंतु चतुःप्रोक्तं मेषसिंहधनुस्तथा।
वृषकन्यामृगाख्येषु तुलाकुम्भयुगेषु च ॥६॥
कर्कवृश्चिकमीनास्ते त्रिकोणाः स्युः परस्परम्।
त्रिकोणेषु च यन्न्यूनं तत्तुल्यं त्रिषु शोधयेत् ॥१०॥

सम्पूर्ण राशिचक्र (१२ राशि) में चार (४) त्रिकोण हैं। त्रिकोण का अर्थ है प्रथम, पंचम और नवम राशि। प्रत्येक त्रिकोण के प्रथम राशि क्रम से मेष, वृष, मिथुन और कर्क हैं। इसके अनुसार मेष सिंह धनु प्रथम त्रिकोण, वृष, कन्या मकर दूसरा, मिथुन, तुला, कुम्भ तीसरा और कर्क वृश्चिक मीन चौथा त्रिकोण है॥ ६॥ प्रत्येक त्रिकोण के तीनों राशियों में जिस राशि की रेखा संख्या कम हो उसे त्रिकोण की अन्य दो राशियों की रेखाओं की संख्या में घटावें। शेष उसी राशि के नीचे रख दें॥ १०॥

एकस्मिन्भवने शून्यं तत्त्रिकोणं न शोभयेत्।
समत्वे सर्वगेहेषु सर्वं संशोध्य बुद्धिमान् ॥११॥

अल्प संख्या वाली राशि के नीचे शून्य रखें। यदि त्रिकोण की एक राशि के नीचे शून्य हो तो उसमें त्रिकोण शोधन न करें अर्थात् ज्यों का त्यों रख दे। यदि त्रिकोण की तीनों राशियों के नीचे रेखा बराबर हों तो त्रिकोण शोधन न कर तीनों राशियों के नीचे शून्य (०) ही रख देवें॥ ११॥

विशेष- इस प्रकार त्रिकोण शोधन के तीन नियम हुए।

१-त्रिकोण की तीन राशियों में किसी राशि की रेखायें कम हों तो उस कम रेखा वाली संख्या को तीनों स्थानों की संख्याओं में घटा दे।

२-यदि त्रिकोण की किसी एक राशिमें शून्य रेखा हो तो ज्यों का त्यों रहने दें। एवं

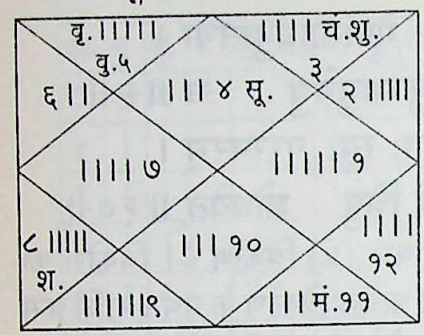
३-यदि त्रिकोण की तीनों राशियों में बराबर रेखायें हों तो तीनों स्थानों में शून्य फल होगा।

उदाहरण- जैसे सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि में ५, सिंह में ४, और धनु में ६ रेखायें है, इन तीनों में सबसे कम ४ है, अतः नियमानुसार मेष की ५ रेखाओं में से ४ घटाने से मेष राशि में १ स्थापना करनी होगी।

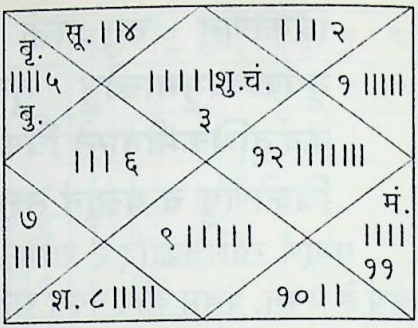
सिंह की ४ रेखाओं में से ४ घटाने से सिंह राशि में ० शून्य रहेगा एवं धनुराशि की ६ रेखाओं में ४ घटाने से धनु राशि में २ रहेगा। अर्थात् त्रिकोण शोधन के बाद मेष में १, सिंह में शून्य एवं धनु में २ फल आया। इसी प्रकार उपर्युक्त नियम के अनुसार सूर्यादि सात ग्रहों और लग्न के अष्टक वर्ग का त्रिकोण शोधन करना चाहिये। कहीं-कहीं निम्नलिखित प्रकार से भी अष्टक वर्ग लिखने की प्रथा है-

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

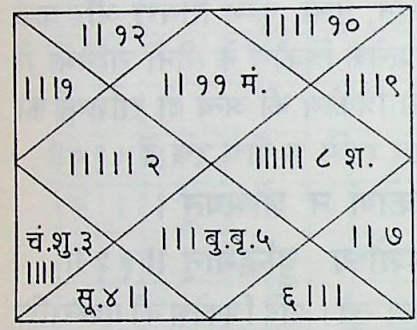
सूर्याष्टकवर्गः ४८



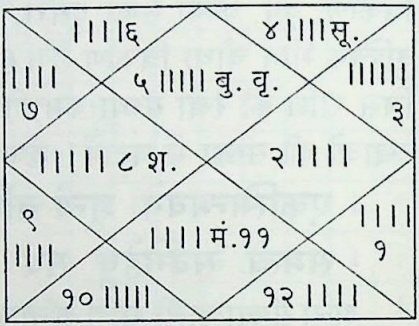
चन्द्राष्टकवर्गः ४९



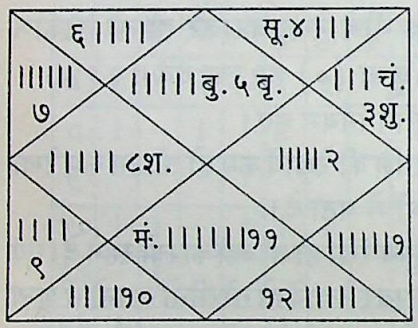
भौमाष्टकवर्गः ३९



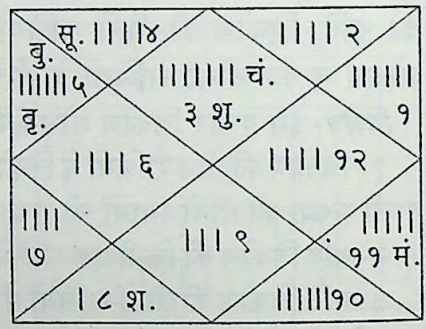
बुधाष्टकवर्गः ५४



गुर्वष्टकवर्गः ५६



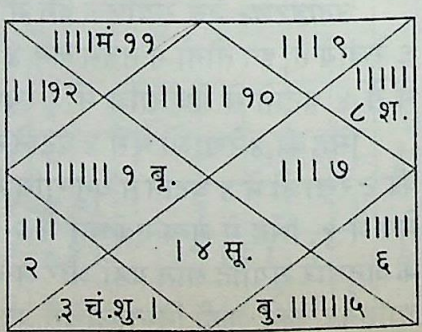
शुक्राष्टकवर्गः ५२



शन्यष्टकवर्गः ३९



लग्नाष्टकवर्गः ४९



CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथैकाधिपत्यशोधनम्-

एवं त्रिकोणं संशोध्य पश्चादेकाधिपत्यता ।
क्षेत्रद्वये फलानि स्युस्तदा संशोधयेद् बुधः ॥१२॥

इस प्रकार त्रिकोणशोधन के बाद एकाधिपत्य शोधन करे, एक ग्रह की दो राशियों में त्रिकोण शोधन के फलों से एकाधिपत्य शोधन होता है॥१२॥

क्षीणेन सह चान्यस्मिञ्छोधयेद् ग्रहवर्जिते ।
ग्रहयुक्ते फले हीने ग्रहाभावे फलाधिके ॥१३॥
अनेन सह चान्यस्मिञ्छोधयेद् ग्रहवर्जिते ।
फलाधिके ग्रहैर्युक्ते चान्यस्मिन्सर्वमुत्सृजेत् ॥१४॥
उभयोर्ग्रहसंयुक्ते न संशोध्यः कदाचन ।
उभयोर्ग्रहहीनाभ्यां समत्वे सकलं त्यजेत् ॥१५॥
सग्रहा ग्रहतुल्यत्वात्सर्वं संशोध्यमग्रहात् ।
एकत्र नास्ति चेत् सर्वहानिरन्यत्र कीर्त्तिता ।
कुलीरसिंहयो राश्योः पृथक् क्षेत्रं पृथक् फलम् ॥१६॥

यदि एक ग्रह के दोनों राशियों में कोई ग्रह न हो तो अल्पसंख्या को अधिक संख्या में घटाकर शेष को अधिक संख्या के नीचे रख दे और अल्पसंख्या को ज्यों-का-त्यों रख दे। (१) यदि एकराशि में ग्रह हो और दूसरी राशि में ग्रह न हो और जिस राशि में ग्रह हो उसकी संख्या ग्रहहीन राशि की संख्या से अल्प हो तो ग्रहहीन राशि की संख्या में अल्पसंख्या को घटाकर शेष ग्रहहीन के नीचे रख दे और अल्पसंख्या यथावत् रख दे। (२) यदि ग्रहयुक्त राशि की संख्या अधिक हो और ग्रहहीन राशि में अल्पसंख्या हो तो ग्रहहीन राशि में शून्य और ग्रहयुक्त राशि की संख्या यथावत् रखनी चाहिये। (३) यदि दोनों राशियाँ ग्रहयुक्त हों तो संशोधन नहीं करना चाहिये, यानि दोनों जगह यथावत् अंक रहने दे। (४) यदि एक ग्रहयुक्त हो और दूसरी राशि ग्रहहीन तथा दोनों की संख्या बराबर हो तो ग्रहहीन राशि के नीचे शून्य और ग्रहयुक्त राशि के नीचे वही संख्या रहेगी। (५) यदि दोनों ग्रहयुक्त या ग्रहहीन हों अथवा दोनों में एक ग्रहयुक्त और एक ग्रहहीन हो किन्तु त्रिकोणशोधन में किसी एक में शून्य हो तो दोनों में शून्य ही होगा। (६) कर्क और सिंह राशि के फल ज्यों-के-त्यों रहते हैं, इनमें एकाधिपत्य शोधन नहीं किया जाता है॥१३-१६॥

इति एकाधिपत्यशोधनम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ पिण्डोत्पत्यध्यायः

शोध्यावशेषं संस्थाप्य राशिमानेन वधयेत् ।
ग्रहयुक्तेऽपि तद्राशौ ग्रहमानेन वधयेत् ॥ १ ॥

एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त जिस राशि के नीचे जो संख्या हो उसे उस राशि के नीचे रखकर उस राशि के गुणक से गुणा करे। यदि राशि में ग्रह हो तव भी उस संख्या को उस ग्रह के गुणक से गुणाकर फल को उसके नीचे रख दे॥ १ ॥

अथ राशि-ग्रहगुणकध्रुवांकानाह-

गोसिंहौ दशगुणितौ दशभिर्मिथुनालिनौ ।
वणिग्मेषौतु मुनिभिः कन्यकामकरौ शरैः ॥ २ ॥
शेषाः स्वमानतो गण्या ग्रहगुणकमथोच्यते ।
जीवारशुक्रसौम्यानां दशाष्टमुनिसायकाः ॥ ३ ॥

वृष सिंह राशि को १० से, मिथुन-वृश्चिक को १० से, तुला और मेष को ७ से, कन्या मकर को ५ से ॥ २ ॥ और शेष राशियों को उनकी संख्या से एकाधिपत्य शोधन के उपरान्त जो अंक जिस राशि के नीचे है, उसे गुणाकर गुणनफल को राशि के नीचे रखना चाहिये, इसी प्रकार जिस राशि में जो ग्रह हो उस ग्रह के गुणक से राशि के नीचे वाले की संख्या (एकाधिपत्य शोधनोपरान्त शेष अंक को) गुणाकर गुणनफल को उस राशि के नीचे रख देवें। यदि एक राशि में दो-तीन ग्रह हों तो उनके गुणकों से अलग-अलग उस संख्या को गुणाकर सभी का योगकर उस राशि के नीचे रखना चाहिये। गुरु, भौम, शुक्र और बुध का क्रम से १०, ८, ७, ५ गुणक है।। ३।।

बुधस्य संख्या शेषाणां ग्रहगुणैर्गुणयेत्क्रमात् ।
सर्वेषां फलयोगोऽपि पिण्डमानं प्रकथ्यते ॥ ४ ॥

इस प्रकार गुरु का १०, भौम का ८, शुक्र का ७, बुध का ५ और शेष ग्रहों का ५ गुणक है। सभी फलों के योग को पिण्ड कहते हैं॥ ४ ॥

राशिगुणकचक्रम्

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
गुणकाः	७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२

ग्रह-गुणकचक्रम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
गुणकाः	५	५	८	५	१०	७	५

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्याष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः			चं. शु.	र	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	५	५	४	३	४	२	४	५	६	३	३	४	४८		
त्रिकोण-शोधन	१	३	१	०	०	०	१	२	२	१	०	१	१२		
एकाधिपत्य शोधन	१	२	०	०	०	०	१	१	१	०	०	१	७		
राशिगुणन फल	७	२०	०	०	०	०	७	८	९	०	०	१२	६३	राशिपिंड	योगपिंड ६८
ग्रहगुणन फल	०	०	०	०	०	०	०	५	०	०	०	०	५	ग्रहपिंड	

चन्द्राष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः			चं. शु.	सू.	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	५	३	५	२	४	३	४	५	५	२	४	७	४९		
त्रिकोण-शोधन	१०	१	१	०	०	१	०	३	१	०	०	५	१३		
एकाधिपत्य शोधन	०	०	०	०	०	०	०	३	०	०	०	४	७		
राशिगुणन फल	०	०	०	०	०	०	०	४२	०	०	०	४८	७२	राशिपिंड	योगपिंड ८७
ग्रहगुणन फल	०	०	०	०	०	०	०	१५	०	०	०	०	१५	ग्रहपिंड	

भौमाष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः			चं. शु.	सू.	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	३	५	४	२	३	३	२	६	३	४	२	२	३९		
त्रिकोण-शोधन	०	२	२	०	०	०	०	४	०	१	०	०	९		
एकाधिपत्य शोधन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
राशिगुणन फल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	राशिपिंड	योगपिंड ०
ग्रहगुणन फल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		ग्रहपिंड	

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बुधाष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः			चं. शु.	सू.	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	४	४	६	५	५	४	४	५	४	५	४	४	५४		
त्रिकोण-शोधन	०	०	२	१	१	०	०	१	०	१	०	०	६		
एकाधिपत्य-शोधन	०	०	०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	२		
राशिगुणन-फल	०	०	०	४	१०	०	०	०	०	०	०	०	१४	राशिपिंड	योगपिंड ३४
ग्रहगुणन-फल	०	०	०	५	१५	०	०	०	०	०	०	०	२०	ग्रहपिंड	

गुर्वष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः			चं. शु.	सू.	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	६	५	३	३	५	४	६	५	४	४	६	५	५६		
त्रिकोण-शोधन	२	१	०	०	१	०	३	२	०	०	३	२	१४		
एकाधिपत्य शोधन	०	१	०	०	१	०	२	२	०	०	०	०	६		
राशिगुणन-फल	०	१०	०	०	१०	०	१४	१६	०	०	०	०	५०	राशिपिंड	योगपिंड ७५
ग्रहगुणन-फल			०	०	१५	०	०	१०	०	०	०	०	२५	ग्रहपिंड	

शुक्राष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः	१	२	चं. शु.	सू.	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	६	४	७	४	४	४	४	१	३	६	५	४	५२		
त्रिकोण-शोधन	३	०	३	३	१	०	०	०	०	२	१	३	१६		
एकाधिपत्य शोधन	०	०	०	३	१	०	०	०	०	१	१	०	६		
राशिगुणन-फल	०	०	०	१२	१०	०	०	०	०	५	११	०	३८	राशिपिंड	योगपिंड ७३
ग्रहगुणन-फल	०	०	०	१५	१५	०	०	०	०	०	८	०	३५	ग्रहपिंड	

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शन्यष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः			चं. शु.	सू.	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	७	३	४	४	२	१	२	४	५	६	१	३	४२		
त्रिकोण-शोधन	५	२	३	१	०	०	१	१	०	५	०	०	१८		
एकाधिपत्य शोधन	४	१	०	१	०	०	१	१	०	०	०	०	८		
राशिगुणन-फल	२८	१०	०	४	०	०	७	८	०	०	०	०	५७	राशिपिंड	योगपिंड ६७
ग्रहगुणन-फल			०	५	०	०	०	५	०	०	०	०	१०	ग्रहपिंड	

लग्नाष्टकवर्गशोधनम्

जन्मकालीन ग्रहाः			चं. शु.	सू.	बु. गु.			श.			मं.		योग		
राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२			
रेखाः	६	३	५	२	५	५	३	६	३	४	४	३	४९		
त्रिकोण-शोधन	३	०	२	०	२	२	०	४	०	१	१	१	१६		
एकाधिपत्य शोधन	०	०	०	०	२	०	०	४	०	०	१	१	८		
राशिगुणन-फल	०	०	०	०	२०	०	०	३२	०	०	११	१२		राशिपिंड ७५	योगपिंड ११३
ग्रहगुणन-फल			०		१०			२०			८			ग्रहपिंड ३८	

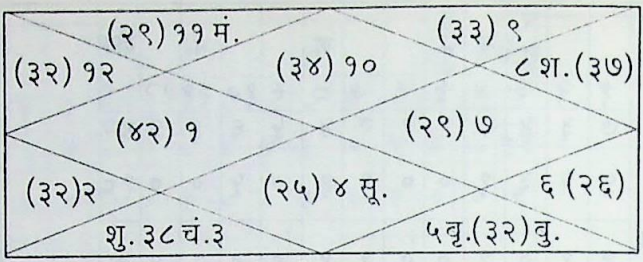
प्रत्येक अष्टकवर्गों में मेषादि राशियों में कितनी-कितनी रेखायें प्राप्त हुई हैं और उनका योग क्या हुआ इत्यादि बातों को जानने के लिये सर्वाष्टक-वर्ग-चक्र दिया जाता है-

सर्वाष्टकवर्गचक्रम्

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	योग
सूर्याष्टक वर्ग	५	५	४	३	४	२	४	५	६	३	३	४	४८
चन्द्राष्टकवर्ग	५	३	५	२	४	३	४	५	५	२	४	७	४९
भौमाष्टकवर्ग	३	५	४	२	३	३	२	६	३	४	२	२	३९
बुधाष्टकवर्ग	४	४	६	५	५	४	४	५	४	५	४	४	५४
गुर्वष्टकवर्ग	६	५	३	३	५	४	६	५	४	४	६	५	५६
शुक्राष्टकवर्ग	६	४	७	४	४	४	४	१	३	६	५	४	५२
शन्यष्टकवर्ग	७	३	४	४	२	२	२	४	५	६	१	३	४२
लग्नाष्टकवर्ग	६	३	५	२	५	५	३	६	३	४	४	३	४९
ग्रह			सो. शु.	र.	बु. गु.			श.			मं.		
योग	४२	३२	३८	२५	३२	२६	२९	३७	३३	३४	२९	३२	३८९

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अष्टकवर्गयुक्त-जन्माङ्गम्



इति पिण्डोत्पत्यध्यायः।

अथाऽष्टकवर्गफलाध्यायः

आत्मस्वभावशक्तिश्च पितृचिन्ता रवेः फलम् ।
मनोबुद्धिप्रसादश्च मातृचिन्ता मृगाङ्कतः ॥ १ ॥
भ्रातृसत्त्वं गुणं भूमिं भौमेन तु विचन्तयेत् ।
वाणिज्यकर्मवृत्तिश्च बुधेन तु विचिन्तयेत् ॥ २ ॥

आत्मा, स्वभाव, शक्ति और पिता का विचार सूर्य से करना चाहिये तथा मन, बुद्धि, प्रभाव और माता का विचार चन्द्रमा से करना चाहिये॥ १ ॥ भाई, सत्त्वगुण, भूमि का विचार भौम से करना चाहिये एवं व्यापार और वृत्ति का विचार बुध से करना चाहिये॥२॥

गुरुणा देहपुष्टिश्च बुद्धिपुत्रार्थसम्पदः ।
भृगोर्विवाहकर्माणि भोगस्थानं च वाहनम् ॥ ३ ॥
वेश्यास्त्रीजनगात्राणि शुक्रेणैव निरीक्षयेत् ।
आयुष्यं जीवनोपायं दुःखशोक महद्भयम् ॥ ४ ॥

गुरु से शरीरकी पुष्टता, बुद्धि, सम्पत्ति और पुत्रका विचार करना चाहिये। शुक्र से विवाह, भोगस्थान, वाहन॥ ३॥ वेश्या तथा स्त्री के अंगोंका विचार करना चाहिये। आयुष्य, जीविका, दुःख, शोक, भय॥ ४॥

सर्वक्षयं च मरणं मन्देनैव निरीक्षयेत् ।
रविः पिता शशी माता भ्राता भौमो बुधःसुहृत् ॥ ५ ॥
मातुलेयः स्मृतो जीवो ज्ञानपुण्ये स्त्रियः सितः ।
एषामृक्षे च तत्काले मरणं कुरुते शनिः ॥ ६ ॥

सर्वनाश और मृत्यु का विचार शनि से करना चाहिये। रवि पिता, चन्द्रमा माता, भौम भ्राता, बुध सुहृत्कारक हैं॥ ५॥ ममेरे भाई ज्ञान,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुण का कारक गुरु और स्त्री (पत्नी) का कारक शुक्र है। इनकी राशि में जब शनि जाता है तो इन लोगों को कष्ट होता है॥ ६॥

तत्तद्भावजफलेन च गुणितं योगैक्यपिण्डं फलम्।
विंशत्या सह सप्तभिश्च विहृतं तच्छेषताराशनौ ॥७॥
तातः स्याज्जननीं सहोदरजवो बन्धुःसुतःस्त्री स्वयम्।
तत्तुल्यं विलयं प्रयाति विपुलं श्रीनाथहेतुश्च वा ॥८॥

जिन २ भावों का विचार करना हो उन २ भावों के फल (अष्टक वर्ग की रेखा) को उस ग्रह के योगपिंड को गुणाकर गुणनफल में २७ का भाग देने से जो शेष बचे तत्तुल्य अश्विनी से गिनने से जो नक्षत्र आवे उस पर जब शनि आता है, तब पिता, माता, भाई, बंधु, पुत्र, स्त्री आदि को कष्ट होता है अथवा लक्ष्मी की प्राप्ति होती है॥ ७-८॥

सूर्याष्टकवर्गफलम्-

आदित्याष्टकवर्गं च निक्षिप्याकाशचारिषु।
अर्कस्थितात्तु नवमो राशिः पितृगृहं स्मृतम् ॥९॥
तद्राशिफलसंख्याभिर्वर्धयेद्योगपिण्डकम् ।
सप्तविंशोद्धृतं शेषं नक्षत्रं याति भानुजः ॥१०॥

सूर्याष्टक वर्ग का व्यास ग्रह सहित करे। सूर्य से नवम स्थान पिता का होता है॥ ९॥ उस राशि के फल को (रेखा को) योगपिंड से गुणाकर गुणनफल में २७ का भाग देने से जो शेष हो, तत्संख्या के तुल्य अश्विनी से गिनने से जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब शनि जाता है॥ १०॥

तस्मिन् काले पितृकष्टो भवतीति न संशयः।
तत्त्रिकोणगते वापि पितापितृसमोऽपि वा।
मरणं तस्य जानीयाद्दशा छिद्रेषु कल्पयेत् ॥११॥

तो उस समय पिता को कष्ट होता है, इसमें सन्देह नहीं। अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण (१०वें ९वें नक्षत्र) में जब शनि होता है तब पिता या पिता के तुल्य (चाचा आदि) का मरण होता है। उस समय की दशा को छिद्रदशा कहते हैं॥ ११॥

अथ पित्रोररिष्टकालमाह-

अर्कभात्तु तुर्यगे राहौ मंदे वा भूमिनंदने।
गुरुशुक्रेक्षणमृते पितृहा जायते नरः ॥१२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य से चौथे स्थान में राहु, शनि, भौम इनमें से कोई हो और गुरु, शुक्र से न देखा जाता हो तो पिता को अरिष्टकारक होता है॥ १२॥

लग्नाच्चन्द्राद्गुरुस्थाने याते सूर्यसुते यदि।
पित्रोर्नाशं तदा काले वीक्षिते पापसंयुते॥ १३॥
दशानुकूलकालेन योजयेत्कालवित्तमः।
लग्नात्सुखेश्वरानिष्टदशायां च पितृक्षयः॥ १४॥

लग्न या चन्द्रमा से नवम स्थान में जिस समय शनि हो और पापग्रह से युक्त तथा देखा जाता हो तो उस समय पिता का मरण कहे॥ १३॥ यदि अनुकूल दशा हो तो अरिष्ट नहीं होता है। लग्न से सुखेश (चतुर्थेश) की अनिष्ट-दशा में भी पिता का नाश होता है॥ १४॥

पितृकर्मकर्त्तायोगः-

पितृजन्माष्टभे जातस्तदीशे लग्नगेऽपि वा।
तेनैव पितृकर्माणि कारयेन्नात्र संशयः॥ १५॥

पिता के जन्मलग्न से आठवीं राशि में जन्म हो और उस राशि के स्वामी लग्न में हों तो वह पिता के कर्म को करने वाला होता है॥ १५॥

अथ पितृसुखयोगः-

सुखनाथदशायं तु बहुप्राप्तेश्च संभवः।
सुखेशे लाभलग्नस्थे चन्द्रलग्नाद्विशेषतः॥ १६॥
पितृगृहे समायुक्ते जातः पितृवशानुगः।
पितृजन्मतृतीयर्क्षे जातः पितृधनाश्रितः॥ १७॥

सुखेश की दशा में अधिक सुख पाने की संभावना होती है। सुखेश ११वें भाव में हो अथवा चन्द्रमा से ११वें वा दशम भाव में हो तो जातक पिता के वश में रहने वाला होता है॥ १६॥ पिता के जन्मलग्न से तीसरी राशि में जन्म हो तो वह पिता के धन का आश्रित होता है॥ १७॥

पितृकर्मगृहे जातः पितृतुल्यगुणान्वितः।
तदीशे लग्नसंस्थेऽपि पितृश्रेष्ठो भवेन्नरः॥ १८॥

पिता के जन्मलग्न से १०वीं राशि में उत्पन्न हो तो जातक पिता के गुणों के सदृश गुण वाला होता है। और दशम राशि का स्वामी लग्न में हो तो पिता से श्रेष्ठ होता है॥ १८॥

अथ विशेषफलमाह-

सूर्याष्टवर्गे यच्छून्यं मासे तद्दिवसेऽपि वा।
विवाहव्यवहारादि मासेऽस्मिन्वर्जयेत्सदा॥ १९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कलहोत्पातदुःखानि शून्यमासे भवन्ति च।
संशोध्य पिण्डं सूर्यस्य रंध्रमानेन वधयेत् ॥२०॥

सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि में शून्य हो उस राशि संबंधी मास और दिन में विवाह आदि शुभ कार्य व्यवहार आदि न करे॥१९॥ शून्य वाले मास में कलह, उत्पात आदि दुःख होते हैं। सूर्य के पिंड का शोधन कर अष्टम स्थान के फल रेखा से योग्य पिंड को गुणाकर॥२०॥

द्वादशहृतावशेषं मेषादि गणयेत्पुनः।
तस्मिन्मासे मृतिं विद्यात्तत्त्रिकोणगतेऽपि वा ॥२१॥

उसमें १२ से भाग दे, शेष मेषादि से गिनने से जो राशि हो उस राशि के मास में अरिष्ट होता है अथवा उससे त्रिकोण राशि के मास में अरिष्ट होता है॥२१॥

इति सूर्याष्टकवर्गफलविचारः।

अथ चन्द्राष्टकवर्गफलम्-

चन्द्राच्चतुर्थगे मातुः प्रासादग्रामचिन्तनम्।
चन्द्राष्टवर्गे यच्छून्यं तत्र सशिगते विधौ ॥२२॥
तन्नक्षत्रं परित्यज्य शुभकर्माणि कारयेत्।
चन्द्राष्टमेशःनक्षत्रे त्रितयेषु विशेषतः ॥२३॥

चन्द्रमा से चौथे माता, गृह, ग्राम का विचार करना चाहिये। चन्द्राष्टक वर्ग में जिस राशि में शून्य हो उस राशि में जब चन्द्रमा हो॥२२॥ अथवा वह राशि जिन २ नक्षत्रों से बनती है उन २ नक्षत्रों पर जब चन्द्रमा हो तो शुंभ कर्म नहीं करना चाहिये। चन्द्रमा से अष्टमेश जिस नक्षत्र पर हो उससे त्रिकोण के दो नक्षत्र अर्थात् इन तीनों नक्षत्रों पर॥२३॥

आयामव्याधिदुःखानि लभते नात्र संशयः।
चन्द्रात्सुखफलात्पिंडं वधयित्सप्तद्विभाजयेत् ॥२४॥
शेषमृक्षे शनौ याते मातृहानिं विनिर्दिशेत्।
तत्त्रिकोणेषु वा केचिन्मातृकष्टं समादिशेत् ॥२५॥

आयाम-व्याधि और दुःख की प्राप्ति होती है। चन्द्रमा से चौथे स्थान के फल को चन्द्राष्टक वर्ग के पिंड को गुणाकर गुणनफल में २७ का भाग देने से॥२४॥ शेष तुल्य अश्विन्यादि नक्षत्र में शनि के रहने से माता की हानि होती है अथवा उससे त्रिकोण के नक्षत्रों पर शनि के रहने से माता को कष्ट होता है॥२५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण- जैसे चन्द्रमा मिथुन राशि में है उससे अष्टम मकर राशि उसके स्वामी शनि विशाखा नक्षत्र के चौथे चरण में वृश्चिक राशि में है अतः विशाखा, शतभिष और पुनर्वसु में आयामादि फल होंगे। चन्द्रमा से चौथे स्थान में फल ३ है। इससे योगपिंड ८७ को गुणने से २६१ हुआ। इसमें २७ का भाग देने से १८ शेष हुआ, अश्विनी से गिनने से १८ वां ज्येष्ठा नक्षत्र हुआ, अतः ज्येष्ठा नक्षत्र पर जब शनि आयेगा तो माता की हानि होगी।

इति चन्द्राष्टकवर्गफलम्।

अथ भौमाष्टकवर्गफलम्-

भौमाष्टवर्गे संचिन्त्यं भ्रातृविक्रमधैर्यकम्।
भौमस्थितस्य सहजोराशिर्भ्रातृगृहं स्मृतम् ॥२६॥
त्रिकोणशोधनं कृत्वा यत्र भूयांसि वै फलम्।
भूमेर्भवति भार्याया भ्रातृगेहसुखं तथा ॥२७॥

भौम के अष्टक वर्ग से भाई, पराक्रम, धैर्य का विचार करना चाहिये। भौम जिस राशि पर है, उससे तीसरी राशि भाई की होती है॥२६॥ त्रिकोण शोधन के उपरान्त जिस राशि के नीचे अधिक फल हो उस राशि पर जब भौम जाता है तब भूमि, स्त्री, भाई और गृह का सुख होता है॥ २७॥

भौमो बलविहीनश्चेद् दीर्घायुर्भ्रातृको भवेत्।
फलानि यत्र क्षीयन्ते तत्र भौमे स्थिते क्षतिः ॥२८॥
तद्राशिफलसंख्याभिर्वर्धयेत्पिंडं च पूर्ववत्।
शेषमृक्षं शनौ याते भ्रातृहानिर्विनिर्दिशेत् ॥२९॥

यदि भौम निर्बल हो तो भाई दीर्घायु होता है। जिस राशि में फल शून्य हो उस राशि में भौम के रहते समय भाई को कष्ट होता है॥ २८॥ भौम से तीसरी राशि की रेखा से योग पिंड को गुणाकर २७से भाग देने से जो शेष नक्षत्र हो उस पर शनि के रहने से भाई को कष्ट होता है॥ २९॥

उदाहरण- मंगल कुम्भ राशि में है, उससे तीसरी राशि मेष में है, उसमें तीन रेखा है, उससे योगपिंड शून्य ० को गुणाकर २७ का भाग देने से शून्य शेष बचा। अतः रेवती नक्षत्र पर शनि के रहने से या इससे त्रिकोण (५,९) नक्षत्र पर शनि के रहने से भाई को कष्ट होगा। इसी प्रकार १२ से भाग देने से शेष ० अर्थात् मीन राशि पर अथवा उससे त्रिकोण कर्क-वृश्चिक पर शनि के होने से भाई को कष्ट होगा।

इति भौमाष्टकवर्गफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ बुधाष्टकवर्गफलम्-

बुधात्तुर्ये कुटुम्बं च धनमित्रादिमातुलाः ।
तत्पंचमे मंत्रविद्यालिपिबुद्ध्यादि चिंतयेत् ॥ ३० ॥
बुधाष्टकवर्ग संशोध्य शेषमृक्षगते शनौ ।
लभते कुटुम्बकादीनां विनाशं नात्र संशयः ॥ ३१ ॥

बुध से चौथे भाव में कुटुम्ब, धन, मित्र, मामा का विचार और उससे पाँचवें भाव में मंत्रणा, विद्या, लेख और बुद्धि का विचार करना चाहिये॥ ३० ॥ बुधाष्टक वर्ग का संशोधन करके पूर्ववत् योगपिण्ड द्वारा नक्षत्र एवं राशि का ज्ञानकर कुटुम्बादि के दुःख को समझना चाहिए॥ ३१ ॥

उदाहरण- बुध सिंह राशि में है इससे चौथे वृश्चिक राशि में ५ रेखा है, इसे योग पिंड ३४ से गुणा कर २७ का भाग देने से शेष ८वां पुष्य नक्षत्र पर अथवा इससे त्रिकोण (५-९) नक्षत्र पर शनि के रहने से कुटुम्बादि को दुःख होगा। अथवा गुणनफल में १२ से भाग देने पर शेष २ वृष राशि अथवा इससे त्रिकोण राशि पर शनि के रहने से कुटुम्बादि को दुःख होगा।

इति बुधाष्टकवर्गफलम्।

अथ गुर्वष्टकवर्गफलम्-

जीवात्पंचमतो ज्ञानं पुत्रधर्मधनादिकम् ।
गुरुस्थितं सुतस्थाने यावच्च विद्यते फलम् ।
शत्रुनीचगृहं त्यक्त्वा तावंतः सन्ततिर्भवेत् ॥ ३२ ॥

गुरु से पांचवें भाव में ज्ञान, पुत्र, धर्म, धन आदि का विचार करना चाहिये। गुरु से पांचवें भाव में जो फल (रेखा) है, यदि वह राशि (पांचवीं) गुरु के शत्रु वा नीच की न हो तो उतनी ही सन्तान होती है॥ ३२ ॥

संख्या नवांशतुल्या वा तदीशस्था नवा पुनः ।
सुतमेशनवांशैश्च समानावपि कल्पयेत् ॥ ३३ ॥
गुरोः सुतात्फलेनैव पिंडात्संवर्ध्य पूर्ववत् ।
शेषभं च गते सौरे पुत्रकष्टं न संशयः ॥ ३४ ॥

अथवा पंचमेश स्थित भाव के नवांश के संख्या तुल्य वा पंचमेश के नवांश के संख्या तुल्य संतान होती है॥ ३३ ॥ गुरु से पांचवें स्थित भाव के फल से गुरु के योग पिंड को गुणाकर २७ से भाग देने से शेष तुल्य नक्षत्र पर वा उससे त्रिकोण के नक्षत्र पर शनि के होने से पुत्र को कष्ट होता है॥ ३४ ॥

इति गुर्वष्टकवर्गफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ शुक्राष्टकवर्गफलम्-

भृगोरष्टकवर्गं च निक्षिप्याकाशचारिषु ।
येषु येषु फलानि स्युर्भूयांसि किल तत्र तु ॥ ३५ ॥
भूमिं कलत्रं वित्तं च तद्देशे निर्दिशेन्नृणाम् ।
शुक्राज्ञामित्रतो लब्धिं दारेशान्वितदिग्भवा ॥ ३६ ॥

ग्रहों के सहित शुक्र के अष्टकवर्ग को रखकर जिन-जिन राशियों में अधिक फल हों॥ ३५॥ उसके अनुसार मनुष्यों को भूमि, स्त्री, धन और देश का आदेश करना चाहिये। शुक्र से ७वें स्थान के देश में वा सप्तमेश के देश में स्त्री का लाभ होता है॥ ३६॥

दाराधिपस्थितं क्षेत्रं दाराजन्मर्क्षकं विदुः ।
तस्यांशर्क त्रिकोणे वा दाराजन्मर्क्षकं विदुः ॥ ३७॥
मंदांशे मंदसंयुक्ते मंदक्षेत्रेऽथवा भृगौ ।
नीचांशे मंदसंयुक्ते नीचस्त्रीभोगमिच्छति ॥ ३८॥

दारेश जिस राशि में हो वही राशि स्त्री की होती है, अथवा उसके नवांश की राशि वा उसके त्रिकोण की राशि स्त्री की राशि होती है॥ ३७॥ शुक्र, शनि के नवांश में हो और शनि से युत हो अथवा शनि की राशि में हो, अपने नीचांश में पापग्रह से युक्त हो तो जातक को नीच स्त्री की इच्छा होती है॥ ३८॥

भौमांशकगते शुक्रे भौमक्षेत्रगतेऽपि वा ।
भौमेनयुत दृष्टे च परस्त्रीभोगमिच्छति ॥ ३९।
जामित्रे मंदभौमांशे तदीशेमंद भौमभे ।
वेश्या वा जारिणी वापि तस्य भार्या न संशयः ॥ ४०॥

शुक्र, भौम के नवांश में हो अथवा भौम की राशि में हो औ भौम से युत वा देखा जाता हो तो परस्त्रीगामी होता है॥ ३९॥ सप्त स्थान में शनि वा भौम का अंश हो और उसके स्वामी शनि वा भौम व राशि में हो तो उसकी स्त्री वेश्या या जारिणी होती है॥ ४०॥

शुक्रजामित्रतो लब्धिस्त्रिकोणाद्देशदिक्स्त्रियः ।
भृगुदारेशयुक्तर्क्षं फलसंख्या स्त्रियो विदुः ॥ ४१ ॥
शुक्रांशकसमाना स्त्री वर्णरूपगुणान्विता ।
भवेच्छशांकतुल्या वा दारेशस्य गुणान्विता ॥ ४२ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्र से सातवें स्थान के अनुसार या उससे त्रिकोण राशि के अनुसार स्त्री का देश व दिशा कहना चाहिये। शुक्र से सप्तमेश से युत राशि के फल की संख्यातुल्य स्त्री की संख्या कहनी चाहिये। ४१। शुक्र के नवांश के सदृश वर्ण, रूप और गुण से युक्त वा चन्द्रमा के नवांश सदृश वा सप्तमेश के गुण के अनुरूप स्त्री होती है। ४२।

शुक्रान्मन्दे त्रिकोणस्थे नेष्टं जीवे सुखप्रदम् ।
तेषां बलविवेकेन भार्याया लक्षणं वदेत् ॥४३॥
शुक्राज्ज्ञामित्रफलैः संवर्ध्य पिंडं च पूर्ववत् ।
स्त्रियः दुःखं सुखं ज्ञेयं पूर्वरीत्यनुसारतः ॥४४॥

शुक्र से शनि त्रिकोण में हो तो स्त्री का सुख नहीं होता है और गुरु हो तो स्त्री का सुख होता है, इनके बल के अनुसार ही स्त्री के सुख-दुःख का विवेचन करना चाहिये॥ ४३॥ शुक्र से सातवें भाव के फल को पूर्ववत् शुक्र के योगपिंड से गुणा कर गुणनफल में २७ का भाग देने से शेष नक्षत्र पर जब शनि जावे तो स्त्री को कष्ट जानना चाहिए॥ ४४॥

इति शुक्राष्टकवर्गफलम्।

अथ शन्यष्टकवर्गफलम्-

शनैश्चरस्थितस्थानादष्टमं मृतिरुच्यते ।
शनेरष्टकवर्गे च स्वस्यायुष्यं विनिर्दिशेत् ॥४५॥
लग्नात्प्रभृति मंदांतं फलान्येकत्र कारयेत् ।
लग्नादिफलतुल्याब्दे व्याधिवैरं समादिशेत् ॥४६॥

शनि जिस भाव में हो उससे आठवें स्थान में आयु का विचार करना चाहिये॥ ४५॥ लग्न से आरम्भ कर शनि पर्यन्त रेखाओं का योग करे, योग तुल्य वर्ष में शरीर में व्याधि और लोगों से वैर, विदेशयात्रा, धन की हानि होती है॥ ४६॥

मंदाद्विलग्नपर्यन्तं फलान्येकत्र संयुतम् ।
मंदादिफलतुल्याब्दे व्याधिं तस्य समादिशेत् ॥४७॥
तयोर्योगसमांके तु मृत्युयोगं प्रचक्षते ।
शोध्यादि गुणनं कृत्वा पिंडं संस्थाप्य यत्नतः ॥४८॥
अष्टमस्य फलैर्हत्वा सप्तविंशतिभाजितम् ।
शतादूर्ध्वं तत्पिंडं शतमेवाग्रतस्त्यजेत् ॥४९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनि से लग्न-पर्यन्त रेखाओं का योग करे। योग तुल्य वर्ष में पूर्व के तुल्य ही वर्ष में व्याधि आदि फल होते हैं॥ ४७॥ दोनों के योग तुल्य वर्ष में मृत्यु-योग वा व्याधि आदि फल होते हैं। शनि के त्रिकोणादि शोधन से उत्पन्न योग पिंड लग्न से अष्टम स्थान के फल से गुणाकर २७ से भाग देने पर शेष १०० से अधिक बचे तो उसमें से १०० घटाकर शेष तुल्य आयु होती है॥४८-४९॥

आयुःपिण्डं तु जानीयात्प्राग्वद्वेलां तु कल्पयेत्।
त्रिकोणैकाधिपत्यादि शोधनं विरचय्य च॥५०॥
पिंडं संस्थाप्य गुणयेल्लग्नादष्टमगैः फलैः।
सप्तविंशतिहृच्छेषं मृत्युकालं वदेद् बुधः॥५१॥
समूलाष्टकवर्गे च यत्र नास्ति फलं गृहे।
तत्र नास्ति फलं तस्य यदायाति शनैश्चरः॥५२॥

इस प्रकार आयु पिंड को जानकर समयका निश्चय करे, त्रिकोण एवं एकाधिपत्य आदि शोधन बनाकर॥ ५०॥ शनि के सम्पूर्ण अष्टकवर्ग में जिस राशि का फल न हो अर्थात् शून्य हो तो उस राशि में जब शनि होता है तो उसका कोई फल नहीं होता है॥ ५१-५२॥

तद्गृहे रविचन्द्रौ चेद्दशाछिद्रे मृतिं वदेत्।
दशाछिद्रसमायोगे मृत्युरेव न संशयः॥५३॥

तथा उस राशि में जब सूर्य-चन्द्र होते है और अनिष्टकारी दशा होती है तो मृत्यु होती है, इसमें सन्देह नही॥ ५३॥

विलग्नशनिमध्यगानि च फलानि संताडयेन्नगै-
र्भविहृतानि शेषमितर्क्षे खले याति चेत्।
तदा धनसुखक्षतिं तदनु चांगभादष्टमस्थितै-
र्विगुणयेत्पिंडं भपरिशेषभस्थे शनौ॥५४॥

लग्न से शनि पर्यन्त फलों को ७ से गुणाकर २७ से भाग देने पर शेष तुल्य नक्षत्र पर पापग्रह के रहने से सुख की हानि होती है। लग्न से अष्टम स्थान के फल से शनि के योगपिंड को गुणाकर २७ का भाग देने से शेष तुल्य नक्षत्र अथवा कोण नक्षत्र (५।९) पर शनि के होने से सुख एवं धन की हानि होती है॥ ५४॥

उदाहरण-लग्न से शनि पर्यन्त क्रम से ६।१।३।७।३।४।२।१।२=२९ अर्थात् रेखाओं का योग २९ हुआ। तत्तुल्य वर्ष अर्थात् २९वें वर्ष में शरीर में व्याधि, विदेश यात्रा, धन की हानि होगी एवं शनि से लग्न पर्यन्त रेखाओं

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

के योग ४+५=९ तुल्य वर्ष में पूर्ववत् कष्ट आदि फल होगा। दोनों के योग तुल्य ३८वें वर्ष में पूर्ववत् कष्ट आदि फल होंगे। अथवा शनि के योगपिंड ६७को लग्न से आठवें भाग की रेखा संख्या ५ से गुणा करने पर ३३५ हुआ। इसमें २७ का भाग देने पर शेष ११ हुआ, अश्विनी से गिनने पर पूर्वाफाल्गुनी वा इससे त्रिकोण स्वाति, मूल नक्षत्र पर जब शनि होंगे तो कष्ट होगा। लग्न से शनि पर्यन्त रेखा की संख्या २९, इसे ७ से गुणा करने से २०३ हुआ, इसमें २७ का भाग देने से शेष १४ के तुल्य चित्रा नक्षत्र हुआ, इस पर पापग्रह के रहने से धनसुख की हानि होगी॥ ५४॥

इति शनेरष्टकवर्गफलम्।

सर्वाष्टकवर्ग (समुदायाष्टकवर्ग) फल-

सर्वाष्टकग्रहफलैश्च नियोज्यचक्रं
मूर्त्यादिभावमशुभं शुभमेव तत्र।
जन्मादितः फलसमानदशा समीक्ष्य
यात्राविवाहसमये बहुमूलयुक्ता॥ ५५॥

सभी ग्रहों के अष्टक वर्गकी रेखाओं के योग से सर्वाष्टक वर्ग बनता है (पृष्ठ ३०५ में देखिये)। इसमें लग्न से द्वादशभाव की राशियों को देखना चाहिये। जिस राशि में रेखा अधिक हो उसकी दशा में यात्रा, विवाह आदि करने से अधिक शुभफल होता है॥ ५५॥

मेषादिभानां सकलाष्टवर्गे
उत्पन्नरेखागणमेव कुर्यात्।
धृत्यादि तत्वान्तमितं कनिष्ठं
त्रिंशावसानं किल मध्यवीर्याः॥ ५६॥

सर्वाष्टकवर्ग में जिस राशि में १८ से कम रेखा हो वह कष्टप्रद और २५ तक रेखा हो तो कनिष्ठ फल तथा ३० पर्यन्त मध्यफल होता है॥ ५६॥

त्रिंशाधिकं तूत्तमवीर्यदास्युः
शरीरसौख्यार्थयशो विशेषाः।
स्वस्वाष्टवर्गे यदि वेदहीनाः
क्लेशाय सौख्याय च वेदपुष्टाः॥ ५७॥

और इसके बाद जितनी रेखा हो वह शुभप्रद राशि होती है। उस राशि की दशा में शरीर का सुख, यश और धन का विशेष लाभ होता है। अपने-अपने अष्टकवर्ग में जिस राशि में ४ से कम रेखा होती है, वह राशि कष्टप्रद और ४ से अधिक रेखावाली राशि सुखप्रद होती है॥ ५७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दशमभवनरेखाभ्योऽधिकं लाभमानं
भवति यदि विहीनं स्याद्व्ययाख्यं ततोऽपि ।
अधिकतरविलग्नं भोगसंपत्तिभूयः
विनिमयवशतस्तद्वैपरीत्यं जनस्य ॥५८॥

दशम भाव की रेखा से अधिक लाभ भाव में रेखा हो और लाभ भाव से अल्प द्वादशभाव में तथा इससे अधिक लग्न भाव में रेखा हो तो वह जातक अधिक धन-संपत्तिवाला होता है। यदि इससे विपरीत हो तो विपरीत फल होता है॥५८॥

प्राग्दाक्षिण्यादिभानां सकलफलयुतिं दिक्चतुष्कक्रमेण
कृत्वा तद्भागतो यः समधिकफलतः शोभनं हानिमल्पात् ।
सौम्याः स्वोच्चस्वगेहोदितखचरयुते दिग्विभागे स्वकार्ये
वित्तेशाशासु वित्तं मृतपतिगतदिग्भागगे देहनाशः॥५९॥

लग्नादि भावों को प्राग्दक्षिण क्रम से अर्थात् लग्न, द्वादश, एकादश भाव की पूर्वदिशा, दशम, नवम, अष्टम भाव की दक्षिण दिशा; सप्तम, षष्ठ, पंचम भाव की पश्चिम दिशा और चतुर्थ, तृतीय और द्वितीय भाव की उत्तर दिशा की कल्पना करें। दिशा के प्रत्येक भावों की रेखाओं का योग करके एकत्र रख दें, जिस दिशा में अधिक रेखा हो और उसमें शुभग्रह युत हों, अपनी उच्च राशि में हों तो उस दिशा से धन का लाभ आदि होता है। धनेश की दिशा से धन का लाभ और अष्टमेश की दिशा में शरीर में क्लेश होता है, यह यात्रा में देखना चाहिये॥५९॥

अथ भावफलम्-

भावं विलोक्य सदसत्फलदायकं यत्तद्राशिसंभवफलैश्च तदुक्तपिंडम् ।
पिण्डे रेखाताडिते भावशेषे राशौ यदायाति सौरिः समायाम् ।६०।

शुभ-अशुभ भावों को देखकर उनकी राशियों के रेखापिंड की रेखा से गुणाकर १२ का भाग देने से शेष तुल्य राशि पर जब शनि जाता है॥६०॥

यस्यां तत्तद्भावहानिं च विद्या
पूर्वे अंशे वाथवा तत्त्रिकोणे ।
कृत्वा बिन्दुभ्यस्तु कालं सुधीमांस्तस्मात्-
स्तस्मात्वाच्यः प्राप्तिकालःशुभत्वे ॥६१॥

उस वर्ष में उस राशि संबंधी भाव की हानि होती है। अथवा उस राशि से त्रिकोण राशि में जब शनि जाता है तब भी उस भाव की हानि होती

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

है। यदि भाव शुभ है तो रेखा से भिन्न भाव के बिन्दुओं से उस भाव के शुभ फल की प्राप्ति के समय को कहना चाहिए॥ ६१॥

अथारिष्टसमयज्ञानमाह-

मृत्युभावेशभात्कोणनिघ्नं फलं मृत्युजं सूर्यशेषर्क्षयुक्ते रवौ।
तत्त्रिकोणेऽथवारिष्टमासं वदेत्तातमातुर्गृहाद्येऽथवा कल्पयेत॥६२॥

अष्टमेश जिस राशि में है उस राशि के त्रिकोण शोधन से उत्पन्न फल को अष्टम भाव स्थित फल से गुणकर उसमें १२ का भाग देने से शेषतुल्य राशि पर अथवा उससे त्रिकोण राशि पर सूर्य के आने से उस मास में अरिष्ट होता है॥ ६२॥

अवस्थापरत्वेन शुभाशुभविचारः-

मीनाद्यं मिथुनांतकं प्रथमकं प्रोक्तं वयः प्राक्तनैः
कर्काद्यं वणिजांतकं तरुणता संज्ञं च मध्यं बुधैः।
कुम्भांतं स्थविराह्वयं च बहुभिर्यत्तत्फलैः संयुतं
तत्सौख्यार्थविशेषकं बलयुतेनैतद्विशेषाच्छुभम्॥६३॥

मीन राशि से मिथुन पर्यन्त चार राशियों को प्रथम (बाल्या) अवस्था होती है। कर्कराशि से तुला पर्यन्त चार राशियों की तरुण (युवा) अवस्था होती है। वृश्चिक राशि से कुम्भ पर्यन्त चार राशियों की स्थविर (वृद्धावस्था) अवस्था होती है। जिन-जिन अवस्था के रेखाओं का योग अधिक हो उन उन अवस्थाओं में सुख होता है॥ ६३॥

विशेष- जैसे सर्वाष्टकवर्गचक्र में-

राशयः	फलानि	योगः
(१) १२+१+२+३=३२+४२+३२+३८	=	१४४
(२) ४+५+६+७=२५+३२+२६+२६	=	११२
(३) ८+९+१०+११=३७+३४+३३+२९	=	१३३
		३८९

प्रथम अवस्था में १४४ रेखा है, अतः प्रथम अवस्था सुखमय व्यतीत होगी। क्योंकि लग्न के सहित सप्तग्रहों के सम्पूर्ण रेखाओं का योग ३८९ है, इसका खंडत्रय करने से १२९ होता है। इससे अल्प रेखा में कष्ट आदि की सम्भावना होती है। इसी प्रकार युवावस्था में ११२ रेखा है, अतः कुछ कष्ट से व्यतीत होगा। वृद्धावस्था में १३३ रेखायें हैं, अतः वृद्धावस्था सुखमय व्यतीत होगी।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राहुयुक्तगुरुफलम्-

राहुयुक्तगुरुराशिगे गुरौ तत्त्रिकोणमथ रिष्टकारकम् ।
अल्पमृत्युरिपुभावनाथको योगकृत्तदिह मृत्युसम्भवः ॥६४॥

राहु से युक्त गुरु की राशि में गुरु हो अथवा उससे त्रिकोण की राशि में हो तो अरिष्टकारक होता है। यदि षष्ठेश योग करता हो तो मृत्यु होती है॥ ६४॥

अथ निधनार्कमाह-

मृत्युपद्वादशांशत्रिकोणेऽसुरो मृत्युनाथत्रिकोणस्थ सूर्ये मृतिः।
अर्कलिप्ताहतो राहुलिप्तागणश्चक्रलिप्ताप्तयुक्तो रविर्मृत्युदः।६५।

अष्टम स्थान का स्वामी जिस द्वादशांश में हो उससे त्रिकोण राशि में जब राहु जाये तो उससे (अष्टमेश राशि के) त्रिकोण राशि में सूर्य के जाने से मृत्यु होती है। सूर्य की कला विकला को राहु की कला-विकला से गुणाकर गुणनफल में चक्रकला (२१६००) से भाग देवें, जो लब्ध हो उसे सूर्य की कला में जोड़ दें, उसका राश्यादि बनावे, उसके तुल्य सूर्य जिस मास में हों उस मास में मृत्यु होती है॥ ६५॥

उदाहरण- सूर्य ३।१८।२६ इसका कला बनाने से ६५०६ हुआ। राहु ७।१३।२७ इसका कला १३४०७ हुआ। सूर्य की कला से राहु की कला को गुणने से गुणनफल ८७२२५६४२ हुआ। इसमें २१६०० का भाग देने से लब्ध ४०३८ हुआ। इसे सूर्य की कला में जोड़ने से १०५४४ हुआ। इसमें ६० का भाग देने से लब्ध १७५ अंश और शेष ४४ कला हुआ, अंश में ३० का भाग देने से ५ राशि २५ अंश और ४४ कला हुआ। इसके तुल्य राश्यादि सूर्य जिस मास में होगा, उस मास में मृत्यु होगी।

भौममार्त्तण्डलिप्ताहतिः कारयेत्-
चक्रलिप्ताहृताल्लब्धयुक्तो रविः ।
यातियस्मिंस्तदा तत्त्रिकोणेऽपि वा
क्लेशमाहुः क्षयं मासि धीमान्वदेत् ॥६६॥

भौम की कला को सूर्य की कला से गुणा कर दें, गुणनफल में २१६०० से भाग देवें, लब्ध को सूर्य की कला में जोड़ दें, योगफल का राश्यादि बनावे, उस राश्यादि के तुल्य सूर्य जिस मास में हों उस मास में क्लेश अथवा मृत्यु कहें॥६६॥

उदाहरण- मंगल राश्यादि १०।२२।३२ इसका कला १६३२० हुआ। इसे सूर्य की कला ६५०६ से गुणा कर दिया तो गुणनफल १२५६६५६२० हुआ। इसमें २१६०० से भाग देने से लब्धि ५८१६ हुई। इसे सूर्य की कला में जोड़ देने से १२३२५ कला हुआ। इसका राश्यादि बनाने से ६।२५।२५ हुआ। इसके तुल्य सूर्य जब होवें तो उस समय कष्ट या मृत्यु कहें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ निधनचन्द्रमाह-

अष्टमेशत्रिकोणे विधुःस्याद्यदा योगमिंदौ तथा तन्नवांशेऽपि वा।
तत्त्रिकोणे प्रयाते मृतिं निर्दिशेन्निश्चयात्स्वल्परेखोद्भवे वासरे।६७।

अष्टमेश जिस राशि में है, उससे त्रिकोण राशि में जब चन्द्रमा होता है अथवा अष्टमेश जिस नवांश में है, उससे त्रिकोण राशि में जब चन्द्रमा हो उस दिन अल्परेखा हो तो उसी दिन मृत्यु होती है॥ ६७॥

अथ सशान्तिकरेखाफलम्-

रेखाभिः सप्तभिर्युक्ते मासे मृत्युर्नृणां भवेत्।
सुवर्णविंशतिपलं दद्याद् द्वौ तिलपर्वतौ॥६८॥
रेखाभिर्वसुभिर्जाते शीघ्रं मृत्युवशो नरः।
असत्फलविनाशाय दद्यात्कर्पूरजां तुलाम्॥६९॥

जिस राशि में सात रेखायें हों उस राशि के सूर्य में जातक को कष्ट होता है। इसकी शान्ति के लिये २० तोला सोना और २ तिल के पर्वत दान करना चाहिये॥६८॥ जिस राशि में ८ रेखायें हों उस मास में मृत्यु तुल्य कष्ट होता है, इसकी शान्ति के लिये कपूर का तुलादान करना चाहिये॥६९॥

रेखाभिर्नवभिः सर्पान्भियते मनुजो ध्रुवम्।
अश्वैश्चतुर्भिः संयुक्तं रथं दद्याच्छुभाप्तये॥७०॥
रेखाभिर्दशभिः शस्त्रात्प्राणांस्त्यजति मानवः।
दद्याच्छुभफलावाप्त्यै कवचं वज्रसंयुतम्॥७१॥

नव रेखाएँ जिस राशि में हों उस मास में सर्प का भय होता है। इसकी शान्ति के लिये ४ घोड़ो के सहित रथ का दान करना चाहिए॥ ७०॥ जिस राशि में रेखाएँ हो तो उस मास में शस्त्र से भय होता है। इसकी शान्ति के लिये वज्र ही से युक्त कवच का दान करना चाहिये॥ ७१॥

रुद्रैः प्राप्याभिशापं च प्राणैर्युक्तो भवेन्नरः।
दिक्पलैः स्वर्णघटितां प्रदद्यात्प्रतिमां विधोः॥७२॥
आदित्यैर्जलदोषेण मानवस्य मृतिं वदेत्।
भूमिं दद्यात्ब्राह्मणाय दानेशुभफलं भवेत्॥७३॥

जिस राशि में ११ रेखाएँ हों उस मास में अभिशाप से मृत्युभय होता है, उससे बचने के लिये १० तोले सुवर्ण की चन्द्रमा की प्रतिमा को दान करें॥ ७२॥ जिस राशि में १२ रेखायें हों उस मास में जल से मृत्युभय होता है, उससे शान्ति के लिये भूमि का दान करना चाहिये॥ ७३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

त्रयोदशमितैर्व्याघ्रान्मानवो मृत्युमाप्नुयात् ।
विष्णोर्हिरण्यगर्भस्य दानं कुर्याच्छु भाप्तये ॥७४॥
अचिराज्जीवितं जह्याच्छक्रैः कालेन भक्षितः ।
वराहप्रतिमां दद्यात्कनकेन विनिर्मिताम् ॥७५॥

जिस राशि में १३ रेखायें हों उस मास में व्याघ्र का भय होता है, इसकी शान्ति के लिये विष्णु की हिरण्यगर्भ प्रतिमा (शालिग्राम) को दान करना चाहिए॥७४॥ जिस राशि में १४ रेखाएँ हों उस मास में अधिक कष्ट होता है, इसकी शान्ति के लिये सुवर्ण की वराह की प्रतिमा का दान करना चाहिए॥७५॥

राज्ञो भयं तिथिमितैस्तत्र हस्ती प्रदीयते ।
रिष्टं भूपैः कल्पतरोः प्रतिमां च निवेदयेत् ॥७६॥
कृषिचक्रैर्व्याधिभयं गुडधेनुं निवेदयेत् ।
कलहोऽष्टेन्दुभिर्दद्यात् रत्नगोभूहिरण्यकम् ॥७७॥

जिस राशि में १५ रेखाएँ हों उस मास में राजभय की संभावना होती है, इसकी शान्ति के लिये हाथी का दान करना चाहिये। जिस राशि में १६ रेखाएँ हो उस मास में कष्ट होता है, इसकी शान्ति के लिये कल्पतरु की प्रतिमा का दान करे॥७६॥ जिस राशि में १७ रेखाएँ हो उस मास में व्याधि का भय होता है, उसके शान्त्यर्थ गुड़ के धेनु का दान करें। जिस राशि में १८ रेखाए हों उस मास में कलह होने का भय होता है, उसकी शान्ति के लिये गौ, भूमि, रत्न और सुवर्ण का दान करना चाहिये॥७७॥

देशत्यागोऽङ्कचन्द्रैः स्याच्छान्तिं कुर्याद्विधानतः ।
विंशत्या बुद्धिनाशः स्यात्कुर्याल्लक्षमितं जपम् ॥७८॥
भूमिपक्षैः रोगपीड़ा दद्यात् धान्यस्य पर्वतम् ।
यमाश्विभिर्बन्धुपीडा दद्यादादर्शकं बुधः ॥७९॥

जिस राशि में १९ रेखाएँ हों उस मास में देश के त्यागने का भय होता है, इसकी विधिपूर्वक शान्ति करनी चाहिये। जिस राशि में २० रेखाएँ हों उस मास में बुद्धि का नाश होता है, इसकी शान्ति के लिये १ लक्ष जप करना चाहिये॥७८॥ जिस राशि में २१ रेखाएँ हों उस मास में रोग और पीड़ा होती है, उसकी शान्ति के लिये धान्य का पर्वत देना चाहिये। जिस राशि में २२ रेखाएँ हों उस राशि के सूर्य में बन्धुओं को पीड़ा होती है, उसकी शान्ति के लिये आदर्श (ऐनक) का दान करना चाहिये॥७९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रामपक्षयुते मासे नानाक्लेशान्प्रपद्यते ।
सौवर्णीं प्रतिमां दद्याद्रवेः सप्तपलैः क्रमात् ॥८०॥
वेदाश्विभिर्बन्धुहीनो दद्याद् गोदानकं दश ।
सर्वरोगादिनाशार्थं जपहोमादि कारयेत् ॥८१॥

जिस राशि में २३ रेखाएँ हों उस राशि के रवि में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं, उसकी शान्ति के लिये सूर्य की सोने की सात तोले की प्रतिमा देनी चाहिये॥ ८०॥ जिस राशि में २४ रेखाएँ हों उस राशि के सूर्य में बन्धुओं का नाश होता है, उसके शान्त्यर्थ १० गोदान करना चाहिये और सभी रोगों के शान्त्यर्थ जप-होम आदि करना चाहिये॥ ८१॥

शराश्विभिस्तथा विद्वन्प्रज्ञा मन्दोऽभिजायते ।
ऋतुपक्षैर्बुद्धिहीनः पूज्या वागीश्वरी तथा ।
धनक्षयः स्यान्नक्षत्रैः श्रीसूक्तं तत्र संजपेत् ॥८२॥
वसुपक्षयुते मासे न लाभो हानि खेचरैः ।
सूर्यहोमश्च विधिना कर्त्तव्यः शुभकांक्षिभिः ॥८३॥

जिस राशि में २५ या २६ रेखाएँ हो उस राशि के सूर्य में बुद्धि मंद होती है, इसके शान्त्यर्थ वागीश्वरी देवी की उपासना करनी चाहिये। जिस राशि में २७ रेखाएँ हों उस राशि के सूर्य में धन की हानि होती है, उसकी शान्ति के लिये श्री सूक्त का जप करना चाहिये॥ ८२॥ जिस राशि में २८ रेखाएँ हों उस राशि के सूर्य में किसी प्रकार का लाभ नहीं होता है, इसके शान्त्यर्थ विधिवत् सूर्य का हवन करना चाहिये॥ ८३॥

एकोनत्रिंशता चापि चिंता व्याकुलितो भवेत् ।
घृतवस्त्रसुवर्णानि तत्र दद्याद्विचक्षणः ॥८४॥
त्रिंशता धनधान्याप्तिरिति जातकनिर्णयः ।
भूवह्निभिर्महोद्योगः पुत्रसम्पद्गुणाग्निभिः ॥८५॥

जिस राशि में २९ रेखाएँ हों उस राशि के सूर्य में मनुष्य चिन्ता से व्याकुल होता है उसके शान्त्यर्थ घी, वस्त्र, सुवर्ण का दान करना चाहिये ॥८४॥ जिस राशि में ३० रेखाएँ हों उस राशि के सूर्य में धन-धान्य का लाभ होता है। जिस राशि में ३१ रेखाएँ हों उस मास में बड़े उद्योग की तथा पुत्र और सम्पत्ति का लाभ होता है॥ ८५॥

सहेमवस्त्रलाभश्च चतुस्त्रिंशत्समन्विते ।
पंचरामैर्भवेद्धीमान्पट्त्रिंशत्सुतवित्तदा ॥८६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सप्तत्रिंशद्धनस्याप्तिरष्टत्रिंशत् सुखार्थदा ।
द्रव्यरत्नाप्तिरेकोनचत्वारिंशाच्च विद्यते ॥ ८७॥

जिस राशि में ३४ रेखाएँ होती है, उस मास में सुवर्ण, वस्त्र आदि का लाभ होता है। जिस राशि में ३५ रेखाएँ हों उस मास में बुद्धि में प्रखरता और जिसमें ३६ रेखाएँ हों उस राशि में पुत्र-धन का लाभ होता है॥ ८६॥ जिस राशि में ३७ रेखाएँ हों उस मास में धन का लाभ होता है। जिस राशि में ३८ रेखाएँ हो उस मास में धन सुख होता है। जिस राशि में ३९ रेखाएँ हों उसमें द्रव्य तथा रत्न का लाभ होता है॥ ८७॥

धनवान्कीर्तिमाँश्चैव चत्वारिंशति वर्धते ।
अत ऊर्ध्वं यशोऽर्थाप्तिः पुण्यश्रीरुपचीयते ॥ ८८॥

जिस राशि में ४० रेखाएँ हों उस मास में धन कीर्ति में वृद्धि होती है, इसके बाद जितनी ही अधिक रेखाएँ होती हैं उतना ही अधिक यश-धन का लाभ उत्तरोत्तर होता है।। ८८।।

अथ शुभाशुभफलमाह-

शुभखचरफलैक्यं प्राप्तवर्षे नितांतं
धनतनयसुखानां भाजनं स्यान्मनुष्यः।
धरणितनयवर्गे विंदुसंज्ञातयोगे
तनुलयमिह वर्षे पापगे मृत्युभीतिः ॥ ८९॥

शुभग्रह की रेखाओं के योगतुल्य वर्ष में धन, पुत्र, सुख को भोगने वाला मनुष्य होता है। भौमाष्टक वर्ग में भौम से लग्नांत फलों के योग-तुल्य वर्ष और लग्न से भौमांत रेखाओं के योगतुल्य वर्ष में पापग्रह का योग होने से कष्ट होता है॥ ८९॥

इति बृहत्पाराशरहोरायाम् अष्टकवर्गफलाध्यायः।

❖

अथ पूर्वजन्मशापद्योतकाध्यायः

पार्वत्युवाच-

देवदेव जगन्नाथ शूलपाणे वृषध्वज ।
केन योगेन मर्त्यानां जायते शिशुनाशनम् ॥ १॥
तत्सर्वमत्र योगेन ब्रूहि मे शशिशेखर ।
शापमोक्षं च कृपया प्राणिनामल्पमेधसाम् ॥ २॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पार्वतीजी ने कहा– हे देवों के देव, जगत के स्वामी, शूलपाणि, वृषध्वज! किस दुर्योग के कारण मनुष्यों की सन्तानों का नाश होता है॥ १॥ और हे शशिशेखर! उन सभी योगों को मुझे बताइये। उस शाप से कैसे अल्पबुद्धि मनुष्य मुक्त हो सकता है? इसे भी बताने की कृपा करें॥ २॥

शङ्कर उवाच-

साधुपृष्टं त्वया देवि कथयामि सविस्तरात्।
ऋणुष्वैकमनाश्चृ भूत्वा बलाबलवशादपि॥ ३॥
ज्ञेयं सुनिश्चितं सर्वं राशिचक्रे विशेषतः।
मेषादि मीनपर्यन्तं मूर्त्यादिद्वादशक्रमात्॥ ४॥

शङ्कर जी ने कहा– तुमने बड़ा ही अच्छा प्रश्न किया है। हे देवि! मैं उसे विस्तार से कहूंगा। तुम एकाग्रचित्त होकर सुनो॥ ३॥ यह सब मेष से मीन पर्यन्त राशिचक्र से निश्चित करना चाहिए॥ ४॥

भावं च भावजं ज्ञात्वा फलं ब्रूयाद्विचक्षणः।
तनुर्वित्तं बंधुमातृपुत्रशत्रुस्मरो मृतिः॥ ५॥
पितृकर्म च लाभं च व्ययांता भावसंज्ञकाः।
गुरुलग्नेशदारेशपुत्रस्थानाधिपेषु च॥ ६॥
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्या त्वनपत्यता।
रव्यारराहुशनयः पुत्रस्था बलसंयुताः।
कारकाख्यात् क्षीणबलादनपत्यत्वमादिशेत्॥ ७॥

सभी भावों एवं उनसे होने वाले फल को विचार कर फलादेश करना चाहिए। मेषादि राशियों के बारह भाव तनु, धन, सहज, सुख, सुत रिपु, जाया, मृत्यु॥ ५॥ धर्म, कर्म, आय और व्यय होते हैं। इसमें गुरु, लग्नेश, दारेश और पंचमेश॥ ६॥ ये सभी निर्बल हों तो अनपत्य योग होता है। सूर्य, भौम, राहु तथा शनि पुत्रस्थान में हों और बली हों तथा पुत्र कारक (गुरु) निर्बल हो तो अनपत्य (निःसंतान) योग होता है॥ ७॥

अथ शापज्ञानमाह-

पुत्रस्थानगते राहौ कुजेनापि निरीक्षिते।
कुजक्षेत्रगते वापि सर्पशापात्सुतक्षयः॥ ८॥
पुत्रेशे राहुसंयुक्ते पुत्रस्थे भानुनन्दने।
चन्द्रदृष्टे युते वापि सर्पशापात्सुतक्षयः॥ ९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि पाँचवें भाव में राहु हो तथा भौम से देखा जाता हो अथवा भौम की राशि में हो तो सर्प के शाप से संतान की हानि होती है॥ ८॥ पंचमेश राहु से युक्त हो, पंचम में शनि हो और चन्द्रमा से युत वा दृष्ट हो तो सर्प के शाप से संतान नष्ट होते हैं॥ ९॥

कारके राहुसंयुक्ते पुत्रेशे बलवर्जिते।
विलग्नेशे भौमयुते सर्पशापात्सुतक्षयः॥ १०॥
कारके भौमसंयुक्ते लग्ने च राहुसंयुते।
पुत्रस्थानेश्वरे दुःस्थे सर्पशापात्सुतक्षयः॥ ११॥

कारक (गुरु) राहु से युक्त हो, पंचमेश बलहीन हो, लग्नेश भौम से युत हो तो सर्प के शाप से सन्तान नष्ट होते हैं॥ १०॥ कारक (गुरु) भौम से युक्त हो, लग्न में राहु हो और पंचमेश ६।८।१२ भाव में हो तो सर्प के शाप से संतान की हानि होती है॥ ११॥

भौमांशे भौमसंयुक्ते पुत्रेशे सोमनंदने।
राहुमांदियुते लग्ने सर्पशापात्सुतक्षयः॥ १२॥
पुत्रस्थाने कुजक्षेत्रे पुत्रे राहुसमन्विते।
सौम्यदृष्टे युते वापि सर्पशापात्सुतक्षयः॥ १३॥

भौम के अंश में भौम से युक्त पंचमेश बुध हो और लग्न में राहु मांदि (गुलिक) हो तो सर्प के शाप से संतान की हानि होती है॥ १२॥ यदि पंचमभाव मंगल की राशि (७,८) हो और पंचम भाव में राहु युत हो, बुध से युत वा दृष्ट हो तो सर्प के शाप से संतान की हानि होती है॥ १३॥

पुत्रस्था भानुमन्दाराः स्वर्भानुः शशिजोऽङ्गिराः।
निर्बलौ पुत्रलग्नेशौ सर्पशापात्सुतक्षयः॥ १४॥
लग्नेशे राहुसंयुक्ते पुत्रेशे भौमसंयुते।
कारके राहुसंदृष्टे सर्पशापात्सुतक्षयः॥ १५॥

पंचम भाव में सूर्य, शनि, मङ्गल, राहु, बुध, गुरु हों और पंचमेश लग्नेश निर्बल हों तो सर्प के शाप से सन्तान की हानि होती है॥ १४॥ लग्नेश राहु से युत हो, पंचमेश मङ्गल से युत हो, कारक (गुरु) राहु से युत हो तो सर्प के शाप से सन्तान की हानि होती है॥ १५॥

अथ शान्तिमाह-

ग्रहयोगवशादेवं योगं ज्ञात्वा सुधीमता।
तद्दोषपरिहारार्थं नागपूजां समारभेत्॥ १६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्वगृह्योक्तं विधानेन प्रतिष्ठां कारयेत्सुधीः ।
नागमूर्तिं सुवर्णेन कृत्वा पूजां समाचरेत् ॥१७॥

इस प्रकार ग्रहयोगवश शाप को जानकर उस दोष के शान्त्यर्थ नाग की पूजा करे॥१६॥ अपने वेदोक्त गृह्यसूत्र के अनुसार विधानपूर्वक सुवर्ण की नागमूर्त्ति बनाकर उनकी प्रतिष्ठा करे और उनका यथोक्त रीति से पूजन करे॥१७॥

गोभूतिलहिरण्यादि दद्याद्वित्तानुसारतः ।
एवं कृते तु नागेन्द्र ! प्रसादाद्वर्धते कुलम् ॥१८॥

गौ, भूमि, तिल, सुवर्णादि का दान अपनी शक्ति के अनुसार करे। ऐसा करने से नागदेव प्रसन्न होकर कुल की वृद्धि करते हैं॥१८॥

अथ पितृशापात्सुतक्षययोगः-

पुत्रस्थानगते भानौ नीचे मंदाशकस्थिते ।
पार्श्वयोः क्रूरसम्बंधे पितृशापात्सुतक्षयः ॥१९॥
पुत्रस्थानाधिपे भानौ त्रिकोणे पापसंयुते ।
क्रूरेऽन्तरे पापदृष्टे पितृशापात्सुतक्षयः ॥२०॥

पंचम स्थान में सूर्य अपने नीच राशि में शनि के अंश में हो और उसके आगे तथा पीछे पापग्रह हों तो पिता के शाप से संतान की हानि होती है॥१९॥ पुत्रस्थानेश सूर्य हों, क्रूरग्रहों के मध्य से त्रिकोण में पापग्रह हों, पापग्रह से देखे जाते हों तो पिता के शाप से वंश की क्षति होती है॥२०॥

भानुराशिस्थिते जीवे पुत्रेषु भानुसंयुते ।
पुत्रे लग्ने पापयुते पितृशापात्सुतक्षयः ॥२१॥
लग्नेशे दुर्बले पुत्रे पुत्रेशे भानुसंयुते ।
पुत्रे लग्ने पापयुते पितृशापात्सुतक्षयः ॥२२॥

सूर्य की राशि में गुरु हों और पंचमेश सूर्य से युत हों तथा पंचम और लग्न में पापग्रह हों तो पिता के शाप से सन्तान की हानि होती है॥२१॥ लग्नेश दुर्बल होकर पंचम भाव में हों और पंचमेश सूर्य से युत हों तथा पंचम और लग्न में पापग्रह हो तो पिता के शाप से संतान की हानि होती है॥२२॥

पितृस्थानाधिपे पुत्रे पुत्रेशे वा तथास्थिते ।
लग्ने पुत्रे पापयुते पितृशापात्सुतक्षयः ॥२३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पितुः स्थानाधिपो भौमः पुत्रेशेन समन्वितः ।
लग्ने पुत्रे पितृस्थाने पापात्संततिनाशनम् ॥ २४ ॥

पितृ स्थान (१०) भाव का स्वामी पाँचवें भाव में हो और पंचमेश १०वें भाव में हो तथा लग्न और पाँचवें भाव में पापग्रह हो तो पिता के शाप से संतान की हानि होती है॥ २३॥ पितृस्थान (१०) का स्वामी होकर भौम पंचमेश से युत हो और लग्न, पंचम तथा दशम में पापग्रह हो तो पिता के शाप से संतान की हानि होती है॥ २४॥

पितृस्थानाधिपे दुःस्थे कारके पापराशिगे ।
सपापे पुत्रलग्नेशे पितृशापात्सुतक्षयः ॥ २५ ॥
लग्नपंचमभावस्था भानुभौमशनैश्चराः ।
रन्ध्रे रिःफे राहुजीवौ पितृशापात्सुतक्षयः ॥ २६ ॥

पितृस्थान (१०) का स्वामी ६, ८, १२ भाव में हो तथा कारक (गुरु) पापग्रह की राशि में हो और पंचमेश तथा लग्नेश पापयुत हो तो पिता के शाप से संतान की हानि होती है॥ २५॥ लग्न तथा पंचम भाव में सूर्य, भौम शनि हों और ८, १२ स्थान में राहु तथा गुरु हों तथा लग्न में पापग्रह हो तो पिता के शाप से संतान की हानि होती है॥ २६॥

लग्नाष्टमगे भानौ पुत्रस्थे भानुनंदने ।
पुत्रेशे राहुसंयुक्ते लग्ने पापेसुतक्षयः ॥ २७॥
व्ययेशे लग्नभावस्थे रंध्रेशे पुत्रराशिगे ।
पितृस्थानाधिपे रंध्रे पितृशापात्सुतक्षयः ॥ २८॥

बारहवें लग्न से आठवें में सूर्य हों, पांचवें भौम में शनि हों, पंचमेश राहु से युत हो और लग्न में पापग्रह हो तो पितृशाप से संतान की हानि होती है॥ २७॥ व्यय भाव के स्वामी लग्न में हो और अष्टमेश पाचवें भाव में हो तथा पितृस्थानेश आठवें भाव में हो तो पिता के शाप से वह संतानहीन होता है॥ २८॥

रोगेशे पुत्रभावस्थे पितृस्थानाधिपे तथा ।
कारके राहुसंयुक्ते पितृशापात्सुतक्षयः ॥ २९॥

रोगेश पंचम भाव में पितृभावेश के साथ हो और कारक (गुरु) राहु से युत हो तो पिता के शाप से संतान की हानि होती है॥ २९॥

तद्दोषपरिहारार्थं गयाश्राद्धं च कारयेत् ।
ब्राह्मणान् भोजयेत्तत्र अयुतं वा सहस्रकम् ॥ ३० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कन्यादानं ततः कृत्वा गां च दद्यात्सवत्सकाम् ।
एवं कृते पितुः शापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ३१ ॥

इस दोष के शमनार्थ गयाश्राद्ध करे और एक हजार वा दस हजार ब्राह्मणों को भोजन करावें॥ ३०॥ इसके बाद कन्यादान और सवत्सा गौ का दान करे, इतना करने से वह व्यक्ति शाप मुक्त हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं॥ ३१॥

वर्धते च कुलं तस्य पुत्रपौत्रादिभिस्तदा ।
दृष्टियोगपदैः सर्वं फलं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ ३२ ॥

और पुत्र-पौत्र से सम्पन्न हो उसके कुल की वृद्धि होती है। इस प्रकार दृष्टि तथा योगवश पंडित लोग फल का विचार करें॥ ३२॥

अथ मातृशापात्सुतक्षययोगः-

पुत्रस्थानाधिपे चन्द्रे नीचे वा पापमध्यगे ।
हिबुके पंचमे वापि मातशापात्सुतक्षयः ॥ ३३ ॥
लाभे मन्दसमायोगे मातृस्थाने शुभेतरे ।
नीचे पंचमगे चन्द्रे मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ३४ ॥

पंचमेश चन्द्रमा अपने नीच राशि में वा पापग्रह के मध्य में हो और ४, ५ भाव में पापग्रह हों तो माता के शाप से संतान की हानि होती है॥ ३३॥ एकादश स्थान में शनि हो और चौथे भाव में पापग्रह हो तथा अपने नीच में चन्द्रमा पाँचवें भाव में हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है॥ ३४॥

पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे लग्नेशे नीचराशिगे ।
चन्द्रपापसमायोगे मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ३५ ॥
पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे चन्द्रे पापांशसंयुते ।
लग्ने पुत्रे पापयुते मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ३६ ॥

पंचमेश ६, ८, १२ भाव में हो, लग्नेश अपने नीच राशि में हो तथा चन्द्रमा पाप से युत हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है॥ ३५॥ पंचमेश ६, ८, १२ भाव में हो, चन्द्रमा पापांश में हो, लग्न और पंचम में पापग्रह हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है॥ ३६॥

पुत्रस्थानाधिपे चन्द्रे मंदराह्वार संयुते ।
भाग्ये वा पुत्रराशौ वा कारके पुत्रनाशनम् ॥ ३७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मातृस्थानाधिपे भौमे शनिराहुसमन्विते ।
भानुचन्द्रयुते पुत्रे लग्ने संततिनाशनम् ॥ ३८ ॥

पंचमेश चन्द्रमा, शनि, राहु, भौम से युत हो; कारक (गुरु) भाग्य वा पाँचवें भाव में हो तो संतान की हानि होती है॥ ३७॥ चौथे भाव का स्वामी भौम, शनि राहु से युत हो, संतान भाव और लग्न सूर्य, चन्द्र से युत हो तो संतान की हानि होती है॥ ३८॥

लग्नात्मजेशौ शत्रुस्थौ रंध्रे मात्राधिपे स्थितौ ।
पितृनाशाधिपौ लग्ने मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ३९ ॥
षष्ठाष्टमेशौ लग्नस्थौ व्यये मात्राधिपे सुते ।
चन्द्रे जीवे पापयुते मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ४० ॥

लग्नेश, पंचमेश छठें भाव में आठवें भाव में मातृ भावेश हों और दशम-अष्टम भाव के स्वामी लग्न में हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है॥ ३९॥ ६, ८ भाव के स्वामी लग्न में, १२वें भाव में सुखेश और चन्द्रमा-गुरु पाप से युक्त होकर पांचवें भाव में हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है॥ ४०॥

पापमध्यगते लग्ने क्षीणे चन्द्रे च सप्तमे ।
मातृपुत्रे राहुमंदौ मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ४१ ॥
नाशस्थानाधिपे पुत्रे पुत्रेशे नाशराशिभे ।
चन्द्रमातृपतौ दुःस्थे मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ४२ ॥

लग्न पापग्रहों के मध्य में हो, क्षीण चन्द्रमा सातवें भावमें हो, ४,५ भाव में राहु-शनि हों तो माता के शाप से सन्तान की हानि होती है।४१। अष्टमेश पाचवें भाव में और पंचमेश आठवें भाव में हो और चन्द्रमा तथा सुखेश ६, ८, १२ भाव में हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है।४२।

चन्द्रक्षेत्रे यदा लग्ने कुजराहुसमन्विते ।
चन्द्रमन्दौ पुत्रसंस्थौ मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ४३ ॥
लग्ने पुत्रे रंध्ररिःफे आरराहुरविः शनिः ।
मातृलग्नाधिपौ दुःस्थौ मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ४४ ॥

यदि कर्क राशि लग्न में हो तथा भौम, राहु से युत हो, चन्द्र-शनि पाँचवें भाव में हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है।४३। लग्न, पंचम, आठवें, बारहवें भाव में भौम, राहु, रवि और शनि हों तथा मातृ भावेश ६,८,१२ में हो तो माता के शाप से संतान की हानि होती है।४४।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नाशस्थानं गते जीवे कुजराहुसमन्विते ।
पुत्रस्थाने मन्दचन्द्रौ मातृशापात्सुतक्षयः ॥४५॥
ग्रहयोगपदैः सर्वं फलं ब्रूयाद्विचक्षणः ।
शुभे सौख्यं विनिर्दिष्टं मिश्रे मिश्रं प्रकीर्तितम् ॥४६॥

आठवें भाव में भौम-राहु से युक्त गुरु हो और पांचवें भाव में शनि-चन्द्र हों तो माता के शाप से संतान की हानि होती है॥४५॥ ग्रह योगवश सभी फलों को कहें, शुभ योग से शुभ फल, तथा मिश्रयोग से मिश्रित फल कहना चाहिये॥४६॥

अथास्य शान्तिमाह-

सेतुस्नानं प्रकुर्वीत गायत्री लक्षसंज्ञके ।
ग्रहदानं च कर्त्तव्यं रौप्यपात्रे पयःस्थितिः ॥४७॥
ब्राह्मणान् भोजयेत्तद्वदश्वत्थस्य प्रदक्षिणम् ।
कर्त्तव्यं भक्तियुक्तेन चाष्टविंशसहस्रकम् ॥४८॥

एक लक्ष गायत्री का जप कराके वा करके सेतु-स्नान करे, ग्रहदान और चाँदी के पात्र में दूध का दान करे॥४७॥ ब्राह्मणों को भोजन करावे और भक्ति से युक्त होकर २८ हजार पीपल की प्रदक्षिणा करे॥४८॥

एवं कृते तदा देवि ! शापान्मोक्षो भविष्यति ।
सत्पुत्रं लभते पश्चात् वृद्धिः स्यात्तस्य संततेः ॥४९॥

हे देवि ! ऐसा करने से शाप से मुक्ति मिल जाती है और अच्छे पुत्र का लाभ होता है तथा संतान की वृद्धि होती है॥४९॥

अथ भ्रातृशापात्सुतक्षययोगः-

भ्रातृस्थानाधिपे पुत्रे कुजराहुसमन्विते ।
पुत्रलग्नेश्वरौ रंध्रे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५०॥
लग्ने सुते कुजे मन्दे भ्रातृपे भाग्यराशिगे ।
कारके नाशराशिस्थे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५१॥

भ्रातृस्थान (३) के स्वामी भौम-राहु से युत होकर पांचवें भाव में हों और पंचमेश, लग्नेश आठवें भाव में हों तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५०॥ लग्न, पंचम भाव में भौम-शनि हों, भ्रातृभावेश भाग्य भाव में हो तथा कारक (भौम) आठवें भाव में हो तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भ्रातृस्थाने गुरौ नीचे मंदः पंचमगो यदि ।
नाशस्थौ तु चन्द्रारौ भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५२॥
मूर्त्तिस्थानाधिपे रिःफे भौमः पंचमगो यदि ।
पुत्रेशे रंध्रभावस्थे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५३॥

भ्रातृस्थान (३) में नीच राशि में गुरु हो और शनि पाचवें भाव में हो और आठवें भाव में चन्द्र-शनि हो तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५२॥ लग्नेश बारहवें भाव में, पंचम भाव में भौम हो और पंचमेश आठवें भाव में हो तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५३॥

पापमध्यगते लग्ने सुतभे पापमध्यगे ।
नाथौ च कारकौ दुःस्थौ भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५४॥
कर्मेशे भ्रातृभावस्थे पापयुक्ते तथा शुभे ।
पुत्रे च कुजसंयुक्ते भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५५॥

पापग्रह के मध्य में लग्न हो और पंचम भाव भी पापग्रह के मध्य में हो, दोनों के स्वामी और कारक ६, ८, १२ भाव में हो तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५४॥ कर्मेश पापग्रह से युत होकर भ्रातृस्थान में हो और पाँचवें भाव में भौम युत हो तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५५॥

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे शनिराहुसमन्विते ।
रिःफे विदारौ वर्त्तेते भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५६॥
लग्नेशे भ्रातृराशिस्थे भ्रातृस्थानाधिपे सुते ।
लग्नभ्रातृसुते पापे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५७॥

पंचम भाव में बुध की राशि (३।६) हो और उसमें शनि-राहु युक्त हों तथा बारहवें भाव में बुध-भौम हों तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५६॥ लग्नेश भ्रातृभाव में, भ्रातृभावेश पाँचवें भाव में हो तथा लग्न भ्रातृ पाँचवे भाव में पापग्रह हो तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५७॥

भ्रात्रीशे नाशराशिस्थे पुत्रस्थे कारके तथा ।
राहुमांदियुते दृष्टे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५८॥
नाशस्थानाधिपे पुत्रे भ्रातृनाथेन संयुते ।
रंध्रे आरार्किसंयुक्ते भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीय भाव का स्वामी ८वें भाव में और पाँचवें भाव में कारक राहुमांदि(गुलिक) से युत वा दृष्ट हो तो भाई के शाप से संतान को कष्ट होता है॥५८॥ अष्टमेश पाँचवें भाव में तृतीयेश से युक्त हो, आठवें भाव में भौम- शनि हो तो भाई के शाप से संतान की हानि होती है॥५९॥

अस्य शान्तिमाह-

भ्रातृशापविमोक्षार्थं श्रवणं विष्णुकीर्त्तनम्।
चान्द्रायणं चरेत्पश्चात्कावेर्य्यां विष्णुसन्निधौ॥६०॥
अश्वत्थस्थापनं कार्यं दशधेनूः प्रदापयेत्।
प्राजापत्यं चरेत्तत्र भूमिं दद्यात्फलान्विताम्।
एवं यः कुरुते भक्त्या पुत्रवृद्धिः प्रजायते॥६१॥

भाई के शाप के शान्त्यर्थ विष्णु का कीर्त्तन सुनना चाहिये, चान्द्रायण व्रत करे, पीछे कावेरी नदी के किनारे विष्णु के सन्निकट॥६०॥ पीपल के वृक्ष की स्थापना कर दस गौ का दान करे, इसके बाद प्राजापत्य करके भूमि का दान करे, इस प्रकार भक्तिपूर्वक करने से पुत्र की वृद्धि होती है॥६१॥

अथ मातुलात्सुतक्षययोगः-

पुत्रस्थाने बुधे जीवे कुजराहुसमन्विते।
लग्ने मन्दसमायोगे मातुलात्सुतनाशनम्॥६२॥
लग्नपुत्रेश्वरौ पुत्रे शनि - भौमबुधान्विते।
ज्ञेयो मातुलशापत्वात् पुत्रसन्ततिनाशनम्॥६३॥

यदि पाँचवें भाव में बुध, गुरु, भौम, राहु हों,लग्न में शनि हो तो मामा के शाप से सन्तान की हानि होती है॥६२॥ लग्नेश और पंचमेश शनि, भौम और बुध के साथ एकत्र हों तो मामा के शाप से संतान की हानि होती है॥६३॥

लुप्ते पुत्राधिपे लग्ने सप्तमे भानुनन्दने।
लग्नेशे बुधसंयुक्ते तस्य सन्ततिनाशनम्॥६४॥
ज्ञातिस्थानाधिपे लग्ने व्ययेशेन समन्विते।
शशिसौम्यकुजे पुत्रे तस्य सन्ततिनाशनम्॥६५॥

लग्नेश अस्त होकर लग्न में हो और सातवें भाव में शनि हो और लग्नेश बुध के साथ हो तो मामा के शाप से संतान की हानि होती है॥६४॥ व्ययेश से युत होकर सुखेश लग्न में हो और चन्द्रमा, बुध, भौम संतान भाव में हों तो मामा के शाप से संतान की हानि होती है॥६५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अस्य शान्तिमाह-

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुस्थापनमुच्यते ।
वापीकूपतडागादेर्निर्माणं सेतुबंधनम् ॥६६॥
पुत्रवृद्धिर्भवेत्तस्य संपद्वृद्धिः प्रजायते ।
एवं योगग्रहेणैव फलं ब्रूयाद्विचक्षणैः ॥६७॥

उपर्युक्त दोष की शान्ति के लिये विष्णु की स्थापना करे, बावली, कुआं, तालाब को बनवावे॥ ६६॥ पुल का निर्माण करावे तो पुत्र की वृद्धि तथा संपत्ति की वृद्धि होती है। इस प्रकार ग्रहयोगवश पंडित लोग फल का विचार करें॥ ६७॥

ब्राह्मणशापात् सुतक्षयभोगः-

गुरुक्षेत्रे यदा राहुः पुत्रे जीवारभानुजाः ।
धर्मस्थानाधिपे नाशे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥६८॥
विद्या-बलेन यो मर्त्यो ब्राह्मणानवमन्यते ।
तद्दोषाद्ब्रह्मशापाच्च तस्य सन्ततिनाशनम् ॥६९॥

यदि गुरु की राशि (९, १२) में राहु हो, पाँचवें भाव में गुरु, भौम, शनि हों और धर्मेश आठवें भाव में हो तो ब्रह्म (ब्राह्मण) के शाप से संतान का अभाव होता है॥६८॥ विद्या वा बलप्रयोग से जो कोई ब्राह्मण का अपमान करता है, उसके दोष और ब्राह्मण के शाप से वह संतानहीन होता है॥ ६९॥

धर्मेशे पुत्रभावस्थे पुत्रेशे नाशराशिगे ।
जीवारराहुमृत्युस्थे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७०॥
धर्माधिपे नीचगते व्ययेशे पुत्रराशिगे ।
राहुयुक्ते क्षिते वापि ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७१॥

धर्मेश पाचवें भाव में हो और पंचमेश धर्म भाव में हो तथा गुरु-भौम-राहु आठवें भाव में हों तो ब्रह्मशाप से संतान का अभाव होता है॥ ७०॥ धर्मेश अपने नीच राशि में हो और व्ययेश पंचम भाव में हो, राहु से युत वा दृष्ट हो तो ब्रह्मशाप से संतान का अभाव होता है॥ ७१॥

जीवे नीचगते राहुर्लग्ने वा पुत्रराशिगे ।
पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७२॥
पुत्रस्थानाधिपे जीवे रंध्रे पापसमन्विते ।
पुत्रेशावर्कचन्द्रौ वा ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरु नीच राशि में हो, राहु लग्न वा पंचम भाव में हो और पंचमेश ६,८,१२ भाव में हो तो ब्रह्मशाप से संतान का अभाव होता है॥७२॥ पंचमेश गुरु आठवें भाव में पापग्रह से युक्त हो अथवा पंचमेश रवि वा चन्द्र हों तो भी ब्रह्मशाप से संतान का अभाव होता है॥७३॥

मन्दांशे मन्दसंयुक्ते जीवे भौमसमन्विते।
पुत्रेशे व्ययराशिस्थे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः॥७४॥
लग्ने गुरुयुते मन्दे भाग्ये राहुसमन्विते।
व्यये गुरुसमायुक्ते ब्रह्मशापात्सुतक्षयः॥७५॥

शनि के अंश में शनि-भौम संयुक्त गुरु हो, पंचमेश बारहवें भाव में हो तो ब्रह्मशाप से संतान का अभाव होता है॥७४॥ लग्न में गुरु हो, शनि राहु से युक्त हो, भाग्यभाव में और गुरु व्यय भाव में हो तो ब्रह्मशाप से संतान का अभाव होता है॥७५॥

अस्य शान्तिमाह-

तस्य दोषस्य शान्त्यर्थं कुर्याच्चान्द्रायणं नरः।
ब्रह्मकूर्चव्रतं कृत्वा धेनुर्दद्यात्सदक्षिणाम्॥७६॥
पंचरत्नानि देयानि सुवर्णेन समन्वितम्।
अन्नदानं ततः कुर्यादयुतं च सहस्रकम्॥७७॥

उस दोष की शान्ति के लिए चान्द्रायण ब्रह्मकूर्चव्रत (प्रायश्चित्त) करके दक्षिणा के सहित गोदान॥७६॥ और पंचरत्न सोने के साथ दान करके दस हजार वा एक हजार को अन्नदान करें॥७७॥

एवं कृते तु सत्पुत्रं लभते नात्र संशयः।
मुक्तशापो विशुद्धात्मा स पुत्रसुखमेधते॥७८॥

ऐसा करने से मनुष्य शाप से मुक्त होकर पुत्र को प्राप्त करता है और शाप मुक्त होकर शुद्धात्मा होकर पुत्र-सुख को भोगता है॥७८॥

पत्नीशापात्सुतक्षययोगः-

दारेशे पुत्रभावस्थे दारेशस्थांशपे शनौ।
पुत्रेशे नाशराशिस्थे पत्नीशापात्सुतक्षयः॥७९॥
कलत्रेशे नाशसंस्थे रिःफेशे पुत्रराशिगे।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः॥८०॥

सप्तमेश पंचम भाव में हो तथा सप्तमेश के नवांश का स्वामी शनि हो,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पंचमेश आठवें भाव में हो तो स्त्री के शाप से संतान की हानि होती है॥ ७९॥ सप्तमेश आठवें भाव में और व्ययेश पाचवें भाव में हो, कारक (शुक्र) पापयुक्त हो तो स्त्री के शाप से संतान का अभाव होता है॥ ८०॥

पुत्रस्थानगते शुक्रे कामपे रंध्रमाश्रिते।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः॥ ८१॥
कुटुम्बे पापसम्बंधे कामेशे नाशराशिगे।
पुत्रे पापग्रहैर्युक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः॥ ८२॥

पंचम स्थान में शुक्र हो, सप्तमेश आठवें भाव में हो तथा कारक पापयुक्त हो तो स्त्रीशाप से संतान का अभाव होता है॥ ८१॥ दूसरे भाव में पापग्रह हो, सप्तमेश आठवें भाव में हो और पाँचवें भाव में पापग्रह युत हों तो स्त्री के शाप से संतान का अभाव होता है॥ ८२॥

भाग्यस्थानगते शुक्रे दारेशे नाशराशिगे।
लग्ने पापे सुते पापे पत्नीशापात्सुतक्षयः॥ ८३॥
भाग्यस्थानाधिपे शुक्रे पुत्रेशे शत्रुराशिगे।
गुरुलग्नेशदारेशा दुःस्थाः सन्ततिनाशनम्॥ ८४॥

नवम भाव में शुक्र, पंचमेश आठवें भाव में तथा लग्न और पाँचवें में पापग्रह हो तो स्त्री के शाप से संतान का अभाव होता है॥ ८३॥ भाग्येश शुक्र हो, पंचमेश छठें स्थान में हो और गुरु, लग्नेश, दारेश ६, ८, १२ भावों में हो तो स्त्रीशाप से संतान का अभाव होता है॥ ८४॥

पुत्रस्थाने भृगुक्षेत्रे राहुचन्द्रसमन्विते।
व्यये लग्ने धने पापे स्त्रीशापात्सुतक्षयः॥ ८५॥
सप्तमे मंदशुक्रौ च रन्ध्रेशे पुत्रभे रवौ।
लग्ने राहुसमायोगे पत्नीशापात्सुतक्षयः॥ ८६॥

पंचम भाव में शुक्र की राशि (२, ७) राहु-चन्द्र से युक्त हो और १२; १, २ भावों में पापग्रह हों तो स्त्रीशाप से संतान का अभाव होता है॥ ८५॥ सातवें भाव में शनि-शुक्र हों अष्टमेश पांचवें भाव में, रवि-राहु लग्न में हों तो स्त्रीशाप से संतान का अभाव होता है॥ ८६॥

धने कुजे व्यये जीवे पुत्रस्थे भृगुनन्दने।
राहुयुक्ते क्षिते वापि पत्नीशापात्सुतक्षयः॥ ८७॥
नाशस्थौ वित्तदारेशौ पुत्रलग्ने कुजे शनौ।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः॥ ८८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दूसरे भाव में भौम, बारहवें भाव में गुरु, पाँचवें भाव में शुक्र दाहयुक्त वा दृष्ट हों तो स्त्रीशाप से पुत्र का अभाव होता है॥ ८७॥ आठवें भाव में धनेश, सप्तमेश हों, पाँचवें और लग्न में भौम-शनि हों तथा कारक पापयुक्त हो तो स्त्रीशाप से संतान का अभाव होता है॥ ८८॥

लग्नपंचमभाग्यस्था राहुमंदकुजाः क्रमात्।
रंध्रस्थौ पुत्रदारेशौ पत्नीशापात्सुतक्षयः॥ ८९॥

लग्न, पंचम, नवम में राहु-शनि-भौम हो और आठवें भाव में पंचमेश, सप्तमेश हो तो स्त्री के शाप से संतान का अभाव होता है॥ ८९॥

अस्य शान्तिमाह-

तस्य दोषस्य शान्त्यर्थं कन्यादानं समाचरेत्।
लक्ष्मीनारायणं देयं सर्वाभरणभूषितम्॥ ९०॥
मूर्तिदानं च कर्त्तव्यं दशधेनूः प्रदापयेत्।
शय्यां च भूषणं चैव दम्पत्योर्दापयेत्सुधीः।
पुत्रं प्रसूयते तस्य भाग्यवृद्धिश्च जायते॥ ९१॥

इस दोष के शान्त्यर्थ कन्यादान करे, लक्ष्मीनारायण की मूर्त्ति सभी आभरणों से युक्त॥ ९०॥ दान कर, दश गौ का दान करे, शय्या-आभूषण सपत्नीक ब्राह्मण को देवे। ऐसे करने से पुत्र होता है तथा भाग्यवृद्धि भी होती है॥ ९१॥

प्रेतशापात्सुतक्षययोगः-

मन्त्रशापमिदं मर्त्यः पिशाचं बाध्यते सदा।
कर्मलोपं पितृभ्यश्च तच्छापाद्वंशनाशनम्॥ ९२॥
पुत्रस्थितौ मन्दसूर्यौ क्षीणं चंद्रस्तु सप्तमे।
लग्ने व्यये राहुजीवौ प्रेतशापात्सुतक्षयः॥ ९३॥

जब पितरों के कर्म का लोप होता है अर्थात् उनके श्राद्धादि ठीक से नहीं होते हैं तो वे पिशाच (प्रेत) हो जाते हैं तथा वे वंशवृद्धि को नहीं होने देते॥ ९२॥ पांचवें भाव में शनि-सूर्य हों और सातवें भाव में क्षीण चन्द्र हो तथा लग्न और बारहवें भाव में राहु तथा गुरु हों तो प्रेतशाप से वंश का अभाव होता है॥ ९३॥

पुत्रस्थानाधिपे मन्दे नाशस्थे लग्नगे कुजे।
कारके नाशराशिस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः॥ ९४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्ने पापे व्यये भानौ सुते चारार्किसोमजाः ।
पुत्रेशे रंध्रभावस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥ ६५ ॥

पंचमेश शनि आठवें भाव में, लग्न में भौम और कारक आठवें भाव में हो तो प्रेतशाप से वंश का अभाव होता है॥ ६४ ॥ लग्न में पापग्रह हो तथा बारहवें भाव में सूर्य हो और पाँचवें भाव में भौम, शनि, बुध हों और पंचमेश आठवें भाव में हो तो प्रेतशाप से संतान का अभाव होता है॥ ६५ ॥

लग्ने राहुसमायोगे पुत्रस्थे भानुनंदने ।
कारके नाशराशिस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥ ६६ ॥
लग्ने राहौ च शुक्रेज्ये चन्द्रे मंदयुते तथा ।
लग्नेशे मृत्युराशिस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥ ६७ ॥

लग्न में राहु, पाचवें भाव में शनि और कारक आठवें भाव में हो तो प्रेतशाप से वंश का अभाव होता है॥ ६६ ॥ लग्न में राहु, शुक्र, गुरु हों, चन्द्रमा शनि से युत हों, लग्नेश आठवें भाव में हो तो प्रेतशाप से पुत्र का अभाव होता है॥ ६७ ॥

लग्ने राहुसमायोगे पुत्रस्थे भानुनंदने ।
कुजदृष्टे युते वापि प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥ ६८ ॥
कारके नीचराशिस्थे पुत्रस्थानाधिपे तथा ।
नीचदृष्टे नीचयुते प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥ ६९ ॥

लग्न में राहु तथा पांचवें भाव में शनि हो, भौम से युत वा दृष्ट हो तो प्रेतशाप से पुत्र का अभाव होता है॥ ६८ ॥ कारक नीचराशि में हो,. पंचमेश भी अपने नीच में हो तथा नीचराशिस्थ ग्रह से युत वा दृष्ट हो तो प्रेतशाप से वंश का अभाव होता है॥ ६९ ॥

लग्ने मंदे सुते राहौ रंध्रे भानुसमन्विते ।
व्यये भौमसमायोगे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥ १०० ॥
कामस्थानाधिपे दुःस्थे पुत्रे चन्द्रसमन्विते ।
मंदमान्दियुते लग्ने प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥ १०१ ॥

लग्न में शनि, पांचवें भाव में राहु, आठवें भाव में सूर्य युक्त हो और बारहवें भाव में भौम हो तो प्रेतशाप से वंश का अभाव होता है॥ १०० ॥ सप्तमेश ६, ८, १२ भाव में भौम हो, पाँचवें भाव में चन्द्रमा हो, लग्न में शनि और गुलिक हो तो प्रेतशाप से संतान का अभाव होता है॥ १०१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बाधास्थानाधिपे पुत्रे शनिशुक्रसमन्विते ।
कारके नाशराशिस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥१०२॥

अष्टमेश शनि-शुक्र से युत होकर पांचवें भाव में हो और कारक आठवें भाव में हो तो प्रेतशाप से संतान का अभाव होता है॥१०२॥

अस्य शान्तिमाह-

तद्दोषस्य शान्त्यर्थं विष्णुश्राद्धं समाचरेत् ।
रुद्राभिषेकं कुर्वीत ब्रह्ममूर्त्तिं प्रदापयेत् ॥१०३॥
धेनुं रजतपात्रं च नीलं चैव प्रदापयेत् ।
एतत्कर्मकृते तत्र शापमोक्षः प्रजायते ॥१०४॥

उपर्युक्त प्रेतशाप के निवृत्यर्थ विष्णुपद (गयाश्राद्ध) में श्राद्ध करना चाहिये। और रुद्राभिषेक करके ब्रह्म की मूर्त्ति का दान॥१०३॥ धेनु तथा चांदी के पात्र और नीलमणि का दान करना चाहिये। इतने कर्मों के करने से मुक्ति हो जाती है और कुलवृद्धि होती है॥१०४॥

अथ बहुपुत्रयोगः-

पुत्रे राहुरवि- सौम्याः कारके शुभसंयुते ।
शुभेन वीक्षिते वापि बहुपुत्रं समादिशेत् ॥१०५॥
पुत्रेशे शुभराशिस्थे शुभदृष्टिसमन्विते ।
कारके केन्द्रभावस्थे बहुपुत्रं समादिशेत् ॥१०६॥

पंचम भाव में राहु, सूर्य, बुध हों, कारक (गुरु) शुभग्रह से युत हो और शुभग्रह से देखा जाता हो तो बहुत से पुत्र होते है॥१०५॥ पंचमेश शुभग्रह की राशि में शुभग्रह की दृष्टि से युक्त हो, कारक केन्द्र में हो तो बहुत पुत्र होते हैं॥१०६॥

लग्नेशे पुत्रराशिस्थे पुत्रेशे लग्नमाश्रिते ।
केन्द्रत्रिकोणगे जीवे बहुपुत्रं समादिशेत् ॥१०७॥
पुत्रस्थानगते राहौ मन्दांशकविवर्जिते ।
बहुपुत्रं नरं विद्याच्छुभग्रह - निरीक्षिते ॥१०८॥

लग्नेश पाँचवें भाव में पंचमेश लग्न में, केन्द्र (१,४,७,१०) त्रिकोण (९, ५) भाव में गुरु हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥१०७॥ पाँचवें भाव में राहु शनि के नवांश में न हो, यदि शुभग्रह देखता हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥१०८॥

पुत्रस्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नेशे शुभसंयुते ।
कारके शुभसंयुक्ते बहुपुत्रं समादिशेत् ॥१०९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पुत्रस्थाने तदीशे वा गुरौ वा शुभवीक्षिते ।
शुभेन सहिते वापि बहुपुत्रं समादिशेत् ॥ ११० ॥

पंचमेश अपने उच्च में हो, लग्नेश शुभग्रह से युत हो और कारक भी शुभ ग्रह युक्त हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥१०९॥ पंचम स्थान में पंचमेश वा गुरु हो, शुभग्रह से दृष्ट हो या शुभग्रह से युक्त हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥११०॥

परिपूर्णबले जीवे लग्नेशे पुत्रराशिगे ।
पुत्रेशे बलसंयुक्ते बहुपुत्रं समादिशेत् ॥ १११ ॥
पुत्रस्थानगते जीवे परिपूर्णबलान्विते ।
लग्नेशे बलयुक्ते च पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥ ११२ ॥

गुरु पूर्ण बली हो तथा लग्नेश पाचवें भाव में हो और पंचमेश बली हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥ १११ ॥ पाचवें भाव में पूर्ण बली गुरु हो तथा लग्नेश बली हो तो अनेक पुत्र होते है॥ ११२ ॥

वर्गोत्तमांशगे जीवे लग्नेशस्यांशपे शुभे ।
पुत्रेशेन युते दृष्टे पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥ ११३ ॥
वित्तेशे पुत्रभावस्थे परिपूर्णबलान्विते ।
वैशेषिकांशके जीवे पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥ ११४ ॥

गुरु वर्गोत्तम नवांश में हो, लग्नेश के नवांश में शुभग्रह हो, पंचमेश से युत वा दृष्ट हो तो बहुत पुत्र होते हैं॥ ११३ ॥ धनेश पूर्णबली होकर पाँचवें भाव में हो, गुरु वैशेषिकांश में हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥ ११४ ॥

लग्नपुत्राधिपौ स्वोच्चे अन्योन्यं चापि वीक्षितौ ।
परस्परस्थानगतौ पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥ ११५ ॥
पुत्रस्थानाधिपस्यांशे राशीशे शुभसंयुते ।
शुभेन वीक्षिते वापि पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥ ११६ ॥

लग्नेश और पंचमेश अपनी उच्चराशि में हों, परस्पर देखते हों और परस्पर स्थान में हों तो अनेक पुत्र होते हैं॥ ११५॥ पंचमेश के नवांश में राशीश शुभग्रह से युत हो वा शुभग्रह से दृष्ट हो तो अनेक संतानें होती हैं॥ ११६ ॥

लग्नपुत्राधिपौ केन्द्रे शुभग्रहसमन्वितौ ।
कुटुम्बेशे बलाढ्ये तु पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥ ११७ ॥
लग्नेशे दारभावस्थे दारेशे लग्नमाश्रिते ।
द्वितीयेशे बलाढ्ये तु पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥ ११८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नेश और पंचमेश केन्द्र में शुभ ग्रह से युत हों, धनेश बलवान् हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥ ११७॥ लग्नेश सातवें भाव में, सप्तमेश लग्न में और धनेश बली हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥ ११८॥

दारेशग्रहसंयुक्त - नवांशभवनाधिपे।
पुत्रवित्तविलग्नेशैर्दृष्टे तु बहुपुत्रता॥ ११९॥

दारेश से युत ग्रह का नवमांशेश पंचमेश, धनेश तथा लग्नेश से देखा जाता हो तो अनेक पुत्र होते हैं॥ ११९॥

इति बहुपुत्रयोगाः।

अथानपत्ययोगः-

पुत्रवित्तकलत्रेश संयुक्तनवभागपाः।
पापांशकाः पापयुता अनपत्यत्वमादिशेत्॥ १२०॥
व्ययेशसंयुतांशेशे मृत्युराशौ स्थिते सति।
पुत्रेशे क्रूरषष्ठ्यंशे अनपत्यत्वमादिशेत्॥ १२१॥

पंचम, धन, सप्तम के स्वामियों से युक्त नवमांशेश का नवांश पापग्रह का हो अथवा पापयुत हो तो अनपत्य योग होता है॥ १२०॥ लग्नेश से युत अंशेश आठवें भाव में हो और पंचमेश क्रूरग्रह के षष्ठ्यंश में हो तो अनपत्य योग होता है॥ १२१॥

गुरुलग्नेशदारेशपुत्रस्थानाधिपेषु च।
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्या त्वनपत्यता॥ १२२॥
लग्नपुत्रेश्वरौ दुःस्थौ कारके नीचराशिगे।
अनपत्यग्रहे पुत्रे अनपत्यत्वमादिशेत्॥ १२३॥

गुरु, लग्नेश, सप्तमेश और पंचमेश निर्बल हों तो अनपत्य योग होता है॥ १२२॥ लग्नेश और पंचमेश ६, ८, १२ भाव में हों, कारक नीचराशि में हो कोई अनपत्यग्रह (पापग्रह) पांचवें भाव में हो तो अनपत्य योग होता है॥ १२३॥

क्रूरषष्ठ्यंशके जीवे पुत्रस्थे नाशराशिपे।
पुत्रेशे नाशराशिस्थे अनपत्यत्वमादिशेत्॥ १२४॥

गुरु क्रूरग्रह के षष्ठ्यंश में हो, पाँचवें भाव में अष्टमेश हो और पंचमेश आठवें भाव में हो तो अनपत्य योग होता है॥ १२४॥

इत्यनपत्ययोगाः।

अथचिरकालात्पुत्रप्राप्तियोगः

लग्नाधिपे कुजे स्वोच्चे रन्ध्रे मंदयुते रवौ।
शुभदृष्टिसमायोगे चिरात्पुत्रमुपैति सः॥ १२५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्ने मंदे गुरौ रन्ध्रे व्यये भौमसमन्विते।
शुभदृष्टे स्वतुङ्गे वा चिरात्पुत्रमुपैति सः॥१२६॥

लग्नेश भौम अपने उच्चराशि में, आठवें भाव में शनि से युत रवि हो और शुभग्रह से देखा जाता हो तो अधिक दिन में सन्तान होती है॥१२५॥ लग्न-भाव में शनि-गुरु आठवें भाव में, बारहवें भाव में भौम हो वा शुभ-दृष्ट अपने उच्च में हों तो बहुत दिनों में संतान होती है॥ १२६॥

पुत्रस्था मंदजीवज्ञा लग्ने पुत्राधिपे शुभे।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः॥१२७॥
सुते राह्वर्कशुक्रेज्याः शुभर्क्षे शुभवीक्षिते।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः॥१२८॥

सन्तान भाव में शनि, गुरु और बुध हों, पंचमेश शुभग्रह हो, पंचमेश शुभग्रह की राशि में हो तो अधिक समय में संतान होती है॥१२७॥ पाँचवें भाव में शुभग्रह की राशि में राहु, सूर्य, शुक्र, गुरु हों, शुभग्रह से देखे जाते हों और पंचमेश शुभ राशि में हो तो बहुत दिनों में सन्तान होती है॥१२८॥

लग्ने सौम्ये धने पापे तृतीये पापखेचरे।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः॥१२९॥

लग्न में शुभग्रह, दूसरे भाव में पापग्रह, तीसरे में पापग्रह और पंचमेश शुभराशि में हों तो बहुत समय में सन्तान होती है॥ १२९॥

अथ दत्तकपुत्रयोगः-

पुत्रस्थाने कुजे मन्दे बुधक्षेत्रे विलग्नगे।
बुधदृष्टे युते वापि तदा दत्तसुतादयः॥१३०॥
पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेऽथवा भवेत्।
मन्दमांदियुते दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः॥१३१॥

पंचम में भौम-शनि, जन्मलग्न में बुध की राशि हो और बुध से दृष्ट युत हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ १३०॥ पंचम भाव में बुध या शनि की राशि हो और शनि तथा गुलिक से युत दृष्ट हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ १३१॥

पुत्रेशे मन्दसंयुक्ते कुजे सौम्यनिरीक्षिते।
लग्नाधिपे बुधांशे वा दत्तपुत्रा भवन्ति हि॥१३२॥
कामेशे लाभभावस्थे पुत्रेशे शुभसंयुते।
पुत्रे मंदे बुधे वापि दत्तपुत्रा भवन्ति हि॥१३३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पंचमेश शनि से युत हो, भौम बुध से देखा जाता हो, लग्नेश बुध के नवांश में हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ १३२॥ सप्तमेश एकादश भाव में, पंचमेश शुभग्रह से युक्त हो, पाँचवें भाव में शनि वा बुध हो तो दत्तक संतति होती है॥ १३३॥

पुत्रेशे भाग्यभावस्थे भाग्येशे कर्मराशिगे।
पुत्रे मन्देन संदृष्टे दत्तपुत्रेण सन्ततिः॥ १३४॥
लग्नाधिपे भृगुगुःस्वोच्चे पुत्रे मन्दसमन्विते।
कारके बलसंयुक्ते दत्तपुत्रात्तु सन्ततिः॥ १३५॥

पंचमेश भाग्यभाव में, भाग्येश कर्मभाव में, पाचवें भाव को शनि देखता हो तो दत्तक पुत्र होता है॥१३४॥ लग्नेश और शुक्र उच्च में हों, पाँचवें भाव में शनि हो और कारक बली हो तो दत्तक पुत्र होता है॥१३५॥

पुत्रस्थानाधिपे चन्द्रे लग्ने पुत्रे शनैश्चरे।
परिपूर्णबले जीवे दत्तपुत्रात्सुतो भवेत्॥ १३६॥
पुत्राधिपे रवौ लग्ने पुत्रस्थो शनिसोमजौ।
पुत्राधिपे बलयुते दत्तपुत्रात्सुतो भवेत्॥ १३७॥

पंचमेश चन्द्र लग्न में, पाचवें भाव में शनि, गुरु बलवान् हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ १३६॥ पंचमेश रवि लग्न में और पंचम में शनि, बुध हो, पंचमेश बली हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ १३७॥

लग्नाधिपे बुधे पुत्रे कुजदृष्टिसमन्विते।
कारके लाभराशिस्थे दत्तपुत्रात्सुतो भवेत्॥ १३८॥
लग्नाधिपे गुरौ पुत्रे शनिदृष्टिसमन्विते।
पुत्रेशे भौमराशिस्थे दत्तपुत्रा भवन्ति हि॥ १३९॥

लग्नेश बुध पाँचवें भाव में भौम से देखा जाता हो और कारक लाभ भाव में हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ १३८॥ लग्नेश गुरु पाँचवें भाव में शनि से देखा जाता हो और पंचमेश भौम की राशि में हो तो दत्तक पुत्र होता है॥ १३९॥

अस्य शान्तिमाह-

वंशान्तो हरिरुष्णगो त्रिपुरहाऽब्जे भूसुते रुद्रियं
सौम्ये सम्पुटकांस्यपात्रविधिवज्जीवेन पैत्र्यातिथिः।
शुक्रे गोप्रतिपालनं च कथितं मन्दे च मृत्युंजयः
कन्यादानभुजङ्ग-केतुकपिलाः सन्तानसौख्यप्रदाः॥ १४०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि सन्तान के बाधक सूर्य हो तो हरिवंश पुराण सुनना चाहिये। चन्द्रमा के लिए शिवपूजन, भौम हो तो रुद्राभिषेक, बुध हो तो विधिवत् कांस्यपात्र और संपुट, गुरु हो तो पितृ पूजन (गया श्राद्ध) शुक्र हो तो गोसेवा, शनि तो हो मृत्युञ्जय का जप, राहु हो तो कन्यादान और केतु हो तो कपिला गौ का दान करने से सन्तान का सुख होता है॥ १४०॥

यावत्संख्या भवेद्राशिस्तावद्वारं विनिर्दिशेत् ।
शिवविष्णुस्थापनाद्वा लक्षजापात्सुखं भवेत् ॥ १४१ ॥

पाँचवें भाव की राशि संख्या के समान संख्या में हरिवंश पुराण सुनना चाहिए। अथवा शिव या विष्णु की मूर्ति की स्थापना करे और लक्ष जप करावे तो अवश्य संतान का सुख होता है॥ १४१॥

इति पूर्वजन्मशापद्योतकाध्यायः।

❖

अथ दशाध्यायः

अथ दशाभेदमाह-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दशाभेदाननेकशः ।
विंशोत्तरी दशा चोक्ता षोडशोत्तरी तथैव च ॥ १ ॥
द्वादशोत्तरिका ज्ञेया तथैवाष्टोत्तरी दशा ।
पंचोत्तरी दशा तद्वद् दशा शतसमा स्मृताः ॥ २ ॥

पराशर जी बोले-मैं अनेक प्रकार की दशा के भेदों को कह रहा हूँ उसे सुनो। विंशोत्तरी दशा, तथा षोडशोत्तरीदशा॥ १॥ द्वादशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा, पचोत्तरी दशा, शतसमा दशा॥ २॥

दशा हि चतुराशीतिः प्राह चाथ द्विसप्ततिः ।
तथा षष्टिसमा चोक्ता दशा षड्विंशतिः समा ॥ ३ ॥
नवमांशनवदशा राश्यंशकदशाः स्मृताः ।
दशा कालाभिधा चक्रदशा चक्र मुनीश्वरैः ॥ ४ ॥

चतुराशीति समा दशा, द्विसप्तति समा दशा, षष्टिसमा दशा, षड्विंशति समा दशा॥ ३॥ नवमांशनव दशा, राश्यंशक दशा, काल दशा, कालचक्र दशा, चक्र दशा॥ ४॥

चरपर्या दशा चाथ स्थिरदशा च द्विजोत्तमः ।
अथेत्तरदशा विप्र ! ब्रह्मता चापरा दशा ॥ ५ ॥

चरपर्या दशा, स्थिरदशा, उत्तर दशा, ब्रह्म ग्रहदशा॥ ५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

केन्द्राद्या च दशा ज्ञेया कारकादि दशा मता ।
मांडूकी च दशा प्रोक्ता तथा शूलदशापि च ॥६॥

केन्द्रादि दशा, कारकादि दशा, मांडूकी दशा, शूलदशा॥६॥

योगार्धजा दशा विप्र दृग्दशां कथयाम्यहम् ।
दशा त्रिकोणनामा वै राशीनां च दशा तथा ॥७॥
तारा दशा तथा ज्ञेया दशा रोगा च वर्णदा ।
पंचस्वरदशा विप्र ! योगिनी च दशा स्मृताः ॥८॥

योगार्धदशा, दृग्दशा, त्रिकोण दशा, राशि दशा॥७॥ तारा दशा, वर्णद दशा, पंचस्वर दशा, योगिनी दशा॥८॥

ततः पैंड्यदशा ज्ञेया तथांशकदशा द्विज ।
नैसर्गिकदशा विप्र ! अष्टवर्गदशा स्मृताः ॥९॥
सन्ध्या दशा च ज्ञातव्या पाचका च दशा द्विज ।
द्विचत्वारिंशद्भेदाः स्युः कथयामि तवाग्रतः ॥१०॥

पिंड दशा, अंश दशा, नैसर्गिक दशा, अष्टवर्ग दशा॥९॥ सन्ध्या दशा, पाचकदशा- इस प्रकार ४२ प्रकार की दशा होती है॥१०॥

अथ विंशोत्तरीदशामाह-

आनयनप्रकारं च शृणुष्व द्विजपुङ्गव ।
नामनक्षत्रपर्यन्तमार्क्षादि - कृत्तिकादितः ॥११॥
सैषा कृष्णेऽर्कहोरायां चन्द्रहोरागते सिते ।
दहनात्स्वर्क्षपर्यन्तं गणयेन्नवभिर्हरेत् ॥१२॥

हे द्विजश्रेष्ठ ! उसके आनयन प्रकार को कह रहा हूँ। कृत्तिका से राशि नाम के पर्यन्त ही गिनना चाहिए॥११॥ कृष्ण पक्ष में रवि के होरा में और शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा की होरा में जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा लेनी चाहिये। कृत्तिका नक्षत्र से अपने जन्मनक्षत्र तक गिनकर ९ से भाग देने पर शेष तुल्य॥१२॥

सूर्येन्दुक्ष्माजतमसो वाक्पतिर्मन्दचन्द्रजाः ।
केतुशुक्रौ क्रमादेते विज्ञेयाश्च दशाधिपाः ॥१३॥
रसाशामुनिधृत्यब्दा भूपविधृतिवत्सराः ।
सप्तेन्दवो नगा व्योमबाहवो क्रमतो मताः ॥१४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

क्रम से सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र की दशा होती है॥ १३॥ और क्रम से ६, १०, ७, १८, १६, १९, १७, ७, २० वर्ष इनकी दशा का वर्ष होता है॥ १४॥

अथ दशायां भुक्तभोग्यानयनम् -

दशामानं भयातघ्नं भभोगेनोद्धृतं फलम्।
भुक्तं वर्षादिकं ज्ञेयं दशावर्षाच्च शोधनम्।
शेषं वर्षादिकं भोग्यं दशायाः भवति ध्रुवम्॥ १५॥

जिस ग्रहकी दशा में जन्म हो उसके वर्षमान से भयात को गुणाकर गुणन फलमें भभोगसे भाग देनेसे लब्धि वर्ष-मास-दिन-घटी-पल भुक्तदशाहोती है। इसे दशा के सम्पूर्ण वर्ष में घटा देने से भोग्य दशा शेष होती है॥१५॥

स्फुटतरोहिमगुःकलिकात्मकःखखगजैर्विभजेद्गत ऋक्षकम्।
तद्दुडुवर्षगुणं च समादिकं खखगजैर्विभजेत्फलमत्र हि॥१६॥

अथवा स्पष्ट चन्द्रमा का कला बनाकर ८०० से भाग देने से लब्धिगत नक्षत्र होता है। उससे दशा का ज्ञान कर दशावर्ष से शेष को गुणा कर ८०० से भाग देने से लब्ध वर्ष एवं १२ आदि से शेष को गुणाकर ८०० से भाग देने से मास आदि भुक्त होते हैं। उसे दशावर्षमें घटानेसे शेष भोग्य वर्षादि होताहै।१६।

अथ विंशोत्तरीदशाज्ञानार्थचक्रम्-

रवि	सोम	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	ग्रहाः
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	दशावर्षाणि
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.फा.	नक्षत्राणि
उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	
उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.	

उदाहरण- पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण का भयात १०।३२ भभोग ५५।५३ है। कृत्तिका से गिनने से गुरु की दशा में जन्म हुआ। गुरु के दशा वर्ष १६ से भयात के पल ६३२ को गुणाकर गुणनफल १०११२ में पलात्मक भभोग ३३५३ से भाग देने से लब्धि ३ वर्ष हुआ। शेष ५३ को १२ से गुणाकर गुणनफल ६३६ में भभोग का भाग देने से लब्धि शून्य मास और शेष ६३६ को ३० से गुणाकर गुणनफल १९०८० में भभोग का भाग देने से लब्ध ५ दिन हुआ। शेष २३१५ को ६० से गुणाकर गुणनफल १३८९०० में भभोग का भाग देने से लब्धि ४१ घटी हुआ, शेष १४२७ को ६० से गुणाकर गुणनफल ८५६२० में भभोग से भाग देने से लब्धि २५ पल हुआ। इस प्रकार जन्म के पूर्व गुरु की दशा ३ वर्ष ० मास ५ दिन ४१ घटी और २५ पल भुक्त हो चुकी। इसे गुरु की दशा वर्ष १६ में घटाने से भोग्य अर्थात् शेष दशावर्ष १२, मास ११, दिन २४, घटी १८ और ३५ पल भोग्य हुआ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विंशोत्तरी-दशाचक्रम्-

गुरु	शनि	गुरु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	ग्रहाः
१२	१९	१७	७	२०	६	१०	७	१८	वर्ष
११									मास
२४									दिन
१८									घटी
३५									पल
२०१३	२०२६	२०४५	२०६२	२०६९	२०८९	२०९५	२१०५	२११२	२१३०
३	३	३							
१८	१२	१२							
२६	४४	४४							
१४	४९	४९							

इति विंशोत्तरी दशाक्रमः।

अथ षोडशोत्तरी दशाचक्रमः-

एकोपचयते रुद्राद् धृत्यन्तं वत्सराः क्रमात्।
रविर्भौमो गुरुर्मन्दः केतुश्चन्द्रो बुधो भृगुः ॥१७॥
अष्टौ दशाधिपाः प्रोक्ता राहुहीना नवग्रहाः।
पुष्यभाज्जन्मभं यावद् गणयेद्वसुभिर्हरित् ॥१८॥
सूर्यहोरागते शुक्ले चन्द्रस्य कृष्णपक्षके।
तदा नृणां फलार्थाय विचिन्त्या षोडशोत्तरी ॥१९॥

११ में एक-एक १८ तक जोड़ने से दशावर्ष ११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८ क्रम से सूर्य, भौम, गुरु, शनि, केतु, चन्द्रमा, बुध और शुक्र का होता है॥ १७॥ राहु को छोड़कर नवग्रह में आठ ही ग्रह दशेश होते हैं। पुष्य से जन्म नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो उसमें ८ से भाग देने पर शेषांक तुल्य सूर्य आदि की दशा होती है॥ १८॥ शुक्लपक्ष में जन्म हो और लग्न में सूर्य की होरा हो अथवा कृष्ण पक्ष में जन्म हो और लग्न में चन्द्रमा की होरा हो तो दशाफल जानने के लिये षोडशोत्तरी दशा लेनी चाहिये॥ १९॥ *अथ षोडशोत्तरीदशाज्ञानाय चक्रम्-*

सूर्य	मंगल	गुरु	शनि	केतु	चन्द्र	बुध	शुक्र	ग्रहाः
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	वर्षाणि
पुष्य	आश्ले.	मघा	पूर्वाफा.	उ.फाल्गु	हस्त	चित्रा	स्वाती	नक्षत्राणि
विशाखा	अनुरा.	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषा.	उ.षाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	
शतभि.	पू.भाद्र.	उ.भाद्र.	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	
मृगशि.	आर्द्रा	पुनर्वसु	X	X	X	X	X	

नोट- इस दशा का भुक्त भोग्य विंशोत्तरी दशा के समान ही भयात भभोग द्वारा लाना चाहिये। *इति षोडशोत्तरीदशाक्रमः।*

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ द्वादशोत्तरीदशाक्रम्-

सूर्यो गुरुःशिखी ज्ञोऽगुः कुजो मन्दो निशाकरः ।
शुक्रहीना दशा ह्येतद्विचयात्सप्तमात्समाः ॥२०॥
जन्मभात्पौष्णपर्यन्तं गणयेदष्टभिर्भजेत् ।
नवमांशे यदा जाता शुक्रस्य द्वादशोत्तरी ॥२१॥

सूर्य, गुरु, केतु, बुध, राहु, भौम, शनि और चन्द्रमा-ये ही शुक्र को छोड़कर दशेश होते हैं और सात से दो-दो जोड़ने से इनके दशा वर्ष भी होते हैं॥२०॥ जन्म नक्षत्र से रेवती पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसमें ८ का भाग देने से शेष तुल्य दशेश होते हैं। यदि शुक्र के नवमांश में जन्म हो तो द्वादशोत्तरीदशा से फल कहना चाहिए॥२१॥

नोट- यहाँ भी विंशोत्तरीदशा के समान ही भुक्त, भोग्य लाना चाहिये।

अथ द्वादशोत्तरीदशा-चक्रम्

राहु	गुरु	केतु	बुध	राहु	मंगल	शनि	सोम	ग्रहाः
७	६	११	१३	१५	१७	१६	२	वर्षाणि

अथाष्टोत्तरी दशामाह-

सूर्यश्चन्द्रः कुजः सौम्यः शनिर्जीवस्तमो भृगुः ।
एते दशाधिपाः प्रोक्ता विकेतुश्च नव ग्रहाः ॥२२॥
रसाः पंचेन्दवो नागाः शैलचन्द्रनभेन्दवः ।
गोब्जाः सूर्यकुनेत्राश्च समाः प्रद्योतनादयः ॥२३॥
लग्नेशात्केन्द्रकोणस्थे राहौ लग्ने सितं विना ।
अष्टोत्तरी दशा प्रोक्ता शिवाद्या द्विजसत्तम ॥२४॥

केतु को छोड़कर नव ग्रहों में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि, गुरु, राहु और शुक्र दशा के स्वामी होते हैं॥२२॥ इनके ६,१५,८,१७,१०,१६,१२, २१ ये क्रम से सूर्यादि के दशा वर्ष होते हैं॥२३॥ यदि लग्नेश से केन्द्र त्रिकोण में राहु हो और लग्न में शुक्र हो तो अष्टोत्तरीदशा लेनी चाहिये। इसको आर्द्रा नक्षत्र से आरम्भ कर अपने जन्म नक्षत्र तक गिनना चाहिए॥२४॥

चतुष्कं त्रितयं तस्माच्चतुष्कं त्रितयं पुनः ।
यावत्स्वजन्मभं तावद्गणयेच्च यथाक्रमात् ॥२५॥
अष्टोत्तरी द्विधा प्रोक्ता शिवादि कृत्तिकादितः ।
लग्ने सग्रहे शैवाद् विग्रहे कृत्तिकादितः ॥२६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आर्द्रा से चार नक्षत्र के अन्तर्गत अपना जन्म नक्षत्र हो तो सूर्य की दशा, इसके बाद ३ नक्षत्र में चन्द्रमा की, इसके बाद के चार नक्षत्रों में भौम की, इसके बाद ३ नक्षत्र में बुध की, इसके बाद ४ नक्षत्र में शनि की, इसके बाद ३ नक्षत्र में गुरु की, इसके बाद ४ नक्षत्र में राहु की और शेष ३ नक्षत्र में शुक्र की दशा होती है॥ २५॥ अष्टोत्तरी दशा दो प्रकार की होती है। यदि लग्न में कोई ग्रह हो तो आर्द्रा नक्षत्र से और यदि कोई ग्रह न हो तो कृत्तिका से गणना करनी चाहिए॥ २६॥

नोट- दशा का भुक्त- भोग्य साधन पूर्ववत् करना चाहिये।

अष्टोत्तरीदशाज्ञानाय चक्रम्-

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	ग्रहाः
६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१	वर्षाणि
आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा	मघा पूर्वाफा. उ.फाल्गु	हस्त चित्रा स्वाती विशाखा	अनुरा. ज्येष्ठा मूल	पूर्वाषा. उ.षाढ़ा अभिजित् श्रवण	धनिष्ठा शतभि. पू.भाद्र.	उ.भाद्र. रेवती अश्विनी भरणी	कृत्तिका रोहिणी मृगशि.	नक्षत्राणि
७२	१८०	९६	२०४	१२०	२२८	१४४	२५२	मासाः

विशेष- यहाँ दशा के भुक्त भोग्य के लाने में भभोग और दशा वर्ष का मान इस प्रकार लेना चाहिए। नक्षत्र का जितना चरण बीत गया हो उतना भभोग में से घटाकर शेष को भभोग मानना चाहिए। जैसे किसी का जन्म नक्षत्र के दूसरे चरण में है और भभोग ६।४। १६ है तो भभोग का चतुर्थांश १६।४ एक चरण का मान हुआ। इसे भभोग में घटा देने से ४८।१२ यही भभोग हुआ, क्योंकि एक चरण बीतने के बाद जन्म हुआ है। इसी प्रकार जिस ग्रह की दशा में जन्म हो उसके वर्ष का भी ४ या ३ भाग करके अर्थात् उस ग्रह की दशा ४ नक्षत्रों की हो तो ४ भाग अन्यथा ३ भागकर दशा वर्ष लेना चाहिए। जैसे सूर्य की दशा चार नक्षत्रों की है और उसका दशावर्ष ६ है, अतः एक नक्षत्र का दशामान १८ मास हुआ। इससे भयात को गुणाकर भभोग का भाग देने से भुक्त वर्षादि आते हैं।

अथ पञ्चोत्तरीदशामाह-

पातौ विनानुराधादि विज्ञेयं जन्मभावधि।
गणयेत्सप्तभिर्भुक्ते शेषे कल्प्या दशा शुभा॥ २७॥
रविज्ञार्कसुता भौमो भार्गवो रजनीकरः।
वाक्पतिश्च कर्काङ्के तस्यैव द्वादशाङ्गके॥ २८॥

पात (राहु-केतु) को छोड़कर अनुराधा से जन्म नक्षत्र तक गिनकर ७ से भाग देने से शेष को दशा जाने॥ २७॥ सूर्य, बुध, शनि, भौम, शुक्र,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रमा और गुरु की दशा होती है। किन्तु कर्क लग्न और उसी के द्वादशांश में जन्म हो तो पंचोत्तरी दशा लेनी चाहिए॥ २८॥

द्वादशारभ्य धृत्यन्ताः एकोत्तरदशा समाः।
क्रमात्सदा ग्रहाणां च राहुकेतू विना दशा॥२९॥
पंचोत्तरी दशा चिन्त्या निर्विशंकं द्विजोत्तम।
बलाबलविवेकेन यथान्यायेन योजयेत्॥३०॥

१२ से आरम्भ कर एक-एक बढ़ाने से १८ पर्यन्त क्रम से इनके दशा वर्ष होते हैं। यह दशा राहु-केतु को छोड़कर सात ही ग्रह की होती है।।२९।। विश्वस्त होकर पंचोत्तरी दशा को बलाबल के विचार से शुभ-अशुभ समझना चाहिए॥ ३०॥

अथ पंचोत्तरी दशाज्ञानाय चक्रम्-

रवि	बुध	शनि	मंगल	शुक्र	सोम	गुरु	ग्रहाः
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	वर्षाणि
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उ.षाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	नक्षत्राणि
शतभिषा	पूर्वाभाद्र.	उत्तराभा.	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	
पूर्वाफा.	उ.फाल्गु.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	X	

इति पंचोत्तरी दशा।

अथ शताब्दिका-दशामाह-

वर्गोत्तमगते लग्ने दशा चिन्त्या शताब्दिका।
पौष्णभाज्जन्मभं यावद् गणयेत्सप्तभिर्भजेत्॥३१॥
शेषाङ्के रवितो ज्ञेया दशा शतसमाभिधा।
रविश्चन्द्रो भृगुश्चान्द्रिर्जीवो विश्वम्भरात्मजः॥३२॥
दैवाकरिः क्रमादेते बाणा बाणा दिशो दश।
नखाः नखाः खरामाश्च वर्षाणि दिनपादितः॥३३॥

यदि लग्न में वर्गोत्तम नवांश हो तो शताब्दिका (१०० वर्ष की) दशा को लेना चाहिए। रेवती से जन्मनक्षत्र तक गिनकर सात से भाग देने पर शेष तुल्य॥ ३१॥ सूर्य से गिनकर शताब्दिका दशा में दशेश होते हैं। रवि, चन्द्र, शुक्र, बुध, गुरु, भौम॥ ३२॥ और शनि ये दशेश और क्रम से ५, ,५ १०, १०, २०, २० और तीस वर्ष इनकी दशा होती है॥ ३३॥

नोट- दशा का भुक्त-भोग्य पूर्ववत् निकालना चाहिए।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ शताब्दिकादशाज्ञानाय चक्रम्-

सूर्य	चंद्र	शुक्र	बुध	गुरु	मंगल	शनि	ग्रहाः
५	५	१०	१०	२०	२०	३०	वर्षाणि
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	नक्षत्राणि
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफा.	उ.फाल्गु.	हस्त	
चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	
उ.षाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्र.	उ.भाद्र.	+	

इति शताब्दिका दशा।

अथ चतुरशीत्यब्दिका-दशामाह-

रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो जीवः शुक्रः शनैश्चरः।
तमध्वजौ विना सर्वे ग्रहा द्वादश हायनः॥३४॥
पवनाज्जन्मभं यावत्सप्ततप्टे दशा भवेत्।
चतुराशीतिका ज्ञेया कर्मेशे कर्मसंस्थिते॥३५॥

रवि, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की राहु-केतु को छोड़कर बारह-बारह वर्ष की दशा होती है॥३४॥ स्वाती से जन्म नक्षत्र तक गिनकर सात से भाग देवें, शेष तुल्य सूर्यादि की दशा होती है। इसे चतुरशीत्यब्दिका (८४ वर्ष की) दशा कहते हैं। यदि कर्मेश कर्म स्थान में हो तो उस समय इस दशा को लेना चाहिए॥३५॥

अथ चतुरशीत्यब्दिका दशाचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	वर्षाणि
स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उ.षाढ़ा	नक्षत्राणि
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्र.	उ.भाद्र.	रेवती	अश्विनी	
भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफा.	उ.फाल्गु.	हस्त	चित्रा	+	

इति चतुरशीत्यब्दिका दशा।

अथ द्विसप्ततिका दशामाह-

लग्नेशे सप्तमे यत्र लग्ने वै मदनाधिपे।
चिन्तनीया दशा तत्र द्व्यधिका सप्ततिः समा॥३६॥
नव वर्षाणि सर्वेषां विकेतूनां ग्रहात्मनाम्।
मूलाज्जन्मर्क्षपर्यन्तं गणयेदष्टभिर्हरेत्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शेषे दशा विचिन्त्या च फलं तस्माद्विचारयेत् ॥ ३७॥

यदि लग्नेश सप्तम में हो और सप्तमेश लग्न में हो तो द्विसप्ततिका (७२ वर्ष की) दशा से फल विचारना चाहिए॥ ३६॥ मूल नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनकर ८ से भाग देने से शेष तुल्य केतु को छोड़कर सूर्यादि ग्रहों की नव-नव की दशा होती है॥ ३७॥

अथ द्विसप्ततिकादशा चक्रम्-

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
९	९	९	९	९	९	९	९	वर्षाणि
मूल रेवती पुष्य विशाखा	पूर्वाषा. अश्विनी आश्लेषा अनुरा.	उ.षाढ़ा भरणी मघा ज्येष्ठा	श्रवण कृत्तिका पूर्वाफा.	धनिष्ठा रोहिणी उ.फाल्गु	शतभि. मृगशि. हस्त	पू.भाद्र. आर्द्रा चित्रा	उ.भाद्र. पुनर्वसु स्वाती	नक्षत्राणि

इति द्विसप्ततिका दशा।

अथ षष्ट्यब्दिका-दशामाह-

यदार्को लग्नराशिस्थश्चित्या षष्टिसमा दशा।
दास्त्रास्त्रयं चतुष्कं च त्रयं वेदं पुनः पुनः ॥ ३८॥
गुर्वर्कभूसुतानां च वर्षाणि दिङ्मितानि च।
ततः शशिज्ञशुक्रार्कपुत्रागूनां समाश्च षट् ॥ ३९॥

यदि सूर्य जन्मलग्न में हो तो षष्टिहायनी (६० वर्ष की) दशा का विचार करना चाहिए, अश्विनी नक्षत्र से ४ नक्षत्र, इसके बाद ३ नक्षत्र, पुनः ४ नक्षत्र, फिर ३ नक्षत्र इस क्रम से॥३८॥ गुरु, सूर्य, भौम की दश-दश वर्ष इसके बाद चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनि और राहु की ६-६ वर्ष की दशा होती है॥३९॥

अथ षष्टिहायनी-दशाचक्रम्-

गुरु	सूर्य	मंगल	चन्द्र	बुध	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१०	१०	१०	६	६	६	६	६	वर्षाणि
अश्विनी भरणी कृत्तिका	रोहिणी मृगशि. आर्द्रा पुनर्वसु	पुष्य श्लेषा मघा	पूर्वाफा. उ.फाल्गु हस्त चित्रा	स्वाती विशाखा अनुरा.	ज्येष्ठा मूल पूर्वाषा. उ.षाढ़ा	श्रवण धनिष्ठा शतभि.	पू.भाद्र. उ.भाद्र. रेवती	नक्षत्राणि

इति षष्टिहायनी दशा।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ षट्त्रिंशतिका दशामाह-

श्रवणाज्जन्मभं यावद् गणयेदष्टभिर्भजेत् ।
शशाङ्कार्कसुरेज्यारज्ञार्कजौ शुक्र राहवः ॥४०॥
एकोपचयतश्चैकाद्वर्षाण्येषां क्रमात्स्मृताः ।
दिवसे सूर्यहोरायां रात्रौ वै चन्द्रहोरके ॥४१॥

श्रवण नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनकर ८ से भाग देने से शेषतुल्य क्रम से चन्द्र, सूर्य, गुरु, भौम, बुध, शनि, शुक्र और राहु की दशा होती है॥ ४०॥ और एक-एक अंक की वृद्धि तुल्य इनकू दशा का वर्ष होता है। दिन में सूर्य की होरा में और रात में चन्द्र की होरा में जन्म हो तो यह दशा लेनी चाहिए॥४१॥

अथ षट्त्रिंशदब्दिका-दशाचक्रम्

चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	राहु	ग्रहाः
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्षाणि
श्रवण	धनिष्ठा	शतभि.	पू.भाद्र.	उ.भाद्र.	रेवती	अश्विनी	भरणी	नक्षत्राणि
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशि.	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	
पूर्वाफा.	उ.फाल्गु	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुरा.	ज्येष्ठा	
मूल	पूर्वाषा.	उ.षाढ़ा	+	+	+	+	+	

इति षट्त्रिंशब्दिकी दशा।

अथ कालदशामाह-

सन्ध्या पञ्चघटी प्रोक्ता दिनषष्ट्यंशनाडिका ।
सूर्यविम्बादधः पूर्वं परस्तादुदयादपि ॥४२॥

दिन रात्रि का मान ६० घटी होता है, इसका चार विभाग किया गया, सूर्य के विम्ब के आधा उदय के पहिले ५ घटी और बाद में ५ घटी, यों दोनों मिलाकर १० घटी की प्रातः सन्ध्या, एवं अर्धास्त सूर्यविम्ब के पूर्व ५ घटी तथा इसके पश्चात् ५ घटी अर्थात् १० घटी की सायं सन्ध्या होती है॥ ४२॥

सन्ध्याद्वयं विंशत्या घटिकाभिः प्रकीर्त्तितम् ।
दिनस्य विंशतिर्घट्यः पूर्णसंज्ञा उदाहृता ॥४३॥
निशायाम्मुग्धसंज्ञा च घटिका विंशतिश्च याः ।
सूर्योदयस्य या सन्ध्या खण्डाख्या दशनाडिकाः ॥४४॥

इस प्रकार से दोनों संध्याएँ २० घटी की होती हैं। शेष दिन के २० घटी की पूर्ण संज्ञा॥ ४३॥ और इसी प्रकार रात्रि के २० घटी की मुग्धा संज्ञा एवं सूर्योदय के सन्ध्या की खण्डसंज्ञा होती है॥ ४४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अस्तकालस्य या सन्ध्या सुधाख्या दशनाडिकाः ।
पूर्णमुग्धे गतघटीषड्गुणे नवधा लिखेत् ॥४५॥

और सायंकाल की संध्या को सुधा कहा जाता है। यदि पूर्णा या मुग्धा में जन्म हो तो दोनों के गतघटी को ६ से गुणाकर एकत्र रख दें॥ ४५॥

तथा खंडसुधासूर्ये हते तु नवधा लिखेत् ।
विभक्तानीन्द्रिययुगैर्मानख्यानफलानि च ॥४६॥

यदि खंड या सुधा में जन्म हो तो १२ से गुणाकर एकत्र रखकर दोनों जगह ४५ से भाग देने से जो फल आवे उसे नव जगह रखकर॥ ४६॥

क्रमात्सूर्यादिकानां च मान भुक्तं मुनीश्वरैः ।
स्वस्वमानं स्वसंख्याभिर्गुणिते स्युः समादयः ॥४७॥

सूर्यादि ग्रहों की संख्या १, २ आदि से गुणा कर देने से उनके दशावर्षादि होते हैं॥ ४७॥

उदाहरण- जैसे किसी का दिन इष्टकाल २।२६ है। इसमें से सूर्योदय के संध्यामान घटी में घटा देने से शेष ७।४४ बचा अतः खण्डदशा में जन्म हुआ। इसे ६ से गुणा करने से गुणनफल ४६।२४ हुआ। इसमें ४५ से भाग देने से १।०।२४।०।१० इसे ९ जगह लिखकर १,२,३,४,५,६,७,८,९ से गुणा करने से सूर्य आदि ग्रहों के क्रम से दशावर्ष हुए।

इति कालदशा।

अथ चक्रदशामाह-

राशीश्वराद्दशा ज्ञेया सूर्यादीनां क्रमात्पुनः ।
दिवारात्रिस्तथा सन्ध्या त्रिकाले त्रिविधा दशा ॥४८॥
दिवालग्नेशस्थिताद्भाच्च रात्रौ लग्नश्रितात्तथा ।
सन्ध्यायां धनभावस्थाद् ज्ञेया चक्रदशा बुधैः ॥४९॥

दिन, रात और संध्या के अनुसार राशि और राशीश्वर के अनुसार ३ प्रकार की दशा होती है॥ ४८॥ दिन में जन्म हो तो लग्नेश जिस राशि में हो उस राशि से तथा रात में जन्म हो तो लग्न में जो राशि हो उससे और संध्या में जन्म हो तो द्वितीय भाव की राशि से सूर्यादि ग्रहों की दशा होती है॥ ४९॥

राशीनां दश वर्षाण्येकैकस्य दशा भवेत् ।
क्रमाद्बादश राशीनां विज्ञातव्या द्विजोत्तम ॥५०॥

क्रम से १२ राशियों की प्रत्येक का दश-दश वर्ष दशा का प्रमाण होता है, इसे चक्रदशा कहते हैं॥ ५०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण- दिन में जन्म है (पृ. ३८ का चक्र देखें) लग्नेश शनि वृश्चिक राशि में है, अतः वृश्चिक राशि से दशा का आरम्भ हुआ। *स्पष्टार्थ चक्र से देखिये।*

स्पष्टार्थ चक्र

वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३	२१०३	१३	३०
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८

इति चक्रदशा।

मतान्तरेण चक्रदशा-

चक्राख्याथ दशां वक्ष्ये तवाग्रे द्विजनन्दन।
लग्नस्थस्य दशा चादौ ततो वित्तस्थितादयः॥५१॥
द्वित्र्यादयोयदैकस्था तदा भागादयोऽधिकात्।
तत्रापि तुल्ये नैसर्गाद् बलात्सर्वाधिकस्य च॥५२॥

हे द्विजनंदन! मैं तुमसे चक्रदशा को कहता हूँ। पहले जन्मलग्न में बैठे ग्रह की तथा उसके बाद धन आदि भावों में बैठे हुए ग्रहों की दशा होती है॥५१॥ यदि एक ही भाव में दो या तीन ग्रह हों तो उनमें जिसका अधिक अंश हो उसका पहले, इसके बाद उससे न्यूनांश की दशा होती है। यदि अंशादि भी समान हो तो नैसर्गिक बल जिसका अधिक हो उसी की पहले दशा होती है॥५२॥

राशिप्रमितवर्षाणि भागाद्यश्चानुपाततः।
भावानामपि लग्नाच्च वर्षाणि दिङ्मितानि च॥५३॥

जिस भाव में ग्रह है उस भावकी राशि के संख्या तुल्य वर्ष प्रमाण दशावर्ष और अंश से अनुपात द्वारा मासादि लेना चाहिये। भावों की दशा जन्मलग्न से आरम्भ कर प्रत्येक भावों की दशा होती है। इनका दशावर्ष प्रत्येक भाव का दश वर्ष का होता है॥५३॥

भुक्तादशाऽनुयाताद्वा विज्ञेया स्वस्वकल्पनात्।
अन्तर्दशापि सुधिया सूक्ष्मादेशाय चिन्तयेत्॥५४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दशा का भुक्त अनुपात द्वारा लाना चाहिए। इसी प्रकार सूक्ष्म फल कहने के लिए अन्तर्दशा का भी साधन करना चाहिए॥ ५४॥

अथ कालचक्र-दशामाह-

वन्देहं गोपिकानाथं भारतीं गणनायकम् ।
पार्वत्यै कथितं पूर्वं कालचक्रं पिनाकिना ॥ ५५॥
तच्चक्रसारमुद्धृत्य लघुमार्गेण कथ्यते ।
शुभाशुभं मनुष्याणां भूत भव्यं च भावितत् ॥ ५६॥

श्रीकृष्ण, सरस्वती एवं गणेशजी को प्रणाम कर जो शंकर जी ने पार्वती से पूर्व में कालचक्र को कहा था॥ ५५॥ उसके तत्त्व को लेकर संक्षेप में से मैं कालचक्र को कह रहा हूँ, जो मनुष्यों के भूत वर्तमान और भविष्य के शुभ-अशुभ को बताने वाला है॥ ५६॥

द्वादशारं लिखेच्चक्रं तिर्यगूर्ध्वं समानकम् ।
गृहा द्वादश जायन्ते सव्यचक्रे यथाक्रमम् ॥ ५७॥
द्वितीयादिषु कोष्ठेषु राशीन्मेषादिकाँल्लिखेत् ।
एवं द्वादशराश्याख्यं कालचक्रमुदीरितम् ॥ ५८॥

खड़ी और आड़ी रेखाओंसे १२ कोष्ठका चक्र बनावें॥५७॥ उसके दूसरे आदि कोष्ठमें मेषादि राशियों को लिखें। उनके आगे कहे अनुसार नक्षत्रों का न्यास करें। इसी प्रकार एक दूसरा चक्र भी बनावें, दोनों में एक को सव्य और दूसरे को अपसव्य कल्पना कर आगे कही हुई रीति के अनुसार राशि तथा नक्षत्रों का न्यास करें। इसीको १२ राशिओं का कालचक्र कहते हैं॥५८॥

चक्रे नक्षत्रन्यासविधिः-

अश्विन्यादित्रयं चैव सव्यमार्गे प्रतिष्ठितम् ।
रोहिण्यादित्रयं चैव अपसव्ये यथाक्रमम् ॥ ५९॥
अश्विन्यादितिहस्तर्क्षमूलवाताहिवह्नयः ।
विश्वर्क्षपूर्वाभाद्रं च रेवती सव्यतारकाः ॥ ६०॥

अश्विनी से तीन नक्षत्र सव्य चक्र में, रोहिणी से ३ नक्षत्र अपसव्य चक्र में॥ ५९॥ पुनर्वसु से ३-३ नक्षत्र सव्य-अपसव्य चक्र में लिखने से सव्य चक्र में अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, मूल, स्वाती, श्लेषा, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद और रेवती-ये १० नक्षत्र सव्य चक्र में हुए॥ ६०॥

एतद्दशोडुपादानामश्विन्यादौ च वीक्षयेत् ।
विशदस्तत्प्रकारस्तु कथ्यते शृणु पार्वति ॥ ६१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इन नक्षत्रों के चरणों को अश्विनीके चरणों के समान ही देखना चाहिए। इसका विशद वर्णन आगे कह रहा हूँ॥ ६१॥

देहजीवज्ञानप्रकारमाह-

देहजीवौ मेषचापौ दास्रादाद्यचरणस्य च।
मेषादि चापपर्यन्तं राशिपाश्च दशाधिपाः॥६२॥
देहजीवौ नक्रयुग्मौ दिगीशार्काष्टभूधराः।
षड्वेदशरलोकानां राशिपाश्च दशाधिपाः॥६३॥

अश्विनी नक्षत्र के पहले चरण मेष देह और धनराशि जीवसंज्ञक होते हैं और मेष से धन पर्यन्त नव राशियाँ (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और धनु) और इनके स्वामी क्रम से दशाधीश होते हैं॥ ६२॥ अश्विनी के दूसरे चरण में मकर देह और मिथुन जीवसंज्ञक होता है। और १०,११,१२,८,७,६,४,५,३ राशियों अर्थात् मकर, कुम्भ, मीन, वृश्चिक, तुला, कन्या, कर्क, सिंह और मिथुन के स्वामी दशाधिपति होते हैं॥ ६३॥

दास्रादि दशतारााणां तृतीयचरणेषु च।
गौर्देहो मिथुनं जीवो द्वेकार्केशदशांकका:॥६४॥
क्वक्षिरामाख्यनाथास्तेदशाधिपतयः क्रमात्।
अश्विन्यादिदशोडूनां चतुर्थचरणेषु च॥६५॥

अश्विनी आदि १० नक्षत्रों के ३ रे चरण में वृष देह और मिथुन राशि जीवसंज्ञक होते हैं और २, १, १२, ११, १०, ९, १, २, ३ राशियों के स्वामी क्रम से दशा के स्वामी होते हैं। अश्विनी आदि १० नक्षत्रों के चौथे चरण में॥ ६४-६५॥

कर्कमीनौ देहजीवौ कर्कादिनवभेश्वराः।
दशाधिपाश्च विज्ञेया शृणु पार्वति! निश्चितम्॥६६॥
याम्येज्यचित्रातोयर्क्ष उत्तराभाद्रपदास्तथा।
एतत्पञ्चोडुपादानां भरण्यादौ च वीक्षयेत्॥६७॥

कर्क देह और मीन राशि जीवसंज्ञक होते हैं और कर्क से मीन पर्यन्त ९ राशियों के स्वामी दशेश होते हैं॥ ६६॥ भरणी, पुष्य, चित्रा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, इन पाँच नक्षत्रों के चरणों को भरणी नक्षत्र के समान ही विचार करना चाहिए॥ ६७॥

याम्य प्रथमपादस्य देहजीवावलिर्झषः।
नागागर्तुपयोधीषु रामाक्षीन्द्वर्कभेश्वराः॥६८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

याम्यद्वितीयपादस्य देहजीवौ घटाङ्गने ।
रुद्रदिङ्नन्दचन्द्राक्षिरामाब्धीशु दशेश्वराः ॥६९॥

भरणी के प्रथम चरण में वृश्चिक देह और मीन राशि जीवसंज्ञक हैं। ८।७।६।४।५।३।२।१।१२ राशियों के स्वामी क्रम से दशेश होते हैं। ६८।भरणी के दूसरे चरण में कुम्भ देह और कन्या जीवसंज्ञक होते हैं। ११। १०।९।१।२।३।४।५।६ राशियोंके स्वामी क्रमसे दशेश होते हैं।६९।

याम्य तृतीयपादस्य देहजीवौ तुलाङ्गने ।
सप्ताष्टाङ्कदिगीशार्कगजाद्रिरस - राशिपाः ॥७०॥
देहजीवौ कर्कचापौ चतुर्थचरणे स्मृतौ ।
वेदवाणाग्निनेत्रेन्दु - सूर्येशदशनंदपाः ॥७१॥

भरणी के तीसरे चरण में तुला देह और कन्या जीव संज्ञक होते हैं। ७।८।९।१०।११।१२।८।७।६ राशियोंके स्वामी क्रमसे दशेश होते हैं।७०। भरणी के चौथे चरण में कर्क देह और धनराशि जीवसंज्ञक हैं। ४।५।३।२। १।१२।११।१०।९ राशियों के स्वामी क्रम से दशेश होते हैं॥७१॥

सव्यमेवं विजानीयादपसव्यं तु कथ्यते ।
द्वादशारं लिखेच्चक्रं तिर्यगूर्ध्वं समानकम् ॥७२॥
द्वितीयादिषु कोष्ठेषु वृश्चिकाद् व्यस्तमालिखेत् ।
प्राजापत्यमघेन्द्राग्निं श्रवणं च चतुष्टयम् ॥७३॥

उपर्युक्त सव्य चक्र को कहने के बाद अब अपसव्य चक्र को कह रहा हूँ। १२ कोष्ठ को ऊपर-नीचे चक्र से लिखकर॥७२॥ दूसरे आदि कोष्ठ में वृश्चिकादि उल्टे राशियों को लिखें, उसमें रोहिणी, मघा, विशाखा और श्रवण- इन चार नक्षत्रों को लिखें॥७३॥

धातृवद्वीक्षयेद् देहजीवौ कर्किधनुर्धरौ ।
नवदिग्रुद्रसूर्येन्दुनेत्राङ्गीष्वब्धिराशिपाः ॥७४॥
धातृद्वितीयचरणे तुलास्त्री - देहजीवकौ ।
षष्ठसप्ताष्टार्करुद्रा दिगङ्कवसुसप्तपाः ॥७५॥

उपर्युक्त चार नक्षत्रों में रोहिणी के समान ही देह-जीव का विचार करना चाहिए। यथा रोहिणी के प्रथम चरण में कर्क देह और धनु राशि जीवसंज्ञक हैं। ९।१०।११।१२।१।२।३।५।४ राशियों के स्वामी दशेश होते हैं॥७४॥ रोहिणी के दूसरे चरण में तुला देह और कन्या

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जीवसंज्ञक हैं। ६।७।८। १२।११।१०।९।८।७ राशियों के स्वामी दशेश होते हैं॥ ७५॥

धातृतृतीयचरणे देहजीवौ कुम्भाङ्गने।
षड्बाणाब्धिगुणाक्षीन्दुनन्ददिग्रुद्र - राशिपाः ॥७६॥
रोहिण्यन्तपदे देहजीवालिझषौ स्मृतौ।
सूर्येन्दुद्विगुणेष्वब्धि - तर्कशैलाष्टराशिपाः ॥७७॥

रोहिणी के तीसरे चरण में कुम्भ देह और कन्या जीवसंज्ञक हैं। ६।५। ४।३।२।१।९।१०।११ राशियों के स्वामी क्रम से दशेश होते हैं॥ ७६॥ रोहिणी के चौथे चरण में वृश्चिक देह और मीन जीवसंज्ञक हैं। १२। १। २। ३। ५। ४। ६। ७। ८ राशियों के स्वामी क्रम से दशेश होते हैं॥ ७७॥

चान्द्ररौद्रभगार्यम्ण - मित्रेन्द्रवसुवारुणम्।
एतत्ताराष्टकं चैव विज्ञेयं चान्द्रवत्क्रमात् ॥७८॥
देहजीवौ कर्कमीनौ मृगाद्यचरणस्य च।
व्यस्तमीनादि कर्कान्तं राशिपाश्च दशाधिपाः ॥७९॥

मृगशिरा, आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा – इन आठ नक्षत्रों के देह जीवादि को मृगशिरा के समान समझें॥ ७८॥ मृगशिरा के प्रथम चरण में कर्क देह और मीन राशि जीवसंज्ञक हैं। मीन से उलटे कर्क पर्यन्त (१२। ११।१०। ९। ८। ७। ६। ५। ४) राशियों के स्वामी दशेश होते हैं॥ ७९॥

गौर्देहो मिथुनं जीवो इन्दुभस्य द्वितीयके।
त्रिद्व्येकाङ्कदिगीशार्क - चन्द्रद्विभवनाधिपाः ॥८०॥
देहजीवौ नक्रयुग्मे मृगपादे तृतीयके।
त्रिबाणाब्धिरसागाष्ट सूर्येशदशराशिपाः ॥८१॥

मृगशिरा के दूसरे चरण में वृष देह और मिथुन राशि जीवसंज्ञक होते हैं। ३। २। १। ९। १०। ११। १२। १।२ राशियों के स्वामी दशेश होते हैं॥ ८०॥ मृगशिरा के तीसरे चरण में मकर देह और मिथुन राशि जीवसंज्ञक होती है। ३।५।४।६।७।८।१२।११।१० राशियों के स्वामी दशेश होते हैं॥ ८१॥

मेषचापौ देहजीवाविन्दुभस्य चतुर्थके।
व्यस्तं चापादि मेषान्तं राशिपाश्च दशाधिपाः ॥८२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

एवं व्यस्ततरे ज्ञेयं देहजीवदशादिकम् ।
स्पष्टं तवाग्रे कथितं पार्वति! प्राणवल्लभे ॥८३॥

मृगशिरा के चौथे चरण में मेष देह और धनु जीवसंज्ञक हैं। धनु राशि से मेष पर्यन्त विलोम (९।८।७।६।५।४।३।२।१) राशियों के स्वामी दशेश होते हैं॥ ८२॥ हे पार्वति ! यह अपसव्य चक्र के देह, जीव आदि को तुम्हारे सामने कहा॥ ८३॥

अथ दशावर्षाणि-

भूतैकविंशगिरयो नवदिक् षोडशाब्धयः ।
सूर्यादीनां क्रमादब्दाः राशीनां स्वामिनो वशात् ॥८४॥

५।१२।७।९।१०।१६। ४ यह क्रम से सूर्यादि ग्रहों के दशा वर्ष राशियों के अधिपति के क्रम से हैं। (चक्र को देखिए)॥ ८४॥

चक्रम्-

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	राशयः
मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	अधिपाः
७	१६	९	२१	५	९	१६	७	१०	४	४	१०	दशावर्णाणि

दशाज्ञान-प्रकारमाह-

नरस्य जन्मकाले वा प्रश्नकाले यदंशकः ।
तदादि नवपर्यन्तमायुषं परिचक्षते ॥८५॥
सम्पूर्णायुर्भवेदादावर्धमंशस्य मध्यमम् ।
अपमृत्युसमं कष्टमंशान्ते चापरे जगुः ॥८६॥

मनुष्य से जन्मकाल वा प्रश्नकाल में नक्षत्र का जो अंश (चरण) हो उससे आरम्भ करके नव (९) राशियों के वर्ष संख्या तुल्य उस मनुष्य की आयु होती है॥ ८५॥ अन्य विद्वानों का कहना है कि नक्षत्र के चरण के आदि में जन्म हो तो पूर्णायु, मध्य में आधा और अन्त में कष्ट वा अल्पायु होता है॥ ८६॥

नक्षत्रचरणतः नवांशज्ञानम्-

ज्ञात्वैवं स्फुटसिद्धान्तं राश्यंशं गणयेद् बुधः ।
अनुपातेन वक्ष्यामि तदुपायमतः परम् ॥८७॥
गततारा त्रिभिर्भक्ता शेषं चत्वारि संगुणम् ।
वर्तमानपदेनाढ्यं राशीनामंशको भवेत् ॥८८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इस सिद्धान्त को जानकर राशि के अंश की गणना करनी चाहिये। अब मैं अनुपात द्वारा उसके जानने का उपाय कह रहा हूँ।८७। गतनक्षत्र संख्या (अश्विनी से जन्मनक्षत्र के पूर्व नक्षत्र की संख्या) को ३ से भाग देने से जो शेष बचे उसे ४ से गुणाकर गुणनफल में जन्मनक्षत्र वा वर्तमान नक्षत्र के वर्तमान चरणसंख्या को जोड़ दे,जो संख्या हो वही मेष से गिनने से नवांशहोता है।८८।

उदाहरण- जैसे पुनर्वसु के प्रथम चरण में जन्म है तो गतनक्षत्र (आर्द्रा) संख्या ६ में तीन से भाग देने पर शेष को ४ से गुणाकर उसमें पुनर्वसु के प्रथम चरण की संख्या १ जोड़ने से १० मेष से गिनने से मेष ही का नवांश हुआ।

चक्रे राशीनां वर्ष-योग-संख्यामाह-

मेषगोयमकुलीरराशिषु स्वांशकेषु परमायुरुच्यते।
ज्ञानकं १०० मद ८५ गज ८३ स्तदा ८६
क्रमात्तत्त्रिकोण भवनेषु तद्भवेत् ॥८९॥

कालचक्र में स्थित मेषादि राशियों से मेषांश में १००, वृषांश में ८५ मिथुनांश में ८३ और कर्कांश में ८६ वर्ष योग वा परमायु होता है। इन राशियों के त्रिकोण (५।९) राशियों में भी यही वर्ष योग होते हैं॥८९॥

स्पष्टार्थं चक्रम्-

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंशकाः
१००	८५	८३	८६	१००	८५	८३	८६	१००	८५	८३	८६	वर्षयोगः

विशेष- यहाँ ज्ञानकं मद, गज आदि शब्दों से 'कटपयवर्ग भवैरिहःअङ्का' इत्यादि के अनुसार अंको को समझना चाहिए।

दशारम्भज्ञानप्रकारमाह-

ये जीवा अंशके जाता गतनाडीपलेन तु।
तदंशस्य हतांकस्तु पञ्चभूमिविभाजिताः ॥९०॥

मनुष्य का जन्म, नक्षत्र के जिस चरण में हो उसके गत घटी-पल को उसके वर्ष, संख्या को गुणाकर गुणनफल में १५ का भाग देने से॥९०॥

एवं महादशारम्भे सूर्यादीनां यथाक्रमात्।
गणयेन्नवपर्यन्तमायुष्यं तत्प्रकीर्तितम् ॥९१॥

लब्धि दशा का भुक्त वर्षादि होता है, इसे दशावर्ष में घटाने से भोग्य वर्षादि होता है। इस प्रकार से दशा का आरम्भ होता है॥९१॥

उदाहरण-किसी का पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म है। पुनर्वसु सव्य नक्षत्र है। उसका देहाधिपति भौम और जीवाधिपति गुरु है। पुनर्वसु

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

का भभोग ५५।५२ भयात ३२।१० है। भभोग का चार भाग करने से एक भाग घट्यादि १३।४८।१५ हुआ, यही एक चरण का मान है। इसे दूनाकर भयात में घटाने से शेष ४।१३।३० यह पुनर्वसु के तीसरे चरण की भुक्त घट्यादि है, इसका दशा वर्ष १०० है, इससे शेष घट्यादि को गुणा करने से ४००।१३००।३००० सवर्णन करने से ४२२। ३०।१० हुआ। इसमें १५ का भाग देने से २८।३।१८ वर्षादि जन्मकाल में भुक्त हुआ। पुनर्वसु सव्य गणना में है। देहादि जीव पर्यन्त गणना होगी। अतः पुनर्वसु प्रथम चरण में देह मेष और जीव धनु है। अतः भुक्त वर्षादि २८।३।१८ में मेष से वृष पर्यन्त के योग वर्ष २३ को घटाने से ५।३।१८ वर्षादि मिथुन के भुक्त वर्षादि हुए अतः इसे बुध के वर्षमान ९ से घटाने से ३।८।४२ वर्षादि भोग्य हुआ। अतः विंशोत्तरी दशा के समान ही मिथुन आदि दशा का क्रम हुआ। शेष निम्नलिखित चक्र से स्पष्ट है।

कालचक्रदशा-

मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	राशि
५	२१	५	९	१६	७	१०	७	७	
३								१६	
१८									
२०१३	२०१८	२०३९	२०४४	२०५३	२०६९	२०७६	२०८६	२०९३	२१०९
३	७	७	७	७	७	७	७	७	७
१८	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६

अथ कालचक्रगतिभेदमाह-

प्रथमा गति मण्डूकी द्वितीया मर्कटी तथा।
बाणाच्च नवपर्यन्तं गतिः सिंहावलोकनम् ॥९२॥
कन्यायां कर्कटे वापि सिंहभे मिथुनेऽपि च।
माण्डूकी गति विज्ञेया भवेद्रोगस्य कारणम् ॥९३॥

कालचक्र की गति ३ प्रकार की होती है। पहली गति का नाम मण्डूकी है, दूसरी का नाम मर्कटी और तीसरी का नाम सिंहावलोकन है॥९२॥ कन्या से कर्क में और सिंह से मिथुन में जाने को मण्डूकी गति कहते हैं, इसमें रोग होता है॥९३॥

मीनवृश्चिकयोर्विप्र! चापमेषस्तथैव च।
सिंहावलोकनं चैव तादृशं च फलं भवेत्।
सिंहावगतिमार्गे च मर्कटीगतिसंभवः ॥९४॥

मीन से वृश्चिक में और धनु से मेष में जाने को सिंहावलोकन गति

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ कालचक्रदशायां सव्यमार्गचक्रम्-

दशानां नक्षत्राणि तत्पादानि च नक्षत्र	पादाः	देहा. धी.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	परमा. वर्षा.	जीवा-धिपा.	राश. अंशा.
अ. मू. पुन. पुनः ह.	१	मं.	मं.=	शु.=	बु.=	चं.=	र.=	बु.=	शु.=	मं.=	गु.=	१००	गु.	मे.
१च. १च. १च. १च. १च.			७व.	१६व.	६व.	२१व.	५व.	६व.	१६व.	७ व.	१०व.	वर्ष		
अ. मू. पुन. पू. ह.	२	श.	श.=	श.=	गु.=	मं.=	शु.=	बु.=	सो.=	र.=	बु.=	८५	बु.	बृ.
२च. २च. २च. २च. २च.			४व.	४व.	१०व.	७व.	१६व	६व.	२१व.	५व.	६व.	वर्ष		
अ. मू. पुन. पू. ह.	३	शु.	शु.=	मं.=	गु.=	श.=	श.=	गु.=	मं.=	शु.=	बु.=	८३	बु.	मि.
३च. ३च. ३च. ३च. ३च.			१६व.	७व.	१०व.	४व.	४व.	१०व.	७व.	१६व.	६व.	वर्ष		
अ. मू. पुन. पू. ह.	४	चं.	चं.=	र.=	बु.=	शु.=	मं.=	गु.=	श.=	श.=	बृ.=	८६	गु.	क.
४च. ४च. ४च. ४च. ४च.			२१व.	५व.	६व.	१६व.	७व.	१०व.	४व.	४व.	१०व.	वर्ष		
भ. कृ. रो. मृ. उ.भा.	१	मं.	मं.=	शु.=	बु.=	चं.=	मं.=	बु.=	शु.=	मं.=	बृ.=	१००	गु.	सिं.
१च. १च. १च. १च. १च.			७व.	१६व.	६व.	२१व.	७व.	६व.	१६व.	७व.	१०व.	वर्ष		
भ. कृ. रो. मृ. उ.भा.	२	श.	श.=	श.=	गु.=	मं.=	शु.=	बु.=	सो.=	र.=	बु.=	८५	बु.	क.
२च. २च. २च. २च. २च.			४व.	४व.	१०व.	७व.	१६व	६व.	२१व.	५व.	६व.	वर्ष		
भ. कृ. रो. मृ. उ.भा.	३	शु.	शु.=	मं.=	गु.=	श.=	श.=	गु.=	मं.=	शु.=	बु.=	८३	बु.	तु.
३च. ३च. ३च. ३च. ३च.			१६व.	७व.	१०व.	४व.	४व.	१०व.	७व.	१६व.	६व.	वर्ष		
भ. कृ. रो. मृ. उ.भा.	४	चं.	चं.=	र.=	बु.=	शु.=	मं.=	गु.=	श.=	श.=	बृ.=	८६	गु.	बृ.
४च. ४च. ४च. ४च. ४च.			२१व.	५व.	६व.	१६व.	७व.	१०व.	४व.	४व.	१०व.	वर्ष		

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ कालचक्रदशायां सव्यमार्गचक्रम्-

दशानां नक्षत्राणि तत्पादानि च	नक्षत्र	पादाः	देहा. धी.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	परमा. वर्षा.	जीवा-धिपा.	राश. अंशा.
कृ. उ.षा. श्ले. रे. स्वा. १सो. १सो. १सो. १सो.	कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्षा	१	मं.	मं.= ७व.	शु.= १६व.	बु.= ६व.	चं.= २१व.	र.= ५व.	बु.= ६व.	शु.= १६व.	मं.= ७ व.	गु.= १०व.	१०० वर्षा.	गु.	वृ.
कृ. उ.षा. श्ले. रे. स्वा. २सो. २सो. २सो. २सो.		२	शु.	श.= ४व.	श.= १०व.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	शु.= १६व	बु.= ६व.	सो.= २१व.	र.= ५व.	बु.= ६व.	८५ वर्ष	बु.	मं.
कृ. उ.षा. श्ले. रे. स्वा. ३सो. ३सो. ३सो. ३सो.		३	शु.	शु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	शु.= १६व.	बु.= ६व.	८३ वर्ष	बु.	कु.
कृ. उ.षा. श्ले. रे. स्वा. ४सो. ४सो. ४सो. ४सो.		४	सो.	र.= २१व.	र.= ५व.	बु.= ६व.	शु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	बु.= ६व.	८६ वर्ष	बु.	मी.

अथ कालचक्रदशायां सव्यमार्गचक्रम्-

	रो. २सो.	वि. २सो.	म. २सो.	श्र. २सो.	धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा,	१	गु.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	शु.= १६व.	बु.= ६व.	र.= ५व.	सो.= २१व.	८६	सो.	वृ.
	रो. २सो.	वि. २सो.	म. २सो.	श्र. २सो.		२	बु.	बु.= ६व.	शु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	८३	शु.	तु.
	रो. ३सो.	वि. ३सो.	म. ३सो.	श्र. ३सो.		३	बु.	बु.= ६व.	र.= ५व.	सो.= २१व.	बु.= ६व.	शु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	८५	श.	क.
	रो. ४सो.	वि. ४सो.	म. ४सो.	श्र. ४सो.		४	गु.	बृ.= १०व.	मं.= ७व.	शु.= १६व.	बु.= ६व.	र.= ५व.	सो.= २१व.	बु.= ६व.	शु.= १६व.	मं.= ७व.	१००	मं.	सिं.

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ कालचक्रदशायां सव्यमार्गचक्रम्-

दशानां नक्षत्राणि तपादानि च				नक्षत्र	पादाः	जीवा-धिपाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	परमा. वर्षा.	जीवा. धिपाः	राशि. अंशाः
मू. १च.	अ. १च.	पू. १च.	ध. १च.	मूलार्द्रा, पुनर्वसुपुष्या, श्लेषाहस्ता, चित्रार्द्धा	१	बु.	गु.= १०व.	श.= ४व.	गु.= ४व.	मं.= १०व.	श.= ७व.	गु.= १६व.	बु.= ६व.	रा.= ५व.	सो.= २१व.	८६	सो.	क.
मू. २च.	अ. २च.	पू. २च.	ध. २च.		२	बु.	बु.= ६व.	गु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	गु.= १६व.	८३	गु.	मि.
मू. ३च.	अ. ३च.	पू. ३च.	ध. ३च.		३	बु.	बु.= ६व.	रा.= ५व.	सो.= २१व.	बु.= ६व.	गु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	८५	श.	वृ.
मू. ४च.	अ. ४च.	पू. ४च.	ध. ४च.		४	बु.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	गु.= १६व.	बु.= ६व.	रा.= ५व.	सो.= २१व.	बु.= ६व.	गु.= १६व.	मं.= ७व.	१००	मं.	मे.
आ. १च.	ज्ये. १च.	उ. १च.	शव. १च.	मृगशीर्षा, धनिष्ठा, चित्रार्द्धा, स्वातिश्चेति	१	बु.	गु.= १०व.	श.= ४व.	गु.= ४व.	मं.= १०व.	श.= ७व.	गु.= १६व.	बु.= ६व.	रा.= ५व.	सो.= २१व.	८६	सो.	मी.
आ. २च.	ज्ये. २च.	उ. २च.	शव. २च.		२	बु.	बु.= ६व.	गु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	गु.= १६व.	८३	गु.	कें.
आ. ३च.	ज्ये. ३च.	उ. ३च.	शव. ३च.		३	बु.	बु.= ६व.	रा.= ५व.	सो.= २१व.	बु.= ६व.	गु.= १६व.	मं.= ७व.	गु.= १०व.	श.= ४व.	श.= ४व.	८५	श.	म.
आ. ४च.	ज्ये. ४च.	उ. ४च.	शव. ४च.		४	बु.	गु.= १०व.	मं.= ७व.	गु.= १६व.	बु.= ६व.	रा.= ५व.	सो.= २१व.	बु.= ६व.	गु.= १०व.	मं.= १६व.	१००	मं.	ध.

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कहते हैं, नाम सदृश ही इसका फल होता है। सिंह से कर्क में जाने को मर्कटी गति कहते हैं॥ ९४॥

गतिफलञ्चाह-

मीनात्तु वृश्चिके याते ज्वरो भवति निश्चितम्।
कन्यातः कर्कटि याते भ्रातृबन्धु विनाशनम्॥ ९५॥

मीनसे वृश्चिक प्राप्त हो तो उस दशा में निश्चय ही ज्वर होता है। कन्या से कर्क प्राप्त हो तो उस दशा में माता और बन्धु का नाश होता है॥ ९५॥

सिंहात्तु मिथुने यातेस्त्रियो व्याधिर्भवेद् ध्रुवम्।
कर्कटाच्च हरौ याते वधो भवति देहिनाम्।
पितृबन्धुमृतिं विद्याच्चापान्मेषगते पुनः॥ ९६॥

सिंह से मिथुन प्राप्त हो तो इस दशा में स्त्री को रोग होता है। कर्क से सिंह प्राप्त हो तो उस दशा में जातक का वध होता है। धनु से मेष प्राप्त हो तो पिता के भाई (चाचा) की मृत्यु होती है॥ ९६॥

पुनः गतिफलमाह-

कन्यातः कर्कटि याते पूर्वभागे महत्फलम्।
उत्तरं देशमाश्रित्य शुभा यात्रा भविष्यति॥ ९७॥
सिंहात्तु मिथुने याते पूर्वभागं विसृज्यते।
कार्यान्तेऽपि च नैर्ऋत्यां सुखं यात्रा भविष्यति॥ ९८॥

कन्या से कर्क में जाने के समय पूर्वभाग से लाभ और उत्तर देश की शुभकर यात्रा होती है॥ ९७॥ सिंह से मिथुन में जाने के समय पूर्व दिशा को त्याग देना चाहिए, कार्य हो जाने पर भी नैर्ऋत्य कोण की यात्रा से सुख होता है॥ ९८॥

कर्कटात्तु गते सिंहे कार्यहानिश्च जायते।
दक्षिणां दिशमाश्रित्य प्रत्यागमनकं भवेत्॥ ९९॥
मीनात्तु वृश्चिके याते उदग्गच्छति संकटम्।
चापाच्च मकरे विप्र! दुःखं संकटमुच्यते॥ १००॥

कर्क से सिंह में जाने के समय दक्षिण दिशा में यात्रा करने से कार्य की हानि होती है और दक्षिण से पश्चिम की यात्रा होती है॥ ९९॥ मीन से वृश्चिक में जाने के समय उत्तर की यात्रा से संकट होता है। धनू से मकर में जाने से दुःख और संकट होता है॥ १००॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चापान्मेषे तु यात्रायां वधो बन्धोमृतिर्भवेत् ।
तुला संपद्विवाहश्च स्त्रीप्राप्तिर्वृश्चिके गतिः ॥१०१॥

धनु से मेष में जाने के समय वध, बंधन और मृत्यु होती है। तुला से वृश्चिक में जाने के समय सम्पत्ति एवं स्त्री की प्राप्ति होती है॥१०१॥

अथ कालचक्रांशफलम्-

मेषांशे चेरको विद्याच्छ्रीमाञ्छुक्रांशके भवेत् ।
बुधांशे ज्ञानसंम्पन्नश्चन्द्रे च नृपतिर्भवेत् ॥१०२॥
सिंहांशे भूपतिः प्रोक्तः सौम्यांशे पंडितो भवेत् ।
तुलांशे राजमन्त्री च भौमांशे निर्धनो भवेत् ॥१०३॥
चापांशे ज्ञानसंयुक्तो मकरांशे च पापकृत् ।
कुम्भांशे च वणिक्कर्मा मीनांशे किल धान्यवान् ॥१०४॥

यदि कालचक्र की दशा में मेषांश में जन्म हो तो चोर, वृषांश में लक्ष्मीवान्, मिथुनांश में ज्ञानी एवं कर्कांश में राजा होता है॥१०२॥ सिंहांश में राजा, कन्यांश में पंडित, तुलांश में राजमन्त्री तथा वृश्चिकांश में दरिद्र होता है॥१०३॥ धन्वंश में बुद्धिमान्, मकरांश में पापी, कुम्भांश में व्यापारी और मीनांश में धान्यवान् होता है॥१०४॥

अथ देहजीवफलम्-

देहजीवसमायोगे भौमार्करविजादिभिः ।
एकैकयोगे मरणं बहुयोगे तु का कथा ॥१०५॥
देहयोगे महाबाधा जीवयोगे तु मृत्युदः ।
द्वाभ्यां संयोगमात्रेण हन्यते नात्र संशयः ॥१०६॥

यदि देह या जीव में कोई भी भौम, सूर्य, शनि में से किसी में युत हो तो मरण होता है, यदि सभी से युक्त हो तो क्या कहना?॥१०५॥ देह में पापग्रह का योग हो तो महाबाधा होती है और जीव में पापयोग हो तो मृत्यु होती है और यदि दोनों में पापयोग हो तो अवश्य मृत्यु होती है॥१०६॥

देहे जीवे यदा राहुः सौरिर्वक्रो रविः स्थितः ।
मृत्युकालगतिं ज्ञात्वा शांतिं कुर्याद्यथाविधि ॥१०७॥
देहे जीवे यदा सोमे सौम्यजीवसितः स्थितः ।
तदा सौख्यं प्रकुर्वन्ति रोगमृत्युविनाशनम् ॥१०८॥

देह-जीव में जब राहु, शनि, भौम, सूर्य स्थित हों तो उस समय मृत्यु का भय होता है, इसे जानकर शान्ति करनी चाहिये॥१०७॥ देह-

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जीव में जब चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र होते हैं, उस समय रोग तथा मृत्यु का नाश कर सुख देते हैं॥ १०८॥

पापक्षेत्रे दशायोगे देहजीवौ तु दुःखदौ।
शुभक्षेत्रे दशायोगे शुभयोगे शुभं भवेत्॥ १०९॥
देहे शुभग्रहैर्युक्ते भूषणादि ध्रुवं भवेत्।
जीवे शुभग्रहैर्युक्ते पुत्रदोरादिकाँल्लभेत्॥ ११०॥

देह-जीव पाप क्षेत्र में हो और पापयुक्त हो तो उसकी दशा में दुःख होता है तथा देह-जीव शुभक्षेत्र में हो और शुभयुक्त हो तो उसकी दशा में शुभ फल होता है॥ १०९॥ देह में शुभग्रह युक्त हों तो भूषण आदि होता है और जीव शुभग्रह से युक्त हो तो पुत्र, स्त्री आदि का लाभ होता है॥ ११०॥

इति कालचक्रदशाज्ञानम्।

अथ चरदशानयनम्-

लग्नादि व्ययपर्यन्तं राशयो द्वादशो द्विज।
आयुर्वर्षप्रदातारः एभिश्चर दशामता॥ १११॥
ओजक्षाणां क्रमाद्विप्र! समानां व्युत्क्रमात्पुनः।
नाथान्तेन समा ज्ञेया निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ ११२॥

लग्न से १२ वें भाव पर्यन्त १२ राशियाँ होती हैं, ये आयु के वर्ष को देनेवाली होती हैं और इन्हीं से चरदशा भी होती है॥ १११॥ ओज (विषम) राशियों का क्रम से और सम राशियों का व्युत्क्रम से उस राशि के स्वामी पर्यन्त गिनने से दशा के वर्ष का मान होता है॥ ११२॥

मेषो वृषोऽथमिथुनो तुलालिश्च धनुर्धरः।
एतेषामोजसंज्ञा स्यादब्दानां गणनाक्रमात्॥ ११३॥
कर्कः सिंहश्च कन्या च नक्रकुम्भझषा द्विज।
एतेषां समसंज्ञा स्याद्वर्षाणां व्युत्क्रमाद्द्विज॥ ११४॥

मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु राशियों की ओज संज्ञा है और इन्हें वर्ष के गणना क्रम से गिनना चाहिए॥ ११३॥ कर्क, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ तथा मीन राशियों की सम संज्ञा है। इनमें व्युत्क्रम गणना से वर्ष की संख्या को जानना चाहिए॥ ११४॥

स्वर्क्षसंस्थितखेटस्य वर्षाणि द्वादशैव हि।
धनस्थे चैकवर्षं हि तृतीये हायनद्वयम्॥ ११५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तुर्ये वर्षत्रयं विप्र! पंचमे तुर्यहायनम्।
रिपुस्थे पंचवर्षाणि षड्वर्षाणि च सप्तमे ॥११६॥

ग्रह (राशीश) अपनी राशि में हो तो १२ वर्ष की दशा होती है। अपनी राशि से धन भाव में हो तो १ वर्ष, तीसरे भाव में हो तो २ वर्ष॥११५॥ चौथे में हो तो ३ वर्ष, पाँचवें में हो तो ४ वर्ष, छठे में हो तो ५ वर्ष, सातवें में हो तो ६ वर्ष, आठवें में हो तो ७ वर्ष॥११६॥

रंध्रस्थे नववर्षाणि चाष्टवर्षाणि पुण्यभे।
नभस्थे चाङ्कवर्षाणि दिग्वर्षाणि तु लाभगे।
व्ययस्थे रुद्रवर्षाणि राश्यंकाश्च तथानघः ॥११७॥

नवम में हो तो ८ वर्ष, दशम में हो तो ९ वर्ष, एकादश में हो तो १० वर्ष और बारहवें भाव में हो तो ११ वर्ष की दशा होती है। यह पूर्व में कहे हुये प्रकार से जानना चाहिए॥११७॥

द्विराश्यधिपतौ विशेषः-

वृश्चिकाधिपती द्वौ च कुजकेतू द्विजोत्तम।
स्वर्भानुपंडू कुम्भस्य पती द्वौ चिंत्तयेद्द्विज ॥११८॥
स्वर्क्षे यदि स्थितौ द्वौ च भानुवर्षप्रदायकौ।
परर्क्षे संगतौ द्वौ च नाथान्ते न विचिन्तयेत् ॥११९॥

वृश्चिक राशि के भौम और केतु– ये दो स्वामी हैं और कुम्भ राशि के राहु तथा शनि स्वामी हैं॥११८॥ यदि दोनों स्वामी अपनी राशि में हों तो १२ वर्ष की दशा होती है। यदि दोनों भिन्न राशि में हों तो स्वामी पर्यन्त दशा की गणना नहीं करनी चाहिये॥११९॥

परर्क्षे भिन्नभिन्नस्थौ द्वयोर्मध्येतु यो बली।
तस्य नाथान्तरीत्या च वर्षाणि संलिखेद्द्विज ॥१२०॥
अग्रहात्सग्रहः प्राणी सग्रहादधिकग्रहाः।
साम्ये चरस्थिरद्वंद्वाः क्रमात्स्युर्बलिनो द्विज ॥१२१॥

भिन्न राशि में दोनों अलग-अलग हों तो दोनों में जो बली हो उसी के साथ पर्यन्त रीति से दशा वर्ष लेना चाहिये॥१२०॥ बल विचार में ग्रहहीन से ग्रहयुक्त बली होता है। यदि दोनों ग्रह युक्त हों तो जिसके साथ अधिक ग्रह हों, वह बली होता है। यदि ग्रह में समानता हो तो चर, स्थिर, द्विस्वभाव क्रम से बल का विचार करना चाहिए॥१२१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राशिसाम्ये सदा विप्र! बहुवर्षप्रदो बली।
तद्बाधादुच्चगः खेटो बलवान्भवति द्विज॥१२२॥
यद्यप्यल्पवर्षदो विप्र! तदापि तुङ्गगो बली।
नाथान्तेन समा ज्ञेया पूर्वोक्तेन क्रमेण हि॥१२३॥

यदि राशि में भी समानता हो तो जिसका अधिक वर्ष हो, वह बली होता है तथा इसमें भी उच्चस्थ ग्रह बली होता है॥१२२॥ यद्यपि उच्चस्थ ग्रह अल्पवर्ष देने वाला होता है, तथापि वही बली होता है। यहाँ स्वामी पर्यन्त दशा वर्ष लेना चाहिए॥१२३॥

उच्चखेटस्य सद्भावे वर्षमेकं तु निःक्षिपेत्।
तथैव नीचखेटस्य वर्षमेकं त्यजेद्द्विज॥१२४॥
एकः स्वक्षेत्रगो अन्यस्तु परत्र यदि संस्थितः।
तदान्यत्र स्थितं नाथं परिगृह्य दशां नयेत्॥१२५॥

उच्चस्थ ग्रह के वर्ष में १जोड़ देना चाहिए और नीचस्थ ग्रह में १वर्ष कम करना चाहिए।१२४।यदि एक ग्रह अपने राशिमें हो और दूसरा अन्य राशि में हो तो वहाँ अन्यत्र स्थित ग्रह के स्वामी से दशावर्ष लेना चाहिए॥१२५॥

एकः स्वोच्चगतस्त्वन्यः परत्र यदि संस्थितः।
ग्राहयेदुच्चखेटस्थ राशिमन्यं विहाय वै॥१२६॥

एक ग्रह अपने उच्च में हो और दूसरा अन्यत्र हो तो वहाँ उच्चस्थ ग्रह को अन्यग्रह की राशि को छोड़कर लेना चाहिए॥१२६॥

चरदशाफलमाह-

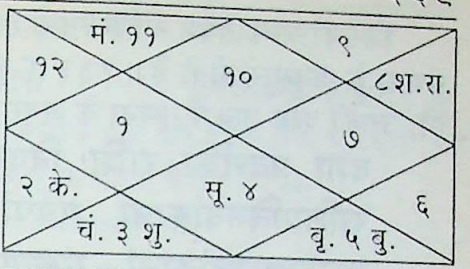
एवं सर्वं समालोच्य दशायां निधनं वदेत्।
पापयोगे पापदृष्ट्या यस्य पापत्रिकोणगाः॥१२७॥
निधन् तद्दशायां वै भाषितं ब्रह्मणा यथा।
चरमुख्यदशायास्ते कथयिष्याम्यहं फलम्॥१२८॥

इस प्रकार सभी पदार्थों का विचार कर निधन को कहना। जिस दशा की राशि में पापग्रह का योग हो अथवा दृष्टि हो वा पापग्रह से त्रिकोण में हो तो॥१२७॥ उस दशा में अवश्य मृत्यु होती है, ऐसा ब्रह्मा ने कहा है। इस प्रकार चरदशा का फल मैंने कहा॥१२८॥

उदाहरण-जन्माङ्ग के अनुसार जन्मलग्न मकर समराशि है, अतः उत्क्रम गणना से मकर से दशा का आरम्भ हुआ और उसका दशावर्ष ३ हुआ। कुम्भ

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

का शनिपर्यन्त ३ वर्ष, मीन का ७ वर्ष, मेष ओज राशि है अतः क्रम गणना से मेष का १०वर्ष, वृष का १ वर्ष, मिथुन का २ वर्ष, इसी प्रकार अन्य राशियों के दशा वर्ष भी लाना चाहिये, शेष चक्र से स्पष्ट है।



चरदशाचक्रम्

मकर	धनु	वृष	तुला	कर्क	सिंह	कन्या	मिथु.	वृश्चि.	मेष	मीन	कुंभ	राशि
२	८	९	४	११	११	१०	२	१	१०	७	३	वर्ष
२०१५	२०२३	२०३२	२०३६	२०४७	२०५८	२०६८	२०७०	२०७१	२०८१	२०८८	२०९१	संवत्
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	सूर्य

अथ नवांशस्थिरदशा-

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि दशा स्थिर विशेषतः।
नवांशकदशामानं तवाग्रे द्विजनन्दन ॥१२९॥
प्रतिराशिप्रदिष्टैवमङ्कांङ्का च दशास्थिरा।
तन्वादिव्ययभावानां स्पष्टीकृत्वा द्विजोत्तम ॥१३०॥

पराशर जी ने कहा हे द्विजोत्तम ! अब मैं तुमसे स्थिर दशा के मध्य में नवांशक दशा को कहता हूँ॥ १२९॥ लग्नादि द्वादशभावों को स्पष्ट करना चाहिये। प्रत्येक राशि में नव नवमांश होते है, इन्हीं की दशा को स्थिर दशा कहते हैं॥ १३०॥

ग्रहनवांशायुरीत्या दशा तुल्या नवांशका।
अस्थिरा इति विज्ञेया परपक्षमिदं क्रमात् ॥१३१॥
पक्षद्वयं प्रवक्ष्यामि चरस्थिरं द्विजोत्तम।
पूर्वं चरदशां वक्ष्ये तवाग्रे द्विजनन्दन ॥१३२॥

इसे कोई-कोई प्रकार का कहते हैं– एक राशि से और दूसरी ग्रह नवांश से दशा होती है॥ १३१॥ इसमें भी दो प्रकार है १ चर और दूसरी स्थिर दशा। उसमें प्रथम प्रकार को कहता हूँ॥ १३२॥

ओजलग्ने जनुर्यस्य नवांशकदशा द्विज।
लग्नादिकं समारभ्य तस्य चांशदशा मता ॥१३३॥
समराशौ जनुर्यस्य नवांशकदशा द्विज।
व्युत्क्रमाच्च समारभ्य पुरा शम्भुप्रचोदितम् ॥१३४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जिसका जन्म विषम राशिलग्न में हो, उसकी नवांश दशा लग्न से क्रम गणना के अनुसार होती है॥ १३३॥ और जिसकी जन्म लग्न समराशि हो, उसकी दशा उत्क्रम गणना के अनुसार होती है॥ १३४॥

दशा प्रवर्त्तको राशिः विषमर्क्षसमोऽपि वा।
राशिप्रतिनवांकानां सर्वेषां गणयेत्क्रमात्॥ १३५॥
अष्टोत्तरशतांकानां संख्यापूर्वं तदंशकाः।
ख्याता स्थिरदशा विप्र! निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ १३६॥

दशाप्रवर्त्तक राशियों का दशावर्ग ६ वर्ष ही होता है, चाहे वे विषम हों वा सम हों। इस प्रकार सभी वर्षों का योग १०८ वर्ष होता है।१३५-६।

उदाहरण- पूर्वोक्त जन्म कुंडली में जन्मलग्न मकर समराशि है, अतः उत्क्रम गणना द्वारा दशा होगी। चक्र देखिये।

नवांशकस्थिरदशाचक्रम्-

म.	ध.	वृ.	तु.	क.	सिं.	कं.	मि.	वृ.	मे.	मी.	कु.	राशि
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	वर्ष
२०१३	२०२२	२०३१	२०४०	२०४६	२०५८	२०६७	२०७६	२०८५	२०६४	२१०३	२११२	२१२१
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८

अथ स्थिरदशामाह-

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि स्थिरदशां द्विजोत्तम।
चरस्थिरद्विस्वभावा राशयो त्रिविधाः क्रमात्॥ १३७॥
सप्ताष्टनवांकाभ्यमानयीत दशां स्थिराम्॥ १३८॥
मेषे सप्तांकं विज्ञेया वृषे वसुसमा द्विज।
मिथुने नव वर्षाणि कर्केत्यादि यथाक्रमम्॥ १३६॥

हे द्विजोत्तम ! अब मैं स्थिर दशा को कह रहा हूँ। चर, स्थिर, द्विस्वभाव, ये तीन प्रकार की राशियाँ होती हैं॥ १३७॥ इसमें क्रम से ७,८, ६ वर्ष के प्रमाण से दशा लानी चाहिए॥ १३८॥ जैसे मेष का ७ वर्ष, वृष का ८ वर्ष और मिथुन का ६ वर्ष प्रमाण होता है। इसी प्रकार आगे भी कर्क आदि का जानना चाहिए॥ १३६॥

द्वादशराशिपर्यन्तं ज्ञायतेऽङ्का द्विजोत्तम।
षण्णवति समा संख्या जायते द्विजसत्तम॥ १४०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

एषा स्थिरदशा प्रोक्ता तस्या चापि प्रवर्त्तकम् ।
ब्रह्मग्रहाश्रितारम्भस्तदग्रे पूर्ववत्क्रमः ॥ १४१ ॥

बारह राशियों के वर्षों का योग ९६ वर्ष होता है॥ १४० ॥ यह स्थिर दशा है और ब्रह्मग्रह से आरम्भ होती है॥ १४१ ॥

अथ ब्रह्मग्रहलक्षणमाह-

षष्ठाष्टमव्ययेशानां मध्ये यश्च बलीग्रहः ।
स चेद्विषमक्षैस्तः सैव ब्रह्मा भविष्यति ॥ १४२ ॥
लग्नसप्तमयोर्मध्ये यो राशिः बलवान्भवेत् ।
तस्यानुचराशीशो ओजे ब्रह्मग्रहो भवेत् ॥ १४३ ॥

छठें, आठवें और बारहें भावों के स्वामियों में जो बलवान् हो, वह यदि विषमराशि में हो तो वही ब्रह्मग्रह होता है॥ १४२ ॥ लग्न और सातवें भाव में जो बली हो उसका अनुचर अर्थात् उस भाव से पीछे ६ राशि के अन्दर जो ग्रह हो, वह यदि विषम राशि में हो तो वही ब्रह्म होता है॥ १४३ ॥

मध्ये शनिपातानां यदि ब्रह्मस्य सम्भवः ।
तदा तस्माच्च षष्ठेशो ब्रह्मग्रहः सुनिश्चितम् ॥ १४४ ॥
बहूनां ब्रह्मसद्भावे अधिकांशो भवेद्विधिः ।
तत्र राहुसमायोगे अल्पांशो ब्रह्मणो भवेत् ॥ १४५ ॥
कारकादष्टमस्थस्तथा चाष्टमेश्वरो ग्रहः ।
तयोर्मध्ये च बलवान्ब्रह्मग्रहः सुनिश्चितम् ॥ १४६ ॥

शनि, राहु और केतु में से कोई भी ब्रह्मा होता हो तो उससे षष्ठेश ब्रह्मा होता है॥ १४४ ॥ यदि बहुत से ब्रह्मा होते हों तो सबमें जिसका अधिक अंश हो वही ब्रह्मा होता है। यदि उसके साथ राहु हो तो अल्प अंशवाला ही ब्रह्मा होता है॥ १४५ ॥ कारक से आठवें भाव में वा अष्टमेश, दोनों में जो बली हो वही ब्रह्मा होता है॥ १४६ ॥

उदाहरण- पीछे दिये हुये जन्माङ्ग में षष्ठेश, अष्टमेश और व्ययेश बुध, सूर्य और गुरु में बली गुरु ही है, अतः वही ब्रह्मग्रह हुआ। ब्रह्मग्रह विषम-राशि सिंह में है, अतः सिंह से क्रम गणना के अनुसार दशा का आरम्भ हुआ। यदि कारक से अष्टमेश लें तो आत्मकारक भौम (पृष्ठ १०६ देखें) से अष्टमेश बुध भी सिंह राशि विषम में है, अतः सिंह से ही क्रम गणना से दशा आरम्भ हुआ। यहाँ आत्मकारक से दशा का आरम्भ लेना चाहिये।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ स्थिरदशाचक्रम्-

गु.बु.			श.		ल.	मं.				शु.चं.	सू.	ग्रहाः
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	राशयः
८	९	७	८	९	७	८	९	७	८	९	७	वर्षाणि
२०१३	२१	२७	३४	४२	५१	६१	७२	८४	८५	८७	९०	२०९४
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	सूर्यः

इति स्थिरदशा।

अथ ब्रह्मदशामाह-

ओजलग्ने यदा जन्म विधेराश्रितराशितः।
स्वराशेः षष्ठेशपर्यन्तंमङ्कास्तु सदा द्विज॥१४७॥
समलग्ने यदा जन्म विधेः सप्तमराशितः।
व्युत्क्रमाच्च दशा नेया एषा ब्रह्मदशा मतः॥१४८॥

यदि विषमलग्न में जन्म हो तो ब्रह्मग्रहाश्रित राशि से दशा का आरम्भ क्रम से होता है और राशियों के दशा का वर्ष उस राशि से छठी राशि के स्वामी पर्यन्त संख्या होती है॥ १४७॥ यदि समलग्न में जन्म हो तो ब्रह्मग्रहाश्रित राशि से जो सातवीं राशि हो उससे विलोम राशियों की दशा होती है यहाँ भी वर्ष संख्या पूर्ववत् ही लेनी चाहिए। इसे ब्रह्मग्रह दशा कहते हैं॥ १४८॥

उदाहरण-पूर्वोक्त उदाहरण कुंडली में जन्मलग्न सम है अतः ब्रह्मग्रह गुरु से सातवीं राशि कुम्भ है, उसी से विलोम राशियों की कुम्भ-मकर-धनु आदि की दशा होगी। दशा वर्ष के विचार से कुम्भ से छठी राशि कर्क है, इसके स्वामी चन्द्रमा हैं जो कि छठे भाव में हैं अतः कुंभ से गणना करनेसे ५ वर्ष कुंभ के हुए। इसी प्रकार मकर से छठी राशि मिथुन, इसके स्वामी बुध आठवें भाव में हैं, यहाँ तक गिनने से ७ वर्ष मकर के हुए। इसी प्रकार शेष राशियों के वर्ष को भी जानना। शेष चक्र से स्पष्ट है।

ब्रह्मदशाचक्रम्-

मं.	ल.		श.			बु. बृ.	सू.	चं. शु.				ग्रहाः
कुं.	म.	ध.	वृ.	तु.	कं.	सिं.	क.	मि.	वृ.	मे.	मी.	राशयः
५	७	६	३	१०	३	३	१	८	१	४	५	वर्षाणि
२०१३	१८	२५	३१	३४	४४	४७	५०	५१	५९	६०	६४	२०६९
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	सूर्यः

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ केन्द्रदशामाह-

लग्नास्तभावयोर्मध्ये यो राशिर्बलवान् द्विज।
ततः केन्द्रादिस्थितानां राशीनां च बलक्रमात् ॥१४६॥
केन्द्रादिस्थितराशीनां दशा ज्ञेया द्विजोत्तम।
दशाब्दाश्चात्र भो विप्र! चरवच्च समादिशेत् ॥१५०॥

लग्न और सप्तम में जो बली राशि हो उससे आरम्भ कर पहले केन्द्रस्थ राशियों की उनके बल के अनुसार, इसके बाद पणफरस्थ राशियों की, इसके बाद आपोक्लिमस्थ राशियों की दशा होती है॥१४६॥ यहाँ राशियों का दशा वर्ष चरदशा के समान ही लेना चाहिए॥१५०॥

ग्रहेन्द्राणामप्येवं स्वकारकाच्च दशां नयेत्।
ओजसमविभेदाच्च गणनात्रापि कारयेत् ॥१५१॥

यह लग्न की केन्द्रादि दशा हुई। इसी प्रकार आत्मकारक ग्रह से भी केन्द्रादि राशियों की दशा होती है, किन्तु विषम-सम राशि के अनुसार क्रम-उत्क्रम से गणना होती है। अर्थात् कारक ग्रह यदि विषम राशि में हो तो केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम की और समराशि में हो तो केन्द्र, आपोक्लिम, पणफर की दशा क्रम से होती है। इसी प्रकार भावों में बैठे हुए ग्रहों की भी दशा होती है॥१५१॥

विशेष- केन्द्र-दशा के दो भेद हैं। प्रथम लग्न से केन्द्रस्थित राशियों का और दूसरा कारक से केन्द्रस्थित राशियों का। इसमें भी प्रथम प्रकार में लग्न से केन्द्र स्थित राशियों में जो सबसे बलवान् हो उसकी सर्वप्रथम, उसके बाद उत्तरोत्तर न्यूनबली की दशा होती है। इसके बाद पणफर राशि की, इसके बांद आपोक्लिमस्थराशि की दशा होती है। यहाँ भी विषम-समराशि के अनुसार ही क्रम-उत्क्रम गणना केन्द्रादि में करनी चाहिए। राशियों के वर्ष क्रम दशा के समान ही लेना चाहिए। दूसरे प्रकार में यदि कारक विषम राशि में हो तो कारक से केन्द्र, पणफर और आपोक्लिम की और समराशि में हो तो केन्द्र आपोक्लिम और पणफर की स्थित राशियों की दशा होती है।

*उदाहरण-*पीछे दिये हुए उदाहरण के जन्माङ्ग में आत्मकारक भौम कुम्भ राशि में और उससे सप्तम सिंह राशि दोनों में बली कुम्भ राशि है, अतः कुम्भराशि से ही दशा का आरम्भ होगा। इसके बाद कारक से केन्द्रस्थित राशि कुम्भ, वृष, सिंह, वृश्चिक में बलक्रम से दशा होगी, इसके बाद पणफरस्थ मकर, मेष, कर्क, तुला राशि की, इसके बाद धनु, मीन, मिथुन और कन्या राशि की बलक्रम से दशा होगी।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कारककेन्द्रग्रहदशाचक्रम्-

कुंभ	वृष	सिंह	वृश्चिक	मकर	मेष	कर्क	तुला	धनु	मीन	मिथुन	कन्या	
३	१	११	९	२	१०	४	१०	८	७	२	११	
२०१५	१८	१९	३०	३९	४१	५१	५५	६५	७३	८०	८२	९३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८

कारककेन्द्रग्रहदशामाह-

लग्नाद्वा सप्तमाद्विप्र! गणनीयः क्रमोत्क्रमात् ।
कारकावधिराशिश्च संख्या तत्रात्मिका समा ॥ १५२॥
कारकग्रहदशा विप्र अन्येषां तु व्यतिक्रमः ।
ग्रहात्कारकपर्यन्तं विषमसमविरोधतः ॥ १५३॥

लग्न या सप्तम से क्रम वा उत्क्रम रीति से गणना करनी चाहिये, कारक पर्यन्त राशियों का दशा वर्ष होता है॥ १५२॥ कारक ग्रह की दशा इस प्रकार होती है। ग्रह से कारक पर्यन्त विषम-सम के विरोध से क्रम-उत्क्रम के भेद से दशा वर्ष को जानना चाहिए॥ १५३॥

क्रमव्युत्क्रमभेदेन गणनीयं प्रयत्नतः ।
संख्या समा इहाब्दाश्च पुरा शम्भुप्रणोदिताः ॥ १५४॥
कारकयुक्तग्रहाणां तु कारकतुल्यांकसंख्यया ।
संग्राह्याश्च समा विप्र! पूर्वोक्तेन दशाक्रमः ॥ १५५॥

कारक से युक्त ग्रह की दशा की संख्या कारक के तुल्य ही होती है। अन्य कारकों के दशा वर्ष लग्न से कारक पर्यन्त संख्या को लेना चाहिए।१५४। उनके साथ जो ग्रहहों उनका दशा वर्ष भी उन्हींके तुल्य लेना चाहिये।१५५।

लग्नात्कारकपर्यन्तं संख्यां न्यस्य दशा भवेत् ।
गणनीयं प्रयत्नेन समालब्धदशां नयेत् ॥ १५६॥
तद्युक्तानां तुल्यांकाः प्रत्येकं स्युर्दशाक्रमात् ।
उभयोरधिकं संख्या कारकस्य दशासमाः ॥ १५७॥
कारकस्य युतश्चादौ तत्केन्द्रादिस्थितस्ततः ।
दशाक्रमेण विज्ञेयाः शुभाशुभफलप्रदाः ॥ १५८॥

दोनों में जो अधिक संख्या हो वही कारक के दशावर्ष की संख्या होती है।१५६। पहले कारक की, उसके बाद उससे युत ग्रह की, उसके बाद उससे पणफरस्थ की तब उससे आपोक्लिमस्थ की दशा होती है।१५७-१५८।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विशेष- उपर्युक्त श्लोकों में दो प्रकार की दशा का संकेत है। एक कारक से केन्द्रादि में स्थित ग्रहों की और दूसरा आत्मादि सात कारकों की दशा का है। किन्तु दशा के वर्ष की गणना ग्रह की राशि पर्यन्त ही क्रम-उत्क्रम से लेना चाहिए। जिस ग्रह की दो राशियाँ हैं, उनमें जिस राशि से अधिक दशा वर्ष आवे उसी को लेना चाहिए। सात कारकों के दशावर्ष लग्न से उन उन कारकों के दशावर्ष लग्न से उन-उन कारकों तक गिनने से जो संख्या हो उतने ही वर्ष दशा को लेना चाहिए।

अथ कारककेन्द्रदशाचक्रम्-

मंगल	केतु	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	चंद्र	शुक्र	सूर्य
९	६	७	३	३	९	१	११	१
२०१५	२४	३०	३७	४०	४३	५२	५३	२०६४ २०६५
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८

अथ मंडूकदशा-

मंडूक इति विख्याता त्रिकूटाख्या दशा द्विज।
लग्नसप्तमयोर्मध्ये बलवद्राशितो भवेत् ॥१५९॥
क्रमव्युत्क्रमभेदेन दशा चिन्त्या द्विजोत्तम।
चरस्थिरद्विस्वभावे सप्ताष्टनवसंख्यया ॥१६०॥

त्रिकूट दशा को ही मंडूक दशा कहते हैं। लग्न एवं सप्तम में जो बलवान् राशि हो॥ १५९॥ वहाँ (ओज सम के अनुसार) क्रम, उत्क्रम भेद से चर आदि राशियों की दशा होती है। चर राशियों की ७ वर्ष, स्थिर राशियों की ८ वर्ष और द्विस्वभाव राशियों की ९ वर्ष की दशा होती है॥ १६०॥

क्रमेण प्रोक्तरीत्या च प्रवृत्तःस्यात्त्रिकूटका।
मण्डूकेति समाख्याता पुरा शम्भुःप्रणोदितम् ॥१६१॥

इस प्रकार चर-स्थिर द्विस्वभाव राशियों की त्रिकूट दशा के मध्य में २ राशियों का अन्तर होने से इसे मंडूक गति के समान होने से मण्डूक दशा कहते हैं॥ १६१॥

उदाहरण- पूर्वोक्त जन्म कुंडली में लग्न और सप्तम में बली लग्न समराशि की है, अतः उत्क्रम से ९, १२, ३, ६, १०, १, ४, ७, ११, २, ८, ५ इन राशियों की दशा होगी। शेष चक्र में स्पष्ट है।

मंडूकदशाचक्रम्-

धनु	मीन	मिथुन	कन्या	मकर	मेष	कर्क	तुला	कुंभ	वृष	वृश्चिक	सिंह
९	९	९	९	७	७	७	७	८	८	८	८
२०१३	२२	३१	४०	४९	५६	६३	७०	७७	८५	९३	२१०१ २१०९
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८

इति मंडूकदशा।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ शूलदशामाह-

दशाशूलं प्रवक्तव्यं फलनिर्याणराशितः ।
प्रवक्ति सप्तमाद्विप्र ! निर्देशे शूलमात्रतः ॥ १६२॥
माहेश्वरर्क्षादि - दशा निर्याणस्थानशूलभम् ।
बलेन शूलसंग्राह्या मृत्युरस्य द्विजोत्तम ॥ १६३॥

निर्याण की राशि से शूल दशा का फल कहना चाहिए। वह सप्तम से शूल का विचार करना चाहिए॥ १६२॥ माहेश्वर ग्रह की राशि से निर्याण राशि को शूलराशि कहते हैं॥ १६३॥

दशानेकविधा विप्र सप्तप्राप्टनवभिः समाः ।
अत्र ग्राह्या महाप्राज्ञ शूले निर्याण निश्चितम् ॥ १६४॥
लग्नसप्तमयोर्विप्र क्रमोत्क्रमगणनया ।
तयोस्तु रंध्रभं विप्र शूलराशिश्च निश्चितम् ॥ १६५॥

लग्न और सप्तम से आठवीं राशि को निर्याण राशि कहते है, इसमें दशा वर्ष (स्थिर दशा के समान ही) ७,८,९ वर्ष की होती है॥ १६४॥ लग्न और सप्तम से क्रम और उत्क्रम (विषम-सम) के अनुसार आठवीं राशियों में जो बली हो वही शूल वा निर्याण राशि होती है॥ १६५॥

रंध्रेशयोर्बली विप्र रुद्रसंज्ञो भवेत्किल ।
रुद्रशूलान्तमायुः स्यादिति पूर्वैश्च भाषितम् ॥ १६६॥

दोनों के स्वामियों में जो बली होता है, वही रुद्रग्रह होता है। रुद्र शूलान्त ही आयु होती है ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है॥ १६६॥

उदाहरण- जन्माङ्ग में लग्न से अष्टम सिंह राशि में बुध-गुरु है और सप्तम से अष्टम में कुम्भ राशि है, उसमें मंगल है। अतः दोनों में बली सिंह राशि से क्रम गणना के अनुसार ही शूल दशा होगी।

शूलदशाचक्रम्-

सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
८	९	७	८	९	७	८	९	७	८	९	७
२०१३	२१	३०	३७	४५	५४	६१	६९	७८	८५	९३	२१०२ २१०९
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८

इति शूलदशा।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ योगार्धदशामाह-

चरस्थिरदशायाश्च योगं विप्र! समाचरेत्।
तस्यार्धञ्च समा विप्र! योगार्धाख्या तु सा दशा ॥१६७॥
लग्नसप्तमयोर्मध्ये चिन्तयेत्तु बलाधिकम्।
लग्ने बलयुते लग्नाद्दशारम्भं प्रकाशयेत् ॥१६८॥
तस्मात्सप्तमवीर्याढ्ये दशारम्भं प्रकल्पयेत्।
बली लग्नास्तयोर्विप्र! ओजसमक्रमेण वै।
क्रमव्युत्क्रममार्गेण दशा लेख्या द्विजोत्तम ॥१६९॥

चरदशा और स्थिरदशाके राशियोंके दशा वर्षके योग के आधे तुल्य योगार्ध दशा में राशियों का दशावर्ष होता है।१६७। लग्न और सप्तम में जो बलवान् हो उसी से दशा का आरम्भ होता है।१६८। लग्न व सप्तम में बली राशि विषम हो तो क्रम से समराशि हो तो उत्क्रम से गणना होती है।१६९।

उदाहरण-जैसे कुंडली में लग्न राशि बली है और सम राशि है अतः जन्मलग्न से उत्क्रम गणना से दशा का आरम्भ होगा। जन्मलग्न मकर है, चर दशा में इसका दशावर्ष २ है और स्थिर दशा में ७ वर्ष। दोनों का योगार्ध ४ वर्ष ६ मास हुआ। यह मकर का दशावर्ष हुआ। इसी प्रकार शेष राशियों के दशावर्ष को निकालना चाहिए।

अथ योगार्धदशाचक्रम्-

मकर	धनु	वृश्चि.	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	राशि
४ ६	८ ६	८ ६	५ ६	१० ०	६ ६	८ ६	५ ६	४ ६	८ ६	८ ०	५ ६	दशावर्ष
२०१३	१७	२६	३४	४०	५०	५६	६८	७३	७८	८६	६४	२१००
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८

इति योगार्ध दशा।

अथ दृग्दशामाह-

कुजादिति स विज्ञेया विलग्ननवमादितः।
क्रमत्रये कूटपदं नाम्ना वै दृग्दशा द्विज ॥१७०॥
दृष्टिचक्रे सम्मुखश्च राश्यादौ नवमस्य च।
कुत्रचित्क्रमरीत्या च कुत्रचित् व्युत्क्रमेण च ॥१७१॥

लग्न से आरम्भ कर नवम राशि से ९, १०, ११ राशियों से दशा का आरम्भ होता है, इन तीन राशियों को त्रिकूट कहते हैं॥ १७०॥ इन्हीं तीन

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राशियोंको देखने वाली तीन-तीन राशियोंकी दशा होती है, अतः इसे दृग्दशा कहते हैं। नवम की और नवम की दृष्ट राशियों की दशा होगी, इसी प्रकार दशम और उसके दृष्ट राशियों की पुनःएकादशराशि और उसके दृष्ट राशियों की दशा होगी। कहीं क्रम गणना और कहीं उत्क्रम गणना होगी॥ १७१॥

ततोऽपि पंचमस्यैवं क्रमेण कुत्रचिद् द्विज।
कुत्रचिद् व्युत्क्रमेणैव राश्यैकादशसम्मुखम्॥ १७२॥
तस्याभावप्रमाणो हि न ग्राह्यं द्विजसत्तम।
संग्राह्य पंचमस्यैव दृष्टिचक्रे विशेषतः॥ १७३॥

उसमें भी पाचवीं (सिंह राशि) और उसके सम्मुख ग्यारहवीं॥ १७२॥ (कुंभ) राशि की क्रम गणना करनी चाहिए॥ १७३॥

अभिपश्यन्ति ऋक्षाणि पार्श्वभे द्विजसत्तम।
पूर्वोक्तरीत्या तदेव त्रिकूटपदमुच्यते॥ १७४॥
त्रिराश्यात्मकूटपदं ततोऽपि दशमस्य च।
दृग्दशैकादशे ज्ञेया नव मस्यापि दृग्दशा॥ १७५॥

इसी प्रकार दशम राशि से दृष्टिचक्र के अनुसार गणना करनी चाहिए॥ १७४-१७५॥

फलार्थे दृग्दशा विप्र संगृह्यैकादशेऽपि च।
तस्याः प्रकारं वक्ष्येऽहं पुनरुक्तं विशेषतः॥ १७६॥
अथौजयुग्मभेदेन गणनाक्रममिहोच्यते।
यथासामान्यसंज्ञेयं युग्मेषु मातृधर्मयोः॥ १७७॥

अब मैं पुनः ओज (विषम) और समराशि के अनुसार गणना को कह रहा हूँ॥ १७६॥ सिंह और कुम्भ राशियों में विषम होते हुए भी समान अर्थात् क्रम-गणना॥ १७७॥

गणनायां च सामान्यं पंचमैकादशे द्विज।
क्वचिद् दिव्यात्मकं ज्ञेयं सामान्यत्रयकूटके॥ १७८॥
अथौजपदयोर्विप्र संज्ञेयं विपरीततः।
युग्मे युग्मपदयोश्च यथासामान्ययोजकम्॥ १७९॥
क्रमाद्वृषे वृश्चिके च इत्युक्तेन द्विजोत्तम।
अत्रापि ओजकूटस्थे पंचमैकादशे क्रमात्॥ १८०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

समपदीय राशि होते हुए भी और ओजपदीय मेष, वृष और तुला वृश्चिक में मेष तुला का विषम होते हुये भी उत्क्रम और वृष, वृश्चिक को सम होते हुये भी क्रम गणना करनी चाहिये॥ १७८-१८०॥

दृग्योग्यं च भवेद्विप्र ! दृग्दशा बलदायिका।
युग्मकूटस्थसामान्यं व्युत्क्रमात्सिंहकुम्भयोः॥ १८१॥
पंचमैकादशौ विप्र ! दृग्योग्यौ भवतस्तथा।
पुंराशिर्द्विस्वभावस्य ज्ञेया तस्य क्रमेण च॥ १८२॥

बलवान् दृग्दशा दृग्योग्य होती है। युग्म (सम) कूट में सामान्य गणना होते हुए भी सिंह और कुम्भ राशियों में उत्क्रम गणना करनी चाहिए।१८१। द्विस्वभाव राशि यदि विषम है तो क्रम से और स्त्री राशि (सम) में उत्क्रम से गणना करनी चाहिए, इनमें पार्श्व चौथी और दशम राशि होती हैं।१८२।

स्त्रीराशिर्द्विस्वभावेपि व्युत्क्रमेण द्विजोत्तम।
चतुर्थदशमौ ग्राह्यौ पार्श्वभं तु न संशयः॥ १८३॥
ओजसंज्ञा द्विस्वभावे क्रमेण तुर्यव्योमके।
समे व्युत्क्रमतो ज्ञेया सा ग्राह्या व्योमतुर्यकौ।
राशीनां तु समा ज्ञेया स्थिरवत्तु द्विजोत्तम॥ १८४॥

विषम राशि में क्रम से चौथी और दशम राशि तथा सम में उत्क्रम से क्रम से चौथी और दशम राशि लेनी चाहिए॥ १८३॥ राशियों का दशावर्ष स्थिर दशा के समान ही लेना चाहिये॥ १८४॥

उदाहरण- जन्म कुंडली में लग्न से नवम कन्या राशि है, द्विस्वभाव विषम है अतः क्रम से इसकी दृष्ट राशि धनु, मीन और मिथुन की दशा होगी। पुनः दशम तुला राशि की और इसकी दृष्ट राशियों की उत्क्रम से सिंह, वृष, कुम्भ की दशा, इसके बाद एकादश वृश्चिक की और क्रमगणना से इससे दृष्ट राशि मकर, मेष, कर्क की दशा होगी; शेष चक्र से स्पष्ट है।

दृग्दशाचक्रम्-

क.	ध.	मी.	मि.	तु.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	म.	मे.	कं.	राशि
६	६	६	६	७	८	८	८	८	७	७	७	दशावर्ष
२०१३	२२	३१	४०	४६	५६	६४	७२	८०	८८	६५	२००२	२००६
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८

इति दृग्दशा।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ त्रिकोणदशा-

दशा त्रिकोणनाम्ना या यथान्यायप्रकल्पना ।
चरपर्यायरीत्यादि - श्लोकोक्तेन प्रदर्शितः ॥ १८५ ॥
लग्नत्रिकोणयोर्मध्ये यो राशिर्बलवान्द्विज ।
तदारभ्योन्नयेद्वीमान् चरपर्या भवेद्दशा ॥ १८६ ॥
क्रमोत्क्रमेण गणयेदोजयुग्मेषु राशिषु ।
चरपर्यायरीत्या च समा कल्प्या द्विजोत्तम ॥ १८७ ॥

त्रिकोण दशा की यथान्याय कल्पना की गई है। वह चर पर्यायदशा की रीति से है।१८५। लग्न से त्रिकोण ५।९ की राशियों में अर्थात् लग्न, पंचम और नवम राशियों में जो बलवान् राशि हो वहीं से चरपर्याय के समान ही दशा का आरम्भ होता है॥ १८६॥ ओज राशि में क्रम से और सम राशि में उत्क्रम से चरपर्याय के समान ही दशा का वर्ष भी होता है॥ १८७॥

उदाहरण- जन्म कुण्डली में मकर लग्न से त्रिकोण में वृष और कन्या राशि में लग्न की राशि बली है अतः वहीं से आरम्भ कर समराशि होने के कारण उत्क्रम से त्रिकोण राशियों-कन्या और वृष की दशा होगी फिर कुम्भ, तुला, मिथुन की, इसके बाद मीन, वृश्चिक कर्क की, फिर मेष, धनु, सिंह की दशा होगी, इनका दशावर्ष चरदशा के समान ही होगा।

त्रिकोणदशाचक्रम्-

म.	कं.	वृ.	कुं.	तु.	मि.	मी.	वृ.	क.	मे.	ध.	सिं.	राशि
२	११	१	३	४	२	७	९	१०	१०	८	११	दशावर्ष
२०१५	१७	२८	२९	३२	३६	३८	४५	५४	६४	७४	८२	२०९३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८

इति त्रिकोणदशा।

अथ नक्षत्रदशा-

जन्मादौ चन्द्रनक्षत्रे सर्वथा घटिकौधके ।
भानुना दीयते भागं शेषनाडी प्रकल्पयेत् ॥ १८८ ॥
प्रथमं खंडमारभ्य द्वादशे खंडके द्विज ।
लग्नाद् द्वादशराशीनां गणनीयं क्रमेण च ॥ १८९ ॥

जन्म समय जन्म नक्षत्र के भभोग घटी में १२ से भाग देने से जो घट्यादि फल आवे॥ १८८॥ उस खंड से आरम्भ कर १२खंडो का लग्न से १२ राशियों की दशा होती है॥ १८९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

या घटी कर्मवत्खंडे जन्मखंडश्च आदितः।
आरभ्य गणनायां च जन्मलग्नादितो द्विज ॥१६०॥
लग्नाद् द्वादशराशीशमारभ्य द्विजसत्तम।
क्रमव्युत्क्रमभेदेन द्वादशदशा स्मृता ॥१६१॥

उक्त घटी के अनुसार भयात के घटी के तुल्य जो खंड हो॥१६०॥ वहाँ तक लग्न से आरम्भ कर १२ राशियों के स्वामियों से आरम्भ कर क्रम-उत्क्रम गणना से दशा होती है॥१६१॥

अथवा-

भभोगं रविभिर्भक्ते यल्लब्धं घटिकादिकम्।
तेन भक्ते भयातं च यल्लब्धं यादिकं फलम् ॥१६२॥
तेन युक्तं जन्मलग्नं तमारभ्य दशामितिः।
स्थिरवच्च समामानं क्रमोत्क्रमविभेदतः ॥१६३॥

भभोग को १२से भाग देने से घस्त्रादि लब्धि हो तो उसमें भयात से भाग देने से जो राश्यादि फल मिले॥१६२॥ उसमें जन्म लग्न को जोड़ देने से जो राश्यादि आवे वहीं से (विषम-सम) के अनुसार दशा का आरम्भ होता है। यहाँ दशा का वर्ष स्थिर दशा के समान ही लेना चाहिये॥१६३॥

उदाहरण- पूर्वोक्त जन्म नक्षत्र पुनर्वसु का भभोग ५५।५३ है और भयात १०।३२ तथा जन्म लग्न ६।१५।३२।५१ है। भभोग ३३५३ में १२ से भाग देने से लब्ध घटिकादि २७६।२५ प्राप्त हुआ। इससे पलात्मक भयात ६३२ में भाग देने से लब्धि राश्यादि २।७।५१।२० हुआ। इसमें जन्म लग्न को जोड़ देने से ११।२३।२४।११ हुआ अर्थात् मीन राशि से उत्क्रम गणना से दशा का आरम्भ हुआ।

नक्षत्रदशा चक्रम्-

मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष
६	८	७	६	८	७	६	८	७	६	८	७
२०१३	२२	३०	३७	४६	५४	६१	७०	७८	८५	६४	२१०२ २१०६
३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८	३ १८

इति नक्षत्रदशा।

अथ तारादशा-

जन्मसम्पद्विपत्क्षेमप्रत्यरीसाधको वधः।
मैत्रातिमैत्रमित्येवं दशा ज्ञेया द्विजोत्तम ॥१६४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विंशोत्तर्याः क्रमेणैवमंकानिह विजानतः।
आदौ केन्द्रग्रहाद्यस्य विज्ञेया तारकादशा॥१९५॥

जन्म, सम्पत्, विपत्म, क्षेम, प्रत्यरी, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र, इन ९ ताराओं की भी दशा होती है॥१९४॥ जिस प्रकार विंशोत्तरी दशा से ग्रहों के वर्ष कहे गये हैं वही यहाँ पर भी लेना चाहिये। यहां जन्म कुण्डली में जो ग्रह केन्द्र में हो वहीं से दशा का आरम्भ होता है॥१९५॥

उदाहरण- केन्द्र में ग्रहों के रहने से यह दशा होती है अन्यथा नहीं होती है। जैसे जन्म कुण्डली में केन्द्र में सूर्य है अतः जन्म तारा से दशा का आरम्भ होगा। इसका भुक्त भोग्य विंशोत्तरी दशा के समान ही निकालना चाहिये।

तारादशा-चक्रम्-

ज.	स.	वि.	क्षे.	प्र.	सा.	व.	मै.	अतिमै.
सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	बृहस्पति	शनि	बुध	केतु	शुक्र
४	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
१० १२ ५ १ ५२								
२०१८	२८	३५	५३	६९	८८	२१०५	१२	३२
२ १ १८ २२								२ १ १८ २२

इति तारादशा।

अथ वर्णद-दशामाह-

जन्महोरातनूयोगो विषमो वर्णदो भवेत्।
समस्तु चक्रतः शुद्धो वर्णदो कथ्यते बुधैः॥१९६॥
एवं द्वादशभावानां वर्णदं लग्नमानयेत्।
ग्रहाणां वर्णदा नैव राशीनां वर्णदा दशा॥१९७॥

जन्म लग्न और होरा लग्न का योग करने से योग राशि विषम हो तो वही वर्णद राशि होती है। यदि योग सम हो तो १२ राशि में घटाने से शेष वर्णद होती है।१९६। इसी प्रकार १२ भावों के वर्णद राशि को लाना। ग्रहों की वर्णददशा नहीं होती है, राशियों की वर्णद दशा होती है।१९७।

होरालग्नोभयोर्नेया सबलाद् वर्णदा दशा।
यत्संख्यो वर्णदो लग्नात्तत्तत्संख्या क्रमेण तु॥१९८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमव्युत्क्रमभेदेन दशा स्यात्पुरुषस्त्रियोः ।
वर्षसंख्यां विजानीयाच्चरदशा - प्रमाणतः ॥ १९९॥

होरा लग्न और जन्म लग्न, दोनों में जो बली हो, और विषम हो तो क्रम गणना से, यदि सम हो तो उत्क्रम गणना से वर्णददशा होती है। यहाँ राशियों का वर्ष चरदशा के समान ही लेना चाहिये॥ १९८-१९९॥

अथ पंचस्वरदशामाह-

पञ्चाङ्कान्प्रथमे दत्वा स्वरान्वर्णांश्च विन्यसेत् ।
आदावकछडाद्याश्च अन्ते ओचटवादयः ॥ २००॥
कादिहांताल्लिखेद्वर्णान् स्वराधोऽञणोज्झितान् ।
तिर्यक्पंक्तिक्रमेणैव पञ्च पञ्च विभागतः ॥ २०१॥

पहले १ से ५ तक के अंकों को लिखकर उनके नीचे अकारादि स्वरों को और उनके नीचे ककारादि वर्णों को लिखने से किन्तु ङ, ञ, ण, वर्णों को छोड़कर प्रत्येक पंक्ति में ५ पांच वर्णो को लिखे॥ २००-२०१॥

न प्रोक्ता ङञणा वर्णा नामादौ सन्ति ते न हि ।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथाक्रमात् ॥ २०२॥

ङ, ञ, ण, वर्ण का उच्चारण इस चक्र में नहीं होता है, क्योंकि किसी के नाम के आदि में ये वर्ण नहीं होते हैं, यदि कदाचित् हों तो ङ, ञ, ण, के स्थान में क्रम से ग, ज, उ, को मानना चाहिये॥ २०२॥

यदि नाम्नि भवेद्वर्णो संयोगाक्षरलक्षितः ।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्णः इत्युक्तं ब्रह्मणा पुरा ॥ २०३॥
अकाराद्याः स्वराः पञ्च ब्रह्माद्याः पञ्चदेवताः ।
निवृत्ताद्याःकलाः पञ्च इच्छाद्या शक्तिपञ्चकम् ॥ २०४॥

यदि नाम के आदि में संयोगाक्षर हो तो वहाँ संयुक्ताक्षर के प्रथम अंक को लेना चाहिए॥ २०३॥ अकारादि पाँच स्वरों के ब्रह्मा आदि (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, गणेश, सूर्य) ये देवता है। निवृत्ति आदि (निवृत्ति, उपेक्षा, आदान, उपादान प्रवृत्ति) पाँच कलायें, इच्छा आदि (इच्छा, राग, द्वेष, अभिनिवेश, अहंकार) पाँच शक्तियां ॥ २०४॥

मायाद्याश्चक्रभेदाश्च धराद्या भूतपञ्चकम् ।
शकादि विषयास्ते च कामबाणा इतीरिताः ॥ २०५॥
प्रभवादि - क्रमेणैषां स्वराणामस्वरादिकः ।
उभयोऽद्वादशाब्दानां प्रत्येकं द्वादशाब्दकाः ॥ २०६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

माया आदि (माया, अविद्या, तामिस्र, अंधतामिस्र, मोह) पाँच चक्र, धरा आदि (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश), पाँच महाभूत और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध- पाँच विषय ये सभी पञ्चक काम के बाण हैं। इसी प्रकार से प्रभवादि संवत्सर भी १२ वर्ष भोग तुल्य पाँच स्वरों के होते हैं। प्रत्येक स्वरों का १२ वर्ष होता है॥ २०५-२०६॥

उदाहरण-पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से नाम का प्रथम अक्षर ककार है, वह चक्र में अकार स्वर के नीचे है अतः अकार स्वर से दशा आरम्भ होगा। शेष चक्र से स्पष्ट है।

अथ पंचस्वरचक्रम्-

अ.	इ.	उ.	ए.	ओ.	स्वराः
१२	१२	१२	१२	१२	वर्षाणि
क.	ख.	ग.	घ.	च.	वर्णाः
छ.	ज.	झ.	ट.	ठ.	
ड.	ढ.	त.	थ.	द.	
ध.	न.	प.	फ.	ब.	
भ.	म.	य.	र.	ल.	
व.	श.	ष.	स.	ह.	

पंचस्वरदशाचक्रम्-

अ.	इ.	उ.	ए.	ओ.	स्वराः
१२	१२	१२	१२	१२	वर्षाणि
२०१३	२५	३७	४९	६१	७३
३	३	३	३	३	३
१८	१८	१८	१८	१८	१८

इति पंचस्वरदशा।

अथ योगिनीदशामाह-

मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा।
योगिन्यष्टौ समाख्याता उल्का सिद्धा च संकटा॥ २०७॥
पिङ्गलातो भवेत्सूर्यो मङ्गलातो निशाकरः।
भ्रामरीतो भवेद्भौमो भद्रिकातो बुधस्तथा॥ २०८॥

मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा आठ योगिनी होती है॥ २०७॥ पिङ्गला से सूर्य, मङ्गला से चन्द्रमा, भ्रामरी से भौम, भद्रिका से बुध॥ २०८॥

धन्यकातो गुरुरभूत्सिद्धातः कविसम्भवः।
उल्कातो भानुतनयः संकटातस्तमोऽभवत्॥ २०९॥
स्वर्क्षं शिखिना संयुक्तं वसुभिर्भागमाहरेत्।
शेषेण योगिनी ज्ञेया शून्यपातेन संकटा॥ २१०॥

धान्या से गुरु, सिद्धा से शुक्र, उल्का से शनि और संकटा से राहु हुये हैं॥ २०९॥ जन्म नक्षत्र में ३ जोड़कर ८ से भाग देने से एकादि शेष से योगिनी को जाने तथा शून्य शेष बचे तो संकटा होती है॥ २१०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

एकाभिवृद्धच्य वर्षाणि मङ्गला प्रमुखासु च।
भुक्तं भोग्यं च संसाध्यं पुरावद् गणकोत्तमैः ॥२११॥

इनका दशा वर्ष १ से आरम्भ कर एक वृद्धि करने से क्रम से १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ वर्ष होता है। इनका भुक्त-भोग्य पूर्ववत् साधन करना चाहिए॥ २११॥

उदाहरण- जन्म नक्षत्र पुनर्वसु की संख्या ७ है, इसमें ३ और जोड़ने से १० हुआ। इसमें ८ का भाग देने से २ शेष रहा, अतः पिङ्गला से दशा का आरम्भ हुआ। इसका भुक्त भोग्य पूर्ववत् भयात भभोग द्वारा निकालने से भुक्त वर्षादि ०, ४, १६, २१, १९ हुआ।

अथ योगिनीदशाचक्रम्-

पिङ्गला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मङ्गला	योगिनी
१ ७ १३ ३८ ४१	३	४	५	६	७	८	१	
२०१३	२०१४	२०१७	२०२१	२०२६	२०३२	२०३९	२०४७	२०४८
३ १८ २६ ३४	११ २ ५ १५	११ २ ५ १५						

इति योगिनीदशा।

पिंडांशादिदशामाह-

पैंड्यांशनैसर्गिकदशामायुः परिचिंतयेत्।
तथाह्यष्टकवर्गे च विजानीहि द्विजोत्तम ॥२१२॥

पिंडायु, अंशायु, नैसर्गिकायु और अष्टकवर्गायु पर से इनकी दशा को लाना चाहिए॥ २१२॥

अथ सन्ध्यादशामाह-

परमायुर्द्वादशांशाः स्फुटं सन्ध्या भवेत्ततः।
स्वलग्नाधिपतेरादौ क्रमेणान्यग्रहेषु च ॥२१३॥

परमायु १२०का १२वां भाग सन्ध्या होता है, उसीके तुल्य पहले लग्नेश की दशा, इसके बाद क्रम से अन्य ग्रहों की दशा उतने ही वर्ष की होती है॥२१३॥

उदाहरण- परमायु १२० का १२वां भाग १० वर्ष हुआ, यह लग्नेश शनि की दशा हुई। इसी के तुल्य सभी सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, राहु और केतु की दशा होगी।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सन्ध्यादशाचक्रम्-

शनि	राहु	केतु	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	ग्रहाः
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	वर्षाणि
२०१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३	२१०३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८

अथ पाचकदशामाह-

सन्ध्या रसगुणा कार्या चन्द्रवह्निहृता फलम् ।
संस्थाप्य प्रथमे कोष्ठे ह्यार्धमर्धत्रिकोष्ठके ॥ २१४ ।

सन्ध्या को ६ से गुणाकर गुणनफल में ३१ का भाग देने से जो वर्षादि फल मिले, उसे प्रथम कोष्ठ में लिखें। इसके आधे को अगले तीन कोष्ठों में लिखें॥२१४॥

त्रिभागं वसुकोष्ठेषु लिखेद्विद्वन्प्रयत्नतः ।
एवं द्वादशभावेषु पाचकानि प्रकल्पयेत् ॥ २१५ ॥

फिर लब्ध के तीसरे भाग के आगे के आठ कोष्ठों में लिखने से १२ भावों की पाचक-दशा होती है॥ २१५॥

उदाहरण- संध्या का दशा वर्ष १०, इसको ६ से गुणा किया तो ६० हुये है, इसमें ३१ से भाग देने से वर्षादि १।११।६।४६।२७ हुआ, इसे पहले कोष्ठ में रखकर इसका आधा ०।११।१८।२३।१३ आगे के तीन कोष्ठों में रख दिया। इसकेबाद लब्ध (१,११,६,४६,२७) का तीसरा भाग ०,७,२२,१५,२९ को शेष ८ कोष्ठों में रखने से १२ भावों के पाचकदशा का चक्र होता है।

पाचकदशाचक्रम्-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावाः
वर्ष १	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
मास ११	११	११	११	७	७	७	७	७	७	७	७	
दिन ६	१८	१८	१८	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	
घटी ४६	२३	२३	२३	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	
पल २७	१३	१३	१३	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	
२०१३	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२०२३
३	२	२	२	१	९	५	०	८	४	०	७	३
१८	२५	१३	१	२०	१२	४	२७	१९	११	३	२६	२८
२६	१३	३६	५९	२२	३८	५३	९	२४	४०	५५	११	२६
२४	१	१४	२७	४०	९	३८	७	३६	५	३४	३	३२

इति पाचकदशा।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ नवांशकनवदशामाह-

अथ राशिक्रमं वक्ष्ये शृणुष्व द्विजपुङ्गव ।
ग्रहे राश्यादिकं चाल्पे दशा तस्यादिमा भवेत् ॥ २१६ ॥
ततस्तदधिकस्यैवं तुल्ये नैसर्गिकाद्बलात् ।
राशीशात्सप्तमांगेशाच्चिन्त्या राशिक्रमाद्दशा ॥ २१७ ॥

हे द्विजपुङ्गव ! अब मैं राशियों के क्रम को कहता हूं, ग्रहों में जिस ग्रह का राश्यादि सभी ग्रहों से अल्प हो उसकी प्रथम दशा॥ २१६॥ उसके बाद उससे अधिक अंशादि की फिर उससे अधिक अंशादि वाले की, इसी भाव से ९ ग्रहों की दशा होती है॥ २१७॥

यस्मिन्नवांशकस्थेऽङ्गे दशा तस्यादिमा मता ।
अग्रादब्जाच्च ये खेटाः केत्वंताः संस्थिता क्रमात् ॥ २१८ ॥

यह प्रथम प्रकार हुआ। इसके बाद सभी ग्रहों में जो सबसे अधिक अंशवाला हो उसकी प्रथम दशा, इसके बाद उससे न्यूनांश की, इसी क्रम से नवों ग्रहों की दशा होती है। यह दूसरा प्रकार है। सभी ग्रहों में नैसर्गिक बल में न्यून बलवाले की प्रथम दशा, उसके बाद उससे अधिक बलवाले की, इसी क्रम से सभी ग्रहों की दशा लिखना चाहिए। यह तीसरा प्रकार हुआ। जन्म राशीश से दशा का आरम्भ करना चाहिए। यहाँ दशा वर्ष ९ वर्ष का ही सबका होता है। यह चौथा प्रकार है। लग्न से सप्तमेश के राशि से दशा का आरम्भ करना चाहिए, यह पाँचवां प्रकार है। इसी प्रकार लग्नेश का प्रथम, द्वितीयेश का दूसरा, इसी क्रम से सभी भावों के राशीशों के राशि से दशा लिखना चाहिए, यह छठा प्रकार है। जिस नवांश में लग्न है, उस नवांश के स्वामी से दशा का आरम्भ करना चाहिए, यह सातवाँ प्रकार है। अंतिम नवांश के स्वामी से क्रमशः ग्रहों का दशा आरम्भ करना चाहिए, यह आठवाँ प्रकार है। चन्द्रमा से आरम्भ कर रवि पर्यन्त सभी ग्रहों की दशा को लिखना चाहिए, यह नवाँ प्रकार है॥ २१८॥

दशामानं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं ब्रह्मणा पुरा ।
लिप्तीकृत्वा ग्रहं व्योमखाश्विभिर्भाजिते फलम् ॥ २१९ ॥
पुनः सूर्ये हृते लब्धं समाद्यांशकला दशा ।
सर्वेषां मानवानां च दशास्त्वेता विचिंतयेत् ॥ २२० ॥

पहले ब्रह्मा द्वारा बतलाया हुआ दशा के मान का वर्णन कर रहा हूँ। ग्रहों की कला बनाकर २०० का भाग देने से जो फल मिले॥ २१९॥ उसमें १२ से भाग देनेसे वर्षादि लब्ध होगा, वही दशा का मान होता है॥ २२०॥

इति नवांशकनवदशामाह।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राश्यंशकदशामाह-

तन्वादिभावाः संस्पष्टाः प्रोक्तमार्गेण चानयेत् ।
लग्नेशसंस्थितो यत्र दशास्तस्यादिमा स्मृताः ॥ २२१ ॥
द्वितीयेशादितश्चाग्रे ज्ञेया राश्यंशका दशा ।
चिन्त्या लग्ने बलवती लग्नेशे वा बलान्विते ॥ २२२ ॥

लग्नादि द्वादशभावों को स्पष्ट करके लग्न और लग्नेश में जो बली हो, उसके नवांश राशि की प्रथम दशा कही जाती है ॥ २२१ ॥ इसके द्वितीयादि भावों के स्वामियों के नवांश राशि की दशा होती है ॥ २२२ ॥

इति राश्यंशकदशा ।

अथ नक्षत्रदशामाह-

नक्षत्रायुर्महाप्राज्ञ ! पूर्णमगे प्रभाषितम् ।
विंशोत्तरी पंचधा द्विधा चाष्टोत्तरी मता ॥ २२३ ॥
अष्टकवर्गोपरि दशा सर्वेषां चिंतयेद्द्विज ॥
ततो निर्याणमालेख्यं निर्विशंकं भविष्यति ॥ २२४ ॥

नक्षत्रायु के अनुसार ५प्रकार की विंशोत्तरी दशा और दो प्रकार की अष्टोत्तरी दशा कही गयी है ॥ २२३ ॥ इन सभी का फल अष्टक वर्ग के ऊपर विचार कर निर्याण दशाको लिखना चाहिए, यही नक्षत्र दशा होगी ॥ २२४ ॥

बलाबलविवेकेन फलं ज्ञेयं दशासु च ।
विपरीतं फलं वाच्यं खेटे वक्रगते सदा ॥ २२५ ॥
आदिद्रेष्के स्थिते खेटे दशारम्भे फलं वदेत् ।
दशामध्ये फलं वाच्यं मध्यद्रेष्काणके स्थिते ॥ २२६ ॥

ग्रहों के बल और निर्बलता के अनुसार ही दशा का फल कहना चाहिये। यदि ग्रह वक्री हो तो विपरीत (बली ग्रह में अशुभ और दुर्बल में शुभ) फल कहना चाहिए। २२५। यदि दशेश प्रथम द्रेष्काणमें हो तो अपना शुभ-अशुभ फल दशा के आरम्भ में, दूसरे द्रेष्काण में हो तो दशा के मध्य में ॥ २२६ ॥

अन्ते फलं तृतीयस्थे व्यस्तं खेटे च वक्रिणि ।
इति ते कथिता विप्र ! दशाभेदा अनेकशः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं ज्ञानमेतत्सुदुर्लभम् ॥ २२७ ॥

और तीसरे द्रेष्काण में हो तो दशा के अंत में देता है। यदि ग्रह वक्री हो तो इससे विपरीत फल देता है। हे विप्र! यह अनेक प्रकार की दशा के भेदों को मैने कहा, इस दुर्लभ ज्ञान को हर किसी को नहीं देना चाहिये। २२७।

इति दशाध्यायः ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ दशाफलाध्यायः

तत्रादौ विंशोत्तरीमतेन सूर्यमहादशाफलम्-

सूर्योत्कृष्टदशा करोति सुतधीप्रज्ञाधिकारोच्चय-
ज्ञानार्थागमकीर्त्तिपौरुषसुखप्राप्तीश्वरानुग्रहात् ।
भानोः पापदशा करोति विफलोद्योगार्थहान्यामया-
त्राजक्षोभमहीशकोपजनकारिष्टाग्निबाधोदयात् ॥ १ ॥

उत्तमबली सूर्य की दशा में पुत्र, बुद्धि, अधिकार, उच्च ज्ञान, धन का लाभ, यश, पौरुष, सुख की प्राप्ति होती है। सूर्य की निकृष्ट दशा में उद्योग में विफलता, द्रव्य की हानि, व्याधि, राजा की अप्रसन्नता से कष्ट, अरिष्ट तथा अग्नि से भय होता है॥ १॥

मूलत्रिकोणे स्वक्षेत्रे स्वोच्चे वा परमोच्चके ।
केन्द्रत्रिकोणलाभस्थे भाग्यकर्माधिपैर्युते ॥ २ ॥
बलं सूर्ये समायुक्ते निजवर्गे बलैर्युते ।
तस्मिन्दाये महासौख्यं धनलाभादिकं शुभम् ॥ ३ ॥

यदि सूर्य अपने मूलत्रिकोण राशि, स्वराशि, अपने उच्च वा परमोच्च में होकर केन्द्र, त्रिकोण वा एकादश भाव में भाग्येश कर्मेश से युत हो॥ २॥ और अपने वर्ग में हो तो इसकी दशा में अत्यंत सुख, धन का लाभ आदि शुभ फल होते हैं॥ ३॥

अत्यंतं राजसन्मानमश्वान्दोल्यादिकं शुभम् ।
सुताधिपसमायुक्ते पुत्रलाभं च विन्दति ॥ ४ ॥
धनेशस्य च संबंधे गजान्यैश्वर्यमादिशेत् ।
वाहनाधिपसम्बंधे वाहनत्रयलाभकृत् ॥ ५ ॥

पंचमेश से युत हो तो राजा से सन्मान, घोड़ा आदि सवारियों का सुख तथा पुत्र का लाभ होता है। ४। धनेश से युत हो तो हाथी-घोड़ा आदि ऐश्वर्य से संपन्न होता है। वाहनेश से युत हो तो वाहनों का लाभ होता है॥ ५॥

नृपालतुष्टिर्वित्ताढ्यः सेनाधीशः सुखी नरः ।
वस्त्रवाहनलाभश्च इति दाये रवौ बली ॥ ६ ॥
नीचे षडष्टके रिष्फे दुर्बले पापसंयुते ।
राहु-केतुसमायुक्ते दुःस्थानाधिपसंयुते ॥ ७ ॥

तथा राजा की प्रसन्नता से धनी, सेनाधीश और सुखी होता है॥ ६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि सूर्य अपने नीच राशि में ६, ८, १२ भाव में हो, दुर्बल हो, पापग्रह से युत हो वाराहु-केतु से युत हो या ६, ८, १२ वें भावोंके स्वामी से युत हो तो।७।

तस्मिन्दाये महापीडा धनधान्य - विनाशकृत् ।
राजकोपं प्रवासं च राजदंडाद् धनक्षयम् ॥८॥
ज्वरपीडा यशोहानिर्बन्धुमित्र विरोधकृत् ।
प्रवासं रोगविद्वेषं ह्यपमृत्युभयं भवेत् ॥९॥

उसकी दशा में महापीड़ा, धन-धान्य की हानि, राजकोष, विदेशयात्रा, राजदण्ड से धन की हानि॥८॥ ज्वर, यश की हानि, बन्धुओं, मित्रों से विरोध, प्रवास, रोग, शत्रुता अकाल-मृत्यु का भय॥९॥

चौराहिव्रणभीतिश्च ज्वरबाधा भविष्यति ।
पितृक्षयभयं चैव गृहे त्वशुभमेव च ॥१०॥
पितृवर्गे मनस्तापं जनद्वेषं च विंदति ।
शुभदृष्टि युते सूर्ये मध्ये तस्मिन्क्वचित्सुखम् ।
पापग्रहेण संदृष्टे वदेत्पापफलं नरः ॥११॥

चौर का भय, व्रण आदि का भय, पिता को अरिष्ट, चाचा आदि से मन में संताप, लोगों से द्वेष होता है॥१०॥ सूर्य शुभ दृष्ट हो तो मध्य में शुभफल भी होता है और पापदृष्ट हो तो पापफल ही होता है॥११॥

इति रविदशाफलम्।

अथ चन्द्रदशाफलम्-

चन्द्रोत्कृष्टदशा करोति जननीश्रेयस्तडागादिकं
क्षेत्रारामगृहासनद्विजवरश्रीशोभनांदोलिका ।
इन्दोः पापदशान्नहीनकृपणानंतार्थनाशामय-
प्रज्ञाहीनजुगुप्सुमातृमरणक्षोभातिशीतज्वरान् ॥१२॥

चन्द्रमा की उत्तम दशा में माता का सुख, तालाब, खेत, बगीचा, गृह आसन, ब्राह्मण, लक्ष्मी, सवारी का सुख होता है। चन्द्रमा की पाप दशा में धन की क्षति, कृपण बुद्धि, धन की हानि, द्रव्य की हानि, माता को कष्ट, शीतज्वर से कष्ट होता है॥१२॥

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव केन्द्रे लाभत्रिकोणगे ।
शुभग्रहेण संयुक्ते वृद्धिचन्द्रे बलैर्युते ॥१३॥
कर्मभाग्याधिपे चन्द्रे सुखेशेन बलैर्युते ।
आद्यन्तैश्चोरुभाग्येन धन - धान्यादिलाभकृत् ॥१४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि चन्द्रमा अपने उच्चराशि में होकर केन्द्र वा त्रिकोण में हो, शुभग्रह से युक्त शुक्लपक्षीय चन्द्र हो और बली हो॥ १३॥ कर्मेश वा भाग्येश हो और बली चौथे भाव के स्वामी से युत हो तो प्रथम अवस्था और अन्तिम अवस्था में अत्यन्त भाग्योदय, धन का लाभ होता है॥ १४॥

गृहे तु शुभकार्याणि वाहनं राजदर्शनम्।
यत्नकार्यार्थसिद्धिः स्याद् गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत् ॥ १५॥
मित्रप्रभुवशाद्भाग्यं राज्यलाभं महत्सुखम्।
अश्वांदोल्यादिलाभं च श्वेतवस्त्रादिलाभकृत् ॥ १६॥

गृह में शुभ कार्य होते हैं, वाहन का लाभ, राजा का दर्शन, यत्न, कार्य और धन की सिद्धि, गृह में लक्ष्मी की प्रसन्नता॥ १५॥ मित्र और स्वामी के द्वारा भाग्योदय। राज्यसुख का लाभ, अश्व, सवारी का लाभ, सफेद वस्त्र का लाभ॥ १६॥

पुत्रलाभादिसंतोषं गृहगोधनसंकुलम्।
धनस्थानगते चन्द्रे तुङ्गे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ॥ १७॥
अनेकधनलाभं च भाग्यवृद्धिर्महत्सुखम्।
निक्षेपराजसन्मानं विद्यालाभं च विंदति ॥ १८॥

पुत्रलाभ, गौओं की वृद्धि होती है, यदि चन्द्रमा अपने उच्च वा अपनी राशि का होकर दूसरे भाव में हो तो।१७।अनेक प्रकार के धन का लाभ, भाग्योदय और अत्यन्त सुख, राजा से सम्मान और विद्या का लाभ होता है।१८।

नीचे वा क्षीणचन्द्रे वा धनहानिर्भविष्यति।
दुश्चिक्ये बलसंयुक्ते क्वचित्सौख्यं क्वचिद्धनम् ॥ १९॥
दुर्बले पापसंयुक्ते देहजाड्यं मनोरुजम्।
भृत्यपीडा वित्तहानिर्मातृवर्गजनाद्वधः ॥ २०॥
षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे दुर्बले पापसंयुते।
राजद्वेषो मनोदुःखं धनधान्यादिनाशनम् ॥ २१॥

यदि चन्द्रमा नीच राशि में हो वा क्षीण हो तो धन की हानि होती है। यदि तीसरे स्थान में चन्द्रमा बली हो तो कभी सुख और कभी धन का लाभ होता है॥ १९॥ यदि चन्द्रमा दुर्बल और पापयुक्त हो तो देह में जड़ता और मानसिक दुःख होता है। नौकर को कष्ट, धन की हानि, माता को कष्ट होता है॥ २०॥ यदि दुर्बल चन्द्रमा ६,८,१२ भाव में पापयुत हो तो राजा से द्वेष, मानसिक दुःख, धन-धान्य का नाश॥ २१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मातृक्लेशं मनस्तापं देहजाड्यं मनोरुजम् ।
दुःस्थे चन्द्रे बलैर्युक्तेक्वचिल्लाभं क्वचित्सुखम् ॥ २२॥

माता को कष्ट, मन में संताप, देह में जड़ता होती है। दुःस्थान में चन्द्रमा बली हो तो कभी लाभ और कभी सुख होता है॥ २२॥

इति चंद्रदशाफलम्।

अथ भौमदशाफलम्-

परमोच्चगते भौमे स्वोच्चे मूलत्रिकोणगे ।
स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ॥ २३॥
सम्पूर्णबलसंयुक्ते शुभदृष्टे शुभांशके ।
राज्यलाभं भूमिलाभं धनधान्यादिलाभकृत् ॥ २४॥

मंगल परमोच्च में वा उच्च में अथवा मूलत्रिकोण में वा अपनी राशि में होकर केन्द्र त्रिकोण में वा एकादश वा धन भाव में॥ २३॥ पूर्ण बली हो, शुभग्रह से युत दृष्ट हो और शुभग्रह के नवांश में हो तो राज्य लाभ, भूमि लाभ, धन-धान्यादि का लाभ होता है॥ २४॥

आधिक्यं राजसन्मानं वाहनाम्बरभूषणम् ।
विदेशे स्थानलाभं च सोदराणां सुखं लभेत् ॥ २५॥
केन्द्रं गते सदा भौमे दुश्चिक्ये बलसंयुते ।
पराक्रमाद्वित्तलाभो युद्धे शत्रुक्षयो भवेत् ॥ २६॥

राजसन्मान में वृद्धि, वाहन, वस्त्र, आभूषण का लाभ होता है विदेश में स्थान का लाभ और भाइयों से सुख होता है॥ २५॥ यदि बली भौम केन्द्र में वा तीसरे भाव में हो तो पराक्रम से धन का लाभ और युद्ध में विजय होती है। शत्रुओं का नाश होता है॥ २६॥

कलत्रपुत्रविभवं राजसन्मानमेव च ।
दशादौ सुखमाप्नोति दशांते कष्टमादिशेत् ॥ २७॥
नीचादिदुःस्थगे भौमे शुभबलविवर्जिते ।
पापयुक्ते पापदृष्टे सा दशा नेष्टदायिका ॥ २८॥

स्त्री, पुत्र, धन का लाभ, राजा से सम्मान की प्राप्ति होती है। दशा के आदि में सुख का लाभ और दशा के अंत में कष्ट होता है॥ २७॥ मंगल नीच में दुष्टस्थान (६, ८, १२) में हो और शुभग्रह के सम्पर्क से रहित हो, पापयुक्त, पाप दृष्ट हो तो भौम की दशा कष्टप्रद होती है॥ २८॥

इति भौमदशाफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राहुदशाफलम्-

राहोश्च वृषभं केतोर्वृश्चिकं तुङ्गसंज्ञकम् ।
मूलत्रिकोणं कर्कं च युग्मचापं तथैव च ॥ २९ ॥
कन्या च स्वगृहं प्रोक्तं मीनं च स्वगृहं स्मृतम् ।
तद्दाये बहुसौख्यं च धनधान्यादिसम्पदाम् ॥ ३० ॥

राहु का वृष और केतु का वृश्चिक राशि उच्च राशि है। राहु का कर्क और केतु का मिथुन, धन राशि मूल त्रिकोण है॥ २९॥ राहु का कन्या और केतु का मीन स्वराशि है। स्वगृहादि में स्थित राहु की दशा में अनेक सुख, धन, धान्य आदि संपत्ति का लाभ होता है॥ ३०॥

मित्रप्रभुवशाद्दिष्टं वाहनं पुत्रसम्भवः ।
नूतनगृहनिर्माणं धर्मचिन्ता महोत्सवः ॥ ३१ ॥
विदेशे राजसन्मानं वस्त्रालंकारभूषणम् ।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे योगकारकसंयुते ॥ ३२ ॥

मित्र और स्वामी से इष्ट सिद्धि, वाहन का सुख, पुत्र का लाभ, नये-नये मकान का निर्माण, धार्मिक कार्य होता है॥ ३ ॥ विदेश यात्रा और राजा से सम्मान की प्राप्ति, वस्त्र-आभूषण का लाभ॥ ३२ ॥

केन्द्रत्रिकोणलाभे वा दुश्चिक्ये शुभराशिगे ।
महाराजप्रसादेन सर्वसम्पत्सुखावहम् ॥ ३३ ॥
यवनप्रभुसन्मानं गृहे कल्याणसम्भवम् ।
रन्ध्रे वा व्ययगे राहौ तद्दाये कष्टमालभेत् ॥ ३४ ॥

यदि राहु शुभग्रह से देखा जाता हो वा शुभयुक्त हो, योगकारक ग्रह से देखा जाता हो, केन्द्र त्रिकोण में वा क्रूर भाव में हो तो राजा की कृपा से सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है॥ ३३ ॥ म्लेच्छ राजा से सम्मान और गृह में सुख का प्रादुर्भाव होता है। यदि राहु आठवें वा बारहवें भाव में हो तो उसकी दशा में कष्ट की प्राप्ति होती है॥ ३४ ॥

पापग्रहेण सम्बन्धे मारकग्रहसंयुते ।
नीचराशिगते वापि स्थानभ्रंशो मनोरुजम् ॥ ३५ ॥
विनश्येद्दारपुत्राणां कुत्सितानां च भोजनम् ।
दशादौ देहपीडा च धनधान्यपरिच्युतिः ॥ ३६ ॥

पापग्रह से सम्बन्ध करता हो और मारकेश से युक्त हो वा नीचराशि में गया हो तो स्थानभ्रष्ट और मानसिक कष्ट होता है॥ ३५ ॥ स्त्री-पुत्र

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

के सुख की हानि, खराब भोजन मिलता है। दशा के आरम्भ में शरीर में पीड़ा, धन, धान्य की हानि॥ ३६॥

दशामध्ये च सौख्यं स्यात्स्वदेशे धनलाभकृत्।
दशान्ते कष्टमाप्नोति स्थानभ्रंशो मनोव्यथा॥ ३७॥

दशा के मध्य में सुख और स्वदेश में धन का लाभ होता है। दशा के अन्त में कष्ट, स्थानच्युति और मानसिक कष्ट होता है॥ ३७॥

इति राहुदशाफलम्।

अथ गुरुदशाफलम्-

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे केन्द्रे लाभत्रिकोणगे।
मूलत्रिकोणलाभे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥ ३८॥

यदि गुरु अपने उच्चराशि में, अपने राशि में केन्द्र, लाभ वा त्रिकोण में, अपने मूलत्रिकोण राशि में, उच्चांश में वा अपने नवांश में हो॥ ३८॥

राज्यलाभं महत्सौख्यं राजसन्मानकीर्तनम्।
गजवाजिसमायुक्तं देवब्राह्मणपूजनम्॥ ३९॥
दारपुत्रादिसौख्यं च वाहनाम्बरलाभदम्।
यज्ञादिकर्मसिद्धिः स्याद्वेदान्तश्रवणादिकम्॥ ४०॥
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहा।
आंदोलिकादिलाभश्च कल्याणं च महत्सुखम्॥ ४१॥

तो उसकी दशा में राज्य का लाभ, सुख, राजा से सम्मान और कीर्ति, हाथी-घोड़े का सुख, देवता, ब्राह्मण का पूजन॥ ३९॥ यज्ञ आदि कार्यों की सिद्धि, वेदादि का श्रवण, कीर्त्तन॥ ४०॥ राजा की प्रसन्नता से इष्ट सिद्धि और सुख का लाभ, सवारी का लाभ, कल्याण और सुख॥ ४१॥

पुत्रदारादिलाभश्च अन्नदानं महत्प्रियम्।
नीचास्तपापसंयुक्ते भावे रिष्फाष्टसंयुते॥ ४२॥
स्थानभ्रंशो मनस्तापं पुत्रपीडा महद्भयम्।
पश्वादिधनहानिश्च तीर्थयात्रादिकं लभेत्॥ ४३॥

पुत्र-स्त्री का लाभ और अन्नदान आदि कर्म होते हैं। यदि गुरु नीच राशि में, अस्तंगत, पापयुक्त और ६, ८, १२ भाव में हो तो॥ ४२॥ स्थानभ्रष्ट, मन में संताप, पुत्र की पीड़ा, भय, पशु आदि की हानि, तीर्थ-यात्रा आदि होती है॥ ४३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आदौ कष्टफलं चैव चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।
मध्यान्ते सुखमाप्नोति राजसन्मानवैभवम् ॥४४॥

दशा के आदि में कष्ट, चतुष्पद आदि का लाभ, और मध्य तथा अन्त में सुख, राजा से सन्मान की प्राप्ति होती है॥ ४४॥

इति गुरुदशाफलम्।

अथ शनिदशाफलम्-

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे मित्रक्षेत्रेऽथवा यदि ।
मूलत्रिकोणे भाग्ये वा तुङ्गांशे स्वांशगेऽपि वा ॥४५॥
दुश्चिक्ये लाभगे चैक राजसन्मानवैभवम् ।
सत्कीर्तिर्धनलाभश्च विद्यावादविनोदकृत् ॥४६॥

यदि शनि अपनी उच्चराशि, अपनी राशि, मित्र की राशि, अपने मूल त्रिकोण राशि, भाग्यभाव, अपने उच्चांश में, अपने नवांश में॥ ४५॥ तीसरे वा लाभ भाव में हो तो राजा से सम्मान और वैभव का लाभ, कीर्त्ति, धन का लाभ-विद्या का विनोद॥ ४६॥

महाराजप्रसादेन गजवाहनभूषणम् ।
राजयोगं प्रकुर्वीत सेनाधीशान्महत्सुखम् ॥४७॥
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि राज्यलाभं करोति च ।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिलाभकृत् ॥४८॥

राजा की प्रसन्नता से हाथी आदि वाहन का सुख, आभूषण का लाभ, राजयोग, सेनाधीश होने से सुख॥४७॥ लक्ष्मी की प्रसन्नता से राज्य का लाभ, गृहमें कल्याण,सम्पत्तिका लाभ,स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है॥४८॥

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वास्तङ्गतेऽपिं वा ।
विषशस्त्रादिपीडा च स्थानभ्रंशं महद्भयम् ॥४९॥

यदि शनि ६, ८, १२ भाव में हो, नीच राशि में वा अस्तंगत हो तो विष, शस्त्र आदि से पीड़ा होती है, स्थानच्युति और भय होता है॥ ४९॥

पितृमातृवियोगं च दारपुत्रादिपीडनम् ।
राजवैषम्यकार्याणि ह्यनिष्टं बन्धनं तथा ॥५०॥
शुभयुक्तेक्षिते मंदे योगकारकसंयुते ।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा मीनगे कामुके शनौ ॥५१॥
राज्यलाभं महोत्साहं गजाश्वाम्बरसंकुलम् ॥५२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पिता-माता से वियोग, स्त्री-पुत्र आदि को पीड़ा, राज के विलोम कार्य, अनिष्ट और बंधन होता है॥ ५०॥ शनि शुभग्रह से युत हो, केन्द्र त्रिकोण वा लाभ भाव में हो मीन वा धनु राशि में हो तो॥ ५१॥ राज्यलाभ, उत्साह, हाथी तथा प्रभूत वस्त्रादि का लाभ होता है॥ ५२॥

इति शनिदशाफलम्।

अथ बुधदशाफलम्-

स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
मित्रक्षेत्रसमायुक्ते सौम्यदाये महत्सुखम्॥ ५३॥
धनधान्यदिलाभश्च सत्कीर्तिधनसम्पदाम्।
ज्ञानाधिक्यं नृपप्रीतिः सत्कर्मगुणवर्धनम्॥ ५४॥

बुध अपनी उच्चराशि, अपनी राशि में हो, केतु त्रिकोण में, मित्र की राशि में हो तो इसकी दशा में अत्यन्त सुख॥ ५३॥ धन, धान्य आदि का लाभ, कीर्त्ति, धन सम्पत्ति की वृद्धि, ज्ञान की वृद्धि, राजा से प्रीति, अच्छे कर्म और गुण में वृद्धि॥ ५४॥

पुत्रदारादिसौख्यं च देहारोग्यं महत्सुखम्।
क्षीरेण भोजनं सौख्यं व्यापारेण धनागमम्॥ ५५॥
शुभदृष्टियुते सौम्ये भाग्ये कर्माधिपे यदा।
आधिपत्ये बलवती सम्पूर्णफलदायिका॥ ५६॥

पुत्र-स्त्री का सुख, शरीर की आरोग्यता, सुख, दूध का भोजन, सुख, व्यापार से लाभ होता है॥ ५५॥ बुध शुभग्रह से दृष्ट युत हो, भाग्य स्थान में हो, कर्मेश हो तो कथित सभी फल सम्पूर्ण होते हैं॥ ५६॥

पापग्रहयुते दृष्टे राजद्वेषं मनोरुजम्।
बन्धुजन विरोधं च विदेशगमनं तथा॥ ५७॥
परप्रेष्यं च कलहं मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्।
षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये लाभभोगविनाशनम्॥ ५८॥

बुध पापग्रह से युत दृष्ट हो तो राजा से द्वेष, मानसिक कष्ट, बन्धुओं से विरोध, विदेशयात्रा। ५७। दूसरे की दासता, कलह मूत्रकृच्छ्र (सूजाक) का भय होता है। ६, ८, १२ भावमें बुध हो तो लाभ आदिकी हानि होती है। ५८।

वातपीडां धनं चैव पाण्डुरोगं तथैव च।
नृपचौराग्निभीतिं च कृषिगोभूमिनाशनम्॥ ५९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दशादौ धनधान्यं च विद्यालाभं महत्सुखम् ।
पुत्रकल्याणसम्पत्तिः सन्मार्गे धनलाभकृत् ।
मध्ये नरेन्द्रसन्मानमन्ते दुःखं भविष्यति ॥ ६० ॥

वात पीड़ा, पाण्डुरोग, राजा, चोर से भय, कृषि, गौ तथा भूमि की हानि होती है॥ ५९ ॥ दशा के आदि में धन, धान्य, विद्या का लाभ और सुख होता है। पुत्र-प्राप्ति होती है, सन्मार्ग में धन का व्यय होता है। मध्य में राजा से सन्मान का लाभ और अंत में दुःख होता है॥ ६० ॥

इति बुधदशाफलम्।

अथ केतुदशाफलम् -

केन्द्रलाभत्रिकोणे वा शुभराशौ शुभेक्षिते ।
स्वोच्चे वा शुभवर्गे वा राजप्रीतिं मनोत्साहम् ॥ ६१ ॥
देशग्रामाधिपत्यं च वाहनं पुत्रसम्भवम् ।
देशान्तरे प्रयाणं च अन्यदेशे सुखावहम् ॥ ६२ ॥

केतु केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में हो वा शुभ ग्रह की राशि में शुभ दृष्ट हो अथवा अपने उच्च राशि में वा शुभ ग्रह के वर्ग में हो तो उसकी दशा में राजा से प्रेम, मन में उत्साह॥ ६१ ॥ देश ग्राम का आधिपत्य, वाहन और पुत्र का लाभ, देशान्तर की यात्रा और वहां सुख का लाभ॥ ६२ ॥

पुत्रदारसुखं चैव चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।
दुश्चिक्ये षष्ठलाभे वा केतोर्दशे सुखं भवेत् ॥ ६३ ॥
राज्यं करोति मित्रांशे गजवाजिसमन्वितम् ।
दशादौ राजयोगाश्च दशामध्ये महद्भयम् ॥ ६४ ॥

पुत्र-स्त्री का सुख, चतुष्पद का सुख होता। ३, ६, ११ भाव में केतु हो तो इसकी दशा में सुख होता है॥ ६३ ॥ मित्र के अंश में हो तो राज्य का लाभ और हाथी-घोड़े से युक्त होता है। दशा के आरम्भ में राजयोग का सुख, मध्य में बड़ा भय॥ ६४ ॥

अंते दूराटनं चैव देहविश्रवणं तथा ।
धने रंध्रे व्यये केतौ पापदृष्टियुतेक्षिते ॥ ६५ ॥
निगडं बन्धुनाशं च स्थानभ्रंशं मनोरुजम् ।
शूद्रक्षुद्रादिलाभं च नानारोगाकुलं भवेत् ॥ ६६ ॥

और अंत में दूरयात्रा, देहपीड़ा; यदि केतु २, ८, १२ भाव में हो और पापग्रह से दृष्टयुत हो तो॥ ६५ ॥ बन्धन, बन्धुओं की हानि, स्थानच्युति

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

और मानसिक कष्ट होता है। शूद्र द्वारा क्षुद्र लाभ और अनेक रोग से मनुष्य व्यग्र होता है॥ ६६॥

इति केतुदशाफलम्।

अथ शुक्रदशाफलम्-

परमोच्चगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
नृपाभिषेकसम्प्राप्तिर्वाहनाम्बरभूषणम् ॥६७॥
गजाश्वपशुलाभं च नित्यं मिष्ठान्नभोजनम्।
अखंडमंडलाधीश राजसन्मानवैभवम् ॥६८॥

शुक्र परमोच्च में वा उच्च में वा अपने राशि में केन्द्र में हो तो इसकी दशा में राज्याभिषेक का लाभ, वाहन, वस्त्र और आभूषण का लाभ॥ ६७॥ हाथी-घोड़े का लाभ, नित्य मिष्ठान्न भोजन, अखंड राज्य का लाभ, राजसम्मान और वैभव का लाभ॥ ६८॥

मृदङ्गवाद्ययोगं च गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत्।
त्रिकोणस्थे मीन - शुक्रे राज्यार्थगृहसम्पदः ॥६९॥
विवाहोत्सवकार्याणि पुत्रकल्याणवैभवम्।
सेनाधिपत्यं कुरुते इष्टबन्धुसमागमम् ॥७०॥

मृदङ्ग आदि बाजा का सुख, गृह में लक्ष्मी का वास होता है। यदि मीन राशि में शुक्र त्रिकोण में हो तो राज्य, धन, गृह, सम्पत्ति॥६९॥ विवाहादि उत्सव, पुत्र-प्राप्ति, सेनाधिपत्य और मित्र, बन्धुओं का समागम॥७०॥

नष्टराज्याद्धनप्राप्तिर्गृहे गोधनसंग्रहम्।
षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे नीचे वा व्ययराशिगे ॥७१॥
आत्मबन्धुजनद्वेषं दारवर्गादिपीडनम्।
व्यवसायात्फलं नष्टं गोमहिष्यादिहानिकृत् ॥७२॥

और नष्ट राज्य से धन का लाभ और गोधन से सुख होता है। ६।८।१२ भाव में अथवा अपने नीच राशि में वा बारहवें भाव में शुक्र हो तो॥७१॥ उसकी दशा में अपने बन्धुजनों से द्वेष, स्त्री वर्ग से पीड़ा, व्ययसाय में हानि, गौ, भैंस आदि की पीड़ा॥७२॥

दारपुत्रादिपीडा वा आत्मबन्धुवियोगकृत्।
भाग्यकर्माधिपत्येन लग्नवाहनराशिगे ॥७३॥
तद्दशायां महत्सौख्यं देशग्रामाधिपत्यताम्।
देवालयतडागादि - पुण्यकर्मसु संग्रहम् ॥७४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री-पुत्रादि को कष्ट और आत्मीय लोगों से वियोग होता है। शुक्र भाग्येश वा कर्मेश होकर लग्न वा चतुर्थ स्थान में हो तो॥७३॥ उसकी दशा में बहुत ही सुख, देश वा ग्राम का आधिपत्य, देवालय व तालाब आदि पुण्य कार्य होते हैं॥७४॥

अन्नदाने महत्सौख्यं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
उत्साहः कीर्त्तिसम्पत्ती स्त्रीपुत्रधनसंपदः॥७५॥
स्वभुक्तौ फलमेवं स्याद्बलान्यानि भुक्तिषु।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहपीडा भविष्यति॥७६॥
तद्दोषपरिहारार्थं रुद्रं वा त्र्यम्बकं जपेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादारोग्यं च भविष्यति॥७७॥

अन्नदान, सुख, नित्य मिष्ठान्न का भोजन, उत्साह, कीर्त्ति में वृद्धि, संपत्ति, स्त्री, पुत्र तथा धन का लाभ होता है॥७५॥ इस प्रकार अपने अन्तर में भी फल को देता है। शुक्र दूसरे, सातवें भाव का स्वामी हो तो शरीर में पीड़ा होती है॥७६॥ इस दोष के शान्त्यर्थ रुद्राभिषेक वा त्र्यम्बक मन्त्र का जप कराने से रोगादि निवृत्त हो जाते हैं॥७७॥

लग्नेशस्य दशा बलं बहुधनं वित्तेशितुः पंचतां
कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः।
तुर्यस्वामिनि आलयं किल सुज्ञाधीशस्य विद्यासुखं
रोगागारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम्॥७८॥

लग्नेश की दशा में बल पौरुष की वृद्धि, धन का लाभ होता है, धनेश की दशा में मृत्यु अथवा कष्ट, तृतीयेश की दशा में प्रायः कष्ट ही होता है। सुखेश की दशा में गृह सुख, सुतेश की दशा में विद्या का लाभ षष्ठेश की दशा में शत्रुभय, सप्तमेश की दशा में शोक॥७८॥

मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सत्क्रियाम्
वित्तं राजपतेर्मुपाश्चयमथो लाभं हि लाभेशितुः।
रोगं द्रव्यविनाशन च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै
पूर्वैरङ्गभृतामुदीरितमिदं तन्वादिभावेशजम्॥७९॥

अष्टमेश की दशा में मृत्यु, नवमेश की दशा में सत्कर्म, दशमेश की दशा में राजा के आश्रय से धन का लाभ, लाभेश की दशा में लाभ और व्ययेश की दशा में रोग, द्रव्य की हानि और अनेक कष्ट होते हैं॥७९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भावाधिपो बलयुतो निजगेहगामी
तुङ्गत्रिकोण - शुभवर्गगतोऽपि पूर्णम् ।
जंतोः फलं खलु करोति यदारिनीच-
स्थानस्थितोऽशुभफलं विबलो विशेषात् ॥ ८० ॥

यदि भावेश बली हो, अपने गृह का उच्च वा मूलत्रिकोण में वा शुभग्रह के वर्ग में हो तो पूर्ण फल देता है। यदि शत्रुगृह, नीचराशि में हो तो अशुभ फल करता है॥ ८० ॥

आहुः शुभाशुभफलं नृणां कालविदो जनाः ।
एतद्बलं विनिर्णीतमायुषां निश्चयो नृणाम् ॥ ८१ ॥
पंचमेशयुतस्यापि धर्मेशस्य दशा तु या ।
अतीव शुभदा प्रोक्ता कालविद्भिर्मुनीश्वरैः ॥ ८२ ॥

शुभग्रह यदि शुभद है तो शुभ फल देता है, इस प्रकार दशा के वश आयु का निर्णय करना चाहिये॥ ८१॥ पंचमेश से युक्त धर्मेश की दशा अत्यन्त शुभद होती है॥ ८२ ॥

स पंचमेशस्य तपोधिपस्य दशा भवेद्राज्यसुखार्थलाभदा ।
तथैव मानाधिपसंयुतस्य सुतेश्वरस्यापि दशा शुभा स्यात् ॥ ८३ ॥

पंचमेश से युक्त धर्मेश की दशा राज्य, सुख, धन का लाभ कराती है। उसी प्रकार कर्मेश से युत पंचमेश की दशा भी शुभद होती है॥ ८३ ॥

षष्ठाष्टमव्ययाधीशाः पंचमाधिप संयुताः ।
तेषां दशा च शुभदा प्रोच्यते कालवित्तमैः ॥ ८४ ॥
सुखेशो मानभावस्थो मानेशो सुखराशिगः ।
तयोर्दशां शुभां प्राहुर्ज्योतिःशास्त्रविदो जनाः ॥ ८५ ॥

६।८।१२ भाव के स्वामी पंचमेश से युत हों तो उनकी दशा शुभद होती है॥ ४ ॥ सुखेश दशम भाव में हो और कर्मेश चौथे भाव में हो तो दोनों की दशा शुभद होती है॥ ८५ ॥

सुतेशमानेशसुखेशधर्मपा एकत्र युक्ता यदि यत्र कुत्र ।
तेषां दशा राज्यफलप्रदा वै तैर्युक्तग्रहाणामपि वै वदेत्तथा ॥ ८६ ॥

पंचमेश, कर्मेश, सुखेश, धर्मेश एक ही भाव में हो तो इनकी दशा राज्य देने वाली होती है॥ ८६ ॥

वाहन - स्थान - संयुक्त - मंत्रनाथ दशा शुभा ।
सुखराशिस्थकर्मेशदशा राज्यप्रदायिनी ॥ ८७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चौथे भाव में स्थित पंचमेश की दशा शुभद होती है। चौथे भाव में बैठे हुये कर्मेश की दशा राज्यदायिनी होती है॥ ८७॥

ताभ्यां युक्तस्य खेटस्य दृष्टियुक्तस्य चैतयोः।
राज्यप्रदां दशां प्राहुर्विद्वांसो दैवचिन्तकाः॥ ८८॥
कर्मस्थानस्थ - बुद्धीशदशा सम्पत्करी भवेत्।
मानस्थित - तपोधीश - दशा राज्यप्रदायिनी॥ ८९॥

इन दोनों से युक्त वा दृष्ट ग्रह की दशा भी राज्यदायिनी होती है॥ ८८॥ कर्म भाव में बैठे हुये पंचमेश की दशा सम्पत्ति देने वाली होती है। दशमस्थित धर्मेश की दशा राज्य देने वाली होती है॥ ८९॥

यस्माद् व्ययगतो यस्तु तद्दशायां धनक्षयम्।
यस्मात्त्रिकोणगा पापा तत्रात्मशमनाशनम्॥ ९०॥
पुत्रहानिः पितुः पीडा मनस्तापो महान् भवेत्।
यस्मात्त्रिकोणगाः रिःफरन्ध्रेशार्केन्दुसूर्यजाः॥ ९१॥

जिससे (भाव से) जो बारह स्थान में हो उसकी दशा में धन की हानि होती है। जिससे त्रिकोण स्थान में पापग्रह हों उसकी दशा में आत्मीय पुरुषार्थ का नाश॥ ९०॥ पुत्र की हानि, पिता को पीडा, मन को संताप होता है जिससे त्रिकोण में अष्टमेश, व्ययेश और सूर्य चन्द्रमा शनि हों॥ ९१॥

पुत्रपीडा द्रव्यहानिस्तत्र केत्वहि - संगमे।
विदेशभ्रमणं क्लेशो भयं चैव पदे पदे॥ ९२॥
यस्मात्षष्ठाष्टमे क्रूरनीचखेटाश्च संस्थितः।
रोगशत्रुनृपाद्वास्यान्मुहुः पीडा सुदुःसहा॥ ९३॥

तो विदेश की यात्रा तथा क्लेश और केतु राहु युत हों तो पद-पद पर भय होता है॥ ९२॥ जिससे ३।२ भाव में क्रूरग्रह हो, नीच आदि स्थानगत ग्रह हो तो उसकी दशा में रोग, शत्रु, राजा से दुःसह पीड़ा होती है॥ ९३॥

यस्माच्चतुर्थगः क्रूरः स्याद्भूगृहक्षेत्रनाशनम्।
पशुहानिस्तत्र भौमे गृहदाहप्रमादतः॥ ९४॥
शनौ हृदयशूलं स्यात्सूर्ये राजप्रकोपनम्।
सर्वस्वहरणं राहौ विषचौरादिजं भयम्॥ ९५॥

जिससे चौथे भाव में क्रूरग्रह हो तो उसकी दशा में भूमि, गृह, खेत का नाश होता है और पशु की हानि होती है, यदि भौम हो तो प्रमाद

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

से घर जल जाता है॥ ६४॥ चौथे शनि हो तो हृदय में शूल होता है। सूर्य हो तो राजा के कोप से सर्वस्व नाश और राहु हो तो विष तथा चोर से भय होता है॥ ६५॥

यस्माद्दशमभे राहुः पुण्यतीर्थाटनं भवेत्।
यस्मात्कर्मायभाग्यर्क्षगताः शोभनखेचराः॥ ६६॥
विद्यार्थधर्मसत्कर्मख्यातिपौरुषसिद्धयः।
यतः पंचमकामारिगताः स्वोच्चे शुभग्रहाः॥ ६७॥

जिससे १०वें स्थान में राहु हो तो उसकी दशा में पुण्यतीर्थो का भ्रमण होता है। जिससे १०,११, ६ स्थान में शुभग्रह गये हों उसकी दशा में॥ ६६॥ विद्या, अर्थ, धर्म और सत्कर्म तथा पुरुषार्थ की सिद्धि होती है जिससे ५।७।६ स्थान में अपने उच्चराशि में शुभग्रह गये हों॥ ६७॥

पुत्रदारादि - संप्राप्तिर्नृपपूजा महत्तरा।
यस्मिन्विद्यायकर्माम्बुनवलग्नाधिपाः स्थिताः॥ ६८॥
तत्तद्भावार्थसिद्धिः स्याच्छ्रेयो योगानुसारतः।
यस्मिन् गुरुर्वा शुक्रो वा शुभेशो वापि संस्थितः॥ ६९॥

तो उसकी दशा में पुत्र, स्त्री आदि का लाभ और राजा से पूजित होता है॥ ६८॥ जिन-जिन भावों में ५।११।१०।४।९ और लग्न के स्वामी बैठे हों। उन-उन भावों के फल में पुष्टता होती है तथा योगानुसार विशेष फल भी होता है॥ ६९॥

कल्याणोत्सवसम्पत्तिर्देवब्राह्मणपूजनम्।
यच्चतुर्थे तुङ्गखेटाः शुभस्वामी ग्रहश्च वा॥ १००॥
वाहनग्रामलाभश्च पशुवृद्धिश्च भूयसी।
तत्र चन्द्रेष्टलाभः स्याद्बहुधान्यरसान्युतः॥ १०१॥

जिस भाव में गुरु वा शुक्र वा ९ भाव के स्वामी बैठे हों तो उसकी दशा में कल्याण, उत्सव, सम्पत्ति, देवता और ब्राह्मण का पूजन होता है। जिससे चौथे भाव में कोई उच्चराशि का ग्रह हो वा शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा में॥ १००॥ वाहन-ग्राम का लाभ और पशुओं की वृद्धि होती है। यदि चन्द्रमा हो तो इष्ट की सिद्धि और रसयुक्त धान्य का लाभ होता है॥ १०१॥

पूर्णे विधौ निधिप्राप्तिर्लभेद्वा मणिसंचयम्।
तत्र शुक्रे मृदङ्गादि - वाद्यमान - पुरस्कृतः॥ १०२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आंदोलिकाप्तिर्जीवे तु कनकांदोलिका ध्रुवम् ।
लग्नकर्मेशभाग्येश - तुङ्गस्थ - शुभयोगतः ॥ १०३ ॥

यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो निधि(गड़े हुए धन) का वा मणि का लाभ होता है। यदि शुक्र हो तो मृदङ्ग आदि बाजे का लाभ और मानपत्र से पुरस्कृत होता है॥ १०२॥ गुरु हो तो सुवर्ण की पालकी का लाभ होता है। लग्नेश कर्मेश भाग्येश यदि अपने उच्च राशि में हों तो शुभ योग होता है॥ १०३॥

सर्वोत्कर्षमहैश्वर्य - साम्राज्यादि - महत्फलम् ।
एवं तत्तद्भावबलदायफलं यतस्याद्विचिंतयेत् ॥
एकैवोडुदशा स्वीया गुणैरष्टादशात्मना ।
भिन्नो फलविपाकस्तु कुर्याद्विचित्रसंयुतम् ॥ १०४ ॥

इसमें सभी प्रकार की उन्नति, ऐश्वर्य, राज्य आदि का लाभ होता है। इसी प्रकार से सभी भावों से फल का विचार करना चाहिये। एक-एक राशि की वा ग्रह की दशा अपने १८ गुणों से भिन्न-भिन्न फलों को देने वाली होती है॥ १०४॥

परमोच्चे तुङ्गमात्रे तदर्वाक्तदुपर्यपि ।
मूलत्रिकोणभे स्वर्क्षे स्वाधिमित्रग्रहस्य भे ॥ १०५ ॥
तत्कालसुहृदो गेहे उदासीनस्य भे तथा ।
शत्रोर्भेऽधिरिपोर्भे च नीचान्तादूर्ध्व - देशभे ॥ १०६ ॥

वे १८ गुण इस प्रकार हैं-परमोच्च, केवल उच्च में, इसके पूर्व या आगे, मूल त्रिकोण, स्वराशि अधिमित्र की राशि॥ १०५॥ तात्कालिक मित्रराशि, समकी राशि, शत्रु की राशि, अधिशत्रु की राशि, नीचराशि या उससे पूर्व या आगे॥ १०६॥

तस्मादर्वाङ् नीचमात्रे नीचान्ते परमांशके ।
नीचारिवर्गे सखले स्ववर्गे केन्द्रकोणभे ॥ १०७ ॥
व्यवस्थितस्य खेटस्य समरे पीडितस्य च ।
गाढमूढस्य च दशापचिति स्वगुणैः फलम् ॥ १०८ ॥

नीच, परमनीच में, नीच वा शत्रुवर्ग में, पापयुक्त, अपने वर्ग में, केन्द्रकोण में॥ १०७॥ युद्ध में पीड़ित, परमअस्त में गये हुये ग्रहों की दशा अपने गुण के अनुसार फलदायक होती है॥ १०८॥

परमोच्चगतो यस्तु योऽतिवीर्यचरित्रवान् ।
सम्पूर्णाख्या च तद्दशा राज्यभोग्यशुभप्रदा ॥ १०९ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानां चिदावासगृहप्रदा ।
तुङ्गमात्रगतस्यापि तथा वीर्याधिकस्य च ॥ ११० ॥

जो ग्रह परमोच्च हो और अत्यन्त बली हो उसकी दशा को सम्पूर्णा कहते हैं, उसकी दशा में राज्य का सुख और शुभफल होते हैं॥ १०९॥ और लक्ष्मी की कृपा होती है तथा गृह की प्राप्ति होती है। जो केवल उच्चराशि में हो और अधिक बली हो॥ ११०॥

पूर्णाख्या बहुधैश्वर्यदान्यपि रुजप्रदा ।
अतिनीचगतस्यापि दुर्बलस्य ग्रहस्य तु ॥ १११ ॥
रिक्तासानिष्टफलदा व्याध्यनर्थमृतिप्रदा ।
अत्युच्चेऽप्यतिनीचगे मध्यगस्यावरोहिणी ॥ ११२ ॥

उसकी दशा को पूर्णा कहते हैं, वह ऐश्वर्य को देने वाली होते हुये भी रोगप्रद होती है। अस्तगंत नीच में गये हुये दुर्बलग्रह की दशा को॥१११॥ रिक्ता कहते हैं। इस दशा में अनिष्ट फल, व्याधि, अनेक अनर्थ होते हैं। अत्यंत उच्च और अत्यंत नीच के मध्य में गये हुये ग्रह की दशा को अवरोहिणी कहते हैं॥ ११२॥

मित्रोच्चभावप्राप्तस्य मध्याख्या ह्यर्थदा दशा ।
नीचान्तादुच्चभागान्तं भषट्के मध्यमस्य च ॥ ११३ ॥
दशा चारोहिणी नीचरिपुभांशगतस्य च ।
अधमाख्या भयक्लेश - व्याधिदुःखविवर्धिनी ॥ ११४ ॥

जो ग्रह मित्र की राशि या उच्चराशि में हो उसकी दशा का नाम मध्या होता है वह धान्य देने वाली होती है। नीच से उच्च तक ६ राशि के मध्य में रहने वाले ग्रह की॥११३॥ दशा को आरोहिणी कहते हैं, नीच शत्रु के राशि या नवांशगत ग्रह की दशा को अधम दशा कहते हैं, यह दशा भय, कष्ट, व्याधि, दुःख को बढ़ाने वाली होती है॥ ११४॥

नामानुरूपफलदाः पाककाले दशाक्रमात् ।
भाग्येशगुरुसम्बन्धो योगदृक्केन्द्रभादिभिः ॥ ११५ ॥
परेषामपि दायेषु भाग्योपक्रममुन्नयेत् ।
जातको यस्तु फलदो भाग्यप्रदोऽथ यः ॥ ११६ ॥

अपने-अपने नाम के अनुरूप ही अपनी-अपनी दशा का फल होता है। यदि अन्य ग्रह के साथ भाग्येश, गुरु का योग, दृष्टि, केन्द्र आदि में कोई

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सम्बन्ध होता हो॥ ११५॥ तो उस ग्रह की दशा में भी भाग्यवृद्धि होती है। जन्म समय में भाग्योदय आदि फल देने वाला ग्रह हो॥ ११६॥

सफलो वक्रिमादूर्ध्वमन्यानपि च खेचरात्।
दुर्बला न समर्थाश्च फलदानेषु योगतः॥ ११७॥
तारतम्यात्सुसम्बन्धा दशा ह्येताः फलप्रदाः।
स्वकेन्द्रादिजुषां तेषां पूर्णार्द्धांघ्रिव्यवस्थया॥ ११८॥

वह वक्रगति को छोड़ने के बाद फलप्रद होता है। इसी प्रकार जो दुर्बल और असमर्थ है वह भी योग होने से फल देने में समर्थ हो जाता है॥ ११७॥ इस प्रकार तारतम्य से अच्छे सम्बन्ध से दशा फलप्रद होती है, तथा दशेश के केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम में रहने से पूर्ण, आधा और चौथाई दशा का फल तारतम्य से होता है॥ ११८॥

शीर्षोदयस्थिताः स्वस्वदशादौ स्वफलप्रदाः।
उभयोदयराशिस्था ग्रहाः स्युः मध्यफलप्रदा॥ ११९॥
पृष्ठोदयर्क्षगाः खेटाः स्वदशान्ते फलप्रदाः।
निसर्गतश्च तत्काले सुहृदां हरणे शुभम्॥ १२०॥

शीर्षोदय राशि में बैठा हुआ ग्रह अपनी दशा के आदि में अपने शुभ-अशुभ फल को देता है, द्विस्वभाव राशिगत ग्रहदशा के मध्य में अपने शुभ-अशुभ फल को देता है॥ ११९॥ पृष्ठोदय राशि में गया हुआ ग्रह अपनी दशा के अन्त में अपने शुभ-अशुभ फल को देता है। नैसर्गिक वा तत्काल में मित्र ग्रह की अन्तरदशा में शुभ फल होता है॥ १२०॥

सम्पादयेत्तदा कष्टं तद्विपर्ययगामिनाम्।
दशेशाक्रांत भावाच्च आरभ्य द्वादशर्क्षभम्॥ १२१॥
भुक्त्वा द्वादशराशीनां दशाभुक्तिं प्रकल्पयेत्।
एकैकराशेर्या तत्र सुहृत्स्वक्षेत्रगामिनी॥ १२२॥

और शत्रुग्रह की अन्तरदशा में अशुभ फल होता है (दशेश जिस) भाव में हो वहाँ से आरम्भ कर १२ राशियों की अन्तर्दशा होती है॥ १२१॥ उसमें भी जो राशि मित्र राशिस्थ वा अपने राशिस्थ ग्रह से युत हो उसकी अन्तरदशा में राज्यादि सम्पत्तिपूर्वक शुभ फल होता है॥ १२२॥

तस्यां राज्यादिसम्पत्तिपूर्वकं शुभमीरयेत्।
दुःस्थानरिपुनीचस्थनीचक्रूरयुता च या॥ १२३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तस्यामनर्थकलहं रोगमृत्युभयादिकम् ।
बिन्दुभूयस्त्वशून्यत्ववशात् स्वीयाष्टवर्गके ॥ १२४ ॥

जो राशि शत्रुराशिस्थ, नीचस्थ, नीचक्रूरयुक्त ग्रह से युत हो उसकी ॥ १२३ ॥ अन्तरदशा में अनर्थ, कलह, रोग, मृत्युभय आदि दुष्ट फल होते हैं, अष्टकवर्ग के अनुसार ॥ १२४ ॥

वृद्धिं हानिं च तद्राशियालस्य स्वगृहात्क्रमात् ।
भावयोजनया विद्यात्सुताद्यादिशुभाशुभम् ॥ १२५ ॥

जिस राशि में रेखा या विन्दु अधिक हो उसमें शुभ फल और जिसमें रेखा या विन्दु अल्प हो उसमें हानि होती है। (यहाँ कोई आचार्य अष्टकवर्ग में शुभद्योतक रेखा को और कोई शुभद्योतक शून्य को मानते हैं)। भाव के योजना के अनुसार (अर्थात् लग्न आदि भावों से जिस भाव का विचार करना हो उसी को लग्न मानकर उससे अन्य भावों से उनके शुभ-अशुभ का विचार करना चाहिये) जैसे भाई के शुभ दुःखादि का विचार करना है तो तीसरे भाव को लग्न मानकर उससे दूसरे भाव से भाई के धन आदि का विचार करना चाहिये ॥ १२५ ॥

धात्वादिराशिभेदाच्च धात्वादिग्रहयोगतः ।
शुभपापदशाभेदाच्छुभपापयुतैरपि ॥ १२६ ॥

राशियों के धातु आदि के भेद से और ग्रहों के धातु आदि के भेद से उन-उन राशियों वा शुभ पापदशा भेद और शुभ पाप के योग से ॥ १२६ ॥

इष्टानिष्टस्थानभेदात् फलभेदात्समुन्नयेत् ।
एवं सर्वग्रहाणां च स्वां स्वामन्तर्दशामपि ॥ १२७ ॥
स्वराशितो राशिभुक्तिं प्रकल्प्य फलमीरयेत् ।
अन्तरन्तर्दशां स्वीयां विभज्यैवं पुनः पुनः ॥ १२८ ॥

अन्तरदशा काल में अशुभ स्थान भेद से सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का शुभ पापफल का विचार करना चाहिए ॥ १२७ ॥ एवं राशि से राशि की अन्तर्दशा की कल्पना कर फल कहना चाहिये तथा अन्तर्दशा में पुनः अन्तर्दशा की कल्पना कर उससे भी सूक्ष्म फल कहना चाहिये ॥ १२८ ॥

गुर्जरे कच्छ - सौराष्ट्रे पांचाले सिन्धुपर्वते ।
एते अष्टोत्तरी श्रेष्ठा अन्ये विंशोत्तरी मता ॥ १२९ ॥

गुजरात, कच्छ, सौराष्ट्र, पांचाल, सिन्धु पर्वत में अष्टोत्तरी दशा लेनी चाहिये और अन्यत्र विंशोत्तरी दशा लेनी चाहिये ॥ १२९ ॥

इति बृहत्पाराशरहोरायां पूर्वार्धे दशाफललक्षणाध्यायः ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by eGangotri Foundation

अथान्तर्दशादिफलविचाराध्यायः

तत्रादौ अन्तर्दशाऽऽनयनप्रकारमाह-

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् ।
लब्धं मासास्तथा शेषं त्रिंशघ्नं च दिनानि च ॥ १ ॥

जिस ग्रह की दशा में जिस ग्रह का अन्तर निकालना हो उसकी दशावर्ष को दशेश के वर्ष से गुणाकर गुणनफल में १० का भाग देने से लब्धि मास और शेष को ३० से गुणाकर १० से भाग देने से लब्धि दिन होता है॥ १ ॥

उदाहरण- जैसे सूर्य की दशा में सूर्य का अन्तर निकालना है तो सूर्य की दशा वर्ष संख्या ६ को ६ से गुणने से ३६ हुआ। इसमें १० का भाग देने से लब्धि ३ मास, शेष ६ को ३० से गुणाकर १० का भाग देने से १८ दिन आया। अर्थात् सूर्य की दशा में ३ मास १८ दिन सूर्य का ही अन्तर रहेगा। इसी प्रकार चन्द्रमा की दशा वर्ष १० से सूर्य की दशा वर्ष को गुणाकर १० का भाग देने से लब्धि ६ मास चन्द्रमा का अन्तर हुआ।

अन्तर्दशा लिखने का क्रम-

शून्यन्तर्दशाचक्रम्-

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	ग्रहाः
३	२	१	३	०	१	१	२	२	व.
०	८	८	२	०	८	२	१०	२	मा.
३	९	९	०	०	०	०	०	०	दि.
२०२५	२८	३०	१३२	३५	३६	३७	३८	४१	२०४४
३	३	०	१	३	२	९	११	९	३
१२	१५	४	१३	१३	२५	२५	४	१०	२२

सूर्यदशा वर्ष ६ अन्तर्दशा *चन्द्रदशा वर्ष १० अन्तर्दशा*

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	ग्र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	व.	०	०	१	१	१	१	०	१	०
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मा.	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौमदशा वर्ष ७ अन्तर्दशा *राहुदशा वर्ष १८ अन्तर्दशा*

मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्र.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	व.	२	२	२	२	१	३	०	१	१
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मा.	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	दि.	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुदशा वर्ष १६ अन्तर्दशा

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	अं.
२	२	२	०	२	०	१	०	२	व.
१	६	३	११	८	६	४	११	४	मा.
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दि.

शनिदशा वर्ष १९ अन्तर्दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	अं.
३	२	१	३	०	१	१	२	२	व.
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	मा.
३	६	६	०	१२	०	६	६	१२	दि.

बुधदशावर्ष १७ अन्तर्दशा

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	अं.
२	०	२	०	१	०	२	२	२	व.
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मा.
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	६	दि.

केतुदशावर्ष ७ अन्तर्दशा

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	अं.
०	१	०	०	०	१	०	१	०	व.
४	२	४	७	४	०	११	१	११	मा.
२७	०	६	०	२७	१८	६	६	२७	दि.

शुक्रदशावर्ष २० अन्तर्दशा

शु.	र.	सो.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	अं.
३	१	१	१	३	२	३	२	१	व.
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.

फलमाह-

स्वद्वादशांशके लग्ननाथे वा स्वदृक्काणगे ।
तस्य भुक्तिं शुभामाहुर्मुनयः कालचिंतकाः ॥ २ ॥
स्वत्रिंशांशेऽथवा मित्रत्रिंशांशकेऽपि वा ।
तस्य भुक्तिः शुभा प्रोक्ता कालविद्भिर्मनीषिभिः ॥ ३ ॥

अपने द्वादशांश में लग्नेश हो अथवा अपने द्रेष्काण में हो तो उसका अन्तर शुभद होता है, ऐसा दैवज्ञ कहते हैं ॥ २ ॥ अपने त्रिंशांश में अथवा मित्र के त्रिंशांश में ग्रह तो तो उसका अन्तर भी शुभद होता है ॥ ३ ॥

मित्रक्षेत्रे नवांशस्थे मित्रस्य द्वादशांशके ।
तस्यभुक्तिः शुभा प्रोक्ता कालविद्भिर्मनीषिभिः ॥ ४ ॥
बुद्धिक्षेत्रनवांशस्थे पुत्रस्य द्वादशांशके ।
मित्रद्रेष्काण गेवापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ॥ ५ ॥

मित्र की राशि में अथवा नवांश में वा द्वादशांश में ग्रह हो तो उसका अन्तर भी शुभद होता है ॥ ४ ॥ पंचम भाव के नवांश में वा पंचम भाव के द्वादशांशमें वा मित्रके द्रेष्काणमें हो तो उसका अन्तर भी शुभद होता है ॥ ५ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तयोः राशिनवांशस्थे धर्मस्य द्विरसांशके ।
गुरुद्रेष्काणभे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ॥६॥
सुखराशिनवांशस्थे वाहनद्विरसांशके ।
सुखद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ॥७॥

नवम भाव की राशि या नवांश में वा नवम भाव के द्वादशांश में ग्रह हो अथवा गुरु की द्रेष्काण में हो तो उसका अन्तर शुभद होता है॥६॥ सुख भाव के राशि वा नवांश में वा द्वादशांश का सुख भाव के द्रेष्काण में हो तो उसका अन्तर शुभद होता है॥७॥

विलग्ननाथस्थितमांशनाथे मित्रांशगे मित्रखगेन दृष्टे।
सुहृद्दृक्काणस्य नवांशके वा तदास्य भुक्तिं शुभदा वदंति॥८॥

लग्नेश जिस राशि नवांश में है उसका स्वामी अपने मित्र के नवांश में हो और मित्र ग्रह से देखा जाता हो अथवा अपने मित्र के द्रेष्काण वा नवांश में हो तो उसका अन्तर शुभद होता है॥८॥

अथ वक्ष्ये विशेषेण दशा कष्टप्रदा नृणाम् ।
षष्ठाष्टमव्ययेशानां दशा कष्टप्रदायिनी ॥९॥

अब विशेषतः कष्टप्रद दशा और अन्तर को कह रहा हूँ। ६।८।१२ भावों के स्वामियों की दशा कष्टप्रद होती है॥९॥

एषां भुक्तिर्हि कष्टा स्यान्मारकस्य दशा यदि ।
मारकेशेन षष्ठेशे युक्ते लग्नाधिपे यदि ॥१०॥
तस्य भुक्तौ ज्वरप्राप्तिं प्राहुः कालविदो जनाः ।
सरोगेशशरीरेशश्चन्द्रषड्वर्गगो यदि ॥११॥

यदि ये मारकेश की दशा में हों तो इनका अन्तर भी कष्ट देनेवाला होता है। मारकेश से लग्नेश युत हो तो॥१०॥ इसके अन्तर में ज्वर होता है। षष्ठेशयुक्त लग्नेश चन्द्रमा के वर्ग में हो तो॥११॥

जलदोषस्तस्य भुक्तौ स्यादजीर्णो न संशयः ।
षष्ठेशयुतलग्नेशो बुधोषड्वर्गगो यदि ॥१२॥

इसके अन्तर में जलंधर या अजीर्ण रोग से कष्ट होता है॥१२॥

तस्य भुक्तौ भवेद्वायुर्वातो वा देहजाड्यकृत् ।
सारिनाथविलग्नेशो गुरु षड्वर्गगो यदि ॥
तस्य भुक्तौ भवेद्रोगः पीडा वा ब्राह्मणेन तु ॥१३॥

षष्ठेश से युत लग्नेश बुध के षड्वर्ग में हो तो॥१३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सषष्ठेशः विलग्नेशो भृगु षड्वर्गगो यदि ।
तस्य भुक्तौ भवेत्पीडा रोगस्त्रीसंगमेन च ॥ १४ ॥
सरोगेशविलग्नेशः शनिषड्वर्गगो यदि ।
तस्य भुक्तौ भवेद्वातः सन्निपातोऽथवा नृणाम् ॥ १५ ॥

इसके अन्तर में वायु वा वात से शरीर जकड़ जाता है। षष्ठेश से युत लग्नेश गुरु के षड्वर्ग में हो तो इसके अन्तर में रोग वा ब्राह्मण से पीड़ा होती है। षष्ठेश से युक्त लग्नेश शुक्र के षड्वर्ग में हो तो इसके अन्तर में पीड़ा या स्त्रीप्रसंग से रोग होता है॥ १४ ॥ रोगेश से युत लग्नेश शनि के षड्वर्ग में हो तो इसके अन्तर में वातरोग वा सन्निपात रोग होता है॥ १५ ॥

मृत्युस्थितैः सैंहिकमन्दकेतुभिर्मनोह्विकाश्वासविपूचिकाभिः ।
रोगो नराणामथ तस्य भुक्तौ भवेद्य मारकसंयुतिश्च ॥ १६ ॥

यदि आठवें भाव में राहु, शनि, केतु और मारकेश से युत हो तो इनके अन्तर में कास-श्वास रोग वा विपूचिका होता है॥ १६ ॥

एवं भ्रात्रादिभावानां नायको यत्र संस्थितः ।
तत्तत्षड्वर्गयोगेन तत्तद्भावफलं वदेत् ॥ १७ ॥

भ्रातृ आदि स्थानों के स्वामी और उनके षड्वर्ग के अनुसार उनकी दशा के अन्तर में उनके फलों को कहना चाहिये॥ १७ ॥

उच्चक्षेत्रगते सूर्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वदाये च स्वभुक्तौ च धनधान्यादिलाभकृत् ॥ १८ ॥
देहरोगं वित्तलाभं राजप्रीतिकरं शुभम् ।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याद् विवाहं राजदर्शनम् ॥ १९ ॥

यदि सूर्य अपने उच्च राशि में अथवा अपनी राशि में होकर केन्द्र वा त्रिकोण में हो तो उसकी दशा व अन्तर में धन-धान्य का लाभ होता है॥ १८ ॥ देह में रोग, धन का लाभ, राजा से प्रीति होती है, सभी कार्य और धन की सिद्धि, विवाद और राजा का दर्शन होता है॥ १९ ॥

द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत् ॥
सूर्यप्रीतिकरीं शान्तिं कुर्यादारोग्यप्राप्तये ॥ २० ॥

यदि सूर्य दूसरे और सातवें भाव का स्वामी हो तो उसकी दशा और अन्तर में अकाल मृत्युभय होता है। अनिष्ट फल की शान्ति के लिए मृत्युञ्जय मन्त्र का जप और सूर्य के प्रसन्नार्थ शान्ति करने से आरोग्यता होती है॥ २० ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्यस्यात्रर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
विवाहं शुभकार्यं च धनधान्यसमृद्धिकृत् ॥२१॥
गृहक्षेत्राभिवृद्धिं च शुवाहनसम्पदाम् ।
तुङ्गे वा स्वर्क्षगे वापि दारसौख्यं धनागमम् ॥२२॥

सूर्य की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में बैठे हुए चन्द्रमा के अन्तर में विवाह, शुभ कार्य, धन, धान्य और समृद्धि का लाभ॥ २१॥ गृह क्षेत्र की वृद्धि, पशु वाहन, और सम्पत्ति की वृद्धि होती है॥ २२॥

पुत्रलाभसुखं चैव सौख्यं राजसमागमम् ।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहम् ॥२३॥
क्षीणे वा पापसंयुक्ते दारपुत्रादिपीडनम् ।
वैषम्यजनसम्वादं भृत्यवर्गविनाशनम् ॥२४॥

चन्द्रमा अपने उच्च अपनी राशि में हो तो स्त्री का सुख, धन का आगम और महाराज की कृपा से अभीष्ट सिद्ध होता है॥ २३॥ यदि चन्द्रमा क्षीण हो वा पापग्रह से युक्त हो तो उसके अन्तर में स्त्री-पुत्रादि को कष्ट, लोगों से झगड़ा, नौकरों की हानि होती है॥ २४॥

विरोधं राजकलहं धनधान्यपशुक्षयम् ।
षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे जलभीतिं मनोरुजम् ॥२५॥
बन्धनं रोगपीडां च स्थानविच्युतिकारकम् ।
दुःस्थानं चापि चित्तेन दायादजनविग्रहम् ॥२६॥

राजा से कलह, धनधान्य और पशु की हानि होती है। ६।८।१२ भाव में चन्द्रमा हो तो जलभय, मानसिक कष्ट॥ २५॥ बन्धन, रोगपीड़ा, स्थानच्युति, दुष्ट स्थान की यात्रा, दायादों से विग्रह॥ २६॥

निर्धनं कुत्सितान्नं च चौरादिनृपपीडनम् ।
मूत्रकृच्छ्रादिरोगाश्च देहपीडा क्षयो भवेत् ॥२७॥
दायेशाल्लाभभाग्ये च केन्द्रे वा शुभसंयुते ।
भोगभाग्यादिसंतोषदारपुत्रादिवर्धनम् ॥२८॥

निर्धनता, खराब अन्न का भोजन, चोर तथा राजा से पीडा, मूत्रकृच्छ्र (सूजाक) रोग और क्षयरोग से कष्ट होता है॥ २७॥ दशा के स्वामी से ११ वा ९ भाव में चन्द्रमा हो अथवा केन्द्र में वा शुभग्रह से युत हो तो अपने अन्तर में भोग, भाग्य, संतोष, स्त्री आदि की वृद्धि करता है॥ २८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राज्यप्राप्तिं महत्सौख्यं स्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम् ।
विवाहं यज्ञदीक्षां च सुधान्याम्बरभूषणम् ॥ २९ ॥
वाहनं पुत्रपौत्रादिं लभते सुखवर्द्धनम् ।
दायेशाद्रिपुरंध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ॥ ३० ॥

राज्य का लाभ, अपार सुख, स्थान की प्राप्ति, विवाह, यश, दीक्षा, सुन्दर अन्न, वस्त्र, आभूषण ॥ २९ ॥ वाहन और पुत्र-पौत्रादिजन्य सुख को देता है। दशेश से ६।८।१२ भाव में चन्द्रमा हो और निर्बल हो तो ॥ ३० ॥

अकाले भोजनं चैव देशादेशं गमिष्यति ।
द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युर्भविष्यति ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याच्छान्तिं कुर्यात्सुखं लभेत् ॥ ३१ ॥

उसके अन्तर में असमय भोजन, एक देश से दूसरे देश की यात्रा होती है। यदि चन्द्रमा २।७ भाव का स्वामी हो तो अकाल मृत्यु होती है। शान्ति के लिए सफेद गौ और भैंस का दान करने से सुख की प्राप्ति होती है ॥ ३१ ॥

अथ रविदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

सूर्यस्थान्तर्गते भौमे स्वोच्चे स्वक्षेत्रलाभगे ।
लग्नात्केन्द्रत्रिकोणे वा शुभकार्यं शुभादिकम् ॥ ३२ ॥

सूर्य की दशा में अपने उच्च वा अपनी राशि में गया हुआ लग्न से ११ भाव वा केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुए भौम का अन्तर हो तो शुभ कार्य ॥ ३२ ॥

भूलाभं कृषिलाभं च धनधान्यादिवृद्धिदम् ।
गृहक्षेत्रादिलाभं च रक्तवस्त्रादिलाभकृत् ॥ ३३ ॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते सौख्यं राजप्रियं सुखम् ।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभश्चैव भविष्यति ॥ ३४ ॥

भूमि का लाभ, कृषि से लाभ, धनधान्य की वृद्धि, गृह क्षेत्र का लाभ और रक्तवस्त्र आदि का लाभ होता है ॥ ३३ ॥ लग्नेश से युत हो तो सुख और राजा का प्रियपात्र बनाता है। भाग्येश लाभेश से युक्त हो तो लाभ होता है ॥ ३४ ॥

बहुसेनाधिपत्यं च शत्रुनाशं मनोदृढम् ।
आत्मबंधुसुखं चैव भ्रातृवर्धनकं तथा ॥ ३५ ॥
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे पापयुक्ते च वीक्षिते ।
आधिपत्यबलैर्हीने क्रूरबुद्धिं मनोरुजम् ॥ ३६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सेनापति पद का लाभ, शत्रु का नाश, आत्मीय बन्धुओं का सुख और भाइयों की वृद्धि होती है॥ ३५॥ दशा के स्वामी से ६।८ भाव में पापग्रह से युक्त और दृष्ट तथा बलहीन भौम हो तो दुष्टबुद्धि, मानसिक कष्ट॥३६॥

कारागृहे प्रवेशं च निर्गलं बन्धुनाशनम्।
भ्रातृवर्गविरोधं च कर्मनाशमथापि वा॥३७॥
नीचे वा दुर्बले भौमे राजमूलाद्धनक्षयः।
द्वितीयद्यूनन्नाथे तु देहे जाड्यं मनोरुजम्॥३८॥

जेलयात्रा, अनायास बन्धु का नाश, भाइयों से विरोध, कर्म का नाश होता है॥ ३७॥ अपने नीचराशि में दुर्बल भौम हो तो राजा के कोप से धन की हानि होती है। यदि २।७ भाव का स्वामी हो तो देह में जड़ता और मानसिक कष्ट होता है॥ ३८॥

सुब्रह्मजपदानं च अनड्वाहं तथैव च।
शान्तिं कुर्वीत विधिवदायुरारोग्यसिद्धिदम्॥३९॥

इसकी शान्ति के लिए वे पाठ, गायत्री का जप, दान, बैल का दान आदि करने से आयु , आरोग्यता आदि की सिद्धि होती है॥ ३९॥

अथ रविदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

सूर्यस्थान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
आदौ द्विमासपर्यन्तं धननाशं महद्भयम्॥४०॥

सूर्य की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुये राहु की अन्तर्दशा हो तो पहले २ मास पर्यन्त धन का नाश और महाभय होता है।।४०।।

चौरादिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम्।
तत्परं सुखमाप्नोति शुभयुक्ते शुभांशके॥४१॥
देहारोग्यं मनस्तुष्टी राजप्रीतिकरं सुखम्।
लग्नादुपचये राहौ योगकारकसंयुते॥४२॥

चोर तथा फोड़ा आदि का भय, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट होता है। इसके बाद सुख होता है। राहु शुभग्रह से युक्त और शुभग्रह के अंश में हो तो ॥४१॥ शरीरमें आरोग्यता, मनको संतोष, राजा से मित्रता और सुख होता है। लग्न से उपचय (३।६।११)स्थान में योगकारक ग्रह से युक्त हो॥४२॥

दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसन्मानकीर्त्तिदम्।
भाग्यवृद्धिं यशोलाभं दारपुत्रादिपीडनम्॥४३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे कल्याणशोभनम् ।
दायेशात्षष्टरिःफस्थे रंध्रे वा बलवर्जिते ॥४४॥

और दशेश से शुभ स्थान में हो तो राजा से सम्मान और कीर्ति में वृद्धि, भाग्यवृद्धि, यश का लाभ, स्त्री-पुत्रादि को पीड़ा॥ ४३॥ पुत्रोत्सव आदि उत्सव गृह में होते हैं। दशेश से ६।१२।८ भाव में राहु हो और निर्बल हो तो॥ ४४॥

बंधनं स्थाननाशश्च कारागृहनिवेशनम् ।
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिवर्द्धनम् ॥४५॥
चतुष्पाज्जीवनाशश्च गृहक्षेत्रादिनाशनम् ।
गुल्मक्षयादिरोगश्च अतिसारादिपीडनम् ॥४६॥

बन्धन, स्थान हानि, जेलखाना, चोर, सर्प, फोड़ा से भय, स्त्री-पुत्रादि का सुख॥ ४५॥ चौपाये जानवर की हानि, गृह क्षेत्र की हानि, गुल्म, क्षय और अतिसार रोग से पीड़ा होती है॥ ४६॥

द्विसप्तस्थे तथा राहौ तत्स्थानाधिपसंयुते ।
अपमृत्युभयं चैव सर्वभीतिश्च सम्भवेत् ॥४७॥
दुर्गाजपं च कुर्वीत छागदानं समाचरेत् ।
कृष्णगां महिषीं दद्याच्छान्तिमाप्नोत्यसंशयम् ॥४८॥

२।७ भाव में इन स्थानों के स्वामी से युत राहु हो तो अपमृत्यु का भय तथा अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ता है॥ ४७॥ इसकी शांति के लिये दुर्गापाठ, बकरी, काली गौ, भैंस का दान करना चाहिये। इससे आराम होता है॥ ४८॥

रविदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्-

सूर्यस्थान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चमित्रस्य वर्गस्थे विवाहं राजदर्शनम् ॥४९॥
धनधान्यादिलाभं च पुत्रलाभं महत्सुखम् ।
महाराजप्रसादेन इष्टकामार्थलाभकृत् ॥५०॥

सूर्य की दशा में अपने उच्च वा अपने मित्र के वर्ग में स्थित केन्द्र वा त्रिकोण में रहने वाले गुरु के अन्तर में विवाह एवं राजा का दर्शन होता है॥ ४९॥ धन, धान्य का लाभ, पुत्र सुख, बड़ा सुख, राजा की प्रसन्नता से इष्ट कार्य, धन का लाभ॥ ५०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ब्राह्मणप्रियसन्मानं प्रियवस्त्रादिलाभकृत् ।
भाग्यकर्माधिपवशाद्राज्यलाभं महोत्सवम् ॥५१॥
नरवाहनयोगश्च स्थानाधिक्यं महत्सुखम् ।
दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्यवृद्धिः सुखावहा ॥५२॥

ब्राह्मण और मित्रों से सम्मान, प्रिय वस्त्रादि का लाभ होता है। भाग्येश और कर्मेश हो तो राज्य का लाभ, बड़ा उत्सव॥५१॥ मनुष्य की सवारी (पालकी), स्थान लाभ और सुख होता है। दशेश से शुभ राशि में हो तो भाग्यवृद्धि, सुख॥५२॥

दानधर्मक्रियायुक्तो देवताराधनप्रियः ।
गुरुभक्तिः मनःसिद्धिः पुण्यकर्मादिसंग्रहः ॥५३॥
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे नीचे वा पापसंयुते ।
दारपुत्रादिपीडा च देहपीडा महद्भयम् ॥५४॥

दान आदि धार्मिक क्रिया में प्रवृत्ति, देवता का आराधन, गुरु की भक्ति और पुण्य कर्मों का संग्रह होता है॥५३॥ दशेश से ६।८ स्थान में अपने नीचराशि में पापग्रह से युत हो तो स्त्री-पुत्र आदि को पीड़ा, शरीर में पीड़ा, बड़ा भय॥५४॥

राजकोपं प्रकुरुते इष्टवस्तुविनाशनम् ।
पापमूलाद् द्रव्यनाशं देहभ्रष्टं मनोरुजम् ॥५५॥
स्वर्णदानं प्रकुर्वीत इष्टजाप्यं च कारयेत् ।
गवां कपिलवर्णानां दानेनारोग्यमादिशेत् ॥५६॥

राजकोप, इष्टवस्तु का नाश, पापमूल से धन का नाश, देह में कष्ट और मानसिक कष्ट होता है॥५५॥ शान्ति के लिये सोना का और कपिला गौ का दान करना चाहिये, इष्टदेव (गुरु) का जप कराने से आरोग्यता की प्राप्ति होती है॥५६॥

अथ रविदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

सूर्यस्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
शत्रुनाशं महत्सौख्यं स्वल्पधान्यार्थलाभकृत् ॥५७॥
विवाहोत्सवकार्याणि शुभकार्यं शुभावहम् ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे सुहृद्ग्रहसमन्विते ॥५८॥

सूर्य की दशा में लग्न से केन्द्र त्रिकोण में गये हुए शनि के अंतर में शत्रुओं का नाश, सुख, अल्प धन-धान्य आदि का लाभ॥५७॥ विवाहोत्सव आदि

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कार्य, शुभ क्रियायें होती है। यदि शनि अपने उच्च, अपनी राशि में हो, अपने मित्र ग्रह से युत हो तो॥ ५८॥

गृहे कल्याणसम्पत्तिर्विवाहादि च सत्क्रियाम्।
राजसन्मानकीर्त्तिश्च नानावस्त्रधनागमः॥ ५९॥
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
वातशूलमहाव्याधि - ज्वरातीसारपीडनम्॥ ६०॥

गृह में कल्याण, सम्पत्ति, विवाहादि, अच्छी क्रियायें, राजा से सम्मान, कीर्ति और अनेक प्रकार के वस्त्र तथा धन का लाभ होता है॥ ५९॥ दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो तो वात, शूल, महाव्याधि, ज्वर, अतिसार की पीड़ा॥ ६०॥

बन्धनं कार्यहानिश्च वित्तनाशं महद्भयम्।
अकस्मात्कलहश्चैव दायादजनविग्रहम्॥ ६१॥
भुक्त्यादौ मित्रहानिः स्यान्मध्ये किंचित्सुखावहम्।
अन्ते क्लेशकरं चैव नीचे तेषां तथैव च॥ ६२॥

बन्धन, कार्य की हानि, धन का नाश, बड़ा भय, अकस्मात् झगड़ा, दायादों से विग्रह होता है॥ ६१॥ अन्तर के आदि में मित्रों की हानि, मध्य में कुछ सुख और अन्त में क्लेश होता है, इसी प्रकार नीच राशि में रहने से भी होता है॥ ६२॥

पितृमातृवियोगं च गमनागमनं तथा।
द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युभयं भवेत्॥ ६३॥
कृष्णां गां महिषीं दद्यान्मृत्युञ्जयजपं चरेत्।
छागदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥ ६४॥

यदि शनि २।७ भावों का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। पिता-माता का वियोग और आना-जाना लगा रहता है॥ ६३॥ शान्ति के लिए काली गौ, भैंस का दान करना चाहिये और मृत्युञ्जय का जप कराना चाहिये और बकरी का दान करने से सभी सुख का लाभ होता है॥ ६४॥

अथ रविदशायां बुधान्तर्दशाफलम्-

सूर्यस्यान्तर्गते सौम्ये स्वोच्चे वा स्वर्क्षगेऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणलाभस्थे बुधे वर्गबलैर्युते॥ ६५॥

सूर्य की दशा में अपने उच्च राशि वा अपनी राशि में केन्द्र वा त्रिकोण वा ११में गये हुये अपने वर्ग में बली बुध के अन्तर में॥ ६५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राज्यलाभं महोत्साहं दारपुत्रादिसौख्यकृत् ।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ॥६६॥

राज्य का लाभ, बड़ा उत्साह, स्त्री-पुत्रादि को सुख, राजा की प्रसन्नता से वाहन, वस्त्र आभूषण॥ ६६॥

पुण्यतीर्थकलावाप्तिर्गृहे गोधनसंकुलम् ।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभवृद्धिकरो भवेत् ॥६७॥

पुण्य तीर्थ, कला के ज्ञान की प्राप्ति, गृह में गोधन की वृद्धि होती है। यदि ६।११ भाव के स्वामी से युत हो तो लाभ में वृद्धि करता है॥ ६७॥

भाग्यपंचमकर्मस्थे सन्मानो भवति ध्रुवम् ।
स्वकर्मधर्मबुद्धिश्च गुरुपितृद्विजार्चनम् ॥६८॥

यदि बुध ९।५।१० भाव में हो तो सम्मान होता हैं। अपने धर्म-कर्म में वृद्धि, गुरु, पिता ब्राह्मण का पूजन॥ ६८॥

धनधान्यादिसंयुक्तं विवाहं पुत्रसम्भवम् ।
दायेशाच्छुभराशिस्थे सौम्यभुक्तौ महत्सुखम् ॥६९॥
वैवाहिकं यज्ञकर्म दानधर्मजपादिकम् ।
स्वनामांकितपद्यानि नामद्वयमथापि वा ॥७०॥

धन, धान्य से युक्त, विवाह और पुत्र का लाभ होता है। दशेश से शुभ राशि में हो तो बड़ा सुख॥ ६९॥ वैवाहिक यज्ञ, धर्म, जप आदि होते हैं, नामांकित पद्य बनते हैं॥ ७०॥

भोजनाम्बरभूषाप्तिरमरेशो भवेन्नरः ।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे रिष्फगे नीचगेऽपि वा ॥७१॥

भोजन-वस्त्र की प्राप्ति और इन्द्र के समान सुख देता है। दशेश ६।८।१२ भाव में वा नीचराशि में हो तो॥ ७१॥

देहपीडा मनस्तापो दारपुत्रादिपीडनम् ।
भुक्त्यादौ दुःखमाप्नोति मध्ये किञ्चित्सुखावहम् ॥७२॥

शरीर में पीड़ा, मन में सन्ताप, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट होता है तथा अन्तर के आरम्भ में दुःख, मध्य में कुछ सुख।।७२।।

अन्ते तु राजभीतिश्च गमनागमनं तथा ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं ज्वरादिकम् ॥७३॥

और अन्त में राजभय और गमनागमन होता है। २।७ भाव के स्वामी हो तो देह में जड़ता और ज्वर आदि से कष्ट होता है॥ ७३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विष्णुनामसहस्रं च ह्यन्नदानं च कारयेत् ।
रजतप्रतिमादानं कुर्यादारोग्य - प्राप्तये ॥७४॥

आरोग्यता के लिये विष्णुसहस्र नाम स्तोत्र का पाठ, अन्नदान और चाँदी की प्रतिमा का दान करना चाहिये॥७४॥

अथ रविदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

सूर्यस्यान्तर्गते केतौ देहपीडा मनोव्यथा ।
अर्थव्ययं राजकोपं स्वजनादिरुपद्रवम् ॥७५॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते आद्ये सौख्यं धनागमम् ।
मध्ये तत्क्लेशमाप्नोति मृतवार्तागमं वदेत् ॥७६॥

सूर्य की दशा में केतु के अन्तर में शरीर में पीड़ा, मन में कष्ट, धन का व्यय, राजभय, अपने ही लोगों से उपद्रव होता है॥७५॥ लग्नेश से युत हो तो पहले सुख, धन का लाभ होता है, मध्य में उन्हीं क्लेशों को पाता है और अन्त में मरण सन्देश को सुनता है॥७६॥

षष्ठाष्टमव्यये चैवं दायेशात्पापसंयुते ।
कपोलदंतरोगश्च मूत्रकृच्छ्रस्य संभवम् ॥७७॥

दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो तो कपोल और दांत का रोग और मूत्रकृच्छ्र रोग की संभावना होती है॥७७॥

स्थानविच्युतिरर्थस्य मित्रहानिः पितुर्मृतिः ।
विदेशगमनं चैव शत्रुपीडा महद्भयम् ॥७८॥

स्थान और धन की हानि, मित्र की हानि, पिता की मृत्यु, विदेशयात्रा, शत्रुपीड़ा और बड़ा भय होता है॥७८॥

लग्नादुपचये केतौ योगकारकसंयुते ।
शुभांशे शुभवर्गे च शुभकर्म फलप्रदम् ॥७९॥

लग्न से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में केतु योगकारक ग्रह से युत हो, शुभांश में शुभ राशि में हो तो शुभकर्म होते हैं॥७९॥

पुत्रदारादिसौख्यं च सन्तोषं प्रियवर्द्धनम् ।
विचित्रवस्त्रलाभं च यशोवृद्धिः सुखावहा ॥८०॥

पुत्र-स्त्री आदि को सुख, संतोष और प्रिय वस्तुओं की वृद्धि, विचित्र वस्त्रों का लाभ, यश की वृद्धि और सुख होता है॥८०॥

द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युभयं वदेत् ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दुर्गाजपं च कुर्वीत छागदानं तथैव च।
महामृत्युंजयजपं कुर्याच्छान्तिमवाप्नुयात् ॥८१॥

द्वितीयेश वा सप्तमेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। शान्ति के लिये दुर्गापाठ, बकरी का दान और महामृत्युंजय का जप कराना चाहिये॥ ८१॥

अथ रविदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्-

सूर्यस्यान्तर्गते शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
स्वोच्चे मित्रस्ववर्गस्थे हृष्टस्त्री-भोगसम्पदाम् ॥८२॥
ग्रामान्तरप्रयाणं च ब्राह्मणप्रभुदर्शनम्।
राज्यलाभं महोत्साहं छत्रचामरवैभवम् ॥८३॥

सूर्य की दशा में त्रिकोण वा केन्द्र में गये हुए वा अपने उच्च वा मित्र वा अपने वर्ग में गये हुये शुक्र के अन्तर में प्रसन्न स्त्री का भोग, सम्पत्ति॥ ८२॥ ग्रामांतर की यात्रा, ब्राह्मण, राजा का दर्शन, राज्य का लाभ, महा-उत्सव, छत्र, चामर आदि वैभव का लाभ॥ ८३॥

गृहे कल्याणसम्पत्तिर्नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
विद्रुमादिरत्नलाभं मुक्तावस्त्रादिलाभकृत् ॥८४॥

गृह में नित्य कल्याण और सम्पत्ति तथा मिष्ठान्न का भोजन होता है। मूँगा आदि रत्न का लाभ, मोती, वस्त्र का लाभ॥ ८४॥

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद्बहुधान्यधनादिकम्।
उत्साहं कीर्त्तिसम्पत्तिर्नरवाहनसम्पदाम् ॥८५॥

चतुष्पद जीव का लाभ, बहुत धन, धान्य का लाभ, उत्साह, कीर्ति, सम्पत्ति, मनुष्य को सवारी का लाभ होता है॥ ८५॥

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे दायेशाद्बलवर्जिते।
राजकोपं मनःक्लेशं पुत्रस्त्रीधननाशनम् ॥८६॥

दशेश से ६।८।१२वें शुक्र हो और निर्बल हो तो राजकोप, मन में कष्ट, पुत्र, स्त्री और धन का नाश होता है॥ ८६॥

भुक्त्यादौ मध्यमं मध्ये लाभः शुभकरो भवेत्।
अन्ते यशोनाशनं च स्थानभ्रंशमथापि वा ॥८७॥

अन्तर के आरम्भ में मध्यम फल, मध्य में लाभ और शुभ तथा अन्त में यश की हानि, स्थान की हानि होती है॥ ८७॥

बन्धुद्वेषमनन्तं च स्वकुलाद्रोगनाशनम्।
भार्गवि द्यूननाथे तु देहे जाड्यं मनोरुजम् ॥८८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रन्ध्ररिष्फसमायुक्ते अपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्रुद्राप्यं च कारयेत् ॥८९॥

बन्धुओं से द्वेष, अपने ही कुल से सुख की हानि होती है, शुक्र सातवें भाव का स्वामी हो तो देह में जड़ता होती है और मानसिक कष्ट होता है॥ ८८॥ यदि ८।१२ वें में हो तो अपमृत्यु का भय होता है। शान्ति के लिए सफेद गौ, भैंस का दान, मृत्युजंय का और रुद्राध्यायी का जप कराना चाहिये। ८९।

इति सूर्यान्तर्दशाफलम्।

अथ चन्द्रदशायां चन्द्रातर्फलम्-

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चन्द्रे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते गोऽजाश्वाम्बरसंकुलम् ॥९०॥
देवतागुरुभक्तिश्च पुण्यश्लोकादिकीर्त्तनम् ।
राज्यलाभं महत्सौख्यं यशोवृद्धिः सुखावहा ॥९१॥

चन्द्रमा की दशा में उच्चराशि वा अपनी राशि में गये हुये केन्द्र वा त्रिकोण में या लाभस्थानगत भाग्येश कर्मेश से युक्त चन्द्रमा का अन्तर हो तो गौ, बकरी, घोड़ा वस्त्र का लाभ॥ ९०॥ देवता, गुरु की भक्ति, पुण्यप्रद श्लोकों का पाठ, राज्यलाभ, सुख, यश में वृद्धि होती है॥ ९१॥

पूर्णचन्द्रे पूर्णबले सेनाधिपमहत्सुखम् ।
पापयुक्तेऽथवा चन्द्रे नीचे वा रिष्फषष्ठगे ॥९२॥
तत्काले धननाशः स्यात्स्थानच्युतिमथापि वा ।
देहालस्यं मनस्तापं राजमन्त्रिविरोधकृत् ॥९३॥

चन्द्रमा पूर्ण हो और पूर्णबली हो तो सेनाधिपति जैसा अधिकार और बड़ा सुख होता है॥ चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो या नीच राशि में हो वा १२।८ भाव में हो तो॥ ९२॥ धन का नाश और स्थानच्युति, देह में आलस्य, मन में सन्ताप, राजमन्त्री से विरोध॥ ९३॥

मातृक्लेशं मनोदुःखं निगडं बन्धुनाशनम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्ररिष्फसमन्विते ॥९४॥

माता को कष्ट, दुख, बंधन और बन्धुओं की हानि होती है। २ वा ७ भाव का स्वामी हो और ८ या १२ भाव में हो तो॥ ९४॥

देहजाड्यं महाभङ्गमपमृत्योर्भयं भवेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यता भवेत् ॥९५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शरीर में जड़ता और अपमृत्यु का भय होता है। आरोग्यता के लिये सफेद गौ, भैंस का दान करना चाहिये॥ ९५॥

अथ चन्द्रदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

चन्द्रस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
सौभाग्यं राजसन्मानं वस्त्राभरणभूषणम्॥ ९६॥
यत्नात्कार्यार्थसंसिद्धिःभविष्यति न संशयः।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च व्यवहारे जयो भवेत्॥ ९७॥

चन्द्रमा की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुये भौम के अन्तर में सौभाग्य, राजा से सम्मान, वस्त्र, आभूषण का लाभ॥ ९६॥ प्रयत्न से कार्य और धन का लाभ होता है। गृह, खेत की वृद्धि, व्यवहार में विजय॥ ९७॥

कार्यलाभं महत्सौख्यं स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे फलम्।
षष्ठाष्टमव्यये भौमे पापयुक्तेऽथवा यदि॥ ९८॥
दायेशादशुभस्थाने देहार्त्तिः शत्रुवीक्षिते।
गृहक्षेत्रादिहानिश्च व्यवहारे तथैव च॥ ९९॥

कार्य में लाभ, बड़ा सुख होता है, यदि भौम अपने उच्च वा अपनी राशि में हो, भौम ६।८।१२ भाव में पापग्रह से॥ ९८॥ अथवा दशेश से अशुभ स्थान में हो, शत्रु से देखा जाता हो तो शरीर में पीड़ा, गृह, खेती आदि की हानि, व्यवहार में भी हानि॥ ९९॥

भृत्यवर्गेषु कलहं भूपालस्य विरोधनम्।
आत्मबन्धुवियोगं च नित्यं निष्ठुरभाषणम्॥ १००॥
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्रे रन्ध्राधिपो यदा।
तद्दोषपरिहारार्थं ब्राह्मणस्यार्चनं चरेत्॥ १०१॥

नौकरों से कलह, राजा से विरोध, अपने कुटुम्बियों से विक्षोभ और नित्य निष्ठुर वचन सुनने को मिलता है॥ १००॥ यदि २।१२ भावों का स्वामी हो और अष्टमेश अष्टम में हो तो इस दोष की शान्ति के लिये ब्राह्मण का पूजन करना चाहिये॥ १०१॥

अथ चन्द्रदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

चन्द्रस्यान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
आदौ स्वल्पफलं ज्ञेयं शत्रुपीडा महद्भयम्॥ १०२॥
चौराहिराजभीतिश्च चतुष्पाज्जीवपीडनम्।
बन्धूनांश मित्रहानिं मानहानिं मनोव्यथाम्॥ १०३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रमा की दशा में लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में गये हुए राहु के अन्तर में पहले अल्प फल होता है, शत्रुपीड़ा, भय, चोर, सर्प और राजभय होता है॥ १०२॥ चौपायों को कष्ट, बन्धुओं की हानि, मित्र की हानि, मानहानि, राजभय और मन में कष्ट होता है॥ १०३॥

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नादुपचयेऽपि वा।
योगकारकसम्बन्धे इष्टकार्यार्थसिद्धिदम्॥ १०४॥
नैर्ऋत्ये पश्चिमे भागे क्वचित्प्रभुसमागमः।
वाहनाम्बरलाभं च इष्टकार्यार्थसिद्धिकृत्॥ १०५॥

राहु शुभग्रह से युक्त शुभग्रह से दृष्ट हो और लग्न से ३।६।१०।११ भाव में हो, योगकारक से सम्बन्ध करता हो तो अभीष्ट कार्य और धन का लाभ होता है॥ १०४॥ नैर्ऋत्य वा पश्चिम दिशा में किसी श्रेष्ठ से समागम, वाहन, वस्त्र का लाभ, इष्टसिद्धि होती है॥ १०५॥

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते।
स्थानभ्रष्टं मनोदुःखं पुत्रक्लेशं महद्भयम्॥ १०६॥
राजकार्यप्रलापं च दारपीडा महद्भयम्।
वृश्चिकादिविषाद् भीतिश्चौराहिनृपपीडनम्॥ १०७॥

दशेश से ६।८।१२ भाव में निर्बल हो तो स्थानभ्रष्ट, मन में दुःख, पुत्र को कष्ट, भय॥ १०६॥ राजकार्य में प्रलाप, स्त्री को कष्ट, महाभय, बिच्छू आदि के विष का भय, चोर, सर्प, राजा से पीड़ा होती है॥ १०७॥

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
पुण्यतीर्थकलावाप्तिर्देवतादर्शनं महत्॥ १०८॥
परोपकारकर्मादि - पुण्यधर्मादिसंग्रहः।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहबाधा भविष्यति।
छागदानं प्रकुर्वीत देहारोग्यं प्रजायते॥ १०९॥

दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण वा ३।११ भाव में राहु हो तो पुण्यतीर्थ, कला का लाभ, देवता का दर्शन होता है, धर्म आदि के संग्रह होते है।।१०८।। २ वा ७ भाव में हो तो शरीर को कष्ट होता है। इसकी शान्ति के लिये बकरी का दान करना चाहिये॥ १०९॥

अथ चन्द्रदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्-

चन्द्रस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वगेहे लाभस्वोच्चे वा राज्यलाभं महोत्सवम्॥ ११०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वस्त्रालङ्कारभूषादिं राजप्रीतिं धनागमम् ।
इष्टदेवप्रसादेन गर्भाधानादिकं फलम् ॥ १११ ॥

चन्द्र की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुए स्वगृह, लाभ स्थान वा अपने उच्च में गये हुए गुरु के अन्तर में राज्य का लाभ, बड़ा उत्सव ॥ ११० ॥ वस्त्र, आभूषण, राज्य प्राप्ति, राजा की प्रसन्नता से धन का लाभ, इष्टदेव की प्रसन्नता से गर्भाधानादि फल होते हैं ॥ १११ ॥

शुभशोभनकार्याणि गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ।
राजाश्रयं धनं भूमिं गजवाजिसमन्वितम् ॥ ११२ ॥

और राजा की प्रसन्नता से सुखकर इष्टसिद्धि होती है। शुभ शोभन कर्म, लक्ष्मी का लाभ, राजा के आश्रय से धन, भूमि आदि का लाभ ॥ ११२ ॥

महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहा ।
षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि ॥ ११३ ॥
पापयुक्तेऽशुभं कर्म गुरुपुत्रादिनाशनम् ।
स्थानभ्रंशं मनोदुःखमकस्मात्कलहं ध्रुवम् ॥ ११४ ॥

६ । ८ । १२ भाव में गुरु हों वा नीच राशि में वा अस्त हों वा पापयुक्त हों तो ॥ ११३ ॥ अशुभ कार्य, माता-पिता-पुत्र का नाश, स्थान की हानि मन को दुःख, अकस्मात् कलह होता है ॥ ११४ ॥

गृहक्षेत्रादिनाशं च वाहनाम्बरनाशनम् ।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ॥ ११५ ॥
करोति कुत्सितान्नं च विदेशगमनं तथा ।
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तमन्ते क्लेशकरं भवेत् ॥ ११६ ॥

गृह-भूमि की हानि, वाहन की हानि होती है। दशेश से ६ । ८ । १२ वें में निर्बल हो तो ॥ ११५ ॥ खराब अन्न का भोजन, विदेशयात्रा होती है, अन्तर में आदि में शुभफल और अन्त में कष्टकारक होता है ॥ ११६ ॥

द्वितीयद्यूननाथे च ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ॥ ११७ ॥
स्वर्णदानमिति प्रोक्तं सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ॥ ११८ ॥

दूसरे वा सप्तम का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इस दोष की शान्ति के लिए शिव सहस्र नाम का जप करना चाहिए ॥ ११७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुवर्ण का दान करने से सभी सम्पत्तियों का लाभ होता है। दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण वा तीसरे या लाभ स्थान में हो तो॥ ११८॥

भोजनाम्बरपश्वादि - महोत्साहं करोति च।
भ्रात्रादिसुखसम्पत्तिर्धैर्यं वीर्यपराक्रमम्॥ ११९॥

भोजन, वस्त्र आदि का लाभ, बड़ा उत्सव होता है। भाई आदि से सुख, सम्पत्ति, धैर्य, बल और पराक्रम में वृद्धि॥ ११९॥

यज्ञदीक्षा विवाहश्च राज्यश्रीधनसम्पदः।
चन्द्रस्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे॥ १२०॥

यज्ञ, दीक्षा, विवाह, राज्य, लक्ष्मी आदि की प्राप्ति होती है, चन्द्रमा की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुए हों तो॥ १२०॥

अथ चन्द्रदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

स्वर्क्षे वा स्वांशगे चैव मन्दे तुङ्गांशगेऽथवा।
शुभदृष्टियुते वापि लाभे वा बलसंयुते॥ १२१॥

अपनी राशि वा अपने नवांश वा अपने उच्चांश में गये हुए शुभग्रह से दृष्ट वा युत ११ भाव में बलवान शनि के अन्तर में॥ १२१॥

पुत्रमित्रार्थसम्पत्तिः शूद्रप्रभुसमागमम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्॥ १२२॥

पुत्र मित्र धन सम्पत्ति का लाभ, शूद्रवर्ण के राजा की संगति, व्यवसाय से लाभ, गृह, भूमि का लाभ॥ १२२॥

पुत्रलाभं च कल्याणं राजानुग्रहवैभवम्।
षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा धनगेऽपि वा॥ १२३॥
तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थे स्नानं चैव तु दर्शनम्।
अनेकजनत्रासश्च शस्त्रपीडा भविष्यति॥ १२४॥

पुत्र का लाभ, कल्याण तथा राजा के अनुग्रह से वैभव का लाभ होता है। ६।८।१२ स्थान में अपने नीच राशि वा २ रे भाव में शनि हो तो॥ १२३॥ उसके अन्तर के आरम्भ में पुण्यतीर्थ का स्नान और दर्शन होता है। अनेक लोगों का भय तथा हथियार से पीड़ा होती है॥ १२४॥

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे बलगेऽपि वा।
क्वचित्सौख्यं धनाप्तिश्च दारपुत्रविरोधकृत्॥ १२५॥
द्वितीयद्यूनरन्ध्रस्थे देहबाधा भविष्यति।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ।
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत् ॥ १२६ ॥

दशेश से केन्द्र या त्रिकोण में बली हो तो कभी सुख, धन का लाभ, तथा स्त्री-पुत्रादि से विरोध होता है॥ १२५॥ २।७।८ भाव में हो तो देह में रोगादि का भय होता है। इसी दोष के शान्त्यर्थ मृत्युञ्जय का जप, काली गौ, भैंस का दान करने से आरोग्यता होती है॥ १२६॥

अथ चन्द्रदशायां बुधान्तर्दशाफलम्-

चन्द्रस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वर्क्षे नवांशके सौम्ये तुङ्गे वा बलसंयुते ॥ १२७ ॥

चन्द्रमा की दशा में अपनी राशि वा अपने नवांश वा अपने उच्च राशि में बलवान् बुध केन्द्र वा त्रिकोण में हो तो उसके अन्तर में॥ १२७॥

धनागमं राजमानं प्रियवस्त्रादिलाभकृत् ।
विद्याविनोदसङ्गोष्ठी ज्ञानवृद्धिः सुखावहा ॥ १२८ ॥

धन का आगमन, राज्यलाभ, प्रियवस्त्रों का लाभ होता है। विद्या विनोद, अच्छी सभा, ज्ञान में वृद्धि, सुख॥ १२८॥

सन्तानप्राप्तिसन्तोषं वाणिज्याद्धनलाभकृत् ।
वाहनच्छत्रसंयुक्तं नानालंकारभूषितम् ॥ १२९ ॥

सन्तान का लाभ, सन्तोष, व्यापार से धन का लाभ, वाहन, छत्र से युक्त अनेक आभूषणों का लाभ होता है॥ १२९॥

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ।
विवाहं यज्ञदीक्षां च दानधर्मशुभादिकम् ॥ १३० ॥
राजप्रीतिकरं चैव विद्वज्जनसमागमम् ।
मुक्तामणिप्रवालानि वाहनाम्बरभूषणम् ॥ १३१ ॥

दशेशसे केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ स्थानमें धन स्थान में बुध हो तो विवाह, यज्ञ, दीक्षा, दान, धर्म आदि शुभकार्य॥१३०॥ राजा से प्रेम, विद्वानों का समागम, मुक्ता, मणि, मूँगा, वाहन, वस्त्र, आभूषणका लाभ होता है॥१३१॥

आरोग्यप्रीतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम् ।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा नीचगेऽपि वा ॥ १३२ ॥

आरोग्यता, प्रसन्नता, सुख और सोमपान आदि का लाभ होता है। दशेश से ६।८।१२ भाव में वा अपने नीच राशि में बुध हो तो॥ १३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तद्भुक्तौ देहबाधा च कृषिगोभूमिनाशनम् ।
कारागृहप्रवेशं च दारपुत्रादिपीडनम् ॥ १३३ ॥
द्वितीयद्यूननाथे च ज्वरपीडा महद्भयम् ।
छागदानं प्रकुर्वीत विष्णुसाहस्रकं जपेत् ॥ १३४ ॥

उसके अन्तर में शरीर में बाधा, कृषि, गौ, भूमि का नाश, जेल यात्रा, स्त्री-पुत्र आदि को कष्ट होता है॥ १३३॥ २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो ज्वर से पीड़ा और बड़ा भय होता है। शान्त्यर्थ बकरी का दान और विष्णु सहस्रनाम का जप कराना चाहिए॥ १३४॥

अथ चन्द्रदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

चन्द्रस्यान्तर्गते केतौ केन्द्रलाभ - त्रिकोणगे ।
दुश्चिक्ये बलसंयुक्ते धनलाभं महत्सुखम् ॥ १३५ ॥

चन्द्रमा की दशा में केन्द्र वा त्रिकोण में वा ३ रे भाव में बलवान् केतु के अन्तर में धन का लाभ, बड़ा सुख होता है॥ १३५॥

पुत्रदारादिसौख्यं चमित्रकर्म करोति च ।
भुक्त्यादौ धनहानिः स्यान्मध्यगे सुखमाप्नुयात् ॥ १३६ ॥

पुत्र-स्त्री को सुख, मित्रों के कार्य को करता है। अन्तर में आरंभ में धन की हानि और मध्य में सुख होता है॥ १३६॥

दायेशात्केन्द्रलाभे वा त्रिकोणे बलसंयुते ।
क्वचित्फलं दशादौ तु दारसौख्यं सुखावहम् ॥ १३७ ॥
गोमहिष्यादिलाभं च भुक्त्यन्ते चार्थनाशनम् ।
पापयुक्तेऽथवा दृष्टे दायेशाद्रन्ध्ररिष्फगे ॥ १३८ ॥

दशेश से केन्द्र या एकादश वा त्रिकोण में बलवान् हो तो कभी दशा के आरंभ में ही स्त्री को सुख आदि शुभ फल होते हैं॥ १३७॥ गौ, भैंस आदि का लाभ तथा दशा के अन्त में धन की हानि होती है। पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो और दशेश से २ या १२ भाव में हो तो॥ १३८॥

हीनशत्रुत्वकार्याणि अकस्मात्कलहं ध्रुवम् ।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे अनारोग्यं महद्भयम् ।
मृत्युञ्जयजपं कृत्वा सर्वसम्पत्प्रदायकम् ॥ १३९ ॥

हीन कार्य शत्रुता करने वाले कार्य को करता है और अकस्मात् झगड़ा होता है। २ रे या ७ वें भाव में हो तो कष्ट और बड़ा भय होता है। मृत्युंजय का जप कराने से सब प्रकार के सुख का अनुभव होता है॥ १३९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि राज्यलाभं करोति च ॥ १४० ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में केन्द्र या त्रिकोण वा अपने उच्चराशि, अपने राशि में गये हुए शुक्र का अन्तर हो तो राज्यलाभ होता है॥ १४०॥

महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ।
चतुष्पाज्जीवलाभं स्याद्दारपुत्रादिवर्धनम् ॥ १४१ ॥
नूतनागारनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम् ।
सुगन्धपुष्पदायादिरभ्यस्त्यारोग्यसम्पदाम् ॥ १४२ ॥

महाराजा की प्रसन्नता से वाहन, वस्त्र, आभूषण का लाभ, चतुष्पद जीव का लाभ, स्त्री-पुत्रादि की वृद्धि॥ १४१॥ नूतन-मकान का निर्माण होता है, नित्य मिठाई खाने को प्राप्त होती है। सुगन्धित पुष्प, दायाद, सुन्दर स्त्री, आरोग्यता और सम्पत्ति का लाभ होता है॥ १४२॥

दशाधिपेन संयुक्ते देहसौख्यं महत्सुखम् ।
सत्कीर्तिसुखसम्पत्तिगृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत् ॥ १४३ ॥
धनस्थानगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते ।
निधिलाभं महत्सौख्यं भूलाभं पुत्रसम्भवम् ॥ १४४ ॥

दशेश के साथ शुक्र हो तो देह का सुख, बड़ा हर्ष, अच्छी कीर्ति, सुख-सम्पत्ति का लाभ, गृह, भूमि की वृद्धि होती है॥ १४३॥ यदि शुक्र धन स्थान में अपने उच्चराशि वा अपने राशि में हो तो निधि (गड़ा धन) का लाभ, सुख, भूमि का लाभ, पुत्र का लाभ होता है॥ १४४॥

भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिकरो भवेत् ।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहः ॥ १४५ ॥
देवब्राह्मणभक्तिश्च मुक्ताविद्रुमलाभकृत् ।
दायेशाल्लाभगे शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ॥ १४६ ॥

यदि भाग्येश वा लाभेश से युक्त हो तो भाग्य की वृद्धि करता है। महाराजा की प्रसन्नता से इष्ट की सिद्धि होती है॥ १४५॥ देवता, ब्राह्मण में भक्ति होती है। मोती-मूँगा का लाभ होता है। दशेश से लाभ स्थान में शुक्र हो वा त्रिकोण वा केन्द्र में हो तो॥ १४६॥

गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च वित्तलाभं महत्सुखम् ।
नीचे वास्तंगते शुक्रे पापग्रहयुतेक्षिते ॥ १४७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गृह-भूमि में वृद्धि, धन का लाभ और सुख होता है। यदि शुक्र अपने नीच राशि वा अस्त हो, पापग्रह से युत वा दृष्ट हो॥ १४७॥

भूनाशं पुत्रमित्रादिनाशनं पत्निनाशनम्।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥ १४८॥

तो भूमि का नाश, पुत्र-मित्र आदि का नाश और स्त्री का नाश होता है। दशेश से ६।८।१२ वें पापग्रह से युत हो तो॥ १४८॥

विदेशवासदुःखार्त्तिः मृत्युचौरादिपीडनम्।
द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युभयं भवेत्॥ १४९॥

विदेश में वास, दुःख, पीड़ा, मृत्यु, चौरादि से पीड़ा होती है।। २।७भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है॥ १४९॥

तद्दोषोपशान्त्यर्थं रुद्रजाप्यं च कारयेत्।
श्वेतां गां रजतं दद्याच्छान्तिं प्राप्नोत्यसंशयः॥ १५०॥

इस दोष के शान्त्यर्थ रुद्र जप, सफेद गौ, चांदी का दान करने से निश्चय ही शान्ति प्राप्त होती है॥ १५०॥

अथ चन्द्रदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

चन्द्रस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा धने वा सोदरे बले॥ १५१॥
नष्टराज्य - धनप्राप्तिं गृहे कल्याणशोभनम्।
मित्रराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत्॥ १५२॥

चन्द्रमा की दशामें अपने उच्च या अपने राशि में गये हुए केन्द्र या त्रिकोण या लाभमें वा धन वा तीसरे भाव में बैठे हुये बली सूर्य के अन्तर में॥ १५१॥ नष्ट हुए राज्य और धन का लाभ, गृह में कल्याण का अनुभव होता है तथा मित्र और राजा की प्रसन्नता से ग्राम, भूमि आदि का लाभ॥ १५२॥

गर्भाधानकलत्राप्तिगृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत्।
भुक्त्यन्ते देहजाड्यत्वं ज्वरपीडा भविष्यति॥ १५३॥
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
नृपचौराग्निभीतिश्च ज्वररोगादिसम्भवम्॥ १५४॥

स्त्री की प्राप्ति और गर्भ की संभावना होती है, गृह में लक्ष्मी का वास होता है। दशा के अन्त में शरीर में जड़ता और ज्वर से पीड़ा होती है॥ १५३॥ दशेश से ६।८।१२वें भाव में पापग्रह से युत हो तो राजा, चोर, अग्नि का भय, ज्वर रोग की सम्भावना॥ १५४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विदेशगमनं चार्त्तिः लभते फलवैभवम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ज्वरपीडा भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवपूजां च कारयेत् ॥ १५५ ॥

विदेश यात्रा और कष्ट तथा भय होता है। यदि २।७ भाव का स्वामी हो तो ज्वरपीड़ा होती है। इस दोष के शान्त्यर्थ शिवजी का पूजन करना चाहिये ॥ १५५ ॥

इति चन्द्रान्तर्दशाफलम् ।

अथ भौमदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

कुजस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
लाभे वा धनसंयुक्ते दुश्चिक्ये शुभसंयुते ॥ १५६ ॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते राजानुग्रहवैभवम् ।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत् ॥ १५७ ॥

भौम की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ वा धन वा तीसरे भाव में शुभग्रह से युत ॥ १५६ ॥ वा लग्नेश से युत भौम के अन्तर में राजा की कृपा से वैभव, लक्ष्मी के आगमन का चिह्न, नष्ट हुए राज्य की प्राप्ति ॥ १५७ ॥

पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे गोक्षीरसंकुलम् ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे स्वांशे वा बलसंयुते ॥ १५८ ॥

पुत्रोत्पत्ति का उत्सव, सन्तोष, गृह में गौ, दूध आदि का संग्रह, यदि अपने उच्च वा अपने राशि वा अपने नवांश में बली भौम हो ॥ १५८ ॥

गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गोमहिष्यादिलाभकृत् ।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहा ॥ १५९ ॥

गृह, खेत, भूमि में वृद्धि, गौ, भैंस आदि का लाभ और महाराजा की प्रसन्नता से इष्ट की सिद्धि और सुख होता है ॥ १५९ ॥

षष्ठाष्टमव्यये भौमे पापदृग्योगसंयुते ।
मूत्रकृच्छ्रादिरोगश्च मेहाधिक्यं व्रणाद्भयम् ॥ १६० ॥
चौरादिराजपीडा च धनधान्यपशुक्षयम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरुजम् ॥ १६१ ॥

यदि ६।८।१२ भाव में पापग्रह से दृष्टयुत भौम हो तो मूत्रकृच्छ्र (सुजाक), प्रमेह और फोड़ा से भय ॥ १६० ॥ चोर, सर्प, राजा से कष्ट, धनधान्य और पशु की हानि होती है। द्वितीय, सप्तम का स्वामी हो तो शरीर में जड़ता और मानसिक कष्ट होता है ॥ १६१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तद्दोषपरिहारार्थं रुद्रजाप्यं च कारयेत् ।
अनड्वाहं प्रदद्याच्च कुजदोष - निवृत्तये ।
आरोग्यं कुरुते तस्य सर्वसम्पत्तिदायकम् ॥ १६२ ॥

इस दोष की शान्ति के लिये रुद्रजप करावे, बैल का दान करे इससे भौम के दोष की निवृत्ति होकर शरीर आरोग्य होता है और सभी सम्पत्ति का लाभ होता है॥ १६२॥

अथ भौमदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

भौमस्थान्तर्गते राहौ स्वोच्चे मूलत्रिकोणगे ।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे केन्द्रलाभत्रिकोणगे ॥ १६३ ॥
तत्काले राजसन्मानं गृहभूम्यादिलाभकृत् ।
कलत्रपुत्रलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम् ॥ १६४ ॥

भौम की दशा में अपने उच्च, मूलत्रिकोण में शुभग्रह से युत वा दृष्ट केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुए राहु के अन्तर में।१६३। राजा से सम्मान, गृह, भूमि आदिका लाभ,स्त्री,पुत्रका लाभ तथा रोजगारसे अधिकलाभ होताहै।१६४।

गङ्गास्नानफलावाप्तिं विदेशगमनं तथा ।
षष्ठाष्टमव्यये राहौ पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ॥ १६५ ॥
चौराद्विव्रणभीतिश्च चतुष्पाज्जीवनाशनम् ।
वातपित्तक्षयं चैव कारागृहनिवेशनम् ॥ १६६ ॥

गंगा स्नान का लाभ और विदेश की यात्रा होती है। यदि भौम ६।८। १२ भाव में पापयुक्त वा पापदृष्ट हो तो॥ १६५॥ चोर, फोड़ा आदि का भय, चतुष्पद की हानि, वात, पित्त की हानि, जेल-यात्रा॥ १६६॥

धनस्थानगते राहौ धननाशं महद्भयम् ।
द्वितीये द्यूनगे वापि ह्यपमृत्युभयं महत् ॥ १६७ ॥
नागदानं प्रकुर्वीत देवब्राह्मणभोजनम् ।
मृत्युंजयजपं कुर्यादायुरारोग्य प्राप्तये ॥ १६८ ॥

धन स्थान में राहु हो तो धन का नाश और भय होता है।।२।७ भाव में हो तो अपमृत्यु का भय होता है॥ १६७॥ इसके शान्त्यर्थ नाग के मूर्त्ति का दान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युञ्जय का जप कराना चाहिए॥ १६८॥

अथ भौमदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्-

भौमस्यान्तर्गते जीवे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।
लाभे वा धनसंयुक्ते तुङ्गांशे स्वांशभेऽपि वा ॥ १६९ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सत्कीर्ती राजसन्मानं धनधान्यस्य वृद्धिकृत् ।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिलाभकृत् ॥ १७० ॥

मंगल की दशा में गुरु का अन्तर हो और यदि गुरु त्रिकोण में वा केन्द्र में वा एकादश भाव वा द्वितीय भाव में अपने उच्चांश में वा अपने अंश में हो तो ॥ १६९ ॥ श्रेष्ठ कीर्ति, राजा से सम्मान, धनधान्य की वृद्धि होती है और गृह में कल्याण, सम्पत्ति, स्त्री-पुत्र आदि का लाभ होता है ॥ १७० ॥

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते वाहनाधिपसंयुते ॥ १७१ ॥
लग्नाधिपसमायुक्ते शुभांशे शुभवर्गगे ।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गृहे कल्याणसम्पदः ॥ १७२ ॥

यदि गुरु दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ में भाग्येश कर्मेश से युत हो वा सुखेश से युत हो ॥ १७१ ॥ वा लग्नेश से युत हो, शुभग्रह के अंश में शुभ ग्रह के वर्गमें हो तो गृह क्षेत्र आदि की वृद्धि, गृह में कल्याण, सम्पत्ति । १७२ ।

देहारोग्यं महत्कीर्त्तिर्गेहे गोकुलसंग्रहः ।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम् ॥ १७३ ॥
कलत्रपुत्रविभवं राजसन्मानवैभवम् ।
षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि ॥ १७४ ॥

शरीर में आरोग्यता, महान कीर्त्ति, गौओं की वृद्धि, व्यवसाय करने से अधिक लाभ ॥ १७३ ॥ स्त्री-पुत्रादि का सुख और राजा से सन्मान और वैभव की प्राप्ति होती है। यदि गुरु ६ । ८ । १२ स्थान में अपने नीच राशि में वा अस्तंगत हो ॥ १७४ ॥

पापग्रहेण संयुक्ते दृष्टे वा दुर्बले यदि ।
चौरादिनृपभीतिश्च पित्तरोगादि सम्भवम् ॥ १७५ ॥
प्रेतबाधा भृत्यनाशं सोदराणां विनाशनम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युज्वरादिकम् ।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ॥ १७६ ॥

पापग्रह से युक्त दृष्ट हो वा दुर्बल हो तो चौरादिकों से और राजा से भय होता है, पित्त के रोगों की संभावना होती है ॥ १७५ ॥ प्रेतबाधा का भय, नौकर की हानि तथा भाइयों की हानि होती है। २ । ७ भाव के स्वामी हों तो अपमृत्यु का भय होता है, इस दोष की शान्ति के लिए शिवसहस्रनाम का जप करना चाहिये ॥ १७६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ भौमदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

कुजस्यान्तर्गते मन्दे स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणगे।
मूलत्रिकोणे केन्द्रे वा तुङ्गांशे स्वांशगेऽथवा ॥१७७॥
लग्नाधिपतिना वापि शुभदृष्टियुते बले।
राज्यसौख्यं यशोवृद्धिः स्वग्रामे धान्यवृद्धिकृत् ॥१७८॥

भौम की दशा में अपने राशि में केन्द्र वा त्रिकोण में वा अपने मूल त्रिकोण में होकर केन्द्र में वा उच्चांश में वा अपने नवांश में हो॥ १७७॥ लग्नेश के साथ शुभग्रह से दृष्टयुत शनि हो तो इसके अन्तर में राजसुख, यश की वृद्धि, अपने ग्राम में धान्य की वृद्धि॥ १७८॥

पुत्रपौत्रसमायुक्तो गृहे गोधनसंग्रहः।
स्ववारे राजसन्मानं स्वमासे पुत्रवृद्धिकृत् ॥१७९॥
नीचादिक्षेत्रगे मन्दे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
म्लेक्षवर्गप्रभुभयं धनधान्यादिनाशनम् ॥१८०॥

पुत्र-पौत्र से युक्त गौ आदि के सुख से पूर्ण होता है। शनि के दिन राजा से सम्मान और शनि के मास में पुत्र की वृद्धि होती है॥१७९॥ यदि शनि अपने नीच आदि में हों ६।८।१२ भाव में हो तो म्लेच्छ राजा से भय, धन धान्य की हानि॥१८०॥

निगडं बन्धनं रोगमंते क्षेत्रविनाशकृत्।
द्वितीयद्यूननाथे तु पापयुक्ते महद्भयम् ॥१८१॥
धननाशं च संचारं राजद्वेषं मनोरुजम्।
चौराग्निनृपपीडा च सहोदरविनाशनम् ॥१८२॥

हथकड़ी-बेड़ी का बन्धन, रोग और अन्त में विनाश होता है। यदि शनि २।१२ भाव का स्वामी हो और पापग्रह से युक्त हो तो महाभय॥ १८१॥ धन का नाश, यात्रा, राजा से द्वेष, मानसिक कष्ट, चोर, अग्नि तथा राजा से पीड़ा, सहोदर की हानि॥ १८२॥

बन्धुद्वेषकरञ्चैव जीवहानिश्च जायते।
अकस्माच्च मृतेर्भीतिः पुत्रदारादिपीडनम् ॥१८३॥
कारागृहादिभीतिश्च राजदण्डो महद्भयम्।
दायेशात्केन्द्रराशिस्थे लाभस्थे वा त्रिकोणगे ॥१८४॥

बन्धुओं से द्वेष, किसी जीव की हानि, अकस्मात् मृत्युभय, पुत्र, स्त्री आदि को पीड़ा॥ १८३॥ जेलयात्रा का भय, राजदण्ड का भय होता है। दशेश से केन्द्र वा लाभ स्थान वा त्रिकोण में हो तो॥ १८४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विदेशयानं लभते दुष्कीर्त्तिर्विविधा तथा।
पापकर्मरतो नित्यं बहुजीवादिहिंसकः ॥१८५॥
विग्रहः क्षेत्रहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोव्यथा।
युद्धेष्वपजयं चैव मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम् ॥१८६॥

विदेशयात्रा, अनेक प्रकार के अपयश, निरन्तर पापकर्म में संलग्नता, अनेक जीवों की हिंसा॥१८५॥ आपस में विग्रह, क्षेत्रादि की हानि, स्थानच्युति और मूत्रकृच्छ्र (जाक) का भय होता है॥१८६॥

दायेशात्षष्ठरंध्रे वा व्यये वा पापसंयुते।
तद्भुक्तौ मरणं ज्ञेयं नृपचौरादिपीडनम् ॥१८७॥
वातपीडा च शूलादिज्ञातिशत्रुभयं भवेत्।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ॥१८८॥

दशेश से ६।८।१२ में पापग्रह से युत हो तो अपने अन्तर में मृत्यु और राजा, चोर आदि की पीड़ा से युक्त॥१८७॥ वात रोग से कष्ट, शूल रोग और जातीय लोगों तथा शत्रु का भय होता है। इसकी शान्ति के लिये मृत्युंजय मंत्र का जप कराना चाहिए॥१८८॥

अथ भौमदशायां बुधान्तर्दशाफलम्-

कुजस्यान्तर्गते सौम्ये लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
सत्कथाश्वाजपादानं धर्मबुद्धिर्महद्यशः ॥१८९॥
नीतिमार्गप्रसङ्गश्च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
वाहनाम्बरपश्वादिराजकर्मसुखानि च ॥१९०॥

भौम की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुए बुध के अन्तर में अच्छे लोगों से सत्संग, अजपा जप, धर्म में प्रवीणता, यश का लाभ ॥१८९॥ नीति मार्ग का अवलम्बन और नित्य मिष्ठान्न का भोजन, वाहन, वस्त्र, पशु का लाभ, राजकार्य में व्यस्त और सुख॥१९०॥

कृषिकर्मफलं सिद्धिर्वारणाम्बरभूषणम्।
नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययगेऽपि वा ॥१९१॥
हृद्रोगं मानहानिश्च निगडं बन्धुनाशनम्।
दारपुत्रार्थनाशः स्याच्चतुष्पाज्जीवनाशनम् ॥१९२॥

कृषि कर्म में प्रवृत्ति और भूषणादि तथा वाहन की प्राप्ति होती है। यदि बुध नीच वा अस्त हो अथवा ६।८।१२ भाव में हो तो ॥१९१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हृदय रोग, धन का हानि, बंधन, बन्धुओं की हानि, स्त्री, पुत्र, चतुष्पद का नाश होता है॥ १९२॥

दशाधिपेन संयुक्ते शत्रुबुद्धिर्महद्भयम् ।
विदेशगमनं चैव नानारोगस्तथैव च ॥ १९३॥
राजद्वारे विरोधश्च कलहः सौम्यमुक्तिषु ।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा स्वोच्चे युक्तार्थलाभकृत् ॥ १९४॥

दशेश से युक्त हो तो शत्रुता की बुद्धि और भय, विदेशयात्रा, अनेक रोग॥ १९३॥ राजा से विरोध और कलह होता है शुभ ग्रह की भुक्ति या दशेश से केन्द्र वा अपने उच्च में हो तो धन का लाभ॥ १९४॥

अनेकधननाथत्वं राजसन्मानमेव च ।
भूपालयोगं कुरुते धनाम्बरविभूषणम् ॥ १९५॥
भूरिवाद्यमृदङ्गादि - सेनापत्यं महत्सुखम् ।
विद्याविनोदविमला वस्त्रवाहनभूषणम् ॥ १९६॥

अनेक धनी संस्थाओं का स्वामी, राजा से सम्मान, राजयोग का सुख, धन-वस्त्र आभूषण का लाभ॥ १९५॥ बहुत से बाजा, मृदङ्ग आदि का सुख, सेनापतित्व और बड़ा सुख, विद्या का विनोद, वस्त्र, वाहन, आभूषण॥ १९६॥

दारपुत्रादिविभवं गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ।
दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते ॥ १९७॥
तद्दाये मानहानिः स्यात्क्रूरबुद्धिस्तु क्रूरवाक् ।
चौराग्निनृपपीडा च मार्गे चौरभयादिकम् ॥ १९८॥

स्त्री, पुत्र आदि का सुख और गृह में लक्ष्मी का प्रवेश होता है। दशेश से ६।१२।८ स्थान में पापग्रह से युत हो तो॥ १९७॥ बुध के अन्तर में मान-हानि, दुष्टबुद्धि होती है। कटुवचन, चोर, अग्नि, राजा से पीड़ा, मार्ग में चोरों का भय॥ १९८॥

अकस्मात्कलहश्चैव बुधभुक्तौ न संशयः ।
द्वितीयद्यूननाथे तु महाव्याधिर्भयंकरा ॥ १९९॥
अश्वदानं प्रकुर्वीत विष्णोर्नामसहस्रकम् ।
सर्वसम्पत्प्रदं सौख्यं सर्वारिष्टप्रशांतिदम् ॥ २००॥

अकस्मात् कलह होता है इसमें संशय नहीं है। यदि बुध २।१२ भाव का स्वामी हो तो महाभयंकर व्याधि होती है॥ १९९॥ इसके शान्त्यर्थ अश्वदान करना चाहिये और विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने से सभी प्रकार

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

की सम्पत्तियों का लाभ और सभी अरिष्टों का नाश होता है॥ २००॥

अथ भौमदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

कुजस्यान्तर्गते केतौ त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
दुश्चिक्ये लाभगे वापि शुभयुक्ते शुभेक्षिते॥ २०१॥
राजानुग्रहशान्तिश्च बहुसौख्यं धनागमम्।
किञ्चित्फलं दशादौ तु भूलाभं पुत्रलाभकृत्॥ २०२॥

भौम की दशा में त्रिकोण वा ३ वा ११ भाव में गये हुये शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट केतु के अन्तर में॥ २०१॥ राजा की कृपा से शान्ति और बहुत सुख की प्राप्ति, धन का आगमन होता है। कुछ फल दशा के आदि में होता है, वाद में भूमि लाभ, पुत्र का लाभ होता है॥ २०२॥

राजसंलाभकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
योगकारकसंस्थाने बलवीर्यसमन्विते॥ २०३॥
पुत्रलाभो यशोवृद्धि गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत्।
भृत्यवर्गधनप्राप्तिः सेनापत्यं महत्सुखम्॥ २०४॥

राज्य लाभकारी कार्यों में संलग्न चतुष्पद जीव का लाभ होता है। योग कारक के स्थान में बलवान् केतु के रहने से॥२०३॥ पुत्र का लाभ, यश की वृद्धि, गृह में लक्ष्मी का प्रवेश, नौकरों द्वारा भी धन का लाभ॥२०४॥

भूपालमित्रं कुरुते यानाम्बरविभूषणम्।
दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते॥ २०५॥

राजा से मित्रता और यज्ञ आदि से वस्त्र-आभूषण का लाभ होता है। दशेश से ६।१२।८ स्थान में पापग्रह से युत हो तो॥ २०५॥

कलहो दंतरोगश्च चौरव्याघ्रादिपीडनम्।
ज्वरातिसार - कुष्ठादिदारपुत्रादि - पीडनम्॥ २०६॥

कलह, दांत में रोग, चोर, व्याघ्र से पीड़ा होती है। ज्वरातिसार और कुष्ठ रोग होता है, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा होती है॥ २०६॥

द्वितीयसप्तमस्थाने देहे व्याधिर्भविष्यति।
सन्मानं धनसन्तापं धनधान्यस्य प्रच्युतिम्।
मृत्युंजयं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥ २०७॥

२।७ स्थान में हो तो शरीर में व्याधि का भय, धन का संताप, धन-धान्य की हानि होती है। इसके शान्त्यर्थ भी सम्पत्ति को देने वाले मृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिये॥ २०७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ भौमदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्-

कुजस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि शुभस्थानाधिपेऽथवा ॥ २०८॥
राज्यलाभं महत्सौख्यं गजाश्वाम्बरभूषणम् ।
लग्नाधिपेन सम्बंधे पुत्रदारादिवर्धनम् ॥ २०९॥

भौम की दशा में केन्द्र, लाभ, त्रिकोण वा अपने उच्च, अपने राशि में गये हुए शुक्र के अन्तर में वा शुभ स्थान के स्वामी शुक्र के अन्तर में॥ २०८॥ राज्य का लाभ, बड़ा सुख, हाथी, घोड़ा, वस्त्र, आभूषण का सुख होता है। लग्नेश से संबन्ध करता हो तो पुत्र, स्त्री आदि की वृद्धि॥ २०९॥

आयुषो वृद्धिरैश्वर्यं भाग्यवृद्धिसुखं भवेत् ।
दायेशात्केन्द्रलाभस्थे कोणे वा धनगेऽपि वा ॥ २१०॥
तत्काले श्रियमाप्नोति पुत्रलाभं महत्सुखम् ।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं श्वेतवस्त्रादिलाभकृत् ॥ २११॥

आयुष्य की वृद्धि, ऐश्वर्य और भाग्यवृद्धि तथा सुख होता है। दशेश से केन्द्र लाभ, त्रिकोण वा धन स्थान में हो तो॥ २१०॥ तत्काल लक्ष्मी की प्राप्ति, पुत्र का लाभ और बहुत सुख होता है। अपने स्वामी की कृपा से बड़ा सुख, सफेद वस्त्र आदि का लाभ होता है॥ २११॥

महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभदम् ।
भुक्त्यन्ते फलमाप्नोति गीतनृत्यादिलाभकृत् ॥ २१२॥

राजा की कृपा से ग्राम, भूमि आदि का लाभ होता है, दशा के अन्त में गीत, नृत्य आदि का सुख॥ २१२॥

पुण्यतीर्थस्नानलाभं कर्माधिपसमन्विते ।
दानधर्मदयापुण्यं तडागं कारयिष्यति ॥ २१३॥

पुण्यतीर्थ में स्नान का लाभ होता है। कर्मेश से युक्त हो तो दान, धर्म, दया, पुण्य होता है और तालाब आदि को बनवाता है॥ २१३॥

दायेशाद्रन्ध्ररिःफस्थे षष्ठे वा पापसंयुते ।
करोति दुःखबाहुल्यं देहपीडां धनक्षयम् ॥ २१४॥
राजचौरादिभीतिश्च गृहे कलहमेव च ।
दारपुत्रादिपीडा च गोमहिष्यादिनाशकृत् ॥ २१५॥

दशेश से ८। १२। ६ स्थान में पापग्रह से युत हो तो अत्यन्त दुःख, शरीर

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

में पीड़ा, धन का नाश॥ २१४॥ राजा, चोर का भय, घर में कलह, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट, गौ, भैंस आदि का नाश होता है॥ २१५॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यप्राप्तये॥ २१६॥

२।७ भाव का स्वामी हो तो शरीर में बाधा होती है। इसकी शान्ति के लिये सफेद गौ, सफेद भैंस का दान करना चाहिये॥ २१६॥

अथ भौमदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

कुजस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
मूलत्रिकोणलाभे वा भाग्यकर्मेशसंयुते॥ २१७॥
तद्भुक्तौ वाहनं कीर्त्तिः पुत्रलाभं च विंदति।
धनधान्यसमृद्धिः स्याद् गृहे कल्याणसम्पदः॥ २१८॥

भौम की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि में वा केन्द्र वा मूल त्रिकोण वा लाभ स्थान में गये हुये भाग्येश कर्मेश से युत सूर्य के अन्तर में॥ २१७॥ वाहन, यश और पुत्र का लाभ होता है। धन-धान्य आदि समृद्धि का लाभ, गृह में कल्याण॥ २१८॥

क्षेमारोग्यं महैश्वर्यं राजपूज्यं महत्सुखम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं विदेशे राजदर्शनम्॥ २१९॥
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते।
देहपीडा मनस्तापः कार्यहानिर्महद्भयम्॥ २२०॥

कुशल आरोग्यता, महाऐश्वर्य, राजा से पूजा, सुख, विदेश में रोजगार से लाभ और राजा का दर्शन होता है॥ २१९॥ दशेश से ६।१२।८ स्थानमें पाप ग्रह से युत हो तो शरीर में पीड़ा, मन में संताप, कार्य की हानि, भय॥ २२०॥

शिरोरोगं ज्वरादिश्च अतीसारमथापि वा।
द्वितीयद्यूननाथे तु सर्पज्वरविषाद्भयम्॥ २२१॥
सुतपीडाकरं चैव शान्तिं कुर्याद्यथाविधि।
देहारोग्यं प्रकुरुते धनधान्यसमृद्धिदम्॥ २२२॥

शिर में रोग, ज्वर और अतिसार होता है। २।७ भाव के स्वामी हो तो सर्प, ज्वर, विष से भय॥ २२१॥ पुत्र को पीड़ा होती है इसकी यथाविधि शान्ति करने से देह में आरोग्यता और धन-धान्य की वृद्धि होती है॥२२२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कुजस्यान्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे ।
भाग्यवाहनकर्मेश लग्नाधिप समन्विते ॥ २२३ ॥
करोति विपुलं राज्यं गन्धमाल्याम्बरादिकम् ।
तडागं गोपुरादीनां पुण्यधर्मादिसंग्रहम् ॥ २२४ ॥

भौम की दशा में अपने उच्च वा अपनी राशि में केन्द्र में गये हुये भाग्य चतुर्थ, दशम, और लग्नेश से युक्त चन्द्रमा के अन्तर में॥ २२३॥ बड़े राज्य का गंध, माल्य वस्त्रादि के साथ लाभ होता है, तालाब, किला आदि का निर्माण होता है, पुण्य, धर्म आदि होते हैं॥ २२४॥

विवाहोत्सवकर्माणि दारपुत्रादिसौख्यकृत् ।
पितृमातृसुखप्राप्तिः गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत् ॥ २२५ ॥
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिसुखादिकम् ।
पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं क्षीणे स्वल्पफलं भवेत् ॥ २२६ ॥

विवाहादि उत्सव होता है, स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है, पिता-माता का सुख होता है और गृह में लक्ष्मी का वास होता है॥ २२५॥ राजा की प्रसन्नता से अभीष्ट सिद्धि होती है। पूर्ण चन्द्रमा हो तो पूर्णफल और क्षीणचन्द्र हो तो अल्प फल होता है॥ २२६॥

नीचारिस्थेऽष्टमे व्यये दायेशाद्रिपुरंध्रके ।
मरणं दारपुत्राणां कष्टं भूमिविनाशनम् ॥ २२७ ॥
पशुधान्यक्षयं चैव चौरादिरणभीतिकृत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ॥ २२८ ॥

यदि चन्द्रमा नीच राशि में ६।८।१२ भाव में वा दशेश से ६।८ भाव में हो तो अपने अन्तर में स्त्री-पुत्र का मरण और भूमि की हानि होती है॥ २२७॥ पशु, धान्य का नाश, चोर आदि का और संग्राम का भय होता है। २।७ भाव का स्वामी हो तो अकाल मृत्यु होती है॥ २२८॥

देहजाड्यं मनोदुःखं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत् ॥ २२९ ॥

देह में जड़ता और मानसिक दुःख होता है। शान्ति के लिये दुर्गा और लक्ष्मी का जप, सफेद गौ और भैंस का दान करना चाहिये, इसके करने से आरोग्यता होती है॥ २२९॥

इति कुजदशाया मंत्रर्दशाफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राहुदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

कुलीरे वृश्चिके चैव कन्याया चापगेहऽगौ ।
तद्भुक्तौ राजसन्मानं वस्त्रवाहनभूषणम् ॥ २३० ॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत् ॥ २३१ ॥

कर्क वा वृश्चिक वा कन्या वा धनु में राहु हो तो राहु की दशा में राहु के ही अन्तर से राजा से सम्मान, वस्त्र, वाहन का लाभ होता है॥ २३० ॥ व्यवसाय (रोजगार) से अधिक लाभ, चतुष्पद का लाभ होता है। पश्चिम दिशा की यात्रा होती है और उससे वाहन, वस्त्र का लाभ होता है॥ २३१ ॥

लग्नादुपचये राहौ शुभग्रहयुतेक्षिते ।
मित्रांशे तुङ्गलाभेशे योगकारकसंयुते ॥ २३२ ॥
राज्यलाभं महोत्साहं राजप्रीतिं शुभावहाम् ।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिवर्धनम् ॥ २३३ ॥

लग्न से उपचय (३।६।१०।११) भाव में राहु शुभग्रह से युत दृष्ट हो वा मित्रांश में वा उच्चांश से लाभ दशम के अंश में हो और योगकारक से युत हो तो॥ २३२ ॥ राज्य का लाभ, उत्साह और राजा से प्रेम होता है। गृह में कल्याण, सम्पत्ति, स्त्री-पुत्र आदि की वृद्धि होती है॥ २३३ ॥

षष्ठाष्टमव्यये राहौ पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ।
चौरादिव्रणपीडा च सर्वत्र जनपीडनम् ॥ २३४ ॥
राजद्वारजनद्वेष इष्टबन्धुविनाशनम् ।
दारपुत्रादिपीडा च सर्वत्र जनपीडनम् ॥ २३५ ॥

यदि राहु ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत दृष्ट हो तो चोर आदि से, घोड़ा आदि से पीड़ा और परिवार के लोगों को कष्ट होता है॥ २३४ ॥ राजकर्मचारियों से शत्रुता, अभीष्ट बंधु का नाश होता है। स्त्री-पुत्रादि को पीड़ा और अपने लोगों को कष्ट होता है॥ २३५ ॥

द्वितीयद्यूननाथे तु सप्तमस्थानमाश्रितः ।
सदा रोगं महाकष्टं शान्तिकुर्याद्यथाविधि ।
आरोग्यं सम्पदश्चैव भविष्यति न संशयः ॥ २३६ ॥

२।७ भाव का स्वामी हो और ७वें भाव में बैठा हो तो सदा रोग और महाकष्ट होता है। इसकी शान्ति यथाविधि करने से आरोग्य और सम्पत्ति का लाभ होता है, इसमें संशय नहीं॥ २३६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राहुदशायां गुर्वन्तरफलम्-

राहोरन्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि सुङ्गांशे स्वांशगेऽपि वा ॥ २३७॥
स्थानलाभं मनोधैर्यं शत्रुनाशं महत्सुखम् ।
राजप्रीतिकरं सौख्यं महतीव समश्नुते ॥ २३८॥

राहु की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में वा अपने उच्चराशि वा अपनी राशि में वा उच्चांश वा अपने नवांश में गये हुए गुरु के अन्तर में॥ २३७॥ स्थान का लाभ, मन में धैर्य, शत्रु का नाश, अत्यंत सुख, राजा से प्रीति और सुख होता है॥ २३८॥

दिने दिने वृद्धिरपि शुक्लपक्षे शशी यथा ।
वाहनादिधनं भूरि गृहे गोधनसंकुलम् ॥ २३९॥
नैर्ऋत्यां पश्चिमे भागे प्रयाणं राजदर्शनम् ।
इष्टकार्यार्थसिद्धिः स्यात्स्वदेशे पुनरेष्यति ॥ २४०॥

दिनों दिन शुक्लपक्ष के चन्द्रमा के समान वृद्धि होती है। वाहनादि धन का लाभ और घर में गोधन की वृद्धि होती है॥ २३९॥ नैर्ऋत्य वा पश्चिम की यात्रा और राजा का दर्शन होता है। इष्ट कार्य की सिद्धि हो जाने से पुनः स्वदेश को लौट आता है॥ २४०॥

उपकारो ब्राह्मणानां तीर्थयात्रादिकर्मणाम् ।
वाहनग्रामलाभश्च देवब्राह्मणपूजनम् ॥ २४१॥
पुत्रोत्सवादिसंतोषं नित्यं मिष्टान्नभोजनम् ।
नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे ॥ २४२॥

ब्राह्मणों का उपकार, तीर्थयात्रादि कर्म होते हैं। वाहन, ग्राम का लाभ और देवता ब्राह्मण का पूजन होता है॥ २४१॥ पुत्रोत्सव आदि से सन्तोष और नित्य मिष्ठान्न का भोजन होता है। यदि गुरु नीच में हो वा अस्त हो वा ६।८।१२ भाव में हो तो॥ २४२॥

शत्रुक्षेत्रे पापयुक्ते धनहानिर्भविष्यति ।
कर्मविघ्नो मानहानिः धनहानिर्भविष्यति ॥ २४३॥

अथवा शत्रु राशि में पापयुत हो तो धन की हानि होती है, कार्य में विघ्न, मानहानि, धन की हानि होती है॥ २४३॥

कलत्रपुत्रपीडा च हृद्रोगं राजकार्यकृत् ।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ॥ २४४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री-पुत्र को पीड़ा, हृदय का रोग होता है। दशेश से केन्द्र, कोण में हो वा एकादश वा धन स्थान में हो॥ २४४॥

दुश्चिक्ये बलसम्पूर्णे गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्।
भोजनाम्बरपश्वादि - दानधर्मजपादिकम्॥ २४५॥
भुक्त्यंते राजकोपाच्च द्विमासं देहपीडनम्।
ज्येष्ठभ्रातुर्विनाशं च भ्रातृपित्रादिपीडनम्॥ २४६॥

वा तीसरे भाव में हो, बली हो तो गृह, क्षेत्र आदि की वृद्धि करता है। भोजन, वस्त्र, पशु आदि का लाभ, दान, धर्म, जप आदि होते हैं॥ २४५॥ अन्तर दशा के अन्त में २ मास शरीर में पीड़ा होती है। ज्येष्ठ भाई का नाश और भाई, पिता आदि को कष्ट होता है॥ २४६॥

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा रिःफे वा पापसंयुते।
तद्भुक्तौ धनहानिः स्यादेहपीडा भविष्यति॥ २४७॥
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
स्वर्णस्य प्रतिमादानं शिवपूजां च कारयेत्।
देहारोग्यं प्रकुरुते शान्तिं कुर्याद्विचक्षणः॥ २४८॥

दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो उसके अन्तर में धन की हानि, शरीर में पीड़ा होती है॥ २४७॥ २।७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु होती है। सुवर्ण की गुरु के प्रतिमा (मूर्ति) का दान और शिव की पूजा करने से शरीर आरोग्य होता है अतः शान्ति कराना चाहिये॥ २४८॥

अथ राहुदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

राहोरन्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे मूलत्रिकोणे वा दुश्चिक्ये लाभराशिगे॥ २४९॥

राहु की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में वा अपने उच्च वा मूल त्रिकोण में वा तीसरे भाव में वा एकादशभाव में गये हुये॥ २४९॥

तद्भुक्तौ वाहनं सेवा राजप्रीतिकरं शुभम्।
विवाहोत्सवकार्याणि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः॥ २५०॥
आरामकरणे दक्षो तडागं कारयिष्यति।
शूद्रप्रभुवशादिष्टलाभं गोधनसंग्रहम्॥ २५१॥

शनि के अन्तर में वाहन, नौकरी, राजा से प्रीति होती है। विवाह आदि अनेक पुण्य कार्यों को मनुष्य करता है॥ २५०॥ बगीचा और तालाब बनाने को उत्सुक होता है। शूद्र स्वामी से गोधन का संग्रह॥ २५१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

प्रयाणं पश्चिमे भागे प्रभुमूलाद्धनक्षयः ।
देहायासं फलाल्पत्वं स्वदेशे पुनरेष्यति ॥ २५२ ॥

और लाभ होता है। पश्चिम दिशा की यात्रा से स्वामी द्वारा धन की हानि, देहमें शिथिलता, अल्पफलको प्राप्तहो पुनः स्वदेशको आता है॥ २५२॥

नीचारिक्षेत्रगे मन्दे रन्ध्रे व व्ययगेऽपि वा ।
नीचारिराजभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम् ॥ २५३ ॥
आत्मबन्धुमनस्तापं दायादजनविग्रहम् ।
व्यवहारे च कलहमकस्माद्भूषणं लभेत् ॥ २५४ ॥

यदि शनि नीच वा शत्रु गृह में हो वा ८।१२ भाव में हो तो नीच शत्रु और राजा से भय होता है और स्त्री-पुत्र को पीड़ा होती है॥ २५३॥ आत्मीय बन्धुओं के मन में सन्ताप और दायादों से शत्रुता होती है। व्यवहार में कलह और अकस्मात् आभूषण का लाभ होता है॥ २५४॥

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते ।
हृद्रोगं मानहानिश्च विवादः शत्रुपीडनम् ॥ २५५ ॥
अन्यदेशप्रयाणं च गुल्मवद्व्याधिभाग्भवेत् ।
कुभोजनं कोद्रवादि - जातिदुःखाद्भयं भवेत् ॥ २५६ ॥

दशेश से ६।१२।८ भाव में पापग्रह से युत हो तो हृदय का रोग, मानहानि, विवाह और शत्रु से पीड़ा होती है॥ २५५॥ विदेश की यात्रा होती है। गुल्मरोग के समानव्याधि, को द्रव आदि कुत्सित भोजन और जातीय लोगों से दुःख का भय होता है॥ २५६॥

द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत् ॥ २५७ ॥

२।७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। काली गौ और भैंस के दान करने से आरोग्यता का लाभ होता है॥ २५७॥

अथ राहुदशायां बुधान्तर्दशाफलम्-

राहोरन्तर्गते सौम्ये भाग्ये वा स्वर्क्षगेऽपि वा ।
तुङ्गे वा केन्द्रराशिस्थे पुत्रे वा लाभगेऽपि वा ॥ २५८ ॥
राजयोगं प्रकुरुते गृहे कल्याणवर्धनम् ।
व्यापारेण धनप्राप्तिर्विद्यावाहनमुत्तमम् ॥ २५९ ॥

राहु की दशा में भाग्य (९) वा अपने राशि, अपने उच्च, केन्द्र, पंचम वा एकादश में गये हुये॥ २५८॥ बुध के अन्तर में राजयोग का उदय, नित्य

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कल्याण की वृद्धि, व्यापार से धन लाभ, विद्या और वाहन का लाभ, विवाहोत्सव आदि कार्य, चतुष्पदों का लाभ होता है॥ २५९॥

विवाहोत्सवकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
सौम्यमासे महत्सौख्यं स्ववारे राजदर्शनम्॥ २६०॥
सुगन्धपुष्पशय्यादिस्त्रीसौख्यं चातिशोभनम्।
महाराजप्रसादेन धनलाभो महद्यशः॥ २६१॥

विवाहोत्सव आदि कार्य, चतुष्पदों का लाभ, बुध के मास में महासुख और बुधके दिन राजाका दर्शन।२६०। सुगन्ध, पुष्प, शय्या और स्त्रीका सुख होता है, महाराज के प्रसाद से धन का लाभ और बड़ा यश होता है।२६१।

दायेशात्केन्द्रलाभे वा दुश्चिक्ये भाग्यकर्मगे।
देहारोग्यं हृदुत्साहं इष्टसिद्धिः सुखावहा॥ २६२॥
पुण्यश्लोकादिकीर्त्तिश्च पुराणश्रवणादिकम्।
विवाहो यज्ञदीक्षा च दानधर्मदयादिकम्॥ २६३॥

दशेश से केन्द्र वा लाभ तीसरे वा ९।१० भाव में बुध हो तो शरीर- आरोग्यता, हृदय में उत्साह, इष्टसिद्धि, और सुख होता है॥ २६२॥ पुण्य-श्लोक, कीर्त्ति और पुराण श्रवण, विवाह, यज्ञ-दीक्षा दान-धर्म दया आदि होता है॥२६३॥

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये मन्दराशियुतेक्षिते।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते॥ २६४॥
देवब्राह्मणनिन्दा च भोगभाग्यविहीनभाक्।
सत्यहीनश्च दुर्बुद्धिश्चौराहिनृपपीडनम्॥ २६५॥

६।८।१२ वें भाव में बुध हो और शनि की राशि में शनि से दृष्ट हो अथवा दशेश से ६।१२।८ भाव में पापग्रह से युत हो तो॥ २६४॥ देवता-ब्राह्मण की निन्दा, भोगादि से विहीन, सत्य से हीन, दुर्बुद्धि का उदय, चोर, सर्प राजा से पीड़ा होती है॥ २६५॥

अकस्मात्कलहश्चैव गुरुपुत्रादिनाशनम्।
अर्थव्ययो राजकोपो दारपुत्रादिपीडनम्॥ २६६॥
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युं तथाऽश्रियम्।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
स्वगृह्योक्तविधानेन शान्तिं कुर्याद्विचक्षणः॥ २६७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अकस्मात् कलह, गुरु पुत्र आदि का नाश होता है। द्रव्य का व्यय, राजा का कोप, स्त्री-पुत्र आदि को पीड़ा होती है॥ २६६॥ २।७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु और दरिद्रता होती है। इस दोष के शान्त्यर्थ विष्णुसहस्रनाम का जप और अपनी शाखा के अनुसार शान्ति कर्म करना चाहिए॥ २६७॥

अथ राहुदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

राहोरन्तर्गते केतौ भ्रमणं राजकृद्धनम्।
वातज्वरादिरोगश्च चतुष्पाज्जीवहानिकृद्॥ २६८॥
अष्टमाधिपसंयुक्ते देहजाड्यं मनोरुजम्।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे देहसौख्यं धनागमः॥ २६९॥

राहु की दशा में केतु की अन्तर्दशा में भ्रमण और राजा से धनप्राप्ति और वातज्वर आदि रोग, चतुष्पद जीवों की हानि होती है॥ २६८॥ अष्टमेश से युत हो तो शरीर में जड़ता और मानसिक कष्ट होता है। शुभग्रह से युत और दृष्ट हो तो देहसुख और धन का लाभ होता है॥ २६९॥

राजसन्मानभूप्राप्तिर्गृहे शुभकरो भवेत्।
लग्नाधिपेन सम्बन्धे इष्टसिद्धिः सुखावहा॥ २७०॥
लग्नाधिपसमायुक्ते लाभो वा भवति ध्रुवम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात्केन्द्रे वाथ त्रिकोणगे॥ २७१॥

राजासे सम्मान, धन-भूमि का लाभ और गृह में शुभ कार्य होंगे, लग्नेश से सम्बन्ध होने से इष्टसिद्धि होती है॥ २७०॥ लग्नेश से सम्बन्ध हो तो अभीष्ट की सिद्धि और सुख होता है। यदि लग्नेश से युत हो तो धन का लाभ होता है। केन्द्र त्रिकोण में रहने से चतुष्पद का लाभ होता है॥ २७१॥

रंध्रस्थानगते केतौ व्यये वा बलवर्जिते।
तद्भुक्तौ बहुरोगः स्याच्चौराग्निव्रणपीडनम्॥ २७२॥
पितृमातृवियोगश्च भ्रातृद्वेषं मनोरुजम्।
स्वप्रभोश्च महाकष्टं वैषम्यं चित्तहिंसकम्॥ २७३॥

८।१२ स्थान में निर्बल केतु हो तो उसके अन्तर में अनेक रोग, चोर, अग्नि और फोड़ा से पीड़ा॥ २७२॥ पिता-माता से वियोग, भाई से द्वेष, मानसिक कष्ट होता है और अपने मालिक से वैर और कष्ट होता है।२७३।

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं च कारयेत्॥ २७४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

२।७ भाव का स्वामी हो तो शरीर में बाधा होती है। इसके शान्त्यर्थ बकरी का दान करना चाहिये॥ २७४॥

अथ राहुदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्-

राहोरन्तर्गते शुक्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत्॥ २७५॥
विप्रमूलाद्धनप्राप्तिर्गोमहिष्यादिलाभकृत्।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे कल्याणसम्भवम्॥ २७६॥

राहु की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण वा एकादश स्थान में बलवान् शुक्र हो तो प्रबल योग होता है॥ २७५॥ इसके अन्तर में ब्राह्मण द्वारा धन का लाभ, गौ-भैंस का लाभ, पुत्रोत्सव, गृह में कल्याण॥ २७६॥

सम्मानं राजसन्मानं राज्यलाभं महत्सुखम्।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुङ्गांशे स्वांशगेऽपि वा॥ २७७॥

सम्मान, राजा से आदर, राज्यसुख का लाभ होता है। यदि शुक्र अपने उच्च वा अपनी राशि में, उच्चांश में वा अपने नवांश में हो तो॥ २७७॥

नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
कलत्रपुत्रविभवं मित्रसंयुक्तभोजनम्॥ २७८॥

नूतन गृह का निर्माण, नित्य मिठाई का भोजन, स्त्री-पुत्र, वैभव और मित्रों के साथ भोजन होता है॥ २७८॥

अन्नदानप्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहम्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥ २७९॥

अन्नदान तथा अन्य धार्मिक क्रियायें और महाराजा की प्रसन्नता से वाहन-वस्त्र, आभूषण का लाभ॥ २७९॥

व्यवसायात्फलाधिक्यं विवाहो मौंजिबंधनम्।
षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे नीचे शत्रुगृहे स्थिते॥ २८०॥

व्यवसाय से अधिक लाभ और विवाह, यज्ञोपवीत आदि उत्सव होते हैं। यदि शुक्र ६।८।१२ भाव में हो नीच वा शत्रु गृह में हो॥ २८०॥

मन्दारफणिसंयुक्ते तद्भुक्तौ रोगमादिशेत्।
अकस्मात्कलहं चैव पितृपुत्रवियोगकृत्॥ २८१॥
स्वबंधुजनहानिश्च सर्वत्र जनपीडनम्।
दायादिकलहं चैव स्वप्रभोः स्वस्य मृत्युकृत्॥ २८२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनि, भौम, राहु से युत हो तो इसके अन्तर में रोग, अकस्मात् कलह, पिता-पुत्र से वियोग॥ २८१॥ अपने बन्धुओं की हानि, सभी जनों को कष्ट, दायादों से कलह, अपने स्वामी तथा अपने को मृत्युतुल्य कष्ट॥ २८२॥

कलत्रपुत्रपीडा च शूलरोगादिसम्भवम्।
दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे वा समन्विते॥ २८३॥
लाभे वा धर्मराशिस्थे क्षेत्रपालान्महत्सुखम्।
सुगंधवस्त्रशय्यादि - गानविद्यापरिश्रमम्॥ २८४॥

स्त्री-पुत्र को कष्ट और शूल रोग की सम्भावना होती है। दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण में वा युत हो॥ २८३॥ लाभ या नवम भाव में शुक्र हो तो क्षेत्रपाल से सुख होता है॥ २८४॥

छत्रचामरवाद्यादि - गंधपद्मसमन्वितम्।
दायेशाद्रिपुरंध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥ २८५॥

और छत्र, चामर, बाजा आदि गंधादि से युक्त होता है। दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत शुक्र हो तो॥ २८५॥

विषाहिनृपचौरादि - मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्।
प्रमेहाद्रुधिरं रोगं कुत्सितान्नं शिरोरुजम्॥ २८६॥

उसके अन्तर में विष-सर्प-राजा-चोर आदि से तथा मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोग से भय होता है। प्रमेह से रक्त का रोग और खराब अन्न का भोजन तथा शिर में रोग होता है॥ २८६॥

कारागृहप्रवेशं च राजदंडाद्धनक्षयम्।
द्वितीयद्यूननाथे वा दारपुत्रादिनाशनम्॥ २८७॥
आत्मपीडा भयं चैव ह्यपमृत्युस्तथा भवेत्।
दुर्गालक्ष्मीजपं कुर्यान्मृत्युनाशकरो भवेत्॥ २८८॥

कारागार (जेल) में प्रवेश, स्त्री-पुत्रादि का नाश होता है। २।७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है॥ २८७॥ दुर्गा और लक्ष्मी का जप करने से मृत्यु का नाश होकर सुख होता है॥ २८८॥

अथ राहुदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

राहोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
त्रिकोणे लाभगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥ २८९॥

राहु की दशा में अपने उच्च में वा अपने राशि में केन्द्र, त्रिकोण, ग्यारहवें वा अपने उच्चांश वा अपने नवांश में गये हुये॥ २८९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभग्रहेण संदृष्टे राजप्रीतिकरं शुभम् ।
धनधान्यसमृद्धिश्च ह्यल्पसौख्यं सुखावहम् ॥ २६० ॥

शुभग्रह से देखे जाते हुये सूर्य के अन्तर में राजा से प्रेम, धनधान्य समृद्धि की प्राप्ति, अल्पसुख ॥ २६० ॥

अल्पग्रामाधिपत्यं च स्वल्पलाभो भविष्यति ।
भाग्यलग्नेशसंयुक्ते कर्मेशेन निरीक्षिते ॥ २६१ ॥
राजाश्रयो महत्कीर्तिर्विदेशगमनं महत् ।
देशाधिपत्ययोगं च गजाश्वाम्बरभूषणम् ॥ २६२ ॥

छोटे ग्राम का आधिपत्य, अल्पलाभ होता है। भाग्येश और लग्नेश से युक्त हो और कर्मेश से देखा जाता हो तो ॥ २६१ ॥ राजा से आश्रय की प्राप्ति, बड़ा यश, विदेशयात्रा होती है। यह देश का अधिपति योग होता है, इसमें ग्राम का अधिकार, हाथी, घोड़ा, वस्त्र, आभूषण की प्राप्ति ॥ २६२ ॥

मनो भीष्टप्रदानं च पुत्रकल्याणसम्भवम् ।
दायेशाद्रिःफरन्ध्रस्थे षष्ठे वा नीचगेऽपि वा ॥ २६३ ॥
ज्वरातिसाररोगं च कलहं राजविद्विषम् ।
प्रयाणं शत्रुवृद्धिश्च नृपचौराग्निपीडनम् ॥ २६४ ॥

मन के अनुकूल इष्टसिद्धि, पुत्र के लाभ का सम्भव होता है, यदि दशेश १२।८।६ स्थान में सूर्य हो वा नीच राशि में हों तो ॥ २६३ ॥ ज्वरातिसार रोग, कलह, राजा से विद्वेष, यात्रा, शत्रुओं की वृद्धि, राजा, चोर, अग्नि से पीड़ा होती है ॥ २६४ ॥

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।
विदेशे राजसन्मानं कल्याणं च शुभावहम् ॥ २६५ ॥

दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण वा तीसरे वा लाभ स्थान में हो तो विदेश में राजा से सम्मान, कल्याण और शुभ होता है ॥ २६५ ॥

द्वितीयद्यूननाथे तु महारोगो भविष्यति ।
सूर्यप्रसन्नशान्तिं च कुर्यादारोग्यसम्भवाम् ॥ २६६ ॥

२।७ भाव का स्वामी हो तो महारोग होता है। सूर्य की प्रसन्नता की शान्ति करने से आरोग्यता होती है ॥ २६६ ॥

अथ राहुदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्-

राहोरन्तर्गते चन्द्रे स्वक्षेत्रे स्वर्क्षगेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा मित्रर्क्षे शुभसंयुते ॥ २६७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राज्यत्वं राजपूज्यत्वं धनार्थं धनलाभकृत् ।
आरोग्यभूषणं चैव मित्रस्त्रीपुत्रसंपदः ॥ २९८ ॥

राहु की दशा में अपने राशि, उच्चराशि में केन्द्रत्रिकोण वा लाभ में वा मित्र की राशि में शुभग्रह से युत चन्द्रमा हो तो उसके अन्तर में ॥ २९७ ॥ राजा होता है अथवा राजा से पूज्य होता है, धन के लिये धन का लाभ होता है, आरोग्यता, आभूषण, मित्र, स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति का लाभ होता है ॥ २९८ ॥

पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं राजप्रीत्या शुभावहम् ।
अश्ववाहनलाभः स्याद् गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत् ॥ २९९ ॥
दायेशात्सुखभाग्यस्थे केन्द्रे वा लाभगेऽपि वा ।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि गृहे कल्याणसम्भवम् ॥ ३०० ॥

पूर्ण चन्द्रमा हो तो पूर्णफल होता है और राजा की प्रसन्नता से शुभद फल होते हैं और घोड़ा आदि वाहनों का लाभ और गृह, क्षेत्र आदि की वृद्धि होती है ॥ २९९ ॥ दशेश से चौथे, नवें, केन्द्र वा लाभ स्थान में हो तो लक्ष्मी की कृपा के चिह्न दिखाई देते हैं, गृह में कल्याण होता है ॥ ३०० ॥

पूर्णकार्यार्थसिद्धिः स्याद्धनधान्यसुखावहम् ।
सत्कीर्त्तिर्लाभसन्मानं देव्याराधनमाचरेत् ॥ ३०१ ॥
दायेशात्षष्ठरंध्रस्थे व्यये वा बलसंयुते ।
पिशाचक्षुद्रव्याघ्रादि - गृहक्षेत्रार्थनाशनम् ॥ ३०२ ॥

पुण्यकार्य और धन का लाभ, कीर्त्तिवृद्धि और सम्मान होता है। देवाराधन करना चाहिये ॥ ३०१ ॥ दशेश से ६ । ८ । १२वें भाव में बलवान् हो तो पिशाच, क्षुद्रजन्तु, व्याघ्र आदिसे गृह, खेती और धनका नाश होता है । ३०२ ।

मार्गे चौरभयं चैव व्रणाधिक्यं महाभयम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युस्तदा भवेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यता भवेत् ॥ ३०३ ॥

मार्ग में चोर का भय और व्रण (फोड़ा) से बड़ा भय होता है। २ । ७ भाव के स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। सफेद गौ-भैंस के दान से आरोग्यता होती है ॥ ३०३ ॥

अथ राहुदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

राहोरन्तर्गते भौमे लग्नाल्लाभत्रिकोणगे ।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ॥ ३०४ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राहु की दशा में लग्न से लाभ वा त्रिकोण वा केन्द्र में शुभग्रह से अपने उच्च वा अपने राशि में गये हुये भौम के अन्तर में॥ ३०४॥

नष्टराज्यधनप्राप्तिः गृहक्षेत्राभिवृद्धिकृत्।
इष्टदेवप्रसादेन सन्तानसुखभोजनम्॥ ३०५॥

नष्टराज्य की प्राप्ति, गृह क्षेत्र की वृद्धि होती है। इष्टदेव की प्रसन्नता से सन्तान का सुख, भोजन का सुख होता है॥ ३०५॥

विप्रभोज्यान्महत्सौख्यं भूषणाम्बरलाभकृत्।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥ ३०६॥
रक्तवस्त्रादिलाभः स्यात्प्रयाणं राजदर्शनम्।
पुत्रवर्गेषु कल्याणं स्वप्रभोश्च महत्सुखम्॥ ३०७॥

विप्र भोजन से महासुख, भूषण-वस्त्रादि का लाभ होता है। दशेश से केन्द्र वा कोण में वा तीसरे वा लाभ स्थान में हो तो॥ ३०६॥ लाल वस्त्रादि का लाभ, यात्रा और राजा का दर्शन, पुत्र वर्ग में कल्याण, महासुख॥ ३०७॥

सेनापत्यं महोत्साहं भ्रातृवर्गधनागमम्।
दायेशाद्रिःफरंध्रे वा षष्ठे पापसमन्विते॥ ३०८॥

सेनापतिपद का लाभ, बड़ा उत्साह और भाइयों से धन का लाभ होता है। दशेश से १२।८।६ भाव में पापग्रह से युक्त हो तो॥ ३०८॥

पुत्रदारादिहानिश्च सोदराणां च पीडनम्।
स्थानभ्रंशं बंधुवर्गदारपुत्रविरोधनम्॥ ३०९॥

पुत्र-स्त्री की हानि, भाइयों को पीड़ा, स्थानभ्रष्ट, बन्धुओं से तथा स्त्री-पुत्र से विरोध होता है॥ ३०९॥

चौरादिव्रणभीतिश्च सोदराणां च पीडनम्।
आदौ क्लेशकरं चैव मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात्॥ ३१०॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहालस्यं महद्भयम्।
अनड्वाहं च गां दद्याद्देहारोग्यं भविष्यति॥ ३११॥

चौर तथा व्रण से भय और भाइयों को कष्ट होता है। अन्तर में पहले कष्ट और मध्य तथा अन्त में सुख होता है॥ ३१०॥ यदि २।७ भाव का स्वामी हो तो देह में आलस्य और बड़ा भय होता है। बैल और गौ का दान करने से आरोग्यता होती है॥ ३११॥

इति राहुदशायामन्तर्दशाफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ गुरुदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
अनेकराज्याधीशश्च सम्पन्नो राजपूजितः ॥ १ ॥
गोमहिष्यादिलाभश्च वस्त्रवाहनभूषणम् ।
नूतनस्थाननिर्माणं हर्म्यप्राकारसंयुतम् ॥ २ ॥

गुरु की दशा में अपने उच्च, अपने राशि में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुए गुरु के अन्तर में अनेक राज्यों का स्वामित्व सम्पन्नता और राजा से पूजनीय ॥ १ ॥ गौ, भैंस आदि का तथा वस्त्र, आभूषण का लाभ होता है। नये स्थान का निर्माण, गृह आदि का लाभ होता है ॥ २ ॥

गजान्तैश्वर्यसम्पत्तिर्भाग्यकर्मणि संयुते ।
ब्राह्मणप्रभुसन्मानं समानप्रभुदर्शनम् ॥ ३ ॥
स्वप्रभोः स्वफलाधिक्यं दारपुत्रादिलाभकृत् ।
नीचांशे नीचराशिस्थे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ॥ ४ ॥

यदि गुरु भाग्य वा कर्म में हो तो हाथी आदि के ऐश्वर्य से युक्त ॥ ३ ॥ और अपने स्वामी से अधिक लाभ, स्त्री, पुत्र आदि का लाभ होता है। यदि गुरु नीचांश वा नीच राशि में ६।८।१२ भाव में हो तो ॥ ४ ॥

नीचसङ्गं महद्दुःखं दायादजनविग्रहम् ।
कलहो न विचारोऽस्य स्वप्रभुह्यपमृत्युकृत् ॥ ५ ॥
पुत्रदारवियोगं च धनधान्यार्थहानिकृत् ।
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति ॥ ६ ॥
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।
रुद्रजाप्यं च गोदानं कुर्यादिष्टस्य प्राप्तये ॥ ७ ॥

नीचों की सङ्गति, महादुःख, दायादोंसे विरोध, कलह, अपमृत्यु का भय ॥ ५ ॥ पुत्र-स्त्री से वियोग, धन-धर्म का नाश होता है। सप्तमेश होने से शरीर में रोग होता है ॥ ६ ॥ इस दोष की शान्ति के लिये शिवसहस्रनाम का जप, रुद्राष्टाध्यायी का जप, गोदान करने से अभीष्ट की प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥

अथ गुरुदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

जीवस्यान्तर्गते स्वोच्चे स्वक्षेत्रमित्रगेऽथवा ।
लग्नात्केन्द्रत्रिकोणस्थे लाभे वा बलसंयुते ॥ ८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राज्यलाभं महत्सौख्यं वस्त्राभरणसंयुतम् ।
धनधान्यादिलाभं च स्त्रीलाभं बहुसौख्यकृत् ॥ ९ ॥

गुरु की दशा में अपने उच्च, अपने गृह वा अपने मित्र के राशि में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ में बलवान् शनि के अन्तर में॥ ९॥ राज्य का लाभ, महान् सुख, वस्त्र आभूषण का लाभ, धन-धान्य का लाभ, स्त्री का लाभ तथा अनेक सुख॥ ९॥

वाहनाम्बरपश्वादिभूलाभं स्थानलाभदम् ।
पुत्रमित्रादिसौख्यं च नरवाहनयोगकृत् ॥ १० ॥
नीलवस्त्रादिलाभश्च नीलाश्वं लभते च सः ।
पश्चिमां दिशमाश्रित्य प्रयाणं राजदर्शनम् ॥ ११ ॥

वाहन, वस्त्र, पशु आदि तथा भूमि का लाभ और स्थान का लाभ होता है। पुत्र मित्र आदि का सुख और मनुष्य को सवारी का लाभ होता है॥ १०॥ नीले वस्त्र, नीले घोड़े का लाभ, पश्चिम दिशा की यात्रा और राजा का दर्शन॥ ११॥

अनेकयानलाभं च निर्दिशेन्मन्दभुक्तिषु ।
लग्नात्षष्ठाष्टमे मन्दे व्यये नीचेऽस्तगेऽरौ ॥ १२ ॥
धनधान्यादिनाशश्च ज्वरपीडा मनोरुजम् ।
स्त्रीपुत्रादिषु पीडा वा व्रणार्त्यादिकयुग्भवेत् ॥ १३ ॥

अनेक प्रकार की स्वारी का लाभ होता है लग्न से ६।८।१२ स्थान में शनि अस्त हो तो नीच वा शत्रु राशि में॥ १२॥ धन-धान्य का नाश, ज्वर से पीड़ा, मानसिक कष्ट, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट, व्रण का दुःख॥ १३॥

गृहेत्वशुभकार्याणि भृत्यवर्गादिपीडनम् ।
गोमहिष्यादिहानिश्च बन्धुद्वेष्यो भविष्यति ॥ १४ ॥
दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा ।
भूलाभश्चार्थलाभश्च पुत्रलाभसुखं भवेत् ॥ १५ ॥

घर में अशुभ कार्य, नौकरों को कष्ट, गौ, भैंस आदि को कष्ट, बन्धुओं से द्वेष होता है॥ १४॥ दशेश से केन्द्र वा कोण वा लाभ वा धन स्थान में हो तो भूमिका लाभ, पुत्र का लाभ सुख॥ १५॥

गोमहिष्यादिलाभश्च शूद्रमूलाद्धनं भवेत् ।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ॥ १६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धनधान्यादिनाशश्च बंधुमित्रविरोधकृत् ।
उद्योगभङ्गो देहार्तिः स्वजनानां महद्भयम् ॥ १७॥

गौ, भैंस का लाभ और शूद्र के द्वारा धन का लाभ होता है। दशेश से ६।८।१२ वें स्थानमें पापग्रहसे युत हो तो।१६। धन-धान्य का नाश, बंधु मित्रादि से विरोध, उद्योगहीन, शरीर में कष्ट और स्वजनों से भय होता है॥ १७॥

द्विसप्तमाधिपे मन्दे ह्यपमृत्युर्भविष्यति ॥ १८॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ।
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत् ॥ १९॥

२।७ भाव का स्वामी शनि हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इसके शान्ति के लिये विष्णु सहस्त्र नाम का जप, काली गौ और भैंस के दान करने से आरोग्यता प्राप्त होती है॥ १८-१९॥

अथ गुरुदशायां बुधान्तर्दशाफलम्-

जीवस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि दशाधिपसमन्विते ॥ २०॥
अर्थलाभं देहसौख्यं राज्यलाभं महत्सुखम् ।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहा ॥ २१॥

गुरु के दशा में केन्द्र वा त्रिकोण में गये हुये अपने उच्च वा अपने राशि में वा दशेश से युत बुध के अन्तर में॥ २०॥ धन का लाभ, अत्यन्त सुख, राज्य का लाभ और देह का सुख महाराज के प्रसन्नता से इष्ट की सिद्धि, सुख होता है॥ २१॥

वाहनाम्बरपश्वादिगोधनैः संकुलं गृहम् ।
दायेशाद्भाग्यकोणे वा केन्द्रे वा तुङ्गगेऽथवा ॥ २२॥
स्वदेशेधनलाभश्च पितृमातृसुखावहः ।
गजवाजिसमायुक्ते राजमित्रप्रसादकः ॥ २३॥

वाहन, वस्त्र, पशु आदि से पूर्णता होती है। दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण स्थान में अपने उच्च में हो तो॥ २२॥ स्वदेश में ही धन का लाभ, पिता-माता को सुख, हाथी-घोड़ा से युक्त और राजा से मित्रता होती है॥ २३॥

शुभदृष्टौ शुभैर्युक्ते दारसौख्यं धनागमम् ।
आदौ शुभं देहसौख्यं वाहनाम्बरलाभदम् ॥ २४॥
अन्ते तु धनहानिः स्यात्स्वात्मसौख्यं च जायते ।
महीसुतेन संदृष्टे शत्रुवृद्धिः सुखक्षयम् ॥ २५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभग्रह से दृष्ट और युत हो तो देहसुख, वाहन, वस्त्र का लाभ होता है॥ २४॥ अन्त में धन की हानि और आत्मसुख होता है। मंगल से दृष्ट हो तो शत्रुओं की वृद्धि और सुख की हानि होती है॥ २५॥

व्यवसायात्फलं नेष्टं ज्वरातिसारपीडनम्।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥ २६॥
शुभदृष्टिविहीनश्चेद् धनधान्यपरिच्युतिः।
विदेशगमनं चैव मार्गे चौरभयं तथा।
व्रणदाहाक्षिरोगश्च नानादेशपरिभ्रमम्॥ २७॥

दशेश से ६।८।१२ वें भाव में हो और पापग्रह से युत हो तो रोजगार में हानि, ज्वर और अतिसार से कष्ट होता है॥ २६॥ शुभग्रह से न देखा जाता हो तो धन-धान्य का नाश, विदेशगमन एवं रास्ते में चोर का भय के साथ ही व्रण, दाह, नेत्र का रोग व अनेक देशों का भ्रमण होता है॥ २७॥

लग्नात्षष्ठाष्टरिःफे वा लाभे वा पापसंयुते।
अकस्मात्कलहश्चैव गृहे निष्ठुरभाषणम्॥ २८॥
चतुष्पाज्जीवहानिश्च व्यवहारस्तथैव च।
अपमृत्युभयं चैव शत्रूणां कलहो भवेत्॥ २९॥

व्रण, दाह, नेत्र का रोग व अनेक देशों का भ्रमण होता है, लग्न से ६।८।११।१२ भाव में बुध पापग्रह से युक्त हो तो॥ २८॥ अकस्मात् कलह, गृह कलह, निष्ठुर भाषण, चतुष्पदों की हानि, व्यवहार में क्षति, अपमृत्यु का भय एवं शत्रुओं से कलह होता है॥ २९॥

द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥ ३०॥
बुधप्रीतिकरं चैव दानं शान्तिं च कारयेत्।
आयुवृद्धिकरं चैव सर्वं सौभाग्यसंपदम्॥ ३१॥

बुध २।७ भाव के अधिपति हों तो अकालमृत्यु का भय होता है दोष शान्ति हेतु विष्णु सहस्र-नाम-स्तोत्र का जप करना चाहिए॥३०॥ बुध की प्रसन्नता एवं शान्ति करने से आयु की वृद्धि, सभी सौभाग्य और सम्पत्ति प्राप्त होती है॥३१॥

अथ गुरुदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

जीवस्थान्तर्गते केतौ शुभग्रहसमन्विते।
अल्पसौख्यधनावाप्तिर्कुत्सितान्नस्य भोजनम्॥ ३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

परान्नं चैव श्राद्धान्नं पापमूलाद्धनानि च ।
दायेशात्सुतभाग्यस्थे वाहने कर्मगेऽपि वा ॥ ३३ ॥

गुरु की दशा में शुभग्रह से युक्त केतु के अन्तर में अल्प सुख एवं धन का लाभ होता है। कुत्सित अन्न का भोजन॥ ३२॥ परान्न वा श्राद्धान्न का भोजन तथा पापमूल से धन का लाभ होता है दशेश से ५।९।४।१० भाव में हो तो॥ ३३॥

नरवाहनयोगश्च गजाश्वाम्बरसंकुलम् ।
महाराजप्रसादेन इष्टकार्यार्थलाभकृत् ॥ ३४ ॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं गोमहिष्यादिलाभकृत् ।
यवनप्रभुमूलाद्वा द्रव्यवस्त्रादिलाभकृत् ॥ ३५ ॥

मनुष्य के सवारी का योग, हाथी-घोड़ा, वस्त्र और व्यवसाय से अधिक लाभ, महाराजा की प्रसन्नता से इष्टकार्य की सिद्धि होती है।३४। और गौ, भैंस आदिका लाभ,नीच जातीयराजासे द्रव्यवस्त्रादिका लाभ होता है।३५।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ।
राजकोपं धनच्छेदो बंधनं बन्धुपीडनम् ॥ ३६ ॥
बलहानिः पितृद्वेषो भ्रातृद्वेषो मनोरुजः ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ॥ ३७ ॥

गुरु दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो तो राजा के कोप से धन की हानि, बंधुओं को कष्ट होता है। ३६। पिता से द्वेष, भाई से द्वेष एवं मानसिक कष्ट होता है, २ वा ७ भावका स्वामीहो तो देहबाधा होती है।३७।

छागदानं प्रकुर्वीत मृत्युंजयजपं चरेत् ।
सर्वदोषोपशमनीं शान्तिं कुर्याद्विधानतः ॥ ३८ ॥

बकरी का दान और मृत्युञ्जय का जप करना चाहिए। सभी दोषों के शमन करने वाली शान्ति को विधानपूर्वक करना चाहिये॥ ३८॥

अथ गुरुदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्-

जीवस्यानार्गते शुक्रे भाग्यकेन्द्रेशसंयुते ।
लाभे वा सुतराशिस्थे स्वक्षेत्रे शुभसंयुते ॥ ३९ ॥
महाराजप्रसादेन देशाधिक्यं महत्सुखम् ॥ ४० ॥

गुरु की दशा में भाग्येश केन्द्रेश से युत वा लाभ स्थान वा पाचवें स्थान में अपने राशि में शुभग्रह से युत शुक्र के अन्तर में॥ ३९॥ महाराजा की प्रसन्नता से देश का लाभ और सुख॥ ४०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नीलाम्बराणि शस्त्राणि लाभश्चैव भविष्यति ।
पूर्वस्यां दिशि आश्रित्य प्रयाणं धनलाभदम् ॥४१॥
कल्याणं च महाभीतिः पितृमातृसुखावहा ।
देवतागुरुभक्तिश्च अन्नदानं महत्तथा ॥४२॥

नीले रंग के वस्त्र, शस्त्र का लाभ, पूर्व दिशा की यात्रा से धन का लाभ होता है॥ ४१ ॥ कल्याण, महाभय, पिता-माता को सुख, देवता-गुरु में भक्ति और बड़े पैमाने पर अन्न का दान॥ ४२॥

तडागगोपुरादीनि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः ।
षष्ठाष्टमव्यये नीचे दायेशाद्वा तथैव च ॥४३॥
कलहो बंधुवैषम्यं दारपुत्रादिपीडनम् ।
मन्दारराहुसंयुक्ते कलहो राजविड्वरम् ॥४४॥

तालाब-गोपुर आदि पुण्यदायक अनेक कार्य होते हैं। यदि शुक्र लग्न से वा दशेश से ६।८।१२ स्थान में नीच में हों तो॥ ४३॥ उसके अन्तर में कलह, बंधुओं से वैर, स्त्री-पुत्र आदि को पीड़ा होती है। शनि-भौम से राहु से युत हो तो कलह, राजा से शत्रुता॥ ४४॥

स्त्रीमूलात्कलहश्चैव श्वशुरात्कलहस्तथा ।
सोदरेण विवादः स्याद्धनधान्यपरिच्युतिः ॥४५॥
दायेशात्केन्द्रराशिस्थे धने वा भाग्यगेऽपि वा ।
धनधान्यादिलाभश्च स्त्रीलाभो राजदर्शनम् ॥४६॥

स्त्री के कारण कलह श्वसुर से कलह, भाई से झगड़ा और धन-धान्य की हानि होती है॥ ४५॥ दशेश से केन्द्र वा धन, वा भाग्य में हो तो धन-धान्य का लाभ, स्त्री का लाभ, राजा का दर्शन॥ ४६॥

वाहनं पुत्रलाभश्च पशुवृद्धिमहत्सुखम् ।
गीतवाद्यप्रसंगादि - विद्वज्जनसमागमः ॥४७॥
दिव्यान्नभोजनं सौख्यं स्वबन्धुजनपोषणम् ।
द्विसप्तमाधिपे शुक्रे तद्दशायां यशक्षतिः ॥४८॥

वाहन और पुत्र का लाभ, पशुओं की वृद्धि और सुख, गीत, बाजा का प्रसंग, विद्वानों का समागम॥ ४७॥ दिव्य पदार्थ का भोजन, सुख और अपने बंधुओं का भरणपोषण होता है। यदि शुक्र २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो उसके अन्तर में यश की हानि होती है॥ ४८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अपमृत्युभयं तस्य स्त्रीमूलादौषधादिभिः ।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं शान्तिकर्म समाचरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धिकृत् ॥४६॥

स्त्री के कारण औषधि आदि से अपमृत्यु का भय होता है। उस रोग की शान्ति के लिए शान्तिकर्म करना चाहिए और आयु आरोग्यता के लिए श्वेत (सफेद) गौ एवं भैंस का दान करना चाहिए॥ ४६॥

अथ गुरुदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

जीवस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ।
केन्द्रे वाथ त्रिकोणे च दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ॥५०॥
भाग्ये वा बलसंयुक्ते दायेशाद्वा तथैव च ।
तत्काले धनलाभः स्याद्राजसन्मानवैभवम् ॥५१॥

गुरु की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि में केन्द्र वा त्रिकोण वा तीसरे वा लाभ स्थान में॥ ५०॥ वा भाग्य स्थान में गये हुये बलवान् ग्रह से युक्त, इसी प्रकार दशेश से भी हो तो सूर्य के अन्तर में धन का लाभ, राजा से सम्मान, वैभव की प्राप्ति॥ ५१॥

वाहनाम्बरपश्वादि भूषणं पुत्रसम्भवम् ।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वकार्यं शुभावहम् ॥५२॥
षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च ।
शिरोरोगादिपीडा च ज्वरपीडा तथैव च ॥५३॥

मित्र और राजा के द्वारा इष्ट की सिद्धि और सभी कार्य में सफलता की प्राप्ति होती है॥ ५२॥ लग्न से वा दशेश से ६।८।१२ भाव में सूर्य हो तो शिर में रोग, ज्वर आदि से कष्ट॥ ५३॥

सत्कर्मणि विहीनत्वं पापकर्म तथैव च ।
सर्वत्र जनविद्वेषो ह्यात्मबन्धुवियोगकृत् ॥५४॥

अच्छे कर्मों से विरक्ति, पापकर्म में तल्लीनता, सभी लोगों से विरोध, आत्मीय बंधुओं से वियोग अकस्मात् कलह होता है॥ ५४॥

अकस्मात्कलहश्चैव जीवस्यान्तर्गते रवौ ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहपीडा भविष्यति ॥५५॥

यदि सूर्य २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो गुरु दशा में इसके अन्तर में देह में पीड़ा होती है॥ ५५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तद्दोषपरिहारार्थमादित्यहृदयं जपेत् ।
सर्वपीडोपशमनं सूर्यप्रीतिं च कारयेत् ॥५६॥

इस दोष के शान्त्यर्थ आदित्यहृदय का जप करना चाहिए और सभी पीड़ाओं के शान्त्यर्थ सूर्य को प्रसन्न करना चाहिए॥५६॥

अथ गुरुदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्-

जीवस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रे लाग्नत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षराशिस्थे पूर्णचन्द्रे बलैर्युते ॥५७॥
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसन्मानवैभवम् ।
दारपुत्रादिसौख्यं च क्षीराणां भोजनं तथा ॥५८॥

गुरु की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण में अपने उच्च वा अपने राशि में गया हुआ पूर्णचन्द्र बली हो॥५७॥ वा दशेश से उक्त भावों में शुभ राशि में हो तो चन्द्रमा के अन्तर में राजा से सन्मान और वैभव का लाभ, स्त्री-पुत्र आदि को सुख, दूध का भोजन॥५८॥

सत्कर्म च तथा कीर्त्तिः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ।
महाराजप्रसादेन सर्वसौख्यं धनागमम् ॥५९॥
अनेकजनसौख्यं च दानधर्मादिसंग्रहः ।
षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे संस्थिते पापसंयुते ॥६०॥

अच्छे कर्म, यश, पुत्र-पौत्र की वृद्धि, महाराजा की प्रसन्नता से सभी सुख, धन का आगम॥५९॥ अनेक लोगों से सुख और दान धर्मादि कृत्यों का संग्रह होता है॥६०॥

दायेशात्षष्ठरंध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ।
मानार्थबन्धुहानिश्च विदेशपरिविच्युतिः ॥६१॥
नृपचौरादिपीडा च दायादजनविद्विषम् ।
मातुलादिवियोगश्च मातृपीडा तथैव च ॥६२॥

यदि चन्द्रमा ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो वा दशेश से ६।८।१२ भाव में निर्बल हो तो इसके अन्तर में मान, धन एवं बन्धु की हानि, विदेश में हानि॥६१॥ राजा, चोर आदि से कष्ट, दायादों से विग्रह, मामा आदि का वियोग और माता को कष्ट होता है॥६२॥

द्वितीयषष्ठयोरीशे देहपीडा भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गापाठं च कारयेत् ॥६३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

२ वा ६ भाव का स्वामी हो तो शरीर में पीड़ा होती है। इस दोष के शान्त्यर्थ दुर्गापाठ करना चाहिये॥ ६३॥

अथ गुरुदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

जीवस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि तुङ्गांशे स्वांशगेऽपि वा॥ ६४॥

गुरु की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण वा अपने उच्च वा अपने राशि वा उच्चांश वा अपने नवांश में गये हुए भौम के अन्तर में॥ ६४॥

विद्याविवाहकार्याणि ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
जनसामर्थ्यमाप्नोति सर्वकार्यार्थसिद्धिदम्॥ ६५॥

विद्या, विवाह आदि कार्य, ग्राम भूमि आदि की प्राप्ति, लोगों से सम्पर्क और सभी कार्य की सफलता और धन का लाभ होता है॥ ६५॥

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे धनधान्यादिसम्पदम्॥ ६६॥
मिष्टान्नदानविभवो राजप्रीतिकरं शुभम्।
स्त्रीसौख्यं च सुतावाप्तिः पुण्यतीर्थफलप्रदम्॥ ६७॥

दशेश से केन्द्र कोण में वा लाभ स्थान वा धन स्थान में शुभग्रह से युक्त शुभग्रह से दृष्ट हो तो धनधान्य आदि सम्पत्ति का लाभ॥ ६६॥ मिष्ठान्न का दान, वैभव का लाभ, राजा से प्रेम, स्त्री को सुख, पुत्र का लाभ और पुण्यतीर्थ का लाभ होता है॥ ६७॥

दायेशात्षष्ठरंध्रे वा व्यये वा नीचगेऽपि वा।
पापयुक्तेक्षिते वापि धान्यार्थगृहनाशनम्॥ ६८॥

दशेश से ६।८।१२ भाव में नीच राशि में पापग्रह से युत दृष्ट हो तो धन-धान्य व गृह नाश॥ ६८॥

नानारोगभयं दुःखं नेत्ररोगादिसम्भवम्।
पूर्वार्धे क्लेशमधिकमपरार्धे महत्सुखम्॥ ६९॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरुजम्।
अनड्वाहं दद्याच्च सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥ ७०॥

अनेक रोगों का भय, दुःख, नेत्ररोग की सम्भावना होती है। अन्तर के पूर्वार्ध में अधिक कष्ट और उत्तरार्ध में बड़ा सुख होता है॥ ६९॥ २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो देह में जड़ता होती है और मन में विकार होता है। वृष के दान करने से सभी सम्पत्तियों का लाभ होता है॥ ७०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ गुरुदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

जीवस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे वा केन्द्रगेऽपि वा।
मूलत्रिकोणे भाग्ये च केन्द्राधिपसमन्विते ॥७१॥
शुभयुक्तेक्षिते वापि योगप्रीतिं समादिशेत्।
भुक्त्यादौ शरमासांश्च धनधान्यपरिश्रमम् ॥७२॥

गुरु की दशा में अपने उच्चराशि में वा केन्द्र में वा मूलत्रिकोण वा भाग्य में केन्द्रेश से युत वा।७१। शुभग्रह से युक्त दृष्ट राहुके अन्तरमें योग की प्रखरता होती है। अन्तर के आदि में ५ मास धन-धान्य और परिश्रम॥७२॥

देशग्रामाधिकारश्च यवनप्रभुदर्शनम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्बहुसेनाधिपत्यताम् ॥७३॥
दूरयात्राभिगमनं पुण्यधर्मादिसंग्रहः।
सेतुस्नानफलावाप्तिरिष्टसिद्धिसुखावहम् ॥७४॥

देश-ग्राम की स्वामिता, यवन राजा का दर्शन, गृह में कल्याण कार्य, सम्पत्तिकी प्राप्ति और अनेक अधिकार।७३। दूर की यात्रा, पुण्य-धर्म आदि का संग्रह, समुद्र-स्नान का लाभ और सुखकर इष्टसिद्धि होती है॥७४॥

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते।
चौराहिव्रणभीतिश्च राजवैषम्यमेव च ॥७५॥
गृहे कर्मकलापेन व्याकुलो भवति ध्रुवम्।
सोदरेण विरोधः स्याद्दायादजनविग्रहम् ॥७६॥
गृहे त्वशुभकार्याणि दुःस्वप्नादिभयं ध्रुवम्।
अकस्मात्कलहश्चैव क्षुद्रशून्यादिरोगकृत् ॥७७॥

दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो तो चौर, सर्प तथा व्रण से भय, राज से विरोध॥७५॥ गृह में कर्म कलाप से व्याकुलता, पुत्र से विरोध, दायादों से विग्रह॥७६॥ घर में अशुभ कार्य, दुःस्वप्न से भय, अकस्मात् कलह, क्षुद्र लकवा आदि रोगों का भय होता है॥७७॥

द्विसप्तमस्थिते राहौ देहबाधां विनिर्दिशेत्।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।
छागदानं प्रकुर्वीत सर्वसौख्यादिमादिशेत् ॥७८॥

२ या ७ भाव में राहु हों तो शरीरबाधा होती है। इस दोष के शान्त्यर्थ मृत्युञ्जय का जप और बकरी का दान करने से सभी सुखों की प्राप्ति होती है॥७८॥

इति गुर्वन्तर्दशाफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ शनिदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्

मूलत्रिकोणे स्वर्क्षे वा तुलायामुच्चगेऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा राजयोगादिसंयुते ॥ १ ॥
राज्यलाभो महत्सौख्यं दारपुत्रादिवर्धनम् ।
वाहनत्रयसंयुक्तं गजाश्वाम्बरसंकुलम् ॥ २ ॥

शनि की दशा में अपने मूलत्रिकोण, अपने राशि, तुला राशि में, परमोच्च में केन्द्र, त्रिकोण वा लाभ में गये हुये राजयोग से पूर्ण शनि के अन्तर में ॥ १ ॥ राज का लाभ, अधिक सुख, स्त्री-पुत्र आदि की वृद्धि होती है, तीनों प्रकार के तथा वाहनों का सुख, घोड़ा, हाथी, वस्त्र का सुख होता है ॥ २ ॥

महाराजप्रसादेन अश्वदौत्यादिलाभकृत् ।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ॥ ३ ॥
षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा पापसंयुते ।
तद्भुक्त्यादौ राजप्रीतिर्विषशस्त्रादिपीडनम् ॥ ४ ॥

महाराजा के प्रसाद से घोड़ा सवारी और दूत का लाभ, चौपाये जीव का लाभ और ग्राम तथा भूमि का लाभ होता है ॥ ३ ॥ यदि शनि ६।८।१२ भाव में वा अपने नीच राशि में पापग्रह से युत हो तो, अन्तर में राजा से प्रेम, विष-शस्त्र आदि से पीड़ा ॥ ४ ॥

रक्तस्रावो गुल्मरोगश्चातिसारादिपीडनम् ।
मध्ये चौरादिभीतिश्च देशत्यागो मनोरुजम् ॥ ५ ॥
अंते शुभकरं चैव ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ॥ ६ ॥

रक्तस्राव, गुल्मरोग, अतिसार से पीडा होती है। अन्तर के मध्य में चौर आदि से भय, देशत्याग, मानसिक कष्ट।५। और अन्तमें शुभफल, ग्राम, भूमि आदि का लाभ होता है। २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है, इस दोष की शान्ति के लिये मृत्युन्जय का जप करना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ शनिदशायां बुधान्तर्दशाफलम्

मन्दस्यान्तर्गते सौम्ये त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा ।
सम्मानं च यशः कीर्त्तिर्विद्यालाभं धनागमम् ॥ ७ ॥
स्वदेशे सुखमाप्नोति वाहनादिफलैर्युतम् ।
यज्ञादिकर्मसिद्धिश्च राजयोगादिसम्भवम् ॥ ८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनि की दशा में त्रिकोण वा केन्द्र में गये हुए बुध के अन्तर में सम्मान, यश, कीर्ति, विद्या और धन का लाभ होता है॥७॥ अपने देश में सुख का लाभ, वाहन आदि से युक्त होता है। यश आदि कर्मों की सिद्धि, राजयोग की सम्भावना॥८॥

देहसौख्यं हृदुत्साहं गृहे कल्याणसम्भवम्।
सेतुस्नानफलावाप्तिः तीर्थयात्रादिकर्मणा॥९॥
वाणिज्याद्धनलाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
अन्नदानफलं चैव नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥१०॥

देह में सुख, हृदय में उत्साह, गृह में कल्याण, समुद्रस्नान और पुण्यतीर्थ की यात्रा का अवसर प्राप्त होता है॥९॥ व्यापार से धन का लाभ और पुराण आदि का श्रवण, अन्नदान का फल और नित्य मिष्टान्न भोजन होता है॥१०॥

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये नीचे वास्तंगते सति।
रव्यारफणिसंयुक्ते दायेशाद्वा तथैव च॥११॥
नृपाभिषेकमर्थाप्तिर्देशग्रामाधिपत्यता।
फलमीदृशमादौ तु मध्यान्ते रोगपीडनम्॥१२॥

यदि बुध ६।८।१२ भाव में वा नीच राशि में वा अस्त हो और रवि, भौम, राहु से युक्त हो, इसी प्रकार दशेश से भी स्थित हो तो अपने अन्तर में॥११॥ राज्याभिषेक, धन का लाभ और देश वा ग्राम का आधिपत्य होता है। ऐसा फल अन्तर के आरम्भ में होता है, मध्य और अन्त में रोग और पीड़ा होती है॥१२॥

नष्टानि सर्वकार्याणि व्याकुलत्वं महद्भयम्।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति॥१३॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
अन्नदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥१४॥

सभी कार्य नष्ट हो जाते हैं, व्याकुलता और बड़ा भय होता है। दूसरे या सातवें भाव के अधिपति हों तो शरीर में बाधा होती है॥१३॥ इस दोष की शान्ति के लिये विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र का जप और अन्नदान करना चाहिए। इसके करने से सभी सम्पत्तियों का लाभ होता है॥१४॥

अथ शनिदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

मन्दस्यान्तर्गते केतौ शुभदृष्टियुतेक्षिते।
स्वोच्चे वा शुभराशिस्थे योगकारकसंयुते॥१५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मंदस्यान्तर्गते केतौ स्थानभ्रंशो महद्भयम् ।
दरिद्रबंधनं भीतिः पुत्रदारादिनाशनम् ॥ १६ ॥

शनि की दशा में शुभग्रह से युत दृष्ट वा अपने उच्च वा शुभराशि में गये हुए योगकारक ग्रह से युक्त ॥ १५ ॥ केतु के अन्तर में स्थानभ्रष्टता, महाभय, दरिद्रता, बन्धन, भय, पुत्र, स्त्री का नाश ॥ १६ ॥

स्वप्रभोश्च महान् क्लेशो विदेशगमनं तथा ।
लग्नाधिपेन संयुक्तं आदौ सौख्यं धनागमम् ॥ १७ ॥
गङ्गादिसर्वतीर्थेषु स्नानं दैवतदर्शनम् ।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये धनराशिगे ॥ १८ ॥

अपने स्वामी को कष्ट, विदेश यात्रा होती है। लग्नेश युक्त हो तो अन्तर के आदि में सुख, धन का आगम ॥ १७ ॥ गंगा आदि तीर्थों में देवताओं का दर्शन होता है, दशेश से केन्द्र वा कोण में वा ३ । २ भाव में हो तो ॥ १८ ॥

समर्थो धर्मबुद्धिश्च सौख्यं नृपसमागमः ।
षष्ठाष्टमव्यये केतौ दायेशाद्वा तथैव च ॥ १९ ॥
अपमृत्युभयं चैव कुत्सितान्नस्य भोजनम् ।
शीतज्वरातिसारश्च व्रणचौरादिपीडनम् ॥ २० ॥

समर्थ, धार्मिक बुद्धि, सुख, राजा से समागम से संयुक्त होता है, ६ । ८ । १२ भाव में केतु हो, इसी प्रकार दशेश से भी इन्हीं भावों में हो तो ॥ १९ ॥ अपमृत्यु का भय, खराब अन्न का भोजन, शीतज्वर, अतिसार, व्रण, चौर आदि से कष्ट होता है ॥ २० ॥

दारपुत्रवियोगश्च संसारे भवति ध्रुवम् ।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहपीडा भविष्यति ।
छागदानं प्रकुर्वीत ह्यपमृत्युभयं हरेत् ॥ २१ ॥

स्त्री-पुत्र आदि से वियोग निश्चयरूप से होता है। यदि २ वा ७ भाव में हो तो शरीर में पीड़ा होती है, इसके शान्त्यर्थ बकरी का दान करना चाहिए जिससे अपमृत्यु का भय नहीं होता है ॥ २१ ॥

अथ शनिदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्-

मन्दस्यान्तर्गते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ॥ २२ ॥
दारपुत्रधनप्राप्तिर्देहारोग्यं महोत्सवः ।
गृहे कल्याणसम्पत्ती राज्यलाभो महत्सुखम् ॥ २३ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनि की दशा में अपने उच्च वा राशि में वा केन्द्र से वा शुभयुक्त वा त्रिकोण वा लाभ स्थान में गये हुए शुक्र के अन्तर में॥ २२॥ स्त्री-पुत्र, धन का लाभ, देह में आरोग्यता, बड़ा उत्सव, गृह में कल्याण, धन-धान्य, सम्पत्ति का लाभ, राज्य का लाभ और बड़ा सुख॥ २३॥

महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहा।
सम्मान आत्मसन्तोषः प्रियवस्त्रादिलाभकृत्॥ २४॥
द्वीपान्तराद्वस्त्रलाभः श्वेताश्वो महिषी तथा।
गुरुचारवशाद्भाग्यं सौख्यं च धनसम्पदः॥ २५॥

और महाराजा की प्रसन्नता से सुखकर इष्टसिद्धि, सम्मान, आत्म-संतोष, प्रियवस्त्रों का लाभ॥ २४॥ द्वीपान्तर (परदेश) से वस्त्र का लाभ, सफेद घोड़ा, भैंस का लाभ होता है। गुरु के संचार से भाग्य, सुख और धन-सम्पत्ति का लाभ होता है॥ २५॥

शनिचारान्मनुष्योऽसौ योगमाप्नोत्यसंशयम्।
दायेशाद्भाग्यगे चैव केन्द्रे वा लाभसंयुते॥ २६॥
राज्यप्रीतिकरं चैव मनोऽभीष्टप्रदायकम्।
दानधर्मदयायुक्तस्तीर्थयात्रादिकं फलम्॥ २७॥

और शनि के संचार होने से निःसंशय योग को पाता है। दशेश से भाग्य वा केन्द्र वा लाभ में हो तो॥ २६॥ मनोनुकूल अभीष्ट की सिद्धि होती है। दान, धर्म और दया से युक्त हो तो तीर्थयात्रा आदि करता है॥ २७॥

शास्त्रार्थकाव्यरचना वेदांतश्रवणादिकम्।
दारपुत्रादिसौख्यं च वाहनच्छत्रलाभदम्॥ २८॥
शत्रुनीचास्तगे शुक्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
दारनाशो मनःक्लेशो स्थाननाशो मनोरुजम्॥ २९॥

शास्त्रार्थ और काव्य रचना और वेदांत को सुनता है। स्त्री-पुत्र आदि का सुख और वाहन-छत्र आदि का लाभ होता है॥ २८॥ यदि शुक्र शत्रु राशि वा नीचराशि वा ६।८।१२ भाव में हो तो स्त्री का नाश, मन को कष्ट, स्थान का नाश, मन में कष्ट॥ २९॥

दारनाशो जनक्लेशः सन्तापो जनविग्रहः।
दायेशाद् व्ययगे शुक्रे षष्ठे वाष्टमेऽपि वा॥ ३०॥
नेत्रपीडा ज्वरभयः स्वकुलाचारवर्जितः।
कपोले दन्तशूलादि हृदि गुह्ये च पीडनम्॥ ३१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्वजनोंको कष्ट तथा सन्ताप, जनसमूहसे वैर होता है, दशेशसे बारहवें वा छठें वा आठवें भाव में शुक्र हो तो।३०। नेत्रमें पीड़ा, ज्वर, भय, आचार भ्रष्ट, कपोल तथा दांत में पीड़ा और हृदय तथा गुह्यस्थान में पीड़ा॥३१॥

जलभीतिर्मनस्तापो वृक्षात्पतनसम्भवः।
राजद्वारे जयद्वेषः सोदरेण विरोधनम्॥३२॥
द्वितीयसप्तमाधीशे आत्मक्लेशो भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादिव्या जपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धिदाम्॥३३॥

जल से भय, मन में संताप, वृक्ष से गिरने की संभावना, राजद्वार में विजय होने से द्वेष तथा अपने भाइयों से विरोध होता है॥३२॥ यदि २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो आत्मा को कष्ट होता है। इस दोष के शान्त्यर्थ दुर्गादिवी का जप करना चाहिये और सफेद गौ, भैंस का दान करने से आयु, आरोग्यता की प्राप्ति होती है॥३३॥

अथ शनिदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

मन्दस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
भाग्याधिपेन संयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥३४॥
शुभदृष्टियुते वापि स्वप्रभोश्च महत्सुखम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिः पुत्रादिसुखवर्धनम्॥३५॥

शनि की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि में भाग्येश युक्त अथवा केन्द्र लाभ त्रिकोण में॥३४॥ शुभग्रह से दृष्टयुत सूर्य के अन्तर में अपने मालिक से सुख, गृह में कल्याण और सम्पत्ति, पुत्र आदि के सुख की वृद्धि॥३५॥

वाहनाम्बरपश्वादिगोक्षीरैः संकुलं गृहम्।
षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च॥३६॥
हृद्रोगो मानहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोरुजा।
इष्टबंधुवियोगश्च उद्योगस्य विनाशनम्॥३७॥

वाहन-वस्त्र पशु आदि की वृद्धि और गौ के दूध से घर भरा रहता है यदि सूर्य लग्न वा दशेश ६।८।१२ भाव में हो तो॥३६॥ हृदय का रोग मानहानि, स्थानहानि, मानसिक कष्ट, इष्ट बन्धु का वियोग, उद्योग (व्यवसाय) की हानि॥३७॥

तापज्वरादिपीडा च व्याकुलत्वं भयं तथा।
आत्मसम्बन्धिमरणम् इष्टबन्धुवियोगकृद्॥३८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं सूर्यपूजां च कारयेत् ॥ ३९ ॥

तापज्वर से पीड़ा, व्याकुलता और भय होता है। आत्मीय सम्बन्धी की मृत्यु, प्रियबन्धु का वियोग होता है॥ ३८॥ २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो शरीरबाधा होती है। इसके शान्त्यर्थ सूर्य की पूजा करनी चाहिए॥ ३९॥

अथ शनिदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्-

मन्दस्यान्तर्गते चन्द्रे जीवदृष्टिसमन्विते ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ॥ ४० ॥
पूर्णचन्द्रे सौम्ययुक्ते राजप्रीतिसमागमम् ।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ॥ ४१ ॥

शनि की दशा में गुरु के दृष्टि से उक्त अपने उच्च वा अपने राशि में केन्द्र-त्रिकोण वा लाभ में॥ ४०॥ पूर्णचन्द्र शुभग्रह से युत हो तो इसके अन्तर में राजा से प्रेम और समागम होता है। महाराजा की प्रसन्नता से वाहन, वस्त्र आभूषण॥ ४१॥

सौभाग्यं सुखवृद्धि श्च भृत्योश्च परिपालनम् ।
पितृमातृकुले सौख्यं पशुवृद्धिः सुखावहा ॥ ४२ ॥
दायेशात्केन्द्राशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ।
वाहनाम्बरपश्वादि - भ्रातृवृद्धिः सुखावहा ॥ ४३ ॥

सौभाग्य, सुख में वृद्धि, भृत्यों का पालन, पिता-माता के कुल में सुख देने वाली पशु वृद्धि होती है।४२। दशेश से केन्द्र राशि में वा त्रिकोण में वा लाभ स्थान में हो तो वाहन, वस्त्र, पशु, भाई की वृद्धि सुखद होती है।४३।

पितृमातृसुखावाप्तिः स्त्रीसौख्यं च धनागमः ।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वसौख्यं शुभावहम् ॥ ४४ ॥
क्षीणो वा पापसंयुक्ते पापदृष्टौ विनीचगे ।
क्रूरांशकगते वापि क्रूरक्षेत्रगतेऽपि वा ॥ ४५ ॥

पिता-माता के सुख की प्राप्ति, स्त्री का सुख, धन का आगम, मित्र और स्वामी की कृपा से इष्टसिद्धि और सभी कल्याण देनेवाले सुख होते हैं॥४४॥ यदि चन्द्रमा क्षीण वा पापग्रह से युक्त, पापग्रह दृष्ट वा नीचराशि में हो अथवा क्रूरग्रह के अंश में वा क्रूरग्रह की राशि में हो तो॥ ४५॥

जातकस्य महत्कष्टं राजकोपाद्धनक्षयः ।
पितृमातृवियोगश्च पुत्रीपुत्रादिरोगकृत् ॥ ४६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

व्यवसायात्फलं नेष्टं नानामार्गे धनव्ययम् ।
अकाले भोजनं चैव औषधस्य च भक्षणः ॥४७॥

जातक को महाकष्ट, राजकोप से धन का नाश, पिता-माता से वियोग, पुत्रादि को रोग होता है॥ ४६॥ व्यवसाय में हानि, अनेक कार्यों में धनव्यय, कुसमय में भोजन औषध सेवन होता है॥ ४७॥

फलाधिक्याद्विवादं च आदौ सौख्यं धनागमम् ।
दायेशात्षष्टरिष्फे वा रन्ध्रे वा बलवर्जिते ॥४८॥
शयनं रोगमालस्यं स्थानभ्रंशः सुखावहम् ।
शत्रुवृद्धिर्विरोधश्चट इष्टबन्धुवियोगकृत् ॥४९॥

फल अधिक होने से विवाद, प्रथम धन का आगम और सुख होता है। दशेश से ६।१२।८ भाव में निर्बल हो॥ ४८॥ अधिक निद्रा, आलस्य, स्थान की हानि, सुख, शत्रु की वृद्धि, विरोध, और अभीष्ट बन्धु का वियोग होता है॥ ४९॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहालस्यों भविष्यति ।
तद्दोषशमनार्थं च तिलहोमादिकं चरेत् ॥५०॥
गुडं घृतं च दध्नाक्तं तण्डुलं च यथाविधि ।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दायुरारोग्यवृद्धिकृत् ॥५१॥

२ वा ७ भाव का स्वामी हो तो शरीर में अधिक आलस्य होता है। इस दोष के शान्त्यर्थ तिल का हवन आदि करना चाहिए॥ ५०॥ गुड़, घी, दही मिला हुआ चावल, सफेद गौ, भैंस की यथाविधि दान करने से आयु, आरोग्यता की प्राप्ति होती है॥ ५१॥

अथ शनिदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

मन्दस्यान्तर्गते भौमे केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
तुङ्गे स्वक्षेत्रगे वापि दशाधिपसमन्विते ॥५२॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमः ।
राजप्रीतिकरं सौख्यं वाहनाम्बरभूषणम् ॥५३॥

शनि की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण वा उच्च वा स्वराशि में दशेश वा॥ ५२॥ लग्नेश से युक्त भौम के अन्तर में पहले सुख, धन का आगम, राजा से प्रीति, सुख, वाहन, वस्त्र, आभूषण का लाभ होता है॥ ५३॥

सेनाधिपत्यं नृपप्रीतिः कृषिगोधान्यसंग्रहः ।
नूतनस्थाननिर्माणं भ्रातृवर्गेष्टसौख्यकृत् ॥५४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नीचे चास्तंगते भौमे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।
पापदृष्टियुते वापि धनहानिर्भविष्यति ॥५५॥

सेनाधिपति का अधिकार, राजा से प्रेम, कृषि, गौ, धान्य का संग्रह, नवीन स्थान का निर्माण, भाइयों से अभीष्ट सुख का लाभ होता है॥५४॥ यदि भौम अपने नीच में वा अस्त हो वा ६।८।१२ भाव में हो तो धन की हानि होती है॥५५॥

चौराहिव्रणशस्त्रादि ग्रंथिरोगादिपीडनम् ।
भ्रातृपुत्रादिपीडा च दायादजनविग्रहम् ॥५६॥
चतुष्पाज्जीवहानिश्च कुत्सितान्नस्य भोजनम् ।
विदेशगमनं चैव नानामार्गे धनव्ययः ॥५७॥

चोर-सर्प-फोड़ा, हथियार, ग्रंथि रोगादि से पीड़ा होती है, भाई-पुत्र को पीड़ा, दायादों से विग्रह॥५६॥ चौपाये जानवर की हानि, खराब अन्न का भोजन, विदेश यात्रा, अनेक प्रकार से धन व्यय होता है॥५७॥

अष्टमद्यूननाथे तु द्वितीयस्थेऽथवा यदि ।
अपमृत्युभयं चैव नानाकष्टपराभवः ॥५८॥
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिहोमं च कारयेत् ।
अनड्वाहं प्रदद्याच्च सर्वारिष्टप्रशान्तये ॥५९॥

आठवें वा दूसरे भाव का स्वामी हो तो अनेक कष्ट और पराभव होता है॥५८॥ इस दोष के शान्त्यर्थ शान्ति और हवन करना चाहिए और सभी अरिष्टों के शान्त्यर्थ बैल का दान करना चाहिये॥५९॥

अथ शनिदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

मन्दस्यान्तर्गते राहौ कलहश्च मनोव्यथा ।
देहपीडा मनस्तापः पुत्रद्वेषो मनोरुजा ॥६०॥
अर्थव्ययो राजभयं स्वजनादि ह्युपद्रवम् ।
विदेशगमनं चैव गृहक्षेत्रादिनाशनम् ॥६१॥

शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा में कलह, मानसिक कष्ट, शरीर में पीड़ा, मन में सन्ताप, पुत्र से द्वेष, मन में पीड़ा॥६०॥ धन का व्यय, राजभय, आपस के लोगों का उपद्रव, विदेश यात्रा और गृह-क्षेत्र आदि का विनाश होता है॥६१॥

लग्नाधिपेन संयुक्ते योगकारकसंयुते ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे केन्द्रे दायेशाल्लाभराशिगे ॥६२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आदौ सौख्यं धनावाप्तिं गृहक्षेत्रादिसंपदम् ।
देवब्राह्मणभक्तिं च तीर्थयात्रादिकं लभेत् ॥६३॥

यदि राहु लग्नेश से वा योगकारक से युत हो एवं अपने उच्च, क्षेत्र, केन्द्र में वा दशेश से लाभ स्थान में हो तो॥६२॥ आदि में सुख, धन का लाभ, गृह-क्षेत्र आदि का सुख, देवता एवं ब्राह्मण की भक्ति, तीर्थ-यात्रा आदि का लाभ होता है॥६३॥

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् गृहे कल्याणवर्धनम् ।
मध्ये तु राजभीतिश्च पुत्रमित्रविरोधनम् ॥६४॥
मेषादौच कन्ययां कुलीरे वृषभे तथा ।
मीनकोदंडसिंहेषु गजांतैश्वर्यमादिशेत् ॥६५॥

चतुष्पद जीव का लाभ, गृह में कल्याण की वृद्धि होती है। मध्य में राजभय, पुत्रमित्र आदि से विरोध होता है॥६४॥ मेष-कन्या, कर्क, वृष, मीन, धनु, सिंह राशि में हो तो गजांत ऐश्वर्य का लाभ॥६५॥

राजसन्मानभूप्राप्तिर्मृदुलाम्बरसौख्यकृत् ।
द्विसप्तमाधिपैर्युक्ते देहबाधा भविष्यति ॥६६॥
मृत्युंजयं प्रकुर्वीत छागदानं च कारयेत् ।
अनड्वाहं प्रदद्याच्च सर्वसम्पत्प्रदायकम् ॥६७॥

राजा से सम्मान, आभूषण का लाभ, कोमल वस्त्र से सुख होता है। यदि दूसरे वा सातवें भाव के स्वामी से युक्त हो तो शरीर में बाधा होने की सम्भावना होती है॥६६॥ इसकी शान्ति के लिए मृत्युंजय का जप, बकरी और बैल का दान करने से सभी सम्पत्तियों का लाभ होता है॥६७॥

अथ शनिदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्-

मन्दस्यान्तर्गतेजीवे केन्द्रे लाभत्रिकोणगे ।
लग्नाधिपेन संयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा ॥६८॥
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याच्छोभनं भवति ध्रुवम् ।
महाराजप्रसादेन धनवाहनभूषणम् ॥६९॥

शनि की दशा में केन्द्र, लाभ वा त्रिकोण में गये हुए लग्नेश से युत अपने उच्च वा अपनी राशि में गये हुए गुरु के अन्तर में॥६८॥ सभी प्रकार के कार्यों की सिद्धि तथा धन का लाभ होता है। महाराजा की प्रसन्नता से धन, वाहन एवं आभूषण का लाभ॥६९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

देवतागुरुभक्तिश्च विद्वज्जनसमागमः ।
दारपुत्रादिलाभश्च पुत्रकल्याणवैभवम् ॥७०॥
दायेशात्केन्द्रकोणे वा धने वा लाभगेऽपि वा ।
विभवो दारसौभाग्यं राजश्री - धनसम्पदः ॥७१॥

देवता-गुरु में भक्ति, विद्वानों का समागम, स्त्री-पुत्र आदि का लाभ, पुत्र का सुख और वैभव की प्राप्ति होती है।७०। दशेश से केन्द्र-कोण वा दूसरे वा लाभमें हो तो वैभव,स्त्रीका सुख,राज्यलक्ष्मी,धन- सम्पत्ति।७१।

भोजनाम्बर सौख्यं च दानधर्मादिकं लभेत् ।
ब्रह्मप्रतिष्ठासिद्धिश्च क्रतुकर्मफलप्रदम् ॥७२॥
अन्नदानं महाकीर्तिर्वेदांतश्रवणादिकम् ।
षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वा पापसंयुते ॥७३॥

भोजन-वस्त्र का सुख, दान, धर्मादि क्रियायें, प्रतिष्ठा का लाभ, यज्ञकर्म का फल॥७२॥ अन्नदान, अत्यन्त कीर्ति और वेदांत का श्रवण होता है। यदि गुरु ६।८।१२ भाव में हो वा नीच में वा पापयुत हो तो॥७३॥

आत्मसम्बंधिमरणं धनधान्यविनाशनम् ।
राजस्थानजनद्वेषः कार्यहानिर्भविष्यति ॥७४॥
विदेशगमनं चैव कुष्ठरोगादिसम्भवः ।
दायेशात्षष्ठरंध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ॥७५॥

आत्मीय संबंधि का मरण, धन-धान्य का नाश, राजकीय पुरुषों से द्वेष, कार्य की हानि होती है॥७४॥ विदेश यात्रा और कुष्ठरोग की सम्भावना होती है। दशेश से ६, ८ या १२ भाव में निर्बल हो तो॥७५॥

बंधुद्वेष मनोदुःखं कलहो पदविच्युतिः ।
कुभोजनं कर्महानीराजमूलाद्धनव्ययः ॥७६॥
कारागृहप्रवेशश्च पुत्रदारादिपीडनम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ॥७७॥

बन्धुओं से द्वेष, मन को दुःख, कलह और पद की हानि, कुभोजन, कार्य की हानि, राजमूल से धन का व्यय॥७६॥ जेलयात्रा, पुत्र-स्त्री को कष्ट होता है। २।७ भाव का स्वामी हो तो शरीर में बाधा होती है॥७७॥

आत्मसम्बन्धिमरणं भविष्यति न संशयः ।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत् ।

CC-0.JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्वर्णदानं प्रकुर्वीत आरोग्यं भवति ध्रुवम् ॥७८॥

आत्मीय सम्बन्धि का मरण होता है। इस दोष की शान्ति के लिए शिव-सहस्रनाम का जप और सुवर्ण का दान करने से आरोग्यता होती है॥ ७८॥

इति शनिदशायामन्तर्दशाफलम्।

अथ बुधान्तर्दशाफलम्

मुक्ताविद्रुमलाभश्च ज्ञानकर्मसुखादिकम्।
विद्यामहत्वं कीर्तिश्च नूतनप्रभुदर्शनम् ॥१॥
विभवो दारपुत्रादि - पितृमातृसुखावहमः।
नीचोग्रखेटसंयुक्ते षष्ठाष्टव्ययराशिगे ॥२॥

बुध की दशा में बुध के अन्तर में मुक्ता (मोती), मूँगा का लाभ, ज्ञान, सत्कर्म, लाभादि, विद्या का महत्व, कीर्त्ति, नये स्वामी का दर्शन॥ १॥ वैभव और स्त्री, पुत्र, पिता-माता का सुख होता है। यदि अपने नीचराशि उग्रग्रह से युक्त हो वा ६।८।१२ राशि में हो॥ २॥

पापयुक्तेऽथवा दृष्टे धनधान्यपशुक्षयः।
आत्मबन्धुविरोधश्च शूलरोगादिसम्भवः ॥३॥
राजकार्यकलापेन व्याकुलो भवति ध्रुवम्।
द्वितीयद्यूननाथे तु दारक्लेशो भविष्यति ॥४॥

पापयुक्त वा पापदृष्ट हो तो धन-धान्य पशु का नाश, आत्मीय बन्धु से विरोध, शूलरोगादि की सम्भावना॥ ३॥ और राजकार्य के सम्बन्ध से व्याकुलता होती है। २ वा ७ भाव में स्वामी हो तो स्त्री को कष्ट॥ ४॥

आत्मसम्बंधिमरणं वातशूलादिसम्भवः।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ॥५॥

बुधदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

बुधस्यान्तर्गते केतौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नाधिपसमन्विते ॥६॥

आत्मीय सम्बन्धी की मृत्यु और वातशूलादि रोगों की सम्भावना होती है। इस दोष की शान्ति के लिये विष्णु सहस्र नाम का जप करना चाहिये॥ ५॥ बुध की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट वा लग्नेश से युक्त॥ ६॥

योगकारकसम्बन्धे दायेशात्केन्द्रलाभगे।
देहसौख्यं धनाढ्यत्वं बन्धुस्नेहसहायकृत् ॥७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by eGangotri

चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात्संसारे देहसौख्यभाक् ।
विद्याकीर्त्तिप्रसंगश्च समानप्रभुदर्शनम् ॥ ८॥

वा योगकारक से सम्बन्ध करते हुए दशेश से केन्द्र वा लाभ भाव में स्थित केतु के अन्तर में देह का सुख, धन की अल्पता, बन्धुओं का स्नेह और सहायता॥ ७॥ चतुष्पद जीव का लाभ, देह सुख, विद्या और यश का प्रसंग अपने समान स्वामी का दर्शन॥ ८॥

भोजनाम्बरसौख्यं च ह्यादौ मध्ये सुखावहम् ।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ॥ ९॥
वाहनात्पतनं चैव पुत्रक्लेशसमायुतम् ।
चौरादिराजभीतिश्च पापकर्मरतः सदा ॥ १०॥

भोजन-वस्त्र का सुख पहले होता है, मध्य में सुख होता है। दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो तो॥ ९॥ वाहन से पतन, पुत्र कष्ट से युक्त, चोर आदि से तथा राजा से भय, सदा पापकर्म में रत॥ १०॥

वृश्चिकादिविषाद्भीतिर्नीचैः कलहसंयुतः ।
शोकरोगादिदुःखं च संसाराद्विचलो भवेत् ॥ ११॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं तु कारयेत् ॥ १२॥

वृश्चिक (बिच्छू) आदि जहरीले जानवरों के विष से भय, नीचों से झगड़ा, शोक-रोग आदि दुःखों से युक्त और संसार से विचलित होता है॥ ११॥ २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो शरीर में जड़ता होती है। इसके शान्त्यर्थ बकरी का दान करना चाहिये॥ १२॥

अथ बुधदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्-

सौम्यस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रे लाभत्रिकोणगे ।
सत्कथापुण्यधर्मादि - संग्रहः पुण्यकर्मकृत् ॥ १३॥
मित्रप्रभुवशादिष्टं क्षेत्रलाभः सुखं भवेत् ।
दशाधिपात्केन्द्रगते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा ॥ १४॥

बुध की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण में गये हुए शुक्र के अन्तर में अच्छी कथा, पुण्य- धर्मादि का संग्रह, पुण्य कर्म॥ १३॥ मित्र और स्वामी से इष्ट की सिद्धि, क्षेत्र का लाभ, सुख, दशेश से केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण में हो तो॥ १४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तत्काले श्रियमाप्नोति राजश्रीधनसम्पदः ।
वापीकूपतडागादि - दानधर्मादिसंग्रहः ॥ १५ ॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं धनधान्यसमृद्धिकृत् ।
दायेशात्षष्ठरंध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ॥ १६ ॥

तत्काल धन का लाभ, राज्यलक्ष्मी की प्राप्ति, वापी, कूप, तालाब, दान, धर्म, आदि का संग्रह ॥ १५ ॥ व्यवसाय से अधिक लाभ और धन-धान्य समृद्धिका लाभ होता है। दशेश से ६ । ८ । १२ भाव में निर्बल हो तो ॥ १६ ॥

हृद्रोगो मानहानिश्च ज्वरातिसारपीडनम् ।
आत्मबन्धुवियोगश्च संसारे देहनिष्प्रभः ॥ १७ ॥
आत्मक्लेशो मनस्तापआपदादि - विपत्तयः ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवी - जपं चरेत् ॥ १८ ॥

हृदय का रोग, मानहानि, ज्वर, अतिसार की पीड़ा, आत्मीय बन्धु का वियोग, संसार से विरूपता ॥ १७ ॥ अपने को क्लेश, मन में संताप आदि विपत्तियां होती हैं। दूसरे वा सातवें भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इस दोष के शान्त्यर्थ दुर्गा देवी का जप कराना चाहिए ॥ १८ ॥

अथ बुधदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

सौम्यस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे ।
त्रिकोणे धनलाभे तु तुङ्गांशे स्वांशगेऽपिवा ॥ १९ ॥
राजप्रसादसौभाग्यं मित्रप्रभुवशात्सुखम् ।
भूम्यात्मजेन संदृष्टे आदौ भूलाभमेव च ॥ २० ॥

बुध की दशा में अपने उच्च, अपने राशि, त्रिकोण, धन, लाभ, उच्चांश वा अपने नवांश में गये हुए सूर्य के अन्तर में ॥ १९ ॥ राजा की प्रसन्नता का सौभाग्य, मित्र और स्वामी के द्वारा महासुख का लाभ होता है। भौम से देखा जाता हो तो प्रथम भूमि का लाभ होता है ॥ २० ॥

लग्नाधिपेन संदृष्टे बहुसौख्यं धनागमः ।
ग्रामभूम्यादिलाभश्च भोजनाम्बरसौख्यकृत् ॥ २१ ॥
षष्ठाष्टमव्यये वापि शन्यारफणिसंयुते ।
दायेशाद्रिपुरंध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते ॥ २२ ॥

लग्नेश से दृष्ट हो तो बहुत सुख और धन का आगम, ग्राम, भूमि का लाभ

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

और भोजन-वस्त्र का सुख होता है।२१। यदि सूर्य ६।८।१२ भाव में शनि, भौम, राहु से युत हो वा दशेश से ६।८।१२ भाव में निर्बल हो तो।२२।

चौराग्निशस्त्रपीडा च पित्ताधिक्यं भविष्यति ।
शिरोरुङ्नसस्ताप इष्टबंधुवियोगकृत् ॥२३॥
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिं कुर्याद्यथाविधि ।
सूर्यप्रीतिकरीं चैव दद्याद्धेनुं हिरण्यकम् ॥२४॥

चोर, अग्नि, शस्त्र से पीड़ा और अधिक पित्त होता है। शिरकारोग, मन में संताप, इष्ट बंधु का वियोग होता है॥२३॥ २।७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है, इसके शान्त्यर्थ यथाविधि सूर्य को प्रसन्न करनेवाली शान्ति करनी चाहिए और गौ तथा सुवर्ण का दान करना चाहिए॥२४॥

अथ बुधदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्-

सौम्यस्यान्तर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि गुरुदृष्टिसमन्विते ॥२५॥
योगस्थानाधिपत्येन योगप्राबल्यमादिशेत् ।
स्त्रीलाभः पुत्रलाभश्च वस्त्रवाहनभूषणम् ॥२६॥

बुध की महादशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में अपने उच्च में वा अपने राशि में गुरु से देखे जाते हुये॥२५॥ योगस्थान के अधिपति होने से योग प्रबल होता है, ऐसे चन्द्रमा के अन्तर में स्त्री का लाभ, पुत्र का लाभ और वस्त्र, वाहन, आभूषण का लाभ॥२६॥

नूतनालयलाभश्च नित्यं मिष्टान्नभोजनम् ।
गीतवाद्यप्रसंगश्च शास्त्रविद्याप्रशंसनम् ॥२७॥

नूतन गृह का लाभ, नित्य मिष्टान्न का भोजन होता है, गाना-बाजा का सुख, शास्त्र विद्या की प्रशंसा॥२७॥

दक्षिणां दिशमाश्रित्य प्रयाणं च भविष्यति ।
द्विपान्तरादिवस्त्राणां लाभश्चैव भविष्यति ॥२८॥

दक्षिण दिशा की यात्रा, द्वीपान्तर से वस्त्रों का लाभ॥२८॥

मुक्ताविद्रुमरत्नानि धौतवस्त्रादिलाभदम् ।
नीचारिक्षेत्रसंयुक्ते देहबाधा भविष्यति ॥२९॥

मुक्ता, मूँगा का लाभ और धौत वस्त्र का लाभ होता है। अपने नीच व शत्रु की राशि में स्थित हो तो शरीर में बाधा होती है॥२९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।
तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थ - स्थानदैवतदर्शनम् ॥ ३० ॥

दशेश से केन्द्र वा कोण वा तीसरे वा एकादश भाव में हो तो उसके अन्तर के प्रारम्भ में पुण्यतीर्थ स्थान और देवता का दर्शन ॥ ३० ॥

मनोधैर्यं हृदुत्साहो विदेशे धनलाभकृत् ।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते ॥ ३१ ॥
चौराग्निनृपभीतिश्च स्त्रीसंगे गमनं तथा ।
दुष्कृतिर्धनहानिश्च कृषिगोऽश्वादिनाशनम् ॥ ३२ ॥

मन में धैर्य, हृदय में उत्साह और विदेश से धन का लाभ होता है। यदि चन्द्रमा दशेश से ६ या ८ या १२ भाव में पापग्रह से युत हो तो ॥ ३१ ॥ चोर, अग्नि, राजा से भय, स्त्री संग में यात्रा, दुष्कीर्त्ति और धन की हानि, कृषि, गौ, घोड़ा की हानि होती है ॥ ३२ ॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादिवीजपं चरेत् ।
वस्त्रदानं प्रकुर्वीत आयुर्वृद्धिसुखावहम् ॥ ३३ ॥

२ वा ७ भाव का स्वामी हो तो शरीर की बाधा होती है। इस दोष की शान्ति के लिये दुर्गा देवी का जप करना चाहिये। आयु की वृद्धि और सुख के लिए वस्त्र का दान करना चाहिए ॥ ३३ ॥

अथ बुधदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

सौम्यस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे लग्नाधिपसमन्विते ॥ ३४ ॥
राजानुग्रशान्तिश्च गृहे कल्याणसंभवम् ।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत् ॥ ३५ ॥

बुध की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण वा अपने उच्च वा अपने राशि में लग्नेशसे युत भौमके अन्तर में ॥ ३४ ॥ राजाकी कृपा, शान्ति, गृहमें कल्याण और लक्ष्मी की प्रसन्नता के चिह्न, नष्ट हुए राज्य तथा धन का लाभ ॥ ३५ ॥

पुत्रोत्सवादिसंतोषो गृहे गोधनसंकुलम् ।
गृहक्षेत्रादिलाभश्च गजवाजिसमन्वितः ॥ ३६ ॥
राजप्रीतिकरश्चैव स्त्रीसौख्यं चाऽतिशोभनम् ।
नीचक्षेत्रसमायुक्ते ह्यष्टमे वा व्ययेऽपि वा ॥ ३७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पुत्रोत्सव, गोधन की वृद्धि, हाथी घोड़े के साथ गृह एवं भूमि का लाभ होता है॥ ३६॥ राजा की प्रसन्नता और स्त्री का सुख प्राप्त होता है। यदि भौम नीच राशि में आठवें या बारहें भाव में हो तो॥ ३७॥

पापदृष्टियुते वापि देहपीडा मनोव्यथा।
उद्योगभङ्गो देशादौ स्वग्रामे धान्यनाशनम्॥ ३८॥
ग्रन्थिशस्त्रव्रणादीनां भयं तापज्वरादिकम्।
दायेशात्केन्द्रगे भौमे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥ ३९॥

पापग्रह से दृष्ट वा युत हो तो शरीर में पीड़ा, मानसिक कष्ट, देश में उद्योग की हानि और अपने ग्राम में धान्य की हानि॥ ३८॥ ग्रन्थि, शस्त्र, व्रण आदि का भय, तापज्वर आदि होता है। दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ में भौम हो॥ ३९॥

शुभदृष्टे च सम्पत्तिर्देहसौख्यं धनागम।
पुत्रलाभो यशोवृद्धिर्भ्रातृवर्गे महाप्रियः॥ ४०॥
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशो भ्रातृवर्गे महद्भयम्॥ ४१॥

शुभग्रह से दृष्ट हो तो द्रव्य की प्राप्ति, देहसुख, पुत्र का लाभ, यश की वृद्धि और भाइयों से प्रीति होती है॥४०॥ दशेश से ६।८।१२ भाव में पाप ग्रहसे युक्त भौमहो तो अन्तरके आरम्भ में महाक्लेश, भाइयों से भय।४१।

नृपाग्निचौरभीतिश्च पुत्रमित्रविरोधनम्।
स्थानभ्रंशो महद्वैरं मध्ये सौख्यं धनागमः॥ ४२॥
अंते तु राजभीतिः स्यात्स्थानभ्रंशो ह्यथापि वा।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत्।
अनड्वाहं प्रदद्याच्च मृत्युंजयजपं चरेत्॥ ४३॥

राजा, अग्नि, चोर का भय, पुत्र-मित्र से विरोध, स्थान की हानि, महावैर होता है, मध्य में सुख और धन का आगम॥ ४२॥ और अन्त में राजभय, स्थान की हानि होती है। दूसरे या सातवें भाव के स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। (दोष के शावत्यर्थ) बैल का दान और मृत्युञ्जय का जप कराना चाहिये॥ ४३॥

अथ बुधदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

बुधस्यान्तर्गते राहौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
कुलीरे मकरे वापि कन्यायां वृषभेऽपि वा॥ ४४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राजसम्मानकीर्त्तिं च धनंधान्यं भविष्यति ।
पुण्यतीर्थस्थानलाभं देवतादर्शनं तथा ॥४५॥

बुध की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण में वा कर्क वा मकर वा कन्या वा वृष राशि में गये हुये राहु के अन्तर में॥ ४४॥ राजा से सम्मान, कीर्त्ति, धन-धान्य का लाभ, पुण्यतीर्थ का लाभ, देवता का दर्शन॥ ४५॥

इष्टापूर्ते च महतो मानश्चाम्बरलाभकृत् ।
भुक्त्यादौ देहपीडा च अंते सौख्यं विनिर्दिशेत् ॥४६॥
लग्नाद्युपचये राहौ शुभग्रहसमन्विते ।
राजसंलापसन्तोषो नूतनप्रभुदर्शनम् ॥४७॥

यज्ञ और मान, वस्त्र का लाभ होता है। अन्तर के आदि में देह पीड़ा और अन्त में सुख होता है॥ ४६॥ लग्न से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में शुभग्रह से युक्त राहु हो तो राजा से सम्मान, संतोष और नवीन स्वामी का दर्शन होता है॥ ४७॥

षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे तद्भुक्तौ धननाशनम् ।
भुक्त्यादौ देहनाशो च वातज्वरमजीर्णकृत् ॥४८॥
दायेशात्षष्ठरिःफे वा ह्यष्टमे पापसंयुते ।
निष्ठुरं राजकार्याणि स्थानभ्रंशो महद्भयम् ॥४९॥

यदि राहु ६।८।१२ भाव में हो तो उसके अन्तर में आरम्भ में धन व देह का नाश, वातज्वर तथा अजीर्ण होता है॥ ४८॥ दशेश से ६।१२।८ भावमें पापग्रहसे युत हो तो कड़े राजकार्य, स्थान की हानि, महाभय॥४९॥

बंधनं रोगपीडा च आत्मबन्धुमनोव्यथा ।
हृद्रोगो मानहानिश्च धनहानिर्भविष्यति ॥५०॥
द्वितीयसप्तमस्थे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत् ।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यदायिनीम् ॥५१॥

बंधन, रोगपीड़ा, आत्मीय बंधु को मानसिक कष्ट, हृदय रोग, मान-हानि और धनहानि होती है॥ ५०॥ २ वा ७ भाव में हो तो अपमृत्यु होती है। इन दोषों की शान्ति के लिये दुर्गा एवं लक्ष्मी का जप करना चाहिए और आयु और आरोग्यता को देनेवाली श्वेत गौ और भैंस का दान करना चाहिए॥ ५१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ बुधदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्-

बुधस्थान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लाभे वा धनराशिगे ॥ ५२॥
देहसौख्यं धनावाप्ती राजप्रीति तथैव च ।
विवाहोत्सवकार्याणि नित्यमिष्टान्नभोजनम् ॥ ५३॥

बुध की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण वा अपने उच्च वा अपने राशि वा लाभ वा दूसरे स्थान में गये हुये गुरु के अन्तर में॥ ५२॥ देहसुख, धन की प्राप्ति, राजा से प्रेम, विवाहोत्सव, नित्य-मिष्टान्न का भोजन॥ ५३॥

गोमहिष्यादिलाभश्च पुराणश्रवणादिकम् ।
देवतागुरुभक्तिश्च दानधर्ममखादिकम् ॥ ५४॥
यज्ञकर्मप्रवृद्धिश्च शिवपूजाफलं तथा ।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा बलसंयुते ॥ ५५॥

देवता-गुरु में भक्ति, दान, धर्म, गौ, भैंस आदि का लाभ, पुराण आदि का श्रवण॥ ५४॥ यज्ञ की वृद्धि, शिवपूजन का फल होता है। दशेश से केन्द्र वा कोण वा लाभ स्थान में बली हो तो॥ ५५॥

बंधुपुत्रहृदुत्साहं शुभं शोभनसंयुतम् ।
पशुवृद्धियशोलाभश्चन्नदानादिकं फलम् ॥ ५६॥
नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययगेऽपि वा ।
शन्यारफणिसंयुक्ते कलहो राजविग्रहम् ॥ ५७॥

बंधु-पुत्र का सुख, हृदय में उत्साह और शुभ फल, पशु-वृद्धि, यश का लाभ, अन्न दानादि फल होते हैं॥ ५६॥ यदि गुरु अस्त हो वा ६।८।१२ में शनि, भौम, राहु से युक्त हो तो कलह, राजा से विरोध॥ ५७॥

चौरादिदेहपीडा च पितृमातृविनाशनम् ।
दायेशात्षष्ठरंध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ॥ ५८॥
अङ्गतापश्च वैकल्यं देहबाधा भविष्यति ।
कलत्रबंधुवैषम्यं राजकोपो धनक्षयः ॥ ५९॥

चोर आदि से शरीर में पीड़ा तथा पिता-माता का नाश होता है। दशेश से ६।८।१२ में निर्बल हो तो॥ ५८॥ शरीर में ताप, अङ्ग में विकलता, देह में बाधा, स्त्री, बंधु से वैर, राजकोप, धन की हानि॥ ५९॥

अकस्मात्कलहाद्भीतिः प्रमादो राजविद्विषम् ।
द्वितीय सप्तमस्थे वा देहबाधा भविष्यति ॥ ६०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अकस्मात् कलह से भय, प्रमाद से राजा से शत्रुता होती है। २।७ भाव में हो तो शरीर बाधा होती है॥ ६०॥

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।
गोभूहिरण्यदानेन सर्वारिष्टं प्रणश्यति॥ ६१॥

इस दोष के परिहार के लिये शिवसहस्रनाम का जप और गौ, भूमि, सोना के दान से सभी अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं॥ ६१॥

अथ बुधदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

सौम्यस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
त्रिकोणलाभगे वापि गृहे कल्याणवर्धनम्॥ ६२॥
राज्यलाभो महोत्साहो गृहे गोधनसंकुलम्।
शुभस्थानफलावाप्तिस् तीर्थादौ भ्रमणं तथा॥ ६३॥

बुध की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि में केन्द्र वा त्रिकोण में वा लाभ में गये हुये शनि के अन्तर में गृह में कल्याण की वृद्धि॥ ६२॥ राज्य का लाभ, अत्यन्त उत्साह, गौ, धन की वृद्धि, शुभ स्थान की प्राप्ति, तीर्थ आदि में भ्रमण होता है॥ ६३॥

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे दायेशाद्वा तथैव च।
अरातिदुःखबाहुल्यं दारपुत्रादिपीडनम्॥ ६४॥

६।८।१२ भाव में शनि हो, दशेश से भी इन्हीं स्थानों में हो तो शत्रुओं से अधिक दुःख, स्त्री-पुत्र आदि को पीड़ा॥ ६४॥

बुद्धिभ्रंशो बंधुनाशः कर्मनाशो मनोरुजः।
विदेशगमनं चैव दुःस्वप्नस्य प्रदर्शनम्॥ ६५॥

बुद्धि का नाश, बंधु का नाश, कर्म का नाश, मन में दुःख, विदेश यात्रा, दुःस्वप्नों का दर्शन होता है॥ ६५॥

द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युजंयजपं चरेत्।
कृष्णां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धिदम्॥ ६६॥

२ वा ७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इस दोष की शान्ति के लिए काली गौ और भैंस का दान आयु-आरोग्यता की वृद्धि के लिये देना चाहिए॥ ६६॥

इति बुधदशायामन्तर्दशाफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ केतुदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्

केन्द्रे त्रिकोणलाभे वा लग्नाधिपसमन्विते ।
भाग्यकर्मेशसम्बन्धे वाहनेशसमन्विते ॥ १ ॥
तद्भुक्तौ धनधान्यादि - चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ।
पुत्रदारादिसौख्यं च राजप्रीतिर्मनोरुजा ॥ २ ॥

केतु की दशा में केन्द्र, त्रिकोण वा लाभ स्थान में लग्नेश से युत वा भाग्येश कर्मेश से अच्छे सम्बन्ध से युक्त वाहनेश से युत केतु के अन्तर में ॥ १ ॥ धन-धान्य से युक्त चतुष्पद जीव का लाभ, पुत्र स्त्री का सुख, राजा से प्रेम, मानसिक कष्ट ॥ २ ॥

ग्रामभूम्यादिलाभश्च गृहं गोधनसंकुलम् ।
नीचास्तखेटसंयुक्ते ह्यष्टमे व्ययगेऽपि वा ॥ ३ ॥
हृद्रोगो मानहानिश्च धनधान्यपशुक्षयः ।
दारपुत्रादिपीडा च मनश्चांचल्यमेव च ॥ ४ ॥

ग्राम, भूमि आदि का लाभ और घर गोधन से परिपूर्ण होता है। नीच वा अस्त में गये हुये ग्रह से युक्त केतु हों वा आठवें वा बारहवें भाव में हो तो ॥ ३ ॥ हृदयरोग, मानहानि, धन-धान्य और पशु का नाश, स्त्री-पुत्र आदि को पीड़ा एवं मन में चंचलता होती है ॥ ४ ॥

द्वितीयद्यूननाथेन सम्बन्धे तत्र संस्थिते
अनारोग्यं महत्कष्टमात्मबंधुवियोगकृत् ॥
तच्छोषपरिहारार्थम् आयुरारोग्यवर्द्धकम्
दुर्गादिवीजपं कुर्यान्मृत्युंजयजपं चरेत् ॥ ५ ॥

केतु दूसरे वा सातवें भाव के स्वामी से सम्बन्ध करता हुआ स्थित हो तो रोगयुक्त, महाकष्ट और आत्मीय बन्धु का वियोग होता है। दोषों की शान्ति एवं आयु तथा नीरोगता के लिए दुर्गा और मृत्युञ्जय का जप कराना चाहिए ॥ ५ ॥

अथ केतुदशायां शुक्रान्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते ।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा राज्यनाथेन संयुते ॥ ६ ॥
राजप्रीतिं च सौभाग्यं राज्यात्स्वाम्बरसंकुलम् ।
तत्काले श्रियमाप्नोति भाग्यकर्मेशसंयुते ॥ ७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

केतु की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि में केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ में कर्मेश से युक्त शुक्र के अन्तर में॥ ६॥ राजा से प्रेम, सौभाग्य, राज्य से वस्त्रादि का लाभ होता है। यदि भाग्येश कर्मेश से युत हो तो॥ ७॥

नष्टराज्यधनप्राप्तिः सुखवाहनमुत्तमम्।
सेतुस्नानादिकं चैव देवतादर्शनं महत्॥ ८॥
महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥ ९॥

तत्काल लक्ष्मी की प्राप्ति, नष्ट हुये राज्य का लाभ, धन का लाभ, सुख, उत्तम वाहन का लाभ, समुद्रस्नान का लाभ तथा देवता का दर्शन॥ ८॥ और महाराजा की प्रसन्नता से ग्राम, भूमि आदि का लाभ होता है। दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण वा तीसरे वा लाभ में हो तो॥ ९॥

देहारोग्यं शुभं चैव गृहे कल्याणशोभनम्।
भोजनाम्बरभूषाप्तिरश्वदोलादिलाभकृत् ॥ १०॥
दायेशाद्रिपुरंध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
अकस्मात्कलहश्चैव पशुधान्यादिपीडनम्॥ ११॥

देह आरोग्य, शुभफल, गृह में कल्याण, भोजन, वस्त्र, राजा से प्रेम, अश्व आदि का लाभ होता है॥ १०॥ दशेश से ६। ८। १२ भाव में पापयुक्त हो तो अकस्मात् कलह, पशु धान्य आदि की हानि होती है॥ ११॥

नीचस्थखेटसंयुक्ते लग्नात्षष्ठाष्टराशिगे।
स्वबन्धुजनवैषम्यं शिराक्षिव्रणपीडनम्॥ १२॥
हृद्रोगो मानहानिश्च धनधान्यपशुक्षयः।
कलत्रपुत्रपीडायास्संचारो देहरोगयुक्॥ १३॥

नीच में गये हुये ग्रह से युक्त हो और लग्न से ६ वा ८ भाव में हो तो आत्मीय बन्धुओं से शत्रुता, नस, नेत्र, व्रण आदि से पीड़ा॥ १२॥ हृदय रोग, मानहानि, धन-धान्य, पशु का नाश, स्त्री-पुत्र के रोगी होने का भय और शरीर में रोग होता है॥ १३॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरुजा।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादिवीजपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यदायिनीम्॥ १४॥

केतु २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो देह में जड़ता और मानसिक रोग होता है। इस दोष के शान्त्यर्थ दुर्गा देवी का जप करना चाहिए और आरोग्य व आयु के लिए सफेद गौ और भैंस का दान करना चाहिए॥ १४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ केतुदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा शुभग्रहनिरीक्षिते ॥१५॥

केतु की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि में केन्द्र वा त्रिकोण में, लाभ में शुभग्रह से देखे जाते हुये सूर्य के अन्तर में॥ १५॥

धनधान्यादिलाभश्च राजानुग्रहवैभवम्।
अनेकशुभकार्याणि चेष्टसिद्धिः सुखावहा ॥१६॥

धन-धान्यादि का लाभ, राजा की कृपा से वैभव का लाभ, अनेक शुभ कार्य और सुखकर अभीष्ट की सिद्धि होती है॥ १६॥

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनसंस्थिते।
देहसौख्यं कार्यलाभः पुत्रलाभो मनो दृढम् ॥१७॥

दशेश से केन्द्र वा कोण वा लाभ वा दूसरे भाव में हो तो देह-सुख, धन का लाभ, पुत्र लाभ और मन में दृढ़ता॥ १७॥

यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्स्वल्पग्रामाधिपत्वयुक्।
षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे पापग्रहसमन्विते ॥१८॥

तथा यात्रा में कार्य और धन की सिद्धि और छोटे ग्राम की स्वामिता होती है। यदि सूर्य ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युक्त हों तो॥ १८॥

तद्भुक्तौ राजभीतिश्च पितृमातृवियोगकृद्।
विदेशगमनं चैव चौराहिविषपीडनम् ॥१९॥
राजमित्रविरोधश्च राजदंडाद्धनक्षयः।
शोकरोगभयं चैव उष्णाधिक्यं ज्वरो भवेत् ॥२०॥

अंतर में राजभय और पिता-माता का वियोग, विदेशयात्रा, चोर सर्प विष से पीड़ा॥ १९॥ राजा एवं मित्र से विरोध, राजदंड से धन का नाश, शोक रोग का भय, अधिक गर्मी से युक्त ज्वर होता है॥ २०॥

दायेशादष्टरिःफे वा षष्ठे वा पापसंयुते।
अन्नविघ्नो मनोभीतिर्धनधान्यपशुक्षयः ॥२१॥

दशेश से ८।१२।६ भाव में पापग्रह से युक्त हो तो अन्नप्राप्ति में बाधा, मन में भय, धन-धान्य, पशु का नाश होता है॥ २१॥

आदौ मध्ये महाक्लेशमन्ते सौख्यं विनिर्दिशेत्।
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तस्य शान्तिं प्रकुर्वीत स्वर्णधेनुं प्रदापयेत् ॥२२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आदि और मध्य में महाक्लेशं तथा अन्त में सुख होता है। २ वा ७ भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इसकी शान्ति करनी चाहिए और सुवर्ण की गौ का दान करना चाहिए॥ २२॥

अथ केतुदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रराशिगे।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा धने सुखसमन्विते॥ २३॥

केतु की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि में केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ स्थान वा धन वा सुख स्थान में गये हुए चन्द्रमा के अंतर में॥ २३॥

राजप्रीतिर्महोत्साहः कल्याणं च महत्सुखम्।
महाराजप्रसादेन गृहभूम्यादिलाभकृत्॥ २४॥

राजा से प्रीति, बड़ा उत्साह, कल्याण और बड़ा सुख, महाराजा की प्रसन्नता से गृह-भूमि का लाभ॥ २४॥

भोजनाम्बरपश्वादि व्यवसायेऽधिकं फलम्।
अश्ववाहनलाभश्च वस्त्राभरणभूषणम्॥ २५॥

भोजन, वस्त्र, पशु आदि से व्यवसाय में अधिक लाभ होता है। अश्व, वाहन का लाभ, वस्त्र, आभूषण का लाभ॥ २५॥

देवालयतडागादि - पुण्यधर्मादिसंग्रहः।
पुत्रदारादिसौख्यं च पूर्णचन्द्रे तथैव च॥ २६॥

देवालय, तालाब आदि पुण्य धार्मिक कार्यों का संग्रह, पुत्र, स्त्री आदि का सुख पूर्णचन्द्र के होने से होता है॥ २६॥

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा बलसंयुते।
कृषिगोभूमिलाभश्च इष्टबन्धुसमागमः॥ २७॥
तामसात्कार्यसिद्धिश्च गृहे गोक्षीरमेव च।
आरम्भे शुभमारोग्यं मध्ये राजप्रियं शुभम्॥ २८॥
अंते तु राजभीतिश्च विदेशगमनं तथा।
दूरयात्रादिसञ्चारः सम्बंधिजनपूजनम्॥ २९॥

दशेश से केन्द्र कोण वा लाभ में बली चन्द्र हो तो कृषि, गौ, भूमि का लाभ, इष्टबंधुओं का समागम होता है॥ २७॥ तामसी प्रकृति से कार्य की सिद्धि और घर में गोदुग्ध का सुख, भूमिसंबंधी कार्य, शुभ आरोग्यता, मध्य में राजा से प्रेम, अंत में राजभय, विदेशयात्रा, दूर यात्रा की सम्भावना और सम्बंधियों का पूजन होता है॥ २८-२९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नीचगे वा क्षीणगे चन्द्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे ।
आत्मसौख्यं मनस्तापः कार्यविघ्नं महद्भयम् ॥ ३० ॥

यदि चन्द्रमा क्षीण हो और ६ । ८ । १२ भाव में हो तो अपने सुख में मन को सन्ताप, कार्य में विघ्न, महाभय ॥ ३० ॥

पितृमातृवियोगश्च देहजाड्यं मनोव्यथा ।
व्यवसायात् फलं नेष्टं गोमहिष्यादिनाशकृत् ॥ ३१ ॥
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ।
धनधान्यदिहानिश्च मनो व्याकुलमेव च ॥ ३२ ॥

पिता-माता का वियोग, देह में जड़ता, मन में व्यथा, व्यवसाय (रोजगार) में असफलता, गौ-भैंस की हानि होती है ॥ ३१ ॥ दशेश से ६ । ८ । १२ में निर्बल चन्द्र हो तो धन-धान्य की हानि, मन में व्याकुलता । ३२ ।

स्वबंधुजनशत्रुत्वं मातृपीडा तथैव च ।
निधनाधिपदोषेण द्विसप्ताधिपसंयुते ॥ ३३ ॥
अपमृत्युभयं तस्य शान्तिं कुर्याद्यथाविधि ।
चन्द्रप्रीतिकरञ्चैव ह्यायुरारोग्यसंभवम् ॥ ३४ ॥

अपने बंधुओं से शत्रुता, भाइयों से पीड़ा होती है। अष्टमेश हो और २ । ७ भाव के स्वामी से युत हो तो ॥ ३३ ॥ अपमृत्यु का भय होता है, उसकी शान्ति के लिए चन्द्रमा के प्रसन्न होनेवाली और आयु-आरोग्यता देने वाली शान्ति करनी चाहिये ॥ ३४ ॥

अथ केतुदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे भौमे शुभदृष्टियुतेक्षिते ॥ ३५ ॥
आदौ शुभफलं चैव ग्रामभूम्यादिलाभकृत् ।
धनधान्यादिलाभश्च चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ॥ ३६ ॥

केतु की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में वा अपने उच्च वा अपने राशि में शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त भौम के अन्तर में ॥ ३५ ॥ पहले शुभफल, ग्राम, भूमि, धन, धान्य आदि का लाभ, चतुष्पद जीव का लाभ ॥ ३६ ॥

गृहारामक्षेत्रलाभो राजानुग्रहवैभवम् ।
भाग्यकर्मेशसम्बंधे भूलाभो सौख्यमेव च ॥ ३७ ॥
दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा ।
राजप्रीतिर्यशोलाभो पुत्रमित्रादिसौख्यकृत् ॥ ३८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गृह, बगीचा, क्षेत्र का लाभ, राजा की कृपा से वैभव का लाभ होता है। भाग्येश कर्मेश से सम्बन्ध हो तो भूमि का लाभ और सुख होता है॥ ३७॥ दशेश से केन्द्र वा कोण वा तीसरे वा लाभ में हो तो राजा से प्रेम, यश का लाभ, और पुत्र, मित्र आदि का सुख होता है॥ ३८॥

षष्ठाष्टमव्यये भौमे दायेशाद्धनगेऽपि वा।
द्रुतं करोति मरणं विदेशे चापदं भ्रमम्॥ ३९॥
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रादि - चोराहिनृपपीडनम्।
कलहादौ व्यथायुक्तं किंचित्सुखविवर्धनम्॥ ४०॥

यदि भौम ६।८।२१ स्थान में वा दशेश से २ स्थान में हो तो शीघ्र ही मृत्यु होती है॥ ३९॥ प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र आदि रोग, चौर-सर्प-राजा से पीड़ा, आदि में कलह और व्यथा तथा कुछ सुख की वृद्धि होती है॥ ४०॥

द्वितीयद्यूननाथे तु तापज्वरो विषाद्भयम्।
दारपीडा मनःक्लेशमपमृत्युभयं भवेत्।
अनड्वाहं प्रदद्यात्तु सर्वसम्पत्सुखावहम्॥ ४१॥

२।७ भाव के स्वामी मंगल हों तो ताप-ज्वर और विष का भय, स्त्री को पीड़ा, मन में क्लेश और अपमृत्यु का भय होता है। सभी सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति के लिए वृष का दान करना चाहिए॥ ४१॥

अथ केतुदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते राहौ स्वोच्चे मित्रस्वराशिगे।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा दुश्चिक्ये धनसंज्ञके॥ ४२॥

केतु की दशा में अपने उच्च वा मित्र के गृह वा अपने राशि वा केन्द्र वा कोण वा लाभ वा तीसरे भाव में गये हुये राहु के अन्तर में॥ ४२॥

तत्काले धनलाभः स्यात्संसारे भवति ध्रुवम्।
म्लेच्छप्रभुवशात्सौख्यं धनधान्यफलादिकम्॥ ४३॥

तत्काल धन का लाभ होता है, म्लेच्छ राजा के वश से सुख, धन-धान्य आदि का लाभ॥ ४३॥

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
भुक्त्यादौ क्लेशमाप्नोति मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात्॥ ४४॥
रंध्रे वा व्ययगे राहौ पापसंदृष्टिसंयुते।
बहुपुत्रं कृशं देहं शीतज्वरविषाद्भयम्॥ ४५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चतुष्पद जीव का लाभ, ग्राम, भूमि आदि का लाभ होता है। अन्तर के आरम्भ में कष्ट होता है मध्य और अन्त में सुख होता है॥ ४४॥ यदि राहु ८। १२ भाव में पापग्रह से दृष्ट वा युत हो तो अनेक पुत्र होते हैं। शरीर में दुर्बलता, शीतज्वर और विष से भय॥ ४५॥

चातुर्थिकज्वरश्चैव शूद्रोपद्रवपीडनम्।
अकस्मात्कलहश्चैव प्रमेहः शूलमेव च॥४६॥
द्वितीयसप्तमस्थे वा यदा क्लेशो महद्भयम्।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादिवीजपं चरेत्।
अयुतहोमश्च कर्त्तव्यः सर्वसौख्यप्रदायकः॥४७॥

चौथिया ज्वर, शूद्र के उपद्रव से पीड़ा, अकस्मात्कलह, प्रमेह और शूलरोग होता है॥ ४६॥ द्वितीय वा सातवें हो तो महाक्लेश और महाभय होता है। इस दोष के शान्त्यर्थ दुर्गा देवी का जप और सभी सुख को देने वाला दस हजार होम करना चाहिए॥ ४७॥

अथ केतुदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते जीवे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि लग्नाधिपसमन्विते॥४८॥
कर्मभाग्याधिपैर्युक्ते धनधान्यार्थसम्पदः।
राजप्रीतिर्मनोत्साहोऽश्वांदोल्यादिलाभकृत् ॥४९॥

केतु की दशा में केन्द्र, लाभ वा त्रिकोण में वा उच्च वा अपने राशि में वा लग्नेश से युत गुरु के अन्तर में॥ ४८॥ अथवा कर्मेश भाग्येश से युत गुरु के अन्तर में धन, धान्य आदि सम्पत्ति का लाभ॥ ४९॥

गृहे कल्याण सम्पत्ति पुत्रलाभो महोत्सवः।
पुण्यतीर्थं मनोत्साहः सत्कर्म च सुखावहम्॥५०॥
इष्टदेवप्रसादेन विजयः कार्यलाभकृत्।
राजसंलापकार्याणि नूतनप्रभुदर्शनम्॥५१॥

गृह में कल्याण सम्पत्ति, पुत्रलाभ का उत्सव, पुण्यतीर्थ का दर्शन, मन में उत्साह, अश्व-पालकी का लाभ, राजा से प्रेम, अच्छे कर्म, सुख॥ ५०॥ इष्टदेव के प्रसाद से विजय, कार्य में लाभ, राजा से भाषण और नूतन राजा का दर्शन होता है॥ ५१॥

षष्ठाष्टमव्यये जीवे दायेशान्नीचराशिगे।
चौराहिव्रणभीतिश्च धनधान्यादिनाशनम्॥५२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि गुरु दशेश से ६।८।१२ भाव में हो, नीच राशि में हो तो चोर, सर्प, व्रण का भय, धन-धान्य आदि का नाश॥ ५२॥

पुत्रदारवियोगश्च अतीवक्लेशसम्भवम्।
आदौ शुभफलं चैव अंते क्लेशकरो भवेत्॥ ५३॥

पुत्र-स्त्री का वियोग, अत्यंत कष्ट की सम्भावना होती है। आदि में शुभफल होता है अन्त में कष्ट होता है॥ ५३॥

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
शुभयुक्ते नृपप्रीतिर्विचित्राम्बरभूषणम्॥ ५४॥
दूरदेश प्रयाणं च स्वबन्धुजनपोषणम्।
भोजनाम्बरपश्वादि भुक्त्यादौ देहपीडनम्॥ ५५॥

दशेश से केन्द्र वा कोण में गुरु हो वा तीसरे वा लाभ वा स्थान में हो, शुभग्रह से युक्त हो तो राजा से प्रीति, विचित्र वस्त्र आभूषण का लाभ॥ ५४॥ दूरदेश की यात्रा, बन्धुओं का भरण पोषण, भोजन, वस्त्र, पशु आदि का लाभ अन्तर के आदि में होता है॥ ५५॥

अन्ते तु स्थानचलनमकस्मात्कलहो भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥ ५६॥

अन्त में स्थान परिवर्तन, अकस्मात् कलह होता है। दूसरे वा सातवें का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है॥ ५६॥

तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।
महामृत्युंजयं जाप्यं सर्वोपद्रवनाशनम्॥ ५७॥

इस दोष के परिहार के लिये शिवसहस्र नाम का ज़प और महामृत्युञ्जय का जप कराने से सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं॥ ५७॥

अथ केतुदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते मन्दे स्वदशायां तु पीडनम्।
बन्धुक्लेशो मनस्तापश्चतुष्पाज्जीवलाभकृत्॥ ५८॥
राजकार्यकलापेन धननाशं महद्भयम्।
स्थानच्युतिः प्रवासश्च मार्गे चोरभयं भवेत्॥ ५९॥

केतु की दशा में शनि के अन्तर में पीड़ा, बन्धु को कष्ट, मन में संताप, चतुष्पद जीव का लाभ॥ ५८॥ राजकार्य के प्रसंग से धन की हानि, महाभय, स्थानच्युति, प्रवास, मार्ग में चोरी का भय होता है॥ ५९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आलस्यं मनसो हानिश्चाष्टमे व्ययराशिगे ।
मीनत्रिकोणगे मन्दे तुलायां स्वर्क्षगेऽपि वा ॥६०॥
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा दुश्चिक्ये वा शुभांशके ।
शुभदृष्टे च संप्राप्ते सर्वकार्यार्थसाधनम् ॥६१॥

आठवें, बारहवें भाव में हो तो आलस्य और मानसिक क्षति होती है। मीनराशि में त्रिकोण में वा तुला में वा अपने राशि में शनि हो॥६०॥ वा केन्द्र, त्रिकोण, लाभ वा तीसरे भाव का शुभांशक में शुभग्रह की दृष्टि से युत हो तो सभी कार्य और धन का लाभ होता है॥६१॥

स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं भ्रमणं रणलाभगम् ।
स्वग्रामे सुखसम्पत्तिः स्ववर्गे राजदर्शनम् ॥६२॥
दायेशात्षष्ठरिःफे वा अष्टमे पापसंयुते ।
देहतापो मनस्तापः कार्यविघ्नो महद्भयम् ॥६३॥

अपने स्वामी से सुख और रण में भ्रमण लाभप्रद होता है। अपने ग्राम में सुख और सम्पत्ति, अपने वर्ग और राजा का दर्शन होता है॥६२॥दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युत हो तो शरीर में ताप, मन में संताप, कार्य में विघ्न, महाभय॥६३॥

आलस्यं मानहानिश्च मातापित्रोर्विनाशनम् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत् ॥६४॥
तद्दोषपरिहारार्थं तिलहोमं च कारयेत् ।
कृष्णां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धिदाम् ॥६५॥

आलस्य, मानहानि और माता-पिता का नाश होता है। दूसरे, सातवें भाव का स्वामी हो तो अपमृत्यु का भय होता है।६४। इसके शान्त्यर्थ काली गौ एवं भैंसका दान करनेसे आयु, आरोग्यताकी वृद्धि होती है॥६५॥

अथ केतुदशायां बुधान्तर्दशाफलम्-

केतोरन्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुक्ते राज्यलाभो महत्सुखम् ॥६६॥
सत्कथाश्रवणं दानं धर्मसिद्धिः सुखावहा ।
भूलाभः पुत्रलाभश्च शुभगोष्ठी धनागमः ॥६७॥

केतु की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण वा अपने उच्चराशि वा अपने राशि में युक्त बुध के अन्तर में राज्य का लाभ, महासुख॥६६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अच्छे कथा का श्रवण, दान, धर्मकार्य की सिद्धि, सुख, भूमि का लाभ, पुत्र का लाभ, शुभगोष्ठी, धन का आगमन॥ ६७॥

अयत्नाद् धर्मलब्धिश्च विवाहश्च भविष्यति।
गृहे शुभकरं चैव वस्त्राभरणभूषणम् ॥६८॥
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिः सुखावहा।
विद्वद्गोष्ठीकलापेन संतोषो भूषणादिकम् ॥६९॥

बिना प्रयत्न के धर्म का लाभ, विवाह, गृह में शुभकार्य, वस्त्र, आभूषण का लाभ होता है॥ ६८॥ भाग्येश कर्मेश से युत हो तो सुखकर भाग्यवृद्धि, विद्वानों की गोष्ठी से संतोष, आभूषण आदि का लाभ होता है॥ ६९॥

दायेशात्केन्द्रगे सौम्ये त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।
देहारोग्यं महाँल्लाभः पुत्रकल्याणवैभवम् ॥७०॥
भोजनाम्बरपश्वादि - व्यवसायेऽधिकं फलम्।
षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये मन्दराहुयुतेक्षिते ॥७१॥

दशेश से केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ में बुध हो तो देह में आरोग्यता, महालाभ, पुत्रजनित कल्याण और वैभव॥ ७०॥ भोजन, वस्त्र, पशु आदि के व्यवसाय से अधिक लाभ होता है। यदि बुध ६।८।१२ भाव में शनि, भौम, राहु से युत वा दृष्ट हो तो॥ ७१॥

विरोधो राजभृत्यैश्च परगेहनिवासनम्।
वाहनाम्बरपश्वादि - धनधान्यदिनाशकृत् ॥७२॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं मध्ये सौख्यं धनागमः।
अन्ते क्लेशकरश्चैव द्वारपुत्रादिपीडनम् ॥७३॥

राजकर्मचारियों से विरोध, परगृहवास, वाहन, वस्त्र पशु आदि धन-धान्य का नाश होता है॥ ७२॥ अन्तर के आदि में शुभफल, मध्य में सुख और धन का आगम और अन्त में क्लेश, स्त्री-पुत्र को पीड़ा होती है॥ ७३॥

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे व्यये वा बलवर्जिते।
तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशो दारपुत्रादिपीडनम् ॥७४॥
राजभीतिकरश्चैव मध्ये तीर्थकरो भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ॥७५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दशेश से ६।८।१२ भाव में निर्बल हो तो अन्तर के आरम्भ में महाकष्ट, स्त्री पुत्र आदि को पीड़ा ॥ ७४ ॥ और राजभय तथा मध्य में तीर्थयात्रा होती है। दूसरे वा सातवें भाव के स्वामी हों तो अपमृत्यु का भय होता है। इस दोष की शान्ति के लिये विष्णुसहस्र नाम का जप करना चाहिए ॥ ७५ ॥

इति केतुदशायामन्तर्दशाफलम्।

--:०:--

अथ शुक्रान्तर्दशाफलम्

भृगोऽन्तर्गते शुक्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत् ॥ १ ॥
विप्रमूलाद्धनप्राप्तिर्गोमहिष्यादिलाभकृत् ।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे कल्याणसम्भवम् ॥ २ ॥

शुक्र की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण वा लाभ में बली शुक्र हो तो योग की प्रबलता होती है ॥ १ ॥ ऐसे शुक्र के अन्तर में ब्राह्मण द्वारा धन का लाभ और गौ-भैंस का लाभ होता है, पुत्रोत्सव और कल्याण होता है ॥ २ ॥

सन्मानं राजसन्मानं राज्यलाभो महत्सुखम् ।
स्वोच्चे वा स्वक्षेत्रे वापि तुङ्गांशे स्वांशगेऽपि वा ॥ ३ ॥
नूतनालयनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम् ।
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहः ॥ ४ ॥

सम्मान और राजा से सम्मान, राज्य का लाभ और महासुख होता है। यदि शुक्र अपने उच्च वा अपने राशि में वा उच्चांश वा अपने नवांश में हो तो ॥ ३ ॥ नवीन गृह का निर्माण, नित्य मिष्टान्न का भोजन, स्त्री-पुत्र का लाभ, मित्र के साथ भोजन, अन्नदान, नित्य दान, धन का संग्रह ॥ ४ ॥

महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम् ।
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत् ॥ ५ ॥
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत् ।
लग्नाद्युपचये शुक्रे शुभदृष्टियुतेक्षिते ॥ ६ ॥

और महाराजा की प्रसन्नता से वाहन-वस्त्र-आभूषण का लाभ और व्यवसाय से अधिक लाभ, चतुष्पद जीव का लाभ ॥ ५ ॥ पश्चिम दिशा की यात्रा से वाहन, वस्त्र आदि का लाभ होता है। यदि शुक्र लग्न से उपचय (३।६।१०।११) भाव में शुभग्रह से युत दृष्ट ॥ ६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मित्रांशे तुङ्गलाभेश - योगकारकसंयुते ।
राज्यलाभो महोत्साहो राजप्रीतिः शुभावहा ॥७॥
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिवर्धनम् ।
षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ।
चोरादिव्रणभीतिश्च सर्वत्र जनपीडनम् ॥८॥

अपने मित्र के नवांश, वा उच्च में लाभेश और योगकारक से युत हो तो राज्य का लाभ, महोत्साह, राजा से प्रीति॥ ७॥ गृह में कल्याण, सम्पत्ति, स्त्री-पुत्र आदि की वृद्धि होती है। यदि शुक्र ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो चोर आदि एंव व्रण का भय, सर्वत्र जनपीड़ा॥ ८॥

राजद्वारे जनद्वेष इष्टबन्धु विनाशनम् ।
दारपुत्रादिपीडा च सर्वत्र जनपीडनम् ॥९॥
द्वितीयद्यूननाथे तु स्थिते चेन्मरणं भवेत् ।
शक्तौ दुर्गाजपं कुर्याद्धेनदानं च कारयेत् ॥१०॥

राजकीय पुरुषों से द्वेष, इष्टबन्धु का नाश, स्त्री-पुत्र आदि को पीड़ा होती है॥ ९॥ २ वा ७ भाव के स्वामी हों तो मृत्यु होती है। अरिष्ट शान्त्यर्थ दुर्गा का जप और गोदान करना चाहिए॥ १०॥

अथ शुक्रदशायां सूर्यान्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यानान्तर्गते सूर्ये संतापं राजविद्विषम् ।
दायादकलहश्चैव व्यवहारमथापि वा ॥११॥
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे सूर्ये मित्रर्क्षे केन्द्रकोणगे ।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा ॥१२॥

शुक्र की दशा में सूर्य के अन्तर में संताप, राजा से शत्रुता, दायाद कलह, वा व्यवहार होता है॥ ११॥ यदि अपने उच्च, अपने राशि वा मित्र के राशि वा केन्द्र वा त्रिकोण में हो अथवा दशेश से केन्द्र या कोण वा लाभ वा धन स्थान में हो तो॥ १२॥

तद्भुक्तौ धनलाभः स्याद्राज्यस्त्रीधनसम्पदः ।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यमिष्टबन्धुसमागमः ॥१३॥
पितृमात्रोः सुखप्राप्तिं भ्रातृलाभं सुखावहम् ।
सत्की सुखसौभाग्यं पुत्रलाभं च विंदति ॥१४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धन का लाभ अन्तर्दशा में राज्य, स्त्री, धन सम्पत्ति का लाभ, अपने स्वामी से सुख, मित्र-बन्धु का समागम॥ १३॥ माता-पिता के सुख का लाभ और भाई के लाभ से सुख होता है। अच्छी कीर्ति से सुख-सौभाग्य और पुत्र का लाभ होता है॥ १४॥

षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च।
नीचे वा पापवर्गस्थे देहतापो मनोरुजा॥ १५॥

यदि सूर्य ६।८।१२ भाव में हो वा दशेश से भी ऐसा ही हो, नीच राशि में पापग्रह के षड्वर्ग में हो तो शरीर में ताप, मानसिक कष्ट॥ १५॥

स्वजनस्यापि संक्लेशो नित्यं निष्ठुरभाषणम्।
पितृपीडा बंधुहानी राजद्वारे विरोधकृत्॥ १६॥

आत्मीयलोगों को कष्ट, नित्य निष्ठुर भाषण, पिता को कष्ट, बन्धु की हानि, राजा से शत्रुता॥ १६॥

व्रणपीडाहिबाधा च स्वगृहे च भयं तथा।
नानारोगभयं चैव गृहक्षेत्रादिनाशनम्॥ १७॥
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं सूर्यशान्तिं च कारयेत्॥ १८॥

व्रण से पीड़ा, सर्प का भय, अपने गृह में भय, अनेक रोग का भय और गृह-कोप का नाश होता है॥ १७॥ सप्तमेश होने से शरीर बाधा होती है। इस दोष के शान्त्यर्थ सूर्य की शान्ति करनी चाहिए॥ १८॥

अथ शुक्रदशायां चन्द्रान्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव भाग्यकर्मेशसंयुते॥ १९॥

शुक्र की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण में वा अपने उच्च वा अपने राशि से भाग्य कर्मेश से युत॥ १९॥

शुभयुक्ते पूर्णचन्द्रे राज्यनाथेन संयुते।
तद्भुक्तौ वाहनाधिक्यमपत्येन महत्सुखम्॥ २०॥

वा शुभग्रह से युत पूर्णचन्द्र कर्मेश से युत चन्द्रमा हो तो उसके अंतर में अधिक वाहनों और लड़कों से बड़ा सुख होता है॥ २०॥

महाराजप्रसादेन गजांतैश्वर्यमादिशेत्।
महानदीस्नानं पुण्यं देवब्राह्मणपूजनम्॥ २१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गीतवाद्यप्रसङ्गादि - विद्वज्जनविभूषणम् ।
गोमहिष्यादिवृद्धिश्च व्यवसायेऽधिकं फलम् ॥ २२॥

महाराजा की प्रसन्नता से हाथी आदि ऐश्वर्य से सुख, महानदी के स्नान का पुण्य, देवता और ब्राह्मण का पूजन॥ २१॥ गीत-बाजे का प्रसंग, विद्वानों का आदर, गौ-भैंस की वृद्धि, व्यवसाय में लाभ॥ २२॥

भोजनाम्बरसौख्यं च बन्धुसंयुक्तभोजनम् ।
नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे ॥ २३॥
दायेशात्षष्ठगे वापि रन्ध्रे वा व्ययराशिगे ।
तत्काले धननाशः स्यात्संचरेत महद्भयम् ॥ २४॥

भोजन, वस्त्र का सुख और बन्धु के साथ भोजन होता है। यदि चन्द्रमा नीच राशि में वा अस्त वा ६।८।१२ राशि में॥ २३॥ वा दशेश से ६।८।१२ राशि में हो तो तत्काल धन का नाश और बड़ा भय करता है॥ २४॥

देहायासो मनस्तापो राजद्वारे विरोधकृत् ।
विदेशगमनं चैव तीर्थयात्रादिकं फलम् ॥ २५॥
दारपुत्रादिपीडा च आत्मबंधुविरोधकृत् ।
दायेशात्केन्द्रलाभस्थे त्रिकोणे धनगेऽपि वा ॥ २६॥

देह में परिश्रम, मन में संताप, राजद्वार से विरोध, विदेश यात्रा, तीर्थयात्रा, स्त्री-पुरुष आदि को पीड़ा और आत्मीय बंधु से विरोध होता है॥ २५॥ दशेश केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण, दूसरे भाव में हो तो॥ २६॥

राजप्रीतिकरं चैव देशग्रामाधिपत्यता ।
धैर्यं यशः सुखं कीर्त्तिर्वाहऽनाम्बरभूषणम् ॥ २७॥

राजा से प्रीति, देश-ग्राम की आधिपत्यता, धैर्य, यश, सुख-कीर्त्ति-वाहन, वस्त्र आभूषण॥ २७॥

कूपारामतडागादिनिर्माणं धनसंग्रहः ।
भुक्त्यादौ देहसौख्यं स्यादंते क्लेषकरो भवेत् ॥ २८॥

कुआं, बगीचा, तालाब आदि का निर्माण, धन का संग्रह होता है। अन्तर के आदि में शरीर सुख और अन्त में कष्ट होता है॥ २८॥

अथ शुक्रदशायां भौमान्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षभे भौमे लाभे वा बलसंयुते ॥ २९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नाधिपेन संयुक्ते कर्मभाग्येशसंयुते ।
तद्भुक्तौ राजयोगादिसंपदं शुभशोभनम् ॥ ३० ॥

शुक्र की दशा में लग्न से केन्द्र वा त्रिकोण में वा उच्च वा स्वराशि में वा लाभ स्थान में बलवान् ॥ २९ ॥ लग्नेश वा भाग्येश कर्मेश से युत भौम के अन्तर में राजयोग की सभी सुन्दर सम्पत्ति ॥ ३० ॥

वस्त्राभरणभूम्यादेरिष्टसिद्धिः सुखावहा ।
षष्ठाष्टमव्यये वापि दायेशाद्वा तथैव च ॥ ३१ ॥
शीतज्वरादिपीडा च पितृ - मातृभयावहा ।
ज्वराद्यधिकरोगाश्च स्थानभ्रंशो मनोरुजा ॥ ३२ ॥

वस्त्र, आभूषण, भूमि आदि इष्टसिद्धि होती है, यदि भौम लग्न से वा दशेश से ६ । ८ । १२ भाव में हो तो ॥ ३१ ॥ शीतज्वर से पीड़ा और माता-पिता को भय, ज्वरादि अनेक रोग, स्थाननाश, मन में अशान्ति ॥ ३२ ॥

स्वबंधुजनहानिश्च कलहो राजविद्विषम् ।
राजद्वारजनद्वेषो धनधान्यव्ययाधिकम् ॥ ३३ ॥

अपने बन्धुओं की हानि, कलह, राजा और राज कर्मचारियों से द्वेष, धनधान्य का अधिक व्यय ॥ ३३ ॥

व्यवसायात्फलं नेष्टं ग्रामभूम्यादिहानिकृत् ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति ॥ ३४ ॥

व्यवसाय से हानि और ग्राम, भूमि आदि की हानि होती है। दूसरे वा सातवें भाव के स्वामी होने से शरीर में बाधा होती है ॥ ३४ ॥

अथ शुक्रदशायां राह्वन्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यान्तर्गते राहौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे वा शुभसंदृष्टे योगकारकसंयुते ॥ ३५ ॥
तद्भुक्तौ बहुसौख्यं च धनधान्यादिलाभकृत् ।
इष्टबन्धुसमाकीर्णं भोजनाम्बरलाभदम् ॥ ३६ ॥

शुक्र की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण वा अपने उच्च शुभग्रह से देखे जाते हुये योगकारक ग्रह से युक्त ॥ ३५ ॥ राहु के अंतर में बहुत सुख, धन-धान्य, वस्त्र का लाभ, इष्ट बंधुओं का समागम, भोजन-वस्त्र का लाभ ॥३६॥

यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्पशुक्षेत्रादिसंभवः ।
लग्नाद्युपचये राहौ तद्भुक्तिः सुखदा भवेत् ॥ ३७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शत्रुनाशो महोत्साहो राजप्रीतिकरा शुभा ।
भुक्त्यादौ शरमासांश्च अंते ज्वरमजीर्णकृत् ॥ ३८॥

यात्रा से लाभ और कार्य की सिद्धि, पशु-क्षेत्र आदि का लाभ होता है। लग्न से उपचय (३।६।१०।११) भाव में राहु हो तो इसका अन्तर सुखकर होता है॥ ३७॥ शत्रु का नाश, बड़ा उत्साह एवं राजा से प्रेम होता है। अंतर के आदि में ५ मास शुभफल, अंत में अजीर्ण से ज्वर का भय॥ ३८॥

कार्ये विघ्नमवाप्नोति सञ्चरेच्च मनोव्यथाम् ।
परं सुखं च सौभाग्यं महानिव समश्नुते ॥ ३९॥
नैर्ऋतीं दिशमाश्रित्य प्रयाणं प्रभुदर्शनम् ।
यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्स्वदेशे पुनरेष्यति ॥ ४०॥

कार्य में विघ्न और मानसिक कष्ट होता। इसके बाद सुख सौभाग्य, महाराजा के समान होता है॥ ३९॥ नैर्ऋत्य दिशा की यात्रा और स्वामी का दर्शन, यात्रा में कार्य सिद्धि, पुनः स्वदेश में आगमन॥ ४०॥

उपकारो ब्राह्मणानां तीर्थयात्राफलं भवेत् ।
दायेशात्षष्ठराशिस्थे व्यये वा पापसंयुते ॥ ४१॥
अशुभं लभते कर्म पितृमातृजनावपि ।
सर्वत्र जनविद्वेषं नानारूपादिसंभवम् ॥ ४२॥

ब्राह्मणों का उपकार और तीर्थयात्रा का फल होता है। दशेश से ६।१२ स्थान में पापग्रह से युत हो तो॥ ४१॥ पिता-माता आदि के अशुभ कर्मों की संप्राप्ति,, सर्वत्र लोगों से विरोध, अनेक प्रकार से कष्ट होते हैं॥ ४२॥

द्वितीये सप्तमे वापि देहालस्यं विनिर्दिशेत् ।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत् ॥ ४३॥

२ वा ७ भाव में हो तो देह में आलस्य होता है। इस दोष के शांत्यर्थ मृत्युंजय का जप करना चाहिये॥ ४३॥

अथ शुक्रदशायां गुर्वन्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यान्तर्गते जीवे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे ।
दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्ये वा कर्मराशिगे ॥ ४४॥
नष्टराज्याद्धनप्राप्तिमिष्टार्थाम्बरसम्पदम् ।
मित्रप्रभोश्च सन्मानं धनधान्यपरां गतिम् ॥ ४५॥

शुक्र की दशा में अपने उच्च, अपने राशि में, केन्द्र में, दशेश से शुभराशि में भाग्य वा केन्द्र में गये हुये गुरु के अंतर में॥ ४४॥ नष्ट हुये राज्य

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

से धन का लाभ, नष्ट की सिद्धि, वस्त्रादि का लाभ, मित्र और स्वामी का सम्मान, धनधान्य का लाभ॥ ४५॥

राजसन्मानकीर्त्तिं च अश्वांदोलादिलाभकृत्।
विद्वत्प्रभुसमाकीर्णं शास्त्रापाठपरिश्रमम् ॥४६॥
पुत्रोत्सवादि - सन्तोषमिष्टबन्धुसमागमम्।
पितृमातृसुखप्राप्तिर्भ्रातृपुत्रादिसौख्यकृत् ॥४७॥

राजा से सम्मान और कीर्त्ति, घोड़ा, पालकी का लाभ, विद्वान् और स्वामीका समागम, शास्त्रमें परिश्रम॥४६॥ पुत्रोत्सव, इष्टबंधु का समागम, पिता-माता से सुख की प्राप्ति और भाई तथा पुत्र का सुख होता है॥ ४७॥

दायेशात्षष्ठराशिस्थे व्यये वा पापसंयुते।
राजचौरादिपीडा च देहपीडा भविष्यति ॥४८॥
आत्मरुग्बंधुकष्टं स्यात्कलेहन मनोव्यथा।
स्थानच्युतिं प्रवासं च नानारोगं समाप्नुयात् ॥४९॥

दशेश से ६ वा १२वें भाव में पापग्रह से युत हो तो राजा तथा चोर से शरीर में पीड़ा होती है॥ ४८॥ अपने रोगी, बंधुओं को कष्ट, कलह से मन में व्यथा, स्थानच्युति, प्रवास, अनेक रोग होते हैं॥ ४९॥

द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं महामृत्युंजयं चरेत् ॥५०॥

२ वा ७ भाव का स्वामी हो तो शरीर में बाधा होती है। इस दोष के शान्त्यर्थ मृत्युंजय का जप करना चाहिये॥ ५०॥

अथ शुक्रदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे वा परमोच्चगे।
स्वर्क्षकेन्द्रत्रिकोणस्थे तुङ्गांशे स्वांशगेऽपि वा ॥५१॥
तद्भुक्तौ बहुसौख्यं स्यादिष्टबंधुसमन्वितः।
सन्मानं राजसन्मानं पुत्रिकागमसम्भवः ॥५२॥

शुक्र की दशा में अपने उच्च वा परमोच्च में वा अपने राशि वा केंद्र वा त्रिकोण में उच्चांश वा अपने नवांश में गये हुये॥५१॥ शनि के अंतर में अनेक सुख, इष्टबंधु से युक्त 'सम्मान', अनेक लोगोंसे सम्मान, कन्याका जन्म॥५२॥

पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्दानधर्मादिपुण्यकृत्।
स्वप्रभोश्चविशेषःस्यादवैपरीत्ये क्लेशभाग्भवेत् ॥५३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

देहालस्यमवाप्नोति आयाच्चाप्यधकंव्ययम् ।
षष्ठाष्टमव्यये मन्दे दायेशाद्वा तथैव च ॥५४॥

पुण्य तीर्थ के फल की प्राप्ति, दान धर्म आदि पुण्य, अपने स्वामी से विशेष सम्मान होता है। इसके विपरीत यानि नीच राशि में हों तो कष्ट होता है॥५३॥ शरीर में आलस्य, आमदनी से अधिक खर्च होता है। लग्न से वा दशेश से ६।८।१२ भाव में शनि हो तो॥५४॥

भुक्त्यादौ च महत्पीडा पितृमातृजनावपि ।
दारपुत्रादिपीडा च संसारे देहविभ्रमम् ॥५५॥
व्यवसायात्फलं नष्टं गोमहिष्यादिहानिकृत् ।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं तिलहोमं च कारयेत् ॥५६॥

अंतर के आदि में महापीड़ा, पिता-माता को भी कष्ट, स्त्री-पुत्र को कष्ट, संसार में भ्रम॥५५॥ व्यवसाय से हानि, गौ-भैंस की हानि होती है। २ वा ७ भाव के स्वामी हो तो शरीर में बाधा होती है। इसकी शान्ति के लिये तिल से हवन करना चाहिये॥५६॥

अथ शुक्रदशायां बुधान्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रे लाभत्रिकोणगे ।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि राजप्रीतिकरं शुभम् ॥५७॥

शुक्र की दशा में केन्द्र वा लाभ वा त्रिकोण में वा अपने उच्च वा अपने राशि में गये हुये बुध के अन्तर में राजा से प्रीति॥५७॥

सौभाग्यं पुत्रलाभश्च सन्मार्गे धनलाभकृत् ।
पुराणधर्मश्रवणं शृंगारिजनसंगमः ॥५८॥

सौभाग्य, पुत्र का लाभ, अच्छे मार्ग से धन का लाभ, पुराण और धर्म-वार्ता का श्रवण, शृंगार करनेवालों का समागम॥५८॥

इष्टबंधुजनाकीर्णं विप्रप्रभुसमागमः ।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं नित्यं मिष्टान्नभोजनम् ॥५९॥
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते ।
पापदृष्टौ तथा युक्ते चतुष्पाज्जीवहानिकृत् ॥६०॥

इष्ट बंधुओं का समागम तथा ब्राह्मण और स्वामी का समागम, महासुख और नित्य मिष्टान्न का भोजन होता है॥५९॥ दशेश से ६।८।१२ भाव में निर्बल हो और पाप दृष्ट वा युत हो तो चतुष्पद की हानि॥६०॥

CC-0.JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by eGangotri Foundation USA

अन्यालयनिवासश्च मनोवैकल्यसम्भवः ।
व्यापारेषु तथा प्राज्ञ ! हानिरेव न संशयः ॥६१॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तंमध्ये सौख्यं विनिर्दिशेत् ।
अंते क्लेशकरं चैव शीतवातज्वरादिकम् ॥६२॥
सप्तमाधीशदोषेण देहपीडा भविष्यति ।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत् ॥६३॥

दूसरे के मकान में वास, मन में विकलता, व्यापार में हानि होती है॥ ६१ ॥ अन्तर के आदि में शुभफल, मध्य में सुख और अन्त में कष्ट, शीत-वात ज्वर होता है॥ ६२॥ सप्तमेश होने के दोष से शरीर में पीड़ा होती है। इसके शान्त्यर्थ विष्णु सहस्रनाम का जप करना चाहिये॥ ६३॥

अथ शुक्रदशायां केत्वन्तर्दशाफलम्-

शुक्रस्यान्तर्गते केतौ स्वोच्चे वा स्वर्क्षगेऽपि वा ।
योगकारकसम्बन्धे स्थानवीर्यसमन्विते ॥६४॥
भुक्त्यादौ शुभमाधिक्यान्नित्यं मिष्ठान्नभोजनम् ।
व्यवसायात्फलाधिक्यं गोमहिष्यादिवृद्धिकृत् ॥६५॥

शुक्र की दशा में अपने उच्च वा अपने राशि वा योगकारक के संबंध युक्त वा स्थान बल से युक्त॥६४॥ केतु के अन्तर में शुभफल की अधिकता से नित्य मिष्ठान्न का भोजन, व्यवसाय से अधिक लाभ, गौ-भैंस की वृद्धि॥ ६५॥

धनधान्यसमृद्धिश्च संग्रामे विजयो भवेत् ।
भुक्त्यंते हि सुखं चैव भुक्त्यादौ मध्यमं फलम् ॥६६॥

धन धान्य समृद्धि का लाभ और संग्राम में विजय होती है। अंतर के अन्त में सुख और आदि में मध्यम फल॥ ६६॥

मध्ये मध्ये महत्कष्टं पश्चादारोग्यमादिशेत् ।
दायेशाद्रिपुरंध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते ॥६७॥

और मध्य के बीच-बीच में महाकष्ट, पीछे आरोग्यता होती है। दशेश से ६।८।१२ भाव में पापग्रह से युक्त हो तो॥ ६७॥

चौराहिव्रणपीडा च बुद्धिनाशो महद्भयम् ।
शिरोरुजा मनस्तापश्चाकस्मात्कलहस्तथा ॥६८॥
प्रमेहरोगसम्प्राप्तिर्नानामार्गे धनव्ययः ।
भार्यापुत्रविरोधश्च गमनं कार्यनाशनम् ॥६९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चोर-सर्प, व्रण की पीड़ा, बुद्धि का नाश, महाभय, सिर में रोग, मन में संताप, अकस्मात् कलह॥ ६८॥ प्रमेह रोग की उत्पत्ति, अनेक मार्ग में धनव्यय, स्त्री, पुत्र से विरोध, यात्रा और कार्य की हानि होती है॥ ६९॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।
छागदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥७०॥

२।७ भाव के स्वामी हों तो शरीर में कष्ट होता है। इस दोष के शान्त्यर्थ मृत्युंजय का जप करना चाहिये और सभी सम्पत्ति को देनेवाला छाग का दान करना चाहिये॥ ७०॥

इति पाराशरहोरायां पूर्वार्धेऽविंशोत्तर्यामन्तर्दशाप्रकरणं समाप्तम्।

अथ प्रत्यन्तर्दशाऽध्यायः

अथ प्रत्यन्तर्दशासाधनप्रकारः-

स्वान्तर्दशाब्दवृन्दं च हन्यात्स्वाब्दैर्ग्रहस्य च।
विंशोत्तरशतेनाप्तं घस्राः शेषं घट्यादिकम्॥१॥

ग्रह के अन्तर्दशामान को ग्रह के दशा वर्ष संख्या से गुणाकर गुणनफल में १२० का भाग देने से लब्धि, दिनादि उस ग्रह का प्रत्यन्तर होता है॥ १॥

उदाहरण- जैसे सूर्य की दशा में सूर्य का अन्तर ० वर्ष ३ मास और १८ दिन होता है, इसे सूर्य के दशा वर्ष ६ से गुणा करने से १ वर्ष ६ मास १८ दिन

०।३।१८ को ६ से गुणा किया तो
१।६।१८ इसमें १२० का भाग दिया

इसी प्रकार सूर्य की दशा में चन्द्रमा के अन्तर्दशा वर्षादि ०।६।० को सूर्य के दशावर्ष ६ से गुणाकर १२० का भाग दिया

०।६।० X ६
१२०) ०।३६।०(० व.
१२
०+३६
१२०) ३६(०मा.
X ३०
१२०) १०८०(९ दि.
१०८०
X

१२०)१।६।१८(०वर्ष
१२
१२+६
१२०) २१ (०मास
२१ X ३०
६३० + १८
१२०) ६४८ (५ दिन
६००
४८ X ६०
१२०) २८८०(२४ घटी
२४०
४८०
४८०
X

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हुए। इसमें १२० का भाग देने से ० वर्ष ० मास ५ दिन और २४ घटी यह सूर्य के दशा में सूर्य के अन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर्दशा हुआ। यह सूर्य की दशा में सूर्य के अन्तर में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर हुआ। इसी प्रकार भौमादि के अन्तर्दशा वर्षादि को सूर्य के दशावर्ष से गुणाकर १२० से भाग देने से सूर्यान्तर में भौमादि के प्रत्यन्तर्दशा दिनादि आ जाती है। अर्थात् जिस ग्रह के अन्तर्दशा में जिस ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा लानी हो उसके अन्तर्दशा वर्षादि को अन्तर्दशेश के दशा वर्ष से गुणाकर १२० का भाग देने से उसके प्रत्यन्तर्दशा का दिनादि मान आ जाता है।

अथ सूर्यान्तरे सूर्यादीनां प्रत्यन्तर्दशाफलम्-

उद्वेगश्च महद्वित्तदारार्त्तिः शिरसि व्यथा।
ब्राह्मणेन विवादश्च सूर्यः स्वविदशां गतः ॥ २ ॥(सू.सू.)

सूर्य के अन्तर में सूर्य के प्रत्यन्तर में उद्वेग, धन का तथा स्त्री को बड़ा कष्ट और ब्राह्मण के साथ विवाद होता है॥ २॥

उद्वेगं कलहं चित्तपीडां स्वहृतिमद्भुताम्।
मणिमुक्तादिनाशश्च विदशासु रवेः शशी ॥ ३ ॥(सू.चं.)

सूर्य के अन्तर में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में उद्वेग, कलह, मन को व्यथा, धन का अपहरण और मणि-मुक्ता आदि का नाश होता है॥ ३॥

राजभीतिः शस्त्रभीर्तिबधनं बहुसंकटम्।
शत्रुभंगस्तथा घातो विदशासु रवेःकुजः ॥ ४ ॥(सू.मं.)

सूर्य के अन्तर में भौम के प्रत्यन्तर में राजभय, शस्त्रभय, बन्धन, अनेक संकट, शत्रु और अग्नि से पीड़ा होती है॥ ४॥

श्लेष्मव्याधिः शस्त्रभीतिर्धनहानिर्महद्भयम्।
राजभंगस्तथा घातो विदशासु रवेस्तमः ॥ ५ ॥(सू.रा.)

सूर्य के अंतर में राहु के प्रत्यन्तर में कफव्याधि, शस्त्र से भय, धन की हानि, बड़ा भय, राज का भंग और चोट आदि से कष्ट होता है॥ ५॥

शत्रुनाशं जयं वृद्धिं वस्त्रहेमादिभूषणम्।
वस्त्रयानादिलब्धिं च गोधनं च रवेर्गुरुः ॥ ६ ॥(सू.गु.)

सूर्य के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में शत्रु का नाश, विजय, उन्नति, वस्त्र, सुवर्ण के आभूषण, सवारी और गौ का लाभ होता है॥ ६॥

धनहानिः पशोः पीडा महोद्वेगो महारुजः।
अशुभं सर्वमाप्नोति विदशासु रवेः शनिः ॥ ७ ॥(सू.श.)

सूर्य के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर में धन की हानि, पशु को पीड़ा, उद्वेग, महारोग और अनेक अशुभ होते हैं॥ ७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विद्यालाभो बंधुसंगो भोज्यप्राप्तिर्धनागमः ।
धर्मलाभो नृपात्पूजा विदशासु रवेर्बुधः ॥ ८ ॥(सू.बु.)
प्राणभीतिर्महाहानी राजभीतिश्च विग्रहः ।
शत्रुजा च महावादो विदशासु रवेः शिखि ॥ ९ ॥(सू.के.)

सूर्य के अन्तर में बुध के प्रत्यन्तर में विद्या का लाभ, बन्धु का समागम, भोज्य की प्राप्ति, धन का आगम, धर्म का लाभ और राजा से आदर होता है॥ ८॥ सूर्य की दशा में केतु के प्रत्यन्तर में प्राण का भय, बड़ी हानि, राजभय, शत्रुता तथा शत्रु से बड़ा वादविवाद होता है॥ ९॥

दिनानि समरूपाणि लाभोऽप्यल्पो भवेदिह ।
स्वल्पा च सुखसम्पत्तिर्विदशासु रवेर्भृगुः ॥ १० ॥(सू.शु.)

सूर्य के अन्तर में शुक्र के प्रत्यन्तर में समान रूप से दिन बीतते हैं, लाभ थोड़ा होता है और थोड़ी ही सुख सम्पत्ति होती है॥ १०॥

इति सूर्यान्तरे प्रत्यंतरफलम्।

अथ चन्द्रान्तरे चन्द्रादीनां प्रत्यन्तरफलम्-

भूभोज्यधनसम्प्राप्ती राजपूजा महत्सुखम् ।
महाँल्लाभः दारसौख्यं विदशासु स्वयं शशी ॥ ११ ॥(चं.चं.)
मतिर्वृद्धिर्महापूज्यः सुखं बंधुजनैः सह ।
धनागमं शत्रुभयं चन्द्रस्यान्तर्गतः कुजः ॥ १२ ॥(चं.मं.)

चन्द्रमा के अन्तर में चन्द्रमा के ही प्रत्यन्तर में भूमि, भोजनपदार्थ, धन की प्राप्ति, राजा से पूजा, बड़ा सुख, अत्यन्त लाभ और स्त्री का सुख होता है॥ ११॥ चन्द्रमा के अन्तर में भौम के प्रत्यन्तर में बुद्धि में वृद्धि, अत्यन्त आदर, बन्धुओं से सुख, धन का आगम और शत्रु का भय होता है॥ १२॥

भवेत्कल्याणसम्पत्ती राजवित्तसमागमः ।
अशुभैरल्पमृत्युश्च चन्द्रचन्द्रान्तरे तमः ॥ १३ ॥(चं.रा.)

चन्द्रमा के अन्तर में राहु के प्रत्यन्तर में कल्याण, सम्पत्ति, राजा से धन का समागम, अशुभ और अल्पमृत्यु का भय होता है॥ १३॥

वस्त्रलाभो महत्तेजो ब्रह्मज्ञानं च सद्गुरोः ।
राज्यालङ्करणावाप्तिश्चन्द्रचन्द्रान्तरे गुरुः ॥ १४ ॥(चं.बृ.)

चन्द्रमा के अन्तर में गुरु के प्रत्यंतर में वस्त्र का लाभ, तेज में वृद्धि, अच्छे गुरु से ब्रह्मज्ञान की तथा राज्यचिह्नों की प्राप्ति होती है॥ १४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दुर्दिनि लभते पीडा वातपित्ताद्विशेषतः।
धनधान्ययशोहानिश्चन्द्रचन्द्रान्तरे शनिः॥१५॥(चं.श.)
पुत्रजन्महयप्राप्तिर्विद्यालाभो महोन्नतिः।
शुक्लवस्त्रान्नलाभश्च चन्द्रचन्द्रातरे बुधः॥१६॥(चं.बु.)

चन्द्रमा के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर में दुर्दिन में विशेषकर वाय-पित्त के विकार से कष्ट, धन-धान्य और यश की हानि होती है॥१५॥ चन्द्रमा के अंतर में बुध के प्रत्यन्तर में पुत्र का जन्म, घोड़े की प्राप्ति, विद्या का लाभ, अत्यन्त उन्नति और सफेद वस्त्र एवं अन्न का लाभ होता है॥१६॥

ब्राह्मणेन समं युद्धमपमृत्युः सुखक्षयः।
सर्वत्र जायते क्लेशश्चन्द्रचन्द्रान्तरे शिखी॥१७॥(चं.के.)

चन्द्रमा के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर में ब्राह्मण के साथ युद्ध, अपमृत्यु, सुख की हानि और सर्वत्र कष्ट प्राप्त होता है॥१७॥

धनलाभो महत्सौख्यं कन्याजन्म सुभोजनम्।
प्रीतिश्च सर्वलोकेभ्यश्चन्द्रचद्रान्तरे भृगुः॥१८॥(चं.शु.)

चन्द्रमा के अन्तर में शुक्र के प्रत्यन्तर में धन का लाभ, महासुख, कन्या का जन्म, सुन्दर भोजन और सभी प्राणियों से प्रेम होता है॥१८॥

अन्नागमो वस्त्रलाभः शत्रुहानिः सुखागमः।
सर्वत्र विजयप्राप्तिश्चन्द्रचन्द्रान्तरे रविः॥१९॥(चं.सू.)

चन्द्रमा के अंतर में सूर्य के प्रत्यन्तर में अन्न का आगम, वस्त्र का लाभ, शत्रु का नाश और सर्वत्र विजय होती है॥१९॥

इति चन्द्रान्तरे प्रत्यंतरफलम्।

अथ भौमान्तरे भौमादीनां प्रत्यन्तरफलम्-

शत्रुभीतिं कलिं घोरमकस्यमाज्ञायते भयम्।
रक्तस्रावोऽपमृत्युश्च विदशासु स्वयं कुजः॥२०॥(मं.मं.)

भौम के अन्तर में भौम ही के प्रत्यन्तर में शत्रु का भय, अकस्मात् घोररूप से झगड़ा, भय, रक्तस्राव और अपमृत्यु होती है॥२०॥

बंधनं राजभङ्गश्च धनहानिः कुभोजनम्।
कलहं शत्रुभिर्नित्यं भौमभौमान्तरे तमः॥२१॥(मं.रा.)

भौम की दशा में राहु के अन्तर में बंधन, राज्य का नाश, धन की हानि, खराब भोजन तथा नित्य शत्रु से कलह होता है॥२१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मतिनाशं तथा दुःखं संतापः कलहो भवेत् ।
विफलं चिंतितं सर्वं भौमभौमान्तरे गुरुः ॥ २२ ॥(मं. बृ.)

भौम के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश, दुःख, संताप कलह और सभी चिंतित कार्य विफल हो जाते हैं॥ २२॥

स्वामिनाशस्तथा पीडा धनहानिर्महद्भयम् ।
वैकल्यं कलहस्त्रासो भौमभौमान्तरे शनिः ॥ २३ ॥(मं. श.)

भौम के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर में स्वामी का नाश, पीडा, धन की हानि, महाभय, विकलता, कलह और त्रास होता है॥ २३॥

सर्वथा बुद्धिनाशश्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो भौमभौमान्तरे बुधः ॥ २४ ॥(मं. बु.)

भौम की अन्तर्दशा में बुध के प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश, धनहानि, शरीर में ज्वर, वस्त्र, अन्न और मित्रों का नाश होता है॥ २४॥

आलस्यं च शिरःपीडा पापरोगयापमृत्युकृत् ।
राजभीतिः शस्त्रघातो भौमभौमान्तरे शिखी ॥ २५ ॥(मं. के.)

भौम के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर में आलस्य, शिर में पीड़ा, पापजन्य रोग, अपमृत्यु, राजभय और शस्त्र से चोट लगने का भय होता है॥ २५॥

चांडालात्संकटस्त्रासो राजशस्त्रभयं भवेत् ।
अतिसारो च वमनं भौमभौमान्तरे भृगुः ॥ २६ ॥(मं. शु.)

भौम के अन्तर में शुक्र के प्रत्यन्तर में चांडाल से संकट और त्रास, राजा और शस्त्र से भय, अतिसार और वमन होता है॥ २६॥

भूमिलाभोऽर्थसम्पत्तिः संतोषो मित्रसंमतिः ।
सर्वत्र सुखमाप्नोति भौमभौमान्तरे रविः ॥ २७ ॥(मं. सू.)

भौम के अन्तर में सूर्य के प्रत्यन्तर में भूमि का लाभ, धन-सम्पत्ति का लाभ, संतोष, मित्रों का लाभ और सर्वत्र सुख होता है॥ २७॥

याम्यां दिशि भवेल्लाभः सितवस्त्रविभूषणम् ।
संसिद्धिः सर्वकार्याणां भौमभौमान्तरे शशी ॥ २८ ॥(मं. चं.)

भौम की दशा में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में दक्षिणदिशा से लाभ, सफेद वस्त्राभूषण का लाभ और सभी कार्यों की सिद्धि होती है॥ २८॥

इति भौमप्रत्यन्तरफलम्-

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ राह्वन्तरे राह्वादीनां प्रत्यन्तरफलम्-

बंधनं बहुधा रोगो बाहुघातः सुहृद्भयम् ।
अकस्मात्प्राप्यते व्याधिः राहुप्रत्यन्तरे राहुः ॥ २९॥(रा.रा.)

राहु की दशा में राहु के अन्तर में बंधन, अनेक रोग, बाहु में आघात, मित्र से भय, अकस्मात् व्याधि होती है॥ २९॥

सर्वत्र लभते लाभं गजाश्वं च धनागमम् ।
राजसन्मानदं राज्यं भवेद्राह्वन्तरे गुरुः ॥ ३०॥(रा.बृ.)

राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में सर्वत्र लाभ, हाथी, घोड़ा, धन का लाभ तथा राज-सन्मान से युक्त राज्य की प्राप्ति होती है॥ ३०॥

बंधनं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम् ।
प्रत्यहं वातपीडा च राहो राह्वन्तरे शनिः ॥ ३१॥(रा.श.)

राहु के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर में घोर बंधन होता है। सुख की हानि और बड़ा भय और प्रतिदिन वायु से पीड़ा होती है॥ ३१॥

सर्वत्र बहुधा लाभः स्त्रीसमश्च विशेषतः ।
परदेशगतिः सिद्धी राहो राह्वन्तरे बुधः ॥ ३२॥(रा.बु.)

राहु की दशा में बुध के प्रत्यन्तर में सर्वत्र अनेक लाभ तथा स्त्री संसर्ग से विशेष लाभ और परदेश से विशेष सिद्धि होती है॥ ३२॥

बुद्धिनाशो भयं विघ्नं धनहानिर्महद्भयम् ।
सर्वत्र कलहोद्वेगो राहो राह्वन्तरे शिखी ॥ ३३॥(रा.के.)
योगिनीभ्यो भयं भूयादश्वहानिः कुभोजनम् ।
स्त्रीनाशः कुलजं शोकं राहो राह्वंतरे सितः ॥ ३४॥(रा.शु.)

राहु के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश, भय, विघ्न, धन की हानि, बड़ा भय और सर्वत्र कलह और द्वेष होता है॥ ३३॥ राहु के अंतर में शुक्र के प्रत्यन्तर में योगिनी (पिशाचिनी आदि) से भय, घोड़े का नाश, खराब भोजन, स्त्री का नाश और कुलजनित शोक होता है॥ ३४॥

ज्वररोगो महाभीतिः पुत्रपौत्रादिपीडनम् ।
अल्पमृत्युः प्रमादश्च राहो राह्वन्तरे रविः ॥ ३५॥(रा.सू.)

राहु के अंतर में सूर्य के प्रत्यन्तर में ज्वररोग, महाभय, पुत्र-पौत्र को पीड़ा, अपमृत्यु और प्रमाद होता है॥ ३५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उद्वेगकलहो चिन्ता मानहानिर्महद्भयम् ।
पितुर्विकलता देहे राहो राह्वन्तरे शशी ॥ ३६ ॥(रा. चं.)

राहु की दशा में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में उद्वेग, कलह, चिन्ता, मानहानि, महाभय, पिता आदि के शरीर में विकलता होती है॥ ३६॥

भगंदरकृता पीडा रक्तपित्तप्रपीडनम् ।
अर्थहानिर्महोद्वेगो राहो राह्वन्तरे कुजः ॥ ३७ ॥(रा. मं.)

राहु के अन्तर में भौम के प्रत्यंतर में भगंदर रोग से पीड़ा, रक्त-पित्त से पीड़ा, धनहानि और महान् उद्वेग होता है॥ ३७॥

इति राहुप्रत्यन्तरफलम्।

अथ गुर्वन्तरे गुर्वादीनांप्रत्यंतर-

हेमलाभो धान्यवृद्धिः कल्याणं च फलोदयः ।
बहुभाग्यं गृहे वृद्धिं जीवजीवान्तरे गुरुः ॥ ३८ ॥(बृ. बृ.)

गुरु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में सुवर्ण का लाभ, धान्य वृद्धि, कल्याण, फलोदय अनेक प्रकार से भाग्योदय और घर में वृद्धि होती है॥ ३८॥

गोभूमिहयलाभः स्यात्सर्वत्र सुखसाधनम् ।
संग्रहो ह्यन्नपानादि गुरुर्गुर्वन्तरा शनिः ॥ ३९ ॥(बृ. श.)

गुरु के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर में गौ, भूमि, सुवर्ण का लाभ, सर्वत्र सुख का साधन, अन्न पान आदि का संग्रह होता है॥ ३९॥

विद्यालाभो वस्त्रलाभो ज्ञानलाभः समौक्षिकः ।
सुहृदां संगमः स्नेहो जीवजीवान्तरा बुधः ॥ ४० ॥(बृ. बु.)

गुरु के अन्तर में बुध के प्रत्यन्तर में विद्या का लाभ, वस्त्र का लाभ, मौक्षिक ज्ञान का लाभ, मित्रों से समागम और स्नेह होता है॥ ४०॥

जलभीतिस्तथा चौर्यं बंधनं कलहो भवेत् ।
अल्पमृत्युर्भयं घोरं जीवजीवांतरे ध्वजः ॥ ४१ ॥(बृ. के.)

गुरु के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर में जल से भय, चोरी का भय, बंधन, कलह तथा घोर अपमृत्यु का भय होता है॥ ४१॥

नानाविद्यार्थसम्प्राप्तिर्हेमवस्त्रविभूषम् ।
लभते क्षेमसंतोषं जीवजीवांतरे कविः ॥ ४२ ॥(बृ. शु.)

गुरु के अन्तर में शुक्र के प्रत्यन्तर में अनेक प्रकार से धन का लाभ, सुवर्ण, वस्त्र, आभूषण का लाभ और कुशल, संतोष का लाभ होता है॥ ४२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नृपाल्लाभस्तथामित्रात्पितृतोमातृतोऽपि वा ।
सर्वत्र लभते पूजां जीवजीवान्तरा रविः ॥४३॥(बृ.सू.)

गुरु के अंतर में सूर्य के प्रत्यन्तर में राजा से लाभ, मित्र, पिता, माता से लाभ और सर्वत्र पूजनीय होता है॥ ४३॥

सर्वदुःखविमोक्षश्च मुक्तालाभो हयस्य च ।
सिध्यंति सर्वकार्याणि जीवजीवांतरे शशी ॥४४॥(बृ.चं.)

गुरु के अन्तर में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में सभी दुःखों का नाश, मुक्ता और अश्व का लाभ और सभी कार्य सिद्ध होते हैं॥ ४४॥

शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वह्निमान्द्यमजीर्णता ।
पीडा शत्रुकृता भूरि जीवजीवान्तरे कुजः ॥४५॥(बृ.मं.)

गुरु के अन्तर में भौम के प्रत्यन्तर में शस्त्र का भय, गुदा में पीड़ा, अग्निमांद्य, अजीर्ण और शत्रु से अधिक पीड़ा होती है॥ ४५॥

चांडालेन विरोधः स्याद्भयं तेभ्यो रतिग्रहः ।
कष्टं स्याद्व्याधिशत्रुभ्यो जीवजीवान्तरे तमः ॥४६॥(बृ.रा.)

गुरु के अंतर में राहु के प्रत्यंतर में चांडाल से विरोध और उनसे भय, व्याधि और शत्रु से कष्ट होता है॥ ४६॥

इति गुरुप्रत्यंतरफलम्।

अथ शन्यन्तरे शन्यादीनां प्रत्यन्तरफलम्-

देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः ।
विदेशगमनं दुःखं शनेः शन्यन्तरे शनिः ॥४७॥(श.श.)

शनि के अन्तर में शनि प्रत्यन्तर में शरीर में पीड़ा, झगड़े का भय, नीचों से भय, विदेश की यात्रा और दुःख होता है॥ ४७॥

बुद्धिनाशो कलेर्भीतिमन्नपानादिहानिकृत् ।
धनहानिर्भयं शत्रोः शनेः शन्यन्तरे बुधः ॥४८॥(श.बु.)

शनि के अन्तर में बुध के प्रत्यंतर में बुद्धि का नाश, कलह का भय, अन्नादि की हानि, धन की हानि और शत्रु का भय होता है॥ ४८॥

बन्धः शत्रुगृहे जातो वर्णहानिर्बहुक्षुधा ।
चित्ते चिन्ता भयं त्रासः शनेः सौरान्तरे शिखी ॥४९॥(श.के.)
चिंतितं फलितं वस्तु कल्याणं स्वजने तथा ।
मनुष्यकृतितो लाभः शनेः शन्यन्तरे भृगुः ॥५०॥(श.शु.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनि के अन्तर में केतु के प्रत्यंतर में शत्रु गृह में बंधन, तेज की हानि, बहुत भूख लगती है। चित्त में चिन्ता, भय और त्रास होता है॥ ४६॥ शनि की दशा में शुक्र के अन्तर में चिंतित वस्तु का लाभ, आत्मीयजनों का कल्याण, मनुष्य की कृति से लाभ होता है॥ ५०॥

राजतेजोऽधिकारित्वं स्वगृहे जायते कलिः।
ज्वरादिव्याधिपीडा च कोणे कोणान्तरे रविः॥ ५१॥(श. सू.)
स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मंदतेजो बहुव्ययः।
बहुस्त्रीभिः समं भोगं कोणे कोणान्तरे शशी॥ ५२॥(श. चं.)

शनि के अन्तर में सूर्य के प्रत्यन्तर में राजा के जैसा तेज, अधिकार की प्राप्ति, अपने घर में कलह और ज्वर आदि व्याधि से पीड़ा होती है॥ ५१॥ शनि के अन्तर में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में स्वच्छ बुद्धि, महान् कार्य का आरम्भ, कान्ति की कमी, अधिक खर्चा,अनेक स्त्रियों से संभोग होता है॥५२॥

तेजोहानिः पुत्रघातो वह्निभीतिर्रिपोर्भयम्।
वातपित्तकृता पीडा कोणे कोणान्तरे कुजः॥ ५३॥(श. मं.)

शनि के अंतर में भौम के प्रत्यंतर में कान्ति की हानि, पुत्र को कष्ट, अग्निभय, शत्रुभय और वात-पित्त से पीड़ा होती है॥ ५३॥

धननाशो वस्त्रहानिर्भूमिनाशो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युः कोणे कोणान्तरे तमः॥ ५४॥(श. रा.)

शनि के अन्तर में राहु के प्रत्यंतर में धन का नाश, वस्त्र की हानि, भूमि की हानि, भय, विदेशयात्रा और मृत्यु होती है॥ ५४॥

गृहेषु स्त्रीकृतं छिद्रं ह्यसमर्थो निरीक्षणे।
अथवा कलिमुद्वेगं दाने सौरान्तरे गुरुः॥ ५५॥(श. बृ.)

शनि के अन्तर में गुरु के प्रत्यंतर में गृह में स्त्री द्वारा कलह की उत्पत्ति जिसके निरीक्षण में असमर्थ, कलह और उद्वेग होता है॥ ५५॥

इति शनिप्रत्यंतरफलम्।

अथ बुधान्तरे बुधादीनां प्रत्यन्तरफलम्-

बुद्धिविद्यार्थलाभो वा वस्त्रलाभो महत्सुखम्।
स्वर्णादिधनलाभः स्यात्सौम्यसौम्यान्तरे बुधः॥ ५६॥(बु. बु.)

बुध के अन्तर में बुध के प्रत्यन्तर में बुद्धि, विद्या और धन का लाभ, वस्त्र का लाभ और सुख और सुवर्ण आदि धन का लाभ होता है॥ ५६॥

कठिनान्नस्य संप्राप्तिरुदरे रोगसम्भवः।
कामलं रक्तपित्तं च सौम्यसौम्यान्तरे शिखी॥ ५७॥(बु. के.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बुध के अन्तर में केतु के प्रत्यंतर में कठिन (कड़े) अन्नों की प्राप्ति, पेट में रोग की संभावना, कामला रोग वा रक्तपित्त से रोग होता है॥ ५७॥

उत्तरस्यां भवेल्लाभो हानिः स्यात्तु चतुष्पदात्।
अधिकारान्महाप्रीतिः सौम्ये सौम्यान्तरे भृगुः॥ ५८॥(बु.शु.)

बुध के अंतर में शुक्र के प्रत्यंतर में उत्तर दिशा से लाभ, चतुष्पद से हानि, अधिकार वा अधिकारियों से अधिक प्रेम होता है॥ ५८॥

तेजोहानिर्भवेद्रोगस्तनुपीडा च मान्दवी।
जायते चित्त वैकल्यं सौम्ये सौम्यान्तरे रविः॥ ५९॥(बु.सू.)

बुध के अन्तर में सूर्य के प्रत्यन्तर में कान्ति की हानि, रोग, शरीर में मन्दाग्नि से पीड़ा और चित्त में अशान्ति होती है॥ ५९॥

स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो महद्धनम्।
लभते सर्वतः सौख्यं सौम्यसौम्यान्तरे शशी॥ ६०॥(बु.चं.)

बुध के अन्तर में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में स्त्री का लाभ, धन की प्राप्ति, कन्या का जन्म, महाधन की प्राप्ति और सर्वत्र सुख की प्राप्ति होती है॥ ६०॥

धर्मधीधनसम्प्राप्तिश्चौराग्र - प्रपीडनम्।
रक्तवस्त्रं शस्त्रघातः सौम्यसौम्यान्तरे कुजः॥ ६१॥(बु.मं.)

बुध के अंतर में भौम के प्रत्यंतर में धर्म-बुद्धि, धन की प्राप्ति, चोर और ब्राह्मण से पीड़ा, रक्त वस्त्र और शस्त्र से घात होता है॥ ६१॥

कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसम्भवः।
राजशस्त्रकृता भीतिः सौम्यसौम्यान्तरे तमः॥ ६२॥(बु.रा.)

बुध की दशा में राहु के अंतर में अकस्मात् स्त्री से कलह होने की सम्भावना और राजा तथा शस्त्र से भय होता है॥ ६२॥

राज्यं राज्याधिकारी वा पूजा राजसमुद्भवा।
विद्याधरान्नवस्त्रं च सौम्यसौम्यांतरे गुरुः॥ ६३॥(बु.बृ.)

बुध के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में राज्य वा राज्याधिकार की प्राप्ति, राजा से पूजा, विद्याधर से अन्न-वस्त्र की प्राप्ति होती है॥ ६३॥

वातपित्तमहापीडा देहघातसमुद्भवा।
धननाशमवाप्नोति सौम्यसौम्यान्तरे शनिः॥ ६४॥(बु.श.)

बुध के अंतर में शनि के प्रत्यन्तर में वात-पित्त से महापीड़ा, देह में चोट आदि लगने की सम्भावना और धन का नाश होता है॥ ६४॥

इति बुधप्रत्यन्तरफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ केत्वन्तरे केत्वादीनां प्रत्यन्तरफलम्-

अपां समुद्भवोऽकस्माद् देशान्तरसमागमः ।
धननाशोऽल्पमृत्युश्च केतोः केत्वन्तरे शिखी ॥६५॥ (के. के.)

केतु के अंतर में केतु के प्रत्यन्तर में अकस्मात् जलमार्ग से देशान्तर की यात्रा, धन की हानि और प्राणभय होता है॥ ६५॥

म्लेक्षभीत्यर्थनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा ।
हानिश्चतुष्पदानां च केतोः केत्वन्तरे भृगुः ॥६६॥ (के. शु.)

केतु के अन्तर में शुक्र के प्रत्यन्तर में म्लेच्छ से भय, अत्यंत धन का नाश, नेत्ररोग, शिर में व्यथा और चतुष्पद जीव की हानि होती है॥ ६६॥

मित्रैः सह विरोधश्च स्वल्पमृत्युः पराजयः ।
मतिभ्रंशो विवादश्च केतो केत्वन्तरे रविः ॥६७॥ (के. सू.)

केतु के अन्तर में सूर्य के प्रत्यन्तर में मित्रों से विरोध, अल्पमृत्यु, पराजय, बुद्धि का नाश और विवाद उपस्थित होता है॥ ६७॥

अन्ननाशो यशेहानिर्देहपीडा मतिभ्रमः ।
आमवातादिवृद्धिश्च केतोः केत्वन्तरे शशी ॥६८॥ (के. चं.)

केतु के अन्तर में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में अन्न की हानि, यज्ञ की हानि, देह में पीड़ा, बुद्धि में भ्रम और आमवात की वृद्धि होती है॥ ६८॥

शस्त्रघातेन पातेन पीडितो वह्निपीडया ।
नीचाद्भीति रिपोः शङ्का केतोः केत्वन्तरे कुजः ॥६९॥ (के. मं.)

केतु के अन्तर में भौम के प्रत्यन्तर में शस्त्रलगने से वा गिरने से पीड़ा, अग्नि से पीड़ा, नीच से भय और शत्रु भय की शंका होती है॥ ६९॥

कामिनीभ्यो भयं भूयात्तथा वैरिसमुद्भवः ।
शूद्रादपि भवेद्भीतिः केतोः केत्वन्तरे तमः ॥७०॥ (के. रा.)

केतु के अन्तर में राहु के प्रत्यन्तर में स्त्रियों से भय, राजा से, शत्रुओं से तथा शूद्र से भी भय होता है॥ ७०॥

धनहानिर्महोत्पातो वस्त्रमित्रविनाशनम् ।
सर्वत्र लभते क्लेशं केतोः केत्वन्तरे गुरुः ॥७१॥ (के. बृ.)

केतु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में धन की हानि, महउत्पात, वस्त्र-मित्र की हानि और सर्वत्र क्लेश होता है॥ ७१॥

गोमहिष्यादिमरणं देहपीडा सुहृद्वधः ।
स्वल्पाल्पलाभकरणं केतोः केत्वन्तरे शनिः ॥७२॥ (के. श.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

केतु के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर में गौ, भैंस आदि का मरण, शरीर में पीड़ा, मित्रों का वध और थोड़ा-थोड़ा लाभ होता है॥ ७२॥

बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत केतोः केत्वन्तरे बुधः॥७३॥(के.बु.)

केतु के अन्तर में बुध के प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश, बड़ा उद्वेग, विद्या की हानि, महाभय और कार्य की सिद्धि में बाधा होती है॥ ७३॥

इति केतुप्रत्यन्तरफलम्।

अथ शुक्रान्तरे शुक्रादीनां प्रत्यन्तरफलम्-

श्वेताश्ववस्त्रमुक्ताद्याः स्वर्णमाणिक्यसंभवः।
लभते सुन्दरी नारी शुक्रे शुक्रांतरे भृगुः॥७४॥(शु.शु.)
वातज्वरः शिरःपीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरे रविः॥७५॥(शु.सू.)

शुक्र के अन्तर में शुक्र के प्रत्यन्तर में सफेद घोड़ा, सफेद वस्त्र, मोती का लाभ, सुवर्ण माणिक्य के लाभ की संभावना और सुंदरी स्त्री का लाभ होता है।।७४।। शुक्र के अन्तर में सूर्य के प्रत्यन्तर में वातज्वर, शिर में पीड़ा, राजा और शत्रु से पीड़ा और अल्प लाभ होता है॥ ७५॥

कन्याजन्म नृपाल्लाभो वस्त्राभरणसंयुतः।
राज्याधिकारसंप्राप्तिः शुक्रे शुक्रान्तरे शशी॥७६॥(शु.चं.)

शुक्र के अन्तर में चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में कन्या का जन्म, राजा से वस्त्र-आभूषण का लाभ और राज्याधिकार की प्राप्ति होती है॥ ७६॥

रक्तपित्तादिरोगश्च कलहं ताडनं भवेत्।
महान्क्लेशो भवेदत्र शुक्रे शुक्रान्तरे कुजः॥७७॥(शु.मं.)

शुक्र के अन्तर में भौम के प्रत्यन्तर में रक्त-पित्त के रोग, कलह-ताड़ना और बड़ा कष्ट होता है॥ ७७॥

कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसंभवः।
राजतः शत्रुतः पीड़ा शुक्रे शुक्रान्तरे तमः॥७८॥(शु.रा.)

शुक्र के अन्तर में राहु के प्रत्यन्तर में अकस्मात् स्त्री से झगड़ा और भय और राजा तथा शत्रु से पीड़ा होती है॥ ७८॥

महद्द्रव्यं महद्राज्यं वस्त्रमुक्तादिभूषणम्।
गजाश्वादिपदप्राप्तिः शुक्रे शुक्रान्तरे गुरुः॥७९॥(शु.बृ.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्र के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में बड़े, द्रव्य, बड़े राज्य, वस्त्र, मुक्ता आदि के आभूषण, हाथी-घोड़ा तथा पद की प्राप्ति होती है॥ ७९॥

खरोष्ट्रछागसम्प्राप्तिर्लोहमाषतिलादिकम् ।
लभते स्वल्पपीडादि शुक्रे शुक्रान्तरे शनिः ॥ ८० ॥(शु. श.)

शुक्र के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर में गदहा, ऊँट, बकरी की प्राप्ति, लोह, उड़द और तिल की प्राप्ति और थोड़ी पीड़ा भी होती है॥ ८०॥

धनज्ञानमहांल्लाभो राज्यराज्याधिकारता ।
निक्षेपाद्धनलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरे बुधः ॥ ८१ ॥(शु. बु.)

शुक्र के अन्तर में बुध के प्रत्यंतर में धन, ज्ञान का महान् लाभ, राज्य वा राज्याधिकार की प्राप्ति और व्यापार से धन का लाभ होता है॥ ८१॥

अल्पमृत्युर्महापीडा देशाद् देशान्तरागमः ।
लाभोऽपि जायते मध्ये शुक्रे शुक्रान्तरे शिखी ॥ ८२ ॥(शु. के.)

शुक्र के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर के अल्पमृत्यु, अत्यन्त पीड़ा, देश से अन्य देश की यात्रा और लाभ होता है॥ ८२॥

इति बृहत्पाराशरहोरायाः पूर्वखंडे सूर्यादिप्रत्यन्तर्दशाफलं समाप्तम्।

अथ सूक्ष्मान्तर्दशाध्यायः

तत्रादौ सूक्ष्मांतरानयनप्रकारः-

ग्रहवर्षेण संगुण्यं प्रत्यन्तरघटिकादिकम् ।
विंशोत्तरशतेनाप्तं सूक्ष्मान्तर्दशामिः ॥ १ ॥

जिस ग्रह के प्रत्यन्तर में जिस ग्रह का सूक्ष्मान्तर लाना हो उस ग्रह के दशा वर्ष से प्रत्यन्तर के (घटिकादि पिंडबनाकर) घटिकादि को गुणा कर गुणनफल में १२० का भाग देने से लब्धि घटिका और शेष को ६० से गुणाकर पुनः १२० का भाग देने से जो फल प्राप्त होता है। इस प्रकार घटी-पल वा दिन (यदि घटी ६० से अधिक हो तो उसमें साठ से भाग देने से लब्धि दिन होता है) सूक्ष्म अन्तर होता है॥ १॥

उदाहरण- जैसे सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्यादि ग्रहों का सूक्ष्मान्तर लाना है तो सूर्य का प्रत्यन्तर ५ दिन २४ घटी है। इसका पिंड ५ X ६०+२४ =३२४ घटी हुआ। इससे सूर्य के दशावर्ष ६ से गुणा करने पर ३२४ X ६ =१९४४ हुआ, इसमें १२० का भाग देने से लब्धि १६ घटी और शेष २४ को ६० से गुणा करने पर २४ X ६०=१४४० हुआ, इसमें १२० का भाग देने से १२ पल हुआ। अर्थात् सूर्य के प्रत्यन्तर में १६ घटी १२ पल सूर्य का

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूक्ष्मान्तर हुआ। इसी प्रकार प्रत्यन्तर घटी पिंड को चन्द्रमा के दशा वर्ष १० से गुणाकर १२० का भाग देने से २७ घटी सूर्य के प्रत्यन्तर में चंद्रमा का सूक्ष्मान्तर हुआ। इसी प्रकार सभी ग्रहों का सूक्ष्मांतर लाना चाहिए।

अथ सूर्यप्रत्यंतरे सूर्यादीनां सूक्ष्मान्तर्दशाफलम्-

नृणां भूमिपरित्यागो नियतं प्राणनाशनम् ।
स्थाननाशो महाहानिः सूर्यसूक्ष्मदशाफलम् ॥ २॥ (सू. सू.)

सूर्य के प्रत्यंतर में सूर्य के सूक्ष्मान्तर में मनुष्य को भूमि का त्याग करना पड़ता है, प्राशनाश की आशंका और स्थान का नाश होता है॥ २॥

देवब्राह्मणभक्तिश्च नित्यकर्मरतस्तथा ।
सुप्रीतिः सर्वमित्रैश्च रवेः सूक्ष्मगतेविधौ॥ ३॥(सू. चं.)

सूर्य के प्रत्यंतर में चन्द्रमा के सूक्ष्मांतर में देवता ब्राह्मण में भक्ति, नित्यकर्म में आसक्त और सभी मित्रों से सुन्दर प्रेम होता॥ ३॥

क्रूरकर्मरतिस्तिग्मशत्रुभिः परिपीडनम् ।
रक्तस्रावादिरोगश्च रवेः सूक्ष्मगते कुजे ॥ ४॥ (सू. मं.)

सूर्य के प्रत्यंतर में भौम के सूक्ष्मांतर में क्रूरकर्म में आसक्ति, शत्रुओं से पीड़ा और रक्तस्राव के रोग होते हैं॥ ४॥

चौराग्निविषभीतिश्च रणे भंगः पराजयः ।
दानधर्मादिहीनश्च रवेः सूक्ष्मगते ह्यगौ ॥ ५॥(सू. रा.)

सूर्य के प्रत्यंतर में राहु के सूक्ष्मांतर में चोर, अग्नि, विष से भय, संग्राम में विफलता वा पराजय और दान-धर्म से हीन होता है॥ ५॥

नृपसत्कारराजार्हः सेवकैः परिपूजितः ।
राजचक्षुर्गतः शान्तः सूर्यसूक्ष्मगते गुरौ ॥ ६॥(सू. बृ.)
धैर्यसाहसकर्मार्थं देवब्राह्मणपीडनम् ।
स्थानच्युतिं मनोदुःखं रवेः सूक्ष्मगते शनौ ॥ ७॥(सू.श.)

सूर्य के प्रत्यंतर में गुरु के सूक्ष्मांतर में राजा के समान सत्कार, नौकरों से पूजित और राजा का कृपापात्र और शांत होता है॥ ६॥ सूर्य के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मांतर में धैर्य और साहस के कार्य के लिये देवता और ब्राह्मण का पीडन, स्थान की हानि और मन में दुःख होता है॥ ७॥

दिव्याम्बरादिलब्धिश्च दिव्यस्त्रीपरिभोगता ।
अचिंतितार्थसिद्धिश्च रवेः सूक्ष्मगते बुधे ॥ ८॥(सू. बु.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य के प्रत्यंतर में बुध के सूक्ष्मांतर में दिव्य वस्त्र आदि की प्राप्ति, दिव्य स्त्री का भोग और अचिंतित कार्य की सिद्धि होती है॥ ८॥

गुरुतार्त्तिविनाशश्च भृत्यदारभवस्तथा।
क्वचित्सेवकसम्बन्धो रवेः सूक्ष्मगते ध्वजे॥ ९॥(सू.के.)

सूर्य के प्रत्यंतर में केतु के सूक्ष्मांतर में नौकर और स्त्री जनित दुःख का नाश और कभी किसी सेवक से संबंध होता है॥ ९॥

पुत्रमित्रकलत्रादिसौख्यसम्पन्न एव च।
नानाविद्यधा च सम्पत्ती रवेः सूक्ष्मगते भृगौ॥ १०॥(सू.शु.)

सूर्य के प्रत्यन्तर में शुक्र के सूक्ष्मांतर में पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के सुख से सम्पन्न होता है और अनेक प्रकार से सम्पत्ति का लाभ होता है॥ १०॥

इति रवौ सूक्ष्मांतरफलम्।

अथ चंद्रप्रत्यंतरे चंद्रादीनां सूक्ष्मांतरफलम्-

भूषणं भूमिलाभश्च सन्मानं नृपपूजनम्।
तामसत्वं गुरुत्वं च चन्द्रसूक्ष्मदशाफलम्॥ ११॥ (चं.चं.)

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मांतर में आभूषण तथा भूमि का लाभ, सन्मान और राजा से पूजन, तामस और गुरुता होता है॥ ११॥

दुःखं शत्रुविरोधश्च कुक्षिरोगः पितृर्मृतिः।
वातपित्तकफोद्रेकः शशिसूक्ष्मगते कुजः॥ १२॥(चं.मं.)

चन्द्रमा के प्रत्यंतर में भौम के सूक्ष्मांतर में दुःख, शत्रु से विरोध, कुक्षि-स्थान में रोग, पिता की मृत्यु और वात-पित्त-कफ का रोग होता है॥ १२॥

क्रोधनं मित्रबंधूनां देशत्यागो धनक्षयः।
विदेशान्निगडप्राप्तिरिन्दुसूक्ष्मगतेऽप्यगौ॥ १३॥(चं.रा.)

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मांतर में मित्र तथा बंधुओं से द्वेष, देश का त्याग, धन का नाश, विदेश में बंधन होता है॥ १३॥

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
सर्वत्र सुखमाप्नोति चन्द्रसूक्ष्मगते गुरौ॥ १४॥(चं.बृ.)

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में गुरु के सूक्ष्मांतर में छत्र-चामर युक्त राज वैभव की प्राप्ति, पुत्र का लाभ और सुख होता है॥ १४॥

राजोपद्रवनाशः स्याद् व्यवहारे धनक्षयः।
चौरत्वं विप्रभीतिश्च चन्द्रसूक्ष्मगते शनौ॥ १५॥(चं.श.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मांतर में राजा के उपद्रव से हानि, रोजगारमें धन की हानि, चोरी और ब्राह्मण से भय होता है॥१५॥

राजमानं वस्तुलाभं विदेशाद्वाहनादिकम् ।
पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च चन्द्रसूक्ष्मगते बुधे ॥ १६ ॥(चं.बु.)
आत्मनो वृत्तिहननं सस्यशृंगवृषादिभिः ।
अग्निसूर्यादिभीतिः स्याच्चन्द्रसूक्ष्मगते ध्वजे ॥ १७ ॥(चं.के.)

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मांतर में राजा से प्रतिष्ठा, वस्तु का लाभ, विदेश में वाहनादि का लाभ और पुत्र-पौत्र आदि समृद्धि का लाभ होता है॥१६॥ चन्द्रमा के प्रत्यन्तरमें केतु के सूक्ष्मांतर में धान्य, मृग और बैल आदि से अपने वृत्तिका उच्छेद और अग्नि तथा सूर्यसे भय होता है॥१७॥

विवाहो भूमिलाभश्च वस्त्राभरणवैभवम् ।
राज्यलाभश्च कीर्त्तिश्च चन्द्रसूक्ष्मगते भृगौ ॥ १८ ॥(चं.शु.)

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में शुक्र के सूक्ष्मांतर में विवाह, भूमि का लाभ, वस्त्र,आभूषण आदि वैभव,राज्यलाभ और यश होता है॥ १८॥

क्लेशात्क्लेशः कार्यनाशः पशुधान्यधनक्षयः ।
गात्रवैषम्यभूमिश्च चन्द्रसूक्ष्मगते रवौ ॥ १९ ॥(चं.सू.)

चन्द्रमा के प्रत्यन्तरमें सूर्य के सूक्ष्मांतर में क्लेश से क्लेश, कार्य की हानि, पशु, धान्य और पशु का नाश, शरीर तथा भूमि में विषमता होती है॥१९॥

इति चन्द्रसूक्ष्मान्तरफलम्।

अथ भौमप्रत्यन्तरे भौमादीनां सूक्ष्मान्तर फलम्-

भूमिहानिर्मनःखेदो ह्यपस्मारी च बंधुयुक् ।
पुरक्षोभमनस्तापो भौमसूक्ष्मदशाफलम् ॥ २० ॥(मं.मं.)

भौम के प्रत्यन्तर में भौम के सूक्ष्म अंतर में भूमि की हानि, चित्त में खेद, मृगी रोग, बंधु से युक्त, ग्राम से क्षोभ और मन में संताप होता है॥२०॥

अङ्गदोषो जनाद्भीतिः प्रमदावंशनाशनम् ।
वह्निसर्पभयं घोरं भौमसूक्ष्मगतेऽप्यहौ ॥ २१ ॥(म.रा.)

भौम के प्रत्यंतर में राहु के सूक्ष्म अंतर में किसी अंग में विकार, लोगों से भय, कन्या की हानि और अग्नि तथा सर्प से बड़ा भय होता है॥२१॥

देहपूजारतिश्चात्र मंत्राभ्युत्थानतत्परः ।
लोकपूज्यं प्रमोदं च भौमसूक्ष्मगते गुरौ ॥ २२ ॥(मं.वृ.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भौम के प्रत्यन्तर में गुरु के सूक्ष्मान्तर में देह की पूजा, मंत्र-साधन में रति, लोक से पूजा और प्रसन्नता होता है॥ २२॥

बंधनान्मुच्यते बद्धो धनधान्यपरिच्छदः।
भृत्यार्थबहुलः श्रीमान्भौमसूक्ष्मगते शनौ॥ २३॥(मं.श.)

भौम के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मान्तर में बंधन से मुक्ति, धन, धान्य नौकर आदि विशेष होते हैं॥ २३॥

वाहनं छत्रसंयुक्तं राज्यभोगपरं सुखम्।
कासश्वासादिका पीडा भौमसूक्ष्मगते बुधे॥ २४॥(मं.बु.)

भौम के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मान्तर में वाहन, छत्र आदि राज्य के सुख का लाभ और सुख तथा कासश्वास से पीड़ा होती है॥ २४॥

परप्रेरितबुद्धिश्च सर्वत्रापि च गर्हितः।
अशुचिः सर्वकार्येषु भौमसूक्ष्मगते ध्वजे॥ २५॥(मं.के.)

भौम के प्रत्यन्तर में केतु के सूक्ष्मान्तर में दूसरे के प्रेरणा वाली बुद्धि, सर्वत्र निंदा और सभी कार्यों में असफलता होती है॥ २५॥

इष्टस्त्रीभोगसम्पत्तिरिष्टभोजनसंग्रहः।
इष्टार्थश्चैव लाभश्च भौमसूक्ष्मगते भृगौ॥ २६॥(मं.शु.)

भौम के प्रत्यन्तर में शुक्र के सूक्ष्मान्तर में अभीष्ट स्त्री का सुख, सम्पत्ति, अभीष्ट भोजन का लाभ और अभीष्ट की सिद्धि होती है॥ २६॥

राजद्वेषोद्विजात्क्लेशः कार्याभिप्रायवंचकः।
लोकेऽपि निंद्यतामेति भौमसूक्ष्मगते रवौ॥ २७॥(मं.सू.)

भौम के प्रत्यन्तर में सूर्य के सूक्ष्मांतर में राजा से शत्रुता, ब्राह्मण से कष्ट, कार्य के अभिप्राय से रहित और लोक में निंदा होती है॥ २७॥

शुद्धत्वं धनसंप्राप्तिर्देवब्राह्मणवत्सलः।
व्याधिना परिभूयेत भौमसूक्ष्मगते विधौ॥ २८॥(मं.चं.)

भौम के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मांतर में चित्त में शुद्धता, धन का लाभ, देवता-ब्राह्मण में प्रेम और व्याधि से पीड़ित होता है॥ २८॥

इति भौमसूक्ष्मान्तरफलम्।

अथ राहुप्रत्यन्तरे राह्वादीनां सूक्ष्मांतरफलम्-

लोकोपद्रवबुद्धिश्च स्वकार्ये मतिविभ्रमः।
शून्यता चित्तदोषःस्याद्राहोः सूक्ष्मदशाफलम्॥ २९॥(रा.रा.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दीर्घरोगी दरिद्रश्च सर्वेषां प्रियदर्शनः ।
दानधर्मरतः शस्तो राहोः सूक्ष्मगते गुरौ ॥ ३० ॥(रा.बृ.)

राहु के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मांतर में उपद्रव करने की बुद्धि, बुद्धि में भ्रम, शून्यता होती है॥ २६॥ राहु के प्रत्यंतर में गुरु के सूक्ष्मांतर में दीर्घ रोग, दरिद्रता, सबका दर्शन प्रिय और दानादि में आसक्त होता है॥ ३०॥

कुमार्गात्कुत्सितोग्रश्च दुष्टश्च परसेवकः ।
असत्संगमतिमूढो राहोः सूक्ष्मगते शनौ ॥ ३१ ॥(रा.श.)

राहु के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मांतर में कुमार्ग से निंदित, उग्र-स्वभाव, दुष्ट और दूसरे का सेवक और दुष्टों के संग साथ होता है ॥ ३१॥

स्त्रीसंभोगमतिर्वाग्मी लोकसम्भावनावृतः ।
अन्नमिच्छंस्तनुम्लानी राहोः सूक्ष्मगते बुधे ॥ ३२ ॥(रा.बु.)

राहु के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मांतर में स्त्री प्रसंग की बुद्धि, संसार में विख्यात, हमेशा अन्न की चिंता से युक्त होता है॥ ३२॥

माधुर्यं मानहानिश्च बंधनं चाप्रमादकम् ।
पारुष्यं जीवहानिश्च राहोःसूक्ष्मगते ध्वजे ॥ ३३ ॥(रा.के.)

राहु के प्रत्यंतर में केतु के सूक्ष्मांतर में मधुर स्वभाव, मानहानि बंधन, कठोरता और किसी जीव की हानि होती है॥ ३३॥

बंधनान्मुच्यते बद्धः स्थानमानार्थसंचयः ।
कारणद्रव्यलाभश्च राहोः सूक्ष्मगते भृगौ ॥ ३४ ॥(रा.शु.)

राहु के प्रत्यन्तर में शुक्र के सूक्ष्मांतर में बंधन से मुक्ति, स्थान, यश, धन का लाभ और भाग्योदय होता है॥ ३४॥

व्यक्तार्शो गुल्मरोगश्च क्रोधहानिस्तथैव च ।
वाहनादिसुखं सर्वं राहोः सूक्ष्मगते रवौ ॥ ३५ ॥(रा.सू.)

राहु के प्रत्यन्तर में सूर्य के सूक्ष्मांतर में अर्श (बवासीर) गुल्म रोग, क्रोध और वाहनादि के सुख की हानि होती है॥ ३५॥

मणिरत्नधनावाप्तिर्विद्योपासनशीलवान् ।
देवार्चनपरो भक्त्याराहोःसूक्ष्मगते विधौ ॥ ३६ ॥(रा.चं.)

राहु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मांतर में मणि, रत्न, धन की प्राप्ति, विद्या की उपासना और भक्ति से देवता की पूजा होती है॥ ३६॥

निर्जितं जनविद्रावो जने क्रोधश्च बंधनात् ।
चौर्यशीलरतिः नित्यं राहोः सूक्ष्मगते कुजे ॥ ३७ ॥(रा.मं.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राहु के प्रत्यन्तर में भौम के सूक्ष्मान्तर में मनुष्यों से विद्रोह, पराजय, जन समुदाय का क्रोधभाजन, बंधन और चौरभय होता है॥ ३७॥

इति राहुसूक्ष्मांन्तरफलम्।

अथ गुरुप्रत्यन्तरे गुर्वादीनां सूक्ष्मांतरफलम्-

शोकनाशो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम् ।
वाहनच्छत्रसंयुक्तं जीवसूक्ष्मदशाफलम् ॥ ३८॥(बृ.बृ.)

गुरु के प्रत्यन्तर में गुरु के सूक्ष्मान्तर में शोक का नाश, धन का लाभ, शिव का पूजन, वाहन और क्षेत्र का लाभ होता है॥ ३८॥

व्रतहा सूर्यवर्ती च विदेशे वसुनाशनम् ।
विरोधो धननाशश्च गुरोः सूक्ष्मगते शनौ ॥ ३९॥(बृ.श.)

गुरु के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मान्तर में व्रत का छूट जाना, विदेश में धन का नाश, शत्रुता और धन की हानि होती है॥ ३९॥

विद्यामानयशप्राप्तिः धनागमनमेव च ।
नित्योत्सवस्तुसंजातः गुरोः सूक्ष्मगते बुधे ॥ ४०॥(बृ.बु.)

गुरु के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मांतर में विद्या, मान और यश का लाभ, धन का आगमन और नित्य उत्सव होता रहता है॥ ४०॥

ज्ञानं विभवपाण्डित्यं शास्त्रश्रोता शिवार्चनम् ।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः सूक्ष्मगते ध्वजे ॥ ४१॥(बृ.के.)

गुरु के प्रत्यंतर में केतु के सूक्ष्मान्तर में ज्ञान की वृद्धि, विभव, पांडित्य, शास्त्रका अध्ययन, शिव की पूजा, अग्निहोत्र और गुरु भक्ति होती है॥ ४१॥

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः ।
पुत्रदारादिकं सौख्यं गुरोः सूक्ष्मगते भृगौ ॥ ४२॥(बृ.शु.)

गुरु के प्रत्यंतर में शुक्र के सूक्ष्मान्तर में रोग से मुक्ति, सुख, भोग, धन, धान्य का लाभ और पुत्र-स्त्री आदि का सुख होता है॥ ४२॥

वात्तपित्ताग्रकोपश्च श्लेष्मोद्रेकस्तु दारुणः ।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः सूक्ष्मगते रवौ ॥ ४३॥(बृ.सू.)

गुरु के प्रत्यन्तर में सूर्य के सूक्ष्मांतर में वायु और पित्त का प्रकोप कफ की अधिकता से कष्ट और रसदोष से शूलरोग होता है॥ ४३॥

छत्रचामरसंयुक्त वैभवं पुत्रसम्पदः ।
नेत्रकुक्षिगता पीड़ा गुरोः सूक्ष्मगते विधौ ॥ ४४॥(बृ.चं.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में छत्र, चामर से युक्त, वैभव का लाभ, पुत्रसुख, नेत्र और कोख (कुक्षि) में पीड़ा होती है॥ ४४॥

स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्वधनं चातिनिग्रहम्।
देशांतरगमो भ्रांतिर्गुरोः सूक्ष्मगते कुजे॥ ४५॥(बृ. मं)

गुरु के प्रत्यन्तर में भौम के सूक्ष्मान्तर में स्त्रियों के द्वारा कलह, बंधन और अत्यन्त विग्रह, देशान्तर की यात्रा और भ्रान्ति होती है॥ ४५॥

व्याधिभिः परिभूतः स्याच्चौरोपहृतं धनम्।
सर्पवृश्चिकदंष्टत्वं गुरोः सूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥ ४६॥(बृ. रा.)

गुरु के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मांतर में व्याधियों से दुःखी; चोरों द्वारा धन का अपहरण और सर्प-बिच्छू के काटने का भय होता है॥ ४६॥

इति गुरुसूक्ष्मान्तरफलम्।

अथ शनिप्रत्यंतरे शन्यादीनां सूक्ष्मान्तरफलम्-

धनहानिर्महाव्याधिः वायुपीडा कुलक्षयः।
भिक्षाहारो महादुःखी मंदसूक्ष्मदशाफलम्॥ ४७॥(श. श.)

शनि प्रत्यन्तर में शनि सूक्ष्मान्तर में धन की हानि, महाव्याधि, वायु की पीड़ा, कुल का नाश और भिक्षा का भोजन तथा बड़ा दुःखी होता है॥४७॥

वाणिज्यवृत्तेर्लाभश्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभश्च महीप्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते बुधे॥ ४८॥(श. बु.)

शनि के प्रत्यंतर में बुध के सूक्ष्मांतर में व्यापार में लाभ, विद्या और वैभव, स्त्री का लाभ और पृथ्वी का लाभ होता है॥ ४८॥

चौरोपद्रवकुष्ठादि वृत्तिक्षयविगुंफनम्।
सर्वाङ्गपीडनं व्याधिः शनिसूक्ष्मगते ध्वजे॥ ४९॥(श. के.)

शनि के प्रत्यन्तर में केतु के सूक्ष्मान्तर में चोरी का भय, कुष्ठरोग, वृत्ति की हानि, कुंठता, सर्वांग में पीड़ा और व्याधि होती है॥ ४९॥

ऐश्वर्यमायुधाभ्यासो पुत्रलाभोऽभिषेचनम्।
आरोग्यं धनकायौ च शनिसूक्ष्मगते भृगौ॥ ५०॥(श. शु.)

शनि के प्रत्यन्तर में केतु के सूक्ष्मान्तर में ऐश्वर्य का लाभ, आयुध का अभ्यास, पुत्र का लाभ, अभिषेक, आरोग्यता आदि होती है॥ ५०॥

राजतेजोविकारत्वं स्वगृहे जायते कलिः।
किंचित्पीडा स्वदेहोत्था शनिसूक्ष्मगते रवौ॥ ५१॥(श. सू.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनि के प्रत्यंतर में सूर्य के सूक्ष्मान्तर में राज कार्य में विकार, अपने घर में कलि, अपने शरीर में कुछ पीड़ा होती है॥ ५१॥

स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मंद तेजो बहुव्ययः।
स्त्रीपुत्रैश्च समं सौख्यं शनिसूक्ष्मगते विधौ॥ ५२॥(श. चं.)
नेत्रहानिर्महोद्वेगो वह्निक्षयभ्रमो कलिः।
वातपित्तकृता पीडा शनेः सूक्ष्मगते कुजे॥ ५३॥(श. मं.)

शनि के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मांतर में संगीत का प्रेम, किसी बड़े कार्य का आरम्भ, यज्ञ में कमी, द्रव्य का भय और स्त्री-पुत्र का सुख होता है॥ ५२॥ शनि के प्रत्यंतर में भौम के सूक्ष्मान्तर में नेत्र की हानि, उद्वेग, मंदाग्नि, क्षय, झगड़ा और वायु-पित्त से कष्ट होता है॥ ५३॥

पितृमातृविनाशश्च मनोदुःखं गुरूव्ययः।
सर्वत्र विफलं स्यात्तु शनिसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥ ५४॥(श. रा.)

शनि के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मान्तर में पिता-माता की हानि, मन में दुःख, अधिक व्यय और सब जगह विफलता होती है॥ ५४॥

सन्मुद्राभोगसन्मानं धनधान्यविवर्धनम्।
छत्रचामरसम्प्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते गुरौ॥ ५५॥(श. बृ.)

शनि के प्रत्यन्तर में गुरु के सूक्ष्मान्तर में द्रव्य का लाभ, धनधान्य की वृद्धि और छत्र-चामर का लाभ होता है॥ ५५॥

इति शनिसूक्ष्मान्तरफलम्।

❖

अथ बुधप्रत्यंतरे बुधादीनां सूक्ष्मान्तरफलम्-

सौभाग्यं राजसम्मानं धनधान्यादिसम्पदः।
सर्वेषां प्रियदर्शी च बुधसूक्ष्मदशाफलम्॥ ५६॥(बु. बु.)

बुध के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मान्तर में भाग्योदय, राजा से सम्मान की प्राप्ति, धनधान्य का लाभ और सबका प्रिय होता है॥ ५६॥

बालग्रहाग्निभीस्तापः स्त्रीमदोद्भवदोषभाक्।
कुमार्गी कुत्सिताशी च बुधसूक्ष्मगते ध्वजे॥ ५७॥(बु. के.)

बुध के प्रत्यन्तर में केतु के सूक्ष्मान्तर में बालग्रह तथा अग्नि से भय, ज्वर, स्त्री को रजोविकार से कष्ट, कुमार्ग में प्रवृत्ति और निंदित अन्नों का भोजन होता है॥ ५७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वाहनंधनसम्पत्तिर्जलजान्नार्थसम्भवः ।
शुभकीर्त्तिर्महाभोगो बुधसूक्ष्मगते भृगौ ॥ ५८ ॥(बु.शु.)
ताडनं नृपवैषभ्यं बुद्धिस्खलनरोगभाक् ।
हानिर्जनापवादश्च बुधसूक्ष्मगते रवौ ॥ ५९ ॥(बु.सू.)

बुध के प्रत्यंतर में शुक्र के सूक्ष्मांतर में वाहन, धन, सम्पत्ति और जल से उत्पन्न होने वाले अन्न और द्रव्य का लाभ, यशोवृद्धि और महाभोग प्राप्त होता है॥ ५८॥ बुध के प्रत्यन्तर में सूक्ष्मांतर में ताड़ना, राजा से शत्रुता, मंदबुद्धि होने का रोग, हानि और जनापवाद (कलंक) होता है॥ ५९॥

सुभगः स्थिरबुद्धिश्च राजसन्मानसम्पदः ।
सुहृदां गुरुसंस्कारो बुधसूक्ष्मगते विधौ ॥ ६० ॥(बु.चं.)

बुध के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मांतर में सौभाग्य, स्थिर बुद्धि, राजा से सम्मान और संपत्ति का लाभ और मित्रों का समागम होता है॥ ६०॥

अग्निदाहं विषोत्पत्तिर्जडत्वं च दरिद्रता ।
विभ्रमश्च महोद्वेगो बुधसूक्ष्मगते कुजे ॥ ६१ ॥(बु.मं.)

बुध के प्रत्यन्तर में भौम के सूक्ष्मान्तर में अन्न से जलने का तथा विष का भय, जड़ता, दरिद्रता, भ्रम और बड़ा उद्वेग होता है॥ ६१॥

अग्निसर्पनृपाद्भीतिः कृच्छ्रादरिपराभवः ।
भूतावेशभ्रमाद् भ्रांतिर्बुधसूक्ष्मगतेऽप्यहौ ॥ ६२ ॥(बु.रा.)
गृहोपकरणं भव्यं त्यागं भोगादिवैभवम् ।
राजप्रसादसम्पत्तिर्बुधसूक्ष्मगते भृगौ ॥ ६३ ॥(बु.बृ.)

बुध के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मांतर में अग्नि, सर्प और राजा से भय, कष्ट से शत्रु का पराभव, भूत का आवेश और भ्रम से भ्रान्ति। बुध के प्रत्यंतर में गुरु के सूक्ष्मांतर में ॥ ६२॥ गृह के सुन्दर उपकरणों का लाभ, त्याग भाव, वैभव, राजा की प्रसन्नता से सम्पत्ति का लाभ होता है॥ ६३॥

वाणिज्यवृत्तिलाभश्च विद्याविभवमेव च ।
स्त्रीलाभश्च महाव्याधिःबुधसूक्ष्मगते शनौ ॥ ६४ ॥(बु.श.)

बुध के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मांतर में व्यापार से लाभ, विद्या और वैभव का लाभ, स्त्री का लाभ और महाव्याधि की संभावना होती है॥६४॥

इति बुधसूक्ष्मांतरफलम्।

❖

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ केतोः प्रत्यन्तरे केत्वादीनां सूक्ष्मान्तरफलम्-

पुत्रदारादिजं दुःखं गात्रवैषम्यमेव च ।
दारिद्र्याद्भिक्षुवृत्तिश्च केतोः सूक्ष्मदशाफलम् ॥६५॥(के.के.)

केतु के प्रत्यन्तर में केतु के ही सूक्ष्मांतर में पुत्र, स्त्री, जन्मादि दुःख, शरीर में विकलता और दरिद्रता से भिक्षुक वृत्ति होती है॥ ६५॥

रोगनाशोऽर्थलाभश्च गुरुविप्रानुवत्सलः ।
संगमः स्वजनैः सार्धं केतोः सूक्ष्मगते भृगौ ॥६६॥(के.शु.)

केतु के प्रत्यन्तर में शुक्र के सूक्ष्मान्तर में रोग का नाश, धन का लाभ, गुरु और ब्राह्मण से प्रेम और स्वजनों का समागम होता है॥ ६६॥

पुत्रभूमिविनाशश्च विप्रवासः स्वदेशतः ।
सुहृद्विपत्तिरार्त्तिश्च केतोः सूक्ष्मगते रवौ ॥६७॥(के.सू.)

केतु के प्रत्यन्तर में सूर्य के सूक्ष्मान्तर में पुत्र-भूमि की हानि, स्वदेश से प्रयास, मित्र को विपत्ति और पीड़ा होती है॥ ६७॥

दासीदाससमृद्धिश्च युद्धे लब्धिर्जयस्तथा ।
ललिता कीर्त्तिरुत्पन्ना केतोः सूक्ष्मगते विधौ ॥६८॥(के.चं.)

केतु के प्रत्यंतर में चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में दासी, नौकर और समृद्धि का लाभ, युद्ध में द्रव्यलाभ व विजय और सुन्दर कीर्त्ति होती है॥ ६८॥

आसने भयमश्वादेश्चौरदुष्टादिपीडनम् ।
गुल्मपीडा शिरोरोगः केतोः सूक्ष्मगते कुजे ॥६९॥(के.मं.)

केतु के प्रत्यन्तर में भौम के सूक्ष्मान्तर में आसन और घोड़े से भय, चोर और दुष्टों से पीड़ा, गुल्मरोग और सिर में पीड़ा होती है॥ ६९॥

विनाशः स्त्रीगुरूणां च दुष्टस्त्रीसंगमाल्लघुः ।
वमनं रुधिरं पित्तं केतोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ ॥७०॥(के.रा.)

केतु के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मान्तर में स्त्री तथा गुरु का नाश, दुष्ट स्त्री के संग, अपयश और रुधिर तथा पित्त का वमन होता है॥ ७०॥

शत्रोर्विरोधः सम्पत्तिः सहसा राजवैभवम् ।
पशुक्षेत्रविनाशः स्यात्केतोः सूक्ष्मगते गुरौ ॥७१॥(के.बृ.)

केतु के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मान्तर में शत्रु से विरोध होता है, सहसा राजवैभव का लाभ और पशु-क्षेत्र की हानि होती है॥ ७१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मृषा पीडा भवेत्क्षुद्रसुतोत्पत्तिश्च लंघनम् ।
स्त्रीविरोधः सत्यहानिः केतोः सूक्ष्मगते शनौ ॥७२॥(के.श.)

केतु के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मान्तर में व्यर्थ ही पीड़ा, दुष्ट पुत्र की उत्पत्ति, लंघन, स्त्री से विरोध और सत्य की हानि होती है॥७२॥

नानाविधजनाप्तिश्च विप्रयोगोऽरिपीडनम् ।
अर्थसम्पत्समृद्धिश्च केतोः सूक्ष्मगते बुधे ॥७३॥(के.बु.)

केतु के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मान्तर में अनेक लोगों से संयोग और वियोग, शत्रु से पीड़ा और धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है॥७३॥

इति केतुसूक्ष्मान्तरफलम्।

अथ शुक्रप्रत्यन्तरे शुक्रादीनां सूक्ष्मान्तरफलम्-

शत्रुहानिर्महत्सौख्यं शंकरालयसम्भवम् ।
तडागकूपनिर्माणं शुक्रसूक्ष्मदशाफलम् ॥७४॥(शु.शु.)

शुक्रके प्रत्यन्तर में शुक्र के सूक्ष्मान्तर में शत्रु की हानि, अपार सुख, शंकर के मंदिरका निर्माण वा तालाब, कुआँके निर्माणकी संभावना होती है॥७४॥

उरस्तापो भ्रमश्चैव गतागतविचेष्टितम् ।
क्वचिल्लाभः क्वचिद्धानिर्भृगोः सूक्ष्मगते रवौ ॥७५॥(शु.सू.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में सूर्य के सूक्ष्मान्तर में हृदय प्रदेश में रोग, भ्रम, गमनागमन की चेष्टा, कभी लाभ और कभी हानि होती है॥७५॥

आरोग्यं धनसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः ।
वैरिकापारबुद्धिः स्याद्भृगोः सूक्ष्मगते विधौ ॥७६॥(शु.चं.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में आरोग्यता, धन-सम्पत्ति का लाभ, गमनागमन से कार्य की सिद्धि, अपार वृद्धि होती है॥७६॥

जडत्वं रिपुवैषम्यं देशभ्रंशो महद्भयम् ।
व्याधिदुःखसमुत्पत्तिर्भृगोः सूक्ष्मगते कुजे ॥७७॥(शु.मं.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में भौम के सूक्ष्मान्तर में जड़ता, शत्रु से शत्रुता, देशत्याग, महाभय, व्याधि और दुःख की प्राप्ति होती है॥७७॥

राज्याग्निसर्पजा भीतिर्बन्धुनाशो गुरुव्यथा ।
स्थानच्युतिर्महाभीतिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यहौ ॥७८॥(शु.रा.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में राहु के सूक्ष्मान्तर में राजा, अग्नि और सर्प से भय, बन्धु का नाश, व्यथा, स्थानच्युति (अवनति) और महाभय होता है॥७८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वत्रकार्यलाभश्च क्षेत्रार्थविमनोन्नतिः ।
वणिग्वृत्तेर्महालब्धिर्भृगोः सूक्ष्मगते गुरौ ॥७६॥(शु.बृ.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में गुरु के सूक्ष्मान्तर में सभी कार्यों में लाभ, क्षेत्र, धन और वैभव की उन्नति और व्यापार से लाभ होता है॥७६॥

शत्रुपीडा महद्दुःखं चतुष्पादविनाशनम् ।
स्वगोत्रगुरुहानिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते शनौ ॥८०॥(शु.श.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में शनि के सूक्ष्मान्तर में शत्रु पीड़ा, महादुःख, चौपायो की हानि तथा अपने गोत्रजों की हानि होती है॥८०॥

बांधवादिषु सम्पत्तिर्व्यवहारो धनोन्नतिः ।
पुत्रदारादितः सौख्यं भृगोः सूक्ष्मगते बुधे ॥८१॥(शु.बु.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में बुध के सूक्ष्मान्तर में बांधवों से सम्पत्ति का लाभ, व्यवहार, धन की उन्नति और पुत्र-स्त्री आदि से सुख होता है॥८१॥

अग्निरोगो महत्पीडा मुखनेत्रशिरोव्यथा ।
संचितार्थात्मनः पीडा भृगोः सूक्ष्मगते ध्वजे ॥८२॥(शु.के.)

शुक्र के प्रत्यन्तर में केतु के सूक्ष्मान्तर में जठराग्नि का रोग, महापीड़ा, मुख, नेत्र और सिरमें पीड़ा और संचित धनसे आत्माको कष्ट होता है।८२।

इति भृगोः सूक्ष्मान्तर्दशाफलम्।

इति बृहत्पाराशरहोरायाः पूर्वार्धे सूर्यादिसूक्ष्मान्तर्दशाफलं समाप्तम्।

❖

अथ प्राणदशाफलाध्यायः

तत्रादौ प्राणदशानयनप्रकारः-

स्वसूक्ष्मदशायाश्च पिंडे विघटिकात्मके ।
स्वाब्दैर्हते पुनर्भक्ते विंशोत्तरशतेन च ।
लब्धं विघटिका ज्ञेया विपलानि ततः परम् ॥१॥

ग्रह के सूक्ष्मदशामान की पला बनाकर उसे ग्रह के दशा वर्ष (जिस ग्रह का प्राणदशा लानी हो उस ग्रह के दशा वर्ष से) गुणाकर गुणन फल में १२० का भाग देने से विघटिकात्मक उस ग्रह की प्राणदशा होती है॥१॥

उदाहरण- जैसे सूर्य की दशा में सूर्य के अंतर में सूर्य ही के प्रत्यन्तरमें सूर्य का सूक्ष्मांतर १६ घटी १२ पल है। इसका पला बताना तो १६X६०+१२=९७२ पला हुआ, इसे सूर्य के दशा वर्ष ६ से गुणा किया तो ५८३२ हुआ, इसमें १२०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

का भाग देने से लब्धि ४८ पल शेष ७२ को ६० से गुणा कर १२० का भाग देने से लब्धि ३६ विपल प्राप्त हुआ। अर्थात् सूर्य के दशा और उन्हीं के अंतर-प्रत्यन्तर और सूक्ष्मांतर में सूर्य की प्राण दशा० घटी= ४८ पल और ३६ विपल होगी। इसी प्रकार सूक्ष्म के पलात्मक पिंड को चन्द्रमा के दशावर्ष १० से गुणाकर ६७२० में १२० का भाग देने से लब्धि ८१ पल यानि १ घटी २१ पल ० विपल यह सूर्य के सूक्ष्मांतर में चन्द्रमा की प्राणदशा हुई। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के दशा वर्ष से गुणाकर भाग देने से उन लोगों की प्राणदशा हो जाती है।

सूर्यसूक्ष्मदशामध्ये प्राणदशाचक्रम्

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
घट्यः	०	१	०	२	२	२	२	०	२	१६
पला.	४८	२१	५६	२५	६	३३	१७	५६	४२	१२
विपला	३६	०	४२	४८	३६	५४	४२	४२	०	०

अथ सूर्यप्राणदशाफलम्-

पौंश्चल्यं विषजा बाधा शोषणं विषमेक्षणम् ।
सूर्यप्राणदशायां तु मरणं कृच्छ्रमादिशेत् ॥ २॥ (सू. सू.)

सूर्य के सूक्ष्मांतर में सूर्य की प्राण दशा में दुराचार, विष की बाधा, शरीर में शुष्कता, नेत्र में विकार और मरण होता है॥ २॥

सुखं भोजनसम्पत्तिः संस्कारो नृपवैभवम् ।
उदारादिकृपाभिश्च रवेः प्राणगते विधौ ॥ ३॥ (सू. चं.)

सूर्य के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में सुख, भोजन की सामग्री, संस्कार और उदार पुरुष की कृपा से राजवैभव की प्राप्ति होती है॥ ३॥

भूपोपद्रवमन्यार्थे द्रव्यनाशो महद्भयम् ।
महत्यपचयप्राप्ती रवेः प्राणगते कुजे ॥ ४॥ (सू. मं)

सूर्य के सूक्ष्मांतर में भौम की प्राणदशा में राजा के उपद्रव की वृद्धि, धन की क्षति, भय और धनादि का अपचय (हानि) होता है॥ ४॥

अन्नोद्भवा महापीडा विषोत्पत्तिर्विशेषतः ।
अर्थाग्निराजभिः क्लेशं रवेः प्राणगतेऽप्यहौ ॥ ५॥ (सू. रा.)

सूर्य के सूक्ष्मान्तरमें राहु की प्राणदशा में अन्न से उत्पन्न महापीड़ा (हैजा आदि) विशेषतः विषकी संभावना,धन,अग्नि और राजासे कष्टहोता है।५।

नानाविद्यार्थसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः ।
नीचजनाश्रय नाशो रवेः प्राणगते गुरौ ॥ ६॥ (सू. बृ.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बंधनं प्राणनाशश्च चित्तोद्वेगस्तथैव च ।
बहुबाधा महाहानी रवेः प्राणगते शनौ ॥७॥(सू.श.)

सूर्य के सूक्ष्मांतर में गुरु की प्राणदशा में अनेक विद्या, धन सम्पत्ति का लाभ, गमनागमन से कार्य की सिद्धि और नीचजनों की संगति का नाश होता है।।६।। सूर्य के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में बंधन, प्राण का भय, चित्त में उद्वेग, अनेक बाधा और हानि होती है॥७॥

राजान्नभोगः सततं राजलांछनतत्पदम् ।
आत्मा संत्तर्पयेदेवं रवेः प्राणगतेःबुधे ॥८॥(सू.बु.)
अन्योन्यं कलहश्चैव वसुहानिः पराजयः ।
गुरुस्त्रीबंधुहानिश्च सूर्यप्राणगते ध्वजे ॥९॥(सू.के.)

सूर्य के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में निरंतर राजभोग, राजकीय चिह्नों से युक्त और आत्मा को शान्ति मिलती है॥८॥सूर्य के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में परस्पर कलह, धन की हानि और पराजय तथा गुरु, स्त्री, बंधु की हानि होती है॥९॥

राजपूजा धनाधिक्यं स्त्रीपुत्रादिभवं सुखम् ।
अन्नपानादिभोगश्च रवेः प्राणगते भृगौ ॥१०॥(सू.शु.)

सूर्य के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में राजा से पूजा, धन का विशेष लाभ, स्त्री-पुत्रादि का सुख और अन्नपानादि का सुख होता है॥१०॥

इति सूर्यप्राणदशाफलम्।

अथ चन्द्रप्राणदशाफलम्-

योगाभ्यासं समाधि च स्त्रीपुत्रादिसुखं तथा ।
इति सर्वं समासेन चन्द्रप्राणे भवन्ति च ॥११॥(चं.चं.)

चन्द्रमा के सूक्ष्मांन्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में योगाभ्यास, समाधि, स्त्री-पुत्रादि का सुख, यह सब एक साथ ही होता है॥११॥

क्षयं कुष्ठं बंधुनाशं रक्तस्त्रावान्महद्भयम् ।
भूतावेशादि जायेत चन्द्रप्राणगते कुजे ॥१२॥(चं.मं.)

चन्द्रमाके सूक्ष्मान्तरमें भौमकी प्राणदशामें क्षयरोग, कुष्ठ रोगकी संभावना, बंधुका नाश, रक्तस्रावसे कष्ट और भूत आदि का आवेश होता है।१२।

सर्पभीतिविशेषेण भूतोपद्रववान्सदा ।
दृष्टिक्षोभो मतिभ्रंशश्चन्द्रप्राणगतेऽप्यहौ ॥१३॥(चं.रा.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में विशेषकर सर्प का भय, भूत का उपद्रव, दृष्टि में विकार और बुद्धि का नाश होता है॥ १३॥

धर्मबुद्धिः क्षमाप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजनम्।
सौभाग्यं प्रियदृष्टिश्च चन्द्रप्राणगते गुरौ॥ १४॥(चं.बृ.)

चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में धर्मबुद्धि, क्षमा की प्राप्ति, देवता और ब्राह्मण का पूजन और भाग्योदय होता है॥ १४॥

सहसा देहपतनं शत्रूपद्रववेदना।
अंधत्वं च धनप्राप्तिश्चन्द्रप्राणगते शनौ॥ १५॥(चं.श.)

चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में अकस्मात् शरीर का पतन, शत्रुओं का उपद्रव, नेत्रान्धता और धन का लाभ होता॥ १५॥

चामरच्छत्रसंप्राप्ती राज्यलाभोः नृपात्ततः।
समत्वं सर्वभूतेषु चन्द्रप्राणगते बुधे॥ १६॥(चं.बु.)

चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में राजा से चामर, छत्र और राज्य का लाभ और सभी प्राणियों में समदृष्टि होती है॥ १६॥

शस्त्राग्नि रिपुजा पीडाविषाग्निः कुक्षिरोगता।
पुत्रदारवियोगश्च चन्द्रप्राणगते शिखी॥ १७॥(चं.के.)

चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में शस्त्र, अग्नि और शत्रु से पीड़ा, विष भय, कुक्षिगत रोग और पुत्र-स्त्री से वियोग होता है॥ १७॥

पुत्रमित्रकलत्राप्तिर्विदेशाच्च धनागमः।
सुखसम्पत्तिरर्थश्च चन्द्रप्राणगते भृगौ॥ १८॥(चं.शु.)

चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में पुत्र-मित्र-स्त्री आदि का लाभ, विदेश से धन का लाभ और सुख-सम्पत्ति का लाभ होता है॥ १८॥

तीव्रदोषी प्रदोषी च प्राणहानिर्मनोरुजा।
देशत्यागो महाभीतिश्चन्द्रप्राणगते रवौ॥ १९॥(चं.सू.)

चन्द्रमा के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में तीव्र दोष से प्राणहानि की सम्भावना, देशत्याग और महाभय होता है॥ १९॥

इति चन्द्रप्राणदशाफलम्।

अथ भौमप्राणदशाफलम्-

युद्धे परजनाद्बद्धः शस्त्रेण परकेन वा।
मृत्युना मरणं याति भौमे प्राणदशा फलम्॥ २०॥(मं.मं.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भौम के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा में युद्ध में शत्रु से बँधने वा शत्रु के शास्त्र से बंधन और मृत्यु तुल्य कष्ट होता है॥ २०॥

विच्युतः सुतदारादिबंधूपद्रवपीडितः ।
प्राणत्यागो विषेणैव भौमप्राणगतेऽप्यहौ ॥२१॥(मं. रा.)

भौम के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में पुत्र-स्त्री से रहित बंधुओं के उपद्रव से पीड़ा और विष से प्राणनाश होता है॥ २१॥

देवार्चनपरः श्रीमान्मंत्रानुष्ठानतत्परः ।
पुत्रपौत्रसुखावाप्तिर्भौमप्राणगते गुरौ ॥ २२॥(मं. बृ.)
अग्निबाधा भवेन्मृत्युरर्थनाशः पदच्युतिः ।
बंधुभिर्बंधुतावाप्तिर्भौमप्राणगते शनौ ॥ २३॥(मं. श.)

भौम के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में देवता के पूजन में, लक्ष्मी की प्राप्ति, मन्त्र के अनुष्ठान में तत्पर और पुत्र-पौत्र के सुख की प्राप्ति होती है॥२२॥ भौम के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में अग्नि से बाधा, मृत्यु, धन नाश, पद की अवनति और भाइयों से भ्रातृत्व का लाभ होता है॥२३॥

दिव्याम्बरसमुत्पत्तिर्दिव्याभरणभूषितः ।
दिव्याङ्गनायाः सम्प्राप्तिर्भौमप्राणगते बुधे ॥ २४॥(मं. बु.)

भौम के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में दिव्यवस्त्र का लाभ, दिव्य आभूषण का लाभ और दिव्य स्त्री का लाभ होता है॥ २४॥

पतनोत्पातपीडा च नेत्रक्षोभो महद्भयम् ।
भुजङ्गाच्च महाहानिर्भौम प्राणगते ध्वजे ॥ २५॥(मं. के.)

भौम के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में पतन, उत्पात्, पीड़ा, नेत्र में पीड़ा, महाभय और सर्प से हानि होती है॥ २५॥

धनधान्यादिसम्पत्तिर्लोकपूजा सुखावहा ।
नाना भोगैर्भविद्रोगी भौमप्राणगते भृगौ ॥ २६॥(मं. शु.)

भौम के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में धन, धान्य आदि सम्पत्ति का लाभ, लोकमें प्रतिष्ठा और अनेक भोगों से रोग की संभावना होती है॥२६॥

ज्वरोन्मादक्षयोऽर्थस्य राजविद्रोहसम्भवः ।
दीर्घरोगी दरिद्रः स्याद्भौमप्राणगते रवौ ॥ २७॥(मं. सू.)

भौम के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में ज्वर, उन्माद, धन की हानि, राजा से विद्रोह की सम्भावना, दीर्घरोग और दरिद्रता होती है॥ २७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भोजनादिसुखप्रीतिर्वस्त्राभरण - वांछितम् ।
शीतोष्णव्याधि पीडा च भौमप्राणगते विधौ ॥ २८॥(मं.चं.)

भौम के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में भोजन आदि के सुख का लाभ, अभीष्ट वस्त्र, आभूषणका लाभ और सर्दी-गर्मीसे कष्ट होता है॥२८॥

इति भौम-प्राणदशा-फलम्।

अथ राहोः प्राणदशाफलम्-

अन्नाशने विरक्तश्च विषभीतिस्तथैव च ।
सहसा धननाशश्च राहोः प्राणदशाफलम् ॥ २९॥(रा.रा.)

राहु के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में अन्न-भोजन से विरक्ति, विष से भय और सहसा धन का नाश होता है॥ २९॥

अङ्गसौख्यं विनिर्भीतिर्वाहनादेश्च व्यग्रता ।
नीचैः कलहसम्प्राप्ती राहोः प्राणगते गुरौ ॥ ३०॥(रा.बृ.)

राहु के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में शरीर सुख, निर्भयता, वाहन आदि से व्यग्रता और नीचों से कलह की संभावना होती है॥ ३०॥

गृहदाहशरीरे च नीचैरपहृतं धनम् ।
रोगबंधनसम्प्राप्ती राहोः प्राणगते शनौ ॥ ३१॥(रा.श.)

राहु के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में गृह और शरीर में अग्नि का भय, नीच से धन का अपहरण, रोग एवं बंधन की प्राप्ति होती है॥ ३१॥

गुरुपदेश विभवो गुरुसत्कारवर्धनम् ।
गुणवांच्छीलवांश्चापि राहोः प्राणगते बुधे ॥ ३२॥(रा.बु.)

राहु के सूक्ष्मांतर में बुध की प्राणदशा में गुरु के उपदेश से वैभव प्राप्ति, गुरु के सत्कार में वृद्धि, गुण और शील में वृद्धि होती है॥ ३२॥

स्त्रीपुत्रादिविरोधश्च गृहान्निष्क्रमणादयः ।
साक्षात्कार्यस्य हानिश्च राहोः सूक्ष्मगते ध्वजे ॥ ३३॥(रा.के.)
छत्र वाहनसम्पत्तिः सर्वार्थफलसंचयः ।
शिवार्चन गृहारम्भो राहोः प्राणगते भृगौ ॥ ३४॥(रा.शु.)

राहु के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में स्त्री-पुत्र आदि से विरोध, गृह-त्याग और साक्षात् कार्य की हानि होती है॥ ३३॥ राहु के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में छत्र-वाहन आदि सम्पत्ति का लाभ, सभी प्रकार के लाभ और संचय और शिवपूजन तथा गृहारम्भ होता है॥ ३४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अर्शादिरोगभीतिश्च राज्योपद्रवसम्भवः ।
चतुष्पदादिहानिश्च राहोः प्राणगते रवौ ॥३५॥(रा.सू.)
सौमनस्यं च सद्बुद्धिः सत्कारो गुरुदर्शनम् ।
पापभीतिर्मनः सौख्यं राहोः प्राणगते विधौ ॥३६॥(रा.चं.)

राहु के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में अर्श (बवासीर) आदि रोग का भय, राजा से उपद्रव की संभावना और चौपाये जानवरों की हानि होती है॥३५॥ राहु के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में सज्जनता, सत्कार और गुरु का दर्शन और पाप से भय होता है॥३६॥

चांडालाग्निवशाद्भीतिः स्वपदच्युतिरापदः ।
मलिनः श्वादिवृत्तिश्च राहोः प्राणगते कुजे ॥३७॥(रा.मं.)

राहु के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा में चांडाल और अग्नि से भय, अवनति और आपत्ति, मलिनता और कुत्ते की वृत्ति होती है॥३७॥

इति राहोः प्राणदशाफलम्।

अथ गुरोः प्राणदशा फलम्-

शोकनाशो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम् ।
वाहनं छत्रसंयुक्तं जीवप्राणदशाफलम् ॥३८॥(बृ.बृ.)

गुरु के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में शोकादि का नाश, धन की वृद्धि, अग्निहोत्र, शिव का पूजन और वाहन-छत्र का सुख होता है॥३८॥

व्रतहा सूर्यवर्तिश्च विदेशे वसुनाशनम् ।
विरोधो धननाशश्च गुरोः प्राणगते शनौ ॥३९॥(बृ.श.)

गुरु के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में व्रत की हानि, विदेश में धन की हानि, विरोध और धन की हानि होती है॥३९॥

विद्याधर्मविवृद्धिश्च गुरुब्राह्मणपूजनम् ।
भाग्योदयसुखप्राप्तिर्गुरोः प्राणगते बुधे ॥४०॥(बृ.बु.)

गुरु के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में विद्या और धर्म की वृद्धि, गुरु और ब्राह्मण का पूजन, भाग्योदय और सुख का लाभ होता है॥४०॥

ज्ञानं विभवपांडित्यं शास्त्रश्रोता शिवार्चनम् ।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः प्राणगते ध्वजे ॥४१॥(बृ.के.)

गुरु के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में ज्ञान, वैभव और पांडित्य, शास्त्र-श्रवण, शिवपूजन, अग्निहोत्र और गुरुभक्ति होती है॥४१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः ।
पुत्रदारादिसौख्यं गुरोः प्राणगते भृगौ ॥४२॥(बृ.शु.)

गुरु के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में रोग से मुक्ति, सुख, भोग, धन, धान्य का आगमन, पुत्र-स्त्री का सुख होता है॥ ४२॥

वातपित्तप्रकोपं च श्लेष्मोद्रेकं तु दारुणम् ।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरौ प्राणगते रवौ ॥४३॥(बृ.सू.)

गुरु के सूक्ष्मान्तर से सूर्य की प्राणदशा में वाय-ुवित्त के प्रकोप से कष्ट और भयंकर कफवृद्धि तथा रस से उत्पन्न व्याधि होती है॥ ४३॥

छत्रचामरसंयुक्ते वैभवं पुत्रसम्पदम्।
नेत्र कुक्षिगतो पीडा गुरोः प्राणगतेविधौ॥४४॥(बृ. चं.)

गुरु के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में छत्र-चामर का सुख वैभव, पुत्र-सम्पत्ति का लाभ और नेत्र तथा कुक्षि (कोष्ठ) में कष्ट होता है॥ ४४॥

स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्वर्धनं चातिविग्रहः ।
देशांतरगमो भ्रांतिर्गुरोः प्राणगते कुजे ॥४५॥(बृ.मं.)

गुरु के सूक्ष्मांतर में भौम की प्राणदशा में स्त्रियों से कष्ट, बंधन, अत्यंत विरोध तथा देशान्तर की यात्रा की भ्रांति होती है॥ ४५॥

व्याधिभिः परिभूतः स्याच्चौरैपहृतं धनम् ।
सर्पवृश्चिकदृष्टत्वं गुरोः प्राणगतेऽप्यहौ ॥४६॥(बृ.रा.)

गुरु के सूक्ष्मांतर में राहु की प्राणदशा में व्याधि से व्याप्त, चोर द्वारा द्रव्य की हानि और सर्प-बिच्छू के काटने का भय होता है॥ ४६॥

इति गुरोः प्राणदशाफलम्।

अथ शनेः प्राणदशा फलम्-

ज्वरेण ज्वलिता कान्तिःकुष्ठरोगोदरादिरुक्।
जलाग्निकृतमृत्युः स्यान्मन्दप्राणदशाफलम् ॥४७॥(श.श.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में ज्वर से कान्ति नष्ट हो जाती है, कुष्ठ रोग की संभावना, जल, अग्नि से मृत्यु की संभावना होती है॥ ४७॥

धनं धान्यं च मांगल्यं व्यवहाराभिपूजनम् ।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते बुधे ॥४८॥(श.बु.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में धन, धान्य, मंगल कृत्य, व्यवहार से पूजन, देवता-ब्राह्मण में भक्ति होती है॥ ४८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मृत्युवेदना दुःखं च भूतोप्रद्रवसंभवः ।
परदाराभिभूतत्वं शनेः प्राणगते ध्वजे ॥ ४९ ॥ (श. के.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में मृत्यु तुल्य कष्ट, भूत उपद्रव की संभावना और परस्त्री के वश में होने की संभावना होती है॥ ४९॥

पुत्रार्थविभवैः सौख्यं क्षितिपालादिना सुखम् ।
अग्निहोत्रं विवाहश्च शनेः प्राणगते भृगौ ॥ ५० ॥ (श. शु.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में पुत्र, धन और वैभव का सुख, राजा आदि से सुख, अग्निहोत्र और विवाह होता है॥ ५०॥

अग्निपीडा शिरोव्याधिः सर्पशत्रुभयं भवेत् ।
अर्थहानिः महाक्लेशः शनेः प्राणगते रवौ ॥ ५१ ॥ (श. सू.)
आरोग्यं पुत्रलाभश्च शान्तिपौष्टिकवर्धनम् ।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते विधौ ॥ ५२ ॥ (श. चं.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में अग्नि से कष्ट, सिर का रोग, सर्प तथा शत्रु से भय, धन की हानि और महाकष्ट होता है॥ ५१॥ शनि के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में आरोग्यता, पुत्र का लाभ, शान्तिक पौष्टिक क्रियाओं की वृद्धि और देवता-ब्राह्मण में भक्ति होती है॥ ५२॥

गुल्मरोगः शत्रुभीतिर्मृगया प्राणनाशनम् ।
सर्पाग्निशत्रुतो भीतिः शनेः प्राणगते कुजे ॥ ५३ ॥ (श. मं.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा में गुल्म रोग, शत्रु का भय, प्राण जाने का भय, सर्प तथा अग्नि से भय होता है॥ ५३॥

देशत्यागो नृपाद्भीतिर्मोहनं विषभक्षणम् ।
वातपित्तकृता पीडा शनेः प्राणगतेऽप्यहौ ॥ ५४ ॥ (श. रा.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में देश का त्याग, राजा से भय और अहित, विषपान एवं वायु-पित्त से कष्ट होता है॥ ५४॥

सेनापत्यं भूमिलाभं संगमं स्वजनैः सह ।
गौरवं बुधसन्मानं शनेः प्राणगते गुरौ ॥ ५५ ॥ (श. बृ.)

शनि के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में सेनापति का अधिकार, भूमि का लाभ, आत्मीय जनों से समागम, गुरुता और राजा से सम्मान होता है॥ ५५॥

इति शनेः प्राणदशा फलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ बुधप्राणदशाफलम्-

आरोग्यं सुखसम्पत्तिर्धर्मकर्मादिसाधनम् ।
समत्वं सर्वभूतेषु बुधप्राणदशाफलम् ॥ ५६ ॥(बु.बु.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में आरोग्यता, सुख संपत्ति, धर्म-कर्म आदि का साधन और सभी प्राणियों में समता होती है॥ ५६॥

दहनं चौरविद्धांगं परमाधिविषोद्भवा ।
देहांतकरणे दुःखं बुधप्राणगते ध्वजे ॥ ५७ ॥(बु.के.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में अग्निभय, चोर से शरीर में चोट और विष से व्याधि की संभावना तथा मरण तुल्य कष्ट होता है॥ ५७॥

प्रभुत्वं धनसम्पत्तिः कीर्तिर्धर्मः शिवार्चनम् ।
पुत्रदारादिकं सौख्यं बुधप्राणगते भृगौ ॥ ५८ ॥(बु.शु.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में शुक्र की प्राणदशा में प्रभुता, धन-संपत्ति का लाभ, कीर्ति, धर्म और शिवपूजन और पुत्र-स्त्री का सुख होता है॥ ५८॥

अन्तर्दाहो ज्वरोन्मादौ बांधवानां रतिः स्त्रिया ।
पापनिस्तेयसम्पत्तिर्बुधप्राणगते रवौ ॥ ५९ ॥(बु.सू.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में अंतर्गत दाह, ज्वर और उन्माद, बांधवों से तथा स्त्री से प्रेम और पापाचार से संपत्ति का लाभ होता है।५९।

स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो धनागमः ।
लभते सर्वतः सौख्यं बुधप्राणगते विधौ ॥ ६० ॥(बु.चं.)
पतितः कुक्षिरोगी च दंतनेत्रादिजा व्यथा ।
अर्शार्तिः प्राणसंदेहो बुधप्राणगते कुजे ॥ ६१ ॥(बु.मं.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में स्त्री, धन-सम्पत्ति का लाभ, कन्या की उत्पत्ति, धन का आगम और सर्वत्र सुख की प्राप्ति होती है॥ ६०॥ बुध के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा में पतन, कुक्षि में रोग, दांत, नेत्र में पीड़ा, अर्श रोग और प्राणहानि की संभावना होती है॥ ६१॥

वस्त्राभरणसम्पत्तिः वियोगो विप्रवैरिता ।
सन्निपातोद्भवं दुःखं बुधप्राणगतेऽहौ ॥ ६२ ॥(बु.रा.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में वस्त्राभूषण आदि संपत्ति से वियोग, ब्राह्मण से वैर तथा सन्निपात रोग से कष्ट होता है॥ ६२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुत्वं धनसम्पत्तिर्विद्या सद्गुणसंग्रहा ।
व्यवसायेन सल्लाभो बुधप्राणगते गुरौ ॥६३॥(बु.बृ.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में गुरुता, धन-सम्पत्ति-विद्या और अच्छे गुणों का संग्रह और व्यवसाय से लाभ होता है॥ ६३॥

चौर्येण निधनप्राप्तिर्निर्धनत्वं दरिद्रता ।
याचकत्वं विशेषेण बुधप्राणगते शनौ ॥६४॥(बु.श.)

बुध के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में चोर से मृत्युभय, निर्धनता और भिक्षावृत्ति का प्रादुर्भाव होता है॥ ६४॥

इति बुधप्राणदशाफलम्।

अथ केतोः प्राणदशा फलम्-

अश्वपातेन घातं च पादस्खलनमेव च ।
निर्विचारवधोत्पत्तिः केतोः प्राणदशाफलम् ॥६५॥(के.के.)

केतु के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में घोड़े पर से गिरने से चोट, पैर फिसलने से चोट, कुत्सित विचार की उत्पत्ति होती है॥ ६५॥

क्षेत्रलाभो वैरिनाशो हयलाभो मनःसुखम् ।
पशुक्षेत्रधनाप्तिश्च केतोः प्राणगतो भृगौ ॥६६॥(के.शु.)

केतु के सूक्ष्मांतर में शुक्र की प्राणदशा में कुशल-लाभ, शत्रुओं का नाश, मन को सुख, पशु, क्षेत्र और धन का लाभ होता है॥ ६६॥

स्तेयाग्निरिपुभीत्यादिघातश्चैवावरोधयुक् ।
प्राणांतकरणः कृच्छ्र केतोः प्राणगते रवौ ॥६७॥(के.सू.)

केतु के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में चोर, अग्नि और शत्रु का भय, अवरोध जनित घात और प्राणांत तुल्य कष्ट होता है॥ ६७॥

देवद्विजगुरोः पूजा दीर्घयात्रा धनं सुखम् ।
कंठाश्रिते नेत्ररोगो केतोः प्राणगते विधौ ॥६८॥(के.चं.)

केतु के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में देवता, ब्राह्मण और गुरु की पूजा, दूर की यात्रा, धन और सुख, कंठ और नेत्र का रोग होता है।६८।

तीव्ररोगोलसावृद्धिर्विभ्रमः सन्निपातजः ।
स्वबंधुजनविद्वेषः केतोः प्राणगते कुजे ॥६९॥(के.मं.)

केतु के सूक्ष्मान्तर में भौम की प्राणदशा से तीव्र रोग, आलसी बुद्धि, सन्निपात से भ्रम रोग और अपने बंधुओं से विरोध होता है॥ ६९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विरोधः स्त्रीसुताद्यैश्च गृहान्निष्क्रमणं भवेत् ।
स्वसाहसात्कार्यहानिः केतोः प्राणगतेऽप्यहौ ॥७०॥(के.रा.)

केतु के सूक्ष्मांतर में राहु की प्राणदशा में स्त्री, पुत्र आदि से विरोध, घर से निकाला होता है और साहस करने से कार्य की हानि होती है॥७०॥

शस्त्रव्रणैर्महारोगैर्हृत्पीडादिसमुद्भवः ।
सुतदारवियोगश्च केतोः प्राणगते गुरौ ॥७१॥(के.बृ.)

केतु के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राणदशा में शस्त्र, व्रण और महारोग से हृदय में पीड़ा की संभावना, पुत्र, स्त्री आदि से वियोग होता है॥७१॥

मतिविभ्रमतीक्ष्णश्च क्रूरकर्मरतः सदा ।
व्यसनाद्बंधनं दुःखं केतोः प्राणगते शनौ ॥७२॥(के.श.)

केतु के सूक्ष्मांतर में शनि की प्राणदशा में बुद्धि में भ्रम, स्वभाव में तीक्ष्णता, सदा क्रूरकर्म में आसक्त, व्यसन से बंधन और दुःख होता है।७२।

कुसुमं शयनं भूषा लेपनं भोजनादिकम् ।
सौख्यं सर्वाङ्गभोग्यं च केतोः प्राणगते बुधे ॥७३॥(के.बु.)

केतु के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राण दशा में पुष्प-शय्या, आभूषण, लेपन, भोजनादि की प्राप्ति, सुख और सर्वांग का भोग प्राप्त होता है॥७३॥

इति केतोः प्राणदशाफलम्।

अथ भृगोः प्राणदशाफलम्-

ज्ञानमीश्वरभक्तिश्च तोषकर्मरसायनम् ।
पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च शुक्रप्राणगते फलम् ॥७४॥(शु.शु.)
लोकप्रकाशकीर्तिश्च सुतसौख्यविवर्जितः ।
उष्णादिरोगजं दुःखं शुक्रप्राणगते रवौ ॥७५॥(शु.सू.)

शुक्र के सूक्ष्मांतर में शुक्र की प्राणदशा में ज्ञान की प्राप्ति, ईश्वर में भक्ति, संतोष, रसायन और पुत्र-पौत्र तथा समृद्धि का लाभ होता है॥७४॥ शुक्र के सूक्ष्मान्तर में सूर्य की प्राणदशा में संसार में कीर्त्ति, पुत्र-सुख से हीन, गर्मी से रोग और दुःख होता है॥७५॥

देवार्चनिकर्मरतिर्मन्त्रतोषणतत्परः ।
धनसौभाग्यसम्पत्तिः शुक्रप्राणगते विधौ ॥७६॥(शु.चं.)

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्र के सूक्ष्मान्तर में चन्द्रमा की प्राणदशा में देवपूजन में प्रवृत्ति, संतोष, धन, सौभाग्य और सम्पत्ति का लाभ होता है॥७६॥

ज्वरो मसूरिका स्फोटकंडूचिपिटकादिकाः।
देवब्राह्मणपूजा च शुक्रप्राणगते कुजे॥७७॥(शु.मं.)

शुक्र के सूक्ष्मांतर में भौम की प्राणदशा में ज्वर, मसूरिका, चेचक, खुजुली, रोग और देवता-ब्राह्मण का पूजन होता है॥७७॥

नित्यं शत्रुकृता पीडा नेत्रकुक्षिरुजादयः।
विरोधः सुहृदां पीड़ा शुक्रप्राणगतेऽप्यहौ॥७८॥(शु.रा.)

शुक्र के सूक्ष्मान्तर में राहु की प्राणदशा में नित्य शत्रु से पीड़ा, नेत्र, कुक्षि में रोग, मित्रों से विरोध और पीड़ा होती है॥७८॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रस्त्रीधनवैभवम्।
छत्रवाहनसंप्राप्तिः शुक्रप्राणगते गुरौ॥७९॥(शु.बृ.)

शुक्र के सूक्ष्मान्तर में गुरु की प्राण दशा में आयु, आरोग्यता और ऐश्वर्य की प्राप्ति, पुत्र-स्त्री-धन का सुख और द्रव्य वाहन का लाभ होता है॥७९॥

राजोपद्रवजा भीतिः सुखहानिर्महारुजा।
नीचैः सह विवादं च शुक्रप्राणगते शनौ॥८०॥(शु.श.)

शुक्र के सूक्ष्मान्तर में शनि की प्राणदशा में राजा के उपद्रव का भय, सुख की हानि, महारोग और नीचों से विवाद होता है॥८०॥

संतोषं राजसन्मानं नानादिग्भूमिसम्पदः।
नित्यमुत्साहवृद्धिः स्याच्छुक्रप्राणगते बुधे॥८१॥(शु.बु.)

शुक्र के सूक्ष्मान्तर में बुध की प्राणदशा में संतोष, राजा से सम्मान, अनेक दिशा से भूमि-सम्पत्ति का लाभ और नित्य उत्साह में वृद्धि होती है॥८१॥

जीवितात्मयशोहानिर्धनधान्यपरिच्छदः।
त्यागयोगधनानि स्युः शुक्रप्राणगते ध्वजे॥८२॥(शु.के.)

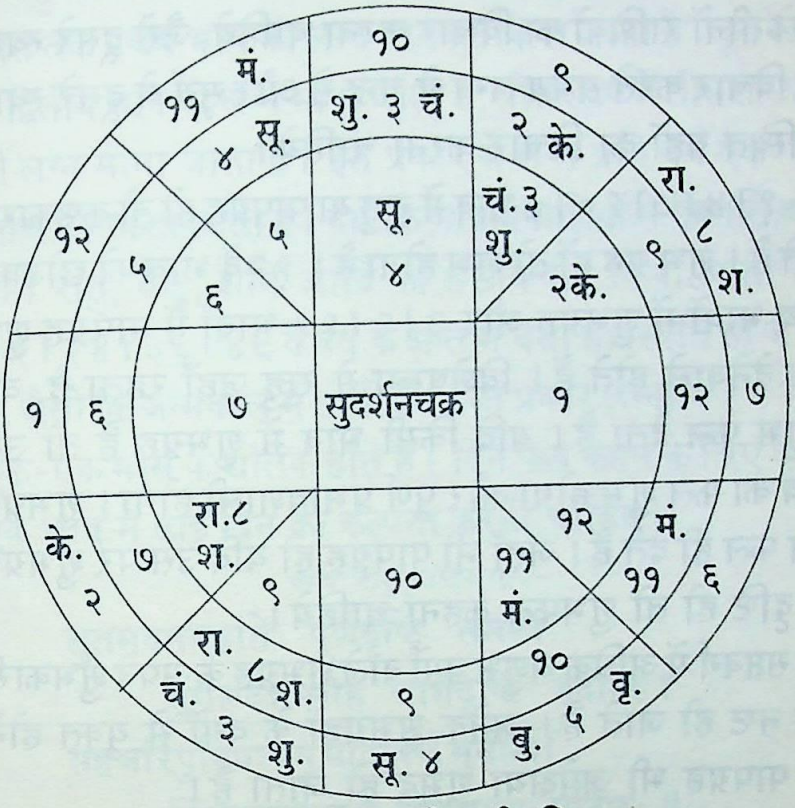
शुक्र के सूक्ष्मान्तर में केतु की प्राणदशा में आत्मा, यश की हानि, धन-धान्य की हानि और त्यागवृत्ति होती है॥८२॥

इति भृगोः प्राणदशाफलम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ समस्त ज्योतिःशास्त्रतत्त्वकामधेनुरूपम्

सुदर्शन-चक्रम्



सुदर्शनं द्वादशारं जन्मभेन्द्वर्कराशितः ।
ग्रहान् संस्थाप्य भावेषु वर्षमासादि कल्पयेत् ॥ १ ॥
केन्द्रकोणाष्टगो राहुः पापात्यै च शुभो मुदे ।
विरिःफादिशुभैः पापैस्त्रिषडायेषु वै शुभम् ॥ २ ॥
तं तं भावं प्रकल्प्यांगं तत्तत्तन्वादिजं फलम् ।
गुरूपदेशात्संवाच्यं भोजनं स्वप्नपूर्वकम् ॥ ३ ॥

चक्र परिचय-

यह चक्र वृत्ताकार जन्मपत्र में ग्रहों की स्थिति प्रकट करने हेतु खींचा गया है। बाहरी वृत्त में जन्म लग्न से प्रारम्भ कर ग्रह लिखे गये हैं। दूसरे में चन्द्रमा से ग्रहों की स्थिति लिखी गई है तथा तीसरे वृत्त में सूर्य से ग्रहों की स्थिति लिखी गयी है। इस प्रकार से यह चक्र एक ही में तीनों स्थितियों की तुलना को दिखलाता है।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भाव विचार करने के नियम-

किसी भाव का विचार करते समय उस भाव को प्रकट करने वाले तीनों राशियों का विचार करना चाहिये, जैसे दूसरे स्थान का विचार करते समय लग्न से चन्द्र से और सूर्य से दूसरे स्थान में स्थित ग्रहों का विचार करना चाहिये।

१।४।७।१०।८ भाव में राहु या पापग्रह हो तो कष्टकारक होते हैं। शुभ ग्रह हों तो शुभ होता है। १२वें भाव को छोड़कर अन्य भावों में शुभग्रह और ३।६।११ भावों में पापग्रह शुभ फल देनेवाले होते हैं। विशेषरूप से राहु जहाँ रहता है, वह अशुभ फल देता है। यदि किसी भाव में शुभग्रह है तो उस भाव का फल शुभ होगा और पूर्ण प्रभावशाली होगा। शुभग्रह शुभ फल ही देते हैं। जहाँ भी पापग्रह हो यदि उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो शुभफल कहना चाहिये।

सप्तवर्ग में अधिक अशुभ वर्गों वाले शुभग्रह के अपने शुभकारी गुण नष्ट हो जाते हैं। अनेक शुभग्रहों के वर्गों से युक्त होने पर पापग्रह भी अपेक्षया शुभद हो जाता है।

यदि कोई स्थान या भाव रिक्त हो तो उसका प्रभाव उस भाव के देखनेवाले ग्रहों से निकालना चाहिए। यदि कोई न देखता हो तो उसके स्वामी को देखना चाहिए।

उदाहरण- जैसे सुदर्शन चक्र में १० स्थान रिक्त है तथा अपने स्वामी से देखा जाता है जो चन्द्रमा के साथ बैठा है। अतः यहाँ यह कहा जा सकता है कि यह व्यक्ति अपने पेशे में पूर्णरूप से सफल होगा।

विशेष- सूर्य प्रथम भाव में शुभफल देनेवाला माना जाता है, अन्य स्थानों में अशुभ माना जाता है। पापग्रह अपनी राशि में अशुभ नहीं होते हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वार्षिक भविष्यवाणियाँ-

सुदर्शन चक्र से वार्षिक फल कहने के लिये जन्म से प्रथम १२ मास तक प्रथम भाव को लग्न मानकर किया जाता है। दूसरे वर्ष में द्वितीय भाव को लग्न माना जाता है, तीसरे वर्ष में तीसरा स्थान ही लग्न माना जाता है। इस प्रकार से लग्न प्रति वर्ष एक-एक राशि खिसकता जाता है। वार्षिक भविष्यवाणियों में मंदगति वाले ग्रहों राहु, केतु, शनि आदि का ही विचार किया जाता है। १२।२४।३६।४८ वें वर्ष के अन्त में वैसी ही स्थिति हो जाती है, जैसी कि जन्मकाल में होती है। इसी प्रकार लग्नादि १२ भाव एक-एक मास के द्योतक होते हैं। दिन फल कहने के लिए एक-एक भाव में ढाई दिन की कल्पना करनी चाहिए।

अथ राहुदृष्टिमाहः-

सुतमदननवांते पूर्णदृष्टिं तमस्य
युगलदशमगेहे चार्धदृष्टिं वदन्ति।
सहजरिपुविपश्यन् पाददृष्टिं मुनीन्द्रा
निजभवनमुपेतो लोचनान्धः प्रदिष्टः॥

ग्रहाणामुदयवर्षाणि-

आकृत्योजिनसम्मितागजकरा नेत्राग्नयः षोडश-
तत्त्वान्यङ्गगुणाद्विवेदप्रमिताः सूर्यादिकानां समाः।
यः खेटः स्वगृहे स्वतुङ्गभवने षड्वर्गशुद्धश्च यः
तस्याब्दे हि नृणां भवेदतिसुखं भाग्योदयो निश्चितम्।

इति सुदर्शनचक्रविवरणं समाप्तम्।

इति बृहत्पाराशरहोरायाः पूर्वार्धे सूर्यादि-ग्रहाणां प्राणदशाफलाध्यायः।

समाप्तश्चायं पूर्वार्धभागः।

--:०:--

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीः

बृहत्पाराशरहोरायाः उत्तरार्धम्

भाषाटीका-सहितम्

❖

अष्टकवर्गाध्यायः।

मैत्रेय उवाच-

भगवन्सर्वमाख्यातं जातकं विस्तरेण मे।
सहस्रायुतश्लोकैरशीत्यध्यायसंयुतैः ॥१॥

मैत्रेयजी ने कहा-हे भगवंन्! आपने एक हजार श्लोकों से युक्त ८० अध्याय (पूर्वखंड) में विस्तारपूर्वक सभी जातक को मुझसे कहा॥ १॥

संकरात्तत्फलानां तु ग्रहाणां गतिसंकरात्।
नान्येनहीदृगस्येदमिति वक्तुमलं नराः ॥२॥

किन्तु ग्रहों की गति का परस्पर (संकर) मिश्रण होने से उनके फल में भी मिश्रण हो जाता है। अतः इस प्रमाण से ऐसा फल कहना ऐसा निश्चय कर कहने को कोई समर्थ नहीं होता है॥ २॥

कलौ युगे ततोऽल्पैव बुद्धिः पापोत्तरा नराः।
अतो न चास्य प्रचयगमनं न प्रयोजनम् ॥३॥

क्योंकि कलियुग में पूर्व युग से अल्प ही बुद्धि के और अधिक पापी होते हैं। अतः उनके लिए इस महान् ग्रंथ का विचार करना और उसके प्रयोजन को कहना दुर्लभ ही है॥ ३॥

एतावन्त कालस्य प्रयोजनं प्रचयगमनं च कथमासीत्
इति शंकायामाह-

अत्र त्रेतायुगे केचिद् द्वापरे च कृते युगे।
कुशाग्रमतयः सर्वे पुण्यभाजश्चिरायुषः ॥४॥

आप यह कह सकते हैं कि इतने काल पर्यन्त इस ग्रंथ का उपयोग कैसे हुआ और अब क्यों नही हो पा रहा है, इसका उत्तर स्वयं दे रहे हैं-हे मुनीश्वर! इस त्रेतायुग में, कोई द्वापर में तथा सत्ययुग में मनुष्य कुशाग्रबुद्धि, पुण्यवान् और दीर्घायु होते थे। अतः वे पूर्व के कहे हुये शास्त्र को देखने और कहने में समर्थ थे॥ ४॥

अतोऽल्पबुद्धिगम्यं यच्छास्त्रमेतद्वदस्व मे।
लोकयात्रापरिज्ञानमायुषो निर्णयं तथा ॥५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इसलिये इस युग (कलियुग) के अल्पबुद्धि वाले लोगों के जानने योग्य शास्त्र का निर्देश करें, जिसके अभ्यास से प्राणियों को लोकयात्रा (सुख-दुःख) का परिज्ञान हो और आयुष्य का निर्णय भी हो सके॥ ५॥

पराशर उवाच-

साधुपृष्टं त्वया ब्रह्मन्वदामि तव सुव्रत।
लोकयात्रापरिज्ञानमायुषो निर्णयं तथा॥ ६॥

पराशरजी ने कहा- हे ब्रह्मन्! तुमने बड़ा ही अच्छा प्रश्न किया है, मैं लोकयात्रा का ज्ञान और आयुष्य का निर्णय॥ ६॥

संकरस्याविरोधं च शास्त्रस्यापि प्रसिद्धये।
प्रयोजनस्य लोकानामुपकाराय तच्छृणु॥ ७॥

और ग्रहों की गति के संकरता से फल में विपर्यास होता है, इसे भी शास्त्र की सिद्धता के लिये अविरोध प्रकार और प्रयोजन भी लोकोपकार के लिये कहता हूँ, उसे सुनो॥ ७॥

भावानां शुभाऽशुभत्वमाह-

लग्नादिव्ययपर्यंता भावाः संज्ञानुरूपतः।
फलदाः शुभसंदृष्टयुक्ता वा शोभना मताः॥ ८॥

लग्न से लेकर व्यय भाव पर्यन्त सभी भाव यदि शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों तो उन भावों के संज्ञानरूप शुभफल को देते हैं॥ ८॥

पापदृष्टयुता भावाः कल्याणेतरदायकाः।
नितरां शत्रुनीचस्थैर्न च मित्रोच्चगैश्च तैः॥ ९॥

पापग्रह से दृष्ट या युक्त हों तो अशुभ फल को देते हैं। यदि पाप ग्रह अपने शत्रु की राशि में वा नीचराशि में हो तो अत्यन्त अशुभ फल देता है, किन्तु अपने मित्रकी राशि या उच्चराशिमें हो तो शुभफल को ही देता है।९।

एवं सामान्यतः प्रोक्तं होराविद्भिस्तु सूरिभिः।
मयैतत्सकलं प्रोक्तं पूर्वाचार्यानुवर्त्तिनी॥ १०॥

इस प्रकार होराशास्त्र के जानने वालों ने सामान्य रीति से कहा है, उसे मैंने सम्पूर्ण पूर्वाचार्यों के अनुसार कहा है॥ १०॥

आयुश्च लोकयात्रा च शास्त्रेऽस्मिंस्तत्प्रयोजनम्।
निश्चेतुं तन्न शक्नोति वशिष्ठो वा बृहस्पतिः॥ ११॥

इस शास्त्र में आयु का प्रमाण और मनुष्यों के सुख-दुःख का वर्णन है, यही इसका प्रयोजन है। किन्तु उन सबके निर्णय करने में वशिष्ठ या बृहस्पति भी समर्थ नहीं हो सकते हैं॥ ११॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

किं पुनर्मनुजास्तत्र विशेषात्तु कलौ युगे ।
नष्टादिषु च नातीव द्रेष्काणादिफलेषु च ॥ १२॥
आचार्यस्य मुखादेतच्छास्त्रं तु शृणुयाद् बुधः ।
संप्रदायेन यः श्रोतश्चास्मिञ्छास्त्रे महामतिः ॥ १३॥

साधारण मनुष्य कहाँ से निश्चय कर सकता है। विशेषकर कलियुग में विशेषकर नष्ट चौर आदि के प्रश्नों के उत्तर द्रेष्काणादि से देने में समर्थ नहीं हो सकते हैं॥ १२॥ इस शास्त्र को आचार्य के मुख से सुनकर संप्रदायानुसार इसमें परिश्रम करनेवाला पुरुष श्रेष्ठ दैवज्ञ होता है॥ १३॥

कर्मज्ञानविदा वेदो द्विधा यद्वत्तदह्वये ।
होराशास्त्रं द्विधा प्रोक्तं संकीर्णनिश्चयादिति ॥ १४॥

जिस प्रकार कर्मकांड और ज्ञानकांड से युक्त वेद एक होते हुए भी दो प्रकार का है, उसी प्रकार से संकीर्ण और निश्चय से यह ज्योतिश्शास्त्र भी दो प्रकार का है॥ १४॥

प्रोक्तः संकीर्णभागस्तु निश्चयांशस्तु कथ्यते ।
यो वेत्ति सम्यगेतत्तु दैवज्ञः स उदाहृतः ॥ १५॥

इसमें संकीर्णभाग पूर्वार्ध (पूर्वभाग) में वर्णित है और निश्चय भाग को इस उत्तरार्ध में कह रहा हूँ, जो सम्यक् प्रकार से इसे जानता है उसे ही दैवज्ञ कहते हैं॥ १५॥

भावदृष्ट्यादिषु प्रोक्तानर्थान्सम्यग्विचार्य च ।
समीचीनांस्तु संगृह्य विरुद्धांस्तु परित्यजेत् ॥ १६॥

तनु आदि बारह भाव और उसपर दृष्टि का योग ठीक-ठीक विचार कर जो उत्तम बल हों उनको ग्रहण कर हीनबल का त्याग कर दे॥ १६॥

आयुर्दायैः परं योगैः फलान्यष्टकवर्गतः ।
तन्वादीनां तु भावानां सूक्तैर्भावादिभिः फलैः ॥ १७॥
ज्ञात्वादौ करणं स्थानं बिन्दुरेखे च वर्गणाम् ।
क्रमादष्टकवर्गस्य पृथक् कृत्य फलं वदेत् ॥ १८॥

पहले आयुष्य का ज्ञान करे, इसके बाद नाभसादिक योगों के फल का ज्ञान करे, दोनों का ज्ञान हो जाने के बाद प्रत्येक भावों के अष्टकवर्ग के अनुसार करण और स्थान को विन्दु और रेखा के स्थान पर मानकर योगकर उन २ भावों के फल को कहे॥ १७-१८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ रवेः करणसंख्यां-करणप्रदग्रहांश्चाह-

तनुस्वायुश्त्रिरिष्फेषु पंचकामेऽर्णधाः सुखे ।
अरौ भाग्ये त्रयः पुत्रे षट् करौ खे भवे च भूः ॥१६॥
लग्नेकुजीवशुक्रज्ञास्तनौखे मरणेऽपि च ।
रविभौमार्किं चन्द्रार्या व्यये ज्ञेन्दुसितार्यकाः ॥२०॥

अष्टक वर्ग क्या है-प्रायः फल कहने के तीन प्रकार हैं (१) जन्म-लग्न से ग्रहों की स्थिति के अनुसार।(२) चन्द्रलग्न से ग्रहों की स्थिति के अनुसार।(३) नवांश कुंडली के अनुसार फल कहने की विधि है। जातक के जन्म लग्न से उसके शरीर के सुख-दुःखादि का विचार किया जाता है और चन्द्रमा से मन का विचार किया जाता है। मन ही की शान्ति एवं अशान्ति और सबलता वा निर्बलता के अनुसार इहलौकिक और पारलौकिक सभी शुभ-अशुभ कार्य हुआ करते हैं। अतः फलादेश का मुख्य अंग चन्द्रमा ही हुआ, इसलिये ही आचार्यों ने यह निश्चय किया है कि मनुष्य के जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि से जिन-जिन भावों में ग्रहगण भ्रमण करते हुये जाते हैं, वैसा-वैसा ही फल उस-उस समय में मनुष्यों को होते हैं, इसी को गोचर फल कहते हैं। किन्तु यह विधि गौण है। क्योंकि सम्पूर्ण मानव मात्र के चन्द्रमा इन्हीं बारह राशियों में से किसी एक राशि में रहता है। अतः साधारण गोचर फल केवल बारह ही प्रकार का होगा, किन्तु ऐसा होता नहीं है। इसलिये आचार्यों ने जन्मकालीन ग्रहस्थिति और जन्मलग्न स्थित राशि, इन आठ स्थानों से यदि गोचर फल का विचार किया जाय तो अवश्य विश्वास योग्य होगा। ऐसा निश्चय किया है। इसी को अष्टक वर्ग विधि कहते हैं। प्रत्येक जन्मकुंडली में सात ग्रह और जन्मलग्न अर्थात् इन आठ पदार्थों से किसी-न-किसी स्थान में शुभ और अशुभ फलों में विशेषता हो जाती है। इसी को आचार्यों ने प्रत्येक ग्रह एवं लग्न अपने-अपने स्थान में जिन-जिन स्थानों में शुभ फल देता है इस शुभफलदायित्व स्थान को रेखा या विन्दु द्वारा दिखलाया है। किसी आचार्य ने विन्दु संकेत से शुभफल माना है और किसी ने रेखा द्वारा शुभ फल माना है। इससे भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये चाहे जिस चिह्न से माना जाय। इस ग्रंथ में शून्य को करण कहते हैं। अतः सूर्य की करण संख्या कह रहे हैं। सूर्य से १, २, ८, ३, १२ भावों में पांच-पांच करण होता है।। ७,४ भाव में चार-चार करण होता है। ६, ९ भाव में तीन तीन करण होता है। ५ भाव में ६ करण होता है। १० भाव में दो करण और ११ भाव

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

में एक करण होता है। १९, अर्थात् सूर्य से १, २, ८ भाव में लग्न, चन्द्र, शुक्र और बुध ये पाँच ग्रह करण देने वाले हैं, १२वें भाव में सूर्य, भौम, शनि, चंद्र, गुरु ये पाँच करण देने वाले हैं॥ १९-२०॥

सुखे होरेन्दुशुक्राश्च धर्मेऽर्कार्कि कुजा अरौ।
होराज्ञार्येदवः कामे भवे दैत्येन्द्रपूजितः॥ २१॥

चौथे भाव में बुध, चन्द्र, शुक्र, गुरु ये चार ग्रह करण देने वाले हैं। नवम भाव में लग्न, चन्द्र, शुक्र ये तीन ग्रह करणप्रद हैं। ६ भाव में सूर्य, शनि, मंगल ये तीन ग्रह करण देने वाले हैं। ७ भाव में लग्न, बुध, शुक्र चंद्र ये चार ग्रह करण देने वाले हैं। ११ भाव में केवल शुक्र करण देने वाले हैं॥ २१॥

सहजेऽर्कार्किशुक्रार्यभौमाः खे गुरुभार्गवौ।
सुतेऽर्काकीन्दुलग्नारशुक्राः स्युः करणं रवेः॥ २२॥

तीसरे भाव में सूर्य, शनि, शुक्र, गुरु, मंगल ये पाँच ग्रह करण देने वाले हैं। १० भाव में गुरु, शुक्र ये दो ग्रह करण देने वाले हैं। ५ भाव में सूर्य, शनि, चंद्र, लग्न, मंगल, शुक्र ये छः ग्रह करण देने वाले हैं। यह सूर्य की करण संख्या है॥ २२॥

नोट- इसका तात्पर्य यह है कि सूर्य जिस स्थान में है, वहाँ से जिन-जिन स्थानों में विन्दु है अर्थात् ३, ५, ६, १२ स्थानों में जायेगा तब-तब अपना अशुभ फल देगा और शेष स्थानों (१, २, ४, ७, ८, ९, १०, ११) में जाएगा तब-तब शुभ फल देगा, इसी प्रकार चन्द्रादि ग्रहों को भी अपने-अपने स्थानों से शुभ-अशुभ फलों को समझना चाहिए।

अथ सूर्य करण कोष्ठकम्-

भाव	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	संख्या
तनु		०		०	०	०		०	५
धन		०		०	०	०		०	५
सहज	०		०		०	०	०		५
सुहृद		०		०	०	०			४
पुत्र	०	०	०			०	०	०	६
रिपु	०		०				०		३
स्त्री		०		०	०			०	४
आयु		०		०	०	०		०	५
धर्म		०				०		०	३
कर्म						०	०		२
आय						०			१
व्यय	०	०	०		०		०		५

अथ चन्द्रस्य करणसंख्या-करणप्रदग्रहांश्चाह-

भाग्यस्वयोश्च षड् वेश्ममृतिहोरासु पंच च।
मानदुश्चिक्ययोरेकः सुते वेदा अरिस्त्रियोः॥ २३॥

चन्द्रमा से ९, २ भाव में ६ करण ४, ८, १ भाव में ५ करण १०, ३ भाव में १ करण, ५ भाव में ४ करण, ६, ७, भाव में ३ करण॥ २३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

त्रयो व्ययेऽष्टावाये च शून्यं शीतकरस्य तु ।
होरार्कारार्किभृगवोऽङ्गज्ञार्केन्द्वार्किभार्गवाः ॥ २४ ॥

१२ भाव में ८ करण और ११ भाव में शून्य करण होता है। चन्द्रमा से १ भाव में लग्न सूर्य, मंगल, शनि, शुक्र ये पाँच करण देने वाले हैं॥ २४॥

जीवोऽर्कार्कीन्दुलग्नारा होरेन्दुगुरुभास्कराः ।
सितज्ञार्याः कुजतनुर्मन्दास्ते सितशीतगू ॥ २५ ॥

दूसरे भाव में लग्न, बुध, सूर्य, चन्द्रमा, शनि और शुक्र, ये ६ करण देने वाले हैं। तीसरे भाव में केवल गुरु करण देने वाला है। चौथे भाव में सूर्य, शनि, चन्द्र, लग्न, भौम ये पाँच करणप्रद हैं। पाँचवें भाव में लग्न, चन्द्र, गुरु, रवि ये चार करणप्रद हैं। छठे भाव में शुक्र, बुध, गुरु ये तीन ग्रह करणप्रद हैं। सातवें भाव में भौम लग्न, शनि ये तीन करणप्रद हैं। आठवें भाव में भौम, लग्न, शनि, शुक्र चन्द्रमा ये ५ करणप्रद हैं॥ २५॥

होरार्कारार्किविज्जीवाः शनिः खं सकलाःक्रमात् ।

नवम भाव में लग्न, सूर्य, भौम, शनि, बुध, गुरु ये ६ ग्रह करणप्रद हैं। दशम भाव में केवल शनि करणप्रद है, एकादश भाव में शून्य और बारहवें भाव में सभी करणप्रद होते हैं।

स्पष्टार्थचन्द्रकरण चक्रम्।

भाव	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	संख्या
तनु		०			०	०	०	०	५
धन	०		०		०	०	०	०	६
सहज				०					१
सुहृद	०	०				०	०	०	५
पुत्र	०			०			०	०	४
रिपु				०	०	०			३
स्त्री		०				०	०		३
आयु	०	०			०	०	०		५
धर्म		०	०	०		०	०	०	६
कर्म						०			१
आय									
व्यय	०	०	०	०	०	०	०	०	८

अथ भौमस्य करणसंख्याकरणप्रदग्रहांश्चाह-

व्ययवेश्मसुतस्त्रीषु षट् सप्त धनधर्मयोः ॥ २६ ॥
होरामृत्योः शरा वेदा विक्रमे खे त्रयः क्षते ।
द्वौ भवे शून्यमेव स्यात्करणं भूमिजस्य तु ॥ २७ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भौम से १२, ४, ५, ७ भाव में ६ करण २, ९ भाव में ७ करण॥ २६॥ १, ८ भाव में ५ करण, ३ भाव में ४ करण, २ भाव में ३ करण, ६ भाव में २ करण, ११ भाव में शून्य करण होते हैं॥ २६-२७॥

कुजस्यार्केंदुविज्जीवसिता लग्नशनी च ते।
सितारगुरुमन्दाः स्युर्धर्मोक्तेषु कुजं विना॥ २८॥
चन्द्रारगुरुशुक्रार्किलग्नानि कुजभास्करी।
ज्ञेन्द्रर्कसितलग्नार्या ऐषु शुक्रं विना ततः॥ २९॥

भौम से १ भाव में सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र ये ५ करणप्रद ग्रह हैं, २ भाव में लग्न, शनि, सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये ७ करणप्रद ग्रह हैं। ३ भाव में शुक्र, भौम, गुरु, शनि ये ४ करणप्रद हैं। ४ भाव में सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, लग्न ये ६ ग्रह करणप्रद हैं॥ २८॥ ५ भाव में चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न ये ६ ग्रह करणप्रद हैं। ६ भाव में भौम, शनि ये दो करणप्रद हैं, ७ भाव में बुध, चंद्र, सूर्य, शुक्र, गुरु ये ६ करणप्रद ग्रह हैं॥ २९॥

विना शनिं सप्तधर्मे सितेन्दुज्ञा वियत्ततः।
अर्कार्किज्ञेंदुलग्नाराः करणं प्रोच्यते क्रमात्॥ ३०॥

८ भाव में बुध, चंद्र, सूर्य, गुरु, लग्न ये ५ करणप्रद ग्रह हैं, ९ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, लग्न ये ७ करणप्रद ग्रह हैं, १० भाव में शुक्र, चंद्र, बुध ये तीन करणप्रद ग्रह हैं। ११ भाव में शून्य और १२ भाव में सूर्य, शनि, बुध, चन्द्र, लग्न, भौम ये ६ करणप्रद ग्रह हैं॥ ३०॥

स्पष्टार्थभौमकरणचक्रम्-

भाव	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	संख्या
तनु	०	०		०	०	०			५
धन	०	०		०	०	०	०	०	७
सहज			०		०	०	०		४
सुहृद	०	०		०	०	०		०	६
पुत्र		०	०		०	०	०	०	६
रिपु			०				०		२
स्त्री	०	०		०	०	०		०	६
आयु	०	०		०	०			०	५
धर्म	०	०	०	०	०	०		०	७
कर्म		०		०		०			३
आय									
व्यय	०	०	०	०			०	०	६

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ बुधस्य करणसंख्याः करणप्रदग्रहांश्चाह-

तनुस्वगृहकर्मारि धर्मेष्वग्निर्मृतौ करौ।
मातृस्त्रियो रसा लाभे शून्यं पुत्रे व्यये शराः ॥३१॥

बुध से १,२,४,१०,६,९ भाव में तीन करण, ८ भाव में २ करण, ३,७ भाव में ६ करण, ११ भाव में शून्य और १२ भाव में ५ करण होता है॥३१॥

बुधस्यार्केन्दुगुरवो गुरुसूर्यबुधाः क्रमात्।
लग्नार्कारार्किचंद्रार्या ज्ञार्कार्या हि बुधस्य तु ॥३२॥

बुध से १ भाव में सूर्य, चंद्र, गुरु ये तीन करणप्रद ग्रह हैं। २ भाव में गुरु, सूर्य, बुध ये तीन करणप्रद ग्रह है। ३ भाव में लग्न, सूर्य, शनि, चंद्र, भौम, गुरु ये ६ करणप्रद ग्रह हैं। ४ भावमें बुध, सूर्य, गुरु ये तीन करणप्रद ग्रह हैं॥३२॥

जीवारेन्द्वार्किलग्नानि शुक्रमंदधरासुताः।
ज्ञेन्दुलग्नार्कशुक्रार्या ज्ञार्कौ जीवेन्दुलग्नकाः ॥३३॥
अर्कार्यशुक्राः शून्यं च होरेन्द्वारार्किभार्गवाः।

५ भाव में गुरु, भौम, चन्द्र, शनि, लग्न ये ५ करणप्रद ग्रह हैं। ६ भाव में शुक्र, शनि, भौम ये तीन करणप्रद ग्रह हैं। ७ भाव में बुध, चंद्र, लग्न, सूर्य, शुक्र, गुरु ये ६ करणप्रद ग्रह हैं। ८ भाव में बुध, सूर्य ये दो करणप्रद ग्रह हैं। ९ भाव में गुरु, चंद्र, लग्न ये तीन करणप्रद ग्रह हैं, १० भाव में सूर्य, गुरु, शुक्र ये तीन करणप्रद ग्रह हैं, ११ भाव में शून्य और १२ भाव में लग्न, चंद्र, भौम, शनि, शुक्र ये ५ करणप्रद ग्रह हैं॥ ३३॥

स्पष्टार्थबुधकरणचक्रम्-

भाव	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	संख्या
तनु	०	०			०				३
धन	०			०	०				३
सहज	०	०	०		०		०	०	६
सुहृद	०			०	०				३
पुत्र		०	०		०		०	०	५
रिपु			०			०	०		३
स्त्री	०	०		०	०	०		०	६
आयु	०			०					२
धर्म		०			०				२
कर्म	०				०	०			३
आय									
व्यय		०	०			०	०	०	५

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ गुरोः करणसंख्यां करणप्रदग्रहांश्चाह-

रूपं धनाययोः खे दौ व्यये सप्तक्षतेऽर्णवाः ॥ ३४ ॥

गुरु से २ रे भाव में १ करण, १० भाव में २ करण, ११ भाव में १ करण, १२ भाव में ७ करण, ६ भाव में ४ करण॥ ३४॥

मृतिविक्रमयोः पंच गुरोः शेषेषु वह्नयः ।
शुक्रेन्दुमंदा लग्ने स्वे आये मंदश्च विक्रमे ॥ ३५ ॥

८, ३ भाव में ५ करण और शेष भावों (१, ४, ५, ७, ९) में ३ करण होते हैं। गुरु से १ भाव में शुक्र, चंद्र, शनि ये तीन ग्रह करणप्रद हैं, २ भाव और ११ भाव में केवल शनि करणप्रद हैं॥ ३५॥

लग्नारेन्दुज्ञभृगवः सुतेऽर्कार्यकुजा गृहे ।
शुक्रमंदेन्दवो द्यूने बुधशुक्रशनैश्चराः ॥ ३६ ॥

३ भाव में लग्न, भौम, चंद्र, बुध, शुक्र ये पाँच ग्रह करणप्रद हैं। ५ भाव में सूर्य, गुरु, भौम तीन करणप्रद हैं। ४ भाव में शुक्र, शनि, चंद्र ये तीन ग्रह करणप्रद हैं। ७ भाव में बुध, शुक्र, शनि ये तीन ग्रह करणप्रद हैं॥ ३६॥

जीवार्केन्दवः शत्रौ मंदं विना व्यये सर्वे ।
कर्मणीन्दुशनी धर्मे मन्दारगुरवो मृतौ ॥ ३७ ॥

६ भाव में गुरु, भौम, सूर्य, चन्द्र ये चार ग्रह करणप्रद हैं, १२ भाव में शनि को छोड़कर सभी ग्रह करणप्रद हैं। १० भाव में चंद्र, शनि ये २ ग्रह, ९ भाव में शनि, भौम, गुरु ये तीन ग्रह करणप्रद हैं॥ ३७॥

स्पष्टार्थगुरुकरणचक्रम्-

भाव	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	संख्या
तनु		०				०	०		३
धन							०		१
सहज		०	०	०		०		०	५
सुहृद		०				०	०		३
पुत्र	०		०		०				३२
रिपु		०	०			०	०		४
स्त्री				०		०	०		३
आयु		०		०		०	०	०	५
धर्म			०		०		०		३
कर्म		०					०		२
आय							०		१
व्यय	०	०	०	०	०	०		०	७

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्नार्किसितचंद्रज्ञाः करणं च गुरोरिदम् ।

८ भाव में लग्न, शनि, शुक्र, चन्द्र, बुध ये पाँच ग्रह करणप्रद हैं।

अथ भृगोः करणसंख्यां करणप्रदग्रहाँश्चाह-

सतायुर्विक्रमेष्वक्षि - तनुस्वव्ययखेष्विषुः ॥ ३८॥

शुक्र से ५, ८, ३ भाव में २ करण, १, २, १२, १० भावमें ५ करण॥३८॥

अष्टौ स्त्रियामरौ षड्भूर्धर्मे मित्रेऽग्निखं भवे ।
लग्ने स्वेऽर्कारिविज्जीवमंदाः सर्वे च काम मे ॥ ३९॥

७ भाव में ८ करण, ६ भाव में ६ करण, ९ भाव में १ करण, ४ भाव में ३ करण और ११ भाव में शून्य करण होता है। शुक्र से १, २ भाव में सूर्य, भौम, गुरु, बुध, शनि ये ५ करणप्रद ग्रह हैं। ७ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और लग्न ये आठ करणप्रद ग्रह हैं॥ ३९॥

अर्कार्यौ विक्रमस्थाने सुतेऽर्कारौ शुभे रविः ।
सुखेऽर्कबुधजीवाः स्यर्भौमज्ञौ मृत्तिभे द्विज ॥ ४०॥

३ भाव में सूर्य, गुरु दो करणप्रद ग्रह हैं, ५ भाव में सूर्य, भौम ये दो करणप्रद ग्रह हैं। ९ भाव में सूर्य, बुध, गुरु ये ३ करणप्रद ग्रह हैं। ८ भाव में भौम, बुध ये २ करणप्रद ग्रह हैं॥ ४०॥

स्पष्टार्थभृगोःकरणचक्रम्-

भाव	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	संख्या
तनु	०		०	०	०		०		५
धन	०		०	०	०		०		५
सहज	०				०				२
सुहृद	०			०	०				३
पुत्र	०		०						२
रिपु	०	०		०	०	०	०	०	७
स्त्री	०	०	०	०	०	०	०	०	८
आयु			०						१
धर्म	०			०				०	५
कर्म	०	०	०					०	५
आय									
व्यय				०	०	०	०	०	५

शुक्रार्केन्द्वार्किलग्नार्याः शत्रौ शून्यं भवे व्यये ।
होरार्किबुधशुक्रार्यास्तन्वारज्ञेन्द्विनाश्च खे ॥ ४१॥

६ भाव में शुक्र, सूर्य, चन्द्र, लग्न और गुरु ये ६ करणप्रद ग्रह हैं। ११

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भाव में कोई नहीं है। १२ भाव में लग्न, शनि, बुध, शुक्र, गुरु ये ५ करणप्रद ग्रह हैं। १० भाव में लग्न, भौम, बुध, चन्द्र, सूर्य ये ५ करणप्रद ग्रह हैं॥४१॥

अथ शनेःकरणसंख्यांकरणप्रदग्रहांश्चाह-

स्वस्त्रीधर्मेषु सप्ताङ्गं मृतिहोरागृहेषु च।
आज्ञाभ्रातृव्यये वेदा रूपं शत्रौ सुते शराः॥४२॥

शनि से २।७।९ भाव में ७ करण, ८ लग्न, ४ भाव में ६ करण १०।३। १२ भाव में ४ करण, ६ भाव में १ करण, ५ भाव में ५ करण॥४२॥

आये शून्यं शनेरेवं करणं प्रोच्यते बुधैः।
गृहे तनौ च लग्नार्कौ स्वस्त्रियोश्च रविं विना॥४३॥
हित्वा धर्मे बुधं माने लग्नाररविचन्द्रजान्।
ततो भ्रातरि जीवार्कबुध शुक्राः क्षते रविः॥४४॥

११ भाव में शून्यकरण होता है। शनि से ४।१ भाव में लग्न, सूर्य को छोड़कर सभी ग्रह करणप्रद होते हैं। २।७ भाव में रवि को छोड़कर शेष ७ ग्रह॥४३॥ ९ भाव में बुध के बिना ७ ग्रह। १० भाव में लग्न, भौम, रवि, बुध के बिना (चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि) चार ग्रह, ३ भाव में गुरु, सूर्य, बुध, शुक्र ये चार गृह, ६ भाव में केवल सूर्य॥४४॥

व्यये लग्नेन्दुमंदार्काः सितार्केन्दुज्ञलग्नकाः।
सुतो मृतौ बुधार्कौ च हित्वाऽऽये खं शनेर्विदः॥४५॥

१२ भाव में लग्न, चन्द्र, शनि, सूर्य ये चार ग्रह, ५ भाव में शुक्र, सूर्य, चन्द्र, बुध, लग्न ये चार ग्रह, ८ भाव में लग्न, सूर्य ये २ ग्रह। ११ भाव में कोई करणप्रद नहीं है। यह शनि की विन्दु संख्या कही गई है॥४५॥

स्पष्टार्थशनेः करणचक्रम्-

भाव	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	संख्या
तनु		०	०	०	०	०	०		६
धन		०	०	०	०	०	०	०	७
सहज	०			०	०	०			४
सुहृद	०	०		०		०		०	५
पुत्र		०	०	०	०	०	०		६
रिपु	०								१
स्त्री		०	०	०	०	०	०	०	७
आयु		०	०		०	०	०	०	६
धर्म	०	०	०		०	०	०	०	७
कर्म		०			०	०	०		४
आय									०
व्यय	०	०					०	०	४

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ लग्नस्य करणसंख्यां करणप्रदग्रहांश्चाह-

तनौ तुर्ये च वह्निः स्याद्दुश्चिक्ये द्वौ धनेशराः ।
बुद्धिमृत्यंकरिःफेषु षट्खेशक्षतराशिषु ॥४६॥

लग्न और ४ भाव में ३ करण, ३ भाव में २ करण, २ भाव में ५ करण, ५।८।९।१२ भाव में ६ करण, १०।११।६ भाव में १ करण॥४६॥

रूपं स्त्रियां गुरुं त्यक्त्वा लग्नस्य करणं विदुः ।
होरासूर्येन्दवो लग्ने लग्नारेंद्विनसूर्यजाः ॥४७॥

७ भाव में ७ करण होते हैं। लग्न में लग्न, सूर्य, चन्द्र ये तीन करणप्रद हैं। २ भाव में लग्न, भौम, चन्द्र, सूर्य, शनि ये ५ करणप्रद हैं॥४७॥

गुरुज्ञौ लग्नचन्द्राारा लसूचंमंबुसौरयः ।
क्षते शुक्रस्तथा चैकः कामे सर्वे गुरुं विना ॥४८॥

३ भाव में गुरु, बुध ये २ करणप्रद हैं। ४ भाव में लग्न, चन्द्र, भौम करण प्रद हैं। ५ भाव में लग्न, सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि ये करणप्रद हैं। ६ भाव में शुक्र, ७ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि ये करणप्रद हैं॥४८॥

मृतौ भृगुबुधौ त्यक्त्वा धर्मे गुरुसितौ बिना ।
कर्मण्याये तथा शुक्रो व्यये सूर्येन्दुवर्जिताः ॥४९॥

८ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि, लग्न ये ६ ग्रह करणप्रद हैं। ९ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि, लग्न ये करणप्रद हैं। १० भाव में और ११ भाव में शुक्र करणप्रद हैं। १२ भाव में भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न ये ६ ग्रह करणप्रद हैं॥४९॥

लग्नेस्यैवं तु संप्रोक्तं करणं द्विजपुंगव ।

हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! इस प्रकार से लग्न के करण (विन्दु) संख्या को कहा।

उक्तान्ये स्थानदातारं इति स्थानं विदुर्बुधाः ।
अथ स्थानग्रहान्वक्ष्ये सुखबोधाय सूरिणाम् ॥५०॥

पहले सूर्यादि ग्रहों के विन्दु देनेवाले ग्रहों को कहकर उससे भिन्न स्थान (रेखा) देनेवालों को कहते हैं॥५०॥

अथ रविभावस्थानप्रदान् ग्रहान् आह-

स्वायुस्तनुषु मंदारसूर्य जीवबुधौ सुते ।
विक्रमे ज्ञेन्दुलग्नानि लग्नार्कार्किकुजा गृहे ॥५१॥

सूर्य से २।७, १ भाव में शनि, भौम, सूर्य ये तीन रेखाप्रद ग्रह हैं। ५ भाव में गुरु, बुध ये २ ग्रह, २ भाव में बुध, चन्द्र और लग्न ये ३ ग्रह, ४ भाव में लग्न, सूर्य, शनि, भौम ये ४ ग्रह॥५१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Jammu. Digitized by S3 Foundation USA

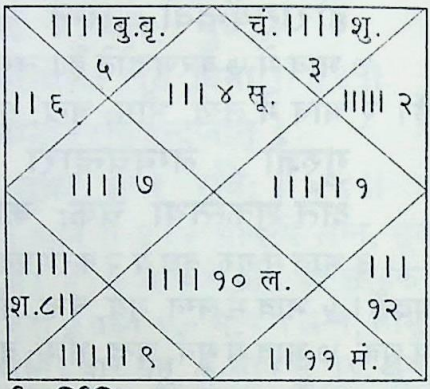
खे ज्ञेन्दुरवयश्चाये सर्वे शुक्रं बिना व्यये।
लग्नशुक्रबुधाः शत्रो ते च जीवसुधाकरौ ॥५२॥

१० भाव में लग्न, सूर्य, शनि, भौम, बुध और चन्द्र से ६ ग्रह। ११ भाव में शुक्र से भिन्न (सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि लग्न ये ७ ग्रह) १२ भाव में लग्न, शुक्र बुध ये ३ ग्रह। ६ भाव में लग्न शुक्र, बुध, गुरु, चन्द्र ये ५ ग्रह ॥५२॥

सूर्याष्टकवर्गः-

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	१
२	६	२	४	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

रेखा संख्या ४८ सूर्याष्टकवर्गः



द्यूनेऽर्काराकिशुक्राश्च धर्मेऽर्काराकिविद्गुरुः।

७ भाव में सूर्य, भौम, शनि, शुक्र ये चार ग्रह, ९ भाव में सूर्य, भौम, शनि, बुध, गुरु ये ५ ग्रह रेखाप्रद हैं।

अथ चन्द्रभावस्थान् प्रदान् ग्रहानाह-

ज्ञेन्दुजीवाः कुजार्यौ ज्ञार्केन्द्वारार्किभशुक्राः ॥५३॥
जीवशुक्रबुधा भौमबुधशुक्रशनैश्चराः।
रवीन्द्वारार्किलग्नानि रवीन्द्वारार्यज्ञभार्गवाः ॥५४॥

चन्द्रमा से १ भाव में बुध, चन्द्र, गुरु रेखाप्रद ग्रह हैं। २ भाव में भौम, गुरु ये दो ग्रह रेखाप्रद हैं। ३ भाव में बुध, सूर्य, चन्द्र, भौम, शनि, लग्न शुक्र ये ७ ग्रह हैं॥५३॥ ४ भाव में गुरु, शुक्र, बुध ये ३ ग्रह रेखाप्रद हैं। ५ भाव में भौम, बुध, शुक्र, शनि ये ४ ग्रह रेखाप्रद हैं। ६ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, शनि, लग्न ये ४ ग्रह रेखाप्रद हैं। ७ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, बुध, शुक्र ये ६ ग्रह रेखाप्रद हैं॥५४॥

अर्कज्ञजीवाः शुक्रेन्दु ते च तौ लग्नभूसुतौ।
सर्वे शून्यं क्रमात्प्रोक्तं स्थानं शीतकरस्य च ॥५५॥

८ भाव में सू बुध, गुरु ये ३ रेखाप्रद हैं। ९ भाव में शुक्र, चन्द्र ये २ ग्रह रेखाप्रद हैं १० भाव में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र, लग्न, भौम ये

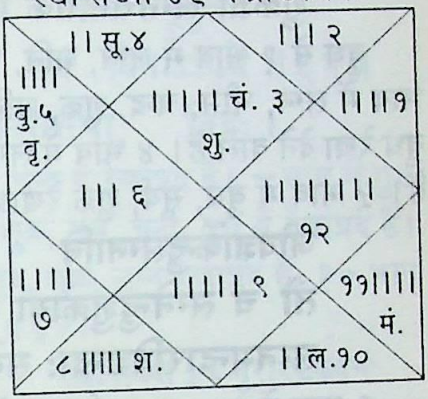
CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by eGangotri Foundation USA

७ रेखाप्रद हैं। ११ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि, लग्न ये ७ रेखाप्रद हैं। १२ भाव में कोई रेखाप्रद नहीं है॥ ५५॥

अथ चन्द्रभावस्थानप्रदान् ग्रहानाह

चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	५	३	३	३
३	३	३	४	४	३	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
११	१०	०	११	१०		११	
	११	१८		११			
		११					

रेखा संख्या ४९ चन्द्राष्टकवर्गः-



अथ भौमभावस्थानप्रदान् ग्रहानाह-

लग्नमन्दकुजा भौमो होराज्ञेन्दुदिनाधिपाः।
मन्दारौ ज्ञरवी ज्ञेन्दुजीवार्कतनुभार्गवाः॥ ५६॥
मन्दारौ तौ सितश्चार्किकुजार्कार्यार्किलग्नकाः।
सर्वे गुरुसितौ स्थानं भौमस्यैवं विदुर्बुधाः॥ ५७॥

भौम से १ भाव में लग्न, शनि, भौम ये तीन रेखाप्रद हैं। २ भाव में भौम, ३ भाव में लग्न, बुध, चन्द्र, सूर्य ये ४ रेखाप्रद हैं। ४ भाव में शनि, भौम। ५ भाव में बुध, सूर्य। ६ भाव में बुध, चंद्र, गुरु, सूर्य, लग्न, शुक्र, ये ६ ग्रह हैं॥ ५६॥ ७ भाव में शनि, भौम ८ भाव में शनि, भौम, शुक्र ये ३ रेखाप्रद हैं। ९ भाव में शनि, १० भाव में भौम, सूर्य, गुरु, शनि, लग्न ११ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न और १२ भाव में गुरु, शुक्र ये २ ग्रह रेखाप्रद हैं॥ ५७॥

भौमभावस्थानप्रदान् ग्रहान्

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
१०				१०			
११				११			

रेखा संख्या ३९ भौमास्याष्टकवर्गः



CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ बुधभावस्थानप्रदान् ग्रहानाह–

लग्नमन्दारशुक्रज्ञा लग्नारेन्दुसितार्कजाः ।
शुक्रज्ञौ लग्नचन्द्रार्कि सितारज्ञार्किभार्गवाः ॥ ५८ ॥

बुध से १ भाव में लग्न, शनि, भौम, शुक्र, बुध ये ५ रेखाप्रद हैं। २ भाव में लग्न, भौम, चन्द्र, शुक्र, शनि ये ४ रेखाप्रद हैं। ३ भाव में शुक्र, बुध रेखा देने वाले हैं। ४ भाव में लग्न, चन्द्र, शनि, शुक्र, भौम ये रेखाप्रद हैं। ५ भाव में बुध, सूर्य, शुक्र रेखाप्रद हैं॥ ५८॥

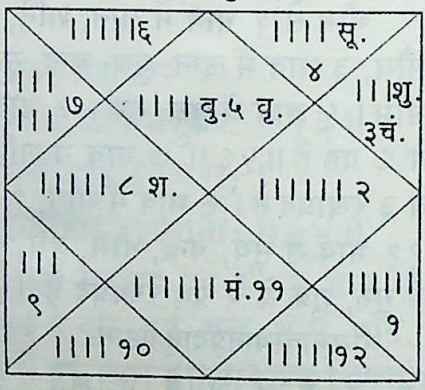
जीवज्ञार्केन्दुलग्नानि भूमिपुत्रशनैश्चरौ ।
तौ च लग्नेन्दुशुक्रार्या मन्दारार्कज्ञभार्गवाः ॥ ५९ ॥
लग्नमन्दारविच्चन्द्राः सर्वे जीवज्ञभास्कराः ।

६ भाव में गुरु, बुध, सूर्य, चन्द्र ये रेखाप्रद हैं। ७ भाव में भौम, शनि ये रेखाप्रद हैं। ८ भाव में लग्न, चन्द्र, शुक्र, गुरु, भौम, शनि ये रेखाप्रद हैं। ९ भाव में शनि, भौम, सूर्य, बुध, शुक्र ये रेखाप्रद हैं। १० भाव में लग्न, शनि, भौम, बुध, चन्द्र रेखाप्रद हैं। ११ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि ये रेखाप्रद हैं। १२ भाव में गुरु, बुध, सूर्य रेखाप्रद हैं॥ ५९॥

बुधभावस्थानप्रदान् ग्रहानाह

बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
२	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
१०		८	९		११	९	१०
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

रेखा संख्या ५४ बुधस्याष्टकवर्गः



अथ गुरोः भावस्थानप्रदान् ग्रहानाह–

गुरोर्लग्ने सुखे जीवलग्नार्कबुधाः धने ॥ ६० ॥
चन्द्रशुक्रौ च दुश्चिक्ये मन्दार्यार्काः शनिर्व्यये ।
सुते शुक्रेन्दुलग्नज्ञश्चन्द्रं विना त्वरौ ॥ ६१ ॥

गुरु से १।४ भाव में गुरु, लग्न, भौम, सूर्य, बुध ये ५ ग्रह रेखाप्रद हैं॥ ६०॥ २ भाव में गुरु, लग्न, भौम, सूर्य, बुध, चन्द्र, शुक्र ये ७ ग्रह रेखाप्रद हैं। ३ भाव में शनि, गुरु, सूर्य ये ३ रेखाप्रद हैं। ५ भाव में

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्र, चन्द्र, लग्न, बुध, शनि ये ५ ग्रह रेखाप्रद हैं। ६ भाव में शुक्र, लग्न बुध, शनि ये ४ ग्रह रेखाप्रद हैं॥ ६१॥

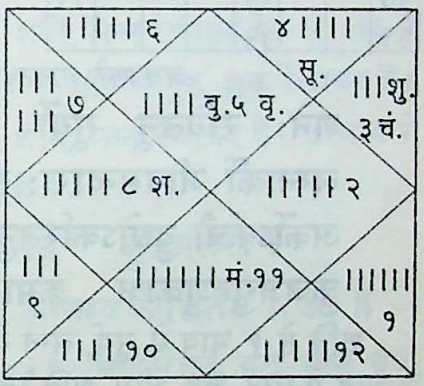
लग्नार्याऽर्केन्दवोऽस्ते मृतौ जीवार्कभूसुताः।
धर्मे शुक्रार्कलग्नेन्दुबुधाः मंदं विनाऽऽयमे॥ ६२॥
माने गुरूबुधारार्कशुक्रहोरास्तथा विदुः।

७ भाव में लग्न, गुरु, भौम, सूर्य, चन्द्र ये रेखाप्रद हैं। ८ भाव में गुरु, सूर्य, भौम ये रेखाप्रद हैं। ९ भाव में शुक्र, सूर्य, चन्द्र, बुध ये रेखाप्रद हैं। ११ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, लग्न रेखाप्रद हैं, १० भाव में गुरु, बुध, सूर्य, लग्न ये रेखाप्रद हैं॥ ६२॥

गुरुभात्स्थानप्रदान् ग्रहानाह

गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	४	२	५	२	२	२
३	६	५	३	७	४	४	४
४	९	१०	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

रेखा संख्या ५६ गुरोरष्टकवर्गः



अथ भृगोः भावस्थानप्रदान् ग्रहानाह-

लग्नशुक्रेन्दवस्ते ते ज्ञार्काराास्ते ज्ञवर्जिताः॥ ६३॥

शुक्र से १ भव में लग्न, शुक्र, चन्द्र ये ३ रेखाप्रद हैं, २ भाव में भी लग्न, शुक्र, चन्द्र रेखप्रद हैं, ३ भाव में लग्न, शुक्र, चन्द्र, बुध, शनि, भौम, ये ६ ग्रह रेखाप्रद हैं। ४भावमें लग्न, शुक्र, चन्द्र, भौम, सूर्य ये रेखाप्रद हैं॥६३॥

सुतभे लग्नशशिजशशांकार्यार्किभार्गवाः।
ज्ञारौ शून्यं सितार्केन्दुगुरुलग्नशनैश्चराः॥ ६४॥

५ भाव में लग्न, चन्द्र, बुध, गुरु, शनि, शुक्र ये रेखाप्रद हैं। ६ भाव में बुध, भौम रेखाप्रद हैं। भाव में शून्यरेखा। ८ भाव में शुक्र, सूर्य, चन्द्र, गुरु, लग्न, शनि ये रेखाप्रदहैं॥ ६४॥

सर्वे रविं विना शुक्रगुरुमन्दाश्च मानभे।
सर्वे कुजेन्दुरवयः क्रमादभृगुसुतस्य च॥ ६५॥

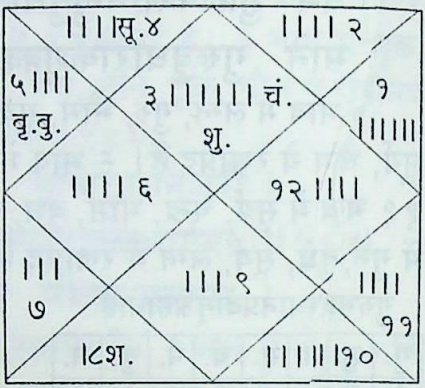
CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

६ भाव में चन्द्र, भौम, गुरु, बुध, शुक्र, शनि, लग्न ये रेखाप्रद हैं, १० भाव में शुक्र, शनि रेखाप्रद हैं, ११ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु शुक्र, शनि, लग्न ये रेखाप्रद हैं, १२ भाव में भौम, चन्द्र, सूर्य ये रेखाप्रद हैं॥ ६५॥

भृगुभावस्थानप्रदान् ग्रहानाह-

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	ल.
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८		४	९	९	१०	४
५	९		५	११	११	११	५
८	१०		८	१२			८
९	११		९				९
१०			११				११
११			१२				

रे० सं० ५२ भृगोरष्टकवर्गः



अथ शनेः भावस्थानप्रदान् ग्रहानाह-

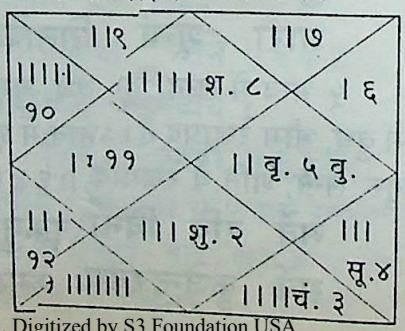
शनेः रवितनू सूर्यो लग्नेन्दुकुजसूर्यजाः।
लग्नार्कौ जीवमन्दाराः सर्वे सूर्यं विना क्षते।।६६॥
अर्कोऽर्कज्ञौ बुधोऽर्करतनुजाः सकलाश्च ताः।
कुजज्ञगुरुशुक्राश्च क्रमात्स्थानमिदं विदुः।।६७॥

शनि से १ भाव में सूर्य, लग्न ये दोनों रेखाप्रद हैं। २भाव में सूर्य। ३ भाव में लग्न, चंद्र, भौम, शनि रेखाप्रद हैं। ४ भाव में लग्न, सूर्य रेखाप्रद हैं। ५ भाव में गुरु, शनि, भौम रेखाप्रद हैं। ६ भाव में चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और लग्न रेखाप्रद हैं॥ ६६॥ ७ भाव में सूर्य। ८ भाव में सूर्य, बुध रेखाप्रद हैं। ९ भाव में बुध। १० भाव में सूर्य, भौम, लग्न, बुध रेखाप्रद हैं। ११ भाव में सूर्य, चंद्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न ये रेखाप्रद हैं। १२ भाव में भौम, बुध, गुरु, शुक्र रेखाप्रद हैं॥ ६७॥

शनेः भावस्थानप्रदान् ग्रहानाह-

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	ल.
१	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
१०		१२	१२				११
११							

रेखा संख्या३ ९ शनेरष्टकवर्गः



CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ लग्नस्य भावस्थानप्रदान् ग्रहानाह-

अथ स्थानं प्रवक्ष्यामि लग्नस्य द्विजपुंगव ॥६८॥
आर्किज्ञशुक्रगुर्वाराः सौम्य देवेज्यभार्गवाः ।
हित्वा सौम्यगुरू शेषाः सूज्ञेज्यभृगुसूर्यजाः ॥६९॥

हे मैत्रेय! रेखा को ही स्थान कहते हैं। लग्न के रेखाप्रद ग्रहों को कह रहा हूँ॥ ६८॥ लग्न भाव में शनि, बुध, शुक्र, गुरु, भौम ये ५ ग्रह रेखाप्रद हैं। २ भाव में बुध, गुरु, शुक्र ये रेखाप्रद हैं॥ ६९॥

तथा जीवभृगुबुधौ सर्वे शुक्रं विना क्षते ।
जीव एकस्तथा द्यूने मृतौ सौम्यभृगू तथा ॥७०॥

३ भाव में सूर्य, चंद्र, भौम, शुक्र, शनि, लग्न रेखाप्रद हैं। ४ भाव में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि रेखाप्रद हैं। ५ भाव में गुरु, शुक्र रेखाप्रद हैं। ६ भाव में सूर्य, चंद्र, भौम, बुध, गुरु, शनि, लग्न रेखाप्रद हैं। ७ भाव में गुरु। ८ भाव में बुध, शुक्र, रेखा- प्रद हैं॥ ७०॥

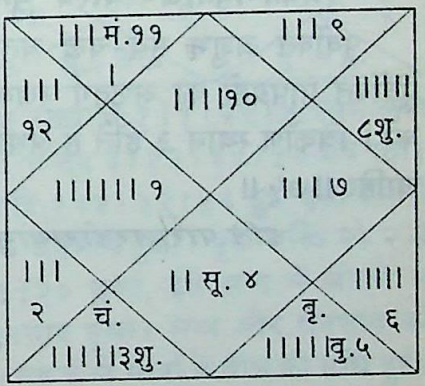
धर्मे गुरुसितावेव ते सर्वे शुक्रमंतरा ।
सूर्यचन्द्रौ तथा रिष्फे स्थानं लग्नस्य कीर्त्तितम् ॥७१॥

९ भाव में गुरु, शुक्र रेखाप्रद हैं। १०। ११ भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि, लग्न ये रेखाप्रद हैं। १२ भाव में सूर्य, चन्द्र रेखाप्रद हैं॥ ७१॥

लग्नभावस्थानप्रदान्ग्रहानाह

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

रेखा संख्या ४९ लग्नाष्टकवर्गः



करणं विन्दुवत्प्रोक्तं स्थानं रेखा तथोच्यते ।
मुनिदिग्वसुवेदादिगिष्वद्र्यष्टनवेषवः ॥७२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रुद्रार्का वर्गणामेषाद्द्विविषयेऽष्टवायवः ।
पंक्तिस्वरेषवः सूर्याद्वर्गणा प्रोच्यते बुधैः ॥७३॥

करण का स्वरूप विन्दु (शून्य) का है और स्थान का स्वरूप रेखा के (।) के सदृश है। मेषादि राशियों का क्रम से ७।१०।८।४।१०।५।७।८। ९।५।११।१२ ये गुणक हैं और सूर्यादि ग्रहों को ५।५।८।५।१०।७।५ ये गुणक हैं।।७२-७३।।

राशिगुणकबोधकचक्रम्-

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२	गुणकाः

ग्रहगुणकबोधकचक्रम्-

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रहाः
५	५	८	५	१०	७	५	गुणकः

नव रेखा लिखेदूर्ध्वार्स्तियग्रेखास्त्रयोदश ।
तदा तु षण्णवतिः स्युः ग्रहयोगे पदानि च ॥७४॥

नव रेखा ऊर्ध्वाधर (खड़ी) और तेरह रेखा आड़ी (तिरछी) लिखने से ९६ कोष्ठ का चक्र ग्रहों के योग के लिये बन जाते हैं॥७४॥

तस्याशुभस्य विन्यस्य चाष्टवर्गं ततः क्रमात् ।
त्रिकोणैकाधिपस्यास्य कुर्याच्छोधनकं बुधः ॥७५॥

पूर्वोक्त अशुभ सूर्य-चन्द्र चतुर्थ और पंचम में सम्पर्क रखनेवाले पूर्वोक्त पापग्रहों का अष्टवर्ग रखकर त्रिकोण और एकाधिपत्य शोधन करें। त्रिकोण स्थान ३ होते हैं अर्थात् १।५।९ इसी का संशोधन करना चाहिए॥७५॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरभागे प्रथमोध्यायः।

❖

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ द्वितीयोऽध्यायः

भावसाधनम्-

लग्नं सुखात् सुखं कामात् कामं खात् खं च लग्नतः ।
त्र्यंशमेकद्विगुणितं युज्याल्लग्नादिषु क्रमात् ॥ १ ॥

लग्न को सुखभाव से घटाना, सुख भाव को सातवें भाव से, सातवें भाव को दशम भाव से और दशम भाव को लग्न से घटाकर शेष का तृतीयांश लेकर क्रम से १ और २ से गुणाकर पूर्व के भावों में जोड़ने से आगे के दो भाव हो जाते हैं। अर्थात् लग्न को सुखभाव से घटाकर शेष का तृतीयांश एक से गुणाकर लग्न में जोड़ने से द्वितीय भाव और तृतीयांश को २ से गुणाकर लग्न में जोड़ने से तृतीय भाव होता है॥ १ ॥

पूर्वापरयुतेरर्धं संधिः स्याद्भावयोर्द्वयोः ।
एवं द्वादशभावास्तु भवन्ति च ससन्धयः ॥ २ ॥

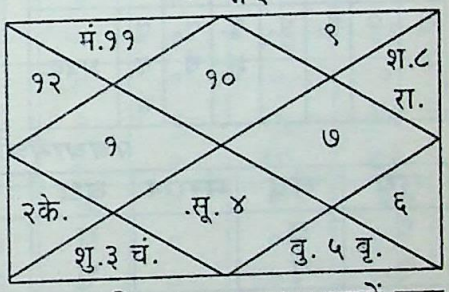
पूर्वभाव और आगे के भाव का योग कर आधा करने से भाव की संधि होती है। इस प्रकार संधि के सहित १२ भाव होते हैं॥ २॥

उदाहरण- जैसे संवत् २०१३ श्रावण कृष्ण १३ शनिवासरे पुनर्वसुभे प्रथमचरणे इष्टम् ३२।२८।३० जन्मलग्नम् ९।१७।५०।१४।

स्पष्टग्रहचक्रम्-

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३	२	१०	४	४	२	७
१८	२२	१२	५	१२	२	३
२६	३०	३२	२२	५	३	४०
३४	४७	८	५९	५०	५	५२

जन्माङ्गम्-



भावस्पष्ट का उदाहरण- सुख भाव राश्यादि १।१।२९।४ इसमें लग्न राश्यादि ९।१७।५०।१४ को घटाया तो शेष ३।१३।३८।५० शेष रहा। इसमें तीन से भाग देने से लब्धि राश्यादि १।४।३२।५६ हुई, इसे लग्न में जोड़ने से राश्यादि १०।२२।२३।१० धनभाव हुआ। पुनः लब्धि को २ से गुणा देने से राश्यादि २।९।५।५३।२० हुआ, इसे लग्न में जोड़ने से राश्यादि ११।२६।५६।७ यह सहजभाव हुआ। लग्न और धनभाव को जोड़कर आधा करने से ४।५।६।४२ यह दोनों भावों के बीच की संधि हुई। इसी प्रकार अन्य भावों का भी साधन करना चाहिये। लग्न से ६ भावों में ६ राशि जोड़ने से शेष ६ भाव और उनकी संधियां हो जाती हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्पष्ट भाव चक्रम्-

त.	स.	ध.	सं.	स.	सं.	सु.	सं.	सु.	सं.	रि.	सं.
९	१०	१०	११	११	०	१	१	१	२	२	२
१७	५	२२	९	२६	१४	१	१४	२६	९	२२	५
५०	६	२३	३९	५६	१२	२९	१३	२६	३९	२३	६
१४	४२	१०	३९	७	३५	४	३५	३९	३९	१०	४२
मा.	सं.	मृ.	सं.	ध.	सं.	क.	सं.	आ.	सं.	व्य.	सं.
३	४	४	५	५	६	७	७	७	८	८	९
१७	५	२२	९	२६	१४	१	१४	२६	९	२२	५
५०	६	२३	३९	५६	१२	२९	१२	५६	३९	२३	६
१४	४२	१०	३९	७	३५	४	३५	७	३९	१०	४२

नैसर्गिकमैत्रीचक्रम्-

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं.	सू.	सू.	सू.	सू.	वु.	वु.	
मं.	वु.	चं.	शु.	चं.	श.	शु.	मित्राणि
बृ.		वृ.		मं.			
वु.	मं.	शु.	मं.	श.	मं.	वृ.	
	वृ.	श.	वृ.		वृ.		समाः
	श.		श.				
शु.	०	वु.	चं.	वु.	सू.	सू.	
श.				शु.	चं.	चं.	शत्रवः
						मं.	

तात्कालिकमैत्रीचक्रम्-

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं.	सू.	श.	सू.	सू.	सू.	मं.	
वु.	वु.		चं.	चं.	चं.	वु.	
वृ.	वृ.		वृ.	वु.	वु.	वृ.	मित्राणि
शु.	श.		शु.	शु.	वृ.		
			श.	श.			
मं.	मं.	सू.	मं.	मं.	मं.	सू.	
श.	शु.	चं.	वु.		श.	चं.	
		वु.				शु.	शत्रवः
		वृ.					
		शु.					

पंचधामैत्रीचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
चं.	सू.		सू.	सू.	बु.	बु.	अधि-
बृ.	बृ.		शु.	चं.			मित्राणि
बु.	वृ.		चं.	श.	मं.	वृ.	
	शु.		वृ.		वृ.		मित्राणि
			श.				
मं.		सू.	श.	मं.	सू.	मं.	
शु.		चं		बु.	चं.	शु.	
		बृ.		शु.	शु.		समाः
		श.					
	मं.	शु.					शत्रवः
श.	श.	बु.				सू.	अधि-
						चं.	शत्रवः

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ दृष्टिबलसाधनम्-

दृश्याद्विशोध्य द्रष्टारं षड् राशिभ्योऽधिकं भवेत् ।
दिग्भ्यो विशोध्य द्वाभ्यां तु भागीकृत्य च दृष्टयः ॥ ३ ॥

जो ग्रह जिस ग्रह को देखता है, उसे द्रष्टा कहते हैं, जिसे देखता है उसे दृश्य कहते हैं। दृश्य ग्रह में से द्रष्टाग्रह को घटा दें शेष राशि स्थान में ६ से अधिक बचे तो उसे १० में घटाकर शेषमें दो से भाग देनेसे दृष्टि होती है ॥ ३ ॥

द्रष्टाचक्रम्-

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	४५
	०	०	०	०	०	०	४५
चंद्र	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	२०	०	०	०	३५
	०	०	२	०	०	०	६
मंगल	०	०	०	०	०	०	०
	४७	५०	०	५६	५९	२४	५६
	५८	०	०	२६	२२	४६	५
बुध	०	०	०	०	०	०	०
	०	६	४५	०	०	१८	५४
	०	२६	४१	०	०	५९	३६
गुरु	०	०	१	०	०	०	०
	०	१०	०	०	०	२५	३९
	०	१०	०	०	०	४७	४०
शुक्र	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	४०	०	०	०	४५
	०	०	२९	०	०	०	१८
शनि	०	०	०	०	०	०	०
	३७	०	१९	४२	११	०	०
	५२	०	५६	१७	०	०	०
शुभयोग	०	०	२	०	०	०	२
	०	१६	४६	०	०	५०	३४
	०	३६	१२	०	०	६	४१
पापयोग	१	०	०	१	१	०	१
	२५	५०	१९	३८	१०	२४	४१
	५०	०	५६	४३	२२	४६	५०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दृग्बलचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	अंश
२१	८	३३	९	१७	६	१८	कला
२७	२१	४८	४१	३५	२०	१३	विकला
ऋ.	ऋ.	ध.	ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	सं.

शराधिके विना राशिं भागाद्द्विघ्नाश्च दृष्टयः ।
वेदाधिके त्यजेद्भूताद्भागा दृष्टिस्त्रिभाधिके ॥ ४ ॥
विशोध्यार्णवतो द्वाभ्यां लब्धस्त्रिंशद् युतं भवेत् ।
कराधिके विना राशिं भागास्तिथियुतं भवेत् ॥ ५ ॥

यदि शेष ५ से अधिक बचे तो राशि को छोड़कर शेष अंशादि को दूना करने से दृष्टि होती है। चार से अधिक शेष बचे तो ५ में घटा दे, शेष राशि को छोड़कर अंशादि दृष्टि होती है॥ ४॥ यदि शेष तीन से अधिक बचे तो उसे चार राशि में घटाकर दो से भाग देकर लब्ध में ३० जोड़ देने से दृष्टि होती है। शेष दो से अधिक हो तो राशि को छोड़कर अंश में १५ जोड़ देने से दृष्टि होती है॥ ५॥

रूपाधिके विना राशिं भागा द्वाभ्यां विभाजिताः ।
त्रिदशे च त्रिकोणे च चतुरस्रे क्रमादथ ॥ ६ ॥
शरवेदा खरामाश्च तिथयो योजिताः क्रमात् ।
शनिदेवेज्यभौमानामादौ दृष्टिः स्फुटा भवेत् ॥ ७ ॥

यदि द्रष्टा, दृश्य का अन्तर एक से अधिक हो तो राशि को छोड़कर अंशादि को २ से भाग देने से लब्धि तुल्य दृष्टि होती है। शनि की तृतीय दशम दृष्टि हो तो ४५, गुरु के त्रिकोण दृष्टि में ३० और मंगल के चतुरस्र (४।८) दृष्टि में दृष्टि फल में १५ और जोड़ देने से स्पष्ट दृष्टि होती है॥ ६-७॥

उदाहरण-जैसे द्रष्टा सूर्य राश्यादि ३।१८।२६।३४ दृश्य भौम राश्यादि १०।१२।३२।८ दृश्य में द्रष्टा को घटाने से शेष राश्यादि ६।२४।५।३४ हुआ। यह ६ से अधिक है, अतः इसे १० में घटाने से शेष राश्यादि ३।५।५४।२६ हुआ। राशि का अंश बनाकर अंश जोड़कर २ से भाग देने से लब्धि ०।४७।५८ यह भौम पर सूर्य की दृष्टि हुई इसी प्रकार अन्य ग्रहों का दृष्टि साधन करना शेष चक्र से स्पष्ट है।

उच्चबलसाधनम्-

नीचोनं तु ग्रहं भार्धाधिके चक्राद्विशोधयेत् ।
भागीकृत्य त्रिभिर्भक्तं फलमुच्चबलं भवेत् ॥ ८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रह में उसके नीच राश्यादि को घटाकर शेष ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में घटाकर शेष का अंश बनाकर उसमें तीन का भाग देने से फल उच्चबल होता है॥ ८॥

उदाहरण- जैसे सूर्य राश्यादि ३।१८।२६।३४ इसका नीच राश्यादि ६।१० है, इसको सूर्य में घटाने से शेष राश्यादि ६।८।२६।३४ बचा। यह ६ राशि से अधिक है, इसलिये इसे १२ राशि में घटाने से शेष २।२१।३२।२६ बचा। इसमें राशि का अंश बनाकर ३ से भाग देने से २७।११।८ यह सूर्य का उच्चबल हुआ। शेषचक्र में स्पष्ट है।

उच्चबलचक्र

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	अंश
२७	४३	५५	४६	४९	३८	५५	कला
२१	३०	८	४७	५२	१९	४६	विकला

सप्तवर्गज-बल-साधनम्-

मूलत्रिकोणस्वर्क्षाधिमित्रमित्रसमारिषु ।
अधिशत्रुगृहे चापि स्थितानां क्रमशो बलम् ॥९॥
भूताब्धयः खरामाश्च नखास्तिथिर्दिशो युगाः ।

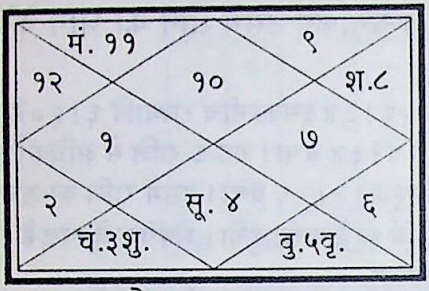
ग्रह अपने मूलत्रिकोण राशि में हो तो ४५, अपने राशि में हो तो ३०, अपने अधिमित्र के राशि में हो तो २०, अपने मित्र के राशि में हो तो १५, सम के राशि में हो तो १०, शत्रु के राशि में हो तो ४ और अधिशत्रु के राशि में हो तो २ बल प्राप्त करता है॥ ९॥ स्पष्टार्थ चक्र को देखिये-

सप्तवर्गजबलचक्रम्-

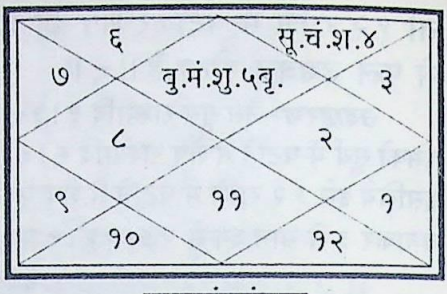
सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
१५ ०	१० ०	१० ०	२० ०	२० ०	१० ०	१० ०	ग्रहबल
२० ०	३० ०	१० ०	२० ०	२० ०	१० ०	२ ०	होराबल
१० ०	२ ०	२ ०	२९ ०	३० ०	२० ०	१० ०	द्रेष्काशबल
१० ०	४ ०	३० ०	३० ०	१० ०	२० ०	१० ०	सप्तमांशबल
२० ०	४ ०	१० ०	२० ०	२० ०	३० ०	२ ०	नवमांशबल
२ ०	१५ ०	१० ०	२० ०	१५ ०	२० ०	१५ ०	द्वादशांवल
१५ ०	२० ०	१० ०	१५ ०	३० ०	१५ ०	१० ०	त्रिंशांशशबल
४३ ०	९५ ०	८२ ०	१४५ ०	१४५ ०	१३५ ०	५९ ०	बलैक्यबल

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

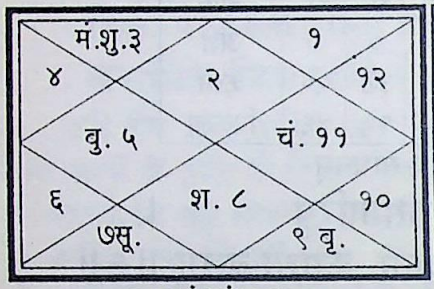
गेहाङ्गम्-



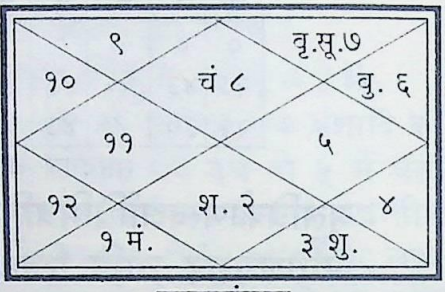
होराङ्गम्-



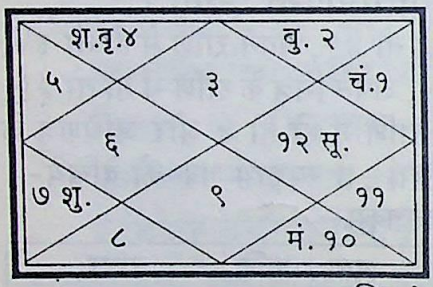
द्रेष्काणङ्गम्-



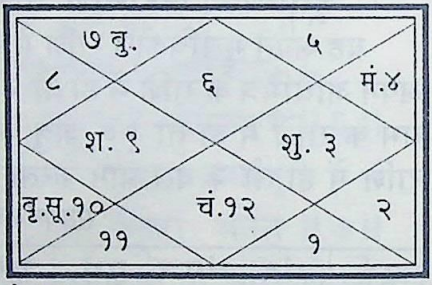
सप्तमांशांगम्-



नवमांशांगम्-



द्वादशांगम्-



त्रिंशांशांगम्-



युग्मायुग्मबल-

द्वाविन्दुशुक्रौ युग्मांशे तिथिरोजांशगाः परे ॥१०॥

चन्द्रमा और शुक्र समराशि या समराशि के नवांश में हों तो १५ बल अर्थात् दोनों में हों तो ३० बल पाते हैं, अन्य ग्रह सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शनि ये विषम राशि या विषम राशि के नवांश में हों तो १५ बल पाते हैं॥१०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

युग्मायुग्मबलचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	अंश
१५	०	१५	१५	१५	०	१५	कला
०	०	०	०	०	०	०	विकला

केन्द्रादि द्रेष्काणबलम्-

केन्द्रादिषुस्थिता लग्नात्षष्टिस्त्रिंशत्तिथिः क्रमात् ।
आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु स्थिताः क्रमात् ॥११॥
पुन्नपुंसकयोषाख्या दद्युस्तिथिबलं ग्रहाः ।
स्वषड्वर्गगतास्त्रिंशदेवं स्थानबलं विदुः ॥१२॥

केन्द्रादि अर्थात् केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम में ग्रह हो तो क्रम से ६०,३०,१५ बल पाता है॥११॥ पुरुष ग्रह (सूर्य, भौम, गुरु) प्रथम द्रेष्काण में, नपुंसक ग्रह (बुध, शनि) दूसरे द्रेष्काण में और स्त्रीग्रह (चंद्र, शुक्र) तीसरे द्रेष्काण में १५ बल पाते हैं॥१२॥

विशेष-यदि ग्रह अपने षड्वर्ग में हो तो द्रेष्काण में ३० बल पाता है। इस प्रकार पूर्व के सभी बलों को मिलाने से ग्रह का स्थान बल होता है।

केन्द्रादिबलचक्र-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	०	०	०	०	०	०
०	१५	३०	३०	३०	१५	३०
०	०	०	०	०	०	०

द्रेष्काणबलचक्र-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
०	०	०	०	०	०	०
०	१५	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०

उच्चबल + सप्तवर्गजबल + युग्मायुग्मबल + केन्द्रादिबल + द्रेष्काणबल = स्थान बल

स्थानबलचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
२	२	२	३	३	३	२	अंश
२५	४८	५७	५६	५९	८	२४	कला
११	३०	८	४७	५२	१९	४०	विकला

दिग्बल।

अर्कात्कुजात्सुखं जीवाज्ज्ञाच्चास्तं लग्नमार्कितः ।
मध्यलग्नं भृगोश्चंद्राद्धित्वा षड्भाधिके सति ॥१३॥
चक्राद्विशोध्य रामाप्तं भागीकृत्य च तद्बलम् ।

सूर्य और मंगल से सुखभाव को, गुरु और बुध से सप्तम भाव को, शनि से लग्न को, शुक्र और चन्द्र से दशम लग्न को घटाकर शेष ६ राशि

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

से अधिक हो तो उसे १२ राशि से घटाकर शेष का अंश कर ३ से भाग देने से दिग्बल होता है॥ १३॥

दिग्बलचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
१५	४२	२६	५	८	४९	२५	अंश
३९	५९	१८	५०	२०	४८	३	कला
२०	२५	५८	५५	२४	३९	७	विकला

कालबल-नतोन्नतबलम्-

आमध्याह्नादर्धरात्राद्दिवारात्रिरिति क्रमात ॥ १४॥
अर्कभार्गवसूरीणांद्विघ्ना नाड्योगता दिवा।
भौमचन्द्रशनीनां तु षष्ठिभ्यो वर्जयेदिमाः॥ १५॥

मध्याह्न से अर्धरात्रि के अन्दर इष्टकाल हो तो नत को दूना करने से सूर्य, शुक्र और गुरु का नतबल होता है और इसे ६० में घटाने से मंगल, चन्द्र, शनि का दिवाबल होता है। अर्धरात्रि से मध्याह्न के अंतर का इष्टकाल हो तो उन्नत घटी को दूना करने से चन्द्र, मंगल, शनि का रात्रिबल होता है और इसे ६० में घटाने से सूर्य, शुक्र, गुरु का रात्रिबल कलात्मक होता है और बुध का सदैव १ अंशबल होता है॥ १४-१५॥

उदाहरण- नतकाल १३।१३। ३० को २ से गुण देने से २६।२७ यह चन्द्रमा, भौम, शनि का बल हुआ और उन्नत घट्यादि १६।४७।३० को दो से गुण देने से सूर्य, गुरु, शुक्र का बल हुआ। शेष चक्र में स्पष्ट है।

नतोन्नतबलम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
०	०	०	१	०	०	०	अंश
३३	२६	२६	०	३३	३३	२६	कला
३५	२७	२७	०	३५	३५	२७	विकला

पक्षबलम्-

दिवाबलमिति प्रोक्तं बलं नैशं ततोऽन्यथा।
षष्टिरेव सदाज्ञस्य चन्द्रादर्कं विशोध्य च॥ १६॥
अङ्काधिके विशोध्याकाद्भागीकृत्य त्रिभिर्भजेत्।
पक्षकं बलमिन्दुज्ञशुक्रार्याणां तु षष्टितः॥ १७॥

चन्द्रमा में सूर्य को घटा दे। यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो उसे १२ से घटाकर शेष का अंश बनाकर ३ से भाग देने से लब्ध चन्द्र,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बुध, शुक्र और गुरु का पक्षबल होता है और इसे ६०में घटा देने से शेष ग्रह सूर्य, भौम और शनि का पक्षबल होता है॥ १६-१७॥

उदाहरण- २।२२।३०।४७ में सूर्य २।१८।२६।३४ को घटाने से शेष ११।४।४।१३ यह ६ राशि से अधिक है, इसलिये इसे १२ में घटाकर शेष ०।२५।५५। ४७ में ३ का भाग देने से ०।३८।३५ यह चन्द्र, बुध, शुक्र और गुरु का पक्षबल हुआ। इसे ६० में घटाने से शेष ०।२१।२५ यह सूर्य, भौम, शनि का पक्षबल हुआ।

पक्षबलचक्रम् -

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
०	०	०	०	१	०	०	अंश
२१	३८	२१	३८	३८	३८	२१	कला
२५	३५	२५	३५	३५	३५	२५	विकला

दिवारात्रित्रिभागबलम्-

हित्वामन्येषामहोमानं त्रिभागीकृत्य यत्र तु।
जन्मलग्नतदंशाधिपतेः षष्टिबलं भवेत्॥ १८॥
आधाने चित्प्रवेशे तु त्रिंशद्भूतार्णवा बलम्।
ज्ञार्कमन्देंदुशुक्रारा: पतयः सर्वदा गुरुः॥ १९॥

अहोरात्र अर्थात् दिन और रात्रि का तीन-तीन भाग करनेसे ६ भाग होता है, इन६ भागों के अधिपति क्रम से बुध, सूर्य, शनि, चन्द्र, शुक्र और भौम होते हैं। अंशाधिपति अर्थात् जिस भाग में जन्मलग्न हो उसके स्वामी का ६० कला बल होता है। गर्भाधान में ३०और चैतन्य प्रवेश में ४५ बल होते है और गुरु का सर्वदा १ अंश बल होता है। शेष चक्र से स्पष्ट है॥ १८-१९॥

दिवारात्रित्रिभागबलचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
०	१	०	०	१	०	०	अंश
०	०	०	०	०	०	०	कला
०	०	०	०	०	०	०	विकला

वर्षमासदिनहोरेशबलम्-

वर्षमासदिनेशानां तिथिस्त्रिंशच्छरार्णवाः।
कालहोराधिपस्यैवं पूर्णं बलमुदाहृतम्॥ २०॥

वर्ष-मास, दिन के स्वामियों का क्रम से १५,३०,४५ बल होता है और कालहोरेश का पूर्ण १ बल होता है। पूर्व के सभी ४ बलों का योग करने से कालबल होता है॥ २०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वर्षेशादि - साधन

शके १८७८ श्रावण कृष्ण १३ शनिवार को कलियुगादि अहर्गण साधन-

१८७८ + ३१७९ = ५०५७ = गतकलिः

X १२

६०६८४ — मास

+ ३ — गतमास

६०६८७

७०)६०६८७(८६६

५६०

४६८

४२०

४८७

४२०

६७

६०६८७

+ ८६६

३३)६१५५३(१८६५

३३

२८५

२६४

२१५

१९८

१७३

१६५

८

६०६८७

+१८६५

६२५५२

X ३०

१८७६५६०

+ २७ गति

१८७६५८७

X ११

७०३)२०६४२४५७(२९३६३

२०९

१४०६

६५८२

६३२७

२५५४

२१०९

४४५५

४२१८

२३७७

२१०९

२६८

१८७६५८७

-२९३६३

१८४७२२४

+ १

१८४७२२५ अहर्गणः

वर्षेश-मासेश साधन -

अहर्गण-३७३ / २५२० = ल.+ शे. शेष / ३६० ल.। शेष / ३० =

ल. X ३+१ / ७ = शेष = वर्षेश

ल. X २+१ / १२ = शेष = मासेश

इसके अनुसार

१८४७२२५

+ ३७३

२५२०)१८४६८५२(७३२

१७६४०

८२८५

७५६०

७२५२

५०४०

२२१२ शेष

३६०)२२१२(६

२१६०

५२

३०)२२१२(७३० ल.

२१०

११२

९०

२२

६ X ३+१ / ७ = ५ वर्षेश = गुरु

७३X २+१ / १२ = ३ मासेश = भौम

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इस प्रकार से वर्षेश गुरु और मासेश भौम हुये। जिस दिन जन्म होता है वही वारेश होता है।

कालहोरेश साधन

उक्त दिन वार प्रवृत्ति सूर्योदय के बाद २ घटी १२ पल पर हुई है, अतः वार प्रवृत्ति से इष्ट घटी ३०।१६ हुआ।

$\left(\frac{३०।१६ \times २}{५}\right) = ल. = १२, शे० = ०।३२$

$\left(\frac{६०।३२-०।३२+१}{७}\right)$ ५७ दिनपति से ५वाँ भौम काल होरेश हुआ।

वर्षेशादिबलचक्रम्-

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	०	१	०	०	०	०	अंश
०	०	३०	०	१५	०	४५	कला
०	०	०	०	०	०	०	विकला

नतोन्नतबल + पक्षबल + त्रिभागबल + वर्षेशादिबल = कालबल।

कालबलचक्रम्-

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	१	२	१	२	१	१	अंश
५४	५४	१७	३८	२७	१२	३२	कला
५०	५२	५२	२५	०	०	५२	विकला

अयनबलसाधन-

आधाने चित्रवेशे तु त्रिंशच्छरजलकराः।
सायनांशग्रहभुजराशीनिष्वब्धिभिः सुरैः ॥२१॥
सूर्यैर्हत्वा क्रमाद्राशिभागः स्यादनुपाततः।
एवं राश्यादिके युंज्यादर्कार्यार्योशनः सु च ॥२२॥
राशित्रयमथो युंज्यान्मेषादिस्थेषु तेष्वथ।
तुलादिस्थेषु राश्यादींस्त्रिराशिभ्यस्तु वर्जयेत् ॥२३॥
चन्द्रार्क्योर्विपरीतं स्यात्सदा युंज्याद् बुधस्य तु।
भागीकृत्य त्रिभिर्भक्तं ग्रहाणामयनं बलम् ॥२४॥

अयनांश युत ग्रह के भुज राशि के तुल्य ध्रुवांकों से ४५।३३।१२ से गुण कर ३० से भाग देकर लब्धि में गतखंड को जोड़कर राश्यादि बनाकर तुलादि ६ राशि में ३ घटा देना मेषादि ६ राशि में हो तो

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

३ जोड़ देना। परन्तु चन्द्र, शनि में विलोम करना अर्थात् तुलादि में जोड़ना और मेषादि में घटाना, बुध में सर्वदा ३ राशि जोड़ना और अंश करके ३ से भाग देने से अयनबल होता है, किन्तु सूर्य के बल को दूना करने से अयन बल होता है॥ २१-२४॥

उदाहरण- सूर्य ३।१८।२६। ३४ इसमें अयनांश २१।५१।१८ जोड़ने से ४।१०।१७।५२ हुआ। इसका भुज बनाने से १।१९।४२।८ हुआ, यहाँ पूर्वोक्त नियम के अनुसार १ राशि का ध्रुवांक ३३ प्राप्त हुआ, इससे अंश कला विकला को गुणा देने से ६५१।६।२४ हुआ इसमें गतखंड ४५ को जोड़ देने से ९६।६।२४। इसका राशि कर शेषादि में होने से ३ राशि जोड़कर राशि के अंश बनाकर इसमें ३ का भाग देने से लब्ध ६२।२।२ यह सूर्य का अयन बल हुआ, इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी साधन करना।

अयनबलचक्रम्।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
१२४	१	१७	४६	४२	५९	५३	अंश
४	५१	११	०	३८	११	५९	कला
४४	३०	४३	४५	५०	१५	४७	विकला

युद्धादिबल-

रवेर्द्विगुणमेवं स्याद्युध्यतोर्ग्रहयोरथ।
विश्लेषं बलयोश्चापि निर्जितस्य बलं भवेत्॥ २५॥
अपनीते योजिते तु जितस्य च बलं भवेत्।

ग्रहयुद्ध का लक्षण- जन्मकाल में भौमादि ग्रहों में जो दो ग्रह राशि अंश कला विकलादि से आपस में तुल्य हों उनका परस्पर युद्ध होता है। ऐसे युद्ध करने वाले दोनों ग्रहों के बलैक्य का अंतर करना जिसका बल अधिक हो वह विजयी और जिसका बल कम हो वह निर्जित अर्थात् पराजित कहा जाता है। बलैक्य में अंतर के अंक को घटाने से दक्षिण दिशा के निर्जित ग्रह का बल होता है और जिस ग्रह के बलैक्य में अंतर को जोड़ने से जिस ग्रह का उत्तर दिशा का बल होता है॥ २५॥

गतिबलम्-

षष्टिवक्रगतेर्वीर्यमनुवक्रगते दलम्॥ २६॥
पादं विकलभुक्तेः स्याद्बलमेव समागमे।
पादं मंदगतेस्तस्य दल मन्दतरस्य च॥ २७॥
शीघ्रभुक्तेस्तु पादोनं दलशीघ्रतरस्य तु।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वक्रगति का ६० बल, मार्गीगति का ३० बल, सूर्य के साथवाले ग्रह का १५ बल, चन्द्र के साथवाले ग्रह का ३० बल, मंदगति ग्रह का १५ बल, पूर्व से अल्पगति वाले ग्रह का ७।३० बल, शीघ्रगति ग्रह का ४५ बल और अतिशीघ्र गति वाले ग्रह का ३० बल होता है॥ २६-२७॥

चेष्टाबलम्-

मध्यमस्फुटविश्लेषदलयुक्तोनिनं स्फुटात् ॥ २८॥

मध्यम ग्रह और स्पष्ट ग्रह के अंतर का आधा कर मध्यम ग्रह में यदि मध्यम ग्रह स्पष्ट ग्रह से अधिक हो तो जोड़ देना, अन्यथा यदि मध्यम ग्रह स्पष्ट ग्रह से न्यून हो तो मध्यम ग्रह में अंतरार्ध को घटा देना॥ २८॥

मध्यमे त्वधिके न्यूने शीघ्रादत्रास्फुटं त्यजेत् ।
चेष्टाकेन्द्रं भखेटानां रवींद्वोरयनांशयुक् ॥ २९॥

इसे शीघ्रोच्च में घटा देने से शेष चेष्टाकेन्द्र होता है किन्तु यह विधि तारा ग्रह भौमादि के लिए ही है॥ २९॥

अंगाधिकेऽर्कात्संशोध्य भागीकृत्य त्रिभिर्भजेत् ।
सूर्यचन्द्रौ सत्रिराशी कृत्वा प्रोक्तविधिस्तथा ॥ ३०॥
एवं चेष्टाबलं प्रोक्तं नैसर्गिकमथो शृणु ।

और चेष्टाकेन्द्र ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में घटाकर अंशादि बनाकर ३ से भाग देने से चेष्टा बल होता है। रवि-चन्द्र के चेष्टा केन्द्र ६ राशि से अधिक होते हुये भी ३ राशि और अयनांश जोड़कर १२ राशि में घटाकर शेष विधि यथावत् करने से चेष्टा बल होता है॥ ३०॥

उदाहरण- संवत् २०१३ श्रावण कृष्ण १३ शनौ अहर्गणः २७५० चक्रम् ३९ इस पर से इष्टकालिक मध्यम ग्रह निम्नलिखित हैं-

इष्टकालिक मध्यमंग्रह-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३	२	१०	१	४	६	७
१९	२४	२	१०	१५	२८	५
३९	१४	४२	८	११	४६	१
१५	५७	३४	११	३२	२	४२

इष्टकालिक स्पष्टग्रह-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३	२	१०	४	४	२	७
१८	२२	१२	५	१२	२	२
२६	३०	३२	२२	५	३	४०
३४	७४	८	५६	५४	५	५२

भौम आदि के शीघ्रोच्च

मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३	४	३	६	३
१९	२९	१९	१७	१९
३९	४७	३९	२०	३९
४५	१२	४५	२	४५

अयनांश = २१° ।५१' ।१८"

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्पष्ट भौम = १०।१२।३२।८
मध्य भौम = १०।२।४२।३४ दोनों में अंतर करने से
राश्यादि = ०।९।४९।३४ इसका आधा
= ०।४।५४।४७

मध्यमग्रह में अंतरार्ध को घटाने से १०।२।४२।३४
०।४।५४।४७
शेष = ९।२७।४७।४७ इसे
३।१९।३९।४५
शीघ्रोच्च में घटाने से ६।०८।०८।०२ चेष्टाकेन्द्र हुआ

इसका ३ अंश बनाकर से भाग देने से ३) १८८।८।२ (६२।४२। ४१ यह भौम का अंशादि चेष्टाबल हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी चेष्टाबल साधन करना चाहिये।

मध्यम चेष्टाबलचक्र

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
४५	५०	५७	१०	८	२७	३४	अंश
५७	२०	१७	४५	७	८	४०	कला
२७	३३	१९	१६	३	१२	४७	विकला

अयनबल + चेष्टाबल + स्पष्टचेष्टाबल

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१७०	५२	७४	५६	५३	८६	१८
१	१२	२८	४६	४५	१९	४०
३१	३	४९	१	५३	२७	३४

षष्ठिरेकेषवः सप्तदश षड्विंशतिस्ततः ॥ ३१ ॥
चतुस्त्रिंशस्त्रिवेदांकाः सूर्यादीनां निसर्गजाः ।

सूर्यादि का क्रम से ६०।५१।१७।२६।३४।४३।९ नैसर्गिक (स्वाभाविक) बल होता है॥ ३१॥

नैसर्गिकबलचक्र-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	०	०	०	०	०	०
०	५१	१७	२६	३४	४३	९
०	०	०	०	०	०	०

ग्रहों का षड्बलैक्य-

शुभपापदृगध्यंशयुतहीनाग्नितानि च ॥ ३२॥
षड्बलानि ग्रहाणां स्युरेवमेकीकृतानि तु ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्वोक्त पाँच बलो (स्थानबल, कालबल, दिग्बल, निसर्गबल, चेष्टाबल) के योग में शुभग्रह पापग्रह के दृष्टियोग के चतुर्थांश को जोड़ने और घटाने से (शुभग्रह का दृष्टियोग पापग्रह के दृष्टियोग से अधिक हो तो धन करना अन्यथा ऋण करना) स्पष्ट षड्बलैक्य होता है॥३२॥ शेष चक्र से स्पष्ट है।

षड्बलैक्यचक्र-

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
३	२	३	३	३	२	१	स्थान बल
१५	४८	५	५६	२९	५१	३३	
११	३०	०	४७	५२	४१	११	
१	१	०	१	१	१	२	काल बल
३२	२७	२७	१	३४	१९	५५	
१४	४८	४७	२१	५६	५६	६	
०	०	०	०	०	०	०	द्रेष्काण बल
१५	४२	२६	५	८	४९	२५	
३९	५४	१८	५	२०	४८	३	
१	१	१	०	०	१	१	दिग्बल
४३	५२	१४	५६	५०	३६	२८	
५०	४१	२८	४५	५५	१८	३९	
१	०	०	०	०	०	०	चेष्टा बल
०	५१	१७	२३	३४	४३	९	
०	०	०	०	०	०	०	
७	७	५	६	३	७	६	निसर्ग बल
४६	४२	२७	२२	३८	२०	३१	
५४	५८	३६	४३	७	४४	१	
०	०	०	०	०	०	०	दृग्बल
२१	८	३६	९	१७	६	१८	
३०ऋ.	२१ऋ.	४९ध.	४१ध.	३५ऋ.	२०ध.	१३ध.	
७	७	६	६	६	७	६	षड्बल
२५	३४	४	०	२०	२७	४८	
२७	३७	२२	२	२८	४	२४	

भावबल-

शुभदृष्टिचतुर्थांशं युतं स्वज्ञार्यदर्शनैः॥३२॥
हीनयुतं दृगब्ध्यंशैर्युतं स्वामिबलं भवेत्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

जिन भावों के जो स्वामी हैं उनके जो शुभ पापग्रहों से दृष्टि का अंतर करके अंतर का चतुर्थांश करके शुभग्रह दृष्टि अधिक हो, योग और पापदृष्टि अधिक हो तो अंतर करने से भावबल होता है। परन्तु यह उन्हीं भावों के स्वामियों के लिये है जिन पर बुध, गुरु की दृष्टि है॥ ३२॥

विशेषसंस्कारः-

गुरुज्ञाभ्यां तु युक्तस्य पूर्णमेकं तु योजयेत् ॥ ३३॥
मंदाररवियुक्तस्य बलमेकेन वर्जितम् ।

जिस भाव में गुरु और बुध होवे उस भावबल में १ जोड़ देना, यदि शनि, मंगल युत हों तो १ घटाने से भावफ़ल होता है॥ ३३॥

कालविशेषे बलाधिक्यता-

दिवा शीर्षोदयाश्चैव संध्यायामुभयोदयः ॥ ३४॥
नक्तं पृष्ठोदयाश्चैव बलाधिक्य उदीरिताः ।

दिन में जन्म हो तो शीर्षोदय राशि के भाव अर्थात् मिथुन, तुला, सिंह, कन्या, वृश्चिक, कुम्भ के भाव बली होते हैं। संध्या समय में उभयोदय मीन राशि बलवान् और रात्रि में मेष, वृष, कर्क, मकर और धनु ये बलवान् होते हैं॥३४॥

भावानां दिग्बलम्-

नृयुग्मजूकपाथोनचापपूर्वार्धकुंभभात् ॥ ३५॥

भावबल, विचार में यदि भाव में कन्या, मिथुन, तुला, कुम्भ और धनु का पूर्वार्ध हो तो उसमें सप्तम भाव को॥ ३५॥

मृगचापपरार्धाख्यमेषसिंहवृषादपि ।
अलेः कर्कटकाच्चापि मृगांत्यार्धाच्च मीनभात् ॥ ३६॥

यदि मकर पूर्वार्ध और धनु का उत्तरार्ध मेष, सिंह, वृष हो तो चतुर्थ भाव को, यदि वृश्चिक, कर्क हो तो उसमें लग्न को, यदि मकर का उत्तरार्ध और मीन हो तो उसमें दशम भाव को घटाकर॥ ३६॥

अस्तं सुखं क्रमाल्लग्नं खं हित्वांगाधिके सति ।
चक्राद्विशोध्य रामैश्च भजेद्भागीकृतं बलात् ॥ ३७॥
भावानां च ग्रहाणां च बलान्येवं विदुर्बुधाः ।

शेष ६ राशि से अधिक हो तो उसे १२ में से घटाकर शेष का अंश बनाकर उसमें ३ से भाग देने से लब्धि भावबल होता है॥ ३७॥

इस प्रकार भाव ग्रहों का बल पंडितों ने कहा है।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षड्बलैक्ये शुभाशुभादिकम्-

नवाग्नयः सुराः खाग्निर्दशसंगुणिताः क्रमात् ।
रव्यादयः सुबलिनो राशीनां स्वामिनो वशात् ॥ ३८॥
अधिकं पूर्णमेवं स्याद्बलं चेद्बलिनो मताः ।

सूर्यादि ग्रहों के षड्बलैक्य ३९, ३६, ३०, ४२, ३९, ३३, ३० इनको १० से गुण देने से क्रम से ३९०, ३६०, ३००, ४२०, ३९०, ३३०, ३०० इतना हो तो सूर्यादि सुबली इससे अधिक हो तो पूर्णबली होते हैं॥३८॥

स्थानादिबले पृथक् पृथक् सुबलित्वम्-

गुरुसौम्यरवीणां तु भूतषट्केन्दवो द्विज ॥ ३९॥

गुरु, बुध, सूर्य के स्थानबल, दिग्बल, चेष्टाबल, कालबल और अयन बल में क्रम से १६५॥ ३९॥

पंचाग्नयः खभूतानि करभूमिसुधाकराः ।
खाग्नयश्च क्रमात्स्थानदिक्चेष्टासमयायने ॥ ४०॥

३५, ५०, ११२, ३० इतने बल हो तो सुबली॥ ४०॥

सितेन्द्वोस्त्र्यग्निचंद्राश्च खेषवः खाग्नयः शतम् ।
चत्वारिंशत् क्रमाद्भौममन्दयोः पण्णवक्रमात् ॥ ४१॥

और शुक्र, चन्द्र के १३३, ५०, ३०, १००, ४० हो तो सुबली, भौम और शनि के ९६॥ ४१॥

त्रिंशत्खवेदाः सप्तांगा नखाश्च बलिनो विदुः ।

३०। ४०। ६७। २० हों तो सुबली होते हैं।

भावफलदाताग्रह-

भावस्थानग्रहैः प्रोक्तयोगे ये योगहेतवः ।
तेषां बली यः कर्तासौ स एव फलप्रदः ॥ ४२॥

अनेक प्रकार के योग कहे गये हैं, उनमें जिन-जिन ग्रहों से शुभ-अशुभ योग होते हैं उनमें जो बलवान् हो और जिसका बल अधिक हो वही फल देता है॥ ४२॥

योगेष्वाप्तेषु बहुषु न्याय एवं प्रकीर्त्तितः ।

और वही योग का कर्त्ता या कारण होता है। इसी प्रकार अनेक योग एक ही भाव के हों तो इसी प्रकार से किसी एक से फल को कहना चाहिए।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथैतच्छास्त्राधिकारिलक्षणम्-

गणितेषु प्रवीणश्च शब्दशास्त्रे कृतश्रमः ।
न्यायविद्बुद्धिमान् होरास्कंधश्रवणसम्मतः ॥ ४३ ॥
दैयविद्देशिको देवसंमतो देशकालवित् ।
ऊहापोहपटुः प्राज्ञः पटुः स्वजनसंमतः ॥ ४४ ॥

जो गणित शास्त्र में कुशल हो, व्याकरण में निपुण हो, न्यायशास्त्र को जानने वाला हो, बुद्धिमान् ॥ ४३ ॥ साहित्य शास्त्र में कुशल हो, नित्य देवाराधन करने वाला हो, देशकाल को जानने वाला हो, तर्क और समाधान करने में समर्थ हो और स्वजनों के अनुकूल रहने वाला चतुर हो वह इस शास्त्र को पढ़ने और फल कहने का अधिकारी होता है ॥ ४४ ॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरभागे भावफलाद्यानयने द्वितीयोऽध्यायः ।

अथेष्टकष्टाध्यायः

उच्चरश्मिसाधनम्-

नीचोनं तु ग्रहं भार्धाधिके चक्राद्विशोधयेत् ।
उच्चरश्मिर्भवेद्राशिः सैको द्विघ्नांशसंयुतः ॥ १ ॥

ग्रह में उसके बीच को घटा देना शेष ६ राशि से अधिक हो तो उसे १२ राशि में घटाकर राशि में १ जोड़ देना और अंशादि को दूना कर राशि में जोड़ देना तो उच्चरश्मि होगी ॥ १ ॥

जैसे- सूर्य ३।१८।२६।३४ इसमें सूर्य का नीच ६।१० घटाने से शेष ९।८।२६।३४ शेष रहा। यह ६ राशि से अधिक है इसलिये इसे १२ राशि में घटाने से शेष २।२१।३३।२६ शेष बचा। यहाँ राशि में १ जोड़ने से ३ अंशादि को दूनाकर इसमें जोड़ने से ३।४३।६।६२ यह सूर्य की उच्चराशि हुई। इसी प्रकार सभी ग्रहों को उच्चरश्मि साधन करना चाहिए।

उच्चरश्मिचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
४	५	६	५	५	४	६
४३	२०	३०	४०	४४	४९	३४
६	५८	४७	४५	१८	५३	३८

चेष्टारश्मिसाधनम्-

सायनार्कः सत्रिभो इन्दुश्च भानुवर्जितः ।
चेष्टाकेन्द्रं कुजादीनां पूर्वाध्याये समीरितम् ॥ २ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य में अयनांश जोड़कर उसमें ३ राशि जोड़ने से सूर्य का चेष्टा केन्द्र और चन्द्रमा में सूर्य को घटाने से चन्द्रमा का चेष्टाकेन्द्र होता है और भौमादि का चेष्टाकेन्द्र पूर्वाध्याय में कहा ही गया है॥ २॥

शुभाशुभरश्मिसाधनम्-

उच्चरश्मिवदानीय चेष्टारश्मिं द्वयोर्युतिः।
दलं तु शुभरश्मिः स्यादष्टभ्यो वर्जितोऽशुभः॥ ३॥

चेष्टाकेन्द्र पर से उच्चरश्मि साधन के तरह चेष्टारश्मि का साधन कर दोनों (उच्चरश्मि और चेष्टारश्मि) का योग कर आधा करने से जो आवे वह शुभरश्मि होती है और इसे ८ में घटाने से अशुभरश्मि होती है॥ ३॥

जैसे- सूर्य ३।१८।२६।३४ इसमें अयनांश २१।५१।१८ जोड़ने से ४।१०।१७।५२ सायन सूर्य हुआ इसमें ३ राशि जोड़ने से ७।१०।१७।५२ यह सूर्य का चेष्टाकेन्द्र हुआ, इस पर पूर्वोक्त रीति से ५।३९।२४ सूर्य की रश्मि हुई॥३॥

चेष्टारश्मिचक्र-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
५	१	३	२	१	४	३	
३९	३१	५१	४	४८	४२	२८	चेष्टाकेंद्र
२४	५०	४२	३०	४२	५६	४	
४	३	५	३	३	४	५	
४१	२६	११	५२	४६	४६	३१	शुभरश्मि
३०	२४	१४	३७	३०	२२	२१	
३	४	२	४	४	३	२	
८	१३	४८	७	१३	२३	२८	अशुभरश्मि
३०	३६	४६	२३	३०	३८	३९	

इष्टकष्टसाधनम्-

उच्चचेष्टाकरौ व्येकौ दिग्भिर्हत्वा तु योजयेत्।
दलयेदिष्टमन्यत्स्यात्षष्टिभ्यो वर्जितं फलम्॥ ४॥

ग्रहों के उच्चरश्मि और चेष्टारश्मि में एक-एक घटाकर १० से गुणा कर दोनों का योग कर आधा करने से इष्ट होता है। इसे ६० में घटाने से कष्ट होता है॥ ४॥

जैसे- सूर्य की उच्चरश्मि ३।४३।६ में १ घटाकर १० से गुणा करने से २७। ११।० हुआ, चेष्टारश्मि ६।३९।२४ इसमें १ घटाकर १० से गुणा करने से ५६।३४।० हुआ दोनों का योग कर आधा करने से ४१।५२।३० यह सूर्य का इष्ट हुआ। इसे ६० में घटाने से १८।७।३ कष्ट हुआ, इसी प्रकार सभी ग्रहों का इष्ट और कष्ट साधन करना चाहिए।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इष्टचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
४१	२३	४१	१७	१३	३७	४५
५	२४	५२	४	५२	४४	१३
०	०	२५	२२	२०	५	३०

कष्टचक्रम्-

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१८	३६	१८	४२	४६	२२	१४
७	३६	७	५५	७	१५	४६
३०	०	३५	३८	३०	१५	३०

सप्तवर्गजशुभाशुभसाधनम्-

स्वोच्चे मूलत्रिकोणे च स्वर्क्षेऽधिसुहृदि क्रमात् ।
मित्रर्क्षे च समर्क्षे च शत्रुभे चातिशत्रुभे ॥ ५ ॥

ग्रह अपने उच्चराशि, मूलत्रिकोण, अपने राशि, अधिमित्र की राशि, मित्र की राशि, सम की राशि, शत्रु की राशि, अधिशत्रु की राशि॥ ५ ॥

नीचे च षष्टिरिष्वब्धिः खाग्निः[1]करकरास्तिथिः ।
नागा वेदाः करौ शून्यं शुभमेतद् प्रकीर्तितम् ॥ ६ ॥

और नीच राशि में हो तो क्रम से ६०, ४५, ३०, २२, १५, ८, ४, २, ० ये ध्रुवांक शुभ फल के प्राप्त होते हैं॥ ६ ॥

षष्टिभ्यो वर्जिताश्चैते शिष्टं स्यादशुभं फलम् ।
तदर्धं तु फलं प्रोक्तमन्यवर्गे शुभाशुभम् ॥ ७ ॥

इनको ६० में घटा देने से अशुभ ध्रुवांक होता है। अन्य वर्गों (होरा आदि सप्तवर्ग) के राशियों में स्वउच्चादि में हों तो पूर्वोक्त ६० आदि बलों का आधा शुभ में और आधा पापवर्ग में लेना॥ ७ ॥

पूर्वोक्तबले शुभाशुभत्वम्-

पंचस्विष्टफलं चादौ षष्ठं सममुदाहृतम् ।
अशुभास्तु त्रयः प्रोक्ता इति शास्त्रेषु निश्चयः ॥ ८ ॥

पूर्व में कहे हुये ६ प्रकार के बलों (उच्चमूलत्रिकोणादि) में आदि से पाँच बल (उच्च, मूलत्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र, मित्र) शुभद है, छठा (समराशि) सम और शेष ३ अशुभ होते हैं॥ ८ ॥

दिग्बलादौ शुभाशुभत्वम्-

दिग्बलं दिक्फलं तस्य तथा दिनफलं भवेत् ।
तयोः फलं शुभं प्रोक्तं षष्ठ्या वर्ज्यं तथेतरम् ॥ ९ ॥

जो ग्रहों का दिग्बल है वह दिक्फल है और जो दिनबल है वह दिन फल है, दोनों फलों का योग करने से शुभ फल और इसे ६० में घटाने से शेष अशुभ फल होता है॥ ९ ॥

१. वेदकर इति पाठान्तरम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभाधिके शुभं नेष्टमशुभे चाधिके शुभात् ।
बलैरेव हते स्यातां दृष्टिं हन्यात्स्फुटैव सा ॥१०॥

यदि शुभफल पापफल से अधिक है तो उस ग्रह का फल शुभ, अशुभ फल अधिक हो तो अशुभ होता है। पूर्वोक्त इष्टबल, कष्टबल (श्लोक ५ में) उससे दृष्टि को गुणाकर देने से इष्टदृष्टि और कष्टदृष्टि होती है॥१०॥

पूर्वोक्तशुभाशुभबलस्य स्पष्टीकरणम्-

बलैःषड्भिः समेधित्वा समानीतैः पृथक्-पृथक् ।
बलिवश्चोक्तसंज्ञैश्च बलैरेव हरेत्ततः ॥११॥

ग्रह षड्बलों (होरा आदि षड्बल) को ६ स्थान में रखकर इष्टबल से तथा कष्टबल से अलग-अलग गुणाकर पृथक्-पृथक् षड्बलों से भाग देकर सभी फलों का योग करने से इष्ट स्थान शुभ और कष्ट स्थान में स्पष्ट अशुभ फल होता है॥११॥

तत्तद्बलफलानि स्युरशुभानि शुभानि च ।
शुभपापफलाभ्यां च दृष्टिं हन्याद्बलं तथा ॥१२॥

इसी प्रकार से दृष्टि के इष्ट कष्ट से दृष्टिबल को गुणाकर भाग देने से दृष्टि का शुभाशुभ फल होता है॥१२॥

संग्रहे भावफले विशेषः-

दृष्टेश्च शुभपापोत्थे बले स्यातां तथैव च ।
भावानां च फले प्रोक्ते पतीनां च फले उभे ॥१३॥

तन्वादि भावों के भी दो फल (भाव का तथा उसके स्वामी का) होता है, दोनों के योग के तुल्य भाव का शुभाशुभ फल होता है॥१३॥

सराशिर्ग्रहयुक्तश्चेद् भावसाधनसंगुणे ।
फले तस्य शुभे युंज्यादशुभे वर्जयेच्छुभे ॥१४॥

यदि भावस्थ राशिग्रह युक्त हो तो भाव साधन से गुणा कर दे और शुभग्रह भाव में हो तो उस भाव के शुभ फल को फल में जोड़ दे और अशुभ भावफल में घटा दे और भाव में॥१४॥

पापाश्चेदन्यथा चैवं बले दृष्टयां च तेऽत्र तु ।
युंज्यादुच्चादिषु फलममित्रादिषु वर्जयेत् ॥१५॥

पापग्रह हो तो इससे विपरीत करने से भाव का इष्ट (शुभ) और कष्ट (अनिष्ट) स्पष्ट होता है। इसी प्रकार दृष्टि में भी करना चाहिए,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

किन्तु यह फल यदि उच्चादि का हो तो योग और शत्रु आदि का हो तो घटाना चाहिए॥ १५॥

अष्टकवर्गे विशेषः-

स्थाने चैवं क्रमात्प्रोक्तं करणे चान्यथाक्रमः।
राशिद्वयगते भावे तद्राश्यधिपतेः क्रिया॥ १६॥

इसी प्रकार से स्थान (रेखा) में भी (अष्टकवर्ग में) क्रिया करनी चाहिए, किन्तु करण (बिन्दु) में विपरीत क्रिया होती है, एक ही भाव में २ राशि हो तो उनके स्वामी के साथ क्रिया करनी चाहिए॥ १६॥

स्थानाधिकस्तु भावेन लाभभावः प्रकीर्त्तितः।
तत्समाने च तद्भावे तदानीं स्थानदान् ग्रहान्॥ १७॥
संयोज्य स्थानसंख्यायां दलमेतत्समं भवेत्॥ १८॥

भाव से रेखा अधिक हो तो उस भाव का फल या भाव लाभदायक होता है॥ १७॥ यदि दोनों भावों में अधिक रेखा हो तो दोनों का योग कर आधा करने से जो आवे उसके समान ही भावफल होता है॥ १८॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे इष्टकष्टाध्यायस्तृतीयः॥ ३॥

अथ रश्मिफलवर्णनाध्यायः

विधात्रा लिखिता या सा ललाटाक्षरमालिका।
तस्याः शरीरकथनं वक्ष्यामि च पृथक्-पृथक्॥ १॥

विधाता (ब्रह्मा) ने ललाट में जो अक्षरों की पंक्ति लिखी है उसको मैं शरीर के रूप में पृथक्-पृथक् कह रहा हूँ॥ १॥

लग्नाच्छरीरचिन्ता च द्वितीयात्स्वं च पैतृकम्।
भरणीयं कुटुंबं च पश्वादि च वदेद् बुधः॥ २॥

लग्न (तनु भाव) से शरीर की चिन्ता का विचार करना चाहिए और द्वितीय भाव से अपने उपार्जित धन और पैतृक संपत्ति, पालनीय कुंटुंब का तथा पशु आदि का विचार करना चाहिए॥ २॥

तृतीयात्सोदरं बुद्धिं दुःपूर्वा विक्रमं विदुः।
चतुर्थात्पितरं वेश्म सुखं लालित्यमेव च॥ ३॥

तीसरे भाव से भाइयों का, दुष्ट बुद्धि का और पराक्रम का विचार करना चाहिए, चौथे भाव से गृह का, सुख का, सौहार्द का विचार करना चाहिए॥ ३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सौमनस्यमपत्यानि प्रज्ञां मेधां च पंचमात् ।
हानिं व्याधिमरिं षष्ठान्मैथुनं स्त्रीं जयं ततः ॥४॥

पांचवें भाव से सौमनस्य (मन की प्रसन्नता) का, संतान का, सुबुद्धि का और धारणा शक्ति का विचार करना चाहिये। छठे भाव से हानि, व्याधि (रोग) और शत्रु का विचार तथा सप्तम भाव से मैथुन, स्त्री और युद्ध में विजय का विचार करना चाहिए॥ ४॥

मृतिं पराजयं दुःखं हानिं व्याधिं तथाष्टमात् ।
सौशील्यभाग्यधर्माश्च नवमाद्दशमात्तथा ॥५॥
मानास्पदाज्ञाकर्माणि आयादर्थं व्ययाद्व्ययम् ।

आठवें भाव से मृत्यु का, पराजय का, दुःख (व्यवसन) का, हानि का, व्याधि का विचार करना चाहिए। नवम भाव से सुशीलता, भाग्य, वैभव और धर्म का विचार करना चाहिए। दशम भाव से सत्कार, स्थान, आज्ञा और शुभाशुभ कर्म का विचार करना चाहिये॥ ५॥ ग्यारहवें भाव से द्रव्य की प्राप्ति का और बारहवें भाव से व्यय का विचार करना चाहिये।

उच्चस्थानस्थ-रश्मिध्रुवांकः-

दिग्भवेष्विषुसप्ताष्टशराः स्वोच्चे करा रवेः ॥६॥

यदि सूर्यादि ग्रह अपने उच्च राशि में हों तो क्रम से १०, ११, ५, ५, ७, ८, ५ यह रश्मि ध्रुवांक होता है॥ ६॥

नीचेन चांतरा प्रोक्ता रश्मयस्त्वनुपातजाः ।
नीचोनं तु ग्रहं भार्धाधिकं चक्राद्विशोधयेत् ॥७॥

नीच राशि का ध्रुवांक नहीं है, उच्च-नीच के मध्य में अनुपात द्वारा रश्मि का साधन करना चाहिये वह इस प्रकार से—नीच को ग्रह में घटा दे यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो उसे १२ राशि में घटाकर॥ ७॥

स्वीयरश्मिहतं षड्भिर्भजेत्स्यूरश्मयः स्वकाः ।
उच्चस्वर्क्षसुहृत्सूर्यभागेऽगाब्धि द्विसंगुणाः ॥८॥
नीचारिद्वादशांशे तु नृपांशोनाः कराश्च ते ।

शेष को ग्रह के उच्च रश्मि ध्रुवांक से गुणाकर उसमें ६ से भाग देने से लब्ध रश्मि होती है। ग्रह, उच्च, स्वराशि मित्र की राशि के द्वादशांश में हो तो क्रम से ६,४,२ से गुण देने से॥ ८॥ और नीच शत्रु के द्वादशांश में हो तो षोडशांश कम कर देने से स्पष्ट रश्मि होती है।

जैसे- सूर्य ३।१८।२६।३४ इसमें सूर्य के नीच ६।१० को घटाने से ८।२२।२६।३४ हुआ। यह ६ राशि से अधिक है अतः इसे १२

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राशि में घटाने से शेष ३।७।३३।२६ हुआ इसे ध्रुवांक १० से गुणा करने से ३१।५। ३४। २० हुआ। इसमें ६ से भाग देने से लब्धि ५।५।५५।५२ यह सूर्य की रश्मि हुई। सूर्य शनि के द्वादशांश में है और सूर्य का शनि अधिशत्रु है, अतः पूर्वोक्त रश्मि का षोडशांश ०।६।४४।४४ रश्मि में घटाने से शेष ४।२५।४८।५२ यह सूर्य की स्पष्ट रश्मि हुई। इसी प्रकार से शेष ग्रहों की रश्मि का साधन करना चाहिए।

रश्मि चक्र -

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
४	१५	०	३	११	१०	६
२५	४८	३२	४	३	३	५
४८	२६	५३	४८	२६	३५	१२

विशेषसंस्कारः-

मूलत्रिकोणस्वर्क्षाधिमित्रमित्रनवांशके ॥ ९॥

यदि ग्रह अपने मूलत्रिकोण, अपनी राशि, अधिमित्र की राशि, मित्र की राशि में नवमांश की राशि॥ ९॥

द्रेष्काणेऽपि च होरायां त्रिशांशे च क्रमात्तथा ।
अष्टघ्ना द्वयब्धिषट्सप्तभक्ता युक्तास्तुरश्मयः ॥१०॥
अरावध्यरिनीचे च वेदद्व्यखिलहीनकाः ।

द्रेष्काण की राशि, होरा और त्रिशांश की राशि जिसमें हो उसे देखकर ध्रुवोत्पन्न रश्मि (८-९ श्लोकोक्त) को ८ से गुणाकर क्रम से मूलत्रिकोण में २ से, अपनी राशि में ४ से, अधिभित्र में ६ से और मित्र में ७ से भाग देकर लब्धि के पूर्वोक्त रश्मि में जोड़ने से उच्च रश्मि होती है॥१०॥

पूर्वोक्त वर्गों में यदि शत्रु राशि हो तो चार से भाग देकर लब्धि को घटाने से अधिशत्रु राशि हो तो २ से भाग देकर और नीच राशि में हो तो संपूर्ण को घटाने से उच्च रश्मि होती है।

अन्यसंस्कारः-

उच्चे च त्रिगुणं प्रोक्तं स्वत्रिकोणे द्विसंगुणम् ॥११॥

यदि रश्मि का स्वामी अपने उच्च राशि में हो तो उच्च रश्मि को त्रिगुणित, अपने मूल त्रिकोण राशि में हो तो द्विगुणित॥ ११॥

स्वर्क्षे त्रिघ्ना द्विसंभक्तास्त्वधिमित्रगृहेऽपि च ।
वेदघ्ना रामसंभक्ता मित्रभे षड्गुणास्ततः॥१२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

स्वराशि में हो तो त्रिगुणित कर दो से भाग देना और अधिमित्र की राशि में हो तो पूर्व रश्मि को चार से गुणाकर तीन से भाग देकर लब्धि को पूर्व रश्मि में जोड़ने से, मित्र की राशि में ६ से गुणाकर ५ का भाग कर लब्धि को रश्मि में जोड़ने से॥ १२॥

पंचभक्तास्त्वथ शत्रुगृहे द्विघ्नाश्चतुर्हृताः।
अतिशत्रोः करघ्नाश्च पंचभक्ता न नीचभे॥ १३॥

शत्रु के गृह में हो तो २ से गुणा कर ४ से भाग देकर लब्धि को जोड़ने से स्पष्ट रश्मि होती है और अधिशत्रु की राशि में हो तो दूना कर पांच से भाग देकर लब्धि को जोड़ने से स्पष्ट रश्मि होती है। नीच राशि में हो तो कोई संस्कार नहीं करना॥ १३॥

मतांतरात् रश्मिहानिवृद्धिः-

शनिं सितं विना ताराग्रहा अस्तंगता यदि।
विरश्मयो भवंत्येवं वक्रादौ द्विगुणास्ततः॥ १४॥

शनि-शुक्र को छोड़कर शेष ग्रह (भौम, बुध, गुरु) अस्त हों तो रश्मि का अभाव होता है, रश्मिपति वक्रारम्भमें हो तो पूर्व रश्मिको दूना करने से।१४।

अनुपातोंऽन्तरे वक्रं त्यागेऽष्टांशविहीनकाः।
मंदायां दशभागोना वस्वंशोना कराः स्मृताः॥ १५॥
तथा शीघ्रतरायां च वेदांशोनाः कराः स्मृताः।
अंगाशोनाश्च शीघ्रायां केचिदेवं वदन्ति हि॥ १६॥

वक्र के अन्त्य में हो तो रश्मि में ८ से भाग देने से लब्ध स्पष्ट रश्मि होती है, वक्र के मध्य में हो तो अनुपात द्वारा रश्मि लाना चाहिये। रश्मिपति मंदगति हो तो रश्मि का दशांश पूर्व रश्मि में घटाने से, यदि मंदतर गति हो तो अष्टमांश हीन करने से।शीघ्रगति हो तो छठा भाग हीन करने से और शीघ्रतर गति हो तो चतुर्थांश हीन करने से स्पष्ट रश्मि होता है – ऐसा कुछ ऋषियों का मत है॥ १५-१६॥

अथ ग्रहाणां अष्टधा गतिः-

वक्रानुवक्रा विकला शीघ्रा शीघ्रतरा गतिः।
वृद्धिहीने तु शिष्टे द्वे वर्जनीये समासमा॥ १७॥

वक्र, अनुवक्र, विकला, शीघ्रगति, शीघ्रतरा, मंदगति, मंदतरा, समासमा-ये आठ प्रकार की ग्रहों की गति होती है। शीघ्रतर गति वृद्धिहीन होने से मंदगति और शीघ्रगति वृद्धिहीन होने से अतिमंदतर होती है॥ १७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

योगविशेषात् ह्रासवृद्धिः-

योगेषु ये ग्रहाः प्रोक्तास्तेषां योगे च रश्मयः ।
पापसौम्यारिमित्राणां योगे हानिश्च कीर्त्तिताः ॥ १८ ॥

पूर्व में जो राजयोग कहे गये हैं उनमें (राजयोगकारक और दरिद्र योगकारक) राजयोग कारक ग्रहों के रश्मियों के योग में दरिद्र योग कारक ग्रहों के रश्मियों को घटा देने से शेष राजयोग कारक रश्मि होता है॥ १८॥

उच्चादिषु पूर्वोक्ताः पापो बलवशाद्भवेत् ॥ १९ ॥

इसी प्रकार पापग्रहों की उच्चादि नव स्थान पर्यन्त रश्मियों को उनके बल के अनुसार न्यूनाधिक करने से उनका स्पष्ट रश्मि होता है॥ १९॥

द्विग्रहादियोगे निर्णयः-

द्विग्रहादिषु योगेषु ग्रहभावकलाहताः ।
ग्रहगतिसंज्ञानुरूपेण फलानां निर्णयः स्मृतः ॥ २० ॥

दो-तीन आदि ग्रहों के योग में ग्रहों के भाव के फलादि को उनके रश्मियों से गुण देना, यदि ६० से अधिक हो तो ६० से भाग देने से लब्धि स्पष्ट रश्मि होती है। ग्रहों के रश्मियों का फल उनकी गति के अनुसार ही होता है॥२०॥

इष्टकष्टरश्मेः प्रयोजनम्-

इष्टकष्टबलसगुणास्ततस्तत्करानथ च संयुतास्तु तान् ।
निश्चितार्थमखिलं समीक्ष्य तत्प्रस्तुतंतु सकलं वदेद् बुधः ॥ २१ ॥

ग्रहों के इष्ट, कष्ट बल से उनके रश्मियों को गुणाकर उसमें ६० से भाग देने से ग्रहों की इष्ट और कष्ट रश्मि होती है। इन सम्पूर्ण रश्मियों को देखकर ग्रहों के फलों को कहना चाहिए॥ २१॥

एकतः पंचरश्मियोगफलम्-

एकादि पंचकं यावद्दरिद्रा भृशदुःखिताः ।
नीचानां दासतां याता अपि जाता कुलोत्तमे ॥ २२ ॥

एक से पांच रश्मि योग में उत्पन्न पुरुष अत्यंत दुःखी होता है। यदि उत्तम कुल में उत्पन्न पुरुष हो तो नीचों की नौकरी करता है॥ २२॥

दशरश्मियोगफलम्-

परतो दशकं याक्त्केवलं जठराय वै ।
निःस्वाः कदाचिद्दासाश्च भारवाहाः कदाचन ।
स्त्रीपुत्रगृहहीनाश्च वंशायोग्यक्रियारताः ॥ २३ ॥

६ से १० तक रश्मियोग हो तो पुरुष केवल पेट भरनेवाला, निर्धन,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कभी दासता करनेवाला, कभी बोझा ढोने का काम करनेवाला, स्त्री-पुत्र से हीन और कुल के विपरीत कार्य करनेवाला होता है॥ २३॥

एकादशतो त्रयोदशपर्यन्तं रश्मिफलम्-

एकादशेऽल्पपुत्रस्स्यादल्पस्वं स्त्रीविमानिता।
विभ्रति कृच्छ्रेकेण निजं स्वल्पं च कुटुम्बकम्॥ २४॥

ग्यारह रश्मियोग हो तो अल्पपुत्र, अल्पधन और स्त्री से अनादर और थोड़े कुटुम्ब को भी कष्ट से पालन करनेवाला होता है॥ २४॥

द्वादश निर्धनाः मूर्खा धूर्ताः सत्त्वविनाशकाः।
त्रयोदशे च चौराः स्युर्निर्धनाः कुलपांशवाः॥ २५॥

बारह रश्मियोग हो तो निर्धन, मूर्ख, सत्वहीन होता है, तेरह रश्मि-योग में चोर, निर्धन और कुलकलंक होता है॥ २५॥

चतुर्दशतः पंचदश रश्मिफलम्-

विद्वांश्चतुर्दशे धर्मे रतो मर्षी धनार्जकः।
कुटुम्बभरणे सक्तः कुलयोग्यक्रियो भवेत्॥ २६॥

चौदह रश्मियोग हो तो धार्मिक, क्रोधहीन, धन पैदा करनेवाला, कुटुम्ब के भरण-पोषण में समर्थ और कुल योग्य क्रिया करनेवाला होता है॥ २६॥

रश्मिभिः पंचदशभिरेवं गुणयुतोऽपि सन्।
स्ववंशमुख्यो जनवानित्याह भगवान्मुनिः॥ २७॥

पंद्रह रश्मियोग में पूर्वोक्त गुणों से युक्त होते हुए भी अपने कुल में प्रधान और धनी होता है, ऐसा पराशर मुनि ने कहा है॥ २७॥

षोडशतः द्वाविंशतिपर्यन्तं रश्मियोगफलम्-

आविंशतेः कुलेशानां बहुभृत्यः कुटुम्बिनः।
कीर्त्तिमंतश्च पूर्णाश्च स्वजनेन च षोडश॥ २८॥

१६ से २० तक रश्मियोग हो तो कुल को पालन करनेवाला, बहुत से नौकरों से युक्त, कुटुम्बी, कीर्त्ति से युक्त और स्वजनों से पूर्ण होता है॥ २८॥

एकविंशति विख्यातः पंचाशज्जनपोषकः।
दानशीलः कृपायुक्तो द्वाविंशे लोभसंयुतः॥ २९॥

२१ रश्मि हो तो बड़ा प्रसिद्ध और पचासों लोगों का पालन करने वाला होता है और २२ रश्मियोग में दानशील और कृपालु होता है॥ २९॥

त्रिंशत्पर्यन्तरश्मिफलम्-

धनवानल्पशत्रुश्च प्रभुः स्वल्पगुणो भवेत्।
त्रयोविंशे च मुख्यश्च विद्याहीनो धनी सुखी॥ ३०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्रिंशत्परतः श्रीमान्सर्वसत्वसमन्वितः ।
राजप्रियश्च चण्डश्च जनैश्च बहुभिर्युतः ॥ ३१ ॥

रश्मियोग २३ हो तो मनुष्य धनी, अल्प शत्रुवाला, समर्थ और अल्पगुणी होता है॥ ३० ॥ इसके बाद ३० रश्मि तक मनुष्य श्रीमान्, सभी सत्वों से युक्त, राजप्रिय, प्रचंड और अनेक जनों से युक्त होता है॥ ३१ ॥

एकत्रिंशतश्चतुस्त्रिंशद्यावद्रश्मिफलम्-

एकत्रिंशे तु सचिवः द्वात्रिंशे वाहिनीपतिः ।
अत ऊर्ध्वं तु सामंतश्चतुःत्रिंशत्करावधिः ॥ ३२ ॥

रश्मियोग ३१ हो तो राजमंत्री होता है, ३२ में सेनापति, इसके बाद ३४ तक रश्मियोग में मांडलिक राजा होता है॥ ३२ ॥

पंचत्रिंशद्रश्मिफलम्-

अत ऊर्ध्वं नृपे श्रांतः आपंचत्रिंशतः क्रमात् ।
शतपंचक्रमारभ्य सहस्रावधिपोषकः ॥ ३३ ॥

३५ रश्मियोग हो तो मनुष्य राज्याधिकार के क्रम से परिश्रम करने से ५०० से १००० तक जनों का भरण-पोषण करनेवाला होता है॥ ३३ ॥

अत ऊर्ध्वं तु देशानां पोषकाः स्युः पंचविंशतिः ।
षड्विंशतिश्च भानि स्युस्त्रिंशत् षड्त्रिंशदेव च ॥ ३४ ॥

इसके बाद ३६ रश्मियोग में २५ ग्रामों का, ३७ रश्मियोग में २६ ग्रामों का, ३८ रश्मियोग में २७ ग्रामों का, ३९ रश्मियोग में ३० ग्रामों का और ४० रश्मियोग में ३६ ग्रामों का पालक होता है॥ ३४ ॥

अत ऊर्ध्वं नृपाः क्षात्रधर्मिणः क्षत्रियोऽथवा ।
भूद्वित्र्यब्धीसुषट्सप्त भूभृज्जनपदाधिपाः ॥ ३५ ॥

इसके बाद ४० रश्मियोग हो तो क्षत्रिय जातीय बालक राजा होता है। अन्य जातीय मनुष्य क्षत्रिय धर्म को पालन करता हुआ ४० से ४७ रश्मियोग में क्रम से १,२,३,४,५,६,७ ग्रामों के राजाओं का शासक होता है॥ ३५ ॥

पंचाशद्रश्मिसंयोगे सम्राट् स्यादनुपाततः ।
अत ऊर्ध्वं तु देवेन्द्रतुल्यः स्युरिति पद्मभूः ॥ ३६ ॥

इसके बाद ५० रश्मियोग में पुरुष सम्राट् होता है, इससे न्यून होने पर अनुपात द्वारा सम्राट् योग में न्यून समझना चाहिए। ५० से अधिक हो तो इन्द्र के समान होता है, ऐसा ब्रह्माजी ने कहा है॥ ३६ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रश्मौ विशेषफलम्-

उच्चचेष्टोत्थयोगार्धगुणिताः षष्टिभाजिताः ।
नरादीनां तु संख्याः स्युः स्पष्टा इत्याह पद्मभूः ॥ ३७॥

उच्च रश्मि चेष्टा रश्मि का योग करके उसके आधे को पूर्व योग से गुण कर ६० से भाग देने से जो लब्धि हो उस संख्या के तुल्य मनुष्य को घोड़ा, हाथी आदि सेवक होते हैं॥ ३७॥

राजयोगे विशेषः-

शूद्रादयः कलौ राजधर्मिणो म्लेक्षधर्मिणः ।
विप्राश्चेच्छ्रीधनैर्युक्ता यज्ञकर्मक्रियारताः ॥ ३८॥

जो राजयोग कहे हैं वे कलियुग में शूद्रादि म्लेच्छ धर्मवालों को होता है। यदि यह राजयोग और उत्तम रश्मि योग ब्राह्मण को हो तो वह यज्ञादि कर्म निष्ठ होता है और उसी पुण्य से स्वर्ग राज्य को भोगनेवाला होता है॥३८॥

विशेषः-

योगरश्मिसमायोगे तदानीं तत्फलं विदुः ।
नाभसादिषु योगेषु राजयोगे स्थितं तु तत् ॥ ३९॥

केवल राजयोग मात्र से ही राज्य की प्राप्ति नहीं होती है, किन्तु रश्मियोग राज्य फलदायक हो तो राजयोग का फल होता है और नाभसादि योग में भी रश्मियोग होने से उनका फल होता है॥ ३९॥

योगानां फलव्यवस्था-

योगकर्त्तारमारभ्य बलिनं च विनिर्णयेत् ।
पूर्वभागे समुद्दिष्टभाग्यकर्मफलानि तु ॥ ४०॥

प्रथम भाग में भाग्यादि का जो फल कहा गया है, उसका शुभाशुभ फल रश्मि के अनुपात द्वारा निर्णय करना चाहिये॥ ४०॥

अनुपातेन विज्ञाय योजयेद्वर्जयेद्बुधः ।
स्थानवीर्याधिके देशे मुख्यः स्यादनुपाततः ॥ ४१॥

स्थानबल, दिग्बल, चेष्टाबल, कालबल, अयनबल, उच्चबल, नैसर्गिक-बल इनमें जो अधिक बली हो उससे उच्च रश्मि का फल कहते हैं। स्थान बल अधिक हो तो देश में मुख्य हो॥ ४१॥

दिग्बले विजयश्चेष्टा वीर्ये तु प्रभुता भवेत् ।
कालवीर्येऽधिके कार्ये सदोत्साही तथायने ॥ ४२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दिग्बल अधिक हो तो विजयी हो, चेष्टाबल अधिक हो तो प्रभुत्व हो, कालबल अधिक हो तो सभी कार्य में कुशल हो और अयनबल अधिक हो तो सभी समय आनन्द में रहे॥ ४२॥

स्ववंशोत्कर्षता स्वोच्चे नैसर्गे जातिनिर्णयः।
राशीनां च ग्रहाणां च स्वभावाः कथिता मया॥ ४३॥

उच्चबल अधिक हो तो अपने वंश में मुख्य हो, नैसर्गिक बल अधिक हो तो अपनी जाति और कर्म का विशेष प्रतिपादन करनेवाला होता है। इस प्रकार से मेषादि राशियों का और ग्रहों का स्वभाव मैंने कहा॥ ४३॥

ये चात्र योजनीयाश्च दैवज्ञेन सुबुद्धिना॥ ४४॥

जो मैंने कहा है, उसे यथा अवसर विद्वान् बुद्धिमान् दैवज्ञ जहाँ जैसा उचित हो उसकी योजना वहाँ वैसी करें॥ ४४॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे रश्मिफलाध्यायश्चतुर्थः॥ ४॥

❖

अथ लोकयात्राप्रकरणम्

अष्टकवर्गरेखाणां फलम्-

मूलस्थानाधिके स्थाने सभावः शुभ इष्यते।
न्यूनेऽशुभः समे मातृपितृबंधून्वदिष्यते॥ १॥

जिस ग्रह का जिस भाव में जितनी रेखा कही गई है (अष्टक-वर्गाध्याय श्लो० १६ आदि) यदि उस भाव में उससे अधिक रेखा हो तो उस भाव का फल शुभ, न्यून हो तो अशुभ और सम हो तो सम फल होता है॥ १॥

स्ववेश्मधर्मकर्मायलग्नैश्शुभं पतिं वदेत्।
मृतिव्ययारिभिस्तेषां व्ययं हानिं पृथग्वदेत्॥ २॥

२।४।६।१०।११ और लग्न ये ६ भाव अपने स्वभाव के अनुसार उत्तम फल देते हैं और ८।१२ ये दो भाव खर्च तथा हानि करने वाले होते हैं॥ २॥

पूर्वभागोक्तानां राजयोगादीनां व्यवस्था-

ये योगापूर्वभागे तु द्विग्रहाद्या नभादयः।
राजयोगादयः सर्वे यथान्यायं प्रयोजयेत्॥ ३॥

पूर्व खंड में जो नाभस आदि राजयोग कहे गये हैं, उनका रश्मि और अष्टक वर्ग के बलाबल के अनुसार फल कहना चाहिए॥ ३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भरणीयकुटुम्बस्य द्वितीयेन शुभाशुभे ।
अन्येषां चैव भावानां स्वनाम सदृशं फलम् ॥४॥
सूर्येण वेश्मस्थानेन पितुर्मृतिपदं वदेत् ।
चन्द्रेण पंचमेनैव मातुर्मृतिपदं वदेत् ॥५॥

दूसरे भाव से रेखा और शून्य के न्यूनाधिक के अनुसार अशुभ और शुभ फल देकर कुटुम्ब पोषण का फल कहना चाहिए। अन्य भावों का उनके नाम के सदृश फल कहे॥४॥ सूर्य और चतुर्थ स्थान से पिता की मृत्यु के समय का विचार करे और चन्द्रमा और पाँचवें भाव से माता की मृत्यु के समय का विचार करना चाहिए॥५॥

मृत्युसमयज्ञानम्-

सूर्ये चन्द्रे सपापे च तयोश्च मरणं भवेत् ।
तयोरन्तरलिप्ताश्च शतद्वयविभाजिताः ॥६॥

सूर्य-चन्द्र चतुर्थ और पंचम भाव पापग्रह से युत हों तो दोनों की मृत्यु होती है। सूर्यादि और पापग्रहों का यथाक्रम से अंतर करके शेष की कला बनाकर उसमें २०० का भाग देना॥६॥

अब्दादयोऽशुभस्यापि दृष्टया संगुणयेत्ततः ।
षष्ट्या विभज्याब्दाद्याश्च तस्मात्पापे बलोत्तरे ॥७॥

फल वर्षादिक होता है। यदि समबल हो तो न्यूनाधिक्य में यदि सूर्य चन्द्र से पापग्रह बली हो तो उस फल को पापग्रह की दृष्टि से गुणाकर ६० से भाग देकर वर्षादि फल लाना॥७॥

तदामृतिर्भवेन्न्यूने तद्बलेनैव वर्धयेत् ।
तदा मृत्युस्तयोर्मृत्युस्थाने पापग्रहे सति ॥८॥

पापग्रह अल्पबली हो तो सूर्य और चन्द्रबल से पूर्वोक्त वर्षादि को गुणा कर ६० से भाग देकर लब्ध वर्षादि से फल कहना चाहिये और अष्टम भाव में पापग्रह हो तो माता-पिता को अरिष्ट कहना॥८॥

त्रिकोणशोधन-

अष्टकवर्ग शोधन की दो विधियाँ हैं। १-त्रिकोणशोधन। २-एकाधिपत्य शोधन। प्रथम त्रिकोण शोधन क्या है? सम्पूर्ण राशिचक्र में ४ त्रिकोण हैं। त्रिकोण से तात्पर्य प्रथम, पंचम और नवम राशि से है, अतः प्रत्येक त्रिकोण की प्रथम राशि क्रमशः मेष, वृष, मिथुन और कर्क है। इसका प्रयोजन अष्टकवर्गाध्याय के श्लोक सं० ७५ में कहा हुआ है।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ पिण्डोत्पत्तिः-

शोध्यावशेषं संस्थाप्य राशिमानेन वर्द्धयेत् ।
ग्रहयुक्तेऽपि तद्राशौ ग्रहमानेन वर्द्धयेत् ॥ ९ ॥

एकाधिपत्य शोधन करने से जो अंक जिस राशि के नीचे हों उन्हें उन-उन राशि के गुणकांकों से गुणाकर उसके नीचे रख दे, इसके बाद उनका योग करने से राशि पिण्ड होता है। इसी प्रकार जिस राशि में जो ग्रह हो उस ग्रह के गुणकांक से और एकाधिपत्य शोधन से शेष अंक को गुणाकर रख दे और सबका योग करने से ग्रहपिण्ड होता है॥ ९॥

(उदाहरण् आगे के चक्रों में है।)

राशिगुणकांकः -

गोसिंहौ दशगुणितौ वसुभिर्मिथुनालिगौ ।
वणिग्मेषो तु मुनिभिः कन्यकामकरौ शरैः ।
शेषाः स्वमानगुणिता राशिमाना इभे क्रमात् ॥ १० ॥

ग्रहगुणकांकः -

जीवारशुक्रसौम्यानां दशवसुमुनीन्द्रियैः ।
बुधस्य संख्या शेषाणां ग्रहान्गुणयेत्पृथक् ॥ ११ ॥
त्रिषु द्वयोर्वा यन्न्यूनमितरत्रसमं भवेत् ।
एकस्मिन् भवने शून्ये तत्त्रिकोणं न शोधयेत् ॥ १२ ॥
समत्वे सर्वगेहेषु सर्वं संशोधयेद् बुधः ।

त्रिकोण के तीन राशियों में से जिस राशि की रेखा संख्या अल्प हो उसे त्रिकोण की अन्य दो राशि की संख्या में से घटाकर शेष को उसी राशि के नीचे रखे और अल्प रेखा संख्या के स्थान में शून्य रखना चाहिए। यदि त्रिकोण की तीनों राशियों में किसी एक राशि में शून्य हो तो अन्य दो राशियों के नीचे वैसी रेखा स्थापित कर दें अर्थात् उनका त्रिकोण शोधन न करे॥ १२॥ यदि त्रिकोण के तीनों राशियों की रेखायें तुल्य हों तो सभी का संशोधन करे अर्थात् तीनों के नीचे शून्य रखे।

एकाधिपत्यशोधनम् -

क्षीणेन सह चान्यस्मिन् शोधयेत् ग्रहवर्जितः ॥ १३ ॥
ग्रहयुक्ते फले हीने ग्रहाभावे फलाधिके ।
अनेन सह चान्यस्मिन् शोधयेद् ग्रहवर्जिते ॥ १४ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

फलाधिके ग्रहैर्युक्ते चान्यस्मिन् सर्वमुत्सृजेत् ।
उभयोर्ग्रहसंयुक्ते न संशोध्यः कदाचन ॥१५॥
उभयोर्ग्रहहीनाभ्यां समत्वे सकलं त्यजेत् ।
सग्रहा ग्रहतुल्यत्वात्सर्वं संशोध्यमग्रहात् ॥१६॥
एकत्र नास्ति चेत्सर्वहानिरन्यत्र कीर्त्तिताः ।
कुलीरसिंहयो राश्योः पृथक् क्षेत्रं पृथक् फलम् ॥१७॥

१-भौमादि पंचग्रहों की दो-दो राशियाँ होती हैं, अतः इन्ही का एकाधिपत्य शोधन होता है जिसका नियम यह है-यदि दोनों राशियों में कोई ग्रह न हो तो अल्पसंख्या को अधिक संख्या में से घटाकर शेष को अधिक संख्या के नीचे रख दे और अल्पसंख्या को ज्यों का त्यों रख देना चाहिये।

२-यदि एक राशि में ग्रह हो और दूसरी राशि में ग्रह न हो और ग्रहहीन राशि की संख्या से ग्रहयुक्त राशि की संख्या अल्प हो तो ग्रहहीन राशि संख्या में से ग्रहयुक्त राशि की संख्या को घटाकर शेष को ग्रहहीन राशि के नीचे रखना और ग्रहयुक्त राशि की संख्या वैसी ही रख देना।

३-यदि ग्रहयुक्त राशि की संख्या ग्रहहीन राशिकी संख्या से अधिक हो तो ग्रह- युक्त राशि की संख्या वैसी ही रहेगी और ग्रहहीन राशि के नीचे शून्य रखना चाहिये।

४-यदि दोनों राशि ग्रहयुक्त हों तो संशोधन नहीं करना चाहिये अर्थात् जैसे का तैसा ही रखना चाहिये। यदि दोनों राशियों में ग्रह न हो और संख्या भी तुल्य हो तो दोनों राशियों में शून्य रखना चाहिये।

५-यदि एक संग्रह हो और दूसरी राशि ग्रहहीन हो और संख्या भी समान हो तो ग्रहहीन राशि की संख्या के स्थान में शून्य और ग्रहयुक्त राशि की संख्या वैसी ही रहेगी।

६-यदि दोनों ग्रहयुक्त वा ग्रहहीन हों अथवा दोनों में एक ग्रहयुक्त और ग्रहहीन हों और त्रिकोणशोधन के बाद किसी एक में शून्य संख्या हो तो दोनों में शून्य ही रहेगा।

७-कर्क और सिंह राशि के स्वामी चंद्र और सूर्य के अलग-अलग होने के कारण इनका एकाधिपत्य शोधन नहीं करना चाहिये।

विशेष- त्रिकोणशोधन के उपरान्त ही उपर्युक्त ७ विकल्पों से एकाधिपत्य शोधन करना चाहिये। शेष उदाहरण चक्र से स्पष्ट है।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्याष्टकवर्गशोधन--

ग्रह	सू.	बु. बृ.			श.			मं.				शु. चं.		योगपिंड
राशि	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	योग	
रेखा	३	४	२	४	६	५	४	३	३	५	५	४	४८	
त्रिकोण शोधन	०	०	०	१	३	१	०	०	०	०	३	१	११	
एकाधिपत्यशोधन	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	२	०	३	
राशिगुणनफल	०	०	०	७	०	०	०	०	०	०	१०	०	१७	राशिपिंड
ग्रह गुणनफल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१२	१२	पिंडयोग
														२९

चन्द्राष्टकवर्गशोधन-

ग्रह	चं. शु.	सू.	बु. बृ.			श.			मं.					योगपिंड
राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	योग	
रेखा	५	२	४	३	४	५	५	२	४	७	५	३	४९	
त्रि. शो.	१	०	०	१	०	३	१	०	०	५	१	१	१३	
एका.शो.	१	०	०	०	०	३	१	०	०	४	०	०	९	
रा. गु.	८					२४							३२	राशिपिंड
ग्र. गु.	१२					१५							२७	पिंडयोग
														५९

भौमाष्टकवर्गशोधन -

ग्रह	मं.				चं. शु.	सू.	बु. बृ.			श.				योगपिंड
राशि	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	योग	
रेखा	२	२	३	५	४	२	३	३	२	६	३	४	३९	
त्रिकोण शोधन	०	०	०	२	२	०	०	०	०	४	०	१	९	
एकाधिपत्य-शोधन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
राशि गुणनफल														राशिपिंड
ग्रह गुणनफल														ग्रहपिंड

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बुधाष्टकवर्गशोधन-

ग्रह	बु. बृ.			श.			मं.				चं. श.	सू.		योगपिंड
राशि	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	योग	
रेखा	५	५	३	५	४	५	४	४	४	४	६	५	५४	
त्रि.शो.	१	१	०	१	०	१	१	०	०	०	३	१	९	
ए.शो.	१	०	०	०	०	०	१	०	०	०	३	१	६	
रा.गु.	१०						११				२४		४५	राशिपि.
ग्र.गु.	१५						८				३६	५	६४	ग्र.पिं.यो
														१०९

गुर्वष्टकवर्गशोधन-

ग्रह	बु. बृ.			श.			मं.				शु. चं.	सू.		योगपिंड
राशि	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	योग	
रेखा	४	५	६	५	३	४	६	५	६	५	३	४	५६	
त्रि. शो.	१	१	३	१	०	०	३	१	३	१	०	०	१४	
एका.शो.	१	०	२	१	०	०	०	०	२	१	०	०	७	
रा. गु.	१०	०		८									१८	राशिपिंड
ग्र. गु.	१५			५									२०	ग्रहयोग
														३८

शुक्राष्टकवर्गशोधन-

ग्रह	श. चं.	सू.	बु. बृ.			श.			मं.			शु; चं.		
राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	योग	
रेखा	७	४	४	४	४	१	३	६	५	४	६	४	५२	
त्रि.शो.	३	३	२	०	०	०	०	२	१	३	३	०	१७	
ए.शो.	०	३	२	०	०	०	०	१	१	०	०	०	७	
रा.गु.	१२	२०							११				४३	राशिपि.
ग्र.गु.	१५	३०							८				५३	ग्रह पिण्ड.
														योग ९६

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शन्यष्टकवर्गशोधन-

ग्रह	श.			मं.				शु. चं.	सू.	बु. बृ.				
राशि	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७		
रेखा	५	२	५	१	३	७	३	४	४	२	१	२	३९	
त्रि.शो.	२	०	४	०	०	५	२	३	१	०	०	१	१८	
ए.शो.	२	०	०	०	०	३	१	०	१	०	०	१	८	
रा.गु.	१६								४				२०	राशिपिण्ड
ग्र.गु.	१०								५				१५	३५ ग्र.पि.

लग्नाष्टकवर्गशोधनम्-

ग्रह		मं.				शु. चं.	सू.	बु. बृ.			श.		योग	योगपिण्ड
राशि	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९		
रेखा	४	४	३	६	३	५	२	५	५	३	६	३	४९	
त्रिकोणशोधन	१	१	१	३	०	२	०	२	३	०	४	०	१७	
एकाधिपत्यशोधन।	०	१	०	०	०	२	०	२	१	०	४	०	१०	
राशिगुणन-फल		११				१६		१०			३२		६९	राशिपिंड
ग्रहगुणन-फल		८				२४		३०			३०		९२	ग्रहपिंड १६१

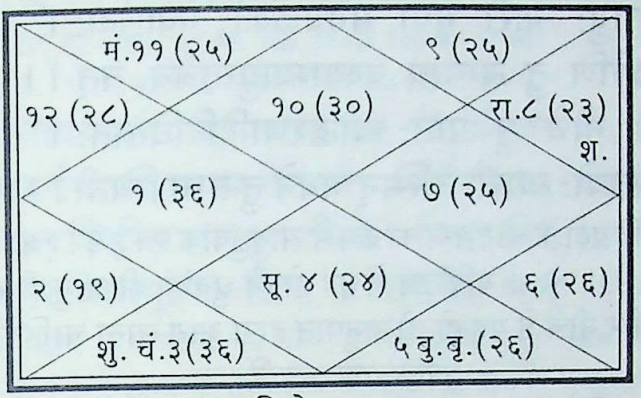
समुदायाष्टकवर्गचक्रम्-

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	योग
ग्रह			शु. चं.	सू.	बु. बृ.			श.			मं.		
सूर्य	५	५	४	३	४	२	४	६	५	४	३	३	४८
चंद्र	५	३	५	२	४	३	४	५	५	२	४	७	४९
मंगल	३	५	४	२	३	३	२	६	३	४	२	२	३९
बुध	४	४	६	५	५	५	३	५	४	५	४	४	५४
गुरु	६	५	३	४	४	५	६	५	३	४	६	५	५६
शुक्र	६	४	७	४	४	४	४	१	३	६	५	४	५२
शनि	७	३	४	४	२	१	२	५	२	५	१	३	३९
योग	३६	२९	३३	२४	२६	२३	२५	३३	२५	३०	२५	२८	

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नोट- सर्वाष्टकवर्ग में सभी अष्टवर्गों में मेषादि राशियों में कितनी-कितनी रेखायें प्राप्त हुई हैं और उनका योग क्या हुआ, लिखना चाहिये।

अष्टकवर्ग कुण्डली



मातृपित्रोः मृत्युकालः।

ग्रहयोगेन हानिः स्यात् वर्गणाघ्नं पृथक् ततः।
संयोज्य सप्तभिर्हत्वा सप्तविंशतिभाजिताः।।१८।।

एकाधिपत्य शोधन करने से राशियों के नीचे जो अंक आये हैं चाहे वे शून्य हों या रेखा हों उन्हें राशि के ध्रुवांकों से पृथक्-पृथक् गुण देना और जिस राशि में ग्रह हैं उनके अंकों को उन-उन ग्रहों के ध्रुवांकों से गुण कर पृथक्-पृथक् रखकर, राशियों के गुणनफल का योग और ग्रहों के गुणनफल का योग कर दोनों को एक जगह जोड़कर ७ से गुणाकर उसमें २७ से भाग देने से।।१८।।

अब्दादयस्तदा देशनाशः करणदे सति।
तस्मिन् पापग्रहे तस्माद् बलिन्येवं विधिः स्मृतः।।१९।।

लब्धि माता-पिता के आयुष्य का प्रमाण होता है। यदि पापग्रह बलवान् हो तो पूर्वविधि से ही मृत्युकाल जानना।।१९।।

बलहीने तु तं हन्यात्सप्तभिः पंचभिर्भजेत्।
आयुस्तयोः स्यात्स्थानस्य प्रदिशेदशुभे सति।।२०।।

यदि निर्बल हो तो योग को सात से गुणाकर ५ से भाग देने से जो वर्षादि हो वही माता-पिता के आयुष्य का प्रमाण होता है।।२०।।

मुनिभक्तं वसुघ्नं स्यान्नैवं चेन्नैतयोर्मृतिः।
वक्ष्यमाणेन विधिना वदेदाह पराशरः।।२१।।

यदि रेखाप्रद ग्रह बली हो तो पूर्व पिंड को ८ से गुणाकर ७ से भाग

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

देने से लब्ध वर्षादिक दोनों का आयुष्य होता है। शून्य के आयुष्य से रेखा का आयुष्य अधिक हो तो मृत्यु नहीं होती है। ऐसा पाराशर का मत है।।२१।।

चतुर्थभावात्सूर्याच्च आयुसाधनम्-

सूर्यादायुः करौ भूषा मनवोऽर्का नवार्णवाः।
वेदाक्षीणि तु लग्नस्य वक्ष्याम्यायुस्तथैव तत्।।२२।।
स्वोच्चे नीचे तु पातः स्याद्धरणादिविधिस्ततः।
आयुस्तयोः स्यात्तौ तस्मिन् भवने तु तथा स्थितौ।।२३।।

सूर्यादि ग्रहों के और लग्न का क्रम से आयुध्रुवांक २।१६।१४।१२।६।४।४।२ है।।२२।। यदि उच्च में ग्रह हो तो ध्रुवांक की आयु ही स्पष्ट आयु होती है और नीच में ग्रह हो तो अनुपात द्वारा आयु लाना चाहिये।।२३।।

ध्रुवांक द्वारा आयुर्विचारः-

न कश्चित्स्थानदः स्याच्चेत्तत्काले च मृतिर्भवेत्।
शुभभोगे शुभा प्रोक्ता तयोः स्याद्रश्मिसंभवः।।२४।।

यदि वहाँ कोई रेखाप्रद ग्रह न हो तो उसी समय मृत्यु कहनी चाहिये। शुभग्रह के योग से उत्तम रीति से और पापग्रह अधिक हों तो दंड, पातादि से मृत्यु कहना।।२४।।

रश्मितः आयु स्साधनम्-

अष्टभिर्गुणयेत्षड्भिर्विभज्यायुः परं भवेत्।
वेश्मनि स्थानदा न स्युर्जन्मकाले स्फुटीकृताः।।२५।।

सूर्य और चतुर्थभाव के रश्मि संभव को ८ से गुणाकर ६ से भाग देने पर लब्ध परम आयु होती है।।२५।।

करणाद्यभावे करणादिद्वारा भावविचारः-

कलीकृतश्च खनखैर्विभज्याब्दादयः क्रमात्।
एवं शुभाशुभं ब्रूयान्मातापित्रोर्द्विजोत्तम।।२६।।
करणस्थानदातारः पापपुण्यफलप्रदाः।
पुनश्चोच्चादिषु तथा त्रिगुणाद्यास्तु पूर्ववत्।।२७।।

यदि चतुर्थभाव में रेखाप्रद ग्रह न हों तो चतुर्थ भाव का कला पिंड बनाकर उसमें २०० से भाग देने से वर्षादि आयु होती है। इस पर से माता-पिता के शुभाशुभ फल को कहना।।२६।। शून्य के देनेवाले ग्रह पापफल देने वाले होते हैं और रेखा देनेवाले ग्रह शुभफल देने वाले होते हैं। यदि ये अपने मूलत्रिकोणादि में हों तो पूर्ववत् त्रिगुणादि फल देते हैं।।२७।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शत्रुनीचाधिशत्रूणां स्थानेष्वपि तु पूर्ववत् ।
राशिं हित्वा तुभावानां सर्वत्रैवं क्रिया भवेत् ।।२८।।

जहाँ आयुष्य का विचार हो वहाँ राशि को छोड़कर अंशादि से जैसा संस्कार कहा हो वैसा करना, यह क्रिया सर्वत्र जानना॥ २८॥

भावानां संस्कारविशेषाद् फलविचारः -

द्वितीयभावलिप्ताश्च राशिलिप्ता विभाजिताः ।
स्ववर्गणाहतास्तस्य खेटानां वर्गणाहताः ।।२९।।
भावरश्मिभिराहन्यात्सप्तभिश्च विभाजयेत् ।
मूलरश्मिसमूहेन शिष्टं हन्यात्तथैव तान् ।।३०।।

दूसरे भाव के अंशादि का कला करके उसमें दूसरे भाव के राशि की कला से भाग देना लब्ध कलादि फल को द्वितीय भाव के ध्रुवांक से गुणाकर यदि उनमें ग्रह हो तो उसके ध्रुवांक से गुणाकर॥ २९॥ उसे दूसरे भाव के स्वामी के रश्मि से गुणाकर ७ से भाग देने से जो अंक प्राप्त हो वह मारणीय कुटुम्ब की संख्या और शेष को मूलरश्मि समूह से गुणाकर॥ ३०॥

इष्टानिष्टफलाभ्यां च हत्वांतरमथ द्वयोः ।
सप्तविंशतिभिर्हत्वा सप्तभिश्च विभाजयेत् ।।३१।।
भरणीय कुटुम्बानां पुंस्त्रियस्तत्समा विदुः ।
राशीन् हित्वा तु लग्नादि भावभागादिकान् ।।३२।।

गुणनफल में भाव स्वामी के इष्ट फल से गुणन करके एवं भाव स्वामी के इष्ट कलांकों से मूलरश्मि समूह को गुणनकर दोनों के अन्तर को २७ से गुण देने से कलादि फल को ७ से भाग देने से जो आवे वह स्त्रियों की संख्या होती है॥ ३१॥ राशियों को छोड़कर लग्नादि भावों के अंशादि अलग-अलग अपने-अपने स्वामियों के रश्मियों से गुणन करने से जो आवे उसे भावभागादि कहते हैं॥ ३२॥

गुणयेद्रश्मिभिः स्वैश्च भावभागादयो विदुः ।
कलीकृत्य भलिप्ताभिर्विभज्याप्तं फलं ततः ।।३३।।

इसका कलापिंड बनाकर दो जगह स्थापित करे, उसमें राशि लिप्ता से भाग देने से जो फल प्राप्त हो उसे भावफल कहते हैं और दूसरे स्थान में १२ से भाग देने से जो फल हो उसे भाव साधन फल कहते हैं॥ ३३॥

प्रकारांतर से भावफलसाधन-

सूर्यभक्तावशिष्टं तु भावानां साधनं विदुः ।
राशीन हित्वा ततो लिप्ता खखनेत्रविभाजिताः॥ ३४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

साधनघ्ना विभक्ताश्च वर्गणाभिः फलाहताः ।
उच्चादिवृद्धिहानिं च कुर्यात्तत्संख्यका भवेत् ॥ ३५ ॥

राशि को छोड़कर अंशादि की कला बनाकर उसमें २०० से भाग देना॥ ३४ ॥लब्धि को पूर्व साधित भाव साधन से गुणकर अपने ध्रुवांक में भाग देना और पूर्व प्रतिपादित भाव साधन से गुण कर अपने ध्रुवांक में भाग देना पुनः इसे पूर्वसंपादित फल से गुण देने से जो संख्या प्राप्त हो वह कुटुम्बपोषण की संख्या होती है॥ ३५ ॥

इति लोकयात्राप्रकरणम्।

अष्टकवर्गफलाध्यायः

तत्रादावष्टकवर्गे विचारणीयः-

आत्मभावशक्तिश्च पितृचिन्ता रवेः फलम् ।
मनोवृत्तिप्रसादश्च मातृचिन्तामृगांकतः ।।१।।

आत्मा,प्रभाव,शक्ति और पिता का फल सूर्यसे विचार करना चाहिये। मन, वृत्ति, प्रसन्नता और माता का विचार चन्द्रमा से करना चाहिये॥ १ ॥

भ्रातृसत्त्वं गुणं भूमिं भौमेन च विचारयेत् ।
वाणिज्यकर्मवृत्तिश्च बुधेन तु विचिन्तयेत् ।।२।।

भाई, बल, गुण, भूमि का विचार भौम से करना चाहिये। वाणिज्य, कर्म और वृत्ति का बुध से करना चाहिये॥ २ ॥

गुरुणा देहपुष्टिं च विद्यापुत्रार्थसंपदः ।
भृगोर्विवाहकर्माणि भोगस्थानं च वाहनम् ।।३।।

शरीरकी पुष्टि,विद्या,पुत्र,धन,सम्पत्तिका विचार गुरु से करना चाहिये। शुक्र से विवाह, संभोग, वाहन, वेश्या, स्त्री का विचार करना चाहिये॥ ३ ॥

वेश्यास्त्रीजनगात्राणि शुक्रेणैव निरीक्षयेत् ।
आयुष्यं जीवनोपायं दुःखशोकमहद्भयम् ।
सर्वक्षणं च मरणं मंदेनैव निरीक्षयेत् ।।४।।

आयुष्य, जीवन,दुःख, शोक आदि का विचार शनिसे करना चाहिये।४।

रविः पिता शशी माता भ्राता भौमो बुधः सुहृत् ।
मातुलेयः स्मृतो जीवो ज्ञानपुण्ये स्त्रियः सितः ।।५।।
एषामृक्षे च तत्काले मरणं कुरुते शनिः ।
आदित्याष्टकवर्गं च निक्षिप्याकाशचारिषु ।।६।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य पितृकारक, चन्द्रमा मातृकारक, भौम भ्रातृकारक, बुध मित्र और मातुल (मामा) कारक, गुरु विद्या और पुण्य (कर्म) कारक और शुक्र स्त्री कारक हैं।। ५।। इनके नक्षत्रों में जब शनि आता है तो इन लोगों को कष्ट कारक होता है। सूर्यकि अष्टमवर्गको ग्रह सहित स्थापन कर विचार करें।।६।।

अर्कस्थितस्य नवमो राशिः पितृगृहं स्मृतम् ।
तद्राशिफलसंख्याभिर्वर्द्धयेद्योगपिण्डकम् ।।७।।

सूर्य से नवम राशि पिता की होती है, उस नवम राशि में जो रेखा की संख्या हो उससे योग पिण्ड को गुणाकर।। ७।।

सप्तविंशोद्धृतं शेषं नक्षत्रं याति भानुजम् ।
तस्मिन्काले पितृक्लेशो भवतीति न संशयः ।।८।।

२७ से भाग देने से जो शेष बचे वह अश्विन्यादि नक्षत्र की संख्या होती है। उस नक्षत्र पर जब शनि जाता है तो पिता को कष्ट होता है।। ८।।

तत्त्रिकोणगते वापि पिता पितृसमोऽपि वा ।
मरणं तस्य जानीयादृशाच्छिद्रेषु कल्पयेत् ।।९।।

अथवा इसके त्रिकोण नक्षत्र में जब शनि होता है तब पिता और पिता के सदृश लोगों को कष्ट होता है। यदि उस समय पापग्रह की दशा हो तो मृत्यु होती है, अन्यथा कष्टमात्र होता है।। ९।।

अर्कात्तु तुर्यगे राहौ मंदे वा भूमिनंदने ।
गुरुशुक्रेक्षणमृते पितृहा जायते नरः ।।१०।।

सूर्य से चौथे स्थान में राहु, शनि, भौम में से कोई हो और उसे गुरु-शुक्र न देखते हों तो पिता का नाशक होता है।। १०।।

लग्नाच्चन्द्राद्गुरुस्थाने याते सूर्यसुते यदि ।
पित्रोर्नाशं तदा काले वीक्षिते पापसंयुते ।।११।।
लग्नात्सुखेशराशीशदशायां च पितृक्षयः ।
दशानुकूलकालेन योजयेत्कालवित्तमः ।।१२।।

लग्न या चन्द्रमा से नवम स्थान में शनि हों और पापग्रह से दृष्ट और युत हों तो पिता का नाश होता है।।११।। लग्न से चतुर्थेश के राशीश की दशा में पिता का नाश होता है; किन्तु दशा अनिष्टद न हो तो सुख होता है।।१२।।

पितृजन्माष्टमे जातस्तदीशे लग्नगेऽपि वा ।
तेनैव पितृकार्याणि करोत्यत्र न संशयः ।।१३।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पिता के जन्मलग्न से आठवें लग्न में जन्म हो अथवा पिता के जन्मलग्न से आठवें भाव के स्वामी बालक के जन्मलग्न में हों तो वह बालक ही पिता के सभी कार्यों को करता है, अर्थात् पिता की मृत्यु हो जाती है और वही सभी कार्य को करता है, इसमें संशय नहीं है॥ १३॥

पितृसुखयोग-

सुखनाथदशायां तु सुखप्राप्तेश्च संभवः।
सुखेशे लाभलग्नस्थे चन्द्रलग्नाद्विशेषतः॥ १४॥
पितृगृहं समायुक्ते जातः पितृवशानुगः।
तेनैव पितृकार्याणां कर्मक्षेत्रे समापयेत्॥ १५॥

सुखेश की दशा में पिता को सुख होता है। सुखेश ११वें या जन्म लग्न में हो तो विशेषकर चन्द्रलग्न से॥ १४॥ दशम भाव में हो तो पिता के वंश में रहनेवाला होता है और वही पिता के कर्मों को करनेवाला होता है॥ १५॥

पितृजन्मतृतीयर्क्षे जातः पितृधनाश्रितः।
पितृकर्मगृहे जातः पितृतुल्यगुणान्वितः॥ १६॥

पिता के जन्मलग्न से तीसरे लग्न में जन्म हो तो पिता के धन का भोगी होता है। पिता के जन्मलग्न से १०वीं राशि में जन्म हो तो पिता के गुण से सदृश गुण वाला होता है॥ १६॥

तदीशे लग्नसंस्थेऽपि पितृश्रेष्ठो भवेत्सुतः।
एवमादिफलं ज्ञात्वा तान्यत्रापि नियाजयेत्॥ १७॥

और उसके स्वामी यदि जन्मलग्न में हों तो पिता से श्रेष्ठ होताहै। इस प्रकार से पूर्वोक्त के फलों की योजना यहाँ भी करनी चाहिए॥ १७॥

विशेषः-

सूर्याष्टवर्गे यच्छून्यं तन्मासे संवत्सरेऽपि च।
विवाहव्रतबंधादि सर्वं त्वजयेत्सदा॥ १८॥

सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि में अधिक शून्य हो उस राशि के मास में और संवत्सर (उस राशि में जब गुरु हों) में विवाह, व्रतबन्धादि शुभ-कर्म को न करे॥ १८॥

कलहो त्रासदुःखानि शून्यमासे भवन्ति च।
एवमादिफलं ज्ञात्वा मासं प्रति समाचरेत्॥ १९॥

अधिक शून्य वाले मास में कलह, भय, दुःखादि होते हैं, इसको ध्यान में रखते हुए मास के कार्यों को करे॥ १९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पितृमरणकालः-

संशोध्य पिंडं सूर्यस्य रंध्रमानेन वर्द्धयेत् ।
अर्कोद्धतावशेषर्क्षे यदा याति शनैश्चरः ।
तस्मिन्मासे मृतिं विद्यात्तत्त्रिकोणगतेऽपि वा ।।२०।।

सूर्य के अष्टकवर्ग के पिंड को सूर्य की शून्य संख्या से गुणाकर १२ का भाग देने से जो शेष बचे उस राशि में जब शनि जाता है तब उस राशि के मास में पिता की मृत्यु होती है वा उस राशि से त्रिकोण राशि में जब शनि जाते हैं, तब पिता की मृत्यु होती है।।२०।।

चन्द्राष्टकवर्गस्य फलम्-

चन्द्राच्चतुर्थभे मातुः प्रासादग्रामचिंतनम् ।
चन्द्राष्टवर्गे यद्राशौ शून्याधिक्यं प्रजायते ।।२१।।

चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में माता, गृह और ग्राम का विचार करना चाहिये। चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में जिस राशि में अधिक शून्य है।।२१।।

तं राशिं च परित्यज्य शुभकर्माणि कारयेत् ।
चन्द्राष्टमे शनिक्षेत्रे त्रिकोणेषु विशेषतः ।।२२।।

उस राशि में जब चन्द्रमा हो तब शुभ कर्म को न करे। चन्द्रमा से आठवें शनि की राशि से, विशेषकर त्रिकोण में हो तो।।२२।।

आधिव्याधिदुःखाण्यपि लभते नात्र संशयः ।
चन्द्रात्सुखफलात्पिंडं वर्धयेद्दैर्हृतं च तत् ।।२३।।

उस समय जातक को मानसिक कष्ट, व्याधि और दुःख होता है। चन्द्रमा से चौथे भाग के फल को खण्ड (पिंड) से गुणा कर २७ से भाग देने से।।२३।।

शेषमृक्षे शनौ याते मातृहानिं विनिर्दिशेत् ।
तत्त्रिकोणेषु वा केचिद्दशाछिद्रेषु कल्पयेत् ।।२४।।

जो शेष हो तत्तुल्य नक्षत्र पर शनि के रहने से माता को कष्ट या मृत्यु होती है। अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण नक्षत्र (१२ या १६ नक्षत्र) में शनि के रहने से और उस समय कष्टप्रद दशा के रहने से माता की मृत्यु होती है।२४।

भौमाष्टकवर्गफलम्-

भौमाष्टवर्गे संचिन्त्यं भ्रातृविक्रमधैर्यकम् ।
भौमस्थितस्य सहजो राशिर्भ्रातृगृहं स्मृतम् ।।२५।।

भौमाष्टक में भाई, पराक्रम और धैर्य का विचार करना चाहिये। भौम से तीसरे भाव से भाई का विचार करना चाहिये।।२५।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

त्रिकोण शोधनं कृत्वा यत्र भूयाँसि तत्र वै ।
भूमिर्भवति भार्यावा भ्रातृगेहसुखं तथा ।।२६।।

भौमाष्टकवर्ग में त्रिकोण शोधन के पश्चात् जिस राशि में अधिक शेष हो उस राशि में जब भौम जाता है तो भूमि का, स्त्री का लाभ और भाई तथा गृह का सुख होता है।।२६।।

भौमो बलविहीनश्चेत् दीर्घायुर्भ्रातृको भवेत् ।
फलानि यत्र क्षीयन्ते तत्र भूमिहानिः स्मृतः ।।२७।।

यदि भौम निर्बल हो तो भाई दीर्घायु होता है और जिस राशि में फल की कमी हो उस पर भौम के जाने से भूमि की हानि होती है।। २७।।

तद्राशिफलसंख्यैश्च वर्धयेच्छोध्य पूर्ववत् ।
शेषर्क्षे च शनौ याते भ्रातृहानिर्विनिर्दिशेत् ।।२८।।

फलों के योग को पिंड से गुणाकर पूर्ववत् २७ से भाग देने से शेष नक्षत्र में शनि के जाने से भाई की मृत्यु होती है।। २८।।

अथ बुधाष्टकवर्गफलम्-

बुधात्तुर्ये कुटुम्बं च धनं मित्रादिमातुलाः ।
तत्पञ्चमे मंत्रविद्यालिपिबुध्यादि चिंतयेत् ।।२९।।

बुधसे चौथे भाव में कुटुम्ब, धन, मित्र,मामा आदिका और बुधसे पाँचवें भाव में मंत्र, शास्त्र, लेखन और बुद्धि का विचार करना चाहिये ।। २९।।

बुधाष्टवर्गं संशोध्य शेषमृक्षगते शनौ ।
बंधुमित्रादिनाशादींल्लभते नात्र संशयः ।।३०।।

बुधाष्टक वर्ग से पूर्ववत् संशोधन करके राशिपिंड से योग पिंड को गुणाकर २७ से भाग देने से नक्षत्र वा उसके त्रिकोण नक्षत्र में शनि के जाने से बन्धु-मित्रादि का नाश होता है।। ३०।।

अथ गुर्वष्टकवर्गफलम्-

जीवात्पञ्चमतो ज्ञानं पुत्रधर्मधनादिकम् ।
गुरोरष्टकवर्गेषु संतानमपि कल्पयेत् ।।३१।।

गुरु से पाँचवें भाव में सन्तान का विचार करना चाहिये। इसी प्रकार गुरु के अष्टकवर्ग में भी सन्तान-विचार करना चाहिये।। ३१।।

गुरुस्थितसुतस्थाने यावच्च विद्यते फलम् ।
शत्रुनीचगृहं त्यक्त्वा तावंतश्च सुताः स्मृताः ।।३२।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S2 Foundation USA

गुरु से पाँचवें भाव में जितना फल हो उतने ही संख्यक सन्तान होते हैं, यदि यह राशि गुरु की शत्रु और नीच राशि न हो तो।। ३२।।

सुतभेशनवांशैश्च तुल्या वा सन्ततिर्भवेत्।
व्ययार्थसुतसंस्थैश्च पापैः स्यात्क्षीणसन्ततिः।। ३३।।

पंचमेश के नवांश के तुल्य संतान की संख्या होती है। १२, २, ५वें पापग्रह के तुल्य संतति की हानि है। पूर्व राशिपिंड को योगपिंड से गुणाकर २७ का वा १२ का भाग देकर शेष तुल्य नक्षत्र वा राशि में शनि के जाने से पुत्र को कष्ट होता है।। ३३।।

अथ शुक्राष्टकवर्गफलम्-

भृगोरष्टकवर्गं च निक्षिप्यांकाशचारिषु।
येषु येषु फलानि स्युर्भूयांसि किल तत्र तु।। ३४।।
भूमिं कलत्रं वित्तं च तद्देशे निर्दिशेन्नृणाम्।
शुक्रजामित्रतो लब्धिर्दरिशान्वितदिग्भवा।। ३५।।

शुक्र का अष्टक वर्ग ग्रहों के साथ रखकर देखना चाहिए, जहाँ जिस राशि में अधिक फल हो उस राशि पर जब शुक्र होते हैं तो जातक को।। ३४।। उस समय भूमि, स्त्री और धन का लाभ उस राशि के देश से प्राप्त होता है। शुक्र से सातवें स्थान की दिशा अथवा सप्तमेश की दिशा में स्त्री आदि का लाभ होता है।। ३५।।

भृगुदारेशयुक्तर्क्षफलसंख्या स्त्रियो विदुः।
शुक्रान्मन्दे त्रिकोणस्थे नेष्टं जीवे सुखप्रदम्।। ३६।।

शुक्र अथवा सप्तमेश के युत राशि के फल के तुल्य स्त्री की संख्या होती है। शुक्र से त्रिकोण में जब गुरु होता है तब स्त्री को सुख होता है। शेष पूर्ववत् देखना चाहिये।। ३६।।

अथ शनेरष्टकवर्गफलम्-

शनैश्चरस्थितस्थानादष्टमं मृतिरुच्यते।
शनेरष्टकवर्गाच्च स्वस्यायुष्यं विनिर्दिशेत्।। ३७।।
लग्नात्प्रभृतिमंदान्तं फलान्येकत्र कारयेत्।
लग्नादिफलयोगाब्दे व्याधिवैरं समादिशेत्।। ३८।।

शनि से आठवाँ भाव मृत्यु का होता है और शनि के अष्टकवर्ग से आयु विचार करना चाहिये।। ३७।। शनि के अष्टकवर्ग में लग्न से शनि पर्यन्त फलों (रेखा) का योग करना चाहिये, उस योग के समान वर्ष में जातक को व्याधि और वैर का भय होता है।। ३८।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मन्दादिलग्नपर्यन्तं फलान्येकत्र संयुतम् ।
मंदादिफलतुल्याब्देर्व्याधिं तस्य समादिशेत् ।।३९।।
तयोर्योगसमाब्दे तु मृत्युयोगं समादिशेत् ।
शोध्यादिगुणनं कृत्वा पिंडं संस्थाप्य यत्नतः ।।४०।।

इसी प्रकार शनि से लग्न पर्यन्त फलों को एकत्र जोड़कर जो हो तत्तुल्यवर्ष में भी व्याधि भय कहना।। ३९।। और दोनों फलों के योग तुल्य वर्ष में मृत्यु होती है। शोधनादि करने से जो पिंड आवे।। ४०।।

अष्टमस्थफलैर्हत्वा सप्तविंशतिभाजितम् ।
शतादूर्ध्वं तु तत्पिंडं शतमेवाग्रतस्त्यजेत् ।।४१।।

उसे अष्टमभावस्थ फल से गुणाकर २७ से भाग देने से यदि पिंड सौ से अधिक हो तो १०० को ही रखना।। ४१।।

आयुःपिंडंतु जानीयात्प्राग्वद्वेलां तु कल्पयेत् ।
त्रिकोणैकाधिपत्यर्क्षशोधनं विरचय्य च ।।४२।।
पिंडं संस्थाप्य गुणयेल्लग्नादष्टमगैः फलैः ।
सप्तविंशतिहृच्छेषं मृत्युकालं वदेद् बुधः ।।४३।।

और उसी से गुणाकर २७ से भाग देने से आयु पिंड होता है इस पर से पूर्ववत् मृत्युकाल का निश्चय करना एकाधिपत्य शोधन से जो पिंड हो।। ४२।। उसे अष्टमस्थ फल से गुणाकर २७ का भाग देने से जो शेष हो उस नक्षत्र पर शनि के जाने से वा उससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जाने से मृत्यु होती है।। ४३।।

विशेषः-

मार्त्तण्डपुत्राष्टकवर्गमध्ये यद्यद्गृहे शून्यफलं भवेच्च ।
तत्तद्भमध्ये रविजेऽथ सूर्ये तदा शरीरामयपीडनं स्यात् ।।४४।।

शनि के अष्टकवर्ग में जिन-जिन राशियों में शून्य फल हो उन-उन राशियों में जब शनि या सूर्य जाते हैं तब-तब शरीर में रोग और कष्ट होता है।४४।

अवस्थात्रयविचारः-

मीनाद्यं मिथुनांतकं प्रथमकं प्रोक्तं वयः प्राक्तनैः ।
कर्काद्यं वणिजांतकं तरुणता संज्ञं च मध्यं बुधैः ।।४५।।

मीन राशि में मिथुन राशि पर्यन्त प्रथम अवस्था एवं कर्क से तुला पर्यन्त युवा अवस्था पूर्वाचार्यों ने कल्पना की है।।४५।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कुभांतं स्थविराह्वयं च बहुभिर्यत्तत्फलैः संयुतम् ।
तत्सौख्यार्थं विशेषकं बलयुते हित्वाव्ययाष्टकम् ।।४६।।

और वृश्चिक से कुम्भ पर्यन्त वृद्धा अवस्था की कल्पना की है उक्त अवस्था के भावों के (सर्वाष्टक वर्ग) रेखाओं का योग करना जिस अवस्था में अधिक रेखा हो उस अवस्था में जातक को विशेष सुख होता है। किन्तु इसमें ८वें और १२वें भाव के रेखाओं का योग नहीं करना चाहिये।। ४६ ।।

इत्यष्टकवर्गफलम्।

अथ सर्वाष्टकवर्गफलम्-

मेषादिभानां सकलाष्टवर्गं उत्पन्नरेखागणमेव कुर्यात् ।
धृत्यादि तत्वांतमितं कनिष्ठं त्रिंशावसानं किल मध्यवीर्याः।।४७।।

सर्वाष्टकवर्ग में मेषादि राशियों के रेखाओं का योग करना, रेखाओं का योग १८ से २५ तक हो तो कनिष्ठ फल, इसके बाद ३० तक हो तो मध्यम फल।। ४७।।

त्रिंशाधिकं तूत्तमवीर्यदाः स्युः शरीरसौख्यार्थयशो विशेषः ।
स्वस्वाष्टवर्गे यदि वेदहीनाः क्लेशाय सौख्याय च वेदपुष्टाः।।४८।।

इससे अधिक हो तो उत्तम बल होता है। इसमें शरीर का सुख, धन और यश का लाभ होता है। अपने-अपने अष्टक वर्ग में ४ से अल्प रेखा हो तो कष्ट कारक और ४ से अधिक हो तो सुखकारक होता है।। ४८।।

मध्यात्फलाधिके लाभो मध्यात्क्षीणफले व्ययः ।
यस्य रेखाधिकं लग्नं भोगवानर्थवान् भवेत् ।।४९।।

दशम भाव की रेखा से लाभ भाव की रेखा अधिक हो और इससे अधिक लग्न की रेखा हो तो जातक के भोगसम्पत्ति की हानि होती है। यदि दशम भाव के फल से लाभभाव की रेखाएँ अधिक हों तो दशम भाव की रेखा से व्ययभाव की रेखा अल्प हो और लग्नकी रेखायें अधिक हों तो वह जातक भोगवान् और धनी होता है।। ४९।।

प्रादक्षिण्यादिभानां सकलफलयुतिं दिक्चतुष्कक्रमेण
कृत्वातद्भागतो यः समदधिकफलतः शोभनं हानिमल्पात्।
सौम्यां स्वोच्चस्वगेहोदितखचरयुते दिग्विभागे स्वकार्ये
वित्तेशाशासु वित्तं मृतिपतिगतदिग्भागगे देहनाशः।।५०।।

लग्नादि द्वादश भावों की तीन-तीन राशियाँ पूर्व से दक्षिण क्रम से (सव्य गणना से) पूर्वादि दिशा कल्पना करना अर्थात् लग्न, व्यय लाभ

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भाव को पूर्व दिशा में, दशम, नवम, अष्टम भाव को दक्षिण दिशा में, सप्तम, षष्ठ, पञ्चम भाव को पश्चिम दिशा में और चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय भाव को उत्तम दिशा में कल्पना करके प्रत्येक दिशा के भावों के सम्पूर्ण फलों का योग करके विचार करना, जिन-जिन दिशाओं में अधिक फल हो उन-उन दिशाओं में शुभ फल और जिन-जिन दिशाओं में स्वल्प फल हो उन-उन दिशाओं में हानि होती है।।५०।।

अथ भावफलम्-

भावं विलोक्य सदसत्फलदायकंयत्
तद्राशि संभवफलैश्च तदुक्तपिंडम् ।
पिंडे रेखा ताडिते भावशेषे राशौ
तस्मिन्याति सौरिः समायाम् ।।५१।।

शुभ-अशुभ फल देनेवाले भाव के फल को पूर्वोक्त लग्नपिंड से गुणाकर २७ का भाग देने से शेष राशि में जब शनि जाता है।।५१।।

यस्यां तद्भावहानिं च विद्यात्राहुर्वंशेऽथवा तत्त्रिकोणे।
कृत्वा विन्दुभ्यस्तु कालं सुधीमांस्तस्माद्वाच्यः प्राप्तिकालः शुभत्वे।।५२।।

तब उस भावजनित फल की हानि होती है। लग्नपिंड को भावफल से गुणाकर उसमें १२ का भाग देने से शेष राशि में जिस वर्ष शनि जाता है अथवा उसके त्रिकोण राशि में जब शनि जाता है, तब उस भाव की हानि होती है।।५२।।

अथ समुदायाष्टकवर्गफलम्-

सर्वकर्मफलोपेते ह्यष्टवर्गक उच्यते ।
अन्यथा फलविज्ञानं दुर्गमं गुणदोषजम् ।।५३।।

सभी कर्मों के फल के उपयुक्त अष्टकवर्ग होता है, अन्यथा फल-विज्ञान दुर्गम और दोषपूर्ण होता है।।५३।।

त्रिंशाधिकफलाये स्यू राशयस्ते शुभप्रदाः ।
त्रिंशांतंपञ्चविशांदिराशयो मध्यमाः स्मृताः ।।५४।।

जो राशि ३० से अधिक फलवाली है वह शुभफलद होती है। २५ से ३० तक फल वाली मध्यम फल वाली होती है।।५४।।

अतिक्षीणफला ये च राशयः कष्टदुःखदाः ।
श्रेष्ठराशिषु सर्वेषु शुभकार्याणि कारयेत् ।।५५।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by eGangotri Foundation, USA

और अत्यन्त क्षीण फल वाली जो राशि होती है वह कष्ट और दुःख देने वाली होती है। जो श्रेष्ठफल देने वाली राशियाँ हैं उन सभी में शुभ कर्मों को करना चाहिये।। ५५।।

श्रेष्ठान्राशीन्मुहूर्तेषु योजयेन्मतिमान्नरः।
तत्तज्जन्मप्रभावास्तु पुंसस्तैः सारर्धमाचरेत्।।५६।।

और श्रेष्ठ राशियों को मुहूर्तों में योजित करना चाहिये।। ५६।।

लग्ने यावत्फलं चास्ति तद्दशायां फलं वदेत्।
मूर्त्यादिव्ययपर्यन्ते दृष्टेवा भावफलानि वै।।५७।।
अधिके शोभनं विद्यात्क्षीणे हीने च मृत्यवे।
मध्यमे मध्यमं चैव विचार्यैव फलं वदेत्।।५८।।

लग्न में जो फल होता है वही दशा का फल होता है, लग्न से व्यय पर्यन्त प्रत्येक भाव के फल को देखे।। ५७।। जिस भाव का फल अधिक हो वह शुभदायक, न्यून अथवा शून्य फल वाले भाव कष्टकारक होते हैं और मध्यम फल वाले मध्यम होते हैं, यह विचार कर फल को कहे।। ५८।।

मेषादियद्गृहगता वसुसंख्ययाता
स्तद्भावपुष्टिबलवृद्धिकरा भवंति।
षट्पञ्चसप्तसहितानि शुभप्रदानि
त्रिद्व्येंककर्णयुतभानि न शोभनानि।।५९।।

मेषादि जिस राशि में ८ रेखा हो तो शुभ-प्रद होता है और ३, २, १ रेखा वाले शुभद नहीं होते हैं।। ५९।।

मिश्रं फलं भवति सागरकर्णयोगे रोगापवादभयदा यदि शून्यभावाः।
एकादि कर्णयुतभानुमुखग्रहाणां मित्राष्टवर्गजनि सर्वफलं प्रवच्मि।६०।

और ४ रेखा से युक्त भाव मिश्रित फल को देने वाला होता है और शून्य रेखा वाला भाव रोग-कलंक और भय देने वाला होता है, यह एकादि रेखा का सूर्यादि ग्रहों का फल मित्राष्टक वर्ग से कहा जाता है।। ६०।।

रेखाशान्तिफलम्-

रेखाभिः सप्तिभिर्युक्ते मासे मृत्युर्भवेन्नृणाम्।
सुवर्णं विंशतिपलं दद्याद्वौ तिलपर्वतौ।।६१।।

समुदायाष्टक वर्ग में जिस राशि में ७ रेखा हो उस राशि के सूर्य के मास में मृत्युभय होता है, उसकी शान्ति के लिए २० पल सुवर्ण और दो तिल का पर्वत दान करना चाहिये।। ६१।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वसुभिर्जातिहीनः स शीघ्रं मृत्युवशो नरः ।
असत्फलविनाशाय दद्यात्कर्पूरजां तुलाम् ।।६२।।

जिस राशि में ८ रेखा हो उस मास में जातिभ्रष्टता और मृत्युभय होता है। अशुभफल के नाशार्थ कपूर का तुलादान करना चाहिये।। ६२।।

रेखाभिः नवभिः सर्पान्म्रियते मनुजो ध्रुवम् ।
अश्वैश्चतुर्भिः संयुक्तं रथं दद्यात्शुभाप्तये ।।६३।।
रेखाभिर्दशभिः शस्त्रात्प्राणांस्त्यजति मानवः ।
दद्याच्छुभफलावाप्त्यै कवचं वज्रसंयुतम् ।।६४।।

जिस राशि में ९ रेखा हो उस मास में सर्प से मृत्यु का भय होता है, इसके शान्ति के लिए चार घोड़ों के रथका दान करना चाहिये।। ६३।। जिस राशिमें १०रेखा हो उस मासमें हथियारकी चोट से मृत्यु की संभावना होती है, इसके लिए वज्र सहित कवच का दान करना चाहिये।। ६४।।

रुद्रैः प्राप्याभिशापं च प्राणैर्मुक्तो भवेन्नरः ।
दिक्पलैः स्वर्णघटितां प्रदद्यात्प्रतिमां विधोः ।।६५।।
आदित्यैर्जलदोषेण मानवस्य मृतिं वदेत् ।
भूमिं दद्यात् ब्राह्मणाय तस्माच्छुभफलं भवेत् ।।६६।।

जिस मास में ११ रेखा हो किसी के शाप के कारण मृत्युभय होता है। अतः शान्त्यर्थ १० भरी सुवर्ण की चन्द्रमा की मूर्त्ति दान करनी चाहिये ।।६५।। जिस राशि में १८ रेखा हो उस मास में जलदोष से मृत्यु की संभावना होती है, अतः शान्त्यर्थ ब्राह्मण को भूमि का दान करें।। ६६।।

त्रयोदशमितैर्व्याघ्रान्मानवो मृत्युमाप्नुयात् ।
विष्णोर्हिरण्यगर्भस्य दानं कुर्याच्छुभाप्तये ।।६७।।
अचिराज्जीवितं जह्याच्छक्रैः कालेन भक्षितः ।
वाराहप्रतिमां दद्यात्कनकेन विनिर्मिताम् ।।६८।।

जिस राशि में १३ रेखा हो उस मास में व्याघ्र से मृत्यु का भय होता है अतः शान्त्यर्थ हिरण्यगर्भ (शालिग्राम) विष्णुमूर्त्ति का दान करने से शुभ फल होता है।६७। १४ रेखा हो तो थोड़े काल में अल्पायु होने का भय होता है, अतः शान्त्यर्थ सुवर्ण की वराह की मूर्त्ति दान करनी चाहिये।६८।

राज्ञो भयं तिथिमितस्तत्र हस्ती प्रदीयते ।
रिष्टभूपैः कल्पतरोः प्रतिमां च निवेदयेत् ।।६९।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

१५ रेखा हो तो राजभय होता है अतः उसकी शान्ति के लिये हाथी का दान करनी चाहिये। १६ रेखा हो तो अरिष्ट का भय होता है अतः शान्त्यर्थ कल्पतरु वृक्ष की प्रतिमा का दान करे॥ ६९॥

ऋषिचन्द्रैर्व्याधिभयं गुडधेनुं निवेदयेत्।
कलहोऽष्टेंदुभिर्दद्यादरत्नगोभूहिरण्यकम् ॥७०॥

१७ रेखा हो तो व्याधि का भय होता है अतः शान्त्यर्थ गुड़ धेनु का दान करना चाहिये, १८ रेखा हो तो कलह का भय होता हैअतः शान्ति के लिये रत्न, गौ और भूमि का दान करना चाहिये॥ ७०॥

देशत्यागोऽर्कचन्द्रौः स्याच्छांतिं कुर्याद्विधानतः।
विंशत्या बुद्धिनाशः स्यात्कुर्याल्लक्षमितं जपम् ॥७१॥

१९ रेखा हो तो देश-निकाला होता है अतः शान्त्यर्थ विधानपूर्वक ग्रह शान्ति करानी चाहिये। २० रेखा हो तो बुद्धि की हानि होतीहै अतः शान्त्यर्थ वागीश्वरी देवी के मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये॥ ७१॥

भूमिपक्षैः रोगपीडा दद्याद्धान्यस्य पर्वतम्।
यमाब्धिभिर्बन्धुपीडा दद्यादादर्शकं बुधः ॥७२॥

२१ रेखा हो तो रोग से पीड़ा होती है अतः शान्त्यर्थ धान्य का पर्वत दान देना चाहिये॥ ७२॥

रामपक्षयुते मासे नानाक्लेशान्नपद्यते।
सौवर्णीं प्रतिमां दद्याद्रवेः सप्तपलैः क्रमात् ॥७३॥
वेदाब्धिभिर्बंधुहीनो दद्याद्गोदानकं दश।
सर्वरोगादिनाशार्थं जपहोमादि कारयेत् ॥७४॥

२३ रेखा हो तो उस मास में अनेक कष्टों से युक्त होता है, इसकी शान्ति के लिये ७ पल की सूर्य के प्रतिमा का दान करे॥ ७३॥ २४ रेखा हो तो बन्धुहीनता का भय होता है, इसकी शान्ति के लिये दश गोदान करे, २५ रेखा हो तो सभी रोग आदि के नाशार्थ जप-होम को कराये॥ ७४॥

ऋतुपक्षैर्बुद्धिहीनः पूज्या वागीश्वरी तथा।
धनक्षयः स्यान्नक्षत्रैः श्रीसूक्तं तत्र संजपेत् ॥७५॥
वसुपक्षयुते मासे न लाभो हानिखेचरैः।
सूर्यहोमश्च कर्त्तव्यः विधिना शुभकांक्षिभिः ॥७६॥

२९ रेखा हो तो बुद्धिहीनता होती है, इसकी शान्ति के लिये वागीश्वरी देवी का पूजन करना चाहिये। २७ रेखा हो तो धन की हानि होती है,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इसकी शान्ति के लिए श्रीसूक्त का जप करावे॥ ७५॥ २८ रेखा हो तो ग्रहों द्वारा हानि होती है, सूर्य के मन्त्र से हवन कराना चाहिये॥ ७६॥

एकोनत्रिंशता चापि चिंताव्याकुलितो भवेत्।
घृतवस्त्रसुवर्णानि तत्र दद्याद्विचक्षणः॥७७॥

२९ रेखा हो तो चिन्ता से व्याकुलता होती है, इसकी शान्ति के लिए घी, वस्त्र, सुवर्ण आदि का दान करना चाहिये॥ ७७॥

त्रिंशता धनधान्याप्तिरिति जातकनिर्णयः।
भूवह्निभिर्महोद्योगः पुत्रसंपद्गुणाग्निभिः॥७८॥

३० रेखा हो तो धन-धान्य का लाभ होता है। ३१ रेखा हो तो बड़े उद्योग का आरम्भ और ३३ रेखा में पुत्र-संपत्ति का लाभ होता है॥ ७८॥

सहेमवस्त्रलाभश्च चतुस्त्रिंशत्समन्विते।
पंचरामैर्भवेद्बुद्धीमान्षट्त्रिंशत्सुतवित्तदा॥७९॥

और ३४ रेखा में सुवर्ण, वस्त्र का लाभ एवं ३५ रेखा में बुद्धि की प्राचुर्यता, ३६ रेखा में पुत्र और धन का लाभ होता है॥ ७९॥

सप्तत्रिंशद्धनस्याप्तिरष्टत्रिंशत्सुखार्थदा।
द्रव्यरत्नाप्तिरेकोनचत्वारिंशद्धिः वर्धते॥८०॥

३७ रेखा में धन का लाभ और ३८ रेखा में सुख और धन का लाभ होता है। ३९ रेखा में द्रव्य और रत्न का लाभ होता है॥ ८०॥

धनवान्कीर्त्तिमांश्चैव चत्वारिंशति वर्धते।
अत ऊर्ध्वं यशोऽर्थाप्तिः पुण्यश्रीरुपचीयते॥८१॥

और ४० रेखा में धन और कीर्त्ति की वृद्धि होती है। इससे अधिक रेखा में यश, धन, पुण्य आदि की वृद्धि होती है॥ ८१॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे लोकयात्रावर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः॥५॥

अथ प्रकीर्णा-षष्ठोध्यायः

भाग्योत्कर्षं भाग्यहानिं कुटुम्बं दुःखं हानिं शत्रुमायं व्ययं च।
उद्वाहं स्त्रीपुत्रलाभादिकं च ब्रूयादेवं चाब्दचर्या क्रमेण॥१॥

भाग्यवृद्धि, भाग्यहानि, पोषणीय समूह, कष्ट, हानि, शत्रु, आय, व्यय, विवाह, स्त्री, पुत्र, लाभादिक का फल कहते हैं॥ १॥

अब्दमासदिनचर्यविधानं वक्ष्यते खलु मया सुमते ते।
वक्ष्यमाणविधिना परमायुः सम्यगत्र विदधीत महात्मन॥२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हे मैत्रेय! तुम्हें मैं वर्षचर्या, मासचर्या, दिनचर्या का विधान निश्चय कर कहता हूँ, इसके जानने के लिये सम्यक् रीतिसे आयु का ज्ञान आवश्यक है।२।

भावानां फलसमयः-

भावानां साधनं हत्वा दृष्टिभिश्च बलेन च।
षड्वर्गादिपतीनां च भावे भावे पृथक्-पृथक्।।३।।
तेषां च दृग्बलानां च संहत्या भाजयेदथ।
स्वामिदृष्टिस्थितानां तु काले भावफलं विदुः।।४।।

भावों को अपने-अपने दृष्टि और भाव बल से गुणाकर गुणन फल में।। ३।। उन-उन भावों में स्वामियों के षड्बल, दृष्टि और दृग्बल के योग से भाग देने से लब्ध वर्षादिक में भावों के फल होते हैं।। ४।।

ज्ञानसंभवकालस्तु जन्मकालाद्बलो यदा।
लग्नादिव्ययपर्यन्ता भावाः काले तथा विदुः।।५।।

जो भाव अपने स्वामी से दृष्ट हो और स्वामी बली हो तो उसकी दशा में फल होता है। यदि अपने स्वामी से न देखा जाता हो तो उक्त समय में लग्न से व्ययपर्यन्त भावों में जो अधिक बली हो उसके स्वामी की दशा में उक्त भाव का फल होता है।। ५।।

अथ शुभपापभेदात्भावफले विशेषः-

लग्नषड्वर्गहोराणां भोक्तारः पतयः स्मृताः।
त्रिपंचवेददिक्सप्तमुनिरामांशके फलम्।।६।।

लग्न में जो षड्वर्ग कहा गया है उसके (अर्थात् ६ वर्गों के स्वामी) पृथक्-पृथक् अपनी-अपनी दशा में फल को देते हैं।। ६।।

शुभग्रहास्तु द्रष्टारः स्थानदाः सकला ग्रहाः।
युक्ताः ददातु सद्भावाः संज्ञानुफलदास्तदा।।७।।

किन्तु क्रम से ३।५।३।१० ।७।७ ३ अंशों में फल को देते हैं। देखनेवाले शुभग्रहों का ही शुभफल होता है, पापग्रहों का नहीं होता है। रेखा में दोनों का शुभाशुभ फल होता है।। ७।।

पापात् हानिकरान् हित्वा स्वोच्चकोणसुहृत्स्थितान्।
तद्राशिर्यस्य शत्रुर्वा नीचयोर्वा ग्रहो यदि।।८।।
हानिं कुर्यात्तदा तस्य दृष्टियोगानुपाततः।

भावों में जो ग्रह पाप या शुभ अपनी उच्च-नीच मूलत्रिकोण आदि में शत्रु-मित्रादि के राशि में हो उसी क्रम से वह फल देते हैं।। ८।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ कारकविचारः-

उद्वाहकारकौ चन्द्रशुक्रौ ज्ञो वा तपोऽथवा ।।९।।
शनिर्मृतिकरो भौमरवी नीचसतीपती ।
गुरुः शुभकरः पुत्रे कुजो भ्रातरि शत्रुभे ।।१०।।

चन्द्रमा और शुक्र विवाह कारक होते हैं अथवा बुध और गुरु भी विवाह कारक होते हैं।। ९ ।। शनि मृत्युकारक होता है, भौम नीच (कुलटा) कारक और सूर्य सती (पतिव्रता) कारक है, पाँचवें भाव में गुरु शुभ फल देने वाला होता है, भौम तीसरे स्थान में, छठे स्थान में।।१०।।

मदेश्वाये शुभाः सर्वे स्वोच्चगौ भौमसूर्यजौ ।
भाग्येऽशुभाः शुभा पापा अशुभाः स्वपतिंविना ।।११।।

शनि शुभफलदायक होता है और एकादश भाव में सभी शुभ फलद होते है, भौम-शनि अपने उच्चराशि में हों तो शुभद होते हैं। भाग्यभाव में पापग्रह अशुभ और शुभग्रह शुभद होता है, किन्तु पापग्रह यदि उस भाव का स्वामी हो तो शुभद होता है।। ११ ।।

अथ दृष्टिबलात् भावफलस्य व्यवस्था-

पूर्वभागे समुद्दिष्टदृग्बलेन फलानि तु ।
विरुद्धानि परित्यज समीचीनानि संग्रहेत् ।।१२।।

पूर्वभाग में दृष्टिबल से कहे हुए फल में विरुद्ध फलों को त्याग कर शुभफलों का इस प्रकरण में उपयोग करना।। १२ ।।

स्त्रीपुरुषोः स्वभाव-विचारः-

ग्रहराशिस्वभावेन पुंस्त्रियोराशिमेव च ।
स्वभावं च वदेद्बुध्या देशकालकुलानुगः ।।१३।।

मनुष्यों के स्वभाव गुण को राशि और ग्रहों के अनुसार देश काल और कुल के अनुसार ही कहना चाहिये।। १३ ।।

स्वभावे ह्रासवृद्धिः-

तेषामिष्टफले वृद्धिस्त्वशुभाख्यफलादयः ।
अन्यथा त्वसदेवस्यात्तस्य तस्मान्मृतौ फलम् ।।१४।।

जिस भावका इष्टबल अधिक हो उसका शुभफल उत्तरोत्तर अधिक और जिसकाकष्टबलअधिकहो उसका अशुभ फल उत्तरोत्तर अधिक होता है।१४।

रविस्तु पाचको ज्ञेयश्चन्द्रमा बोधकः सदा ।
पाचको बोधकश्चैव कारको बेधकः क्रमात् ।।१५।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य पाचक होता है और चन्द्रमा बोधक होता है और सूर्य को कारक तथा चन्द्रमा को बेधक भी कहते हैं॥ १५॥

सूर्यादिग्रहाणां स्थानसंबन्धात्पाचकादिग्रहाः-

रव्यादीनां च विज्ञेया मंदारेज्यसितास्तथा।
शुक्रारमंदरवयो रवीन्दुशनिचन्द्रजाः॥१६॥
चन्द्रेज्यसितभौमाश्च मन्दारेन्दुदिनेश्वराः।
भौमज्ञसूर्यमंदाः स्युः सितेन्दुगुरुभूमिजाः॥१७॥
षट्सप्तनवरुद्रेषु सप्तनंदभवत्रिसु।
द्विषडायव्ययेष्वेव द्विवेदेन्द्रियवह्निषु॥१८॥
षट्पंचसप्तरिष्फेषु द्विषड्व्ययचतुर्ष्वपि।
त्रिरुद्रषट्सप्तमेषु स्थिताः स्थानेषु ते ग्रहाः॥१९॥

सूर्य से ६।७।९।११ स्थानों में क्रम से शनि, भौम, गुरु, शुक्र पाचक, बोधक, कारक और वेधक होते हैं। एवं चन्द्रमा से ७। ९।११।३ स्थानों में शुक्र, भौम, शनि, सूर्य, भौम से २।६।११।१२ स्थानों में सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध से २।४।५।३ स्थानों में चन्द्र, गुरु, शुक्र, भौम, गुरु से ६।५।७।१२ स्थानों मे, शनि, भौम, चन्द्र, सूर्य, शुक्र से २।६।१२।४ स्थानों में, भौम, बुध, सूर्य, शनि और शनि से ३।११।६।७ स्थानों में शुक्र, चन्द्र, गुरु, भौम पाचक, बोधक, कारक और वेधक होते हैं॥ १६-१९॥

पीचकाद्यास्तु चत्वारः सूर्यादिभ्यः क्रमादिह।
पीडर्क्षे वाप्यपीडर्क्षे केन्द्रे लग्नं विना तथा॥२०॥

सूर्यादि ग्रहों के शत्रुराशि, अपीडर्क्षे (मित्रराशि) में लग्न को छोड़कर केन्द्र में गये हुए, सभी पाचक आदि ग्रह बली होते हैं॥ २०॥

षट्सप्तधर्मकर्मायमृतिष्वेव गताः क्रमात्।
पाचकाद्याश्चतुर्थे च बलवन्त समीरिताः॥२१॥

तथा लग्न से ६।७।९।१०।११।८।४ इन स्थानों में गये हुए सूर्यादि पाचक आदि क्रम से बली होते हैं॥ २१॥

कारको मंदफलदो वेधको विघ्नकृत्स्मृतः।
बोधकः शीघ्रफलदः पाचको विफलप्रदः॥२२॥

कारक ग्रह न्यून फल वेधक अपने भाव के फल की हानि करने वाला, बोधक ग्रह अपने भाव के फल को शीघ्र देनेवाला तथा पाचक ग्रह अपने भाव संबंधी फल को विफल करने वाला होता है॥ २२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तदंशकालस्यांते वाप्यादावंत्याशकेऽपि च ।
धृत्यांशकेऽपि फलदाः पाचकाद्याः क्रमादिह ।।२३।।

ये पाचक बोधक कारक और वेधक ग्रह अन्तिम नवमांश में वा प्रथम तथा अन्तिम नवांश में भी फल देते हैं॥ २३॥

सूर्यादिग्रहाणां गोचरे फलकालः।

आदौ फलप्रदौ भौमरवी मध्ये सितार्यकौ ।
सर्वदा ज्ञः शशी मन्दस्त्ववसाने फलप्रदौ ।।२४।।

भौम और सूर्य राशि के आदि में, शुक्र और गुरु राशि के मध्य में, बुध सर्वदा और चंद्र-शनि राशि के अन्त्य में फल देनेवाला होता है॥ २४॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे लोकयात्राध्याये प्रकीर्णकाध्यायः षष्ठः।।६।।

अथ भावफलविवेकः सप्तमोऽध्यायः

भावफलानामवधिः-

धनहानिभयानां च व्याधीनां दिवसास्तथा ।
शुभाशुभानि कर्माणि यात्रादि विजयादि च ।।१।।

धन की प्राप्ति और हानि, शत्रु-भय और रोग की प्राप्ति का दिन और शुभ-अशुभ कर्म जय-पराजय और उत्कर्ष इनका निर्णय॥ १॥

मासचर्याविधानेन ब्रूयादन्येन चेतरान् ।
लग्नारिमृतिरिःफेषु कर्मणां च पतीस्तथा ।।२।।

मासचर्या के अनुसार करना चाहिये, इससे भिन्न कार्यों को दिन और वर्षचर्या के अनुसार करना चाहिये। इसमें भी १।६।८।१२भावों के स्वामी और विन्दु के स्वामियों का विचार करना चाहिये॥ २॥

करणेशान्समालोच्य कथयेन्मुनिपुंगव ।
रसेषवो मुनिः खाष्टौ रविभूपा दिशस्तथा ।।३।।

सूर्य का ५६ दिन, चन्द्र का ७ दिन, भौम का ८० दिन, बुध का १२ दिन, गुरु का १६ दिन, शुक्र का १० दिन॥ ३॥

द्विशतं च क्रमात्सूर्यादिवसाञ्चाष्टमे स्थिताः ।
द्वितीयेऽर्धं त्वंतरे च त्रैराशिकवशेन तु ।।४।।

और राशि का २०० दिन अष्टम भाव में फल देने का समय है। दूसरे भाव में उक्त दिन संख्या का आधा और २।८ भावों को छोड़कर अन्य भावों में अनुपात द्वारा दिन संख्या ले आकर अवधि कहनी चाहिये॥ ४॥

इति पाराशरहोरायाममुत्तरार्धे लोकयात्रायां भावफलविवेकः सप्तमोऽध्यायः।७।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ भङ्गयोगाऽष्टमोऽध्यायः

अथयोगानां भङ्गयोगः-

तेषां भंगमथो वक्ष्ये यथाह कमलासनः ।
गर्गाय भगवान्सोपि ममाहाहं तव द्विज ।।१।।

हे मैत्रेय ! पहले ब्रह्माजी ने जो भंग योग गर्ग से कहा था और गर्ग ने मुझसे कहा था उसे मैं तुमसे कहता हूँ॥ १॥

तथा च रिष्फषष्ठाष्ट स्थानानां करणाधिपाः ।
तत्तद्भावस्य भंगस्य कर्त्तारः मृति संभवे ।।२।।
तत्तद्भावोऽष्टवर्गोत्थ संख्या तद्वर्गणाहता ।
रविभक्त ततः शिष्टा राशिर्मेषादिका भवेत् ।।३।।

यदि लग्न से १२।६।८ भावों में विन्दु देने वाले ग्रह बैठे हों या उन भावों के स्वामी के साथ बैठे हों तो भावों का भंग होता है॥ २॥ जिस भाव का विचार करना हो उस भाव के करणांक (विन्दु संख्या) संख्या से उस भाव के वर्गणा से गुणाकर १२ का भाग देने से शेष मेषादि से राशि होती है॥ ३॥

षष्ठाष्टरिष्के राशिश्चेद्भंग एव प्रकीर्त्तितः ।
फलं च मुनिसंवृद्धं रविभक्तं तथा भवेत् ।।४।।
शिष्टमेवं यदि तदा शत्रुभं वाथ भंगदम् ।
तद्भावानिष्टफलकं तच्छत्रुफलसंगुणम् ।।५।।

यदि यह राशि ६।८।१२ भाव में हो तो भाव का भंग होता है। यहाँ १२ से भाग देने से जो लब्धांक हो उसे ७ से गुणाकर उसमें १८ से भाग देने से दोष राशि होती है, यदि यह राशि ६।८।१२ भाव में हो तो योग का भंग होता है॥ ४॥ पूर्वोक्त प्रकार से आई हुई राशि यदि लग्नेश की शत्रु राशि हो वा लग्न से भंग युक्त हो तो उस भाव का अनिष्टफल होता है॥ ५॥

सप्तप्तं शिष्टमेवात्र पापरश्मिगुणं ततः ।
अर्कशिष्टं यदि भवेत्षष्ठरिष्फाष्टमेऽपि वा ।।६।।

जो शेष है वह जिस भाव का भंग करता है उस भाव के कष्टफल से उसे गुणाकर ७ से योग देना, जो शेष रहे उसे शत्रुकी राशिसे गुण देना, उसमें १२ से भाग देने से शेष राशि ६।८।१२ में हो तो उस भाव का भंग कहना॥ ६॥

शत्रुभं वापि भंगर्क्षं हानिस्तस्य प्रकीर्त्तिताः ।
यथोत्तरमितीवाप्तं क्षयवृद्धिस्ततो भवेत् ।।७।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इस प्रकार से जो भंग आता है उसके १।२।३ के क्रम से क्षय और वृद्धि जानना चाहिये॥७॥

पुनः प्रकारांतरेण-

षष्ठ्यंशे च कलांशे च त्वप्रकाशग्रहोदये।
राहुकालसमायोगे तद्भावफलभंगदः॥८॥
अनिष्टाख्यं च रश्मिं च तद्भावफलसंगुणम्।
द्वादशाप्तावशेषं च पूर्ववत्फलमीरितम्॥९॥

जिस भाव के भंग का विचार करना हो उस भाव के षष्ठ्यंश वा कलांश (षोडशांश) में अप्रकाश में किसी एक का उदय हो तो भाव का भंग कारक योग होता है॥८॥ अथवा भाव के अरिष्टरश्मि को उस भाव के इष्टबलांक से गुणा के उसमें १२ से भाग देने से शेष राशि से पूर्ववत् भाव के भंग योग का विचार करना॥९॥

यद्यत्फलं प्रोक्तमथोत्तरत्र तत्सर्वमन्यत्र च योजनीयम्।
भङ्गं च भङ्गं च मुनिश्च गर्गः प्रोवाच यद्वन्मुनिपुङ्गवाहम्॥१०॥
षष्ठ्यंशे च कलांशे च त्रिष्वेकोऽपि यदा न चेत्।
अधिमित्रं च मित्रं च भङ्ग - भङ्गः प्रकीर्त्तितः॥११॥

मैंने जो भावभंग का विचार कहा है सो उत्तरोत्तर जहाँ-जहाँ उसका उपयोग हो वहाँ-वहाँ देखना; जो भंग गर्ग मुनि ने कहा है उन्हीं भंगों का लक्षण मैंने कहा है॥१०॥ यदि अभीष्टभाव के षष्ठ्यंश वा षोडशांश में शत्रु राशि में अप्रकाश ग्रहों का उदय, राहु समायोग इसमें से कोई भी एक न हो और अधिमित्र वा मित्र हो तो पूर्वोक्त भंग का परिहार हो जाता है॥११॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे लोकयात्रायां प्रकीर्णकाध्यायः अष्टमः॥८॥

अथ भावानां संज्ञा-नवमोऽध्यायः

अथ भावानां संज्ञा-

आत्मा शरीरं होरा च कल्पं लग्नं च मूर्त्तयः।
स्वं कुटुम्बं च दुश्चिक्यं विक्रमं सहजं सह॥१॥

लग्न के आत्मा, शरीर, होरा, कल्प, लग्न, मूर्त्ति नाम हैं। दूसरे भाव के स्व और कुटुम्ब, ये दो नाम हैं। तीसरे भाव का दुश्चिक्य, विक्रम, सहज, सह ये नाम हैं॥१॥

पातालं हिबुकं वेश्म मित्रबंधूदकं सुखम्।
त्रिकोणं प्रतिभाबुद्धिमातविद्यासुतास्ततः॥२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चतुर्थभाव के पाताल, हिबुक, वेश्म, मित्र, बंधु, उदक और सुख नाम है। पंचम भाव के त्रिकोण, प्रतिभा, बुद्धि, मातृ, विद्या, सुत नाम हैं॥२॥

व्याधिक्षतारिभंगाश्च क्रोधो लोभोऽथ मत्सरः।
कामो विवाहो यात्रा स्त्री रतिद्यूनं मदोऽज्ञता॥३॥
पराभवो मृतिर्बंधो रंध्रायुर्निधनं च्युतिः।
शुभं धर्मस्ततो भाग्यं त्रिकोणं च गुरुर्विभुः॥४॥

छठे भाव के व्याधि, क्षत्र, अरि, भंग, क्रोध, लोभ, मत्सर नाम हैं। सप्तम भाव के काम, विवाह, स्त्री, रति, द्यून, मद, अज्ञता नामहैं॥ ३॥ अष्टम भाव के पराभव, मृति, बंध, रंध्र, आयु, निधन, च्युति नाम हैं। नवम भाव के शुभ, धर्म, भाग्य, त्रिकोण, गुरु तथा विभु नाम हैं॥ ४॥

व्यापारास्पदमषूरणमानाज्ञा कर्मखम्।
भावाय लाभापतपो रिष्फं हानिर्व्ययः स्मृतः॥५॥
यात्रायां दशमेनैव निवृत्तिः सप्तमेन तु।
वृद्धिश्चतुर्थलग्नेन त्रितयं संप्रकीर्त्तितम्॥६॥

दशमभाव के व्यापार, आस्पद, मेषूरण, मान, आज्ञा, कर्म तथा खनाम हैं। एकादश भाव के आय, लाभ, अप, तप नाम हैं। व्यवभाव के रिष्फ, हानि और व्यय नाम हैं॥ ५॥ दशम भाव से यात्रा का विचार करना चाहिये और सातवें भाव से यात्रा में निवृत्ति का विचार करना चाहिये। चतुर्थ से वृद्धि का विचार इन तीनों को मिलाकर कुल ७० विषय हुए॥ ६०॥

स्वोच्चमित्रस्ववर्गस्था एवमर्थाश्च सप्ततिः।
नीचारिवर्गगाश्चान्यत्पुष्टं चापुष्टमेव च॥७॥

यदि ग्रह मित्र, उच्च, स्वक्षेत्र या षड्वर्ग में हों तो पूर्वोक्त सभी फल उत्तम होते हैं और यदि शत्रु, नीच शत्रुवर्गादि में हो तो अशुभ फलदायक होता है॥ ७॥

अथ ग्रहाद् भावविचारः-

रविः शरीरे होरायां स्वे च भ्रातरि वेश्मनि।
सुते व्याधौ क्षते शत्रौ मृतौ तपसि कर्मणि॥८॥
आये व्यये फलं दद्यात् शीतगुविक्रमे सुखे।
कुटुम्बे भ्रातरि क्रोधे प्रतिभायां शुभे मृतौ॥९॥
भाग्ये त्रिकोणे व्यापारे लाभे रिष्फे फलप्रदः।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य शरीर, लग्न, दूसरे भावमें, तीसरे भाव में, चौथे घर में, पुत्र भाव में रोग विचार में, क्षत विचार में, मृत्यु और नवम के विचार में, कर्म के विचार में, दशम ॥ ८ ॥ आय और व्यय के विचार में फल देता है। चन्द्रमा प्रताप, कुटुम्ब, पोष्यवर्ग, भाई, क्रोध, बुद्धि, विशेष कर्म भाग्य, पञ्चम नवम भाव विचार और क्रय-विक्रयादि और लाभ व्यय के विचार में फल देता है ॥ ९ ॥

कुजः शरीरे होरायां कल्पविक्रमबंधुषु ॥१०॥
सहजे च सहे शत्रौ क्रोधे लोभे च रंध्रके ।
क्रियायायतौ हानौ जये भंगे फलप्रदः ॥११॥

मङ्गल से होरा कल्पशास्त्र, प्रताप, भाई, सहज, शत्रु, लोभ अष्टमभाव, कर्म, प्रभाव, हानि, उत्कर्ष और पतन का विचार करे ॥ १०-११ ॥

बुधो मनसि विद्यायां बुधौ हिबुकवेश्मनि ।
लोभे शिल्पेचगानादिप्रिये स्वेलाभरिष्फयोः ॥१२॥

बुध मानसिक विचार में विद्या, चतुर्थ भाव, लोभ, शिल्प, गान-विद्या ग्यारहवें और बारहवें भाव के विचार में फल देता है ॥ १२ ॥

गुरुकर्मे च तपसि त्रित्रिकोणे त्रिकोणके ।
आज्ञायां च सुते हानौ कारागृहनिवेशने ॥१३॥

गुरु धर्म, तप, नवम, पञ्चम, आज्ञा, पुत्र, हानि, कारागार-प्रवेश ।१३।

अभिशापे तथा व्याधौ स्वेकल्पे मूर्त्तिवेश्मसु ।
विद्याबुद्धिसुखे भावे शांत्यादिषु फलप्रदः ॥१४॥
कामान्यस्त्रीविवाहेषु गीतनृत्यप्रियादिषु ।
सुखे वेश्मनि दुश्चिक्ये स्वे कुटुम्बे च वेश्मनि ॥१५॥

अभिशाप, व्याधि, स्वकल्प, मूर्त्ति, गृह, विद्या, सुख, चतुर्थ भाव शांति में फल देता है ॥ १४ ॥ शुक्र से अन्य स्त्री समागम, विवाह, नृत्य-गाना, सुख, गृह, तृतीय भाव, धन, द्वितीय भाव, चतुर्थ भाव ॥ १५ ॥

आज्ञा क्रियातपो भाग्ये लाभायव्ययहानिषु ।
वदान्यत्वे दयायां च भार्गवः फलदः सदा ॥१६॥

आज्ञा, तप, भाग्य, लाभ और हानि का विचार करना चाहिये ॥ १६ ॥

शनिर्मृतौ व्यये रिष्फे दुश्चिक्ये क्षतचेतसि ।
सहजे स सहे भावे बन्धने फलदो भवेत् ॥१७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कालहोरादृक्काणेशाः क्षेत्रार्कनवभागपाः ।
सप्तांशत्रिंशदंशेशा होरेशश्चाष्टमो भवेत् ।।१८।।

शनि से मृत्यु, व्यय, तीसरेभाव, क्षत, चित्त, सहज बंधु बंधन का विचार करना चाहिये ।। १७ ।। कालहोरेश, द्रेष्काणेश, गृहेश, द्वादशांशेश, नवांशेश, सप्तमांशेश, त्रिंशांशेश और होरेश-ये क्रम से यथोत्तर बली होते हैं ।। १८ ।।

क्रमादावृत्तितः प्रोक्त बलिष्ठः पूर्वतो यथा ।
सूर्यादयो ग्रहा लग्नपतिश्चावृत्तितः क्रमात् ।।१९।।

सूर्यादि सात ग्रह और आठवाँ लग्न-इनमें जो बली हो वही प्रथम फल देने वाला होता है ।। १९ ।।

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे लोकयात्रायां नवमोऽध्यायः ।।९।।

अथ आयुविमर्शाऽदशमोऽध्यायः

अथ आयुषः प्रकारान्तराणि-

वक्ष्येऽहं दायोत्थं नृणामायुः परं मुने ।
पैंड्यो द्वादशधा प्रोक्तो ध्रुवरश्मिसमुद्भवौ ।।१।।

हे मैत्रेय ! अब मैं हरण आदि से शुद्ध मनुष्यों के परम आयु को तुमसे कह रहा हूँ, उसमें प्रथम पिंडायु है जो १२ प्रकारका है, ध्रुवायु (निसर्गायु) ४ प्रकार का ।। १ ।।

अंशकाष्टवर्गोत्थौ प्रत्येकं तु चतुर्विधम् ।
विषयोक्तौ द्विधा प्रोक्तो नक्षत्रांशकसंभवौ ।।२।।

रश्मि से उत्पन्न आयु ४ प्रकार का, अंशोद्भव ४ प्रकार का, अष्टवर्गोदय ४ प्रकार का-सब मिलाकर १६ प्रकार, नक्षत्रोत्पन्न २ प्रकार और अंशोद्भव २ प्रकार का-कुल मिलाकर ३२ प्रकार के आयु के भेद होते हैं ।। २ ।।

अथ पिंडायुषः ध्रुवांकाः-

द्वात्रिंशद्भेदभिन्नं स्यात्परमायुर्नृणामिह ।
अतिधृतिरर्कस्येन्दोस्तत्वानि पंचदश ।।३।।

सूर्यादि ग्रह अपने परमोच्च में हों तो क्रम से सूर्य का १९, चन्द्रमा का २५, भौम का १५, बुध का १२, गुरु का १५ ।। ३ ।।

द्वादश बुधस्य च गुरोस्तिथिः कवेर्मूछनानखाश्चार्किः ।
परमोच्चे च नीचेऽर्धं परेषु भावेषु वा तथा प्रोक्ताः ।।४।।

शुक्र का २१ और शनि का २० पिंडायु का ध्रुवांक होता है और नीच में हों तो अपने २ ध्रुवांक का आधा ध्रुवांक होता है ।। ४ ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अनुपातः कर्त्तव्यस्वंतरसंस्थेषु खेटेषु ।
खखभूमेः खयुग्मेंद्वो स्वांशाः पूर्ववत्कृतौ ।।५।।

उच्च-नीच के मध्य में ग्रह हो तो अनुपात द्वारा फल को लाना चाहिये। और सातों ग्रहों का १०० या १२०वर्ष का परमायु होता है॥ ५॥

नैसर्गिकरश्मिजायुषोः ध्रुवांकाः-

कृतिरेको यमौ रत्नमष्टादश नखाः क्रमात् ।
सैकंतानमिनादीनां दाये नैसर्गिके स्मृतम् ।।६।।

सूर्यादि अपने उच्च में हों तो सूर्य का २०, चन्द्र का १, भौम का २, बुंध का ९, गुरु का १८, शुक्र का २० और शनि का ५० ध्रुवांक नैसर्गिक में होता है॥ ६॥

षोडशविंशतिरेको नवाष्टनव पंचविंशतिः ।
षड्विंशतिस्तथोच्चे नीचे चार्द्धं रश्मौ च त्विमेऽथवा ।।७।।

उसी प्रकार से सूर्यादि उच्च में हों तो सूर्य का १६, चन्द्र का २० भौम का १, बुध का ९, गुरु का ८, शुक्र का १० और शनि का २५ या २६ रश्म्यायु में ध्रुवांक होता है। शेष क्रिया पूर्ववत् समझना चाहिए॥ ७॥

अथ ध्रुवांकेभ्यो आयुस्साधनप्रकारः-

कलीकृतं ग्रहं व्योमखाब्धिनेत्रावशेषितम् ।
शतद्वयेनाभिभजेदब्दमासादयः क्रमात् ।।८।।

जिस ग्रह की आयु लाना हो उसके राश्यादि की कला बनाकर उसमें २४०० से भाग देकर जो शेष बचे उसमें २०० से भाग देने से वर्ष मासादि क्रम से आयु होती है॥ ८॥

उदाहरण- सूर्य राश्यादि ३।१८।२६।३४ की कला ६५०६।३४ इसमें २४०० से भाग देने से शेष १७०६।३४ बचा, इसमें २०० का भाग देने से लब्ध ८ और १०६।३४ इसमें ध्रुवांक १९ से गुणाकर २०० से भाग देने से लब्ध १० वर्ष शेष १४।४५ इसे १२ से गुणाकर २०० से भाग देने से लब्ध मास शेष १७७।१२ को ३० से गुणाकर २०० से भाग देने से २६ दिन शेष ११६।० को ६० से गुणाकर २०० से भाग देने से लब्ध २४ घटी शेष १६० को ६० से गुणाकर २०० का भाग देने से लब्ध ४८ पल प्राप्त हुआ। इस प्रकार लब्ध वर्षादि १०।०।२६।३४।४८ पूर्व लब्ध वर्ष १० में जोड़ देने से सूर्य की वर्षादि १८।०।२६।३४।४८ पिंडायु हुई। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का पिंडायु साधन करें।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नवांशायुर्दायसाधनम्-

सूर्यादिगुणिताच्छेषाद्वृद्धिं कुर्याद्यथोत्तरम् ।
स्वोच्चहीनं ग्रहं कृत्वा कर्कादि च मृगादि च ।।९।।
गृहीत्वा तु भुजं कोटिं कृत्वा लिप्तीकृतं तु तम् ।
हत्वा नवांशदायेन भजेद्भत्रयलिप्तिभिः ।।१०।।

सूर्यादि ग्रहों के उच्च राश्यादि को उनमें घटाने से केन्द्र होता है। उसका भुज और कोटि करके, कोटि को कला बनाकर ध्रुवांक से गुणाकर उसमें तीन राशि की कला ५४०० से भाग देने से।। ९-१०।।

वत्सराद्या भवन्त्येते वर्जयेन्मकरादिके ।
केन्द्रे नवांशदाये स्वे त्रिघ्ने कर्कटकादिके ।।११।।

लब्ध वर्ष होता है शेष को पुनः१२ आदि से गुणाकर ५४०० से भाग देने से लब्ध मासादिक होता है। यदि मकरादि केन्द्र हो तो तीन से गुणे हुए ध्रुवांक में घटाने से और कर्कादि केन्द्र हो तो ध्रुवांक का आधा जोड़ देने से मध्यम नवांशायुर्दाय होता है।। ११।।

नवांशायुर्दाये विशेषः-

युंज्यादर्धीकृते तस्मिन् प्रक्रमानुगतो मतः ।
द्विघ्ने त्वपनयेत्तस्मिन्युंज्यादेव दलीकृते ।।१२।।

पूर्व साधित नवांशायुर्दाय में यदि केन्द्र मकरादि ६ राशि में हो तो मूल ध्रुवांक को दूना करके उसमें घटा देने और कर्कादि ६ राशि में हो तो मूल ध्रुवांक का आधा कर उसमें जोड़ देने से आयुर्दाय होता है।। १२।।

अष्टकवर्गायुः साधनम्-

निक्षिप्याष्टकवर्गं तु राशिचक्रे तु पूर्ववत् ।
त्रिकोणैकपशुद्धिं च कृत्वा तु गुणयेद्गुणः ।।१३।।
खवह्निभक्तभद्याद्याः क्रमाद्भिन्नाष्टवर्गजाः ।
एवं कृत्वा तु संयोज्य भाप्तमद्वादयः स्मृताः ।।१४।।

पहले अष्टक वर्ग बनाकर त्रिकोण शोधन और एकादिपत्यशोधन करके संख्या को राशि से गुणाकर पिंड बनाकर।। १३।। उसे (पिंड को) ३० से भाग देने से भिन्नाष्टक वर्गायु होता है। पूर्वोक्त प्रकार से लाये हुए पिंड में २७ से भाग देने से वर्षादि समुदायाष्टकवर्गायु होता है।। १४।।

कृत्वा करणदैरेवं स्वोत्पन्नौ दायसंज्ञितौ ।
प्रत्येकं भिन्नदायोत्थास्त्रैवं त्रिंशद्भिदा मताः ।।१५।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

और इसी प्रकार से करणायु भी लाना चाहिये। पिंडायुर्दाय सप्तग्रहों के ७ प्रकार की, ध्रुवायुर्दाय सप्तग्रहों के ७ प्रकार की, रश्म्यायुर्दाय सप्तग्रहों की ७ प्रकार की, अंशायुर्दायु सप्तग्रहों के ७ प्रकार की रेखाष्टक वर्गोत्थ आयु १ प्रकार और करणाष्टकवर्गोत्थ आयु के ३० भेद हुए॥ १५॥

नवांशायुर्दाये ध्रुवाङ्काः-

पंचमूर्छा सप्त रत्नं दश षोडश वारिधिः।
नवांशा विधितः प्रोक्ताअंत्यात्प्रोक्तास्तु भादितः॥१६॥

सूर्य का ५, चन्द्र का २१, भौम का ७, बुध का ९, गुरु का १०, शुक्र का १६ और शनि का ४ अंशायु साधन के ध्रुवांक हैं। प्राप्तनवांश से आरम्भ कर अनुलोम विधि से आरम्भ कर अनुलोम विधि से अन्तिम नवांश पर्यन्त गणना करनी चाहिये॥ १६॥

नक्षत्रायुर्दायानयनम्-

रवींद्वाराहिजीवार्किबुधकेतुसिताः क्रमात्।
आग्नेयाद्रगणेशाः स्युः स्वामिनो वत्सराःक्रमात्॥१७॥

कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ करके क्रम से सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र ये नव नक्षत्रों के अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी तक के स्वामी हैं। पुनः उत्तराफाल्गुनी से पूर्वाषाढ़ा तक ९ नक्षत्रों के यही स्वामी होते हैं पुनः उत्तराषाढ़ से भरणी पर्यन्त शेष ९ नक्षत्रों के भी यही स्वामी हैं। इस क्रम से एक ग्रह तीन नक्षत्र का स्वामी होता है॥ १७॥

षडाशासप्त धृतयो नृपा एकोनविंशतिः।
अत्यष्टिः सप्त च नखा उच्चे नीचेऽर्धमुच्यते॥१८॥
अस्मिंस्तु हरणं तस्मात्पूर्वस्मिंस्तु द्वयं हितम्।
अनयोः पापदायदावंते स्युरपमृत्यवः॥१९॥

क्रम से सूर्य का ६, चन्द्र का १०, भौम का ७, राहु का १८, गुरु का १६, शनि का १९, बुध का १७, केतु का ७ और शुक्र का २० वर्ष आयु की सीमा है, किन्तु ये जब अपने उच्च राशि में हो तो, नीच में हों तो उसका आधा हरण होता है॥ १८॥ पूर्व में कहे हुए पिंड ध्रुव-अंश-अष्टक वर्ग के आयु में शुभ पापग्रह जनित दोनों फल शुभ होते हैं, किन्तु नवांश-नक्षत्रायुर्दाय में पाप ग्रह के आयुर्दाय के आरम्भ और अन्त में अरिष्ट की सम्भावना होती है और शुभ ग्रह में शुभफल होता है॥ १९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आयुर्दायकथनेकारणं तथा भावायुर्दायसाधनञ्च-

द्वात्रिंशद्भेदभिन्नाऽयमायुषो निर्णयः कृतः ।
लोकयात्रा परिज्ञानहेतव दायनिर्णयः ।।२०।।
भावानां संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वः मुनिपुंगवः ।
आयुश्च परमं हत्वा स्वेन स्वेन बलेन च ।।२१।।

हे मैत्रेय ! मैंने लोक के सुख-दुःख को जानने के लिये ३२ भेद से युक्त आयु का निर्णय कहा।। २०।। इन ३२ प्रकारों के बाद आठवां भावों का आयुर्दाय कहता हूँ। पूर्वोक्त सात प्रकार के आयुर्दाय में से किसी एक को लेकर उसे अपने-अपने भाववल से गुणाकर।। २१।।

विभजेद्बलयोगेन भावानां दाय एव सः ।
अथवांशार्क्षदानेन वर्गेशानां बलेन तु ।।२२।।

भाववल समूह से भाग देने से जो लब्धि हो वही आयुर्दाय होती है। पुनः प्रकारांतर से नवमांशायुर्दाय से परमायुष्य को गुणन कर षड्वर्ग पतियों के बल से भाग देने से वर्षादि भावायुर्दाय होता है।। २२।।

स्थानाधैश्च समुद्भूतः षड्विधो दाय उच्यते ।।२३।।

इस प्रकार से भाव, नक्षत्र, नवांश, अष्टशवर्ग, अंश और षड्यंष ये ६ प्रकार के आयुर्दाय भेद कहे हैं।। २३।।

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे आयुर्दायकथने दशमोऽध्यायः।।१०।।

❖

अथायुष्ययोगा एकादशोऽध्यायः

आयुषः ह्रासवृद्धिःयोग-

आरार्की वक्रिणौ मृत्युश्चान्योन्यभवनस्थितौ ।
वेश्मषण्मृत्युरिःफस्थाः क्षीणेन्दूत्यत्तिपाष्टपाः ।।१।।

भौम-शनि वक्री होकर परस्पर एक दूसरे के गृह में हों तो मृत्युकारक होते हैं। यदि क्षीण चन्द्र लग्नेश और अष्टमेश ६।८।१२ स्थान में हों तो मृत्यु कारक होते हैं।। १।।

अष्टमस्था ग्रहाः सर्वे पापदृष्टियुतास्तु वा ।
भौममंदर्क्षगाश्चेतु शुभदृष्टिविवर्जिताः ।।२।।

अष्टम स्थान में पापग्रह से दृष्टयुत सभी ग्रह मृत्यु कारक होते हैं, यदि अष्टमस्थ ग्रह भौम-शनि के राशि में हों और शुभ ग्रह की दृष्टि से हीन हो तो मृत्युकारक होते हैं।। २।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आयुष्ययोगाः-

केन्द्रत्रिकोणे च शुभाश्च पापाः षष्ठे तृतीये च हिमृत्युसंस्थाः।
अष्टोत्तरं जीवति वर्षमायुर्नरो गुणाढ्यो नवतिः सुशीलः ॥३॥
लग्ने गुरौ दैत्यगुरौ चतुर्थे बुधे सुते षष्ठगते च सूर्ये।
स्थानं च शत्रोश्च मृतिं च हित्वा त्वन्ये स्थिताश्चेन्नवतिश्च षट्कः ॥४॥

शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हों तो १०८ वर्ष की आयुष्य होती है, पापग्रह ६।३ भाव में हों और आठवें भाव में कोई ग्रह न हों तो ९० वर्ष की आयु होती है॥ ३॥ लग्न में गुरु, चौथे भाव में शुक्र, बुध पाँचवें भाव में और छठे भाव में सूर्य हो तो ९० वर्ष की आयु, यदि चन्द्र, भौम, शनि ये तीनों ग्रह अपने शत्रुराशि और अष्टम भाव को छोड़कर अन्य स्थान में बैठे हों तो ९६ वर्ष की आयु होती है॥ ४॥

सुखादिकेन्द्रेषु गुरुः स्थितश्चेत्त त्पंचमे ज्ञे तु भृगौ तु षष्ठे।
षडुत्तरा सप्ततिरष्टयुक्ता त्वंशीतिरेकोत्तरतः प्रदिष्टा ॥५॥

चतुर्थ आदि केन्द्र में गुरु हों और गुरु से पाँचवें भाव में बुध हों तथा छठें भाव में शुक्र हो तो ७६ वर्ष की आयु होती है। सातवें भाव में गुरु हो और उससे पीछे भाव में बुध-शुक्र हों तो ८८ वर्ष की आयु होती है। तथा दशम भाव में गुरु हों और उससे ५।६ भाव में क्रम से बुध-शुक्र हों तो ८१ वर्ष की आयु होती है॥ ५॥

केन्द्रादिआयुष्यम्-

केन्द्रादिस्थाः शतं दद्युर्नवाष्टादींश्च दिग्गुणान्।
मिश्रं संयुज्य दलिता अनुपातेन वत्सराः ।।६।।

सभी ग्रह केन्द्र में हों तो १०० वर्ष की आयु, पणकर में हों तो ९० वर्ष की आयु और सभी अपोक्लिम हों तो ८० वर्ष की आयु होती है। यदि दो स्थान में ग्रह हों तो दोनों स्थान के आयु के योग की आधी आयु होती है॥ ६॥

शत्रुनीचसमांशेषु दिग्विधेषु न चेत्स्थिताः।
शतायुर्योगहीनास्तु सर्वे प्रोक्ता कलौ युगे ।।७।।

यदि तीन स्थानों में ग्रह हों तो तीनों के योग का तृतीयांश आयु वर्ष होता है। यदि उक्त दशाविध (३२ श्लो. ४ श्लो. ५ श्लो. ६ श्लो. में कहे हुए) आयुष्य में कोई न हो तो गणितागतायु लेना। कलियुग में सभी मनुष्य १०० वर्ष से अल्प आयु वाले होते हैं॥ ७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्वोक्तायुषे हानिः-

दायानां हरणं वक्ष्ये शृणुष्व मुनिपुङ्गव ।
आयुर्दाये तु हरणं षड्विधं संप्रकीर्त्यते ।।८।।

हे मैत्रेय ! आयु का हरण कहता हूँ उसे सुनो। वह हरण ६ प्रकार का होता है।। ८।।

व्ययादिहरणं पूर्वमस्तारिहरणं तथा ।
क्रूरोदयस्यहरणं चन्द्रयुक्तमस्तथा ।।९।।

१-१२वें भाव से सातवें भाव तक वाम, २-अस्तगत और ३-शत्रु-राशिगत का हरण, ४-लग्न में क्रूरग्रह का हरण, ५-चन्द्र सहित राहु का हरण और ६- व्ययस्थ पापग्रह- ये ६ प्रकार के आयु के हरण होते हैं।। ९ ।।

पापो व्ययस्थो हरति सर्वदायं द्विजोत्तम ।
अथ द्वित्रिचतुःपंचषडंशोनं क्रमादमी ।।१०।।

बारहवें भाव में पापग्रह हो तो सम्पूर्ण आयु की हानि, ग्यारहवें भाव में हो तो आयुष्य का आधा, दशम भाव में हो तो आयुष्य का तृतीयांश, नवम भाव में हो तो आयुष्य का चतुर्थांश, अष्टम भाव में हो तो आयुष्य का पाँचवाँ भाग और सातवें भाव में हो तो आयु का छठा भाग कम हो जाता है।।१०।।

लाभादिसंस्थिताः खेटा वामतः प्रक्रियां शृणु ।
हरन्ति सौम्याः प्रोक्तार्धं लग्नद्वादश संधिषु ।।११।।
पापश्चेत्सकलं हन्ति शुभो दलमथोत्तरम् ।
लग्नाद्द्वादशसंधौ च ग्रहान्यायान्विवर्जयेत् ।।१२।।

संधिगत पापग्रह हो तो ज्यों का त्यों हरण होता है। यदि शुभग्रह हो तो आंधा हरण होता है।। ११ ।। लग्न से आरम्भ कर द्वादश संधियाँ में पाप ग्रह हो तो संपूर्ण आयु और शुभग्रह हो तो आयु का आधा क्षय होता है। लग्न से द्वादश भाव की संधियों में पापग्रहों को घटा देवे।। १२ ।।

राश्यभावे तु भागादान् दाद्यघ्नान् षष्टिभाजितात् ।
दाये द्विघ्नो तु सौम्यस्य राशिरेको दलं यदि ।।१३।।

यदि राशि न हो तो अंशादि को उनकी आयु से गुणाकर ६० से भाग देवे, जो लब्ध अंशादि हो उसे संधि से घटाने से शेष आयुष्य का हरण फल होता है। यदि शुभग्रह के राशि का अभाव हो तो दायको दूना कर उससे दाय को गुणाकर ६० से भाग देकर लब्धि को संधि में घटाने से शेष आयुहरण फल होता है।। १३ ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अधिकेनापहृत्तत्तु क्रमाद्राशिं विना कृतम् ।
दायद्विगुणया सौम्यो लब्ध्वा वाऽपचये समाः ।।१४।।

इस प्रकार से लाया हुआ फल एक राशि का दूसरा दल का इनमें जो अधिक हो उसमें से न्यून को घटाना चाहिए, यह आयु के हरण में वर्ष होता है॥१४॥

बहवश्चेद्बली हन्ति समाश्चेत्प्रथमो मतः ।
अंशकग्रहयोगे च द्वयोः पापो हरत्युत ।।१५।।

उक्त प्रकार एक ग्रहयोग में कहा है यदि बहुत से ग्रह भावसंधि में हों तो जो सबमें बली हो वही आयु का हारक होता है। यदि दो ग्रह पापग्रह और शुभग्रह हों तो उसमें पापग्रह ही आयु का हरण करता है॥१५॥

सौम्योऽपि पापवर्गे च स्थितो रिष्फादिषट्सु चेत् ।
त्रिषु भावगतानां च पापानां करणं स्मृतम् ।।१६।।

यदि दोनों शुभग्रह ही होवें तो यदि वे पापवर्ग में होकर १२ भाव से आरम्भ कर ६ भाव के अन्दर हों तो आयुहारक होते हैं। इसी प्रकार भावगत बारहवें से ६ भाव के अन्दर पापग्रह हों तो उनमें केवल सूर्य, भौम, शनि ही हरणकारक होते हैं। उक्त भावगत पापग्रहों के फल का भी उत्पादन होता है॥१६॥

पूर्वोक्तफलस्य पुष्टिः-

कुटुम्बभरणं चापि दुश्चितं लाभमेव च ।
मेधां च प्रतिभां शान्तिं मंदक्रोधं करिष्यति ।।१७।।

यदि पापग्रह १२वें भाव में हो तो कुटुम्ब का पोषक होता है, ११ वें भाव में हो तो दुश्चित्त होता है। १०वें भाव में हो तो लाभ होता है। ९वें भाव में हो तो धारणात्मिका बुद्धि होती है। ८वें भाव में हो तो शान्ति का लाभ और ७वें भाव में हो तो थोड़ा क्रोध होता है॥१७॥

अस्तंगतग्रहस्य तथा च लग्नस्य आयुः-

अस्तंगतानां सर्वेषां दलं दायः स्मृतस्तदा ।
राशिसंख्यासमाश्चाब्दा लग्नेऽब्जेबलवत्तरम् ॥१८॥
अंशान् लिप्ताहतान् कृत्वा खखाक्षिभ्यां समाहृताः ।
शेषा मासादयः प्रोक्ता वर्त्तमानाब्दयोजने ॥१९॥

अस्तंगत सभी ग्रहों के आयु का आधा ही आयु शेष रहता है। यदि लग्न में चन्द्रमा हो और बलवान् हो तो लग्न के राशि के समान वर्ष

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लग्न की आयु होती है॥ १८॥ यदि लग्न में चंद्रमा न हो अथवा निर्बल हो तो लग्न के राशिको छोड़कर अंश को ६० से गुणाकर उसमें कला को जोड़कर २००से भाग देने से लब्धि वर्ष और शेष को १२ आदि से गुणाकर भाजक से भाग देने से मास आदि होते हैं। इस प्रकार आये हुए मासादि आयु में पूर्वोक्त वर्ष जोड़ देने से लग्न की वर्षादि आयु होतीहै॥ १९॥

लग्ने क्रूरग्रहे सति-

क्रूरे क्रूरोदयघ्नं तमष्टोत्तरशतैर्हृतम्।
लब्धं चापनये दाये स्वे तथा परमायुषि॥२०॥

लग्न में क्रूरग्रह हो तो लग्न के अंशादि को क्रूरग्रह के वर्तमान नवांश राशितुल्य अंक से गुणाकर १०८ का भाग देने से लब्ध वर्षादि को लग्न के आयु में घटाने से शेष लग्न की स्पष्ट आयु होती है॥ २०॥

स्वोच्चे मूलत्रिकोणे च लब्धस्यार्धं विवर्जयेद्।
मित्रेऽधिसुहृदि प्रोक्तं पादोनेनापनायनम्॥२१॥
भावेष्वेवं विधिः प्रोक्तो वर्गाणामधिपेषु च।
तिष्ठन्तौ शुभपापौ चेत्पापोदयविधिः स्मृतः॥२२॥

लग्न में पापग्रह अपने उच्च वा मूल त्रिकोण राशि का हो तो पूर्वोक्त विधि से प्राप्त वर्षादि का आधा ही परमायु में घटाना चाहिए। यदि पापग्रह अपने मित्र या अधिमित्र के गृह में हो तो लब्ध का चतुर्थांश घटाना चाहिए॥ २१॥ यह हरण प्रकार लग्न में क्रूरग्रह के रहने से ६ वर्गों के अधिपति क्रूरग्रह हों और लग्न में क्रूरग्रह न हो तब के लिये कहा है। यदि लग्न में शुभ-पाप दोनों हों तब भी पापग्रह का ही हरण करना और लग्न में पापग्रह अधिक हों तो जो उसमें जो अधिक बली हो उसी का हरण करना चाहिए॥ २२॥

अष्टमभावे केन्द्रे च शुभपापयोगे-

क्रूरेऽष्टमेऽष्टमांशेन भावस्याप्यनुपाततः।
लग्नाधिपेतराष्टांशं पापो हरति मृत्युगः॥२३॥
बहवश्चेद्बली सौम्यपापेष्वेवं विधिः स्मृतः।
तयोर्दायांतरं दायः केन्द्रस्य च विधीयते॥२४॥

अष्टम भाव में पापग्रह हो तो भाव के आयु का अनुपात द्वारा अष्टमांश का हरण होता है। किन्तु लग्नेश के आयु को छोड़कर अन्य ग्रहों के आयु का अष्टमांश हरण होता है॥ २३॥ बहुत से पापग्रह हों तो जो

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सबमें बली हो उसी का हरण होता है। पापग्रह, शुभग्रह दोनों हों तो दोनों के आयुष्य का अन्तर करके जो शेष रहे वही आयुष्य होता है। इसी प्रकार केन्द्रस्थ शुभ-पाप की स्थिति के अनुसार समझना॥ २४॥

राहुयुक्तचन्द्रस्यायुर्विचार-

सेन्दौ राहौ दशाराहोरानीता मूलदायवत्।
चन्द्रायुः पिंडतः शोध्या तद्राहुकरणं स्मृतम्॥२५॥
अंशदायक्रमेणैव तमसोऽब्दाः समीरिताः।
तस्मिन्सचन्द्रे तल्लग्नभावसाधनतस्ततः॥२६॥

चन्द्रयुक्त राहु हो तो पूर्वोक्तवत् दशा लाकर उसका पिंड बनाकर चन्द्रायु का पिंड बनाकर उसमें शोधन करने से शेष राहु का करण होता है। इस पर से पूर्वोक्तवत् अंशायु के अनुसार ही राहु का आयु वर्ष होता है॥ २५॥ लग्न में चन्द्रमा और राहु हो तो लग्न के ही समान आयु का साधन करना चाहिये॥ २६॥

तत्तद्दृष्टिहतं कृत्वा षष्ट्याप्तं धनशोधने।
सोदये च सराह्विंदावयं न्यायः समीरिताः॥२७॥

किन्तु राहु-चन्द्र दृष्टियों का परस्पर, गुणाकर ६० का भाग देने से जो फल आवे उसे मकरादि में धन और कर्कादि में ऋण करने से स्पष्टायु होती है। यदि लग्न में राहु के साथ चन्द्रमा हों तो वह विधि उचित है॥२७॥

द्रेष्काणवशात् हानि-वृद्धिः-

स्थानवृद्धिः क्षयः कार्यो द्रेष्काणर्क्षं सराशिकम्।
अस्तंगतानामर्धं स्याद्विना भृगुसुतं शनिम्॥२८॥

यदि लग्न की राशि और द्रेष्काण की राशि एक ही हो तो भावस्थ फल की वृद्धि होती है और दोनों की भिन्न राशि हो तो भावफल की हानि होती है। शुक्र और शनि को छोड़कर अन्य अस्तंगत ग्रहों के आयु के आधे का ह्रास होता है॥२८॥

तयीर्वेदांशहीनं स्यादल्पांशोनं शत्रुगस्य तु।
अंगारकं वर्जयित्वा शत्रुक्षेत्रगतैर्ग्रहैः॥२९॥

यदि शुक्र-शनि अस्त हों तो इनके आयु का चतुर्थांस ह्रास होता है। भौम को छोड़कर शेष शत्रु क्षेत्री ग्रहों की आयु का तृतीयांश ह्रास होता है। यदि ग्रह मित्रवर्ग का हो तो तृतीयांश के आधे की ही हानि होती है॥ २९॥

सुहृद्वर्गगतानां तु तद्बलं हरति स्वकम्।
एवं भावेषु सर्वेषु षिड्वधं हरणं न हि॥३०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इस प्रकार सभी भावों के ६ प्रकार के हरण नहीं होते, किन्तु ग्रहों के ही होते हैं॥ ३०॥

अष्टवर्गोत्पन्नांशायुषि हरणम्-

हरणं नैव कर्त्तव्यं मंदादायेऽष्टवर्गगे।
स्वोच्चे च त्रिगुणं प्रोक्तं स्ववर्गे द्विगुणं तथा॥३१॥

अष्टवर्ग से उत्पन्न अंशायु में हरण नहीं करना, किन्तु ग्रह उच्च में हो तो आयुको त्रिगुणित कर देना, अपनी राशिमें हो तो दूना करना॥ ३१॥

अधिमित्रगृहे सार्धं त्र्यंशं मित्रगृहे युतम्।
अरावध्यरिभावे च त्र्यंशखंडविवर्जितम्॥३२॥

अधिमित्र के गृह में हो तो आयु का आधा उसमें और जोड़ देना, मित्र के गृह में हो तो तृतीयांश जोड़ देना चाहिए॥ ३२॥

अष्टवर्गोत्थदायेषु प्रोक्तोऽयं विधिरंजसा।
भावदायेषु सर्वेषु प्रोक्तोऽयं विधिरुत्तमः॥३३॥

यदि शत्रु के गृह में या अधिशत्रु के गृह में हो तो आयु का तृतीयांश घटा देना यह विधि अष्टवर्गायु और सभी आयु के साधन में उत्तम है॥ ३३॥

अन्तर्दशाप्रकारः-

दायगस्य तु सर्वस्य सहगस्य दलं भवेत्।
सुतधर्मगयोस्त्र्यंशं पादं मृतिसुखस्थयोः॥३४॥

ग्रह के आयुष्य के तुल्य ही वर्षादि उसकी दशा होती है, उसमें ग्रह के साथ रहने वाले ग्रह के दशापति की आयु के आधा वर्षादि अंतर्दशा होती है। दशापति से ५।६ भाव में ग्रह की आयु के तृतीयांश के तुल्य और आठवें चौथे में स्थिर ग्रह की आयु की चतुर्थांश अन्तर्दशा होती है॥ ३४॥

सप्तांशं सप्तमस्थस्य प्रक्रिया प्रोच्यतेऽधुना।
अंशान्परस्परहताञ्छेदेनैव विभाजितम्॥३५॥

जो सातवें भाव में हो वह सप्तमांश हरण करता है॥ ३५॥

तत्तदंशविभक्तं च स्वस्य स्वस्य समं भवेत्।
नीचार्धपक्षे सर्वत्र विधिरेष विधीयते॥३६॥

परस्पर अंश और छेदों का समच्छेद करके आयु को गुणाकर छेद से भाग देने से क्रम से अन्तर्दशा का वर्षादि आ जाता है॥ ३६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

समच्छेदाभावस्थानम्-

नीचाभावेऽष्टवर्गस्थं भावदायेंऽशकक्रमे ।
नायं विधिस्स्मृतस्तत्र बहवश्चेत्तु तेऽखिलम् ।।३७।।

पूर्वोक्त हरण विधि नीच रहित, अष्टवर्गायु तथा अंशक क्रम में नहीं करना, यदि उक्त विषयमें अनेक ग्रह हों तो वे सम्पूर्ण आयुको देते हैं।३७।

केन्द्रादिगा ग्रहाः सर्वे ददत्येवापहृत्य च ।
अर्धत्र्यंशं च पादं च हरणाभावसम्मतौ ।।३८।।

सभी ग्रह केन्द्रादि स्थानों में अर्थात् केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम में क्रम से आधा, तृतीयांश और चतुर्थांश तुल्य आयुका ह्रास करते हैं।। ३८।।

अंतर्दशा के नियम

सर्वद्वित्रित्रिवेदाशश्च त्रिषटसप्ताष्टपाणयः ।
स्वर्क्षहोरादृक्काणेशास्त्रिंशांशेशांद्रिभागपाः ।।३९।।

यदि अन्तर्दशेश अपने राशि में हो तो सम्पूर्ण आयु का भोग करता है। यदि वही होरेश हो तो आयुष्य का आधा, द्रेष्काणपति हो तो तृतीयांश, त्रिशांशपति हो तो तृतीयांश, सप्तमांश पति हो तो।। ३९।।

नवार्ककालहोरेशाः षष्ठांयंशेशकलांशपौ ।
भुञ्जन्ते च क्रमात्सर्वे त्वन्तर्दायविधौ तथा ।।४०।।

चतुर्थांश, नवांशपति हो तो तृतीयांश, द्वादशांश का अधिपति हो तो षष्ठांश, काल होरेश हो तो सप्तांश, षष्ट्यांश का स्वामी हो तो अष्टमांश और षोडशांश का स्वामी हो तो द्वितीयांश भोग करता है। इस प्रकार से सभी अन्तर्दशा के स्वामी भोग करते हैं।। ४०।।

ग्रहात्भावात्ततस्तस्मात्स्थितानां द्वादशस्वपि ।
भावानां चक्रमात्प्रोक्ताभागांशाश्च स्वयंभुवा ।।४१।।
सर्वद्विवेदसप्ताष्ट - षट्त्रिरत्नदिशाद्रयः ।
वेदांगा हारका एव ग्रहाणां समुदीरिताः ।।४२।।

ग्रहों से भावों से बारहों स्थानों के भागांश को ब्रह्माजी ने कहा है।। ४१।। वह इस प्रकार है- तनु आदि भावों का क्रम से सम्पूर्ण, आधा, चतुर्थांश, सप्तांश, अष्टमांश, षष्ठांश, तृतीयांश, नवांश, दशांश, चतुर्थांश और बारहवें भाव का षष्ठांश यह ग्रहों के हारक भाग कहे गये हैं।। ४२।।

हत्वा दायबलैः स्वैस्तु बलं योगेन भाजयेत् ।
आयव्यये तु भावानां ग्रहाणां वियदादिषु ।।४३।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

लाभ और व्यय भाव में हरण करने से जो शेष आय हो उसे अपने-अपने बल से गुणाकर सर्वबल योग से भाग देने से जो प्राप्त हो वह लाभ और व्यय भाव का अन्तर्दशा का स्वरूप होता है॥ ४३॥

सर्वद्धित्रीषु वेदत्रिपंच सप्त ततः क्रमात्।
स्थानांतरे तु भागांशाः सर्वभावेषु कीर्त्तिताः॥४४॥

और तीसरे भाव से दशम भाव पर्यन्त भावों के क्रम से संपूर्ण, आधा, तृतीयांश, पंचमांश, सप्तमांश और शेष दो भावों (प्रथम-द्वितीय) में क्रम से सम्पूर्ण और आधा भागांश होता है॥ ४४॥

सर्वत्रिसप्तरामेषु षट् त्र्यग्निद्वियमाः क्रमात्।
कालांशा अर्धहोरांशाः पतयोऽर्धहरा यथा॥४५॥

सर्व, तृतीयांश, सप्तांश, तृतीयांश, पंचमांश, षष्ठांश, तृतीयांश, द्वितीयांश, ये कलांश और अर्धहोरांश पति होते हैं॥ ४५॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे एकादशोऽध्यायः॥११॥

अथ द्वादश-आयुर्दायप्रकरणाध्यायः

पिंडायुषि भेदानि-

ग्रहेषु सर्वेषु बलोत्तरेषु स्वोच्चांशगेषु प्रबलस्य वर्गे।
दिग्वीर्य चेष्टाबलपूर्त्तियुक्तैपैण्ड्येषु नीचार्ध कृतापहाराः॥१॥

पूर्व में कहे हुये पिंडायु के १२ भेद (१० अध्याय १ श्लो०) में नीचार्धादि अपहार से॥ १॥

अष्टत्रिंशद्भिदाः संतिताःस्वोच्चादिसु संस्कृताः।
लग्नादिभावगानां च ग्रहाणां स्थितिभेदतः॥२॥
द्विघ्नाश्चतुरशीतिश्च भिदाः संति द्विजाश्रमं।
वोच्चादिस्थिति भेदेन भिन्नाः सूर्येषुभूमयः॥३॥

३८ भेद होते हैं किन्तु सभी ग्रह बलीं हों और स्वोच्चांश, दिग्वीर्य, चेष्टा बल आदि से युक्त हों और संस्कृत हों तो ३८ भेद होता है, यदि अपने उच्चादि से संस्कृत हों तो ७६ भेद होता है। लग्नादि द्वादश भाव में ग्रहों की स्थिति भेद से॥ २॥ ८४ भेद होते हैं। हे द्विज! स्व उच्चादि स्थिति भेद से १५१२ भेद होते हैं॥ ३॥

आयुषः ग्रहणे नियमः-

सलग्नानां बलैः सवैरधिकानां क्रमाद्द्विज।
अंशोद्भवस्तथा पैंड्यो निसर्गोत्थाभिधः परः॥४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हे मैत्रेय! लग्न बली हो तो अंशायुर्दाय लेना चाहिये, सूर्यबली हो तो पिंडायु, चन्द्रमा बली हो तो निसर्गायु॥ ४॥

शतस्वरांशो भौमाच्च नक्षत्रांशकसंज्ञकौ।
स्वरांशचेतरो दायः करदायस्तथेतरः॥५॥

भौम बली हों तो शतस्वरांशायुर्दाय, बुध बली हो तो नक्षत्रायुर्दाय, गुरु बली हों तो नवांशायुर्दाय, शुक्र बली हों तो स्वरांशायुर्दाय और शनि बलवान् हों तो करदाय लेना चाहिये॥ ५॥

विशेषः-

स्वोच्चनीचसुहृच्छत्रुवर्गगैश्च चतुर्विधः।
अतिनीचातिशत्रोश्च भागराशिगतस्य च॥६॥

स्वोच्चवर्ग में पिंडायु, स्वनीचवर्ग में निसर्गायु, त्रिवर्ग में तो स्वरांशायु, शत्रुवर्ग में नक्षत्रायु, अति नीच नवांश में हो तो समुदायाष्टक वर्गायु, अति शत्रु नवांश राशि में भिन्नाष्टक वर्गायु लेना चाहिये॥ ६॥

समुदायाष्टवर्गश्च भिन्नाष्टक उदीरितः।
तत्र मूलत्रिकोणे च भिन्नवर्गे च वृद्धिकृत्॥७॥

यदि ग्रह मूलत्रिकोणादि त्रिवर्ग में हो तो पूर्वोक्त रीति से वृद्धि करना नीच शत्रुवर्ग में हो तो हानि करनी चाहिए। सम-शत्रुवर्ग में स्थित ग्रह के आयुष्य में हानि-वृद्धि नहीं करनी चाहिये॥ ७॥

तथा समारिवर्गे च न वृद्धिहरणे तथा।
सूर्यादयः क्रमाल्लग्नगताश्चेद्बलवत्तराः॥८॥
पैंड्यो ध्रुवोऽष्टवर्गोत्थः प्रक्रमानुगतोंऽशकः।
करदायः क्रमाल्लग्ने रव्यादौ तु स्थिते सति॥९॥

यदि सूर्यादिग्रह अत्यन्त बलवान् होकर लग्न में बैठे हों तो क्रम से पिंडायु, ध्रुवायु, समुदायाष्टकवर्गायु, भिन्नाष्टकवर्गायु, प्रक्रमायुगत, अंशकायु और करायु लेना चाहिये॥ ८॥ यदि सूर्यादि अपने उच्च राशि के लग्न में हों तो पिंडायु, मूलत्रिकोण राशि के हों तो स्वरांशायु, स्वराशि के हों तो ध्रुवायु, अधिमित्र राशि के हों तो प्रकमायु॥ ९॥

पैंड्यः स्वरांशो ध्रुवदाय एवं तत्प्रक्रमांशश्च तथांशकोत्थः।
भिन्नाष्टवर्गः समुदायसंज्ञः करोत्थ उच्चादिषु योजनीयः॥१०॥

मित्रक्षेत्र के हों तो अंशायु, शत्रुक्षेत्र के हों तो भिन्नाष्टकवर्गायु अतिशत्रुक्षेत्र के हों तो समुदायाष्टकवर्गायु, स्वनीच के हों तो अंशायुर्दाय लेना चाहिये और समराशि के हों तो अभाव समझना चाहिये॥ १०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by eGangotri Foundation

भावानुसारेणायुर्विचारः-

ध्रुवः सुखस्थस्य तु सप्तमस्य पैंड्यः स्वरांशः खलु कर्मगस्य।
द्वितीयसंस्थस्य च पैंड्य उक्तस्तृतीयधीधर्मगतस्य चैव॥११॥

लग्न से चतुर्थभावस्थ ग्रह का ध्रुवायु लेना, सप्तमस्थ का पैंड्य दशमस्थ और द्वितीयभावस्थ का स्वरांशायु, तृतीय पञ्चम, नवमस्थ का पिंडायु॥ ११॥

षष्ठव्ययस्थस्य तु भिन्नसंज्ञस्तथेतरो मृत्युदगतस्य चैवम्।
पैंड्यः स्वरांशौ ध्रुव आय उक्तः पैंड्योभवेदायगतस्य चैव॥१२॥

षष्ठस्थ व्ययस्थ का भिन्नवर्गायु, मृत्युगतस्थ का समुदायाष्टवर्गायु, एकादशस्थ का पिंडायु, स्वरांश-ध्रुवायु में से किसी एक को लेना और लग्नस्थ का पिंडायु लेना चाहिये॥ १२॥

मिश्रायुर्दायक्रम-

लाभे रवींद्वोरबुधेज्यशुक्रमंदाः स्थिताः प्रकमदाय एव।
लग्नार्यभौमज्ञरवीन्दुमन्दशुक्रास्तृतीये सुतभे च धर्मे॥१३॥
स्वे शुक्रमंदार्यबुधार्कभौमचन्द्राः सुखेऽस्ते निधनेऽपि चैव।
बुधात्क्रमात् व्युत्क्रमतश्च चन्द्राद्भौमार्कमंदार्यसितज्ञचन्द्राः॥१४॥

एकादश भाव में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, ये मिश्रायु देनेवाले होते हैं। लग्न, तृतीय, पञ्चम और नवम भाव में क्रम से गुरु, भौम, बुध, सूर्य, चन्द्र, शनि, शुक्र आयुर्दायक, दूसरे घर में शुक्र, शनि, गुरु, बुध, सूर्य, भौम, चन्द्र आयुर्दायक चौथे भाव में बुध, सूर्य, भौम, चन्द्र, शुक्र, शनि, गुरु आयुर्दायक, सप्तम में चन्द्र, भौम, सूर्य, बुध, गुरु, शनि, शुक्र आयुर्दायक, आठवें भाव में भौम, सूर्य, शनि, गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र आयुर्दायक होते हैं॥ १३-१४॥

षष्ठे व्यये कर्मणि लाभगे वा रवीन्दुशुक्रार्किकुजार्यसौम्याः।
सौम्यात्कुजाद्भार्गवतः क्रमात्स्युर्मिश्रे तु दाये क्रमशःप्रदिष्टम्॥१५॥

षष्ठ भाव में सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि, भौम, गुरु, बुध, आयुर्दायक, १२वें भाव में बुध, सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि, भौम, गुरु आयुर्दायक, १०वे भाव में भौम, बुध, गुरु, बुध, सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि आयुर्दायक, ११वें भाव में शुक्र, शनि, भौम, गुरु, बुध, सूर्य चंद्र आयुर्दायक होते हैं॥ १५॥

आयुर्दायस्य संख्या-

नक्षत्रदायोंऽशकपिंडदायो भिन्नाष्टवर्गः समुदायसंज्ञः।
स्वरांशदायौ क्रमशःप्रदिष्टौ विशेषतस्तत्र वदामि सम्यक॥१६॥

CC-0. J. K. Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नक्षत्रायु, अंशायु, पिंडायु, भिन्नाष्टकवर्गायु, समुदायाष्टकवर्गायु, शतस्वरांशायु, स्वरांशायु और नवमांशायु ये आयुर्दाय के प्रकार हैं। इसमें किस आयु के कितने भेद हैं उसको विशेष रूप से कह रहा हूँ॥ १६॥

अमिश्रायुषो भेदः-

अष्टत्रिंशदमिश्रे तु अंकसूर्यकलांशकैः।
मूर्छाक्षिणी भिदाःसंतिरश्मिजास्त्रिंशदेव हि॥१७॥

अमिश्रायु के ३८ भेद होते हैं उसमें भी नवमांश, द्वादशांश और षोडशांशके भेद से २२१ भेद होते हैं। रश्मिजायु के ३० भेद होते हैं॥१७॥

एकस्य विषये द्वौ चेदाययोगदलं भवेत्।
त्र्यादयश्चेतास्त्र्यादिसंख्याप्ताश्च दशा भवेत्॥१८॥

एक ही भाव में दो आयुष्य देनेवाले ग्रह हों तो दोनों के आयु के योग का आधा ग्रहण करना चाहिये और तीन आदि हों तो सभी के आयु के योग को ग्रह संख्या से भाग देकर आयु लेना चाहिये और वही दशा का मान होता है॥ ८॥

पिंडायुषः भेदः-

स्वावुच्चगते चान्ये बलिष्ठा मूलकोणगाः।
स्वोच्चस्थेषु बलिष्ठेषु सर्वेषु शशहंसके॥१९॥
एवं चिरायुषां योगेष्वन्येषु गणितेषु च।
चन्द्रयोगेषु त्रिषु च चन्द्रे तु बलवत्तरे॥२०॥

यदि सूर्य अपने उच्चराशि में हो शेष ग्रह बलवान् हों वा अपने-अपने मूलत्रिकोण में हों वा सभी ग्रह बलवान् हों अपने उच्चराशि में हों, शशयोग, हंसयोग॥ १९॥ और दीर्घायु योग अन्य दीर्घायु योगकारक योगों मे सुनफा अनफा दुरुधरा योग जो चन्द्रमा से होते हैं॥ २०॥

राजयोगेषु सर्वेषु पैंड्यमाह पराशरः।

और चन्द्रमा बलवान् हो तो पिण्डायु लेना, ऐसा पराशर का मत है।

प्रकारान्तरेण-

लग्ने गुरौ कर्मगते च भानौ चन्द्रे सुखे वास्तुगते बलिष्ठे।
पूर्णे त्रिकोणोपचये शुभेषु पापेष्वथात्रोक्तमसंस्थितेषु॥२१॥

गुरु लग्न में हो, १०वें भाव में सूर्य हो, पूर्ण चन्द्रमा ४ भाव में वा ७वें भाव में हो और बलवान् हों, शुभग्रह ५।९।३।६।१०।११ भाव में और पापग्रह १।२।१२।८ भावों में हों॥२१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुभाश्च केन्द्रे त्रिषडायभेऽन्ये विपर्यये पैंड्यमतः प्रदिष्टम् ।
रिःफाष्टषष्ठेषु सहस्ररश्मौ भौमे क्रमाच्छीतकरे तु पैण्ड्यः ॥२२॥

अथवा शुभग्रह केन्द्र और ३।६।१०।११ भावों में और पापग्रह इससे भिन्न स्थान में हों तो पिंडायु लेना चाहिये अथवा १२।८।६ भाव में क्रम से सूर्य, भौम और चन्द्रमा हों तो पिंडायु लेना चाहिये॥ २२॥

पापा लग्ने चाष्टमे सप्तमे वा सौम्याः षष्ठे कर्मभे रिष्फभे वा।
नीचाभावे पैंड्यदायःप्रदिष्टो मंदे लग्ने स्वोच्चगे च ध्रुवाख्यः॥२३॥

अथवा पापग्रह १।८।७ भाव में और शुभग्रह ६।१०।१२ भाव में अपने नीच राशि को छोड़कर हों तो पिंडायु लेना चाहिये। यदि शनि अपने उच्चराशि का (तुलाराशि) होकर लग्न में हो तो ध्रुवायु लेना चाहिये॥ २३॥

विशेषः-

वीणायां कार्मुके चक्रे गदायामर्धचन्द्रके ।
रवौ पैंड्यांशको लग्ने ध्रुवश्चन्द्रे च भूमिजे ।।२४।।

वीणा, कार्मुक, चक्र, गदा, अर्धचन्द्र योगों में कोई योग हो और सूर्य बलवान् हो तो पिंडायु लेना चाहिये। लग्न बली हो तो अंशायु, चन्द्र बली हो तो ध्रुवायु॥ २४॥

भिन्नाष्टवर्गः सौम्ये तु नक्षत्रांशसमुद्भवाः ।
गुरौ नक्षत्रदायः स्यात्प्रक्रमानुगतः सिते ।।२५।।

भौम बली हो तो भिन्नाष्टकवर्गायु, बुध बली हो तो नक्षत्रायु, गुरु बली हो तो नक्षत्रायु, शुक्र बली हो तो प्रक्रमानुगतायु लेना चाहिये॥ २५॥

समुदायाष्टवर्गस्तु मन्दे तु बलवत्तरे ।
वाप्यां पाशे शरे पद्मे समुद्रार्किषु कमात् ।।२६।।

शनि बली हो तो समुदायाष्टकवर्गायु लेना चाहिये। वापी, पाश, शर, पद्म, समुद्र इनमें कोई योग हो तो सूर्यादि ग्रहों में जो बलवान् हो॥ २६॥

बलिष्ठेषु नवांशोत्थो ध्रुवः पैड्यः स्वरांशकः ।
भिन्नाष्टवर्गो ह्यंशोत्थो नक्षत्रांशक ईरितः ।।२७।।

उसकी क्रम से नवांशायु, ध्रुवायु, पैंड्यायु, स्वरांशाकायु, भिन्नाष्टकायु, अंशायु और नक्षत्रांशायु को लेना चाहिए॥ २७॥

रज्जौ विहंगे मालायां नले च मुसले क्रमात् ।
पैंड्यों ध्रुवः क्रमात्प्रोक्तो रव्यादौ बलवत्तरे ।।२८।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रज्जु योग हो तो पिंडायु, विहंग योग हो तो ध्रुवायु, माला योग हो तो पिंडायु, नल योग हो तो ध्रुवायु और मुशल योग हो तो पिंडायु लेना चाहिये॥ २८॥

प्रकारान्तरेण-

गण्डं शक्तौ च शकटे यूपे केदारशूलयोः।
प्रक्रमानुगतश्चाथः रश्मिजौ ध्रुवसंज्ञितौ॥२९॥

गंड योग हो तो प्रक्रमायु, शक्तियोग हो तो रश्मिजायु, शकट योग हो तो ध्रुवायु, यूप योग हो तो अंशायु, केदारयोग हो तो भिन्नाष्टकवर्गायु॥ २९॥

अष्टवर्गसमुद्भूतौ क्रमादेवं बलोत्तरे।
नौछत्रवज्रदामाख्ये स्वरदायोऽतिनीचगे॥३०॥

शूल योग हो तो समुदायाष्टकवर्गायु सूर्यादि के बली होने से लेना चाहिए। सूर्यादि अत्यन्त नीच में हों और नौका, छत्र, वज्र, दाम योग हो तो स्वरांशायु लेना चाहिये॥३०॥

योगान्तरम्-

कूटे गंडे शरे नागे गोले शृंगाटके पुनः।
कालकूटे क्रमात्प्रोक्ता पैंडाद्याः सप्त वै द्विज॥३१॥

हे मैत्रेय! कूट, गंड, शर, नाग, गोल, शृंगाटक और कालकूट योग हो तो क्रम से पिंडादि सात ही आयु को लेना॥ ३१॥

पैंड्यास्त्रयो ध्रुवाश्चांशदायाश्चाष्टकवर्गकौ।
द्रेष्काणेषु नवांशेषु द्वादशांशेषु च क्रमात्॥३२॥
कलांशेषु नव प्रोक्त दायाश्चैव. पुनः पुनः।

लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो पैंड्य, दूसरा हो तो ध्रुवायु और तीसरा हो तो स्वरांश आयु लेना, नवांश में ध्रुवादि नव आयु लेना। द्वादशांश में अंशायु आदि लेना। कलांश (उच्चादि नव स्थानों में) भिन्नाष्टक-वर्गायु आदि आयु लेना चाहिए॥ ३२॥

रश्मिवशेनायुर्ग्रहणे नियमः-

त्रिंशत्खवेदा स्वरपाचकाश्च सुराश्च दंताः क्षितिपावकाश्च॥३३॥

यदि जन्म समय ३०।३४।३७।३३।३२।३१॥३३॥

षड्त्रिंशदिष्वग्नय एव भानि छन्दांसि मूर्छाश्च जिनाः कराश्चेत्।
पैंड्यास्तथा द्वादशधा प्रभिन्नाः क्रमेण दायो नियतः प्रदिष्टः॥३४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by eGangotri and SL, USA

३६।३५।२७।२६।२१।२४ इनमें से किसी संख्या के तुल्य रश्मि संख्या हो तो पिंडायुर्दाय लेना चाहिये॥ ३४॥

तत्त्वाग्नि नन्दाग्नय एव रत्नदस्रास्त्रिदस्रा ध्रुवदायभेदाः।
एकास्त्रयश्चेत्समुदायसंज्ञस्ततस्तु वेदा इतरोऽष्टवर्गः॥३५॥

यदि रश्मि संख्या २५।३६। २६।३३ हो तो ध्रुवायुष्य लेना चाहिये। यदि रश्मि संख्या १।२।३ में कोई हो तो समुदायाष्टकवर्गायु लेना चाहिये। यदि ४ रश्मि हो तो भिन्नाष्टकवर्गायु लेना चाहिये॥ ३५॥

पञ्चादिकेष्वंशकदाय उक्तो रुद्राश्च सूर्या यदि पैंड्य आद्यः।
विश्वे मनुश्चेत्स्वरभागदायो नक्षत्रदायास्थितिसंज्ञकश्चेत्॥३६॥

यदि ५।६।७।८।६।१० रश्मि में कोई हो तो अंशायु लेना चाहिये। यदि ११ या १२ रश्मि हो तो प्रथम पिंडायु लेना चाहिये। यदि १३ या १४ रश्मि हो तो स्वरांशायु लेना चाहिये। १५ रश्मि हो तो नक्षत्रायु लेना चाहिये॥ ३६॥

नृपेऽत्यष्टिचये प्रोक्ता आद्यपैंड्यभिधास्तथा।
प्रक्रमानुगतो विंशत्यष्टत्रिंशेऽष्टवर्गजः॥३७॥
चत्वारिंशत्त्रये पैंड्यो नक्षत्रांशस्त्रये ततः।
शेषेषु षट्सु पैंड्यः स्यादाद्यो गर्गोऽयमाह च॥३८॥

यदि १६।१७।१८।१६ रश्मि हो तो प्रथम पिंडायु लेना चाहिये। २० रश्मि हो तो प्रक्रमायु लेना चाहिये।।३८ हो तो अष्टवर्गायु लेना चाहिये॥ ३७॥ ४०।४१।४२ रश्मि हों तो पिंडायु लेना चाहिये। ४३। ४४।४५ रश्मि हो तो नक्षत्रायु लेना चाहिये। २२।२८।४६।४७। ४८।४६ रश्मि हो तो पिंडायु लेना चाहिये॥ ३८॥

इष्टरश्म्यधिकप्रोक्तक्रम एव कराधिके।
केन्द्रादिषु ग्रहाणां च बलोत्तरवशात्क्रमः॥३६॥

यह रश्मि-आयु गर्ग ने मुझसे कहा था॥ ३६॥

पूर्वोक्तायुषः पुष्टिमाह-

बलोत्तरवशादेव स्थानोतरवशात्तथा।
इष्टात्फलक्रमादेव रश्म्युक्तविधिना क्रमात्॥४०॥

इस आयुर्दाय के भेद को मित्रादि स्थान के बल के तारतम्य से इष्ट क्रम के बल योग से रश्मि के निमित्त से मैंने कहा है॥ ४०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कल्पादौ भगवान्गर्गः प्रादुर्भूतो महामुनिः ।
ऋषिभ्यो जातकं सर्वमुवाच कलिमाश्रितः ।।४१।।

कल्पादि में गर्ग मुनि अपने शिष्यों को कहे थे और कलि के आदि में पुनः प्रकट होकर अपने शिष्यों को कहेंगे॥ ४१॥

अस्मिन्तूत्तरभागे च भयानुक्तं च यद्भवेत् ।
तत्सर्व गर्गहोरायां मैत्रेयत्वं विलोकय ।।४२।।

हे मैत्रेय ! इस उत्तर भाग में मैंने जो नहीं कहा है, उसे तुम गर्गजी की कही हुई गर्ग होरा में देखना॥ ४२॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरभागे आयुर्दायाभिधो द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

❖

अथ भाग्यादि-त्रयोदशो-फलाऽध्यायः

भाग्यं कर्म च वक्ष्यामि मैत्रेय ऋषि सुव्रत ।
भाग्यादेव नृणां सिद्धिर्भाग्यादेव धनायती ।।१।।

हे सुव्रत मैत्रेय! अब मैं इस अध्याय में भाग्य (वैभव) कर्म (शुभ-धर्म-कर्म) कहूँगा तुम सुनो; क्योंकि भाग्य से ही मनुष्यों को सिद्धि (संपूर्ण कार्यों की सिद्धि) होती है॥ १॥

यशांसि भाग्यतो भाग्यविपर्यासाद्विपर्ययः ।
करिष्यमाण कर्माणि ज्ञातव्यानि प्रयत्नतः ।।२।।

भाग्य से ही द्रव्य और प्रभाव का लाभ, भाग्य से ही कीर्त्ति का लाभ होता है, भाग्य विपरीत होने से उक्त पदार्थों का नाश होता है। अतः किये हुए कर्म भाग्यसूचक हैं अथवा अभाग्यसूचक हैं– इसको प्रयत्न से जानना चाहिये॥ २॥

विचारस्य रीतिः-

लग्नादिन्दोश्च नवमं भाग्यं बलवशाद्भवेत् ।
शुभपापादिमित्राख्यैर्ग्रहैरेवं शुभाशुभैः ।।३।।

लग्न और चन्द्रमा से ९ स्थान को भाग्य स्थान कहते हैं, इन दोनों में जो बलवान् हो उससे नवम स्थान लेना चाहिये॥ ३॥

उच्चादि पंचकाद्वृद्धिरन्यसमाद्धानिरिष्यते ।
स्वस्मिन्नन्यत्र विषये स्वदेशेतरदेशयोः ।।४।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इस स्थान में अपने उच्चादि पाँच स्थान में (उच्च, त्रिकोण, स्वर्क्ष, मित्र, अधिमित्र) होकर शुभ या पाप ग्रह बैठे हों या देखते हों तो भाग्य की वृद्धि होती है। अन्यथा (सम, शत्रु, अधिशत्रु, नीचस्थान में हों) तो भाग्य की हानि होती है। यदि भाग्येश अपने वर्ग में हो तो स्वदेश में भाग्योदय होता है अन्य के वर्ग में हो तो परदेश में भाग्योदय होता है॥ ४॥

दशवर्गरीत्या भाग्योदयस्य विचारः-

स्वेष्वन्येषु तु वर्गेषु ज्योतिर्विद्दशसु स्थितैः।
अद्यंशोराशिलिप्तायाः सप्तांशः संप्रकी र्त्तितः॥५॥

हे ज्योतिर्विद् ! दशवर्गों में यदि भाग्यस्थित ग्रह अपने वर्ग में हों तो स्वदेश में अन्यथा परदेश में भाग्योदय होता है। ग्रह के राशि अंश की कला बनाकर उसमें सात से भाग देने से लब्ध सप्तांश॥ ५॥

अष्टादशर्क्षकांशस्तु कलांश इति कीर्त्तितः।
षष्ट्यंश एवं षष्ट्यंशः क्रमेण पतयः स्मृताः॥६॥

१८ से भाग देकर उसमें पुनः १२ का भाग देने से लब्ध षोडशांश होता है। ६० से भाग देने से जो लब्ध हो उसे षष्ट्यंश कहते हैं॥ ६॥

भाग्यत्रिकोणोपगतैः शुभं स्याद्भाग्यंतु केन्द्रोपगतैः शुभैश्च॥७॥

लग्न और चन्द्र से जो नवम स्थान है उससे ५।९।१।४।७।१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो शुभद भाग्य होता है॥ ७॥

पापैस्तथा स्यादशुभं च भाग्यं मित्रादिभिः स्यान्नियमो विशिष्टात्॥८॥

पापग्रह हों तो अशुभ भाग्य होता है। ग्रह मित्रादि ग्रहों में हो तो अत्युत्तम और नीचादि में हो तो निकृष्ट फल होता है॥ ८॥

भाग्योदयसमयः-

एवं भाग्यविपर्यासौ भावानां च वदेत्तथा।
भावग्रहांतरकला द्विशत्याप्ताः समादयः॥९॥
द्विस्थापिताः करघ्नाश्च षष्ट्याप्ताः समादयः।
अथेष्टादिफलघ्नं च समयो भाग्यभावयोः॥१०॥

भाव और ग्रह का अन्तर करके उसका कला बनाकर उसमें २०० का भाग देने से वर्ष, मास, दिनादि होता है॥ ९॥ इसे दो जगह रखकर एक जगह दो से गुणाकर ६० से भाग लेने से जो वर्षादि फल प्राप्त हो उसका और पूर्वस्थापित फल का गुणा करने से जो वर्षादि प्राप्त हो उसी वर्षादि में (भाग्योदय को समय समझना चाहिये॥ १०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकारांतरेणः-

फलेन च दशघ्नेन रश्मिना च हृतास्तथा।
भावाष्टवर्गोत्थ समाहतं तद्ग्रहांतरोत्थास्तु समादय स्युः।।११।।

अथवा ग्रह और भाव का अन्तर करके शेष को १० से गुणाकर उसमें ग्रह के रश्मि से भाग देने से लब्ध वर्षादि में भाग्योदय कहना।। ११।।

तत्तग्रहोत्थाब्दहतास्तथा स्युरेवं तथा भाग्यफलानि तत्र।
स्थानानि नववर्गाश्च तेषां भाग्यफलं शृणु।।१२।।

अथवा अष्टवर्गोत्थ वर्षों से भाग्योदय कहना। इसी प्रकार सभी भावों के फल प्राप्ति का समय निश्चित करना चाहिये और ग्रहों के स्थान और नववर्ग है उनके संबंध से भाग्य को सुनो।। १२।।

ग्रहाणां विशेषफलानि-

ख्यादीनां क्रमाच्छृङ्ग चामरादेश्च विक्रये।
कृषिकर्मणि सेवायां पैशून्ये लिपिकर्मणि।।१३।।
धनार्जने व्यये व्याधो गमनागमविक्रये।
विवादे प्रेतकार्ये च भ्रातृणां कलहे तथा।।१४।।

यदि सूर्य उच्चादि शुभ वर्ग में हो तो क्रम से शृङ्ग, चामरादि राजचिह्न कृषिकर्म, सेवा, दुर्जन कर्म, लिपि कर्म।। १३।। धन संपादन, रोगनाशक कर्म, द्रव्य व्यवहार, फेरी करने से, विवाद भ्रातृकलह।। १४।।

धनार्जने सुते दारग्रहणे लिपिकर्मणि।
उच्चादिस्थानवर्गेषु लाभदश्च रविः क्रमात्।।१५।।

पुत्र से धनार्जन, विवाह, लेखन कर्म करने से लाभ होता है।। १५।।

चन्द्रस्य फलम्-

शंखमाणिक्यमुक्तानां लाभो तत्क्रयविक्रये।
सुरते स्त्रीषु मैत्रे च राज्ञः पुरुषमित्रता।।१६।।
धनायतिस्तथा तंत्र मैत्रं च कृषिकर्मणि।
वस्त्रादि धनसिद्धिश्च ब्राह्मणेन विरोधता।।१७।।

यदि चन्द्रमा अपने उच्चादि शुभ वर्ग में हो तो शंख, माणिक्य मुक्ता का लाभ और इनके खरीदने और बेचने से लाभ होता है। मैथुन, स्त्री से मैत्री, राजपुरुष से मित्रता।। १६।। धन का लाभ, कृषिकर्म, वस्त्रादि के व्यापार से धन की सिद्धि तथा ब्राह्मण से विरोध।। १७।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धननाशो भवेद्युद्धे पराजयपराभवौ ।
काक्षांशांश्चार्धहोरांशफलानि क्रमशः स्थिते ।।१८।।

युद्ध में धन की हानि, पराजय और पराभव होता है॥ १८॥

भौमस्य फलम्-

स्वर्णसिद्धिर्जयो वस्त्रलाभो मित्रसमागमः ।
विवादो भ्रातृभिः शत्रुकर्म स्त्रीचंचलाक्षकः ।।१९।।

यदि मंगल अपने उच्चका हो तो सुवर्ण की सिद्धि, विजय, वस्त्र का लाभ, मित्र-समागम, बन्धु-विवाद, शत्रुकर्म, स्त्री विषय में चञ्चल नेत्र॥ १९॥

स्त्रीलाभो दासलाभश्च कृत्स्नेहा च बलक्षयः ।
बलैर्धनायतिः स्वोच्चे क्षेत्राद्यैर्न्यायतो भवेत् ।।२०।।

स्त्री-लाभ, दास का लाभ, सभी इच्छाओं की पूर्ति, बल की हानि, बल से धन का लाभ होता है॥ २०॥

मूलत्रिकोणे क्षेत्रेण राज्ञो वाथ धनायतिः ।
स्वर्क्षे वस्त्रं कांचनादि सिद्धिश्चाथ सुहृत्फलम् ।।२१।।

मूल त्रिकोण राशि का हो तो कृषि कर्म या राजा के आश्रय से धन का लाभ होता है। स्वराशि का भाग्य भाव में हो तो वस्त्र-सुवर्णादि का लाभ होता है, मित्र राशि का हो तो धान्य लाभ होता है॥ २१॥

धान्यायतिश्च मैत्री च क्रूरकर्मप्रवर्तनम् ।
कुष्ठ चाप्यग्निभीतिश्च गृहदाहोऽतिशत्रुभे ।।२२।।

अधिशत्रु के राशि का हो तो क्रूरकर्म में प्रवृत्ति होती है, अग्नि-भय, कुष्ठ, संग्रहणी, गुल्म आदि रोग के कारण धन-हानि होती है॥ २२॥

बुधस्य फलम्-

संग्रहणीगुल्मरोगश्च धननाशश्च तत्र तु ।
विद्यार्जने सुखं स्त्रीभिः कलहश्च धनायतिः ।।२३।।
क्षेत्रदासादिलाभं च कृषिकृत्यं धनायतिः ।
विवादो बंधुभिर्युद्धे जयश्च पराजयः ।।२४।।

बुध अपने उच्चराशि का होकर भाग्य भाव में हो तो विद्या-संपादन और सुख प्राप्ति तथा लाभ होता है। शत्रु राशि का हो तो स्त्री से कलह, मित्र राशि का हो तो धन का लाभ॥ २३॥ क्षेत्रदासादि का लाभ, कृषि में लाभ, नीच राशि का हो तो बंधु-विरोध, युद्ध में जय पराभव हो॥ २४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विद्याबुद्धिधनक्षेत्रं यशांसि च फलंति च ।
राज्ञस्तत्पुरुषेणैव स्वर्णक्षेत्रायतिस्तथा ।।२५।।
स्वर्क्षे धनायतिः प्रोक्ता लिपिना शिल्पकर्मणा ।
वस्त्रस्वर्णादिसिद्धिश्च राजस्त्रीभिर्धनायतिः ।।२६।।

उच्चादि का हो तो विद्या, बुद्धि, धन, यश, स्वर्ण, भूमि, राजपुरुष से लाभ।। २५ ।। स्वराशि का हो तो लेखन-क्रिया से, शिल्पकर्म से, राजस्त्री के द्वारा, वस्त्र स्वर्णादि से धन लाभ होता है।। २६ ।।

कायस्य कर्मणा लाभो विद्यानाशः स्वकर्मणा ।
धनानाशोऽश्मरी कुष्ठं कलांशादि फलं ततः ।।२७।।
विवादाद्बंधुभिर्दायो देशपर्यटनाद्धनम् ।
क्षेत्रसिद्धिर्जयो विद्यालाभो धान्यविवर्धनम् ।।२८।।

समराशि का हो तो शरीर कृत्य से लाभ, अधिशत्रु गृह का हो तो विद्या की हानि, व्यापार में हानि, अश्मरी (पथरी) रोग, कुष्ट रोग हो।। २७ ।। अपने षोडशांश में हो तो बन्धुविवाद से धन लाभ और देशांतर से धन लाभ, क्षेत्रसिद्धि, जय, विद्यालाभ, धान्यवृद्धि होती है।। २८ ।।

कृषिकर्मसमुद्योगः सेवाकरणकौशलम् ।

कृषिकर्म, नौकरी में तरक्की, विद्या-संपादन में कुशलता हो।।

गुरोः फलम्-

विद्यार्जनमथप्रोक्तंगुरोः श्रीमान् सुखी गुणी ।।२९।।

गुरु भाग्य भाव में हो तो लक्ष्मी से युक्त, सुखी-गुणी होता है।। २९ ।।

वह्वयतिरमात्यत्वं सर्वसम्पत्समन्वितः ।
धननाशः प्रमोहेण क्षेत्रनाशः पराभवः ।।३०।।

अधिक लाभ से युक्त, प्रधानत्व, सर्वसंपत्ति से युक्त होता है। शत्रु राशि का हो तो द्रव्य-नाश, क्षेत्र-नाश, पराजय होती है।। ३० ।।

विद्यार्जनं तथा सेवाकरणं संपदस्तथा ।
पुत्रैर्धनायतिर्मित्रैः स्त्रीभिश्च कृतकर्मणा ।।३१।।

मित्रराशि का हो तो विद्या संपादन सेवा करना होता है। अधिमित्र गृह का हो तो ऐश्वर्य-प्राप्ति, पुत्र मित्रादि से धन-लाभ, स्त्री द्वारा द्रव्य लाभ होता है।। ३१ ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

विवाहो धनलाभश्च क्रमादेवं फलं वदेत् ।

विवाह आदि से धन का लाभ होता है।

भृगोः फलम्-

राज्ञां कृत्यकरः श्रीमान्पुत्रबंधुसमन्वितः ।।३२।।

यदि शुक्र अपने उच्चादि वर्ग का होकर भाग्य भाव में हो तो राजकर्मचारी, धनी, पुत्र तथा भाइयों से सुखी।। ३२।।

सेनानाथस्तथामात्यो विद्यार्जनपरोधनी ।
पाठको याजकश्चाथ बहुस्त्रीकोऽतिशत्रुभे ।।३३।।

सेनापति, प्रधान, विद्या-सम्पादन में कुशल, धनी, अध्यापक, ऋत्विक अनेक स्त्री से युक्त होता है।। ३३।।

स्त्रीशक्तो निर्धनो मूर्खः पातकी भारको भवेत् ।
सेनाधिकारी राज्ञश्च प्रियैर्बन्धुभिरायतिः ।।३४।।
सेवावृत्या च कृष्या च विद्यायाः पूर्तकर्मणा ।
सर्वसंपद्युतः श्रीमान् शुक्रस्यैव फलं लभेत् ।।३५।।

अधिशत्रु के गृह में हो तो स्त्री में आसक्त दरिद्र, बुद्धिहीन, पातकी, भार- वाहक होता है। स्वगृह का हो तो सेनाधिकारी, प्रियबांधवों से इष्ट-प्राप्ति।। ३४।। दूसरे की सेवा से, कृषि-कर्म, विद्या से इष्टपूर्त यज्ञ से वापी, कूप तालाब आदि कार्य से सर्वसम्पत्तिमान हो।। ३५।।

शनेः फलम्-

कुजोच्चादिफलं चार्केः कलांशादिफलं भवेत् ।
कलांशादिषु यत्प्रोक्तंकलांशादिफलं त्विदम् ।।३६।।
उच्चादिषु तथा प्रोक्तं फलमेवं विचिंतयेत् ।

मंगल के उच्चादि का जो फल कहा है वही शनि के कलांशादि (षोडशांशादि) फल है। मङ्गल के षोडशांशादि का जो फल कहा है वही शनि के षोडषांशादि का फल होता है।। ३६।।

फलप्राप्तेःसमयेः-

स्वभाग्यर्क्षगतानृक्षान्यूनाञ्चाप्यधिकांस्ततः ।।३७।।
स्वरश्मिघ्नान् ग्रहे युक्ते तद्रश्मिघ्नांस्तथोत्तरम् ।
त्रिभिर्विभज्य निःशेषे स्वोजराशौ नवांशके ।।३८।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भाग्यभाव को उसके रश्मि से गुणाकर भाग्यभाव में जो ग्रह हो उसके रश्मि से भी गुणाकर गुणनफल में ३ का भाग देने से यदि शून्य शेष बचे और भाग्यभाव में विषम राशि नवांश हो तो॥ ३७-३८॥

आदिमध्यावसाने स्याद्युग्मे तत्र नवांशके।
आदौ मध्येऽवसाने स्याद्युग्मे चौजे नवांशके॥३९॥
मध्येऽवसाने चाद्ये च युग्मे मध्यांतिमादिमे।
आदौ मध्येऽवसाने स्यादेवं चेद्भाग्यलक्षणम्॥४०॥

आदि मध्य अंत में युग्म राशि और विषम नवांश हो तो आदि मध्य अंत में॥ ३९॥ तथा युग्म राशि और युग्म नवांश हो तो मध्य अंत आदि के स्थान में आदि, मध्य अन्त में भाग्य का फल होता है॥ ४०॥

ओजराशौ नवांशे चेद्युग्मे मध्यांतिमादिमे।
युग्मेराशौ नवांशे चेदाजे मध्येंऽन्तिमेऽपि च॥४१॥

यदि विषम राशि और समनवांश हो तो मध्य, अन्तिम और आदि में और समराशि विषम नवांश तो अन्तिम और प्रथम में, सम राशि सम नवांश हो तो मध्य, अन्तिम और आदि में॥ ४१॥

प्रथमेऽपि वयस्येवं युग्मे मध्येऽन्तिमादिमे।
शेषं द्वयं चेदेकं स्यात्कालो व्यत्यासतो भवेत्॥४२॥

यदि १ या २ शेष बचे तो विपरीत समय में फल होता है॥ ४२॥

फलाभ्यां चाहते तद्वच्चराद्यंशे चरे च भे।
आदौमध्येऽवसाने स्यात्स्थिरेऽन्ते मध्यमादिम्॥४३॥

यदि भाग्यगत चरलग्न हो तो भाग्यभाव के कला को ग्रह के कला में जोड़कर गुणाकर पूर्वोक्तवत् भाग देने से चर स्थिर द्विस्वभाव प्राप्त होने से क्रम से आदि मध्य अन्त में, स्थिर में अंत, मध्य आदि में॥ ४३॥

उभये मध्यमेऽन्ते च आदावेवं प्रकीर्त्तिताः।

तथा द्विस्वभाव राशिहो तो मध्य,अन्त और आदिमें भाग्यका फल होता है।

भावानां विशेषविचारः-

भावानां चैव सर्वेषां चन्द्रलग्नात्तु लग्नतः॥४४॥

सभी भावों का विचार चन्द्रलग्न और जन्मलग्न से करना चाहिये॥४४॥

अंशदायोक्तवत्कृत्वा शुभपापदृगाहतम्।
षष्ट्याप्त तद्वलाप्त स्याद् भावादीनां च संख्यका॥४५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पहले अंशायुर्दाय के अनुसार गणित करके जो फल आवे उसे दो जगह रखकर एक जगह शुभ दृष्टि योग से और दूसरे स्थान में पापदृष्टि योग से गुणाकर दोनों स्थान में ६० से भाग देना जो फल प्राप्त होता हो वह भाव प्राप्त होता है॥ ४५॥

रश्मिघ्नं च बलाप्तं च त्वनिष्टमपवादनम्॥४६॥

फिर उसी अंशायु गणित को रश्मि से गुणाकर इस बल से भाग देने से अनिष्ट और शुभ फल होता है॥ ४६॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे भाग्यफलाध्यायत्रयोदशः॥१३॥

❖

अथ अब्दचर्यावर्णना-चतुर्दशोऽध्यायः

मुहूर्तलक्षणम्-

नाडीद्वयं मुहूर्त्तं स्याद्दिनाडीद्वयमेव च।
रवेरुदयतो ह्येषा क्रमात्सर्वजितः स्मृतः॥१॥

दो घटिका का एक मुहूर्त होता है किन्तु जब दिनमान ३० घटी का होता है तब अन्यथा २ घटी से कम या अधिक भी होता है। प्रातःकाल सूर्य जिस राशि पर उदय हो वही लग्न होती है वहाँ से आरम्भ कर मेषादि क्रम से लग्न बीतती है। दिन में १५ मुहूर्त और रात्रि में १५ मुहूर्त होते हैं॥ १॥

आर्द्राश्लेषानुराधाश्च मघाश्चाथ धनिष्ठिकाः।
उत्तराषाढ़संज्ञश्च सर्वजिद्रोहिणी तथा॥२॥

दिन के १५ मुहूर्त्त क्रम से आर्द्रा, आश्लेषा, अनुराधा, मघा, घनिष्ठा, उत्तराषाढ़ा, सर्वजित् नाम का अभिजित्, रोहिणी॥ २॥

विशाखा च ततो ज्येष्ठा मूलं च शततारकम्।
भरणीपूर्वफाल्गुन्यौ विश्वजिच्च ततो भवेत्॥३॥

विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, शततारक, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, विश्वजित् अभिजित् ये १५ दिन के मुहूर्त्त हैं॥ ३॥

उत्तराप्रौष्ठपाच्चैव रेवती च ततः परम्।
अभिजिच्चोत्तरा चाथ कृत्तिका रोहिणी ततः॥४॥

उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अभिजित्, उत्तरा, कृत्तिका, रोहिणी॥ ४॥

मूलं च रोहिणी चाथ मृगशीर्षं च हस्तकम्।
पुष्यश्च श्रवणो हस्तचित्रे स्वाती क्रमात्स्मृता॥५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मूल, रोहिणी, मृगशीर्ष, हस्त, पुष्य, श्रवण, हस्त, चित्रा, स्वाती ये १५ मुहूर्त्त रात्रि के हैं। इन्हें विश्वजित् कहते हैं॥ ५॥

विनाडेः ३२ मुहूर्त्ताः-

नाडीद्वयमुहूर्त्तानां संज्ञा एता क्रमाद् द्विज।
सर्वजिद्भरणीहस्तविश्वजिद्रोहिणी तथा॥६॥
दस्रश्च मृगशीर्षश्च शर्वः पुष्यश्च सैंद्रभम्।
उत्तराविश्वजिच्छ्रोणी चित्रा पुष्यश्च वायुभम्॥७॥

भरणी, हस्त, पूर्वाषाढ़ा, रोहिणी॥ ६॥ अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, आर्द्रा; उत्तरा, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, चित्रा, पुष्य, स्वाती॥ ७॥

अभिजिद्वसुभं पौष्णं कृत्तिका च पुनर्वसुः।
पूर्वोत्तरप्रोष्ठपदौ शततारा च विश्वभम्॥८॥
ज्येष्ठासूर्यं च मूलं भाग्यश्च क्रमशः स्मृताः।
ज्येष्ठा चाथ विशाखा च मूल च शततारका॥९॥

अभिजित्, घनिष्ठा, रेवती, कृत्तिका, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, शतभिषा, उत्तराषाढ़ा॥ ८॥ ज्येष्ठा, हस्त, मूल, पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा, मूल, शतभिषा ये ३२ मुहूर्त्त विनाडी के हैं। इन्हें सर्वजित् कहते हैं॥ ९॥

षष्टिघट्यात्मकमुहूर्त्ताः-

नामानि च मुहूर्त्तानां विनाडीद्वयरूपिणाम्।
आवृत्या षष्टिताः प्रोक्ताः कालांशा नाडिरूपिणः॥१०॥

पूर्व में दिन रात्रि के २ घटी वाले मुहूर्त्त को दूना कर देने से एक-एक घटी के ६० मुहूर्त्त होते हैं, इसे कालांश कहते हैं॥ १०॥

कालांशराशिचक्रमुहूर्त्ताः-

नक्षत्रसंज्ञया प्रोक्ताः षष्ठ्यावृत्या कलांशकाः।
मेषो युग्मो वृषः कुंभो झषो जूकश्च कर्कटः॥११॥

पूर्व में कहे हुये दिन और रात्रि के ३२ मुहूर्त्त को दूना कर देने से नक्षत्र कालांश मुहूर्त्त होता है। सूर्योदय से पाँच-पाँच घटी का मेषादि राशियों का कालांश होता है। वे मेष, मिथुन, वृष, कुम्भ, मीन, तुला, कर्क॥ ११॥

सिंहोऽथ वृश्चिकश्चाथो मृगः कन्या क्रमाद्भवेत्।
राशि चक्र कलांशे तु क्रमादेवं प्रकीर्त्तिताः॥१२॥

सिंह, वृश्चिक, धनु, मकर, कन्या ये राशि कालांशक हैं॥ १२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नित्योदयस्य क्रमः-

मेषो गोर्युगम कर्की लेयकन्यातुलालयः।
धनुर्मृगघटो मीनमुदयाद्घटिकासु च।।१३।।

ऊपर कहे हुए कालांश के नित्योदय का क्रम कह रहे हैं। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन ये राशियाँ उदयकालीन लग्न से क्रम से घटी तुल्य अर्थात् मीन, मेष, चार-चार घटी और वृष कुंभ साढ़े चार घटी तथा मकर और मिथुन पाँच-पाँच घटी, शेष राशियाँ साढ़े पाँच-पाँच घटी में उदय होती हैं॥१३॥

सिंहान्मेषाच्च चापाच्च नक्षत्रक्रम ईरितः।
चन्द्रज्ञशुक्रधूमार्क - परिवेषार्ककार्मुकाः।।१४।।
गुरुः पातः शनिः केतुर्ग्रहाः स्युद्विर्दशक्रमात्।
चक्र लिप्तांशके चैवंकेत्वादिस्तारकांशके।।१५।।

नक्षत्र लेने का प्रकार-सिंहादि नक्षत्र से १, धनुराशि से २, मेष राशि से यह तीन प्रकार है। अर्थात् जन्मलग्न सिंहादि है तो सिंह पर चन्द्रमा, कन्या पर बुध, तुला पर शुक्र, वृश्चिक पर धूम इत्यादि क्रम से कर्क पर केतु को लिखना॥१४॥ इसी प्रकार धनु से एवं मेष से भी ऐसे ही १२ ग्रहों का न्यास कर नक्षत्र का ज्ञान करना चाहिए॥१५॥

नित्योदयघटीप्रमाणम्-

अर्कादिधूमपर्यन्ताः क्रमात्युर्घटिकांशके।
सत्र्यंशाघटिकास्तिस्रो मेषादि निमिषयोर्द्विज।।१६।।
चतस्रः कुंभवृषयोस्तथा मकरयुग्मयोः।
पंच सत्र्यंशास्ताः कर्किधनुषोः स्मृताः।।१७।।
सिंहवृश्चिकयोः षट् च अंशोनाः सप्तशेषयोः।
नित्यं मानमिदं प्रोक्तं मेषादुदयराशिजम्।।१८।।

हे मैत्रेय ! मेषादि राशियों के नित्योदय घटीमान कहता हूँ। शेष चक्र से स्पष्ट है॥१६-१७-१८॥

मेषादिराशीनां उदय घटी मान।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
३	४	४	५	६	६	६	६	५	४	४	३	घटी
२०	०	४०	२०	०	४०	४०	०	२०	४०	०	२०	पल

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ख्याक्रान्तात्तथा प्रोक्ता एकद्वित्रिचतुर्घटी ।
मानानि मेषतः सिंहाच्चापादर्कोदयात्ततः ।।१६।।

उदय लग्न से मेष से चार सिंह से चार और धनु से चार लग्नों का क्रम से १।२।३ और ४ घटी प्रकारान्तर से मान होता है। जो लग्न हो उसके मान में दशवर्गाधिपों का विभाजन करना चाहिये॥ १६॥

दशवर्गाधिपाश्चिन्त्याः प्रोक्ताश्चेन्दुनवांशकाः ।
अन्यत्र कीर्त्तिताः प्रश्ने नष्टद्रव्यस्य निश्चये ।।२०।।

इसका प्रयोजन-नष्टद्रव्य के निश्चय करने में तथा प्रश्न के विचार में चन्द्र नवांश को भी देखना चाहिए॥ २०॥

दशवर्गानां फलम्-

श्रीमान् रिक्तश्च मूर्खश्च कुशलो वंचनः पटुः ।
स्त्रीशक्तो वेदविद्वीरो मंदाग्निस्त्रीव्रशेषणः ।।२१।।
मूलरोगी च पिशुनः सदा दानपरो शुचिः ।
सेवाकरः सुभाषी च धनवाँल्लोभसंयुतः ।।२२।।
प्रख्यातो विद्यया भीरुर्बुद्धिः श्रीमान्सुशीलकः ।
परदाररतः श्रीमान्सुशीलो बलवान्गुणी ।।२३।।
अध्वन्योनिगमव्यग्रः पातकी च तपो युतः ।
परदाररतो वेश्यासक्तोऽसत्फलवासनः ।।२४।।
सिंहासनस्थो रिक्तश्च जटिलः कुलपांशनः ।
योगी बुद्धश्च संन्यासी सेनानीर्बुद्धिमान्सुखी ।।२५।।
कुष्ठी भूतकरः श्रीमानेकपुत्रसमन्वितः ।
शास्त्रज्ञो दासकृत्यश्च चंडरोषसमन्वितः ।।२६।।
स्त्रीसक्तः परदाराक्तो भृत्यः पटुररोगवान् ।
कुरूपश्चापि कुशलो जितारिः पुत्रवर्जितः ।।२७।।
शूरो वीरश्च चंडश्च कुशलः कुक्षिरोगवान् ।
ग्रामणी विटपो धूर्त्तः सतीपतिररिंदमः ।।२८।।
वंध्यापतिः सुरापी च रिक्तसाध्यपतिः सुखी ।
विजयी युद्धभीरुश्च चारोऽमर्षी जनार्जकः ।।२९।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धनार्जनाय सततमकृत्य शतकारकः ।
वृषलीपतिरिन्द्रश्च सेनानीः सत्यवाक्छुचिः ।।३०।।
शिरोरोगी च कुष्ठी च मेही च पिशुनः सुखी ।
जलवद्रोगसंयुक्तः कृतज्ञो निर्घृणो घृणी ।।३१।।
विवादशीलः सुमुखः क्रोधनः कामुकः पटुः ।
चलचित्तो धनी वाग्मी विद्यार्जनपरः सुखी ।।३ ।।
अपुत्रः कृषिकृद्धीरः परदाररतः शुचिः ।
विद्याहीनश्च मूर्खश्च बुद्धिमान् शास्त्रपारगः ।।३३।।
सदाभीरुर्शठो वाग्मी कृत्येषु कुशलः सुखी ।
नीतिज्ञो लेखको नीचजातिकृत्यरतः पटुः ।।३४।।
प्रेष्यो गोमयविक्रेता वदान्यो धनवंचकाः ।
सेनानीः क्षेत्रवान् वीरो लेखवृत्या चजीवति ।।३५।।
मूर्खो जितेन्द्रियो वाग्मी सदा कृत्यपरः सुखी ।
अन्नदाता च मिष्टाशी शिवभक्तो जितेन्द्रियः ।।३६।।
कुब्जो वक्रशरीरश्च जात्यंधो वधिरः शठः ।
अमर्षी नर्तकः क्रुद्धो दुर्जनो वेदपारगः ।।३७।।
वक्ता च गायकः श्रीमान् सर्वदा च जनार्जकः ।
तालज्ञो विद्यया युक्तः पंच पंचाशदुत्तरम् ।।३८।।
शतं गुणाश्च श्रीयोगा एकयोगावसानकम् ।
पूर्वपूर्वयुता ओजे युग्मे राशौ तु वामतः ।।३९।।
चरे क्रमः स्थिरे वाममुभयोऽर्धपदादितः ।
आदौ विंशद्गुणा ह्येते वा स्त्रिंशदेव हि ।।४०।।
षष्ट्यंशे तुगुणाःप्रोक्ताः प्राग्वदोजचरादिकाः ।

दशवर्ग से फलादेश कहते हैं जो कि स्पष्ट है। विशेष यह है कि विषम नवांश हो तो श्रीमान् योग से समराशि का नवांश हो तो विद्वान् योग से आरम्भ कर श्रीमान् योग तक और चर राशि में क्रम से स्थिर राशि में विलोम से द्विस्वभाव राशि में अर्धभाग से क्रम लेना चाहिये॥ २१-४०॥

राहोः गतिः-

मेषादुत्क्रमतो राहुः केतुर्याति वृषोत्क्रमाद् ।।४१।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राहु मेष राशि से विपरीत क्रम से और केतु वृष राशि से विपरीत क्रम से जाता है॥ ४१॥

अस्य प्रयोजनम्-

ऋक्ष संध्यन्तरे जातः प्रष्टासौ म्रियते भृशम्।
केतुराहुस्थिते राशौ भसंधौ मरणं भवेत्॥४२॥
इतरेषां त्रयाणां च प्रकाशे व्याधिपीडितः।
दुर्बलो बुद्धिहीनश्च जायते न मृतो यदि॥४३॥

राहु केतु नक्षत्र प्रवेशान्तर के समय जन्म हो तो निश्चय ही प्रश्नकर्त्ता की मृत्यु होती है॥ ४२॥ राहु केतु से युक्त राशि की सन्धि में प्रश्न हो या जन्म हो तो भी मृत्यु होती है, इसी प्रकार अन्य धूम, कार्मुक परिवेष के उदय राशि में प्रश्नकर्त्ता व्याधि से पीड़ित होता है॥ ४३॥

अथ पित्र्याद्यरिष्टविचारः-

कलांशराशितोऽरिष्टे नक्षत्रारिष्टसंभवे।
पित्रादीनां सुतस्यापि तद्दशाच्चिन्तयेत्सुधीः॥४४॥
पापशत्रुग्रहाक्रांता भावास्तद्दृष्टिसंयुताः।
सौम्यपापादयश्चैवं शुभाशुभफलप्रदाः॥४५॥

यदि षोडशांश से और नक्षत्र से अरिष्ट योग आता हो और भाव को पापग्रह देखता हो या उसमें पापग्रह युत हो तो पित्रादि को और पुत्र को भी अशुभ होता है॥ ४४॥ पाप शत्रु ग्रह से भाव युक्त हो या उसकी दृष्टि से युक्त हो तथा शुभ ग्रह का भी दृष्टि योग हो तो शुभद होता है और केवल पापग्रह का दृष्टियोग हो तो अशुभ होता है॥ ४५॥

एकद्वित्रिचतुःपंच - षट्सप्ताष्टदिग्धराः।
सूर्येन्दुनृपमूर्च्छेन्द्र - नृपभार्कनृपाजिताः॥४६॥
पंचाष्टवसुभूतेषु सुरदंताजिनाद्रयः।
नखास्त्रिंशत्खवेदाः षट् सप्ततिः षष्टिरद्रियुक्॥४७॥
नवतिश्च शतं मूर्च्छा जिना दंता जिनादिशः।
एव नवशतं प्रोक्ताः क्रमादैव तु तत्र तु॥४८॥
पूर्वं पूर्वयुता संख्या लक्ष्मीयोगफलप्रदा।
नक्षत्रे राशिचक्रे तु दिवसे वामतः स्मृताः॥४९॥

शेष योगों का विचार पूर्वापर सम्बन्ध से देखना चाहिये॥ ४६-४९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सुगतिदुर्गतिअंश-

शुभमित्रग्रहाक्रांता भावास्तद्दृष्टिसंयुताः ।
द्वित्रिपंच च षट् सप्त वसुनंददिशोऽद्रयः ।।५०।।

यदि भाव शुभग्रह या मित्र ग्रह से आक्रांत हो वा देखा जाता हो तो २।३।५।६।७।८।९।१०।७॥५०॥

त्रिंशद्दिशो नखाः षष्टिसूर्यमूर्च्छाजिनाजिनाः ।
आकृतिर्भानिभार्काग्निनखाश्छंदः शतं नखाः ।।५१।।

३०।१०।२०।६०।१२।३१।२४।२१।२७।१२।३।२०।२६।१००।२०॥५१॥

त्रिंशत्खवेदा दिग्विश्वे शतं षष्टिः शतं जिनः ।
वेदाः खवेदाः पूर्वार्धे परार्धे प्राग्वदत्र तु ।।५२।।
एते योगबलाच्चैव केवलं दुर्मतिप्रदाः ।

३०।४०।१०।१३।१००।६०।१००।२४।४।४० के पूर्वार्ध में और राशि के उत्तरार्ध में विलोम क्रम से दुर्गति हैं॥५२॥

कुब्जादियोगाः-

दिनर्क्षचक्रसंख्याः स्युरादिमध्यावसानिकाः ।।५३।।
सप्तविंशतिसप्तत्यां शते षष्ट्यां शतद्वये ।
षट्पंचांशति विंशे च षण्णवत्यामशीतिके ।।५४।।

दिन, नक्षत्र और राशि इनकी संख्या आदि, मध्य और अंत्यभाग का योग॥५३॥ यदि२७।७०।१००।६०।२००।६।५०।२०।९६।८०॥५४॥

षष्टिभागे च विंशत्या शतषट्यां शतद्वये ।
कुब्जः कलांशे मूकस्तु शतद्वयशतत्रये ।।५५।।

१०।६०।२०० हो तो कुब्ज होता है। यदि २००।३००॥५५॥

सहस्रे द्विशते जातः पंचमे पापसंयुते ।
द्वित्रिपंचाष्टदिग्विश्व - नृपातिधृतिभूमयः ।।५६।।

१०००।२०० हो और पाँचवें भाव में पापग्रह हो तो मूक होगा। २।३।५।८।१०।१३।१६।१८।१॥५६॥

नवदिग्भसुरैस्तानैस्थितिविश्वाष्टकैः क्रमात् ।
गुणेन वामतः प्रोक्तो लक्ष्म्यंशे श्रीसमन्वितः ।।५७।।

९।१०।२७।३३।४९।१५।१३।८ इनको बायें भाग से गुणने से प्राप्त अंश लक्ष्यंश में श्रीमान् होता है॥५७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

योगान रम्-

रविचन्द्रतमपातकालेष्वरि वेषु च ।
पञ्चाशीतिशते वेदे मनौ द्वित्रिंशते पुनः ।।५८।।
खाब्धिपंचसु दिग्भागे सहस्रे चाक्षिचन्द्रगे ।
खखाग्निरूपं विश्वाष्टत्रिचन्द्रखखभूमिपैः ।।५९।।

यदि सूर्य चन्द्र राहु पातकाल में ६।११ तथा ८५।१००।४।१४।२।३१।१००॥५८॥ ४०।५।१०।१३००।१३।८।३।१।१६०० इन योगों में चन्द्रमा युक्त हो तो वधिर होता है॥५९॥

मृत्युकालज्ञानम्-

शताधिके च जातोऽस्मिन्वधिरःषष्ठि संयुतो ।
कर्कि वृश्चिकमीनांशे तद्राशीशांके तथा ।।६०।।
पातकेत्वोश्च शत्रृक्षगतयोरंशके पुनः ।
एकादित्रिंशतैर्यावत्क्रमात्तास्तु सुभाजिताः ।।६१।।

कर्क, वृश्चिक और मीन के अंश में इनके स्वामियों के (चन्द्र, भौम, गुरु) इनके नवांश में॥६०॥ पात में अथवा उच्च, शत्रु राशि में स्थित ग्रह के अंश में जो संख्या हो उससे १ से लेकर ३०० तक॥६१॥

आकाशपूर्णधृतयो निःशेषं लब्धसंख्यके ।
सदोर्षेऽतराशे तु जातस्यैतेऽपमृत्यवः ।।६२।।

१८०० में भाग देना जिससे निःशेष हो जो लब्धि प्राप्त हो वह यदि सदोष (पापग्रहसे युक्त हो) तो जातक का लब्धि तुल्य वर्ष में अपमृत्यु कहना॥६२॥

अल्पमध्यदीर्घायुर्ज्ञानम्-

पञ्चाशतः षडावृत्या स्वल्पमध्यचिरायुषः ।
क्रमेणोत्क्रमशस्ते तु त्रैराशिकविधानतः ।।६३।।

पीछे कहे हुये ५० कुब्ज आवृत्ति के वर्ष से त्रैराशिक रीति से गणना करके प्रथम आवृत्ति में अल्पायु दूसरी आवृत्ति में मध्यमायु और तीसरी आवृत्ति में चिरायु, चौथी आवृत्ति में उत्क्रम से दीर्घायु, पाँचवी आवृत्ति में मध्यमायु और छठी आवृत्ति में अल्पायु समझना चाहिये॥६३॥*

चतुर्दशग्रहाणां षष्ट्यंशादिः-

खाक्ष्यद्रयस्तुषष्ट्यंशास्त्रिंशांशाः खरसाग्नयः ।।६४।।

बारह राशियों में ७२० षष्ट्यंश॥६४॥

---

* वर्षाण्याह— शराः दिशास्तिथयः नखाः तिथयः दश एवं षडिति।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अष्टषट्भूमयः कालहोराः सप्तदिनेषु च ।
वेदेन्द्रा द्वादशांशा स्युर्नवांशा गजखेंदवः ॥ ६५ ॥

३६० त्रिंशांश, १६८ कालहोरांश, १४४ द्वादशांश, १०८ नवांश ॥६५॥

सप्तांशा वेदनागास्तु द्रेष्काणास्तु षडग्नयः ।
अर्धहोराजिनाः प्रोक्ता नक्षत्राणि च राशयः ॥ ६६ ॥
भुंजते च ग्रहाश्चैव मनुसंख्यैश्च भुंजते ।
राशयश्च ग्रहाश्चैव नक्षत्राणि च भुञ्जते ॥ ६७ ॥

८४ सप्तमांश, ३७ द्रेष्काणांश और २४ अर्धहोरांश ये क्रम से नक्षत्र राशि के होते हैं ॥ ६६ ॥ इनको १ सूर्य, २ चन्द्र, ३ भौम, ४ बुध, ५ गुरु, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ राहु, ९ केतु ॥ ६७ ॥

ख्यादिशिखिपर्यन्ता नवभूमेन्द्रकार्मुकौ ।
पातश्च परिवेषश्च कालश्चेति चतुर्दश ॥ ६८ ॥

१० भूभा, ११ इन्द्रचाप, १२ पात, १३ परिवेष, १४ काल ये भोगते हैं। कौन किस अंश में है — इसे देखकर फल का विचार करना चाहिये ॥ ६८ ॥

अथ नक्षत्रगणनाक्रमः-

तेषां प्रादुर्भवे चैव भंगदास्तु नवग्रहाः ।
दस्रात्पंच भगात्षट्क पंचार्द्राद्वारुणादपि ॥ ६९ ॥

अश्विनी से ५, पूर्वाफाल्गुनी से ६, आर्द्रा से ५, शतभिषा से ४ ॥ ६९ ॥

मित्रान्नवक्रमात्प्रोक्तास्तत्तद्देशेषु सर्वदा ।
अक्षिणी पञ्चदश च नखास्तत्त्वं तथामराः ॥ ७० ॥
सत्र्यंशाश्च षडंशोनाश्चत्वारिंशत्क्रमादथ ।
शतं खेष्विंदवः प्रोक्ता विनाडी तनयोऽपि च ॥ ७१ ॥

और अनुराधा से ७ ये नक्षत्र पूर्वोक्त अंशों में रहते हैं। क्रम से २।१५।२०।२५।३३ ॥ ७० ॥ ३३।३३।४०।१००।१५०। ये नाडियाँ अर्धहोरा आदि के योग काल हैं ॥ ७१ ॥

कल्यंशवद्यर्धहोरांशभोगकालः प्रकीर्त्तितः ।
प्रमाणराशयश्चैते भागहारा कलात्मकाः ॥ ७२ ॥
तत्तद्देशकला इच्छाराशयो गुणराशयः ।
कटुको मधुरतिक्तः कषायो लवणाम्लकौ ॥ ७३ ॥

कलांशमें उत्पन्न हुएका कटुक, मीठा, तीता, कषैला, नमक, अम्ल ।७२-७३।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कालांशेक्रमतो गण्याःषष्ट्यंशेव्युत्क्रमात्स्मृताः ।
त्रिंशांशे तु कषायादिः कालहोरांशके पुनः ।।७४।।
तिक्तादि द्वादशांशेषु मधुरादि नवांशके ।
अम्लादिमुनिभागे तु द्रेष्काणे मधुरादितः ।।७५।।

क्रम से गणना करने से जो रस आवे वह उस वर्ष में उसे प्रिय होता है। षष्ट्यंश में उसे अम्ल से कटु पर्यन्त इस क्रम से, त्रिंशांश में कषाय से तिक्त पर्यन्त ।। ७४ ।। द्वादशांश में मधुरादि क्रम, नवांश में अम्लादि क्रम, सप्तांश में अर्ध होरा और द्रेष्काण में मधुरादि क्रम से गिनना चाहिये ।। ७५ ।।

षष्ठ्यंशोत्पत्तौ फलम्-

अर्धहोरांशके तद्वज्जातस्यैवं प्रजापते ।
वेदाष्टदशभैराभैः प्रषष्ट्यंशे च भास्करे ।।७६।।
त्रिषट्नवत्रिखार्काब्धिजिनदंतसुराः क्रमात् ।
नवदिग्भैर्जिनार्कैश्च सूर्यैस्तानैस्त्रिपञ्चभिः ।।७७।।

यदि कन्या के जन्म समय में सूर्य ४।८।१८।२७।३ संख्यक षष्ट्यंश में हो तो वह कन्या वन्ध्या होती है ।। ७६ ।। तथा ३।६।९।३०।१२।४।२४।३२।३३ इन अङ्कों को क्रम से ९।१०।२७।२४।१२।१२।४९।३।५।५० से गुणने से जो प्राप्त हो उतनी संख्या के षष्ट्यश में सूर्य हो तो कन्या पूज्या (पूजनीया) होती है ।। ७७ ।।

मृतपुत्र-कन्यायोगः -

पञ्चाशद्भिःक्रमाद्गुण्या वंध्यावंध्याप्रकीर्त्तिताः ।
त्रिवेदाद्यंकविश्वेन्द्र - नखच्छदो जिना यमाः ।।७८।।
पञ्चाशच्च शतं पूर्वयुताः मृतसुता स्मृता ।
पुत्राणां तु कलांशे तु शेषे जाता मृता द्विज ।।७९।।

३।४।७।९।१३।१४।२०।२६।२४।२।५०।१०० इनमें पूर्व अंकों को जोड़ने से जो संख्या हो तत्तुल्य अंश में सूर्य हो तो मृतसुता उत्पन्न होती है। उक्तांश से शेष अंशों में सूर्य हों तो उत्पन्न पुत्रों में मृत पुत्र भी होंगे ।। ७८-७९ ।।

अथ सन्यासयोगः-

द्वादशे च चतुर्विंशे चतुस्त्रिंशे सुरांशके ।
द्विसप्तांशे नवांशे षष्ट्युत्तरशतांशके ।।८०।।

यदि १२।२४।३३।७२।९।१६० ।। ८० ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

षट्शते च सहस्रे च खखाहींद्वंशके पुनः ।
खांशतिथ्यंशके जातो भवेत्प्रव्रजितो नरः ।।८१।।

६००।१००।१८०।१५।१० संख्यक अंश में जन्म हो तो संन्यासी होता है।। ८१ ।।

परमहंसादियोगाः-

गुरुशुक्रोदये राशौ तयोः परमहंसकः ।
शत्रुराशिगतौ तौ चेदप्रकाशयुतौ तु वा ।।८२।।

गुरु शुक्र के उदय की राशि में जन्म हो तो परमहंस होता है। यदि वे शत्रुराशि में हों अथवा धूमादि अप्रकाश ग्रह से युक्त हों तो।। ८२ ।।

भ्रष्टः स्यात्तु तथा ज्ञे तु त्रिदंडी वा बहूदकः ।
रवौ जटाधरः शैवः कुजे नग्नोऽटनः स्मृतः ।।८३।।

भ्रष्ट परमहंस होता है। ऐसे ही बुध हो तो त्रिदंडी संन्यासी होता है वा बहूदक होता है। सूर्य हो तो शिवभक्त, भौम हो तो नग्न घूमने वाला होता है।। ८३ ।।

मंदे बौद्धोऽथ वाग्मी स्याद्राहौ केतौ तथैव च ।
धूमे कापालिकाश्चापे काले तु परिवेषके ।।८४।।
गूढपापो यथा लिंगी कुलमार्गगतस्तथा ।

शनि हो तो बौद्ध धर्मावलम्बी, राहु वा केतु जन्म राशि में हों तो बौद्ध संन्यासी, धूमग्रह हो तो कापालिक, चाप, काल, परिवेष हो तो गुप्तपापी, पाखण्डी, कुलमार्गानुकूल चलने वाला होता है।। ८४ ।।

प्रव्रज्यायां निष्ठायोगः-

षष्ट्यंशे ऋक्षसन्ध्यंशे सार्पे पौष्णेन्द्रभांशके ।।८५।।

षष्ठ्यंश में, नक्षत्र सन्ध्यंश में, आश्लेषा, रेवती, ज्येष्ठा के अंश में।८५।

त्रिंशांशे कालहोरांशे तत्तदंशाशेऽपि च ।
नवमूर्छासुरांशे तु यथा षष्टितमे युतः ।।८६।।
शतांशे खाब्धितिथ्यंशे द्वादशांशे नवांशके ।
राश्यंतांशे तु सप्तांशे ऋक्षसंधिमृगांतिके ।।८७।।

त्रिंशांश में, कालहोरांश में, नवांश में, मूर्ध्ना ४९, अंश में ३३ वें अंश, ६०वें अंश।। ८६ ।। १००वें अंश में, १५४०वें अंश में, द्वादशांश में, राशि के अन्तिमांश में, सप्तांश में नक्षत्र सन्धि में।। ८७ ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मृगकर्कालिसिंहादिर्मीनतौल्यंशकादिभे ।
अंत्यांशेऽपि च जातस्य षष्ठ्यर्थाक्षिजिनेरदे ।।८८।।
द्रेष्काणेचार्द्धहोरायां त्रिसप्ते च नखेषु तु ।
जातः प्रव्रजितश्चैषु सर्वत्रैकयुतेष्वपि ।।८९।।

मकर, कर्क, वृश्चिक, सिंह, मेष, मीन, तुला के आदि या अन्तिम अंश में उत्पन्न होने वाले ६,५,२,२४,३२ अंशों में॥ ८८॥ द्रेष्काण में अर्धहोरा में, ७३, २०वें अंश में या पूर्वोक्त अङ्कों में एक जोड़ने से जो अङ्क हो उन अंशों में उन अङ्कों में उत्पन्न होनेवाले संन्यास धर्म में श्रद्धा रखनेवाले होते हैं॥ ८९॥

अथ अंशविशेषे जातायां स्त्रीलक्षणम्-

पापाप्रकाशसंयोगे कलत्रे त्वशुभं भवेत् ।
रवौ वंध्या तुशीतांशो क्षीणे तु व्यभिचारिणी ।।९०।।

सातवें भाव में पापग्रह हो अथवा अप्रकाशग्रह हो तो स्त्री दुष्टा हो, सूर्य हो तो वन्ध्या, क्षीण चन्द्र हो तो व्यभिचारिणी॥ ९०॥

कुजे तु म्रियते मन्दे दुर्भगा राहुसंयुते ।
परदाररतिः स्वीयनिषेकाभावतोऽसुताः ।।९१।।
धूमे विवाहहीनः सन्म्रियते कार्मुके सति ।
परिवेषे तुदुःशीला केतौ वंध्याऽसती भवेत् ।।९२।।

भौम हो तो स्त्री का नाश, शनि हो तो दुर्भागिनी और राहु हो तो परस्त्रीगामी होता है॥ ९१॥ धूम हो तो बिना विवाह के ही मर जावे, कार्मुक हो तो भी वही फल हो, परिवेष हो तो स्त्री दुःशीला हो, केतु हो तो वन्ध्या और कुलटा हो॥ ९२॥

कालेऽभावस्य पापे तु गर्भस्रावेण संयुता ।
सुशीला स्त्रीप्रसूता च पूर्यमाणे तु शीतगौ ।।९३।।

काल हो तो स्त्रीत्व का अभाव, पापग्रह हो तो गर्भस्राव हो, पूर्ण चन्द्रमा हो तो सुशीला, कन्या हो॥ ९३॥

बुधे त्वपुत्रा जीवे तु गुणयुक्ता सुपुत्रिणी ।
शुक्रे सौभाग्य संयुक्ता श्रीमती पुत्रिणी भवेत् ।।९४।।

बुध हो तो पुत्रहीन हो, गुरु हो तो गुणी और पुत्रवती हो। शुक्र हो तो सौभाग्यवती, लक्ष्मी से युक्त और पुत्रवती हो॥ ९४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ दश वानुसारफलम्-

एष्वेवं दशमे पापपुण्यकर्मरतो भवेत् ।
पञ्चाशद्भिः सुरैस्तत्त्वैर्नृपैश्च मुनिभिर्गृहैः ॥ ६५ ॥

जिस प्रकार से सप्तम भाव से स्त्री के फल का विचार किया है उसी प्रकार से दशम भाव से व्यापार आदि शुभाशुभ कर्मफल का विचार करना चाहिये। दशम भाव शुभाशुभ युक्त वा दृष्ट हो तो शुभ कर्मफल जानना चाहिये। पाप ग्रह से दृष्ट युक्त हो तो अशुभ कर्म फल जानना चाहिए, मिश्रित ग्रह हों तो मिश्रफल इसमें भी शुभ पाप के संख्या के समान ही शुभ पापफलों को न्यूनाधिक कहना चाहिए॥ ६५ ॥

अष्टभिः षड्भिरेवाथ सप्तादिभिरनुक्रमात् ।
पञ्चादिभिश्च होराः स्युरेकोपचयैरथ ॥ ६६ ॥

इसमें भी ५०।३१।२५।१६।७।६।८।६।७ तथा पाँच से एक पर्यन्त तथा पूर्वोक्त अङ्कों में एक जोड़ने से॥ ६६ ॥

पापपुण्यक्रियाकर्त्ता क्रमाल्लब्धांत्तरांशजः ।
आवृत्तिरुत्तरा प्रोक्ता पापपुण्यक्रियारतिः ॥ ६७ ॥

जो हो उन अंशों मे जन्म होने से पाप शुभ॥ ६७ ॥

मिश्रे तु मिश्रं त्वाधिकवशादेव निर्णयः ।

मिश्र क्रिया ग्रहानुसार होती है।

वर्णाश्रमाचारविहीनबुद्धिः स्त्रियां च पापी परदारसक्तः ।
क्षेत्रापहारी च परस्वसर्वं निहत्य योगं सकलं करोति ॥ ६८ ॥

वर्ण और आश्रम के आचार में हीन बुद्धिवाला, स्त्रियों के प्रति पाप बुद्धि वाला, परस्त्रीगामी, दूसरे के भूमि को अपहरण करने वाला, दूसरे के सर्वस्व को अपहरण करने वाला॥ ६८ ॥

परस्य चोत्कर्षविघातकारी विषाग्निदः घातककर्मकृच्च ।
ग्रामस्य देशस्य च विप्रवर्यः धनापहारी व्यसने कृतार्थः ॥ ६९ ॥

दूसरे के उत्कर्ष को नाश करने वाला, विष और अग्नि को देने वाला, ग्राम को जलाने वाला, ब्राह्मण और देवता के धन को हरण करने वाला, पातक कर्म करने वाला होता है॥ ६९ ॥

मृतिप्रदं कर्मकरोतिसूर्यात्प्राप्य प्रकाशः सितशीतगोश्च ।
दयारतो दानरतः सुतेजाः स्वाचारपाला विजितेन्द्रियश्च ॥ १०० ॥
इष्टं च पूर्त्तं च करोति जीवे शुक्रे वदान्यः कृतदारशीलः ॥ १०१ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य हो तो मारण कर्म करने वाला, चन्द्रमा और शुक्र हो तो प्रसिद्ध होता है। भौम से दयारत, दानरत, सुन्दर, तेजवान्, आचारयुक्त, इन्द्रियों को जीतने वाला॥ १००॥ गुरु हो तो इष्टापूर्त कर्म करने वाला, शुक्र हो तो दाता, शनि हो तो स्त्रीशील हो॥ १०१॥

अथ मेषादिराशीनां फलानि-

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्ष्यो वृषभे सुशीलः।
देवेशदेवालयधर्मकारी युग्मे विरक्तोऽन्त्यधनैर्विहीनः॥१०२॥

मेष राशि में जन्म हो तो अगम्यागमन, अभक्ष्य को भक्षण करने वाला वृष राशि में अच्छा स्वभाव, शिव, विष्णु का उपासक, मिथुन राशि में वैराग्य युक्त॥ १०२॥

चान्द्रे च तीव्रं च करोति पापं परस्वहर्तापि च पूर्वकारी।
सिंहे तु देवस्य विघातकारी पाथोनके धर्मरतिः सुकृत्यः॥ १०३॥

कर्क राशि में अत्यन्त पाप करने वाला, दूसरे के धन को हरण करने वाला, पूर्त कार्य (कुआं आदि) करने वाला, सिंह राशि में देवस्थान का नाश करने वाला, कन्या राशि में धर्म में प्रेम और सत्कर्म करनेवाला॥ १०३॥

जूके परेषां धनदश्च पूर्त्तं करोति चापेऽपि च वृश्चिके तु।
परस्वहर्ता परदारसक्तो मृगेऽपि चैवं घटभे कृतज्ञः॥ १०४॥

तुला में दूसरों को धन से पूर्ण करने वाला, धनु में भी पूर्वोक्त फल, वृश्चिक राशि में दूसरे के द्रव्य को हरण करने वाला, दूसरे की स्त्री में आसक्त, मकर में भी पूर्वोक्त फल, कुम्भ राशि में कृतज्ञ॥ १०४॥

यज्ञस्य कर्त्ता झषभे तथैव पूर्तादिकारो बहुयोजकःस्यात्।

और यज्ञकर्त्ता और मीन राशि में पूर्त्त आदि काम को करने वाला और अनेक योजना करने वाला होता है।

अथ सूर्यादीनां कालांशफलम्-

नर्तको गायको वंदी शिल्पी याञ्चापरस्ततः॥ १०५॥

सूर्यादि के कालांश में उत्पन्न होने से क्रम से नाच को जानने वाला, गाने वाला, राजाकी स्तुति करने वाला, कारीगरी को जानने वाला, याचक।१०५।

गायको नर्तको भारवाही प्रणतियोजकः।
प्रेष्यश्च भारको वंदी याचको धातुवादकः॥ १०६॥

गायक, नर्तक, बोझा ढ़ोने वाला, नम्र रहने वाला, दास वृत्ति करने वाला, वंदी, याचक, धातु के काम को करते वाला॥ १०६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वेदाध्यायी स्मृतिज्ञस्तु शैवाश्रमकृतश्रमः ।
शिल्पलेखनकर्त्ता च मीमांसान्यायतर्कवित् ॥१०७॥
पञ्चरात्रार्थशास्त्रज्ञः इतिहासपुराणवित् ।
आयुधश्रमहेतुश्च आयुर्वेदकृतश्रमः ॥१०८॥
अर्कात्कलांशतश्चैव क्रमादेवं प्रकीर्त्तितः ।

वेद पढ़ने वाला, स्मृति शास्त्र को जानने वाला, शिवदीक्षा में प्रवीण, शिल्प को लिखने वाला, मीमांसा न्याय तर्क का जानकार॥ १०७॥ आगम (तंत्र) को जानने वाला, अर्थ-शास्त्र को जानने वाला, इतिहास पुराण एवं आयुध (शस्त्र) को बनाने वाला, आयुर्वेद (दवा) का ज्ञाता होता है॥१०८॥

अथ षष्ट्यंशफलम्-

अध्यापकस्तु वेदानां सेवकः शास्त्रपाठकः ।।१०९।।

यदि विषम लग्न हो तो क्रम से वेद का अध्यापक १, सेवक २, शास्त्र पढ़ाने वाला ३॥१०९॥

अश्वसादीभसादी च लिपिलेखनतत्परः ।
मदुरावंधको नट्यौ देशिको याज्ञिको गुरुः ।।११०।।

घुड़सवारी में कुशल ४, हाथी के कार्य में कुशल ५, पुस्तकादि लिखने में कुशल ६, घोड़े के शाला का अधिकारी ७, वाचक ८, पाठशाला में पढ़ाने वाला ९, यज्ञ करने वाला १०, गुरु ११॥११०॥

दानशीलस्तु तृणको ग्रामणीर्व्यसनाधिपः ।
आरामकरणोद्युक्तः पुष्पविक्रयतत्परः ।।१११।।

दानशील १२, तृण बेचने वाला १३, ग्राम प्रधान १४, व्यसन का अधिकारी १, बाग लगाने में कुशल १६, फूल-माला बेचने वाला॥१११॥

राजकार्यरतः सेनालतापुष्पफलक्रयी ।
नृत्यगीते च कुशलस्ताम्बूलफलविक्रयी ।।११२।।

राजकर्मचारी १८, फल-फूल खरीदने वाला १९, नाच-गाने में प्रवीण २०, पान बेचने वाला२१॥११२॥

निषिद्धविक्रयकरो ग्रामाणामधिकारकृत् ।
वंदी च देशिकः प्राज्ञो धूपकश्चौषधिक्रियः ।।११३।।

निन्दित पदार्थ बेचने वाला २२, ग्राम का अधिकारी २३, राजकर्मचारी २४, देशिक २५,बुद्धिमान् २६,धूप बेचने वाला २७, दवा बेचने वाला २८॥११३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कायस्थ करणोद्युक्तो भारको भांडविक्रयी ।
कृषिकृच्च वणिग्धातुचर्मकारी च कर्षकः ॥११४॥
शास्त्राधिकारी विज्ञानी पुस्तको रंजको वणिक् ।
वेदवेदांगवेत्ता च शास्त्रज्ञो वंदिपाठकः ॥११५॥

बहुरूप धारण करने वाला २९, भार ढोने वाला ३०, बर्तन बेचने वाला ३१, खेती करने वाला ३२, वैश्य वृत्ति करने वाला ३३, धातुचर्म का व्यापारी ३४, कृषक ३५॥११४॥ शास्त्राधिकारी ३६, विज्ञान को जानने वाला ३७, पुस्तक का संग्रही ३८, रंगने वाला ३९, वैश्य वृत्ति करने वाला ४०, वेदवेदांग को जानने वाला ४१, शास्त्र को जानने वाला ४२ वन्दी पाठ करने वाला ४३॥११५॥

ग्रामणीरधिकारी च गणको दंडकारकः ।
भारकश्चेंधनाहारी फलमूलादिविक्रयी ॥११६॥
शांतकृत्स्वर्णकारी च कृषिकृत्पलविक्रयी ।
याजकोऽध्यापकोऽध्यक्षः प्रतिग्रहपरः फली ॥११७॥

ग्राम प्रधान ४४, अधिकारी ४५, गणक, ४६, दंड देने वाला, ४७, भारक ४८, ईंधन का व्यापारी ४९, फल-फूल बेचने वाला ५०॥११६॥ शांतिस्थापन करने वाला ५१, सुनार का काम करने वाला ५२, खेती करने वाला ५३, मांस बेचने वाला ५४, यज्ञ करने वाला ५५, अध्यापक ५६, अध्यक्ष ५७, दान देने वाला ५८, फल बेचने वाला ५९॥११७॥

क्रमात्व्युत्क्रमतश्चैव षष्टिः स्यादंशकेषु च ।

कुछ भी काम न करने वाला ६० होता है, और समराशि में जन्म हो तो विलोम से फल जानना चाहिए।

षष्ट्यंशेविशेषः-

रवीशहरिविष्णवीशदुर्गागणपतिष्वथ ॥११८॥
चंडिकायां च चंडेशौ चंद्रविश्ण्वीशपावके ।
त्रिपुरा चेंदिराविष्णुहरिशंकरशंभुषु ॥११९॥

षष्ट्यंश के दो-दो अंशों को एक साथ करने से ३० होते हैं इस क्रम से अंश में जन्म नक्षत्र हो तो उसका फल क्रम से रवि १, ईश २, हरि ३, विष्णु ४, हिरण्यगर्भ ५, दुर्गा ६, गणपति ७॥११८॥ चंडिका ८, चंड ९, महादेव १०, चंद्र ११, विष्णु १२, ईश १३, अग्नि १४, त्रिपुरा १५, इंदिरा, १६, विष्णु १७, हरि १८, शंकर १९, शम्भु २०॥११९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

क्षेत्रेशे गरुडे स्कंदे शास्तरि ब्रह्मणीश्वरे ।
विषापहरणोद्युक्ते जिने बुद्धे क्रमात्था ॥ १२० ॥

क्षेत्रेश २१, गरुड़ २२, स्कन्द २३, शास्ता २४, ब्रह्मा २५, ईश्वर २६, गरुड़ २७, जिन २८, बौद्ध २९, सभी में समान भक्ति होती है॥ १२० ॥

अथ मरणनिमित्तानि-

ज्वरश्लेष्मातिसारासृग्जठरव्याधिमूलरुक् ।
मेहग्रहणिपिटिका पावकावनिशस्त्रतः ।। १२१ ।।

सूर्यादि १४ ग्रहों में जन्म राशि में जो हो वा जिसका अंश हो उसके निमित्त से मृत्यु कहना चाहिये। जैसे ज्वर १, कफ २, अतिसार ३, रक्त-विकार ४, जठर (पेट) व्याधि ५, मूलव्याधि ६, प्रमेह ७, संग्रहणी ८, पिटकरोग ९, अग्नि १०, भू ११, शस्त्र १२॥ १२१ ॥

दाहज्वरविषाभ्यां तु सूर्यात्कालांतिमे मृतिः ।
राशौ ग्रहांशके पित्तवातश्लेष्मजरोगतः ।। १२२ ।।
पित्तवातकफश्लेष्मपित्तवात्तैः क्रमात्स्मृतः ।

दाह १३, ज्वर विष १४, निमित्त से मृत्यु कहना। प्रकारान्तर में सूर्य से पित्त, चन्द्र से वायु, भौम से कफ, बुध से पित्त, गुरु से वायु, शुक्र से कफ, शनि से कफ, राहु से पित्त, केतु से वायु के द्वारा मृत्यु होती है॥ १२२ ॥

नवांशद्वारा मरणनिमित्तानि-

ज्वरसन्निपातजठरामयांत्ररुग्रामप्रमेहजलाज्वलाग्नितः।
ज्वरसन्निपातोत्रभवेन्मृतिःक्रियपूर्वकस्तु निधनांशकेषु तु ॥ १२३॥

मेषादि राशियों में मरणकालीन नवांशों के निंमित्त क्रम से ज्वर १, सन्निपातज्वर २, जठर(पेट) के रोग ३, आन्त्ररोग ४, प्रमेह ५, जल से ६, अग्नि से ७, ज्वर से ८ मृत्यु कहना। यह जन्म लग्न के नवांश से देखना चाहिये॥ १२३ ॥

राशिनिमित्ततो मृत्युविचारः-

गुल्मोदरज्वरविषाग्निजलादि-
पातगुदकलभगंदरोत्था ।
रक्तातिसारजठरज्वरमेहगुल्मकुष्ठाति
सारपिटकादिभिरश्मरीयैः ।। १२४ ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मेषादि राशियों में क्रम से गुल्म १, उदरज्वर २, विष ३, अग्नि से ४, शस्त्रादि से ५, भगंदर से ६, रक्तातिसार ७, जठर रोग से ८, प्रमेह-गुल्म से ९, कुष्ठ अतिसार से १०, पिटक रोग से ११॥ १२४॥

शूलाशनिक्षतजपित्तसमावृतानि ।
शीतज्वरप्रभृतिराशिवशात्क्रमेण।।१२५।।

शूल वज्रपातादि से १०, पित्तरोग से ११, शीतज्वरादि से १२, मृत्यु होती है॥ १२५॥

अथ कालादि सूर्यान्त चतुर्दशग्रहाणामंशेन मृत्युज्ञानम्-

कालादिरव्यंतखगोक्तजाता चेद्दुर्गपातपतनज्वरसन्निपातात्।
गोपातसत्वजनिता च मृतिः क्रमेण वामेन चापि पुनरेवमथांशकेषु।१२६

काल आदि १४ ग्रहों के क्रम से दुर्गपात से १, पतन से २, ज्वर ३, सन्निपात से ४, बैल से ५, पतन से ६, प्राणि निमित्त से ७।८, पतन से १३, दुर्गपात से १४ मृत्यु होती है॥ १२६॥

अथ रश्मिद्वारा वर्षानयने हरांशज्ञानम्-

आचतुर्थात्खभूतानि त्रयोद्वादश हारकौ ।
अथस्यादष्टमात्षष्टिः पञ्चाष्टौ दशमात्ततः ॥ १२७॥
पञ्चपञ्चाशदंकाःस्युस्त्रयो रत्नानि हारकाः ।
एकादशेऽष्टषष्टिः स्यात्सप्तकाष्ठाश्च हारकाः ॥ १२८॥
त्रयोदशे च तानाः स्युर्द्विसप्ततिरथो मनौ ।
रश्मयः पञ्चदश चेत्पञ्चसप्ततिरेव च ॥ १२९॥
वेदपञ्चरसा हारा दशरुद्राश्च रश्मयः ।
आत्रिंशतः क्रमादंका अशीतिरथ सप्ततिः ॥ १३०॥
खेषवः खाब्धयः खाद्रिवेदसप्ततिः ।
षष्ठीरद्रादिरष्टेषु पञ्चसप्ततिरद्रियुक् ॥ १३१॥
एकाशीतिश्चतुर्युक्तावत्वारिंशत्स्मृताः समाः ।
सप्तांकरसतर्केषु नवाद्रिरसषट्करा: ॥ १३२॥

रश्मि द्वारा वर्ष लाने के लिये हारक संख्या कहते हैं, शेष चक्र से स्पष्ट है॥ १२७-१३२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

रश्मिवर्षहारज्ञानार्थचक्रम्-

रश्मि:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वर्षा:	०	०	०	५०	५०	५०	५०	६०	०	५५	६८	०	४९	७५	७५	८०	७०	५०	४०	७
हारा:	०	०	०	३	३	३	३	५	०	३	७	०	७३	५४	१०	७	९	६	६	५
हारा:	०	०	०	१२	१२	१२	१२	८	०	९	१०	०	०	६	११	०	०	०	०	०
रश्मि	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०										
वर्षा:	७४	७४	६०	७८	५८	७५	७७	८१	८५	४०										
हारा:	९	७	६	६	२	११	१०	९	६	१२										

अथ अंशायुहारः-

रुद्रा दिङ्नवतर्काकी अङ्कहाराः क्रमादमी ।
रुद्रार्कमनुविश्वेष्टिः सप्तांकेष्वर्कदिक्छराः ।।१३३।।

११।१२।१४।१३।१६।७।५९।१२।१०।५।५४।९० ये-ये अंशायुर्दाय के हार हैं॥ १३३॥

राशीनामंशायुर्दायि हारः-

वेदेषुर्वेदकाङ्काः स्युरंशहारा प्रकीर्तिताः ।
पंचानां च चतुर्णां च तत्तत्षण्णवतिः शतम् ।।१३४।।

५।४।६।९०।१००॥१३४॥

दशरुद्रानखामूर्छा हाराः स्युः क्रमशः स्मृताः ।
शते रसार्करुद्राश्च दश विंशोत्तरं शतम् ।।१३५।।

१०।११।२०।२१ ये क्रम से नवांशायुर्दाय के हार हैं, शतायुर्दाय के क्रम से ६।१२।११।१०।१२० हार होते हैं॥ १३५॥

एते हाराः क्रमात्प्रोक्ताः केषांचित्परमायुषः ।
केषांचिदनयोर्योगदलमब्दाः विशेषतः ।।१३६।।

किसीके मतसे हार शतायु के योग का करना वही वर्ष होता है॥१३६॥

अथ पूर्वोक्तानां फलविचारः-

दशमं यावदायातः स्वकुटुम्बं बिभर्त्ति च ।
कृच्छ्रेण दशमे पुत्रबाहुल्यानेकसंयुतः ।।१३७।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि दश पर्यन्त रश्मि योग हो तो कष्ट से कुटुम्ब का भरण-पोषण करें, यदि दश रश्मि योग हो तो अधिक पुत्र हों॥ १३७॥

एकादशे तु विद्वांसो निर्धनो जगती सदा।
अरंति द्वादशे नित्यं निर्धनाः कुलपांशवाः॥१३८॥

ग्यारह रश्मि हो तो पुत्र विद्वान् और निर्धनता के कारण पृथ्वी पर घूमता रहे, १२ रश्मि हो तो निर्धन, कुलाधम और नीच हो॥ १३८॥

स्वदेहार्थधना दासा अतो यावत्तु विंशतिः।
अतःपरं मृतिं याता बाल्ये एव यथागताः॥१३९॥

तेरह रश्मि हो तो शरीर के रक्षार्थ धन पैदा करने वाला, नौकरी करने वाला और कितनों की बाल्यकाल में ही मृत्यु हो जाती है॥ १३९॥

अथ योगज्ञानम्-

एवंप्राग्वत्वत्सराः प्रोक्ताः प्रथमे चोत्तरे स्मृत्ताः॥१४०॥
केन्द्रत्रिकोणेष्वशुभाः ग्रहास्तु त्रिलाभषष्ठाष्टमगाः शुभाश्चेत्।
द्वितीयवेमास्तगताश्च भौमक्षीणेंदुमंदा यदि वा च वामम्॥१४१॥

केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (९।५) स्थानों में पापग्रह हों और ३।११।६।८ स्थान में शुभग्रह हों अथवा २।४।७ स्थानों में भौम क्षीण चन्द्रमा शनि हो॥ १४०-१४१॥

स्थानेषु धनदेष्वेवं शत्रुवर्गगता यदि।
रव्यार्कितमः क्षीणचन्द्रा स्युरेकदा इमे।
एवं त्रिकादियोगानां संयोगो एकदो गुणैः॥१४२॥
अन्यथा तारतम्येन कदाचित्को भवेद् द्विज।
लग्नद्विधर्मकर्मायसुखपुत्रास्त विक्रमे॥१४३॥

अथवा रवि, भौम, शनि, क्षीण चन्द्र हो तो दरिद्र योग होता है। यदि ऐसा ही त्रिक (६।८।१२) भाव में संबंध हो तो गुणयुक्त दरिद्र योग होता है॥ १४२॥ अथवा १।२।९।१०।११।४।५।७।३ स्थानों में॥ १४३॥

स्थितःस्थितौ स्थिताः खेटाः शत्रुग्रहनिरीक्षिताः।
आदौ वयसिमध्येऽन्त्ये दरिद्राः स्युःक्रमाद्भवेत्॥१४४॥

एक ग्रह हो और शत्रु ग्रह की दृष्टि हो तो प्रथम अवस्था में दरिद्र हो, दो ग्रह हों तो मध्य अवस्था में और तीन ग्रह हों तो अन्तिम अवस्था में दरिद्र होता है॥ १४४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

योगान्तरम्-

नव योगा इमे प्रोक्तास्त्रिषु स्थानेषु रेकदाः ।
कर्कटाद्वृश्चिकान्मीनाच्चतुर्ष्वेव क्रमात्स्थिताः ॥ १४५ ॥
शत्रुगेहे स्थिताः पापा मध्येऽन्त्ये प्रथमे क्रमात् ।
सुखान्मृत्योर्व्ययात्पुत्राद्धर्माल्लग्नात्तथैव च ॥ १४६ ॥

ये नव योग तीन-तीन स्थानों के कहे गये हैं जो कि कर्क, वृश्चिक, मीन राशि से आरम्भ होते हैं॥ १४५॥ कर्क राशि से ४ राशि के अन्दर पापग्रह हों और शत्रु राशि में हों तो मध्य अवस्था में योगफल होता है, वृश्चिकादि चार राशियों में हों तो अंत्य अवस्था में और मीनादि चार राशियों में हों तो प्रथम अवस्था में योग का फल होता है। इसी प्रकार ४।८।१२।५।६।१ भावों से भी योगों का विचार करना चाहिये॥ १४६॥

एवमक्षा यदि न्यूनाश्चाष्टवर्गसमुद्भवाः ।
केन्द्रेषु च त्रिकोणेषु शुभा उपचये परे ॥ १४७ ॥
धनदेषु शुभाश्चान्ये परेषु च यदि स्थिताः ।
इष्टरश्मिफलाधिक्यैकश्च द्वौ च त्रयोऽपि वा ॥ १४८ ॥

केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (९।५) स्थानोंमें शुभग्रह होंवे और ३।६।११ स्थानों में पापग्रह हों।१४७। धन स्थान में शुभग्रह हों, इष्टरश्मि फल अधिक हो और उच्च मूल त्रिकोण राशि के एक, दो, तीन ग्रह हों॥१४८॥

उच्चादि पञ्चकस्थाने नवांशेष्वेव वा यदि ।
लक्ष्मीयोगा इमे प्रोक्तास्सुहृद्दृष्टास्तथापरे ॥ १४९ ॥

अथवा उच्चादि के नवांश हों तो लक्ष्मी योग होता है॥ १४९॥

योगान्तरम्-

रेके प्रोक्ताधिकालांशाः शुभारिःफाष्टषड्विना ।
उच्चौ द्वौ वात्रयः कोणे चत्वारोऽतिसुहृत्स्थिताः ॥ १५० ॥

रेका आदि दरिद्रयोग में जो अधिक कालांश कहे हैं वे और १२।८।६ इन स्थानों को छोड़कर शेष स्थानों में उच्च त्रिकोण में हो, एक दो तीन वा चार ग्रह हों अथवा अतिमित्र स्थान के होकर पाँच, छः या सात ग्रह हों तो श्रीलक्ष्मीयोग होता है॥ १५०॥

योगान्तरम्-

मित्रेण पंच षट् सप्त खेटाश्चेच्छ्रीप्रदाः स्मृताः ।
द्विर्द्वादशे शुभो चन्द्रात्सप्तमे वातयोस्तथा ।।१५१।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरौ लग्ने द्वितीये ज्ञे व्यये शुक्रेऽथवा भवेत् ।
भावदृग्बलकष्टेष्ट - फलभावस्वभावतः ।।१५२।।

चन्द्रमा से २।१२ स्थान में शुभग्रह हों अथवा लग्न से ७ स्थान में शुभ ग्रह हों और लग्न में गुरु हों॥ १५१॥ दूसरे स्थान में बुध हो अथवा १२वें स्थान में शुक्र हो तो लक्ष्मीयोग होता है, किन्तु भावबल, दिग्बल, इष्टकष्ट फल के तारतम्य से फल होता है॥ १५२॥

योगान्तरम्-

दायानां च फलैरेव भाववर्गेशसंयुतैः ।
रश्म्यंशसंभवादेव वर्षचर्या च दैववित् ।।१५३।।

आयुर्दाय के फल के साथ भावेश और वर्गेश के फलों का समन्वय करके रश्म्यंश के तारतम्य से वर्षचर्या का फल कहना चाहिये॥ १५३॥

एषामंशाश्च संभूताः कारकादिग्रहैरपि ।
मासचर्यादिनोत्थां नाष्टवर्गसमुद्भवात् ।।१५४।।

तथा कारकादि ग्रहों के अनुसार मासचर्या और अष्टकवर्ग के अनुसार दिनचर्या को कहना चाहिये॥ १५४॥

अन्यविशेषः-

भावदृष्ट्योः प्रधानत्वात्कारको बोधको बले ।
इष्टकष्टफले त्वन्ये पाचको रश्मिसंभवे ।।१५५।।

भाव और दृष्टि के विचार में कारक ही प्रधान होता है, उसी को लेना चाहिये। बलाबल के विचार में बोधक ग्रह की प्रधानता होती है, अतः उसी को लेना चाहिए। इष्टकष्ट और रश्मि के विचार में पाचक ग्रह की प्रधानता होने के कारण पाचक को ही लेना चाहिये॥ १५५॥

अंतर्दये तु भावानां प्रधानो वेधकः स्मृतः ।
अंतर्दये दशानां तु कारको बोधकस्स्मृतः ।।१५६।।

अंतर्दाय के विचार में सभी भावों का वेधक प्रधान होता है, दशा के अन्तर्दाय विचार में बोधक और कारक प्रधान होते हैं॥ १५६॥

भावस्वभावविषये पाचकस्त्वन्यथा भवेत् ।
पाचकस्त्वन्यथासूर्यश्चन्द्रमा बोधकः स्मृत ।।१५७।।

और भाव स्वभाव के विचार पाचक ग्रह प्रधान होता है। सूर्य स्वभावतः पाचकग्रह है और चन्द्रमा बोधक ग्रह है॥ १५७॥

।इति बृहत्पाराशरहोरायामुत्तरार्धेऽब्दचर्यावर्णनं नामश्चतुर्दशोऽध्यायः।१४।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ वर्षचर्यादिफलाध्यायः ॥ १५ ॥

तत्रादौ रश्म्यंशफलम्-

षष्ठादिरश्मिष्वाद्येंऽशे जनको जन्मतो भृशम् ।
धनादिहीनो रिक्तश्च द्वितीयेंऽशे पितुर्मृतिः ॥ १ ॥

छठे रश्मि के पहले अंश में जन्म हो तो उसका पिता निर्धन होता है, दूसरे अंश में जन्म हो तो पिता की मृत्यु होती है॥ १ ॥

निःस्वस्तृतीये दासश्च चतुर्थे रंकसंयुतः ।
व्याधिभिः पीडितस्तत्स्वत्पंचमे भृशदुःखितः ॥ २ ॥

तीसरे अंश में जन्म हो तो दरिद्र और सेवक होता है, चौथे अंश में दरिद्र और व्याधिग्रस्त होता है, पाचवें अंश में अत्यन्त पीड़ित होता है॥ २ ॥

नवमे दशमे चैवं षष्ठेंऽशे सप्तमेऽपि च ।
व्याधियुक्तो दरिद्रश्च यदि जीवति जीवति ॥ ३ ॥
एकादशेऽपि रश्मौ चेदाद्येंऽशे पितृलालितः ।
पितुर्धनव्ययकरो द्वितीये वन्धकीपतिः ॥ ४ ॥

नवें, दशवें, छठें और सातवें अंश में रोगी और दरिद्र तथा जीवन में भी संदेह यदि जीवे तो जी सकता है॥ ३ ॥ ग्यारहवें रश्मि के प्रथमांश में पिता का पालन-पोषण करने वाला और पितृधन हारक होता है। दूसरे अंश में हो तो स्त्री पुंश्चली होती है और स्वयं वेश्यासक्त होता है॥ ४ ॥

वेश्यासक्तस्तृतीये स्यान्निर्धनः कुलपांशनः ।
मृतपुत्रोऽथवाऽभाग्यश्चतुर्थे स्त्रीविमानितः ॥ ५ ॥

तीसरे अंश में निर्धन और कुलहीन होता है। अथवा मृतपुत्र वाला भाग्यहीन होता है। चौथे अंश में स्त्री से पराजित हो॥ ५ ॥

पञ्चमे त्वल्पपुत्रःस्यात्षष्ठे चाप्यरुजा युतः ।
श्रीयोगे धनवान्कश्चित्सप्तमे दुःखितोऽधनः ॥ ६ ॥

पाँचवें अंश में अल्पपुत्र, छठे अंश में रोग रहित हो, स्त्री के योग से धनी हो, सातवें अंश में दुःखी और निर्धन हो॥ ६ ॥

आद्येंऽशे द्वादशे रश्मौ नैव तस्य शुभाशुभौ ।
द्वितीये बलवान्मूर्खश्चौर्यद्रव्येण जीवति ॥ ७ ॥
तृतीये च चतुर्थे च वेश्यापतिररिंदमः ।
नृपपुरुष मृत्युश्च भार्याहीनोऽसुतेऽधनी ॥ ८ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बारहवें रश्मि के प्रथमांश में जन्म हो तो शुभ-अशुभ समान हो, दूसरे अंश में बलवान्, मूर्ख, चोर हो॥ ७॥ तीसरे तथा चौथे अंश में वेश्यापति हो और शत्रु का नाश करने वाला राजपुरुष के हाथ से मृत्यु हो और यदि जीवे तो स्त्रीहीन, पुत्रहीन और धनहीन हो॥ ८॥

विद्वांश्चतुर्दशे त्वाद्ये पितृभ्यां लालितः सुखी।
द्वितीये क्लेशभाग्वापि शत्रुजिच्च रणाजिरे॥ ९॥
पितृभ्यां हीन एवाथ लब्धकिंचिद्धनार्जकः।
देशाद्देशगत्येव तृतीये धनतत्परः॥ १०॥

चौदहवीं रश्मि के प्रथम अंश में जन्म हो तो विद्वान् हो, दूसरे अंश में माता-पिता से लालित और सुखी, तीसरे अंश में क्लेशयुक्त, शत्रु को जीतने वाला, मातृ-पितृ हीन हो और भ्रमणशील हो॥ ९-१०॥

सद्भिरीड्यः सुखी ख्यातः शांतबुद्धिररिंदमः।
चतुर्थे धनवान् क्षेत्री विद्ययार्जितपोषकः॥ ११॥

चौथे अंश में धनी, सुखी, प्रसिद्ध, शांतबुद्धि, शत्रुनाशक, स्तुत्य, पाँचवें अंश में धनी, भूमियुक्त, विद्या से जीविका करने वाला॥ ११॥

सती श्रीयोगसंयुक्तः पञ्चमे दुःखभाग्धनी।
पुत्रादिसंपत्संयुक्तः एवं पञ्चदशे भवेत्॥ १२॥

उत्तम स्त्री से युक्त हो, छठे अंश से दुःखी, धनपुत्र से सुखी, पन्द्रहवें रश्मि का फल ऊपर कहे हुए पाँच अंश के सदृश ही समझना चाहिये॥ १२॥

अस्मिन्षष्ठे धनी प्राज्ञो विद्यया सद्यशो भवेत्।
एवं च षोडशे चांशे त्वतीव धनवान् भवेत्॥ १३॥

छठे अंश में बुद्धिमान्, धनी, सोलहवें और सत्रहवें रश्मि के प्रथम अंश में अत्यन्त धनी॥ १३॥

स्वबंधुभ्योऽधिकोऽन्येंऽशे विद्ययाऽथ धनेन वा।
पुत्रादिसंयुतः श्रीमांस्त्र्यंशे स्यात्स्वजनेश्वरः॥ १४॥

दूसरे अंश में बन्धु से अधिक प्रतापी, तीसरे अंश में विद्या, धन-पुत्रादि से सुखी, चौथे अंश में अपने देश में अधिकार प्राप्त हो॥ १४॥

इष्टापूर्त्तेन संयुक्तस्त्वष्टादशोनविंशके।
पूर्ववद्विंशरश्मौ तु लब्धधामपरायणः॥ १५॥

पाँचवें अंश में यज्ञ करने वाला, बावली, कूप, तालाब, बगीचा लगाने

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वाला, अठारह और उन्नीसवीं रश्मि का फल सत्रहवीं रश्मि के अनुसार ही होता है। बीसवीं रश्मि में भूमि प्राप्त करने वाला होता है॥ १५॥

वदान्यः पूर्वधर्माणां मनुवद्बहुपुत्रकः।
एकविंशे धनैर्युक्तमाद्येऽनंतरभागके॥ १६॥
तृतीये तु भुवि ख्यातो दानेन च धनेन च।
द्विनामत्वं तु वा यज्वा यानवाहनसंयुतः॥ १७॥

दानशील मनु के समान बहु पुत्रवान् हो, इक्कीसवीं रश्मि के प्रथम अंश में तथा दूसरे अंश में धनी हो॥ १६॥ तीसरे अंश में दानधर्म से प्रसिद्धियुक्त, वाहन युक्त, यज्ञकर्त्ता, श्रीमान्, बहुधन से युक्त हो॥ १७॥

श्रीमान्बहुधनानां च साधकश्च चतुर्थके।
अग्निमांद्येन रोगार्त्तश्चतुर्थे धनवान्सुखी॥ १८॥

चौथे अंश में अग्निमांद्य रोग से पीड़ित, श्रीमान्, अनेक धनों का साधन धनी सुखी होता है॥ १८॥

पञ्चमे देशयोर्विद्वान्वदान्यो दंतरोऽथवा।
सप्तमे धनहानिः स्याद्राजयोगैश्च मृत्युयुक्॥ १९॥

पाँचवे अंश में धनी-सुखी, छठें अंश में वदान्य, दंतुर, सातवें अंश में निर्धन हो और राजनिमित्त से मृत्यु पाने वाला॥ १९॥

अष्टमे निर्धनस्थानां जनानां पोषणे रतः।
द्वाविंशे प्रथमेंऽशे तु पितुः पुत्रो धनस्य तु॥ २०॥
द्वितीये धनहीनश्च किंचित्कृषिकरः सुखी।
तृतीये राजकार्यार्थी तत्क्षमार्जितवित्तकः॥ २१॥

आठवें में निर्धन दरिद्रों का पोषक, बाईसवें के प्रथम अंश में पितृधन का रक्षक होता है॥ २०॥ बाईसवें रश्मि के दूसरे अंश में निर्धन, थोड़ी खेती करने वाला और सुखी होता है। तीसरे अंश में राजकार्य से धन प्राप्त करनेवाला होता है॥ २१॥

चतुर्थे तु प्रभुश्चान्यनामभाग्दृढबन्धनात्।
पंचमे तद्वदेव स्यात्षष्ठे कार्यस्य हानिकः॥ २२॥

चौथे अंश में समर्थ दो नाम से प्रसिद्ध, पाँचवें अंश में चौथे के समान फल, छठे अंश में कार्य की हानि करने वाला॥ २२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वव्ययश्च रिक्तश्च सप्तमे रोगयुग्धनी ।
त्रयोविंशे तु जनकलालितश्च सुखी भवेत् ।।२३।।

सातवें अंश में रोगी और धनी हो। तेईसवें रश्मि के प्रथम अंश में पिता से सुखी, दूसरे अंश में सुखी॥ २३॥

तृतीये मूर्खकृत्येन पराभवसमन्वितः ।
चतुर्थे चौरकृत्येन पञ्चमे व्याधिसंभवः ।।२४।।
षष्ठे दरिद्रः पुरुषो व्याधिना पीडितो भवेत् ।
श्रीमान् पुत्रश्चतुर्विंशे प्रथमे लालितो भृशम् ।।२५।।

तीसरे अंश में मूर्खतावश हार खाने वाला, चौथे अंश में चोर, पाँचवें अंश में रोगी॥ २४॥ छठें अंश में दरिद्री, रोगी तथा चौबीसवें रश्मि के प्रथम अंश में धनी होता है॥ २५॥

स्वजात्यनुगुणो विद्वान्प्रथमे च द्वितीयके ।
तेन ख्यातस्तृतीये स्यात्स्वतन्त्रः सर्वसम्मतः ।।२६।।

पिता से सुखी, विद्वान्, स्वजातिगुण से युक्त, दूसरे अंश में पूर्व का ही फल, तीसरे अंश में स्वतन्त्र॥ २६॥

क्षेत्रदारसुहृत्पुत्र - कलत्रैर्बहुभिर्वृतः ।
पंचमे व्याधितः षष्ठे बहुव्ययपरायणः ।।२७।।

छठे अंश में अधिक व्यय करने वाला होता है॥ २७॥

पंचविंशे तु षष्ठांशे फलहीनस्तु जीवति ।
षड्विंशे प्रथमांशे तु दरिद्रः स्यात्सुतोऽपि सन् ।।२८।।
पितुः कार्ये तु वृद्धिःस्याद्द्वितीये पितृवेश्मतः ।
अन्यत्र गत्वा तत्रैव स्वयोगेन च कर्मणा ।।२९।।

पच्चीसवें रश्मि के छठे अंश में निष्फल जीवन वाला, छब्बीसवें रश्मि के प्रथम अंश में दरिद्र होता है॥ २८॥ दूसरे अंश में अपने गृह से अन्यत्र दूसरे स्थान में शरीर-पोषण करने वाला होता है॥ २९॥

स्वदेहपोषकोऽन्येंऽशे धनी च कृत्यवित्स्थितः ।
चतुर्थे पंचमे चैव पट्टबन्धादिसंयुतः ।।३०।।

तीसरे अंश में धनी, कार्य को जानने वाला, चौथे-पाँचवें अंश में पट्टबन्धादि से युक्त होता है॥ ३०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अतीवधनवान्सस्यात्षष्ठे त्वंशे स्वदेहभाक् ।
क्षेत्रदारादिवृद्ध्या तु व्यथाव्याधिसमन्वितः ।।३१।।

छठे अंश में धनी, सातवें अंश में देह-पोषण करने वाला, आठवें अंश में खेत और स्त्रियों की वृद्धि से जीवन चलाने वाला हो।। ३१ ।।

नवमे धनहानिः स्यात्पुत्रदारविवर्जितः ।
यावद्दश नवांशाश्च षड्विंशवदथ द्वये ।। ३२ ।।

नवें अंश में मानसिक रोग से युक्त, दशम अंश में धनहीन, स्त्री-पुत्रहीन हो, सत्ताइस और अट्ठाइस रश्मि के फल पूर्वोक्तवत् हैं।। ३२ ।।

राजप्रियस्तरश्चण्डः शुद्धः स्यादंशके ततः ।
एकोनत्रिंशे रश्मौ तु सुखी स्याच्च द्वितीयके ।। ३३ ।।

उनतीसवें रश्मि के प्रथम अंश में जन्म हो तो सुखी होवे, दूसरे अंश में राजसेवी, तीसरे अंश में सत्कर्म करने वाला होता है।। ३३ ।।

राजसेवी तृतीयेंऽशे कृत्याकृत्यविदीश्वरः ।
बहुबन्धुयुतः श्रीमान्मानवाहनसंयुतः ।। ३४ ।।

चौथे अंश में अधिपति, पाँचवें अंश में बंधुओं के समागम में रहने वाला, छठे अंश में श्रीमान्, सातवें अंश में संतानयुक्त, आठवें अंश में देशाधिपति और नवम अंश में ग्राम का अधिकारी हो।। ३४ ।।

देशग्रामाधिकारी च त्रिंशे त्वेतैः समन्वितः ।
सेनानीर्नीतिमाञ्छूरः पञ्चमांशे भवेदिदम् ।। ३५ ।।

तीसवें रश्मि में भी पूर्वोक्त फल ही होता है, इकतीसवें रश्मि के पाँचवें अंश में सेनाधिपति नीतिमान् शूर हो।। ३५ ।।

षष्ठे तु विजयी युद्धे सप्तमेऽपि रुजा युतः ।
न्यूनायतिस्तु वस्वंशे नवांशे त्वधिकायतिः ।। ३६ ।।

छठे अंश में युद्ध में विजयी, सातवें अंश में रोगी, आठवें अंश में थोड़े लाभ वाला, नवम में अधिक लाभ वाला होता है।। ३६ ।।

त्रयस्त्रिंशे तु राजानः षष्ठांशे वा तृतीयके ।
अभिषिक्तो भवेद्यद्वा पट्टबंधस्तु योगतः ।। ३७ ।।

बत्तीसवें रश्मि का फल पूर्व के अनुसार ही होता है। तैंतीसवें रश्मि के छठें और तीसरे अंश में राजा होता है, शेष पूर्ववत् फल होता है।। ३७ ।।

रश्मौ तथा चतुस्त्रिंशे चतुर्थांशे पराजयः ।
तृतीये पञ्चमे षष्ठे युद्धेयु विजयी भवेत् ।। ३८ ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अष्टमे नवमेंऽशे तु वृद्धिः स्यात्शमेन हि ।
षडंशविषये यस्माच्चत्वारिंशत्ततः परे ॥ ३६॥

चौंतीसवें रश्मि के चौथे अंश में पराजय, तीसरे, पाँचवें, छठें अंश में विजेता॥ ३८॥ आठवें-नवें अंश में वृद्धियुक्त हो, चौंतीस से चालीस रश्मि तक के॥ ३६॥

द्वितीये च तृतीये च चतुर्थे चाद्यके तथा ।
राजा स्यात्पंचमे षष्ठे सप्ताष्टनवमे ततः ॥ ४०॥

प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ अंशों में राजा, सातवें अंश में युद्ध, आठवें में व्याधि, नवम में व्याधि॥ ४०॥

दशमे च क्रमाद्युद्धव्याधिर्वाऽथ पराजयः ।
इतरांशेषु संख्यातः सर्वसम्पत्समन्वितः ॥ ४१॥

और दशम में पराजय, शेष अंशों में सर्वसंपत्तिवान् हो॥ ४१॥

ततः परं च सम्राट् स्याच्चतुर्थे पंचमे जयी ।
अंशास्तुल्यास्तु तेष्वेवं विपरीफलं विदुः ॥ ४२॥

इसके आगे के रश्मियों में सम्राट् होता है, और चौथे पाँचवें में विजयी होता है। अंश तुल्य हो तो विपरीत फल होता है॥ ४२॥

व्याधिरुक्तवदेव स्याद्यावद्विंशतिरश्मयः ।
यद्यप्यंशाः परं नात्र अधिकारं भजन्ति ते ॥ ४३॥

बीस रश्मि तक उक्तवत् व्याधिभय होता है, इसके बाद व्याधि का अधिकार नहीं होता है॥ ४३॥

सूर्यादिग्रहाणां द्वादशभावफलम्-

अथ स्थानगतानां ख्यादीनां क्रमात्फलम् ।
ततो रविः शिरोरोगं बन्धूनां च विरोधताम् ॥ ४४॥

यदि सूर्य लग्न में हों तो शिर के रोग और बन्धु-विरोध॥ ४४॥

द्वितीये धनहानिश्च तृतीये मित्रवर्धनम् ।
धनलाभं सुखे सौख्यं शत्रुभिश्च समागमम् ॥ ४५॥

२ भाव में हों तो धन-हानि, तीसरे में मित्र-वृद्धि और धन-लाभ, चौथे भाव में शत्रु समागम से सुख॥ ४५॥

पंचमे पुत्रलाभं च बुद्धिमुद्यमसिद्धिकृत् ।
षष्ठे धनं जयं कुर्यात्सप्तमे स्त्रीविरोधनम् ॥ ४६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पाँचवें भाव में पुत्र-लाभ, बुद्धि में वृद्धि, उद्योग में सिद्धि, छठे भाव में धन लाभ और विजय, सातवें भाव में स्त्री से विरोध॥ ४६॥

अष्टमे व्याधिहानिं च नवमे मित्रबन्धनम्।
भाग्यहानिं च दशमे धनलाभं सुखं जयम्॥४७॥

८ भाव में व्याधि और हानि, ९वें भाव में मित्र का बन्धन और भाग्य हानि, १० भाव में धन-लाभ, सुख और विजय की प्राप्ति॥ ४७॥

एकादशे धनानां च सिद्धिः मित्रसमागमम्।
द्वादशे धनहानिं च जयं वा कुक्षिरुक्क्रमात्॥४८॥

११ भाव में धन का लाभ और मित्र समागम और १२वें भाव में हो तो धन-हानि, खर्चीला स्वभाव और कुक्षिरोग हो॥ ४८॥

अथ चन्द्रस्य द्वादशभावफलम्-

चन्द्रे लग्ने च कलहं द्वितीये धनयोजनम्।
तृतीये भ्रातृभिर्लाभं धनवस्त्रादिसंग्रहम्॥४९॥
चतुर्थे धनवस्त्रादि वाहनादि सुसंयुतम्॥५०॥

यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो कलह करनेवाला, २रे भाव में हो तो धन प्राप्ति करनेवाला, ३ रे भाव में हो तो भाई से लाभान्वित, वस्त्रादि का संग्रही हो॥४९॥ ४भाव में धन वस्त्र वाहन प्राप्ति॥ ५०॥

तीक्ष्णे धनी सुतयुतः परिपूर्णसंप
त्षष्ठे तु रोगसहितं कुमतिं च कामे।
विद्याधनक्षितिसुखादिसमन्वितश्च
मृत्यौ च मृत्युविषयः खलु कुक्षिरोगी॥५१॥

५ भाव में धन पुत्रादि सर्व संपत्तिमान्, ६ भाव में रोगी, कुबुद्धि से युक्त, ७ भाव में विद्या-धन-भूमि और भूमि का सुख, ८ भाव में मृत्यु, दुःख और कुक्षिरोग से युक्त होता है॥ ५१॥

स्त्रीस्वर्णदासायतिरेव धर्मे माने सुचारित्रगुणं धनं च।
लाभे तु चैतत्सकलं व्यये तु धनस्य रिःफं कुरुते शशी तु॥५२॥

९ भाव में स्त्री, सुवर्ण और दास की प्राप्ति, १० भाव में उत्तमगुण और धन का लाभ, ११ भाव में १० के समान फल, १२वें भाव में धन का व्यय करनेवाला होता है॥ ५२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ भौमस्य द्वादशभावफलम्-

कुजे लग्ने तु चापल्यात्क्षतं स्वे धननाशनम् ।
विक्रमे भ्रातृमरणं धनलाभः सुखं यशः ।
चतुर्थे बन्धुमरणं शत्रुवृद्धिर्धनव्ययम् ॥५३॥

भौम लग्न में हो तो चंचल स्वभाव के कारण चोट लगने से रोग, २रे भाव में हो तो धन का नाश, ३ भाव में भ्रातृनाश, धन-नाश की प्राप्ति और सुख, ४ भाव में बंधुहानि, शत्रुवृद्धि, धन का खर्च॥५३॥

पंचमे पितृहानिं च धनायति सुतो यशः ।
षष्ठे रिपुसमृद्धिं च जयं बंधुसमागमम् ॥५४॥

५ भाव में पिता की हानि, धनप्राप्ति, पुत्र और यश का लाभ, ६ भाव में शत्रुवृद्धि, विजय, बंधुसमागम और धन लाभ होता है॥५४॥

अर्थवृद्धिं स्त्रियां दारमरणं नीचसेवनम् ।
नीचस्त्रीसंगमो मृत्यौ धननाशं पराभवम् ॥५५॥
पराभवमनर्थं च धर्मे पापरुचिक्रिया ।
धनव्ययं च दशमे धनलाभं कुकर्म च ॥५६॥

७ भाव में स्त्री को कष्ट, नीच की सेवा और नीच स्त्रीसंगम, ८ भाव में धननाश, पराभव और अनर्थ॥५५॥ ९ भाव में पापकर्म में रुचि, धन का व्यय, १० भाव में धनी, कुकर्मी हो॥५६॥

लाभे धनं सुखं वस्त्रं स्वर्णक्षेत्रादिसंग्रहम् ।
व्यये नेत्ररुजं भ्रातृनाशं च कुरुते कुजः ॥५७॥

११ भाव में धन वस्त्र-सुवर्ण-भूमि का लाभ, १२ भाव में हो तो नेत्ररोगी, भाई का अनिष्ट करने वाला होता है॥५७॥

अथ बुधस्य द्वादशभावफलम्-

बुधे षष्ठेऽरिवृद्धिं च युद्धे सति पराजयम् ।
मृतौ बंधुविहीनत्वं बंधनं व्ययभे व्ययम् ॥५८॥

लग्न से पाँचवें भाव तक बुध सभी भावों की वृद्धि करता है। ६ भाव में शत्रु की वृद्धि और पराजय करता है, ७ भाव में स्त्री-सुख, ८ भाव में बंधुहीनता और बंधन, ९ भाव में भाग्यवृद्धि, १० में व्यापार में वृद्धि, ११ भाव में लाभ और १२ भाव में खर्च कराने वाला होता है॥५८॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरु-शुक्रयोः द्वादशभावफलम्-

भावोक्तफलवृद्धिं तु परे तु कुरुते तथा।
गुरुशुक्रौ तृतीये तु शत्रुवृद्धिं धनक्षयम्।।५९।।
षष्ठे पराजयं व्याधिमष्टमे बंधनं तथा।
रिष्फे चोरहृतस्वं तु नेत्ररोगपराजयम्।।६०।।

जिन भावों का मूल में उल्लेख नहीं किया है, उन स्थानों में गुरु, शुक्र हो तो उनकी वृद्धि करते हैं, तीसरे भाव में हों तो शत्रु की वृद्धि और धन का नाश करते हैं॥ ५९॥ ६ भाव में हों तो पराजय और व्याधि करते हैं, ८वें भाव में बंधन, १२ वें भाव में चोरों द्वारा द्रव्य का अपहरण, नेत्र रोग और पराजय करते हैं॥ ६०॥

सप्तमे च चतुर्थे च सेनापत्यधनायतिः।
सर्वसम्पत्समृद्धिं च नवमे राजसंपदम्।।६१।।

सातवें और चौथे में सेनापत्य, धनलाभ, सभी सम्पत्तियों की वृद्धि, नवम में राजसम्पत्ति वा भाग्योदय होता है॥ ६१॥

अथ शनेः स्थानांतरफलम्-

पूर्वोक्तफलंसंयोगमन्येष्वपि समं भवेत्।
कुजवद्रविवन्मन्दः पापत्र्यंशं दलं गतः।।६२।।

शनि का फल भौम और रवि के भाव फल के समान ही होता है॥ ६२॥

पादोनमेकं मित्राधिमिक्षस्वर्क्षे च कोणभे।
उच्चे तु नीचे त्रिगुणमध्यरौ द्विगुणं ततः।।६३।।

यदि ग्रह मित्रगृह का हो तो चतुर्थांश फल, अधिमित्र गृह का हो तो तृतीयांश, स्वक्षेत्र और मूलत्रिकोण का हो तो तीन भाग फल देता है, उच्च-राशि का हो तो संपूर्ण फल देता है। यदि नीच राशि का हो तो तृतीयांश न्यून, अधिशत्रुगृही हो तो द्विगुणहीन और शत्रुगृही हो तो आधा फल देता है॥ ६३॥

ग्रहाणां दृष्टिवशात् सूर्यादीनां फलम्-

अरौ सार्धं क्रमात्कालफलजस्त्वेव निर्णयः।
शुभैर्दृष्टो रवी राजा राजसेनापतिस्तु वा।।६४।।
शत्रुभिः कलहं दुःखं रुजं जठरनेत्रयोः।
मित्रदृष्टो जयं बंधुलाभं पापैश्च रोगिताम्।।६५।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

यदि सूर्य शुभग्रह से देखा जाता हो तो राजा वा राजा का सेनापति हो॥ ६४॥ शत्रुओं से देखा जाता हो तो कलह, पेट और नेत्र में रोग हो, मित्रग्रह से देखा जाता हो तो विजय और बंधु से लाभ तथा पाप ग्रह से देखा जाता हो तो रोगी हो॥ ६५॥

चन्द्रस्य फलम्-

धनहानिं शशी पापैः शिरोनेत्ररुजं व्यथा।
शत्रुभिः पापकरणं धननाशं गमागमौ॥६६॥

चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो धन की हानि, सिर और नेत्र में रोग होता है, शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो पापकर्म करने वाला, धननाशक और भ्रमण करने वाला होता है॥ ६६॥

शुभैररोगतां सौख्यं धनलाभं च बंधुभिः।
मित्रैश्च धनसंसिद्धिं करोतीह न संशयः॥६७॥

शुभग्रहों से दृष्ट हो तो नैरुज्य, सुख, द्रव्य का लाभ भाइयों से होता है। मित्रग्रह से दृष्ट हो तो मित्रों द्वारा धन का लाभ होता है॥ ६७॥

भौमस्य फलम्-

पापैर्दृष्टः कुजः क्षेत्रधनधान्यादिनाशनम्।
शत्रुभिर्वधनं रोगं चाह्वे दूरवासनम्॥६८॥

यदि भौम पापग्रहों से देखा जाता हो तो क्षेत्र (भूमि) धन, धान्य का नाश करता है, शत्रुग्रह की दृष्टि हो तो बंधन रोग, युद्ध, दूर यात्रा हो॥ ६८॥

शुभैस्तु विजयं देशक्षेत्रलाभं सुहृच्छुभम्।
मित्रैश्च धनसंसिद्धिं करोतीह न संशयः॥६९॥

शुभग्रह की दृष्टि हो तो विजय, देश, भूमि का लाभ, मित्र से लाभ होता है, मित्रग्रह से दृष्ट हो तो धन का लाभ होता है॥ ६९॥

बुधस्य फलम्-

शुभैर्बुधो लिपिज्ञानं विद्यालाभं च कौशलम्।
मित्रैर्भूषाधनक्षौमरत्नलाभं च शत्रुभिः॥७०॥
अतिसारं च दुर्बुद्धिं प्रतीकेषु सदोद्यमम्।
पापैर्महाविवादं च कुक्षौ शूलं च वर्धति॥७१॥

बुध शुभग्रहों से देखा जाता हो तो लिपि का ज्ञान, विद्या का लाभ और कुशलता प्राप्त हो। मित्रग्रहों से देखा जाता हो तो आभूषण, धन, ऊन और रत्न का लाभ हो॥ ७०॥ शत्रुग्रहों से दृष्ट हो तो अतिसार,

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दुर्बुद्धि, शरीर के लिये उद्योगी हो, पापग्रहों से दृष्ट हो तो बड़े विवाद से युक्त और कुक्षि में शूलरोग की वृद्धि वाला हो॥ ७१॥

गुरोः फलम्-

गुरुः शुभैस्तु संदृष्टो धर्मकार्योद्यमं सुखम्।
जयं धनायतिर्मित्रैर्दारक्षेत्रादिसंग्रहम् ॥७२॥

गुरु शुभग्रह से देखे जाते हों तो धर्मकार्य में उद्यमशील और सुख हो, विजय और धनी हो, मित्रग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री, भूमि आदि का संग्रही हो॥ ७२॥

शत्रुभिः कुष्ठरोगं च त्वग्दोषकलहं रणम्।
पापैः पराजयं बुद्धेः कुदारादिवियोजनम् ॥७३॥

शत्रुग्रहों से दृष्ट हो तो चर्मरोग, कुष्ठरोग, कलह और संग्राम, पापग्रह से दृष्ट हो तो बुद्धि-दोष से पराजय, सुख, स्त्री आदि से वियोग हो॥ ७३॥

भृगोः फलम्-

शुभैः शुक्रः सुखं योषालाभं भूषा धनायतिम्।
मित्रैस्तु पट्टबंधादि देशलाभादि चाखिलम् ॥७४॥

शुक्र शुभग्रहों से दृष्ट हो तो सुख, स्त्री-लाभ, आभूषण-धन का लाभ हो, मित्रग्रह से दृष्ट हो तो पट्टबंधन, देश का लाभ होता है॥ ७४॥

पापैः पराजयं योषावियोगं धननाशनम्।
शत्रुभिर्याप्यरोगं च मूत्रकृच्छ्रादिकं तथा ॥७५॥

पापग्रह से दृष्ट हो तो पराजय, स्त्री वियोग और धन का नाश होता है, शत्रुग्रहों से दृष्ट हों तो कष्टसाध्य रोग, मूत्रकृच्छ्र (सूजाक) रोग हो॥ ७५॥

मंदः पापैस्तथा कुक्षिरोगं बंधनकं क्षयम्।
शत्रुभिः शत्रुबाधां च पराभवमथामयम् ॥७६॥

शनि पापग्रहोंसे देखा जाता हो तो कुक्षिरोग, बंधन और क्षय होता है। शत्रुओंसे देखा जाता हो तो शत्रुबाधा, पराभव और व्याधि होती है॥ ७६॥

अथ स्थानबलयुक्तसूर्यादिग्रहाणां फलम्-

शुभैररोगतां मित्रैर्दृष्टो बंधुसमागमम्।
रवौ स्थानबले पूर्णे स्वदेशे विद्यया बली ॥७७॥

सूर्य स्थान बल से युक्त हो तो स्वदेश में विद्या से बली होता है॥ ७७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रे प्रभुतया भौमे ग्रामण्येन बुधे सति।
श्रौतया विद्यया वाऽर्थलिपिलेखनकर्मणा ॥७८॥

चन्द्रमा बली हो तो प्रभुता, भौम बली हो तो ग्राम में प्रभुतायुक्त, बुध बली हो तो श्रौतकर्म, विद्या तथा लेखन कला से द्रव्ययुक्त हो॥ ७८॥

जनैर्धनैरमात्येषु बुद्ध्या च बलवान्गुरौ।
यद्वा स्वदेशराजस्तु कार्येणैवं बली मतः ॥७९॥

गुरु बली हो तो जन-धन-मंत्री और बुद्धि से बली हो या स्वदेश में शासन कार्य में बली हो॥ ७९॥

शुक्रे स्वदेशमुख्यो वा त्वाधिपत्येन योषिताम्।
मंदे भृतकदासानां मुख्यः स्याद्बलवानपि ॥८०॥
उक्तैस्तु पीडितः प्रेष्यः स्थानवीर्योनितेषु तु।
समन्यूनाधिकाद्वीर्याद्दृष्टोत्कर्षत्फिलं वदेत् ॥८१॥

शुक्र बली हो तो स्वदेश में मुख्य, स्त्रियों के आधिपत्य से सुखी, शनि बली हो तो नौकर-दासों का प्रधान होता है। स्थानबल से रहित ग्रह हो तो दास होता है॥ ८०॥ इसी समन्यून अधिक बल से युक्तग्रह के फल का विचार करना चाहिये॥ ८१॥

दिग्बलयुक्तग्रहाणां फलम्-

दिग्बलेनाधिके सूर्ये वाणिज्येन धनायतिः।
यशश्च धनवृद्धिश्च चन्द्रे तु राजसेवया ॥८२॥
भौमे तु सेवया ख्यातिर्वेदाभ्यासेन सर्वदा।
बुधे धनायतिः कृष्या यशः स्याद्बुद्धिमत्तया ॥८३॥

सूर्य दिग्बल से पूर्ण हो तो रोजगार से धन की प्राप्ति, यश और धन की वृद्धि होती है। चन्द्रमा बली हो तो राजसेवा से धन का लाभ होता है॥ ८२॥ भौम दिग्बल से युक्त हो तो सेवा से, वेदाभ्यास से प्रसिद्धि होती है। बुध बली हो तो बुद्धिमत्ता से यश और कृषि से धन का लाभ होता है॥ ८३॥

गुरौ धनायतिस्तेन वीर्येण धनशुभ्रता।
राजकार्येण शुक्र च वदान्यत्वेन वा यशः ॥८४॥
मंदे दासाधिपत्येन धनायतिररिंदमात्।
कालायनबलाधिक्ये रवौ भौमे शनैश्चरे ॥८५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरु बली हो तो शुभ्र धन का लाभ होता है, शुक्र बली हो तो राजकार्य से द्रव्य और यश का लाभ होता है॥ ८४॥ शनि बली हो तो दासों की स्वामिता और शौर्य से धन का लाभ होता है॥ ८५॥

कालायनबलयुक्तग्रहफलम्-

मंत्रोपदेशविधिना पाखंडिपदसंश्रयात्।
दासभावेन कृष्णेन्दौ कृषितो विद्ययान्यथा॥८६॥

सूर्य-भौम-शनि काल और अयन बल से युक्त हों तो मंत्रोपदेशपाखंड और दासता से जीवन निर्वाह करने वाला, कृष्ण पक्ष का चंद्रमा यदि दोनों बलों से युक्त हो तो खेती और विद्या से जीवन निर्वाह करने वाला, गुरु, शुक्र, बुध और शुक्लपक्ष का चन्द्रमा दोनों बलों से युक्त हो तो विद्या और धन से जीवन निर्वाह करनेवाला होता है॥ ८६॥

चेष्टाबलयुक्तग्रहाणां फलम्-

गुरौ शुक्रे बुधे पाथो निधिजे चात्रिसंभवे।
विद्याया बाधने संख्याबलदिग्बलवृद्धितः॥८७॥
नानाविधयतिः प्रोक्ता इति चेष्टाधिकेषु तु।
केचिदुक्तं यथापूर्वं विशेषादेव निर्णयः॥८८॥

यदि सूर्यादिग्रह चेष्टाबल से युक्त हों तो अनेक प्रकार की विद्या द्वारा द्रव्य का लाभ होता है॥ ८७-८८॥

बलिष्ठो दायरश्म्युक्तफलं सर्वं करोति वै।
न्यूनाधिकेऽनुपातेन फलमेवं विचिन्त्यताम्॥८९॥

गुरु, शुक्र, बुध यदि बलीं हों तो रश्म्युक्त पूर्णफल को देते हैं। यदि न्यूनाधिक बल हो तो अनुपात द्वारा फल को समझना चाहिये॥ ८९॥

इष्टबलानुसारेण फलम्-

सौम्येष्विष्टफलाधिकेषु नितरां श्रीमान्सुशीलो गुणी
मित्रेष्वेवमतीव धर्मनिरतो दाता सुखी सत्त्ववान्।
पापेष्वेव मथापि पापनिरतः शत्रुष्वथो शत्रुभि
र्वीर्येणाथ पराजयो जय इमान्पर्यायतः प्राप्नुयात्॥९०॥

यदि शुभग्रह इष्टबल में अधिक हों तो धनी, मित्रों के प्रति सुशीलता, गुणी, धर्मरत, दाता, सुखी और बलवान् होता है। यदि पापग्रह इष्टबल में अधिक हों तो शत्रुओं के बल द्वारा पराजय होता है॥ ९०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

फलांतरम्-

अधिकेष्वशुभेष्वेवमनिष्टाख्यफलानि तु ।
व्याधिभिः कलहैर्मित्रैः पीड्यते नात्र संशयः ॥६१॥

यदि पापग्रह अधिक बली हों तो ज्वरपीड़ित, कलह और मित्रों से पीड़ित रहता है॥ ६१॥

एवं पापेषु दुश्चेष्टः पातकी भवति ध्रुवम् ।
शत्रुष्वेवं सदा रोगी मित्रैर्बन्धुविवर्जितः ॥६२॥

पापग्रह अधिक बली हों तो दुष्ट चेष्टा वाला पातकी होता है। शत्रुग्रह अधिक बलीं हों तो सदा रोगी, मित्र तथा बंधु वर्ग से रहित हो॥ ६२॥

सर्वद्विष्टबलाधिक्ये सर्वत्रा फलदो ग्रहः ।
शुभेषु च फलेष्वेव स्पष्टमेव फलप्रदः ॥६३॥
अत्यनिष्टफलः खेटः शुभेषु त्वफलप्रदः ।
अनिष्टफलदोऽन्येषु खेटः सर्वत्र सर्वदा ॥६४॥

जो ग्रह सर्वद्विषी हो और बलाधिक्य हो तो वह निष्फल होता है॥ ६३॥ और जो शुभवर्ग में शुभ फल देने वाला है, यदि अन्य ग्रहों से मिश्रित है तो अनिष्ट फल देने वाला होता है॥ ६४॥

स्वोच्चादिस्थानषट्स्थाः स्युस्तथादिग्वर्गगा अपि ।
क्षेत्रपुत्रकलत्रादि - धनधान्यसमृद्धिदाः ।
यदि मित्रादिवर्गस्था धनधान्यविवर्धनाः ॥६५॥

जो ग्रह अपने उच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, अधिमित्रक्षेत्र, उदासीन क्षेत्र में हो वा अपने दशमवर्ग में हो वह स्त्री-पुत्र-धन-धान्य की वृद्धि करने वाला होता है॥ ६५॥

दशाफलम्-

व्याधि दुर्गतिदा प्रोक्ता दशारम्भे तु शीतगोः ।
स्वोच्चादिसंस्थिता दायप्रारम्भे शुभदा दशा ॥६६॥

आरम्भ में चन्द्रमा की दशा व्याधि और दुर्गति को देती है। उच्चादि छह स्थान में गये हुये ग्रह की दशा प्रारम्भ में शुभ फल देने वाली अन्यथा अशुभ फल देने वाली होती है॥ ६६॥

अन्यथाऽशुभदा प्रोक्ता प्रारम्भे ज्योतिषां दशा ।
केन्द्रधुम्रगताः खेटा दशायां शुभदाः सदा ॥६७॥

केन्द्र में गये हुये ग्रह की दशा शुभद होती है॥ ६७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

द्रव्यकर्मगुणा यस्य स्वभावाः कथिताः पुरा ।
ते सर्वे स्वदशाकाले योज्या भावद्गादिषु ॥९८॥
भावदृष्टिबलेष्टानि फलानि कथितानि च ।
भावाध्यायोक्तख्यादिफलान्यत्रैव योजयेत् ॥९९॥

पूर्व में जिस ग्रह का जो स्वभाव और गुण कहा गया है वह सभी उसके दशाकाल में योजना करना॥९८॥ और भावों अथवा भावेशों के दृष्टिवश में जो फल कहे गये हैं और भावस्थ सूर्यादि के फलों को भी तारतम्य से योजना कर फल कहना चाहिये॥९९॥

इति बृहत्पाराशरहोरायामुत्तरार्धे पञ्चदशोऽध्यायः॥१५॥

अथ मासचर्याप्रकरणम्

भावसंधिस्थग्रहाणां फलम्-

भावांशैः समतां गतः खलु खगः पूर्णं विधत्ते फलम्
संधिस्थो न फलप्रदोऽन्तरगतैस्त्रैराशिकेनैव च ।
भावन्यूनमथ ग्रहस्य गुणयेदंशादिकं चार्णवै
र्हित्वाचास्य च संधितोऽधिकमथो प्रोक्तंफलंभावजम्॥१॥

ग्रह जिस भाव में बैठा है उस भाव का राशि अंश यदि ग्रह के राशि अंश के तुल्य हो तो उस भाव का पूर्णफल प्राप्त होता है। यदि ग्रह संधि में हो तो उस ग्रह का फल नहीं होता है, दोनों के मध्य में हो तो त्रैराशिक द्वारा फल लाना चाहिये, यदि ग्रह भाव से न्यून हो तो ग्रह के अंश को ४ से गुणने से और यदि अधिक अंश हो तो भावसंधि से घटाने से शेष भाव फल होता है॥१॥

ऊर्ध्वमुखो रवियुक्तो राशिसमेतस्त्वधोमुखो ज्ञेयः ।
तिर्यङ्मुखोऽखिलयुतो राशिर्भावाः परेऽप्येवम् ॥२॥

यदि भाव में सूर्य हो उसे ऊर्ध्वमुख, जो भावग्रह रहित हो उसे अधोमुख और जो चन्द्रादि ग्रहों से युक्त हो उसे तिर्यक् मुख कहते हैं॥२॥

भावानां फलम्

अन्यजातीययोगे तु तत्तद्भावफलं वदेत् ।
स्वजातीययोगेषु त्रिंशाद्यंशा भवेत्युत ॥३॥

भावों में अन्य जातीय ग्रहों के योग हों तो उनके अनुसार भाव के फल को कहना चाहिये। यदि स्वजातीय ग्रह युक्त हो तो सम्पूर्ण तीस अंश फल होता है॥३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भावानां स्थानांकसंख्यामाह-

तत्त्वमाकृतिरेकाक्षिछंदस्तत्वं चतुस्त्रयः ।
एकोनविंशतिच्छन्दो नवाक्षी षट्त्रयस्तथा ॥४॥

तनु आदि १२भावों के क्रम से २५, २२, २१, २६, २५, ३४, १९, २६, २९, ३६, ५४, १६ ये भाव स्थानांक संख्यायें हैं॥४॥

भावानांकरण (रेखा) संख्यामाह-

वेदेषवो नृपाः स्थाने भावसंख्याः प्रकीर्त्तिताः ।
एकत्रिंशत्त्रथस्त्रिंशद्भानि त्रिंशत्तथैव च ॥५॥
एकत्रिंशद्द्विनेत्रे च मुनिरामाः खपावकाः ।
मानि त्रिंशतिरेकद्वौ खवेदाः करणस्य तु ॥६॥

तनु आदि १२ भावों के क्रम से ३१, ३३, २७, ३०, ३१, २२, ३७, ३०, २७, २०, २१, ४० करणांक हैं॥५-६॥

पूर्वोक्तस्थान-करणसंख्यानां शुभाऽशुभत्वम्-

विषमायां क्रमादोजे युग्मे स्यातां शुभाशुभे ।
समायां भवतस्तद्वत्पापसौम्यफलक्रमात् ॥७॥

विषम राशि में स्थान संख्या विषम हो तो शुभ फल और सम राशि में स्थान संख्या सम हो तो अशुभ फलदायक तथा विषम राशि में करण संख्या सम हो तो अशुभ फलदायक होता है॥७॥

विशेषफलम्-

ओजे व्याधिः समे हानिर्यावत्तु दशकं भवेत् ।
परतः पञ्चकं चौज़ेसमे व्याधिरथान्यथा ॥८॥

विषम राशि में यदि स्थानकरण की संख्या १० हो तो व्याधि का नाश और सम राशि में हानि होती है। इसके बाद १५ पर्यन्त व्याधि इसके बाद २५ तक सम राशि में व्याधि और विषम राशि में हानि होती है॥८॥

शिरोरोगाक्षिरोगाश्च रक्तासृक्कामलाज्वरीः ।
ग्रहणी शीतको मेहप्लीहो गुल्मलतः क्रमात् ॥९॥

इसके बाद पुनः ३५पर्यन्त क्रमसे शिरोरोग, नेत्ररोग, रक्तविकार, कामला-रोग, ज्वररोग, संग्रहणी, शीतरोग, प्रमेहरोग, प्लीहारोग, गुल्मरोग होता है॥९॥

रत्नैर्धान्यैश्च हेमैश्च गोभिः क्षेत्रैश्च राजभिः ।
दासैश्च महिषैरुष्ट्रैर्गजाश्वैर्वृद्धयः स्मृताः ॥१०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इसके बाद ४५ पर्यन्त क्रम से रत्नवृद्धि, धान्यवृद्धि, सुवर्णवृद्धि, गौ आदि की वृद्धि, क्षेत्रादि की वृद्धि, राजा से लाभ, दासों से लाभ, महिषी आदि की वृद्धि, ऊंट आदि की वृद्धि, हाथी-घोड़े की वृद्धि होती है॥ १०॥

जातिदेशानुसारेण फले तारतम्यम्-

जात्या देशस्य कालस्य स्वानुरूपं फलं वदेत्।
तत्तद्भावानुसंज्ञं च ग्रहाद् भावात्फलं वदेत्॥ ११॥
उच्चादिषु नवस्वेव कालांशादिषु यत्फलम्।
भाग्याध्यायोक्तमप्यत्र योजयेत्तु विशेषतः॥ १२॥

इस प्रकरण में स्थान करण का जो फल कहा गया है उसे जाति देश काल के तारतम्य से स्वरूप के अनुसार कहना चाहिये॥ ११॥ पहले कहे हुये उच्चादि फल, कालांशादि फल और भाग्याध्यायोक्त फल का विचार भी स्थानकरण से संयोजित करके फलादेश कहना चाहिये॥ १२॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरा र्धेमासचर्याफलवर्णननाम षोडशोऽध्यायः॥ १६॥

दिनचर्याप्रकरणम्

स्थानप्रदकरणप्रदग्रहाणां फलम्-

अर्केन्दुगुरवः शुक्रः क्रमादन्ये बलक्रमाद्।
भवंति स्थानदाः खेटाश्चत्वारश्च यदैकदा॥ १॥
धनादीनां यथा लब्धिः पंच चेत्पूज्यतायुतः।
आरोग्यं वस्त्रलाभश्च षट्सु पट्टस्य बंधनम्॥ २॥

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, भौम, बुध, शनि एक ही समय में स्थानप्रद हों तो धन का लाभ होता है॥ १॥ इनमें पांच स्थानद हों तो पूज्यता प्राप्त हो, यदि ६ स्थानप्रद हों तो पट्टाभिषेक होता है॥ २॥

सप्त चेद्राज्यलाभः स्यादेवं करणदा यदि।
धनहानिस्ततो व्याधिस्ततस्तु विपदादयः॥ ३॥

सात ग्रह हों तो राज्यलाभ होता है। यदि चार करणप्रद हों तो धन की हानि, पाँच हो तो व्याधि, छह हों तो विपत्ति॥ ३॥

सप्तभिर्मरणं प्रोक्तमक्षाभावे मृतिर्भवेत्।
तत्र तिष्ठति चेत्खेटे त्वन्यस्मिन्यदि वामतः॥ ४॥

सात हों तो विपत्ति और मरण होता है। करण का अभाव हो तो मृत्यु, यदि विलोमग्रहस्थिति हो तो मृत्यु नहीं होती है॥ ४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उच्चसंख्याधिका अंशाश्चंद्रस्य स्थानदाः परे ।
शुभाख्याः शुभदाः प्रोक्ता राशिनात्र क्रमात्फलम् ॥ ५ ॥

चन्द्रोच्च की संख्या १ । ३ इससे यदि अधिक अंश के स्थानदग्रह हों तो और शुभग्रह हों तो शुभफल होता है॥ ५ ॥

उपसंहारः-

होराशास्त्रमिदं सर्वं भाषितं तव सुव्रत ।
पुण्यं यशस्यं धन्यं च त्रिकालज्ञानकारणम् ॥ ६ ॥

हे मैत्रेय ! यह सम्पूर्ण होराशास्त्र मैंने कहा। यह पुण्यकारक, यश को देने वाला, धन धान्य को देने वाला, भूत, भविष्य और वर्तमान काल को कहने वाला है॥ ६ ॥

विना मन्त्रतपस्ये च शास्त्रज्ञानेन केवलम् ।
हस्तामलकवत्सर्वं जगतां लोकयेत्फलम् ॥ ७ ॥

इस शास्त्र का उत्तम ज्ञान होने से मंत्र तथा देवता के आराधना के विना ही हाथ में रखे हुये आंवला के समान ही संपूर्ण जगत् का शुभ-अशुभ देखा जा सकता है॥ ७ ॥

पुत्राय शिष्याय च धीमते च तपस्विने मंत्रविदे च दात्रे ।
दद्यादिमं शास्त्रमहासमुद्रं यथैव शम्भुः शिशवे पयोधिम् ॥ ८ ॥

इस महासमुद्र शास्त्र को पुत्र, शिष्य, बुद्धिमान्, तपस्वी, मंत्रवेत्ता और दाता को देना चाहिये। जैसे शिवजी ने तपस्वी उपमन्यु को पयोधि दिया था॥ ८ ॥

बुद्धिहीनाय दम्भाय दांभिकायत्वमर्षिणे ।
न दद्यादादि दद्याच्चेद्विधा स्वस्य विनश्यति ॥ ९ ॥

इस शास्त्र को दंभी, क्रोधी, दुष्ट को नहीं देना चाहिये। ऐसे लोगों को देने से विद्या नष्ट हो जाती है। पूर्वोक्त दोष से रहित बालक भी हो तो उसे इस शास्त्र को पढ़ाना चाहिये॥ ९ ॥

एवं ते कथितं शास्त्रं त्वयि स्नेहाद् द्विजोत्तम ।
जातकांशं च विद्यांशं किं भूयस्त्वं श्रोतुमिच्छसि ॥ १० ॥

हे मैत्रेय ! तुम्हारे ऊपर स्नेह के कारण मैंने जातकांश को कहा। अब तुम्हारी क्या सुनने की इच्छा है सो कहो॥ १० ॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

❖

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ प्रश्नाध्यायः १८

मैत्रेय उवाच-

भगवन्प्रश्नशास्त्रं तु सूचिकानां प्रकाशितम् ।
कलौ युगे तु मंदानां यज्ज्ञातुं तद्वदस्व मे ॥ १ ॥

मैत्रेय जी बोले– हे भगवन्! आपने बुद्धिमानों के लिये प्रश्नशास्त्र को कहा है, किन्तु कलियुग में मन्दबुद्धि वालों को जैसे ज्ञान हो उसे कहिये ॥ १ ॥

उपास्यविवेचनम्-

कृतेयुगे तु धर्मस्य पूर्णत्वात्तपसान्विताः ।
सर्वे जानन्ति भूतं च भवद्भावि द्विजोत्तम ॥ २ ॥

पाराशर जी बोले हे द्विजश्रेष्ठ! सत्ययुग में धर्म की पूर्णता के कारण मनुष्य तपस्वी होते थे, इस कारण भूत, भविष्य और वर्तमान को जानते थे ॥ २ ॥

त्रेतायां तपसा युक्ताः केचिज्जानन्ति वै द्विजाः ।
पश्यन्ति द्वापरे शास्त्रज्ञानेन तपसापि च ॥ ३ ॥
कलौ युगे तु धर्मस्य पादमात्र व्यवस्थितिः ।
तपः शक्त्या तु तज्ज्ञातुं न शक्ता मानवा भुवि ॥ ४ ॥

हे द्विज! त्रेता में केवल तपस्या से कुछ लोग जानते थे। द्वापर में तपस्या और शास्त्रज्ञान द्वारा जानते थे ॥ ३ ॥ और कलियुग में १ चरण ही धर्म रहता है, अतः तपस्या द्वारा ज्ञान को नहीं प्राप्त कर सकते हैं ॥ ४ ॥

ज्योतिःषशास्त्रज्ञाने उपायः-

तथात्र परमः शंभुर्लोकानुग्रहकांक्षया ।
लक्षीकृत्य निजां शक्तिं विद्यामाधत्सु ईश्वरः ॥ ५ ॥

संसार के ऊपर अनुग्रह की बुद्धि से परम दयालु श्री शंकरजी ने अपनी शक्ति से आदि विद्या त्रिकालज्ञान को देने वाली अपने कला से विभक्त कर उत्पन्न किया ॥ ५ ॥

कलापि च विभक्तानां त्रिकालज्ञानदायिनी ।
वेदादिवाग्भवा गौरी वद द्वयमथो गिरिः ॥ ६ ॥
परमैश्वर्यसिध्यर्थं वाग्भवास्यादयं मनुः ।
सर्वज्ञेतिपदं पूर्वं नाथ तं पार्वतीपते ॥ ७ ॥
सर्वलोकगुरोः पश्चाच्छिवेति द्वयमक्षरम् ।
शरणं तु पदं पश्चात्त्वां प्रपन्नोऽस्मि तत्परम् ॥ ८ ॥
पालयेति पदज्ञानं प्रदापय ततः परम् ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वह मंत्र निम्नलिखित हैं *'ॐ ऐं गौरी वदवदगिरिपरमैश्वर्यसिध्यर्थं ऐं'* यह शक्ति का मंत्र है। *'सर्वज्ञनाथपार्वतीपते सर्वलोकगुरो शिव शरणं त्वां प्रपन्नोस्मि पालय ज्ञानं प्रदापय'* यह शिवजी का मंत्र है॥ ६-८॥

विनियोगादिकम्-

ऋषिस्तु दक्षिणामूर्तिर्गौरी परमेश्वरी तथा ॥ ९॥
सर्वज्ञश्च शिवो देवो गायत्रीच्छंद ईरितम्।
अनुष्टुप् च षडंगं स्याद्वाग्भावेन हृदयादि च ॥ १०॥

विनियोग- अनयोःमन्त्रयोः दक्षिणामूर्त्तिर्ऋषिः गौरी परमेश्वरी सर्वज्ञः शिवश्च देवते गायत्र्यनुष्टुभौ छंदसी ज्योतिःशास्त्रज्ञानप्रदाये जपे विनियोगः। इसके बाद 'ऐं' इस बीजसे षडंगादि न्यास करे जो आगे कह रहे हैं।९-१०।

ध्यानम्-

उद्यानस्यैकवृक्षाधः परे हैमवते द्विज।
क्रीडंती भूषितां गौरीं शुक्लवस्त्रां शुचिस्मिताम् ॥ ११॥

हिमालय पर्वत के ऊपर बगीचे में एक वटवृक्ष के नीचे सफेद वस्त्र को धारण की हुई प्रसन्न मुख क्रीड़ा करती बैठी हुई है॥ ११॥

देवदारुवने तत्र ध्यानस्तिमितलोचनम्।
चतुर्भुजं त्रिनेत्रं च जटिलं चन्द्रशेखरम् ॥ १२॥

और इसी प्रकार उसी बगीचे में देवदारु वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न आंखों को मूंदे हुये चार भुजाओं वाले तीन आंखों वाले, जटा धारण किये हुये मस्तक में चन्द्रमा को धारण किये हुये शंकर जी बैठे हैं॥ १२॥

शुक्लवर्णं महादेवं ध्यायेत्परममीश्वरम्।
अनेनाभ्यां द्विजश्रेष्ठ बुद्धिस्तु विमला भवेत्।
जयमात्रेण सिद्धिः स्याद्दैवज्ञत्वं प्रकाशते ॥ १३॥

इस प्रकार पार्वती और शुक्लवर्ण शंकर का ध्यान करके यथाशक्ति जप को करे। हे मैत्रेय! इन दोनों मंत्रों के पुरश्चरण करने से निर्मल बुद्धि होकर ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान होने से वह दैवज्ञ होता है॥ १३॥

दैवज्ञ लक्षणम्-

द्विविधं गणितं ज्ञात्वा शाखास्कंधं विमृस्य च।
होरा स्कंधस्य शकले श्रुत्वार्थमवधार्य च ॥ १४॥
वाग्मी द्विजवरो यः स्यान्न वंध्या तस्य भारती॥ १५॥

जो द्विज श्रेष्ठ दोनों गणितों को जानकर तथा जातक के दोनों भागों को गुरु से पढकर उसको धारण करता है॥ १४॥ वही उत्तम दैवज्ञ होता

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

है और उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है॥ १५॥

प्रश्नकर्तुः नियमः-

अलुब्धो नैष्ठिकः शुद्धो विनयप्रश्रयान्वितः।
रत्नं स्वर्णधनं वस्त्रं पुष्पमूलफलानि तु॥ १६॥
दैवज्ञपुरतो दत्वा पृच्छेदिष्टं प्रियान्वितः।

त्यागी, निष्ठावान्, निष्कपट, विनयादि गुणों से युक्त जो प्रश्नकर्त्ता हो वह रत्न, वस्त्र, सुवर्ण, धन, पुष्प, फलादि को दैवज्ञ के सामने रख के मीठे वचनों से अपने अभीष्ट को पूछे॥ १६॥

दैवज्ञस्य कर्त्तव्यः-

अथ प्राङ्मुख आसीनः शुचिर्दैवविदग्रतः॥ १७॥

दैवज्ञ प्रश्न के समय पवित्र होकर पूर्व मुख बैठकर॥ १७॥

तिर्यगूर्ध्वाश्चतस्रस्तु रेखा रज्जुसमा लिखेत्।
एकीकुर्यात्तु चत्वारि मध्यस्थानि पदानि च॥ १८॥
तत्र पद्मं लिखेद्रेखामध्यं च सकर्णिकम्।
ईशान्यकोणादारभ्य मीनाद्या राशयः क्रमात्॥ १९॥

चार रेखा तिरछी और चार खड़ी रेखा को लिखे। ऐसा करने से १६ कोष्ठ का चक्र होगा। मध्य के चार काष्ठकों में।१८। कर्णिका के साथ कमल को बनावे, इसमें ईशान कोणसे आरम्भ कर मीनादि राशियोंको लिखे। १९।

मेषवीथी वृषाद्यास्तु कौर्प्याद्या मिथुनस्य तु।
वीथियो मीनमेषौ तु तुलाकन्ये वृषस्य तु॥ २०॥

चक्र में वृष से सिंह पर्यन्त चार राशियों की मेषवीथि, वृश्चिक से चारराशियों की मिथुन वीथि और मीन, मेष, तुला, कन्या राशियों की वृषवीथि संज्ञा जानकर॥ २०॥

आरूढात् वीथिभं यावत्तावच्छत्रं तु लग्नतः।
आरूढराशिलग्नं चेच्छत्रं चापि भवेत्तथा॥ २१॥

आरूढ़ लग्न का ज्ञान करे। प्रश्नकर्त्ता जिस दिशा में बैठा हो उस दिशा के लग्न को आरूढ़ लग्न कहते हैं अथवा प्रश्नकर्त्ता से राशि चक्र में अंगुली को धरावे जिस राशि में अंगुली धरै वही आरूढ़ लग्न होती है। आरूढ़ लग्न से वीथि की राशि पर्यन्त छत्र होता है। यदि आरूढ़ राशि ही प्रश्नलग्न हो तो वही छत्र होता है॥ २१॥

जन्मलग्नं समासाद्य यद्यत्प्रोक्तं तु जातके।
तत्सर्वं प्रश्नलग्नेन प्रश्नकालाद् वदेद् बुधः॥ २२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इसका विचार कर जन्मलग्न से जिस प्रकार विचार किये जाते हैं उसी प्रकार यहां भी सभी बातों का विचार करें॥ २२॥

आरूढ़लग्नादायुर्निर्णयः-

यत्कालावधिलग्नं तत्तत्कालावधिस्थिते।
तेषां बलवतां चैव निर्णयः स्वायुषाः स्मृतः॥ २३॥
आद्यद्रेष्काणमंत्यं च मृत्युदं च क्रमाद्भवेत्।
मृगालिकर्कटानां च मीनस्यारूढलग्नतः॥ २४॥

तात्कालिक लग्न की जितने काल पर्यन्त स्थिति है, उतनी ही आयुष्य की स्थिति होती है॥ २३॥ मकर, वृश्चिक और कर्क तथा मीन राशि का आरूढ़ लग्न से प्रथम और अंत द्रेष्काण हो तो मृत्युदायक होता है॥ २४॥

लग्ने पृष्ठोदये क्रूरवेश्मास्तव्यगा यदि।
धने धर्मे कुजे मंदे चन्द्रे रंध्रे मृतिर्भवेत्॥ २५॥

यदि पृष्ठोदय राशि में प्रश्न हो और पापग्रह लग्न से ४।७।१२ वें स्थान में हों अथवा भौम २।६ भाव में और शनि-चंद्र ८वें भाव में हों तो मृत्यु होती है॥ २५॥

योगान्तरम्-

पापेदुरुधरो जाते लग्नकामसुहृत्स्थिते।
चन्द्रेऽर्के च विलग्नस्थे म्रियते व्याधिना भृशम्॥ २६॥
राहुकालसमायोगे मरणं निश्चितं भवेत्।

प्रश्न लग्न वा जन्म लग्न में पापग्रह से दुरुधरा योग हो अथवा लग्न ७।४ भाव में पापग्रह हों और सूर्य लग्न में हों और राहु काल का योग हो तो निश्चयं ही व्याधि से मृत्यु होती है॥ २६॥

राहुकालसमायोगलक्षणम्-

मेषाद्व्युत्क्रमतो राहुर्वृषात्कालः क्रमाच्चरेत्॥ २७॥
राशौ राशौ तु पंचाशद्भोगकालो विनाडिकाः।
अर्कोदयादितश्चोभौ भुंजते च पुनः पुनः॥ २८॥
एकद्व्यब्धिरामेषु षडष्टौ नाडिकाः क्रमात्।
अर्कवारादितो राहू रात्रावेवमुदीरितः॥ २९॥
राहुरुत्क्रमशः प्राच्यां कालश्च क्रमशश्चरेत्।
उभौ सार्धविनाड्येन न राशिषु द्वादशस्वपि॥ ३०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

इन्द्रेद्वग्निनिशाचर - शमवारीशवायवः ।
रुद्रचन्द्रजलेशेश - पापकेन्द्रयमस्थितः ॥ ३१ ॥
रक्षोवायुस्ततोग्नीश - यमवारुणराक्षसाः ।
वायुसोमशनीनाथ - रक्षोऽग्निजलपेन्दवः ॥ ३२ ॥
वाटवीशेंद्रयमाः पश्चाद्युग्मेंद्रौ च निशाचरः ।
मरुद्वरुणचन्द्रेशपावको वरुणो यमः ॥ ३३ ॥
वायुरुद्रशशींद्राग्नी राक्षसाश्च ततः परम् ।
वायुरक्षःशशींद्रेश - पावतांकवारुणाः ॥ ३४ ॥

मेष राशि से उलटे (मीन, कुंभादि) राहु चलता है और वृष राशि से क्रम से काल चलता है। प्रत्येक राशि में इनका भोग ५० पल होता है। सूर्योदय कालिक लग्न से दोनों (राहु-काल) बारंबार लग्नों को भोगते हैं। सूर्यादि वारों में क्रम से १, २, ४, ३, ५, ६, ८ घटी पूर्व दिशा से आरम्भ कर विलोम दिशाओं में राहु घूमता है और इसी मान से काल भी पूर्व दिशा से क्रम से घूमता है। दोनों २॥ घटी के मान से प्रत्येक दिशा में घूमते हैं। प्रत्येक वारों में दिशा के क्रम से इन्द्र, अग्नि, निशाचर आदि नामों से स्पष्ट ही है॥ २७-३४॥

नक्षत्रतिथिवारेषु दिशाक्रमः-

अर्कवारादितो वामं राहुः संचरति क्रमात् ।
रुद्रः समीरः सोमाग्नी यमोऽथ निर्ऋतिर्जलम् ॥ ३५ ॥

क्रम से ईशान, वायु, उत्तर, अग्नि, दक्षिण, नैर्ऋत्य और पश्चिम॥ ३५॥

अन्तिमादादिमाद्राहुः कालश्च चरतस्तथा ।
द्वयोर्योगे तु मरणमेकस्मिन्व्याधिरुच्यते ॥ ३६ ॥

इन दिशाओं में रविवार से वर्त्तमान वार तक, अश्विनी से वर्त्तमान नक्षत्र तक और प्रतिपदा तिथि से वर्त्तमान तिथि पर्यन्त राहु और काल भ्रमण करते है। अंतिम दिशा पश्चिम से विलोम राहु और आदि ईशान से क्रम से काल घूमता है। इनमें किसी २ का योग हो तो मरण, एक का हो तो व्याधि होती है॥३६॥

अथ द्वितीयभावादष्टमभावपर्यन्तम्-

नृपा मूर्छा शरास्तत्त्वं तिथिषोडश पंच च ।
द्वितीये त्वष्टमे भावस्त्वंतरे त्वनुपाततः ॥ ३७ ॥

द्वितीय भाव में १६, तृतीय भाव में २१, चतुर्थभाव में ५, पंचम भाव में २५, षष्ठभाव में १५, सप्तम भाव में १६, अष्टम भाव में ५ ये रश्मियां

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

होती हैं, अन्य भावों का अनुपात द्वारा पीछे कह चुके हैं॥ ३७॥

नागाब्देषु गुणा रुद्रा वाजिवेदांगपंक्तयः।
दशपंचाष्टका मेषाद्रश्मयः संप्रकीर्त्तिताः॥ ३८॥
एकयोगे तु सर्वेषु व्याधिर्द्वाभ्यां भवेन्मृत्तिः।
लक्ष्मीयोगेषु सर्वेषु व्याधिस्तस्य नवाऽपि वा॥ ३९॥

मेषादि राशियों में क्रम से ८, ८, ५, ३, ११, ७, ४, ६, १०, १०, ५, ८ होती हैं॥ ३८॥ पीछे जो मरण योग कहे हैं उनमें यदि लक्ष्मीयोग भी हो तो कभी मरण होता है, कभी नहीं होता है॥ ३९॥

अथ रोगिणः मृत्युसंबंधिप्रश्नः-

वैधृतौ च व्यतीपाते सार्पभेन्तिमसंज्ञिते।
कुलीरे विषनाडीषु सूर्यदुष्टेषु पंचसु॥ ४०॥

यदि प्रश्न समय में वैधृति, व्यतीपात, श्लेषा, रेवती, कर्कांश, विषनाड़ी भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि ये सूर्य से दूषित हों॥ ४०॥

पापयुक्ते तु नक्षत्रे राशौ तत्संयुतेऽपि च।
सन्धौ च मासशून्यर्थां तिथिराशिषु जन्मभे॥ ४१॥

पापयुक्त नक्षत्र हो, राशि पापग्रह से युत हो, राशि संधि हो, मास की शून्य राशि तिथि नक्षत्र हो, जन्म का नक्षत्र हो॥ ४१॥

व्ययाष्टमे च क्षीणेंदौ शत्रुग्रहनिरीक्षते।
पादं पृष्ठं च जंघां च जानु नाभिं च गुल्फके॥ ४२॥

लग्न से १२।८ भाव में क्षीण चन्द्र हो और शत्रुग्रह से दृष्ट हो पैर, पीठ, जंघा, जानु, नाभि, गुल्फ (एड़ी)॥ ४२॥

कर्णौ च चक्षुषी मालमास्यं कंठं स्पृशेद्यदा।
व्याधिर्वा म्रियते तद्वन्मृतिं राशिं स्पृशेत्तु वा॥ ४३॥

कान, नेत्र, ललाट, मुख, कंठ को स्पर्श करता हो, तो व्याधि वा मृत्यु होती है अथवा काल राहु स्पर्श करे॥ ४३॥

अष्टमर्क्षं स्पृशेद्यद्वा कालांशादिषु वा तथा।
विपद्वधप्रत्यक्ऋक्षे च वैनाशं ऋक्षमेव वा॥ ४४॥
संस्पृशेत्प्रश्नकाले तु व्याधिर्वा तस्य वा मृतिः॥ ४५॥

आठवीं राशि को स्पर्श करे, षोडशांश को अथवा विपत्तारा वैनाशिक नक्षत्र को॥ ४४॥ स्पर्श करे तो व्याधि वा मृत्यु हो॥ ४५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नक्षत्रक्रमेण कालस्थावयवाः-

शिरोललाटभ्रूनेत्र - नासाकर्णकपोलकाः ।
ओष्ठं च चिबुकंकंठमंशौ हृदयमेव च ॥४६॥
पार्श्वौ च वक्षः कुक्षिश्च नाभिश्च कटिरेव च ।
जघनं च नितंबं च लिङ्गमंडं च बस्ति च ॥४७॥
ऊरू च जानु जंघा च गुल्फांघ्री चाश्विभात्क्रमात् ।

अश्विनी से आरम्भ कर रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्रों का क्रम से सिर आदि २७ अंग होते हैं॥ ४६-४७॥

प्रश्नकर्तुः अशुभलक्षणं शुभप्रश्नश्च-

तैलाभ्यक्तोऽथवाऽशुद्धो जलगर्तसमीपगः ।
प्रष्टा दैवविदे वाथ मरणं तस्य निर्दिशेत् ॥४८॥
लग्नन्निसुतकामारिधर्मायगः शुभः ।
रोगशांतिकरा नो चेद्रिपुनीचग्रहस्थिताः ॥४९॥

यदि प्रश्नकर्त्ता तेल लगाये हुए हो, अशौच में हो, जल के गड्ढे के समीप होकर प्रश्न करे और इसी स्थिति में ज्योतिषी हो और प्रश्न का उत्तर दे तो मृत्यु कहना॥ ४८॥ प्रश्न लग्न से ३।५।७।६।९।११ स्थानों में शुभग्रह हो तो रोगप्रश्न में रोग शांत होगा, ऐसा कहें॥ ४९॥

एषु पापा मृतिकरा नोचेत्स्वर्क्षोच्चमित्रगाः ।
यस्य यस्य शुभं वाथ रिःफस्थानगता शुभाः ॥५०॥
यद्वा त्रिकोणकेन्द्रस्थास्तस्य तस्य शुभप्रदाः ।

यदि पूर्वोक्त स्थान में पापग्रह हों तो मृत्यु कहना। किन्तु शुभग्रह नीचादि स्थान में और पापग्रह उच्चादि स्थान में न हों तो पूर्वोक्त फल होता है। १२।९।५।१।७।१० इन स्थानों में जन्मलग्न से वा प्रश्नलग्न से शुभग्रह हों तो शुभ फल होता है॥ ५०॥

अयनादिज्ञानम्-

मृगकर्कादितः सूर्यो राशिपूर्वापरार्धतः ।
शनिशुक्रारचंद्रज्ञगुरवः शिशिरादयः ॥५१॥

जन्मकाल या प्रश्नकाल में मकरादि ६ राशि के अन्दर सूर्य हों तो उत्तरायण और कर्कादि ६ राशि के अंदर हों तो दक्षिणायन होता है। इसी प्रकार मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष, मिथुन, राशियों के पूर्वार्ध में क्रम से शनि, शुक्र, भौम, चंद्र, बुध, गुरु हों तो क्रम से शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ऋतु कहना। इसी प्रकार से कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु राशियों के उत्तरार्ध में यदि पूर्वोक्त ग्रह हों तो शिशिर आदि ऋतु कहना चाहिए।५१।

अर्को ग्रीष्मस्ततोऽन्यैर्वा वायनाद्वृतुरेव च।
शुक्रारमंदचंद्रज्ञजीवाश्च परिवर्तिताः ॥५२॥

इसी प्रकार प्रश्न लग्न में सूर्यादि ग्रह हों तो भी ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसंत ऋतु कहना। अथवा अयन से ऋतु कहना। शुक्र, मंगल, शनि, चंद्र, बुध, गुरु इनमें जो द्रेष्काणाधिपति हो उसके ऋतु को कहना वा जो नवांश हो उससे ऋतु कहना॥५२॥

वर्ष-मास-तिथिज्ञानम्-

लग्नद्रेष्काणपाः प्रोक्ता नवांशेनैव चापरे।
तत्पूर्वपरतो मासौ तिथिः स्यादनुपाततः ॥५३॥

जो पूर्व प्रकारसे ऋतु निर्णीत हुआ हो वह यदि राशिके पूर्वार्ध की हो तो उस ऋतु का पूर्वमास और उत्तरार्ध की हो तो उत्तर मास जानना चाहिये। ऋतु के भुक्त भोग्य द्वारा अनुपात करके तिथि का ज्ञान करना चाहिये।५३।

वर्ष-ज्ञानम्-

लग्नत्रिकोणगो जीवो नवांशस्थोऽथवा भवेत्।
ज्ञात्वा वयोऽनुरूपेण ह्यनुमानवशात्समाः ॥५४॥

प्रश्न लग्न से त्रिकोण (६।५) में गुरु जिस राशि में हो उसी राशि के गुरु में जन्म हुआ है, यदि गुरु त्रिकोण में न हो तो जहाँ कहीं जिस राशि में जिस नवांश में हो उस नवांश राशि के गुरु में जन्म कहना। किन्तु अवस्था के अनुमान से वर्ष का निर्णय करना चाहिये॥५४॥

सूर्यस्थितांशतुल्यां वा तिथिं प्रोवाच भार्गवः।
राशौ रात्रिदिवाख्ये च जन्म स्यात्तु विलोमतः ॥५५॥

तिथिज्ञान-सूर्य जिस त्रिंशांश में है उसके तुल्य तिथि कहना, ऐसा शुक्राचार्य का मत है। दिन-रात्रि का ज्ञान-प्रश्नलग्न रात्रि बली हो तो दिन में और दिवा बली हो तो रात्रि में जन्म कहना॥५५॥

प्राणलग्नादेः ज्ञानम्-

गतप्राणैर्जन्मकाले ते च प्राणा भवंत्यथ।
यद्राशिगः शशी मासः समं वा स्पृशदंगकम् ॥५६॥

प्रश्न समय में जितने प्राण बीत चुके हों तो उतने ही प्राण जन्म समय में जानना चाहिये। मास-राशि-लग्न का ज्ञान-प्रश्न समय जिस राशि का चन्द्र हो उसी राशि के नाम वाला मास होता है, जैसे मेष में चैत्र आदि।५६।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तत्त्रिकोणाबलाधिक्यं राशिर्ल्लग्नात्तु यावति ।
चंद्रस्तावतिभं चापि जन्मलग्नं विनिर्दिशेत् ॥५७॥

प्रश्न समय में चन्द्रमा जिस राशि को स्पर्श करता हो चाहे सम हो या विषम इससे त्रिकोण की जो राशि दोनों में बली हो वही राशि होती है। मेषादि गणना से जितने संख्यक राशि पर चन्द्र हो उतनी ही संख्या का लग्न होता है। जैसे मीन प्रश्न लग्न हो तो मीन राशि अन्य लग्नों से अन्य राशि जानना चाहिए॥ ५७॥

जन्मनक्षत्रज्ञानम्-

मीने मीनं तु लग्नं वा तथान्यैस्त्वन्यलग्नभम् ।
छायया संयुता यामवारर्क्षतिथिराशयः ॥५८॥

प्रश्न समय में प्रश्नकर्त्ता की छाया को पैर से नाप कर उसमें प्रहर, वार, तिथि को जोड़ दे। २७ से अधिक हो तो २७ से भाग देकर शेष संख्या के तुल्य धनिष्ठादि नक्षत्र होता है॥ ५८॥

यावंन्तस्तु धनिष्ठादिजन्मक्षतद्विनिर्दिशेत् ।
कालांशादिषु यत्प्रोक्तमृक्षं तद्वा भवेदिदम् ॥५९॥

अथवा पूर्व में कालांशादि में जो नक्षत्र कहा है वही नक्षत्र होता है। कालांश का आधा होरा कहा है, वही होरा होती है॥ ५९॥

प्रकारांतरेण मासादिज्ञानम्-

कालांशाद्यर्धहोराणां प्रोक्तहोरैर्विभावयेत् ।
पृथग्लिप्तीकृतं लग्नं वर्गणाभिर्हतं पुनः ॥६०॥
आरूढछत्रयोर्वीर्यबलस्य वर्गणाहतम् ।
ओजे योगः समे हानिरिति तस्य विधीयते ॥६१॥

प्रश्न लग्न का कालपिंड बनाकर उसके वर्ग से गुणाकर दो स्थान में रखकर॥ ६०॥ आरूढ़ और छत्र में जो बली हो उसके वर्ग से गुणाकर विषम लग्न हो तो योग अन्यथा पृथक्स्थ में से घटाकर॥ ६१॥

स्वैः स्वैर्भागैश्च भक्तंतत्तथा मासादयः स्मृताः ।
यद्वा कलीकृतं लग्नं तथा कुर्याद्विचक्षणः ॥६२॥

शेष में अपने २ विभाग से (मास ज्ञान के लिए १२ दिन के लिए ३० आदि से) भाग देने से मासादि का ज्ञान होता है। अथवा लग्न का कला बनाकर पूर्वरीति से सभी क्रियाओं को करके॥ ६२॥

भावकस्य च शुद्धिं च योगं चैव करोत्यतः ।
नवभिश्च कलांशा द्यैस्तथैवोच्चादिभिः क्रमात ॥६३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

एकाशीतिभिदाः संति नवकाद्यैक शोधनैः ।
येषां योगगते काले समांतेषु सतां यतः ॥६४॥

भाव शुद्धि आदि क्रियाओं को करके नवकलांश और उच्च त्रिकोणादि भेद से॥ ६३॥ ८१ प्रकार को करके उनमें नव शोधनादि करते हुए जहाँ अवसान हो वहीं मासादि जानना॥ ६४॥

लग्नबलविचारः-

राशिस्तु बलवान्स्वामिगुरुज्ञप्रेक्षणान्वितः ।
अन्यैः पापैरदृष्टः स्याच्छुभदृष्ट्या प्रयोजयेत् ॥६५॥

जो राशि अपने स्वामी वा गुरु, बुध से दृष्ट हो, अपने पापग्रह स्वामी को छोड़कर अन्य पापग्रहों से अदृष्ट हो वह बली होता है॥ ६५॥

दृष्टिविचारः०

चन्द्रर्काचार्यशुक्रज्ञाः पादं मित्रभकर्मणि ।
पश्यन्ति च शनिः पूर्णमथ धर्मसुतौ गुरुः ॥६६॥

चन्द्रमा, सूर्य, गुरु, शुक्र, बुध और भौम तीसरे और दशम को पाप दृष्टि से देखते हैं। शनि ३।१० को पूर्ण दृष्टि से देखता है, ९।५ को सभी ग्रह दो चरण से, किन्तु गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता है॥६६॥

सर्वेऽर्धबंधुमृत्यू च पूर्णं पश्यति भूमिजः ।
परे त्रिपादं पूर्णं च सर्वे पश्यंति सप्तमम् ॥६७॥

४।८ स्थान को भौम को छोड़कर सभी ग्रह तीन चरण से देखते हैं, किन्तु भौम पूर्णदृष्टि से देखता है और सप्तम को सभी पूर्णदृष्टि से देखते हैं॥ ६७॥

अथ ग्रहाणां स्थानदिग्बलम्-

उच्चमूलसुहृत्स्वर्क्षं स्वद्रेष्काणनवांशके ।
स्थितस्य स्थानवीर्यं स्यात्कुजार्कौ दशमे शनिः ॥६८॥
सप्तमे ज्ञगुरू लग्ने चन्द्रशुक्रौ तु वेश्मनि ।
दिग्वीर्यसंयुता एते नान्यत्र प्रश्नकर्मणि ॥६९॥

प्रश्न में जो ग्रह अपने उच्च, मूलत्रिकोण, मित्र, अपनी राशि, अपने द्रेष्काण, अपने नवांश में हो तो वह स्थानबली होता है। भौम, सूर्य दशम स्थान में॥ ६८॥ सातवें स्थान में शनि, बुध तथा गुरु लग्न में, चन्द्र, शुक्र चौथे भाव में दिग्बली होते हैं॥ ६९॥

अयनबलम्-

मृगादिराशिषट्कस्थाश्चंद्रार्कज्ञार्यभार्गवाः ।
बलवंतः कुजार्की तु कर्कटादिगतौ तथा ॥७०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मकरसे ६ राशि तक चंद्र,सूर्य, बुध,गुरु और शुक्र अयन बल को प्राप्त करते हैं। कर्क से ६ राशि के अन्दर भौम, शनि अयन बल से युक्त होते हैं।।७०।।

अथ पक्षचेष्टादिवा-रात्रि बलम्-

पूर्वपक्षे शुभे कृष्णे पापस्तु बलिनस्तथा।
वक्रिणो बलिनः खेटाश्चेष्टाबलसमन्वितः ॥७१॥
शुभाः पापा दिवारात्रौ बलिनः स्युः क्रमात्स्मृताः।
निसर्गबलिनः प्राग्वदेवं स्युः प्रश्नकर्मणि ॥७२॥

शुक्ल पक्ष में शुभग्रह और कृष्णपक्ष में पापग्रह बली होते हैं। वक्री-ग्रह चेष्टाबली होते हैं।। ७१ ।। शुभग्रह दिवाबली और पापग्रह रात्रिबली होते हैं। निसर्गबल पूर्वोक्तवत् जानना चाहिये। इस प्रकार प्रश्नकाल में बलों को जानना चाहिये।। ७२ ।।

दशवर्गबलम्-

लग्नहोराद्रेष्काणार्कनवांशाः सप्तमांशकः।
कलांशः कालहोरा च त्रिंशांशः षष्टिभाजकः ॥७३॥
पूर्वपूर्वो बली प्रोक्तो न बली चोत्तरोत्तरः ॥

लग्न, होरा, द्रेष्काण, द्वादशांश, नवांश, सप्तांश, षोडशांश, कालहोरांश, त्रिंशांश और षष्ट्यंश-यह उत्तरोत्तर हीनबली होते है।। ७३ ।।

प्रश्नलग्नाज्जन्मलग्नादीनां ज्ञानम्-

प्रश्नलग्नं कलीकृत्य नवघ्नं भेन भाजितम् ॥७४॥

प्रश्न लग्न का कला करके नव से गुणाकर २७ का भाग देने से।। ७४ ।।

लब्धं नवांशकं ज्ञेयं शिष्टमेकत्र संस्थिते।
लब्धं सप्तगुणं वेदभक्तं शिष्टमिहांशकः ॥७५॥

लब्धि नवांश होता है, शेष को पृथक् रखना, लब्धि को सात से गुणाकर ४ से भाग देना लब्धि नवांश होती है।। ७५ ।।

नवांशसदृशं लग्नं यद्वा त्रिघ्नार्कभाजितम्।
सप्तप्तशिष्टं लग्नं च सप्तमे मासि निश्चिते ॥७६॥
सौम्ये तदेव कर्मर्क्षं जन्मर्क्षं वा भवेद्बलम्।

इसी के समान जन्मलग्न होता है। अथवा त्रिगुणित करके १२ से भाग देना, जो शेष हो वहीं जन्मलग्न होता है। अथवा शेष को सात से भाग देने से जो आवे वह सातवें मास की लग्न जानना। शुभग्रह की राशि हो तो वही कर्मनक्षत्र वा जन्मनक्षत्र जानना।। ७६ ।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शास्त्रस्य वेदांगत्वप्रतिपादनम्-

इदं शास्त्रं मया प्रोक्तमाद्यंतं तव सुव्रत ॥७७॥

हे मैत्रेय! मैंने जो यह आद्यंत ज्योतिष शास्त्र को कहा है॥७७॥

नाशिष्याय प्रदातव्यं नापुत्राय कदाचन।
गुणशीलयुतायैव शिष्यायैव द्विजातये।
दातव्यं तु प्रयत्नेन वेदांगमिदमुच्यते ॥७८॥

यह कुपुत्र, कुशिष्य को कभी नहीं देना, जो गुणी, शीलसंयुक्त शिष्य हो और द्विजाति हो उसे प्रयत्नपूर्वक देना चाहिये क्योंकि यह वेदांग है॥७८॥

इति पाराशरहोरसयामुत्तरार्धेऽष्टादशोऽध्यायः॥१८॥

अथ अध्यायानुक्रमः १९

अध्यायानुक्रमं वक्ष्ये त्वादौ शास्त्रावतारण्।
प्रादुर्भावो ग्रहाणां तु द्वितीये च प्रकीर्तितः ॥१॥

अब अध्यायों का क्रम कह रहा हूँ, जिसमें सबसे पहले शास्त्र का अवतार कथन एवं दूसरे अध्याय में ग्रहों के प्रादुर्भाव का वर्णन है॥१॥

ततो राशिस्वभावश्च चतुर्थे दृष्टिवर्णनम्।
गर्भाधानं ततः पश्चात्सूतिकाविधिरेव च ॥२॥

इसके बाद तीसरे में राशियों का स्वभाव और चौथे में दृष्टिभेद वर्णन है। तत्पश्चात् गर्भाधान एवं सूतिका-विधि का वर्णन है॥२॥

अरिष्टं सप्तमाध्याये सुतस्य तदनंतरम्।
पित्रोश्च मातुलादीनां तद्भंगो दशमात्स्मृतः ॥३॥

सातवें अध्याय में अरिष्ट का वर्णन है, तत्पश्चात् पुत्र, माता-पिता एवं मामा का तथा दसवें अध्याय में अरिष्ट-भंग का वर्णन है॥३॥

धूमाद्येकादशे मिश्रः पंचगानां फलं तथा।
कारकादिफलं तद्वद्भावानां च फलं तथा ॥४॥
द्वादशद्वादशाऽध्याये द्विग्रहाद्याश्च षट् स्मृताः।
अष्टवर्गादि चैकस्मिन्नाभसादिस्तु चापरे ॥५॥

ग्यारहवें अध्याय में धूमादिग्रहफल, मिश्रफल, कारकादिफल एवं भावफल का वर्णन है॥४॥ बारह अध्यायों में द्वादश भावों का फल तथा छः अध्यायों में द्विग्रहादिक का फल वर्णित है। इसके बाद अष्टवर्ग का एक अध्याय में तथा दूसरे में नाभसादि योग कहे गए हैं॥५॥

CC-0.JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S31 Foundation USA

चिरायुषादियोगाश्च पंचाध्यायास्ततः परम् ।
राजयोगास्तथावस्था अंतर्दायविधिस्ततः ॥ ६ ॥
दायानां च फलं सप्त स्वांतर्दायस्त्रयोदश ।
लक्षणं शुभवर्गाणां योगादिषु बलं ततः ।
एवमशीतिरध्यायाः पूर्वभागे समीरिताः ॥ ७ ॥

इसके बाद पाँच अध्यायों में चिरायुषादि योगों का वर्णन है तत्पश्चात् राजयोग, अवस्था तथा अन्तर्दाय विधि का वर्णन है॥ ६ ॥ इसके पश्चात् सात अध्यायों में दायफल तथा तेरह अध्यायों में अन्तर्दायफल का वर्णन है। तत्पश्चात् शुभवर्गों का लक्षण तथा योगादि बल का वर्णन है इस प्रकार पूर्वभाग में ८० अध्यायों को समाविष्ट किया गया है॥ ७ ॥

उत्तरार्धस्यानुक्रमणिका-

कलौ युगे ततः प्रोक्तं प्रथमेऽष्टकवर्गकः ।
द्वितीये भावदृग्वीर्यमिष्टकष्टबलं ततः ॥ ८ ॥

तब कलियुग के साथ-साथ प्रथम अध्याय में अष्टक वर्ग का वर्णन है। दूसरे में भावों की दृष्टि का बल तत्पश्चात् इष्ट-कष्ट-बल वर्णित है॥ ८ ॥

चतुर्थे रश्मिसंभूतिरिष्टकष्टं द्विजोत्तम ।
लोकयात्रैकदेशे च पंचमे च ततः परम् ॥ ९ ॥

हे द्विजोत्तम ! चौथे अध्याय में रश्मि-वर्णन एवं इष्ट-कष्ट का वर्णन है तथा पाँचवें अध्याय में लोकयात्रा का वर्णन है॥ ९ ॥

त्रयं च लोकयात्राणामेकदेशस्य चाष्टमे ।
नवमे लोकयात्रा च दशमे दाय एव च ॥ १० ॥

तदनन्तर तीन अध्यायों में लोकयात्रा का एवं आठवें में एक देश का वर्णन है, तब नवें अध्याय में लोकयात्रा का एवं दशवें में दाय वर्णन है॥ १० ॥

अंतर्दायस्तथाध्याये दायानां विषयस्ततः ।
त्रयोदशे तथा भाग्यं कलांशादिफलं द्विज ॥ ११ ॥

ग्यारहवें अध्याय में अन्तर्दाय तथा बारहवें में दाय के विषयों का वर्णन है, व तेरहवें में भाग्य एवं कलांशादि का फल वर्णित है॥ ११ ॥

चतुर्दशेऽब्दचर्या च विजानीहि ततः परम् ।
अब्दचर्याफलं पश्चान्मासचर्याफलं ततः ॥ १२ ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चौदहवें अध्याय में अब्दचर्या जानना चाहिए, तत्पश्चात् अब्दचर्याफल एवं मासचर्या-फल का वर्णन है॥ १२॥

दिनचर्या ततः प्रश्नजातकं प्रब्रवीति हि।
अध्यायानुक्रमं पश्चाद्विंशे शास्त्रफलं द्विज॥ १३॥

तदनन्तर दिनचर्या एवं प्रश्नाध्याय का वर्णन है, तब अध्यायानुक्रम एवं बीसवें अध्याय में शास्त्र-फल कहा गया है॥ १३॥

एवं होराशताध्यायी सर्वपापप्रणाशिनी।
युगेषु च चतुर्ष्वेव प्रत्यक्षफलदायिनी॥ १४॥

इस प्रकार (पूर्वभाग के ८० एवं उत्तरभाग के २० अध्यायों को मिलाकर) इस होराशास्त्र में सौ अध्याय हैं, जो सभी पापों का नाश करने वाले एवं चारों युगों में प्रत्यक्ष फल देने वाले हैं॥ १४॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे एकोनविंशतितमोऽध्यायः॥ १९॥

अथ शास्त्रफलं शास्त्र-परम्परा च २०

होराशास्त्रमिदं सर्वं श्रद्धाविनयसंयुतः।
श्रुत्वा गुरुमुखादेव बुद्धिमानविलोक्य च॥ १॥
यो जानाति सशास्त्रार्थं सर्वं पापैः प्रमुच्यते।
श्रावयेद्दर्शयेद्विद्वानन्यो गर्गो द्विजोत्तमः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो ब्रह्मलोकं स गच्छति॥ २॥

इस होराशास्त्र को बुद्धिमान् श्रद्धा विजय से युक्त होकर गुरु के मुख से सुनकर, देखकर।१। जो शास्त्र के अर्थ को जानता है, वह सभी पापों से छूट जाता है और ऐसा विद्वान् जो दूसरे को सुनाता और दिखाता है वह दूसरा गर्ग होता है और सभी पापों से मुक्त होकर ब्रह्मलोक को जाता है॥ २॥

वेदेभ्यश्च समुद्धृत्य ब्रह्मा प्रोवाच विस्तृतम्।
शास्त्रमाद्यं तदेवेदं वेदाङ्गं वेदचक्षुषी॥ ३॥

यदि वही वेदाङ्ग और वेद का नेत्ररूपी शास्त्र है जिसे ब्रह्माजी ने वेद से निकाल कर गर्ग ऋषि को बताया था और गर्गजी से मैंने सुना॥ ३॥

गार्गस्तस्मादिदं प्राह मया तस्माद्यथातथा।
तदुक्तं तव मैत्रेय शास्त्रमाद्यंतमेव हि॥ ४॥

हे मैत्रेय ! उसी को आद्यंत मैंने तुमसे कहा है॥ ४॥

इति पाराशरहोरायामुत्तरार्धे विंशोऽध्यायः॥ २०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ विंशोत्तरीमहादशायामन्तर्दशादिचक्रम्

सूर्यान्तर्दशाचक्रम् ६ वर्ष				चन्द्रान्तर्दशाचक्रम् १० वर्ष				भौमान्तर्दशाचक्रम् ७ वर्ष			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
सूर्य	०	३	१८	चंद्र	०	१०	०	मंगल	०	४	२७
चंद्र	०	६	०	मंगल	०	७	०	राहु	१	०	१८
मंगल	०	४	६	राहु	१	६	०	गुरु	०	११	६
राहु	०	१०	२४	गुरु	१	४	०	शनि	१	१	६
गुरु	०	८	१८	शनि	१	७	०	बुध	०	११	२७
शनि	०	११	१२	बुध	१	५	०	केतु	०	४	२७
बुध	०	१०	६	केतु	०	७	०	शुक्र	१	२	०
केतु	०	४	६	शुक्र	१	८	०	सूर्य	०	४	६
शुक्र	१	०	०	सूर्य	०	६	०	चंद्र	०	७	०

राहोरन्तर्दशाचक्रम् १८ वर्ष				गुरोरन्तर्दशाचक्रम् १६ वर्ष				शनेरन्तर्दशाचक्रम् १९ वर्ष			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
राहु	२	८	१२	गुरु	२	१	१८	शनि	३	०	३
गुरु	२	४	२४	शनि	२	६	१२	बुध	२	८	९
शनि	२	१०	६	बुध	२	३	६	केतु	१	१	९
बुध	२	६	१८	केतु	०	११	६	शुक्र	३	२	०
केतु	१	०	१८	शुक्र	२	८	०	सूर्य	०	११	१२
शुक्र	३	०	०	सूर्य	०	९	१८	चंद्र	१	७	०
सूर्य	०	१०	२४	चंद्र	१	४	०	मंगल	१	१	९
चंद्र	१	६	०	मंगल	०	११	६	राहु	२	१०	६
मंगल	१	०	१८	राहु	२	४	२४	गुरु	२	६	१२

बुधान्तर्दशाचक्रम् १७ वर्ष				केत्वन्तर्दशाचक्रम् ७ वर्ष				शुक्रान्तर्दशाचक्रम् २० वर्ष			
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७	केतु	०	४	२७	शुक्र	३	४	०
केतु	०	११	२७	शुक्र	१	२	०	सूर्य	१	०	०
शुक्र	२	१०	०	सूर्य	०	४	६	चंद्र	१	८	०
सूर्य	०	१०	६	चंद्र	०	७	०	मंगल	१	२	०
चंद्र	१	५	०	मंगल	०	४	२७	राहु	३	०	०
मंगल	०	११	२७	राहु	१	०	१८	गुरु	२	८	०
राहु	२	६	१८	गुरु	०	११	६	शनि	३	२	०
गुरु	२	३	६	शनि	१	१	९	बुध	२	१०	०
शनि	२	८	९	बुध	०	११	२७	केतु	१	२	०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्यमहादशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तरम् ३ मास १८ दिन				सूर्यमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तरम् ६ मास ० दिन				सूर्यमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तरम् ४ मास ६ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
सूर्य	०	५	२४	चंद्र	०	१५	०	मंगल	०	७	२१
चंद्र	०	६	०	मंगल	०	१०	३०	राहु	०	१८	५४
मंगल	०	६	१८	राहु	०	२७	०	गुरु	०	१६	४८
राहु	०	१६	१२	गुरु	०	२४	०	शनि	०	१६	५७
गुरु	०	१४	२४	शनि	०	२८	३०	बुध	०	१७	५१
शनि	०	१७	६	बुध	०	२५	३०	केतु	०	७	२१
बुध	०	१५	१८	केतु	०	१०	३०	शुक्र	०	२१	०
केतु	०	६	१८	शुक्र	१	०	०	सूर्य	०	६	१८
शुक्र	०	१८	०	सूर्य	०	६	०	चंद्र	०	१०	३०
सूर्यमहादशायमां राह्वन्तरे प्रत्यन्तरम् १० मास २४ दिन				सूर्यमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तरम् ६ मास १८ दिन				सूर्यमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तरम् ११ मास १२ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
राहु	१	१८	३६	गुरु	१	८	२४	शनि	१	२४	६
गुरु	१	१३	१२	शनि	१	१५	३६	बुध	१	१८	२७
शनि	१	२१	१८	बुध	१	१०	४८	केतु	०	१६	५७
बुध	१	१५	५४	केतु	०	१६	४८	शुक्र	१	२७	०
केतु	०	१८	५४	शुक्र	१	१८	०	सूर्य	०	१७	६
शुक्र	१	२४	०	सूर्य	०	१४	२४	चंद्र	०	२८	३०
सूर्य	०	१६	१२	चंद्र	०	२४	०	मंगल	०	१६	५७
चंद्र	०	२७	०	मंगल	०	१६	४८	राहु	१	२१	१८
मंगल	०	१८	५४	राहु	१	१३	१२	गुरु	१	१५	३६
सूर्यमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तरम् १० मास ६ दिन				सूर्यमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तरम् ४ मास ६ दिन				सूर्यमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तरम् १ वर्ष ० मास			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
बुध	१	१३	२१	केतु	०	७	२१	शुक्र	२	०	०
केतु	०	१७	५१	शुक्र	०	२१	०	सूर्य	०	१८	०
शुक्र	१	२१	०	सूर्य	०	६	१८	चंद्र	१	०	०
सूर्य	०	१५	१८	चंद्र	०	१०	३०	मंगल	०	२१	०
चंद्र	०	२५	३०	मंगल	०	७	२१	राहु	१	२४	०
मंगल	०	१७	५१	राहु	०	१८	५४	गुरु	१	१८	०
राहु	१	१५	५४	गुरु	०	१६	४८	शनि	१	२७	०
गुरु	१	१०	४८	शनि	०	१६	५७	बुध	१	२१	०
शनि	१	१८	२७	बुध	०	१७	५१	केतु	०	२१	०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यनतरम् १०मास०दिन				चन्द्रमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तरम् ७मास०दिन				चन्द्रमहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तरम् १वर्ष ६मास			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
चंद्र	०	२५	०	मंगल	०	१२	१५	राहु	२	२१	०
मंगल	०	१७	३०	राहु	१	१	३०	गुरु	२	१२	०
राहु	१	१५	०	गुरु	०	२८	०	शनि	२	२५	३०
गुरु	१	१०	०	शनि	१	३	१५	बुध	२	१६	३०
शनि	१	१७	३०	बुध	०	२६	४५	केतु	१	१	३०
बुध	१	१२	३०	केतु	०	१२	१५	शुक्र	३	०	०
केतु	०	१७	३०	शुक्र	१	५	०	सूर्य	०	२७	०
शुक्र	१	२०	०	सूर्य	०	१०	३०	चंद्र	१	१५	०
सूर्य	०	१५	०	चंद्र	०	१७	३०	मंगल	१	१	३०
चन्द्रमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तरम् १वर्ष ४मास				चन्द्रमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तरम् १वर्ष ७मास				चन्द्रमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तरम् १वर्ष ५मास			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
गुरु	२	४	०	शनि	३	०	१५	बुध	२	१२	१५
शनि	२	१६	०	बुध	२	२०	४५	केतु	०	२६	४५
बुध	२	८	०	केतु	१	३	१५	शुक्र	२	२५	०
केतु	०	२८	०	शुक्र	३	५	०	सूर्य	०	२५	३०
शुक्र	२	२०	०	सूर्य	०	२८	३०	चंद्र	१	१२	३०
सूर्य	०	२४	०	चंद्र	१	१७	३०	मंगल	०	२६	४५
चंद्र	१	१०	०	मंगल	१	३	१५	राहु	२	१६	३०
मंगल	०	२८	०	राहु	२	२५	३०	गुरु	२	८	०
राहु	२	१२	०	गुरु	२	१६	०	शनि	२	२०	४५
चन्द्रमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तरम् ७ मास				चन्द्रमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तरम् १वर्ष ८मास				चन्द्रदशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तरम् ६मास			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
केतु	०	१२	१५	शुक्र	३	१०	०	सूर्य	०	६	०
शुक्र	१	५	०	सूर्य	१	०	०	चंद्र	०	१५	०
सूर्य	०	१०	३०	चंद्र	१	२०	०	मंगल	०	१०	३०
चंद्र	०	१७	३०	मंगल	१	५	०	राहु	०	२७	०
मंगल	०	१२	१५	राहु	३	०	०	गुरु	०	२४	०
राहु	१	१	३०	गुरु	२	२०	०	शनि	०	२८	३०
गुरु	०	२८	०	शनि	३	५	०	बुध	०	२५	३०
शनि	१	३	१५	बुध	२	२५	०	केतु	०	१०	३०
बुध	०	२६	४५	केतु	१	५	०	शुक्र	१	०	०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

भौममहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तरम् ४मास२७दिन				भौममहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तरम् १वर्ष १८दिन				भौममहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तरम् ११मास ६दिन			
ग्रह	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
मंगल	८	३४	३०	राहु	१	२६	४२	गुरु	१	१४	४८
राहु	२२	३	०	गुरु	१	२०	२४	शनि	१	२३	१२
गुरु	१९	३६	०	शनि	१	२९	५१	बुध	१	१७	३६
शनि	२३	१६	३०	बुध	१	२३	३३	केतु	०	१९	३६
बुध	२०	४९	३०	केतु	०	२२	३	शुक्र	१	२६	०
केतु	८	३४	३०	शुक्र	२	३	०	सूर्य	०	१६	४८
शुक्र	२४	३०	०	सूर्य	०	१८	५४	चंद्र	०	२८	०
सूर्य	७	२१	०	चंद्र	१	१	३०	मंगल	०	१९	३६
चंद्र	१२	१५	०	मंगल	०	२२	३	राहु	१	२०	२४

भौममहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तरम् १ वर्ष १ मास ९ दिन					भौममहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तरम् ११ मास २७ दिन					भौममहादशायां केत्यन्तरे प्रत्यन्तरम् ४ मास २७ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	दिन	घटी	पल
शनि	२	३	१०	३०	बुध	१	२०	३४	३०	केतु	८	३४	३०
बुध	१	२६	३१	३०	केतु	०	२०	४९	३०	शुक्र	२४	३०	०
केतु	०	२३	१६	३०	शुक्र	१	२९	३०	०	सूर्य	७	२१	०
शुक्र	२	६	३०	०	सूर्य	०	१७	५१	०	चंद्र	१२	१५	०
सूर्य	०	१९	५७	०	चंद्र	०	२९	४५	०	मंगल	८	३४	३०
चंद्र	१	३	१५	०	मंगल	०	२०	४९	३०	राहु	२२	३	०
मंगल	०	२३	१६	३०	राहु	१	२३	३३	०	गुरु	१९	३६	०
राहु	१	२९	५१	०	गुरु	१	१७	३६	०	शनि	२३	१६	३०
गुरु	१	२३	१२	०	शनि	१	२६	३१	३०	बुध	२०	४९	३०

भौममहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तरम् १वर्ष २ मास				भौममदाहशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तरम् ४मास ६दिन				भौममहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तरम् ७ मास ०दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
शुक्र	२	१०	०	सूर्य	०	६	१८	चंद्र	०	१७	३०
सूर्य	०	२१	०	चंद्र	०	१०	३०	मंगल	०	१२	१५
चंद्र	१	५	०	मंगल	०	७	२१	राहु	१	१	३०
मंगल	०	२४	३०	राहु	०	१८	५४	गुरु	०	२८	०
राहु	२	३	०	गुरु	०	१६	४८	शनि	१	३	०
गुरु	१	२६	०	शनि	०	१९	५७	बुध	०	२९	१५
शनि	२	६	३०	बुध	०	१७	५१	केतु	०	१२	४५
बुध	१	२९	३०	केतु	०	७	२१	शुक्र	१	५	१५
केतु	०	२४	३०	शुक्र	०	२१	०	सूर्य	०	१०	३०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राहुमहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तरम् २ वर्ष ८ मास १२ दिन				राहुमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तरम् २ वर्ष ४ मास २४ दिन				राहुमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तरम् २ वर्ष १० मास ६ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
राहु	४	२५	४८	गुरु	३	२५	१२	शनि	५	१२	२७
गुरु	४	९	३६	शनि	४	१६	४८	बुध	४	२५	२१
शनि	५	३	५४	बुध	४	२	२४	केतु	१	२९	५१
बुध	४	१७	४२	केतु	१	२०	२४	शुक्र	५	२१	०
केतु	१	२६	४२	शुक्र	४	२४	०	सूर्य	१	२१	१८
शुक्र	५	१२	०	सूर्य	१	१३	१२	चंद्र	२	२५	३०
सूर्य	१	१८	३६	चंद्र	२	१२	०	मंगल	१	२९	५१
चंद्र	२	२१	०	मंगल	१	२०	२४	राहु	५	३	५४
मंगल	१	२६	४२	राहु	४	९	३६	गुरु	४	१६	४८

राहुमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तरम् २ वर्ष ६ मास १८ दिन				राहुमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तरम् १ वर्ष १८ दिन				राहुमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तरम् ३ वर्ष ० मास ० दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
बुध	४	१०	३	केतु	०	२२	३	शुक्र	६	०	०
केतु	१	२३	३३	शुक्र	२	३	०	सूर्य	१	२४	०
शुक्र	५	३	०	सूर्य	०	१८	५४	चंद्र	३	०	०
सूर्य	१	१५	५४	चंद्र	१	१	३०	मंगल	२	३	०
चंद्र	२	१६	३०	मंगल	०	२२	३	राहु	५	१२	०
मंगल	१	२३	३३	राहु	१	२६	४२	गुरु	४	२४	०
राहु	४	१७	४२	गुरु	१	२०	२४	शनि	५	२१	०
गुरु	४	२	२४	शनि	१	२९	५१	बुध	५	३	०
शनि	४	२५	२१	बुध	१	२३	३३	केतु	२	३	०

राहुमहादशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि १ मास २४ दि.				राहुमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष ६ मास				राहुमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष १८ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
सूर्य	०	१६	१२	चंद्र	१	१५	०	मंगल	०	२२	३
चंद्र	०	२७	०	मंगल	१	१	३०	राहु	१	२६	४२
मंगल	०	१८	५४	राहु	२	२१	०	गुरु	१	२०	२४
राहु	१	१८	३६	गुरु	२	१२	०	शनि	१	२९	५१
गुरु	१	१३	१२	शनि	२	२५	३०	बुध	१	२३	३३
शनि	१	२१	१८	बुध	२	१६	३०	केतु	०	२२	३
बुध	१	१५	५४	केतु	१	१	३०	शुक्र	२	३	०
केतु	०	१८	५४	शुक्र	३	०	०	सूर्य	०	१८	५४
शुक्र	१	२४	०	सूर्य	०	२७	०	चंद्र	१	१	३०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष १ मास १८ दिन				गुरुमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष ६ मास १२ दिन				गुरुमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष ३ मास ६ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
गुरु	३	१२	२४	शनि	४	२४	२४	बुध	३	२५	३६
शनि	४	१	३६	बुध	४	९	१२	केतु	१	१७	३६
बुध	३	१८	४८	केतु	१	२३	१२	शुक्र	४	१६	०
केतु	१	१४	४८	शुक्र	५	२	०	सूर्य	१	१०	४८
शुक्र	४	८	०	सूर्य	१	१५	३६	चंद्र	२	८	०
सूर्य	१	८	२४	चंद्र	२	१६	०	मंगल	१	१७	३६
चंद्र	२	४	०	मंगल	१	२३	१२	राहु	४	२	२४
मंगल	१	१४	४८	राहु	४	१६	४८	गुरु	३	१८	४८
राहु	३	२५	१२	गुरु	४	१	३६	शनि	४	९	१२

गुरुमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ११ मास ६ दिन				गुरुमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष ८ मास ० दिन				गुरुमहादशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ९ मास १८ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
केतु	०	१९	३६	शुक्र	५	१०	०	सूर्य	०	१४	२४
शुक्र	१	२६	०	सूर्य	१	१८	०	चंद्र	०	२४	०
सूर्य	०	१६	४८	चंद्र	२	२०	०	मंगल	०	१६	४८
चंद्र	०	२८	०	मंगल	१	२६	०	राहु	१	१३	१२
मंगल	०	१९	३६	राहु	४	२४	०	गुरु	१	८	२४
राहु	१	२०	२४	गुरु	४	८	०	शनि	१	१५	३६
गुरु	१	१४	४८	शनि	५	२	०	बुध	१	१०	४८
शनि	१	२३	१२	बुध	४	१६	०	केतु	०	१६	४८
बुध	१	१७	३६	केतु	१	२६	०	शुक्र	१	१८	०

गुरुमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष ४ मास ० दिन				गुरुमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ११ मास ६ दिन				गुरुमहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष ४ मास २४ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
चंद्र	१	१०	०	मंगल	०	१९	३६	राहु	४	९	३६
मंगल	०	२८	०	राहु	१	२०	२४	गुरु	३	२५	१२
राहु	२	१२	०	गुरु	१	१४	४८	शनि	४	१६	४८
गुरु	२	४	०	शनि	१	२३	१२	बुध	४	२	२४
शनि	२	१६	०	बुध	१	१७	३६	केतु	१	२०	२४
बुध	२	८	०	केतु	०	१९	३६	शुक्र	४	२४	०
केतु	०	२८	०	शुक्र	१	२६	०	सूर्य	१	१३	१२
शुक्र	२	२०	०	सूर्य	०	१६	४८	चंद्र	२	१२	०
सूर्य	०	२४	०	चंद्र	०	२८	०	मंगल	१	२०	२४

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शनिमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि ३ वर्ष ० मास ३ दिन					शनिमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष ८ मास ६ दिन					शनिमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष १ मास ६ दिन				
ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
शनि	५	२१	२८	३०	बुध	४	१७	१६	३०	केतु	०	२३	१६	३०
बुध	५	३	२५	३०	केतु	१	२६	३१	३०	शुक्र	२	६	३०	०
केतु	२	३	१०	३०	शुक्र	५	११	३०	०	सूर्य	०	१६	५७	०
शुक्र	६	०	३०	०	सूर्य	१	१८	२७	०	चंद्र	१	३	१५	०
सूर्य	१	२४	६	०	चंद्र	२	२०	४५	०	मंगल	०	२३	१६	३०
चंद्र	३	०	१५	०	मंगल	१	२६	३१	३०	राहु	१	२६	५१	०
मंगल	२	३	१०	३०	राहु	४	२५	२१	०	गुरु	१	२३	१२	०
राहु	५	१२	२७	०	गुरु	४	६	१२	०	शनि	२	३	१०	३०
गुरु	४	२४	२४	०	शनि	५	३	२५	३०	बुध	१	२६	३१	३०

शनिमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि ३ वर्ष २ मास ० दिन				शनिमहादशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ११ मास १२ दिन				शनिमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष ७ मास ० दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
शुक्र	६	१०	०	सूर्य	०	१७	६	चंद्र	१	१७	३०
सूर्य	१	२७	०	चंद्र	०	२८	३०	मंगल	१	३	१५
चंद्र	३	५	०	मंगल	०	१६	५७	राहु	२	२५	३०
मंगल	२	६	३०	राहु	१	२१	१८	गुरु	२	१६	०
राहु	५	२१	०	गुरु	१	१५	३६	शनि	३	०	१५
गुरु	५	२	०	शनि	१	२४	६	बुध	२	२०	४५
शनि	६	०	३०	बुध	१	१८	२७	केतु	१	३	१५
बुध	५	११	३०	केतु	०	१६	५७	शुक्र	३	५	०
केतु	२	६	३०	शुक्र	१	२७	०	सूर्य	०	२८	३०

शनिमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष १ मास ६ दिन					शनिमहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष १० मास ६ दिन				शनिमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष ६ मास १२ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
मंगल	०	२३	१६	३०	राहु	५	३	५४	गुरु	४	१	३६
राहु	१	२६	५१	०	गुरु	४	१६	४८	शनि	४	२४	२४
गुरु	१	२३	१२	०	शनि	५	१२	२७	बुध	४	६	१२
शनि	२	३	१०	३०	बुध	४	२५	२१	केतु	१	२३	१२
बुध	१	२६	३१	३०	केतु	१	२६	५१	शुक्र	५	२	०
केतु	०	२३	१६	३०	शुक्र	५	२१	०	सूर्य	१	१५	३६
शुक्र	२	६	३०	०	सूर्य	१	२१	१८	चंद्र	२	१६	०
सूर्य	०	१६	५७	०	चंद्र	२	२५	३०	मंगल	१	२३	१२
चंद्र	१	३	१५	०	मंगल	१	२६	५१	राहु	४	१६	४८

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बुधमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि					बुधमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि					बुधमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि				
२ वर्ष ४ मास २७ दिन					० वर्ष ११ मास २७ दिन					२ वर्ष १० मास ० दिन				
ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	
बुध	४	२	४	६ ३०	केतु	०	२०	४	६ ३०	शुक्र	५	२०	०	
केतु	१	२०	३	४ ३०	शुक्र	१	२	६	३० ०	सूर्य	१	२१	०	
शुक्र	४	२	४	३० ०	सूर्य	०	१७	५	१ ०	चंद्र	२	२५	०	
सूर्य	१	१	३	२१ ०	चंद्र	०	२	६	४५ ०	मंगल	१	२	६	३०
चंद्र	२	१	२	१५ ०	मंगल	०	२०	४	६ ३०	राहु	५	३	०	
मंगल	१	२०	३	४ ३०	राहु	१	२३	३	३ ०	गुरु	४	१	६	०
राहु	४	१०	३	०	गुरु	१	१७	३	६ ०	शनि	५	११	३०	
गुरु	३	२५	३	६ ०	शनि	१	२	६	३१ ३०	बुध	४	२	४	३०
शनि	४	१७	१	६ ३०	बुध	१	२०	३	४ ३०	केतु	१	२	६	३०

बुधमहादशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि				बुधमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि				बुधमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि				
० वर्ष १० मास ६ दिन				१ वर्ष ५ मास ० दिन				० वर्ष ११ मास २७ दिन				
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
सूर्य	०	१५	१८	चंद्र	१	१२	३०	मंगल	०	२०	४	६ ३०
चंद्र	०	२५	३०	मंगल	०	२	६	४५	राहु	१	२३	३ ३ ०
मंगल	०	१७	५	१	राहु	२	१	६	३०	गुरु	१	१७	३	६ ०
राहु	१	१५	५	४	गुरु	२		८	०	शनि	१	२	६	३१ ३०
गुरु	१	१०	४	८	शनि	२	२०	४	५	बुध	१	२०	३	४ ३०
शनि	१	१८	२	७	बुध	२	१२	१	५	केतु	०	२०	४	६ ३०
बुध	१	१३	२	१	केतु	०	२	६	४५	शुक्र	१	२	६	३० ०
केतु	०	१७	५	१	शुक्र	२	२५		०	सूर्य	०	१७	५	१ ०
शुक्र	१	२१		०	सूर्य	०	२५	३	०	चंद्र	०	२	६	४५ ०

बुधमहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि					बुधमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि					बुधमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि				
२ वर्ष ६ मास १८ दिन					२ वर्ष ३ मास ६ दिन					२ वर्ष ८ मास ६ दिन				
ग्रह	मास	दिन	घटी		ग्रह	मास	दिन	घटी		ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
राहु	४	१७	४	२	गुरु	३	१८	४	८	शनि	५	३	२५	३०
बुध	४	२	२	४	शनि	४	६	१	२	बुध	४	१७	१	६ ३०
शनि	४	२५	२	१	बुध	३	२५	३	६	केतु	१	२६	३१	३०
बुध	४	१०	३		केतु	१	१७	३	६	शुक्र	५	११	३०	०
केतु	१	२३	३	३	शुक्र	४	१	६	०	सूर्य	१	१८	२	७ ०
शुक्र	५	३	०		सूर्य	१	१०	४	८	चंद्र	२	२०	४	५ ०
सूर्य	१	१५	५	४	चंद्र	२		८	०	मंगल	१	२६	३१	३०
चंद्र	२	१	६	३०	मंगल	१	१७	३	६	राहु	४	२५	२	१ ०
मंगल	१	२३	३	३	राहु	४	२	२	४	गुरु	४	६	१	२ ०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

केतुमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ४ मास २७ दिन				केतुमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष २ मास ० दिन				केतुमहादशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ४ मास ६ दिन			
ग्रह	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
केतु	८	३४	३०	शुक्र	२	१०	०	सूर्य	०	६	१८
शुक्र	२४	३०	०	सूर्य	०	२१	०	चंद्र	०	१०	३०
सूर्य	७	२१	०	चंद्र	१	५	०	मंगल	०	७	२१
चंद्र	१२	१५	०	मंगल	०	२४	३०	राहु	०	१८	५४
मंगल	८	३४	३०	राहु	२	३	०	गुरु	०	१६	४८
राहु	२२	३	०	गुरु	१	२६	०	शनि	०	१९	५७
गुरु	१९	३६	०	शनि	२	६	३०	बुध	०	१७	५१
शनि	२३	१६	३०	बुध	१	२९	३०	केतु	०	७	२१
बुध	२०	४९	३०	केतु	०	२४	३०	शुक्र	०	२१	०

केतुमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ७ मास ० दिन				केतुमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ४ मास २७ दिन				केतुमहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष ० मास १८ दिन			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी
चंद्र	०	१७	३०	मंगल	८	३४	३०	राहु	१	२६	४२
मंगल	०	१२	१५	राहु	२२	३	०	गुरु	१	२०	२४
राहु	१	१	३०	गुरु	१९	३६	०	शनि	१	२९	५१
गुरु	०	२८	०	शनि	२३	१६	३०	बुध	१	२३	३३
शनि	१	३	१५	बुध	२०	४९	३०	केतु	०	२२	३
बुध	०	२९	४५	केतु	८	३४	३०	शुक्र	२	३	०
केतु	०	१२	१५	शुक्र	२४	३०	०	सूर्य	०	१८	५४
शुक्र	१	५	०	सूर्य	७	२१	०	चंद्र	१	१	३०
सूर्य	०	१०	३०	चंद्र	१२	१५	०	मंगल	०	२२	३

केतुमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ११ मास ६ दिन				केतुमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष १ मास ९ दिन					केतुमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि ० वर्ष ११ मास २७ दिन				
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	पल	ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
गुरु	१	१४	४८	शनि	२	३	१०	३०	बुध	१	२०	३४	३०
शनि	१	२३	१२	बुध	१	२६	३१	३०	केतु	०	२०	४९	३०
बुध	१	१७	३६	केतु	०	२३	१६	३०	शुक्र	१	२९	३०	०
केतु	०	१९	३६	शुक्र	२	६	३०	०	सूर्य	०	१७	५१	०
शुक्र	१	२६	०	सूर्य	०	१९	५७	०	चंद्र	०	२९	४५	०
सूर्य	०	१६	४८	चंद्र	१	३	१५	०	मंगल	०	२०	४९	३०
चंद्र	०	२८	०	मंगल	०	२३	१६	३०	राहु	१	२३	३३	०
मंगल	०	१९	३६	राहु	१	२९	५१	०	गुरु	१	१७	३६	०
राहु	१	२०	२४	गुरु	१	२३	१२	०	शनि	१	२६	३१	३०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्रमहादशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि ३ वर्ष ४ मास				शुक्रमहादशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष ० मास				शुक्रमहादशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष ८ मास			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
शुक्र	६	२०	०	सूर्य	०	१८	०	चंद्र	१	२०	०
सूर्य	२	०	०	चंद्र	१	०	०	मंगल	१	५	०
चंद्र	३	१०	०	मंगल	०	२१	०	राहु	३	०	०
मंगल	२	१०	०	राहु	१	२४	०	गुरु	२	२०	०
राहु	६	०	०	गुरु	१	१८	०	शनि	३	५	०
गुरु	५	१०	०	शनि	१	२७	०	बुध	२	२५	०
शनि	६	१०	०	बुध	१	२१	०	केतु	१	५	०
बुध	५	२०	०	केतु	०	२१	०	शुक्र	३	१०	०
केतु	२	१०	०	शुक्र	२	०	०	सूर्य	१	०	०

शुक्रमहादशायां भौमान्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष २ मास				शुक्रमहादशायां राह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि ३ वर्ष ० मास				शुक्रमहादशायां गुर्वन्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष ८ मास			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
मंगल	०	२४	३०	राहु	५	१२	०	गुरु	४	८	०
राहु	२	३	०	गुरु	४	२४	०	शनि	५	२	०
गुरु	१	२६	०	शनि	५	२१	०	बुध	४	१६	०
शनि	२	६	३०	बुध	५	३	०	केतु	१	२६	०
बुध	१	२९	३०	केतु	२	३	०	शुक्र	५	१०	०
केतु	०	२४	३०	शुक्र	६	०	०	सूर्य	१	१८	०
शुक्र	२	१०	०	सूर्य	१	२४	०	चंद्र	२	२०	०
सूर्य	०	२१	०	चंद्र	३	०	०	मंगल	१	२६	०
चंद्र	१	५	०	मंगल	२	३	०	राहु	४	२४	०

शुक्रमहादशायां शन्यन्तरे प्रत्यन्तराणि ३ वर्ष २ मास				शुक्रमहादशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि २ वर्ष १० मास				शुक्रमहादशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि १ वर्ष २ मास			
ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी	ग्रह	मास	दिन	घटी
शनि	६	०	३०	बुध	४	२४	३०	केतु	०	२४	३०
बुध	५	११	३०	केतु	१	२९	३०	शुक्र	२	१०	०
केतु	२	६	३०	शुक्र	५	२०	०	सूर्य	०	२१	०
शुक्र	६	१०	०	सूर्य	१	२१	०	चंद्र	१	५	०
सूर्य	१	२७	०	चंद्र	२	२५	०	मंगल	०	२४	३०
चंद्र	३	५	०	मंगल	१	२९	३०	राहु	२	३	०
मंगल	२	६	३०	राहु	५	३	०	गुरु	१	२६	०
राहु	५	२१	०	गुरु	४	१६	०	शनि	२	६	३०
गुरु	५	२	०	शनि	५	११	३०	बुध	१	२९	३०

इति प्रत्यन्तर्दशा चक्रम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ नवांशदशावर्ष-अन्तर्दशादिचक्रम्

मेषांश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					मेषांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					मेषांश में मिथुन दशा वर्ष ९ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
मेष	०	५	२६	२४	वृष	२	६	२१	३६	मिथु.	०	९	२१	३६
वृष	१	१	१३	१२	मिथु.	१	५	८	२४	कर्क	१	१०	२०	२४
मिथु.	०	७	१६	४८	कर्क	३	४	९	३६	सिंह	०	५	१२	०
कर्क	१	५	१९	१२	सिंह	०	९	१८	०	कन्या	०	९	२१	३६
सिंह	०	४	६	०	कन्या	१	५	८	२४	तुला	१	५	८	२४
कन्या	०	७	१६	४८	तुला	२	६	२१	३६	वृश्चि.	०	७	१६	४८
तुला	१	१	१३	१२	वृश्चि.	१	१	१३	१२	धनु	०	१०	२४	०
वृश्चि.	०	५	२६	२४	धनु	१	७	६	०	मेष	०	७	१६	४८
धनु	०	८	१२	०	मेष	१	१	१३	१२	वृष	१	५	८	२४

मेषांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा					मेषांश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा					मेषांश में कन्या दशा वर्ष ९ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
कर्क	४	४	२७	३६	सिंह	०	३	०	०	कन्या	०	९	२१	३६
सिंह	१	०	१८	०	कन्या	०	५	१२	०	तुला	१	५	८	२४
कन्या	१	१०	२०	२४	तुला	०	९	१८	०	वृश्चि.	०	७	१६	४८
तुला	३	४	९	३६	वृश्चि.	०	४	६	०	धनु	०	१०	२४	०
वृश्चि.	१	५	१९	१२	धनु	०	६	०	०	मेष	०	७	१६	४८
धनु	२	१	६	०	मेष	०	४	६	०	वृष	१	५	८	२४
मेष	१	५	१९	१२	वृष	०	९	१८	०	मिथु.	०	९	२१	३६
वृष	३	४	९	३६	मिथु.	०	५	१२	०	कर्क	१	१०	२०	२४
मिथु.	१	१०	२०	२४	कर्क	१	०	१८	०	सिंह	०	५	१२	०

मेषांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					मेषांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					मेषांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
तुला	२	६	२१	३६	वृश्चि.	०	५	२६	२४	धनु	१	०	०	०
वृश्चि.	१	१	१३	१२	धनु	०	८	१२	०	मेष	०	८	१२	०
धनु	१	७	६	०	मेष	०	५	२६	२४	वृष	१	७	६	०
मेष	१	१	१३	१२	वृष	१	१	१३	१२	मिथु.	०	१०	२४	०
वृष	२	६	२१	३६	मिथु.	०	७	१६	४८	कर्क	२	१	६	०
मिथु.	१	५	८	२४	कर्क	१	५	१९	१२	सिंह	०	६	०	०
कर्क	३	४	९	३६	सिंह	०	४	६	०	कन्या	०	१०	२४	०
सिंह	०	९	१८	०	कन्या	०	७	१६	४८	तुला	१	७	६	०
कन्या	१	५	८	२४	तुला	१	१	१३	१२	वृश्चि.	०	८	१२	०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वृषांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					वृषांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					वृषांश में मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा					
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
मक.	२	७	४५	५३	कुंभ	२	७	४५	५३	मीन	१	२	३	३१	४६
कुंभ	२	७	४५	५३	मीन	५	१६	१४	४२	वृश्चि.	०	६	२६	२८	१४
मीन	५	१६	१४	४२	वृश्चि.	३	२८	३५	१८	तुला	१	१०	१७	३८	४६
वृश्चि.	३	२८	३५	१८	तुला	६	१	३	३२	कन्या	१	०	२१	१०	३५
तुला	६	१	३	३२	कन्या	५	२	१८	१४	कर्क	२	५	१६	२४	४२
कन्या	५	२	१८	१४	कर्क	११	२५	४५	५३	सिंह	०	७	१	४५	५३
कर्क	११	२५	४५	५३	सिंह	२	२४	४२	२१	मिथु.	१	०	२१	१०	३५
सिंह	२	२४	४२	२१	मिथु.	५	२	४८	१४	मकर	०	५	१६	२४	४३
मिथु.	५	२	४८	१४	मक.	२	७	४५	५३	कुंभ	०	५	१६	२४	४३

वृषांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						वृषांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						वृषांश में कन्या दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
वृश्चि.	०	६	२७	३१	४६	तुला	३	०	४	१४	७	कन्या	०	११	१३	३	३२
तुला	१	३	२४	३१	१०	कन्या	१	८	६	५२	५६	कर्क	२	२	२०	२८	१४
कन्या	०	८	२६	४६	२५	कर्क	३	११	१३	३	३२	सिंह	०	६	१०	३५	१८
कर्क	१	८	२२	३५	१७	सिंह	०	११	८	४६	२५	मिथु.	०	११	१३	३	३२
सिंह	०	४	२८	१४	७	मिथु.	१	८	६	५२	५६	मकर	०	५	२	२८	१४
मिथु.	०	८	२६	४६	२५	मकर	०	६	१	३	३२	कुंभ	०	५	२	२८	१४
मकर	०	३	२८	३५	१८	कुंभ	०	६	१	३	३२	मीन	१	०	२१	१०	३५
कुंभ	०	३	२८	३५	१८	मीन	१	१०	१७	३८	४६	वृश्चि.	०	८	२६	४६	२५
मीन	०	६	२६	१८	१४	वृश्चि.	१	३	२४	२१	११	तुला	१	८	६	५२	५६

वृषांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा						वृषांश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा						वृषांश में मिथुन दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
कर्क	५	२	७	४५	५३	सिंह	०	३	१५	५२	५६	मिथु.	०	११	१३	३	३२
सिंह	१	२	२४	४२	२१	मिथु.	०	६	१०	३५	१८	मक.	०	५	२	२८	१४
मिथु.	२	२	२०	२८	१४	मक.	०	२	२४	४२	२१	कुंभ	०	५	२	२८	१४
मक.	०	११	२५	४५	५३	कुंभ	०	२	२४	४२	२१	मीन	१	०	२१	१०	३५
कुंभ	०	११	२५	४५	५३	मीन	०	७	१	४५	५३	वृश्चि.	०	८	२६	४६	२५
मीन	२	५	१६	२४	४३	वृश्चि.	०	४	२८	१४	७	तुला	१	८	६	५२	५६
वृश्चि.	१	८	२२	३५	१७	तुला	०	११	८	४६	२५	कन्या	०	११	१३	३	३२
तुला	३	११	१३	३	३२	कन्या	०	६	१०	३५	१८	कर्क	२	२	२०	२८	१४
कन्या	२	२	२०	२८	१४	कर्क	१	२	२४	४२	२१	सिंह	०	६	१०	३५	१८

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मिथुनांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						मिथुनांश मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						मिथुनांश में मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
वृष	३	१	०	२१	४१	मेष	०	७	२	३१	४८	मीन	१	२	१३	४४	६
मेष	१	४	५	४७	०	मीन	०	१०	३	३६	५२	कुंभ	०	५	२३	२६	३८
मीन	१	११	३	५८	३३	कुंभ	०	४	१	२६	४५	मकर	०	५	२३	२६	३८
कुंभ	०	६	७	३५	२५	मकर	०	४	१	२६	४५	धनु	१	२	१३	४४	६
मकर	०	६	७	३५	२५	धनु	०	१०	३	३६	५२	मेष	०	१०	३	३६	५२
धनु	१	११	३	५८	३३	मेष	०	७	२	३१	४८	वृष	१	११	३	५८	३३
मेष	१	४	५	४७	०	वृष	१	४	५	४७	०	मिथु.	१	१	०	२१	४२
वृष	३	१	०	२१	४१	मिथु.	०	६	३	१५	१०	वृष	१	११	३	५८	३३
मिथु.	१	८	२४	३४	४२	वृष	१	४	५	४७	०	मेष	०	१०	३	३६	५२

मिथुनांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					मिथुनांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					मिथुनांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा					
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
कुंभ	२	६	२३	५२	मकर	२	६	२३	५२	धनु	१	२	१३	४४	६
मकर	२	६	२३	५२	धनु	५	२३	२६	३८	मेष	०	१०	३	३६	५२
धनु	५	२३	२६	३८	मेष	४	१	२६	४५	वृष	१	११	३	५८	३३
मेष	४	१	२६	४५	वृष	६	७	३५	२५	मिथु.	१	१	०	२१	४२
वृष	६	७	३५	२५	मिथु.	५	६	८	४०	वृष	१	११	३	५८	३३
मिथु.	५	६	८	४०	वृष	६	७	३५	२५	मेष	०	१०	३	३६	५२
वृष	६	७	३५	२५	मेष	४	१	२६	४५	मीन	१	२	१३	४४	६
मेष	४	१	२६	४५	मीन	५	२३	२६	३८	कुंभ	०	५	२३	२६	३८
मीन	५	२३	२६	३८	कुंभ	२	६	२३	५२	मक.	०	५	२३	२६	३८

मिथुनांश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						मिथुनांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						मिथुनांश में मिथुन दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
मेष	०	७	२	३१	४८	वृष	३	१	०	२१	४१	मिथु.	०	११	२१	१६	३२
वृष	१	४	५	४७	०	मिथु.	१	८	२४	३४	४२	वृष	१	८	२४	३४	४२
मिथु.	०	६	३	१५	१०	वृष	३	१	०	२१	४१	मेष	०	६	३	१५	१०
वृष	१	४	५	४७	०	मेष	१	४	५	४७	०	मीन	१	१	०	२१	४२
मेष	०	७	२	३१	४८	मीन	१	११	३	५८	३३	कुंभ	०	५	६	८	४०
मीन	०	१०	३	३६	५२	कुंभ	०	६	७	३५	२५	मक.	०	५	६	८	४०
कुंभ	०	४	१	२६	४५	मक.	०	६	७	३५	२५	धनु	१	१	०	२१	४२
मक.	०	४	१	२६	४५	धनु	१	११	३	५८	३३	मेष	०	६	३	१५	१०
धनु	०	१०	३	३६	५२	मेष	१	४	५	४७	०	वृष	१	८	२४	३४	४२

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कर्कांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा					कर्कांश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा					कर्कांश में कन्या दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
कर्क	५	१	१६	२ ४७	सिंह	०	३	१४	३६ ४	कन्या	०	११	६	४ ११
सिंह	१	२	१६	३२ ५	कन्या	०	६	८	२२ २०	तुला	१	८	२	४७ २६
कन्या	२	२	११	६ ४६	तुला	०	११	४	५३ १	वृश्चि.	०	८	२३	४३ १५
तुला	३	१०	२६	३० ४२	वृश्चि.	०	४	२६	३० ४२	धनु	१	०	१६	४४ ४०
वृश्चि.	१	८	१५	२० ५६	धनु	०	६	२६	१८ ६	मक.	०	५	०	४१ ५१
धनु	२	५	६	४ ११	मक.	०	२	२३	४३ १५	कुंभ	०	५	०	४१ ५१
मक.	०	११	२१	३७ ४१	कुंभ	०	२	२३	४३ १५	मीन	१	०	१६	४४ ४०
कुंभ	०	११	२१	३७ ४१	मीन	०	६	२६	१८ ६	कर्क	२	२	११	६ ४६
मीन	२	५	६	४ ११	कर्क	१	२	१६	३२ ५	सिंह	०	६	८	२२ २०

कर्कांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					कर्कांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					कर्कांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
तुला	२	११	२१	३७ ४१	वृश्चि.	०	६	२५	६ ५६	धनु	१	१	२८	३६ १६
वृश्चि.	१	३	१८	५० १४	धनु	०	६	२३	१ २४	मक.	०	५	१७	२६ ३०
धनु	१	१०	६	४६ २	मक.	०	३	२७	१२ ३३	कुंभ	०	५	१७	२६ ३०
मक.	०	८	२७	५४ २६	कुंभ	०	३	२७	१२ ३३	मीन	१	१	२८	३६ १६
कुंभ	०	८	२७	५४ २६	मीन	०	६	२३	१ २४	कर्क	२	५	६	४ १३
मीन	१	१०	६	४६ २	कर्क	१	८	१५	२० ५६	सिंह	०	६	२६	१८ ६
कर्क	३	१०	२६	३० ४२	सिंह	०	४	२६	३० ४२	कन्या	१	०	१६	४४ ४०
सिंह	०	११	४	५३ १	कन्या	०	८	२३	४३ १५	तुला	१	१०	६	४६ २
कन्या	१	८	२	४७ २६	तुला	१	३	१८	५० १४	वृश्चि.	०	६	२३	१ २४

कर्कांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					कर्कांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					कर्कांश में मीन दशा वर्ष १० में अंन्तर्दशा				
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटीपल
मक.	२	६	५८	३७	कुंभ	२	६	५८	३७	मीन	१	१	२८	३६ १६
कुंभ	२	६	५८	३७	मीन	५	१७	२६	३०	कर्क	२	५	६	४ १३
मीन	५	१७	२६	३०	कर्क	११	२१	३७	४१	सिंह	०	६	२६	१८ ६
कर्क	११	२१	३७	४१	सिंह	२	२३	४३	१५	कन्या	१	०	१६	४४ ४०
सिंह	२	२३	४३	१५	कन्या	५	०	४१	५१	तुला	१	१०	६	४६ २
कन्या	५	०	४१	५१	तुला	८	२७	५४	२६	वृश्चि.	०	६	२३	१ २४
तुला	८	२७	५४	२६	वृश्चि.	३	२७	१२	३३	धनु	१	१	२८	३६ १६
वृश्चि.	३	२७	१२	३३	धनु	५	१७	२६	३०	मक.	०	५	१७	२६ ३०
धनु	५	१७	२६	३०	मक.	२	६	५८	३७	कुंभ	०	५	१७	२६ ३०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सिंहांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					सिंहांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					सिंहांश में कन्या दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
वृश्चि.	०	५	२६	२४	तुला	२	६	२१	३६	कन्या	०	६	२१	३६
तुला	१	१	१३	१२	कन्या	१	५	८	२४	कर्क	१	१०	२०	२४
कन्या	०	७	१६	४८	कर्क	३	४	६	३६	सिंह	०	५	१२	०
कर्क	१	५	१६	१२	सिंह	०	६	१८	०	मिथु.	०	६	२१	३६
सिंह	०	४	६	०	मिथु.	१	५	८	२४	वृष	१	५	८	२४
मिथु.	०	७	१६	४८	वृष	२	६	२१	३६	मेष	०	७	१६	४८
वृष	१	१	१३	१२	मेष	१	१	१३	१२	मीन	०	१०	२४	०
मेष	०	५	२६	२४	मीन	१	७	६	०	वृश्चि.	०	७	१६	४८
मीन	०	८	१२	०	वृश्चि.	१	१	१३	१२	तुला	१	५	८	२४

सिंहांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा					सिंहांश में सिंह दशा वर्ष ५ अन्तर्दशा					सिंहांश में मिथुन दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
कर्क	४	४	२७	३६	सिंह	०	३	०	०	मिथु.	०	६	२१	३६
सिंह	१	०	१८	०	मिथु.	०	५	१२	०	वृष	१	५	८	२४
मिथु.	१	१०	२०	२४	वृष	०	६	१८	०	मेष	०	७	१६	४८
वृष	३	४	६	३६	मेष	०	४	६	०	मीन	०	१०	२४	०
मेष	१	५	१६	१२	मीन	०	६	०	०	वृश्चि.	०	७	१६	४८
मीन	२	१	६	०	वृश्चि.	०	४	६	०	तुला	१	५	८	२४
वृश्चि.	१	५	१६	१२	तुला	०	६	१८	०	कन्या	०	६	२१	३६
तुला	३	४	६	३६	कन्या	०	५	१२	०	कर्क	१	१०	२०	२४
कन्या	१	१०	२०	२४	कर्क	१	०	१८	०	सिंह	०	५	१२	०

सिंहांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					सिंहांश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					सिंहांश में मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
वृष	२	६	२१	३६	मेष	०	५	२६	२४	मीन	१	०	०	०
मेष	१	१	१३	१२	मीन	०	८	१२	०	वृश्चि.	०	८	१२	०
मीन	१	७	६	०	वृश्चि.	०	५	२६	२४	तुला	१	७	६	०
वृश्चि.	१	१	१३	१२	तुला	१	१	१३	१२	कन्या	०	१०	२४	०
तुला	२	६	२१	३६	कन्या	०	७	१६	४८	कर्क	२	१	६	०
कन्या	१	५	८	२४	कर्क	१	५	१६	१२	सिंह	०	६	०	०
कर्क	३	४	६	३६	सिंह	०	४	६	०	मिथु.	०	१०	२४	०
सिंह	०	६	१८	०	मिथु.	०	७	१६	४८	वृष	१	७	६	०
मिथु.	१	५	८	२४	वृष	१	१	१३	१२	मेष	०	८	१२	०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कन्यांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्दर्दशा					कन्यांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					कन्यांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
कुंभ	२	७	४५	५३	मक.	२	७	४५	५३	धनु	१	२	३	३१ ४६
मक.	२	७	४५	५३	धनु	५	१६	२४	४२	मेष	०	६	२६	२८ १४
धनु	५	१६	२४	४२	मेष	३	२८	३५	१८	वृष	१	१०	१७	३८ ४६
मेष	३	२८	३५	१८	वृष	६	१	३	३२	मिथु.	१	०	२१	१० ३५
वृष	६	१	३	३२	मिथु.	५	२	२८	१४	कर्क	२	५	१६	२४ ४२
मिथु.	५	२	२८	१४	कर्क	११	२५	४५	५३	सिंह	०	७	१	४५ ५३
कर्क	११	२५	४५	५३	सिंह	२	२४	४२	२१	कन्या	१	०	२१	१० ३५
सिंह	२	२४	४२	२१	कन्या	५	२	२८	१४	कुंभ	०	५	१६	२४ ४३
कन्या	५	२	२८	१४	कुंभ	२	७	४५	५३	मक.	०	५	१६	२४ ४३

कन्यांश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						कन्यांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						कन्यांश में मिथुन दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
मेष	०	६	२७	३१	४६	वृष	३	०	४	१४	७	मिथु.	०	११	१३	३	३२
वृष	१	३	२४	३१	१०	मिथु.	१	८	६	५२	५६	कर्क	२	२	२०	२८	१४
मिथु.	०	८	२६	४६	२५	कर्क	३	११	१३	३	३२	सिंह	०	६	१०	३५	१८
कर्क	१	८	२२	३५	१७	सिंह	०	११	८	४६	२५	कन्या	०	११	१३	३	३२
सिंह	०	४	२८	१४	७	कन्या	१	८	६	५२	५६	कुंभ	०	५	२	२८	१४
कन्या	०	८	२६	४६	२५	कुंभ	०	६	१	३	३२	मक.	०	५	२	२८	१४
कुंभ	०	३	२८	३५	१८	मक.	०	६	१	३	३२	धनु	१	०	२१	१०	३५
मक.	०	३	२८	३५	१८	धनु	१	१०	१७	३८	४६	मेष	०	८	२६	४६	२५
धनु	०	६	२६	१८	१४	मेष	१	३	२४	२१	११	वृष	१	८	६	५२	५६

कन्यांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा						कन्यांश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा						कन्यांश में कन्या दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
कर्क	५	२	७	४५	५३	सिंह	०	३	१५	५२	५६	कन्या	०	११	१३	३	३२
सिंह	१	२	२४	४२	२१	कन्या	०	६	१०	३५	१८	कुंभ	०	५	२	२८	१४
कन्या	२	२	२०	२८	१४	कुंभ	०	२	२४	४२	२१	मक.	०	५	२	२८	१४
कुंभ	०	११	२५	४५	५३	मक.	०	२	२४	४२	२१	धनु	१	०	२१	१०	३५
मक.	०	११	२५	४५	५३	धनु	०	७	१	४५	५३	मेष	०	८	२६	४६	२५
धनु	२	५	१६	२४	४३	मेष	०	४	२८	१४	७	वृष	१	८	६	५२	५६
मेष	१	८	२२	३५	१७	वृष	०	११	८	४६	२५	मिथु.	०	११	१३	३	३२
वृष	३	११	१३	३	३२	मिथु.	०	६	१०	३५	१८	कर्क	२	२	२०	२८	१४
मिथु.	२	२	२०	२८	१४	कर्क	१	२	२४	४२	२१	सिंह	०	६	१०	३५	१८

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तुलांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					तुलांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					तुलांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
तुला	३	१	०	२१	४१	वृश्चि.	०	७	२	३१	४८	धनु	१	२	१३	४४	६
वृश्चि.	१	४	५	४७	०	धनु	०	१०	३	३६	५२	मक.	०	५	२३	२९	३८
धनु	१	११	३	५८	३३	मक.	०	४	१	२६	४५	कुंभ	०	५	२३	२९	३८
मक.	०	९	७	३५	२५	कुंभ	०	४	१	२६	४५	मीन	१	२	१३	४४	६
कुंभ	०	९	७	३५	२५	मीन	०	१०	३	३६	५२	वृश्चि.	०	१०	३	३६	५२
मीन	१	११	३	५८	३३	वृश्चि.	०	७	२	३१	४८	तुला	१	११	३	५८	३३
वृश्चि.	१	४	५	४७	०	तुला	१	४	५	४७	०	कन्या	१	१	०	२१	४२
तुला	३	१	०	२१	४१	कन्या	०	९	३	१५	१०	तुला	१	११	३	५८	३३
कन्या	१	८	२४	३४	४२	तुला	१	४	५	४७	०	वृश्चि	०	१०	३	३६	५२

तुलांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					तुलांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					तुलांश मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
मक.	२	९	२३	५२	कुंभ	२	९	२३	५२	मीन	१	२	१३	४४	६
कुंभ	२	९	२३	५२	मीन	५	२३	२९	३८	वृश्चि.	०	१०	३	३६	५२
मीन	५	२३	२९	३८	वृश्चि.	४	१	२६	४५	तुला	१	११	३	५८	३३
वृश्चि.	४	१	२६	४५	तुला	९	७	३५	२५	कन्या	१	१	०	२१	४२
तुला	९	७	३५	२५	कन्या	५	६	८	४०	तुला	१	११	३	५८	३३
कन्या	५	६	८	४०	तुला	९	७	३५	२५	वृश्चि.	०	१०	३	३६	५२
तुला	९	७	३५	२५	वृश्चि.	४	१	२६	४५	धनु	१	२	१३	४४	६
वृश्चि.	४	१	२६	४५	धनु	५	२३	२९	३८	मक.	०	५	२३	२९	३८
धनु	५	२३	२९	३८	मक.	२	९	२३	५२	कुंभ	०	५	२३	२९	३८

तुलांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						तुलांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						तुलांश में कन्या दशा वर्ष ९ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
वृश्चि.	०	७	२	३१	४८	तुला	३	१	०	२१	४१	कन्या	०	११	२१	१९	३२
तुला	१	४	५	४७	०	कन्या	१	८	२४	३४	४२	तुला	१	८	२४	३४	४२
कन्या	०	९	३	१५	१०	तुला	३	१	०	२१	४१	वृश्चि.	०	९	३	१५	१०
तुला	१	४	५	४७	०	वृश्चि.	१	४	५	४७	०	धनु	१	१	०	२१	४२
वृश्चि.	०	७	२	३१	४८	धनु	१	११	३	५८	३३	मक.	०	५	६	८	४०
धनु	०	१०	३	३६	५२	मक.	०	९	७	३५	२५	कुंभ	०	५	६	८	४०
मक.	०	४	१	२६	४५	कुंभ	०	९	७	३५	२५	मीन	१	१	०	२१	४२
कुंभ	०	४	१	२६	४५	मीन	१	११	३	५८	३३	वृश्चि.	०	९	३	१५	१०
मीन	०	१०	३	३६	५२	वृश्चि.	१	४	५	४७	०	तुला	१	८	२४	३४	४२

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वृश्चिकांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा					वृश्चिकांश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा					वृश्चिकांश में मिथुन दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
कर्क	५	१	१६	२ ४७	सिंह	०	३	१४	३६ ४	मिथु.	०	११	६	४ ११
सिंह	१	२	१६	३२ ५	मिथु.	०	६	८	२२ २०	वृष	१	८	२	४७ २६
मिथु.	२	२	११	६ ४६	वृष	०	११	४	५३ १	मेष	०	८	२३	४३ १५
वृष	३	१०	२६	३० ४२	मेष	०	४	२६	३० ४२	मीन	१	०	१६	४४ ४०
मेष	१	८	१५	२० ५६	मीन	०	६	२६	१८ ६	कुंभ	०	५	०	४१ ५१
मीन	२	५	६	४ ११	कुंभ	०	२	२३	४३ १५	मक.	०	५	०	४१ ५१
कुंभ	०	११	२१	३७ ४१	मक.	०	२	२३	४३ १५	धनु	१	०	१६	४४ ४०
मक.	०	११	२१	३७ ४१	धनु	०	६	२६	१८ ६	कर्क	२	२	११	६ ४६
धनु	२	५	६	४ ११	कर्क	१	२	१६	३२ ५	सिंह	०	६	८	२२ २०

वृश्चिकांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					वृश्चिकांश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					वृश्चिकांश में मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
वृष	२	११	२१	३७ ४१	मेष	०	६	२५	६ ५६	मीन	१	१	२८	३६ १६
मेष	१	३	१८	५० १४	मीन	०	६	२३	१ २४	कुंभ	०	५	१७	२६ ३०
मीन	१	१०	६	४६ २	कुंभ	०	३	२७	१२ ३३	मक.	०	५	१७	२६ ३०
कुंभ	०	८	२७	५४ २६	मक.	०	३	२७	१२ ३३	धनु	१	१	२८	३६ १६
मक.	०	८	२७	५४ २६	धनु	०	६	२३	१ २४	कर्क	२	५	६	४ १३
धनु	१	१०	६	४६ २	कर्क	१	८	१५	२० ५६	सिंह	०	६	२६	१८ ६
कर्क	३	१०	२६	३० ४२	सिंह	०	४	२६	३० ४२	मिथु.	१	०	१६	४४ ४०
सिंह	०	११	४	५३ १	मिथु.	०	८	२३	४३ १५	वृष	१	१०	६	४६ २
मिथु.	१	८	२	४७ २६	वृष	१	३	१८	५० १४	मेष	०	६	२३	१ २४

वृश्चिकांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					वृश्चिकांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					वृश्चिकांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
कुंभ	२	६	५८	३७	मक.	२	६	५८	३७	धनु	१	१	२८	३६ १६
मक.	२	६	५८	३७	धनु	५	१७	२६	३०	कर्क	२	५	६	४ १३
धनु	५	१७	२६	३०	कर्क	११	२१	३७	४१	सिंह	०	६	२६	१८ ६
कर्क	११	२१	३७	४१	सिंह	२	२३	४३	१५	मिथु.	१	०	१६	४४ ४०
सिंह	२	२३	४३	१५	मिथु.	५	०	४१	५१	वृष	१	१०	६	४६ २
मिथु.	५	०	४१	५१	वृष	८	२७	५४	२६	मेष	०	६	२३	१ २४
वृष	८	२७	५४	२६	मेष	३	२७	१२	३३	मीन	१	१	२८	३६ १६
मेष	३	२७	१२	३३	मीन	५	१७	२६	३०	कुंभ	०	५	१७	२६ ३०
मीन	५	१७	२६	३०	कुंभ	२	६	५८	३७	मक.	०	५	१७	२६ ३०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धनु अंश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					धनु अंश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					धनु अंश में मिथुन दशा वर्ष ९ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
मेष	०	५	२६	२४	वृष	२	६	२१	३६	मिथु.	०	९	२१	३६
वृष	१	१	१३	१२	मिथु.	१	५	८	२४	कर्क	१	१०	२०	२४
मिथु.	०	७	१६	४८	कर्क	३	४	९	३६	सिंह	०	५	१२	०
कर्क	१	५	१९	१२	सिंह	०	९	१८	०	कन्या	०	९	२१	३६
सिंह	०	४	६	०	कन्या	१	५	८	२४	तुला	१	५	८	२४
कन्या	०	७	१६	४८	तुला	२	६	२१	३६	वृश्चि.	०	७	१६	४८
तुला	१	१	१३	१२	वृश्चि.	१	१	१३	१२	धनु	०	१०	२४	०
वृश्चि.	०	५	२६	२४	धनु	१	७	६	०	मेष	०	७	१६	४८
धनु	०	८	१२	०	मेष	१	१	१३	१२	वृष	१	५	८	२४

धनु अंश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा					धनु अंश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा					धनु अंश में कन्या दशा वर्ष ९ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
कर्क	४	४	२७	३६	सिंह	०	३	०	०	कन्या	०	९	२१	३६
सिंह	१	०	१८	०	कन्या	०	५	१२	०	तुला	१	५	८	२४
कन्या	१	१०	२०	२४	तुला	०	९	१८	०	वृश्चि.	०	७	१६	४८
तुला	३	४	९	३६	वृश्चि.	०	४	६	०	धनु	०	१०	२४	०
वृश्चि.	१	५	१९	१२	धनु	०	६	०	०	मेष	०	७	१६	४८
धनु	२	१	६	०	मेष	०	४	६	०	वृष	१	५	८	२४
मेष	१	५	१९	१२	वृष	०	९	१८	०	मिथु.	०	९	२१	३६
वृष	३	४	९	३६	मिथु.	०	५	१२	०	कर्क	१	१०	२०	२४
मिथु.	१	१०	२०	२४	कर्क	१	०	१८	०	सिंह	०	५	१२	०

धनु अंश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					धनु अंश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					धनु अंश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी
तुला	२	६	२१	३६	वृश्चि.	०	५	२६	२४	धनु	१	०	०	०
वृश्चि.	१	१	१३	१२	धनु	०	८	१२	०	मेष	०	८	१२	०
धनु	१	७	६	०	मेष	०	५	२६	२४	वृष	१	७	६	०
मेष	१	१	१३	१२	वृष	१	१	१३	१२	मिथु.	०	१०	२४	०
वृष	२	६	२१	३६	मिथु.	०	७	१६	४८	कर्क	२	१	६	०
मिथु.	१	५	८	२४	कर्क	१	५	१९	१२	सिंह	०	६	०	०
कर्क	३	४	९	३६	सिंह	०	४	६	०	कन्या	०	१०	२४	०
सिंह	०	९	१८	०	कन्या	०	७	१६	४८	तुला	१	७	६	०
कन्या	१	५	८	२४	तुला	१	१	१३	१२	वृश्चि.	०	८	१२	०

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मकरांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					मकरांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					मकरांश में मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा					
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
मक.	२	७	४५	५३	कुंभ	२	७	४५	५३	मीन	१	२	३	३१	४६
कुंभ	२	७	४५	५३	मीन	५	१६	२४	४२	वृश्चि.	०	६	२६	२८	१४
मीन	५	१६	२४	४२	वृश्चि.	३	२८	३५	१८	तुला	१	१०	१७	३८	४६
वृश्चि.	३	२८	३५	१८	तुला	६	१	३	३२	कन्या	१	०	२१	१०	३५
तुला	६	१	३	३२	कन्या	५	२	२८	१४	कर्क	२	५	१६	२४	४२
कन्या	५	२	२८	१४	कर्क	११	२५	४५	५३	सिंह	०	७	१	४५	५३
कर्क	११	२५	४५	५३	सिंह	२	२४	४२	२१	मिथु.	१	०	२१	१०	३५
सिंह	२	२४	४२	२१	मिथु.	५	२	२८	१४	मक.	०	५	१६	२४	४३
मिथु.	५	२	२८	१४	मक.	२	७	४५	५३	कुंभ	०	५	१६	२४	४३

मकरांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						मकरांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						मकरांश में कन्या दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
वृश्चि.	०	६	२७	३१	४६	तुला	३	०	४	१४	७	कन्या	०	११	१३	३	३२
तुला	१	३	२४	३१	१०	कन्या	१	८	६	५२	५६	कर्क	२	२	२०	२८	१४
कन्या	०	८	२६	४६	२५	कर्क	३	११	१३	३	३२	सिंह	०	६	१०	३५	१८
कर्क	१	८	२२	३५	१७	सिंह	०	११	८	४६	२५	मिथु.	०	११	१३	३	३२
सिंह	०	४	२८	१४	७	मिथु.	१	८	६	५२	५६	मक.	०	५	२	२८	१४
मिथु.	०	८	२६	४६	२५	मक.	०	६	१	३	३२	कुंभ	०	५	२	२८	१४
मक.	०	३	२८	३५	१८	कुंभ	०	६	१	३	३२	मीन	१	०	२१	१०	३५
कुंभ	०	३	२८	३५	१८	मीन	१	१०	१७	३८	४६	वृश्चि.	०	८	२६	४६	२५
मीन	०	६	२६	१८	१४	वृश्चि.	१	३	२४	२१	११	तुला	१	८	६	५२	५६

मकरांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा						मकरांश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा						मकरांश में मिथुन दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
कर्क	५	२	७	४५	५३	सिंह	०	३	१५	५२	५६	मिथु.	०	११	१३	३	३२
सिंह	१	२	२४	४२	२१	मिथु.	०	६	१०	३५	१८	मक.	०	५	२	२८	१४
मिथु.	२	२	२०	२८	१४	मक.	०	२	२४	४२	२१	कुंभ	०	५	२	२८	१४
मक.	०	११	२५	४५	५३	कुंभ	०	२	२४	४२	२१	मीन	१	०	२१	१०	३५
कुंभ	०	११	२५	४५	५३	मीन	०	७	१	४५	५३	वृश्चि.	०	८	२६	४६	२५
मीन	२	५	१६	२४	४३	वृश्चि.	०	४	२८	१४	७	तुला	१	८	६	५२	५६
वृश्चि.	१	८	२२	३५	१७	तुला	०	११	८	४६	२५	कन्या	०	११	१३	३	३२
तुला	३	११	१३	३	३२	कन्या	०	६	१०	३५	१८	कर्क	२	२	२०	२८	१४
कन्या	२	२	२०	२८	१४	कर्क	१	२	२४	४२	२१	सिंह	०	६	१०	३५	१८

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

कुंभांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						कुंभांश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						कुंभांश में मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
वृष	३	१	०	२१	४१	मेष	०	७	२	३१	४८	मीन	१	२	१३	४४	६
मेष	१	४	५	४७	०	मीन	०	१०	३	३६	५२	कुंभ	०	५	२३	२६	३८
मीन	१	११	३	५८	३३	कुंभ	०	४	१	२६	४५	मक.	०	५	२३	२६	३८
कुंभ	०	६	७	३५	२५	मक.	०	४	१	२६	४५	धनु	१	२	१३	४४	६
मक.	०	६	७	३५	२५	धनु	०	१०	३	३६	५२	मेष	०	१०	३	३६	५२
धनु	१	११	३	५८	३३	मेष	०	७	२	३१	४८	वृष	१	११	३	५८	३३
मेष	१	४	५	४७	०	वृष	१	४	५	४७	०	मिथु.	१	१	०	२१	४२
वृष	३	१	०	२१	४१	मिथु.	०	६	३	१५	१०	वृष	१	११	३	५८	३३
मिथु.	१	८	२४	३४	४२	वृष	१	४	५	४७	०	मेष	०	१०	३	३६	५२

कुंभांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					कुंभांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					कुंभांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा					
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
कुंभ	२	६	२३	५२	मक.	२	६	२३	५२	धनु	१	२	१३	४४	६
मक.	२	६	२३	५२	धनु	५	२३	२६	३८	मेष	०	१०	३	३६	५२
धनु	५	२३	२६	३८	मेष	४	१	२६	४५	वृष	१	११	३	५८	३३
मेष	४	१	२६	४५	वृष	६	७	३५	२५	मिथु.	१	१	०	२१	४२
वृष	६	७	३५	२५	मिथु.	५	६	८	४०	वृष	१	११	३	५८	३३
मिथु.	५	६	८	४०	वृष	६	७	३५	२५	मेष	०	१०	३	३६	५२
वृष	६	७	३५	२५	मेष	४	१	२६	४५	मीन	१	२	१३	४४	६
मेष	४	१	२६	४५	मीन	५	२३	२६	३८	कुंभ	०	५	२३	२६	३८
मीन	५	२३	२६	३८	कुंभ	२	६	२३	५२	मक.	०	५	२३	२६	३८

कुंभांश में मेष दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा						कुंभांश में वृष दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा						कुंभांश में मिथुन दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा					
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
मेष	०	७	२	३१	४८	वृष	३	१	०	२१	४१	मिथु.	०	११	२१	१६	३२
वृष	१	४	५	४७	०	मिथु.	१	८	२४	३४	४२	वृष	१	८	२४	३४	४२
मिथु.	०	६	३	१५	१०	वृष	३	१	०	२१	४१	मेष	०	६	३	१५	१०
वृष	१	४	५	४७	०	मेष	१	४	५	४७	०	मीन	१	१	०	२१	४२
मेष	०	७	२	३१	४८	मीन	१	११	३	५८	३३	कुंभ	०	५	६	८	४०
मीन	०	१०	३	३६	५२	कुंभ	०	६	७	३५	२५	मक.	०	५	६	८	४०
कुंभ	०	४	१	२६	४५	मक.	०	६	७	३५	२५	धनु	१	१	०	२१	४२
मक.	०	४	१	२६	४५	धनु	१	११	३	५८	३३	मेष	०	६	३	१५	१०
धनु	०	१०	३	३६	५२	मेष	१	४	५	४७	०	वृष	१	८	२४	३४	४२

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

मीनांश में कर्क दशा वर्ष २१ में अन्तर्दशा					मीनांश में सिंह दशा वर्ष ५ में अन्तर्दशा					मीनांश में कन्या दशा वर्ष ६ में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
कर्क	५	१	१६	२ ४७	सिंह	०	३	१४	३६ ४	कन्या	०	११	६	४ ११
सिंह	१	२	१६	३२ ५	कन्या	०	६	८	२२ २०	तुला	१	८	२	४७ २६
कन्या	२	२	११	६ ४६	तुला	०	११	४	५३ १	वृश्चि.	०	८	२३	४३ १५
तुला	३	१०	२६	३० ४२	वृश्चि.	०	४	२६	३० ४२	धनु	१	०	१६	४४ ४०
वृश्चि.	१	८	१५	२० ५६	धनु	०	६	२६	१८ ६	मक.	०	५	०	४१ ५१
धनु	२	५	६	४ ११	मक.	०	२	२३	४३ १५	कुंभ	०	५	०	४१ ५१
मक.	०	११	२१	३७ ४१	कुंभ	०	२	२३	४३ १५	मीन	१	०	१६	४४ ४०
कुंभ	०	११	२१	३७ ४१	मीन	०	६	२६	१८ ६	कर्क	२	२	११	६ ४६
मीन	२	५	६	४ ११	कर्क	१	२	१६	३२ ५	सिंह	०	६	८	२२ २०

मीनांश में तुला दशा वर्ष १६ में अन्तर्दशा					मीनांश में वृश्चिक दशा वर्ष ७ में अन्तर्दशा					मीनांश में धनु दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
तुला	२	११	२१	३७ ४१	वृश्चि.	०	६	२५	६ ५६	धनु	१	१	२८	३६ १६
वृश्चि.	१	३	१८	५० १४	धनु	०	६	२३	१ २४	मक.	०	५	१७	२६ ३०
धनु	१	१०	६	४६ २	मक.	०	३	२७	१२ ३३	कुंभ	०	५	१७	२६ ३०
मक.	०	८	२७	५४ २६	कुंभ	०	३	२७	१२ ३३	मीन	१	१	२८	३६ १६
कुंभ	०	८	२७	५४ २६	मीन	०	६	२३	१ २४	कर्क	२	५	६	४ १३
मीन	१	१०	६	४६ २	कर्क	१	८	१५	२० ५६	सिंह	०	६	२६	१८ ६
कर्क	३	१०	२६	३० ४२	सिंह	०	४	२६	३० ४२	कन्या	१	०	१६	४४ ४०
सिंह	०	११	४	५३ १	कन्या	०	८	२३	४३ १५	तुला	१	१०	६	४६ २
कन्या	१	८	२	४७ २६	तुला	१	३	१८	५० १४	वृश्चि.	०	६	२३	१ २४

मीनांश में मकर दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					मीनांश में कुंभ दशा वर्ष ४ में अन्तर्दशा					मीनांश में मीन दशा वर्ष १० में अन्तर्दशा				
राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	मास	दिन	घटी	पल	राशि	वर्ष	मास	दिन	घटी पल
मक.	२	६	५८	३७	कुंभ	२	६	५८	३७	मीन	१	१	२८	३६ १६
कुंभ	२	६	५८	३७	मीन	५	१७	२६	३०	कर्क	२	५	६	४ १३
मीन	५	१७	२६	३०	कर्क	११	२१	३७	४१	सिंह	०	६	२६	१८ ६
कर्क	११	२१	३७	४१	सिंह	२	२३	४३	१५	कन्या	१	०	१६	४४ ४०
सिंह	२	२३	४३	१५	कन्या	५	०	४१	५१	तुला	१	१०	६	४६ २
कन्या	५	०	४१	५१	तुला	८	२७	५४	२६	वृश्चि.	०	६	२३	१ २४
तुला	८	२७	५४	२६	वृश्चि.	३	२७	१२	३३	धनु	१	१	२८	३६ १६
वृश्चि.	३	२७	१२	३३	धनु	५	१७	२६	३०	मक.	०	५	१७	२६ ३०
धनु	५	१७	२६	३०	मक.	२	६	५८	३७	कुंभ	०	५	१७	२६ ३०

इति बृहत्पाराशरहोराशास्त्रं ज्यौतिषाचार्य-
श्रीगणेशदत्तपाठककृतसटीकं सोदाहरणं समाप्तम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ज्योतिष शास्त्रका अमूल्य संग्रह आप अपने यहाँ स्वयं करें।

१. *भृगु संहिता फलित सर्वाङ्गदर्शन भाषा-* ले. भगवान दास मित्तल १५०)-
२. *भृगु संहिता फलित सर्वाङ्गदर्शन अंग्रेजी में-* ले. भगवान दास मित्तल २००)-
३. *मानसागरी पद्धति भाषा-टीका-* ज्योतिषाचार्य पं. सीताराम झा द्वारा संशोधित परिशिष्ट एवं जन्म-पत्र-प्रबोध सहित। १००)-
४. *बृहज्जातक भाषा-टीका-* ज्यो. पं. सीताराम झा द्वारा सम्पादित। १००)-
५. *ताजिक नीलकण्ठी भाषा-टीका-* श्रीवासुदेव गुप्त द्वारा संशोधित। ६०)-
६. *जातकाभरण भाषा-टीका-* पं. सीतारामझा कृत परिशिष्ट सहित। ८०)-
७. *जातकदीपिका भाषा-टीका-* पं. मधुसूदन शास्त्री द्वारा सम्पादित। ६०)-
८. *बृहज्ज्यौतिषसार भाषा-टीका-* ज्यो. श्रीरूपनारायण शर्मा। ५०)-
९. *भावकुतूहल भाषा-टीका-*टीकाकार पं. रामोत्साह मिश्र। ६०)-
१०. *मुहूर्त चिन्तामणि भाषा-टीका-*संस्कर्त्ता पं. श्री गौरी नाथ पाठक। ५०)-
११. *सामुद्रिक सुधा-*लेखक-श्री हरिदत्त शर्मा एम.ए.बी.एड.। १००)-
१२. *लघुसंग्रह भाषा-टीका-* टीकाकार पं. गणेशदत्त पाठक। ५०)-
१३. *लग्नचन्द्रिका भाषा-टीका-*टीकाकार-पं. कैलाशपति मिश्र। ५०)-
१४. *मन्त्र-सागर भाषा-टीका-* टीकाकार-पं. रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी। ३०)-
१५. *प्रेतमञ्जरी भाषा-टीका-* टीकाकार मातृप्रसाद पाण्डेय ३०)-
१६. *वाशिष्ठी हवन पद्धति- भाषा-टीका-* टीकाकार श्रीशम्भूदत्त त्रिपाठी २०)-
१७. *वर्षकृत्य भाषा-टीका -प्रथम भाग-* टीकाकार पं. जयानन्द मिश्र १२०)-
१८. *वर्षकृत्य भाषा-टीका -द्वितीय भाग-* टीकाकार पं. जयानन्द मिश्र ८०)-
१९. *सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार व्रत कथा भाषा प्रत्येक* ८)-

आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री-द्वारा रचित, संशोधित-सम्पादित तथा अनुवादित महत्वपूर्ण पुस्तकें

१. शिव-रहस्य- भाषा टीका सहित शिव कवच, महिम्नस्तोत्र, शिवताण्डवस्तोत्र, दारिद्र्यदहन स्तोत्र, शिवसहस्रनाम, एवं शिवसहस्र-नामावली, पार्थिव पूजन, शिवरात्रिव्रत-कथा आदि शिव-उपासना सम्बन्धी विषय दिये गये हैं। ५०)-

२. दुर्गार्चन-पद्धति- (दुर्गा-रहस्य)- पृष्ठ संख्या ५२८ प्रस्तावना, हिन्दी, अनुवाद, दुर्गापूजा-पद्धति एवं उपासना सहित। इसमें : गणेशाम्बिका पूजन, कलश-पूजन, पुण्याहवाचन, मातृका पूजन, वसोर्धारा पूजन, नान्दी श्राद्ध, षोडशोपचारं दुर्गापूजन से लेकर उत्तर पूजन पर्यन्त, आरती, मन्त्र-पुष्पांजलि, पंचभू-संस्कार दुर्गा-सप्तशती, शतचण्डी- सहस्रचण्डी- लक्षचण्डी प्रयोग, हवन-विधान, सम्पुट-विधान तथा दुर्गा-सप्तशती पाठविधि आदि विषय दिये गये है। ६०)-

३. दुर्गासप्तशती- १६ पेजी, किताबी, भाषा-टीका सहित। इसमें सप्तशती द्वारा प्रश्नोत्तर ज्ञान, षोडशोपचार से दुर्गा-पूजा-पद्धति, शतचण्डी प्रयोग, दुर्गा हवन-प्रयोग एवं सिद्ध-सम्पुटित मन्त्र विधान आदि विषय दिये गये हैं। ३०)-

४. गायत्री-रहस्य अथवा गायत्रीपंचांग- 'शिवदत्ती' भाषा-टीका सहित। इसमें गायत्री पूजा-पद्धति, गायत्री पुरश्चरण-विवेचन, गायत्रीकल्प, गायत्रीपंचांग, गायत्री

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सहस्र-नाम, गायत्रीसहस्रनामावली, गायत्र्युपनिषद्, गायत्रीतत्त्व, गायत्री-हृदय, गायत्रीस्तोत्र, गायत्रीस्तवराज, गायत्रीमन्त्रसंग्रह, गायत्रीतन्त्र, गायत्री नीराजन, गायत्री-चालीसा, आरती आदि विविध विषय दिये गये हैं। ५०)-

५. *हनुमद्-रहस्य*- हनुमत्पंचांग तथा हनुमत्-उपासना सहित। हिन्दी टीका के साथ हनुमत्पंचांग, हनुमत्सहस्रनामावली, शत्रुंजय हनुमत्स्तोत्र तथा हनुमत्-तन्त्र, चालीसा आदि हनुमत्-उपासना-सम्बन्धी सभी विषय दिये गये हैं। ५०)-

६. *बगलामुखी रहस्य*- अर्थात बगलोपासन पद्धति भाषा-टीका, बगलापंचांग, बगलामुखी पूजन यंत्र, नित्यार्चन पूजा, दीपदानादि विषयों सहित । ४०)-

७. *वृहद् स्तोत्र रत्नाकर*- इसमे ५०१ स्तोत्र दिये गये है ८०)-

८. *देवी सहस्रनामावली*- इसमें पुष्प तथा कुंकुम (रोली) आदि देवी (दुर्गाजी) पर चढ़ाने के लिए पृथक्-पृथक् १००० नाम दिये गये हैं। १२)-

९. *विष्णु सहस्रनामावली*- इसमें भगवान् विष्णु के १००० नाम दिये गये हैं। १२)-

१०. *श्रीराम सहस्रनामावली*-राम के १००० नाम तथा स्तोत्र हैं। १२)-

११. *श्री ललिता सहस्रनामावली*- माँ ललिता के १००० नाम हैं। १२)-

१२. *श्री लक्ष्मी सहस्रनामावली*- माँ लक्ष्मी के १००० नाम हैं। १२)-

१३. *गणेश सहस्रनामावली*- श्री गणेशजी के १००० नाम हैं। १२)-

१४. *गोपाल सहस्रनामावली*- भगवान् कृष्ण के १००० नाम हैं। १२)-

१५. *दुर्गा सहस्रनामावली*- श्री माँ दुर्गा के १००० नाम हैं। १२)-

१६. *शिव सहस्रनामावली*- भगवान शिव के १००० नाम हैं। १२)-

१७. *हनुमद् सहस्रनामावली*- श्रीहनुमानजी के १००० नाम हैं। १२)-

१८. *गायत्री सहस्त्रनामावली*-माँ गायत्री के १००८ नाम हैं। १२)-

१९. *गंगा ससहस्त्रनामावली*-माँ गंगा के १००० नाम हैं। १२)-

२०. *सूर्य सहस्त्रनामावली*-भगवान् सूर्य के १००० नाम हैं। १२)-

२१. *अन्नपूर्णा सहस्त्रनामावली*-माँ अन्नपूर्णा के १००० नाम हैं। १२)-

२२. *काली सहस्त्रनामावली*-माँ काली के १००० नाम हैं। १२)-

२३. *श्रीमद्भागवत रहस्य*- लेखक-पूज्यपाद-श्री रामचन्द्र केशव डोंगरेजी महाराज। संसार मकड़ी के जाले के समान है (इसमें फँसकर) मरने के बाद भी कल्याण नहीं है। इस जालरूपी संसार से मुक्ति पाने हेतु श्रीमद्भागवत महापुराण का पठन-पाठन ही एक मात्र मुक्ति का मार्ग है। इसी भागवत महापुराण को श्री डोंगरेजी महाराज ने अत्यन्त सुगम-सरल नाना प्रकार के प्रसंग, दृष्टान्तों, उपदेशों को देकर उपके रहस्य को दर्पण की भाँति दर्शाया है। भागवत-प्रेमियों के लिए यह बड़ा ही उपयोगी वना दिया गया है, जिसे प्रत्येक परिवार में रहना परमावश्यक है। २०)-

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता-

ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी-
फोन नं. ३२०४०२

कलकत्ता के वितरक
गणेश एण्ड ब्रदर्स बुक्सेलर
३०/३१ कलाकार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०००७

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

आचार्य पं. श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री-द्वारा, संशोधित-सम्पादित पुस्तकें

बृहद् स्तोत्ररत्नाकर ५०१ स्तोत्र सहित ६०)
शिव-रहस्य-भाषा टीका, शिव कवच कथा सहित ५०)
दुर्गार्चन-पद्धति-(दुर्गा-रहस्य)-पृष्ठ संख्या ५२८ ६०)
दुर्गासप्तशती-१६ पेजी, किताबी, भाषा-टीका सहित ३०)
दुर्गा तंत्रम्—'शिवदत्ती' हिन्दी-टीका सहित ५०)
वाञ्छा-कल्पलता—'जयन्ती' भाषा-टीका सहित ३०)
पाराशरस्मृतिः—'शिवदत्ती' भाषा-टीका सहित ४०)
गायत्री-रहस्य अथवा गायत्रीपंचांग—'शिवदत्ती' भाषा-टीका ५०)
हनुमद्-रहस्य-हनुमत्पंचांग तथा हनुमत्-उपासना सहित ५०)
ऋणमोचन मंगलस्तोत्र—दुर्गाकवच, भा.टी., संकटस्तोत्र-प्रत्येक १२)
बगलामुखी रहस्य-बगलोपासन पद्धति भाषा-टीका सहित ४०)
देवी सहस्रनामावली, विष्णु, राम, ललिता, लक्ष्मी, गणेश, गोपाल, दुर्गा, शिव, हनुमद्, गायत्री, गंगा, सूर्य, अन्नपूर्णा, काली, यमुना, राधा, बलभद्र, सरस्वती, तारा, शनैश्चर, कृष्ण सहस्रनामावली-
प्रत्येक नामावली में १००० नाम है मूल्य १२)-प्रति

ज्योतिष शास्त्र का अमूल्य संग्रह आप अपने यहाँ स्वयं करें।

बृहद् पाराशरहोराशास्त्रम्—भाषा-टीका-पं.गणेशदत्त पाठक २००)
भृगुसंहिता फलित सर्वाङ्गदर्शन भाषा—ले.भगवानदास मित्तल १५०)
मानसागरी पद्धति—भाषा-टीका-ज्योतिषाचार्य पं.सीताराम झा १००)
वर्षकृत्य प्रथम व द्वितीय भाग—भाषा-टीका-पं.जयानन्द झा २४०)
ताजिक नीलकण्ठी—भाषा-टीका-विश्वनाथ दैवज्ञ संस्कृतटीका ६०)
जातकाभरण—भाषा-टीका-पं. सीतारामझा कृत ८०)
जातकदीपिका—भाषा-टीका-पं.मधुसूदन शास्त्री ६०)
बृहज्ज्यौतिषसार—भाषा-टीका-ज्यो.श्रीरूपनारायण शर्मा ५०)
भावकुतूहल—भाषा-टीका-टीकाकार पं. रामोत्साह मिश्र ६०)
मुहूर्त चिन्तामणि—भाषा-टीका-पं.श्रीगौरीनाथ पाठक ५०)
श्रीमद्भागवत रहस्य—पूज्य-श्रीरामचन्द्र केशव डोंगरेजीकृत २००)
लघु संग्रह—भाषा-टीका-पं. गणेशदत्त पाठक ४०)
जीवन भविष्य दर्पण—पं. कैलाश नाथ उपाध्याय ५०)
कर्म विपाक—भाषा-टीका-पं. शम्भुदत्त त्रिपाठी शास्त्री ७०)
चिन्ताहरण पंचांग नये वर्ष का—सम्पादक गणेश प्रसाद गुप्त ३२)
गणेश रहस्यम्—भाषा-टीका-श्री अशोक कुमार गौड़ ५०)
लक्ष्मी रहस्यम्—भाषा-टीका-श्री अशोक कुमार गौड़ ५०)
यज्ञ रहस्यम्—भाषा-टीका-श्री अशोक कुमार गौड़ १००)

पुस्तक मिलने का पता-
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी

पुस्तक मिलने का पता-
गणेश एण्ड ब्रदर्स बुक्सेलर
३०/३१ कलाकार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७००००७

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA